









৬ অক্ষয়কুমার দত্ত।





ভারতবর্ষীয় উপাসক-সম্প্রদায়।

ত অক্ষয়কুমার দত্ত-প্রণীত।

দ্বিতীয় সংস্করণ।

কলিকাতা,—৩০নং কর্ণওয়ালিস ষ্ট্রীট, সংস্কৃত প্রেস্ ডিপজিটরী হইতে প্রকাশিত

কলিকাতা ৭৬ নং বলরাম দে ট্রুট্, মেট্কাফ্ প্রেসে মুদ্রিত।

বিজ্ঞাপন।

ভারতবর্ষীয় উপাধ্দক-সম্প্রদায়ের দ্বিতীয় ভাগ দ্বিতীয় বার মুক্রিত ও প্রকাশিত হইল। পূর্ব্ব সংস্করণে যে সকল বিবরণ পরিশিফীংশে সন্ধ্রিবেশিত ছিল, এবারে সে সমুদায় মূল গ্রন্থমধ্যে যথান্থানে দেওয়া গেল।

নানকপন্থী, জৈন প্রভৃতি কয়েকটি সম্প্রদায় বিবরণ, যাহা স্বর্গীয় অক্ষয় বাবুর জীবদ্দশায়, এই গ্রন্থের তৃতীয় ভাগের নিমিত্ত তৎকর্ত্ত্বক সংগৃহীত হইয়াছিল, তাহা স্বতন্ত্র পুস্তকাকারে শীঘ্রই প্রকাশিত করিবার বাসনা রহিল।

প্রকাশক।

শুদিপত্র।

্উপক্রমণিকা।

| পৃষ্ঠা | পংক্তি | অভন্ধ | শুদ |
|---------------------|------------|---|----------------------------------|
| > F | b | च पसर्व च सुपस र्ज्ञच स् | अ पसपंगशुपसपं ण म् |
| ₹• | • | কোণ্ড | কোন্ত, |
| ৩৮ | ৩১ | জু ড়ি | জুরি |
| 89 | | বৈদ্যান্তিক | ৰৈ দাস্তিক |
| 68 | >8 | বল্যাম্যেদ | বাল্যামোদ |
| € 3 | ર | न व | न च |
| 4 8 | ર ૧ | सुप्ते पु | सुप्ते षु |
| >> 2 · | >5 | আগ্রায় | আগ্রার |
| \$83 | ૨७ | উচ্চ্বাদে | উচ্ছাদে |
| 25-8 | ৯ | पुष्तुय | पुष्कर |
| 369 | ২৯ পংক্তির | । পর এই কয় পংক্তি বসিবে | : |

কিরূপে শৃদ্র শব্দ শোকোৎপত্তি-প্রতিপাদক হইল এইটি বিজ্ঞাপনার্থ বেদান্তস্ত্রকার উদ্নিধিত স্ত্রের হধ্যে "তদা ক্রবণাৎ" বলিয়া শৃদ্র শব্দের ব্যুৎপত্তি করেন। ইহার তাৎপর্যার্থ এই বে, জ্ঞানশ্রুতি শোক দ্রাবিত অর্থাৎ প্রাপ্ত হন, অথবা শোক জ্ঞানশ্রুতিকে প্রাপ্ত হয়, কিলা জ্ঞানশ্রুতি শোকাবিষ্ট হইরা বৈক্সমাপে দ্রবণ অর্থাৎ গমন করেন। এই নিমিন্ত বৈক্ তাহাকে শৃদ্র অর্থাৎ শোক-প্রাপ্ত বলিয়া সম্বোধন করেন।

শঙ্কলিথিত রূপ বাংপতি ৰা করিয়া পার পাইবার উপার ছিল না।

সূচী। উপক্রমণিকা।

| প্রস্তাব | | | | পৃষ্ঠা |
|-----------------------------|--------------------------|--|----------------|----------------|
| সাখ্যাদর্শন | ••• | • • • | ••• | > |
| পাতঞ্জল দর্শন | ••• | ••• | ••• | >• |
| বৈশেষিক দর্শন | ••• | ••• | ••• | > ¢ |
| তায় দৰ্শন | ••• | ••• | ••• | २२ |
| মীমাংসা দর্শন | ••• | ••• | ••• | ২৮ |
| विनास्य मर्थन | ••• | ••• | ••• | 80 |
| চাৰ্কাক দৰ্শন | ••• | ••• | ••• | & & |
| স্বভাব বাদ, কাল বাদ | ও নিয়তি বাদ গু | শভ্ তি | ••• | ¢8 |
| রামাত্তজ দর্শন, পূর্ণপ্রঞ | জ (অর্থাৎ মধ্বাচ | ার্য্য) দর্শন, প্রত্য | ভিজ্ঞান দর্শন, | শৈব |
| দর্শন, রসেশ্বর দর্শ | ন, নকুলীশ পাভগ | ণত দ ৰ্ শন ও <mark>আ</mark> হিত | 5 पर्भन | ¢¢ |
| ভারতবর্ষীয় ও গ্রীদ্ দে | শীয় দর্শনৈর সৌস | াদৃভ | ••• | æ |
| মানব-ধর্মশাস্ত্র | ••• | ••• | ••• | eb |
| রামায়ণ ও মহাভারত | ••• | ••• | ••• | ৮৬ |
| পুরাণ | ••• | ••• | ••• | >>e |
| উপপুরাণ | ••• | ••• | ••• | ₹0¢ |
| ব্রাহ্মপুরাণ | ••• | ••• | ••• | २०৮ |
| পদ্পরাণ | ••• | • • • | ••• | २०৯ |
| ব্ৰহ্ম বৈবৰ্ত্তপুরাণ | ••• | | ••• | २১० |
| স্বন্দ পুরাণ | ••• | ••• | ••• | २১७ |
| কৃৰ্মপুরাণ | ••• | ••• | ••• | २১७ |
| বিষ্ণুপুরাণ | ••• | ••• | ••• | २५१ |
| বায়ু, মংস্ত ও ভাগৰত | পুরাণ | ••• | ••• | द ऽह |
| ম ৎস্থাবতার | ••• | ••• | ••• | २८२ |
| কুৰ্মাবতার ় | ••• | ••• | ••• | २88 |
| বরাহাবভার | ••• | ••• | | ₹8¢ |

| প্রস্তাব | | | | পৃষ্ঠা |
|-------------------------|--------------|--------------------|------------------|--------------|
| বামনাবতার | ••• | | ••• | ২৪৯ |
| রাম-পরগুরামাদি অব | তার | ••• | ••• | ₹ ¢ 8 |
| ক্লফ াবতার | • . | ••• | ••• | २৫৫ |
| বুদাবতার | ••• | ••• | ••• | ২৬৯ |
| | সম্প্রদ | ায় বিবরণ। | | |
| | | टेमब । | | |
| শৈব সম্প্রদায় | ••• | ••• | ••• | > |
| শিবারাধনা | ••• | ••• | ••• | ১৬ |
| দ শনামী | ••• | ••• | ··· | ₹,0 |
| म खी | ••• | ••• | ••• | 82 |
| ষরবারী দণ্ডী | ••• | ••• | ••• | 81 |
| কুটীচক, বহুদক, হংস | ও পরমহংস | ••• | ••• | ۶۶ |
| সন্ন্যাসী (অবধৃত) | ••• | ••• | ••• | ¢ 9 |
| নামসন্ন্যাস | ••• 、 | •' | ••• | ৬১ |
| কৰ্মসন্ন্যাস বা ষ্ট্ | কর্ম | ••• | ••• | ৬২ |
| সম্যাসীর বেশ ভূয | n | ••• | ••• | ৬৭ |
| সন্ন্যাসীর মঠ-আথ | জািদ পরিচায় | क विषद्र | ••• | 95 |
| সন্ন্যাসীর জ্যোৎমা | ৰ্গ | ••• | ••• | ৭৬ |
| সন্ন্যাসীর আহার | ব্যবহার | ••• | ••• | ৭৯ |
| স্র্যাসীর জ্মাৎ | ••• | ••• | . ••• | ٥ط |
| নাগা | ••• | ••• | ••• | ৮৩ |
| আলেখিয়া . | ••• | ••• | ••• | 44 |
| एक नी | ••• | •• | •• | ٥۾ |
| অংশারী | ••• | ••• | ••• | 22 |
| छद्भवोद्द, जाकानम्थी, | নধী, ঠাড়েখর | ो, উर्द्रम्थी, शकः | ্নী, মোনব্রতী, জ | লশয্যী, |
| ও জলধা রা-তপস্বী | i | ••• | ••• | ನಿಲ |
| কড়া লিঙ্গী | ••• | ••• | ••• | at |
| করারী, হুধাধারী ও অ | লু না | ••• | ••• | a¢. |

| প্রস্তাব | | | | পৃষ্ঠা |
|----------------------|------------------|--------------|-------|---------------------------------------|
| অওবড়, গুদড়, স্থধড় | , রুথড়, ভূথড়, | কুকড় ও উপড় | ••• | 36 |
| অবধ্তা <u>নী</u> | • | ••• | ••• | ٦٤ |
| ঘরবারী সন্ন্যাসী | ••• | ••• | ••• | दद |
| ঠিকরনাথ | ••• | ••• | ••• | 66 |
| স্বৰ্ভঙ্গী | ••• | ••• | ••• | >00 |
| ত্যাগ সন্মাসী | | ••• | ••• | >0> |
| আতুর সন্ন্যাসী, মানস | ন-সন্ন্যাসী ও অং | -সন্ন্যাসী | ••• | >0> |
| বন্দচারী | ••• | ••• | •••. | >৽৩ |
| যোগী | 4 | ••• | ••• | >09 |
| কণ্ফট্ বোগী | • | ••• | ••• | >28 |
| অও ঘড় যোগী | ••• | ••• | • • • | > > > > > > > > > > > > > > > > > > > |
| অঘোর পন্থীযোগী | ••• | ••• | ••• | 202 |
| যোগিনী ও সংযোগী | | ••• | ••• | ১৩৩ |
| লিক্ষোপাসনা ও লিক | ায়ৎ 🔭 | ••• | | >08 |
| ভোপা | ••• | ••• | ••• | ১৫৩ |
| দশনামী ভাঁট | ••• | ••• | ••• | ১৫৩ |
| চন্দ্রভাট | ••• | • | ••• | > €8 |
| | * | †ক্ত । | | |
| শক্তি-উপাসনা | ••• | | | >e¢ |
| পশ্বাচারী ও বীরাচার | î | ••• | ••• | ১৬০ |
| বেদাচার, বৈষ্ণবাচার | _ | , ভূতি | ••• | 265 |
| চলিয়া পদ্বী | | ••• | ••• | ১৭৯ |
| করারী | ••• | ••• 、 | ••• | • 242 |
| टेडबरी ७ टेडबर | ••• | ••• | ••• | . >>= |
| শীতলা পণ্ডিত | ••• | ••• | · | ১৮৩ |
| | সৌৱ ৰ | ঃ গাণপত্য। | | • |
| সৌর | Q-114 V | ••• | ••• |)be |
| গাণপজা | | * | ••• | ત્રન |

| | | j• | | |
|-----------------------|-----------|-------------------|---------|------------------|
| | | ح عهد | | |
| প্ৰস্তাব | * . | পারাশফ্র্ | weg the | |
| नित्रक्षनी माधु | • | • • • • • • | | ় পৃ ষ্ঠা |
| ~ | ••• | ••• | ••• | ८४८ |
| মান্ভাব | ••• | ••• | . ••• | . ১৮৯ |
| কিশোরী ভব্দনী | ••• | *** | ••• | ১৯২ |
| কুলিগামেন | ••• | ••• | ••• | 358 |
| টহলিয়া বা নেমো বৈ | ষ্ণব | ••• | ••• | 386 |
| দশামাগী | ••• | ••• | ••• | 286 |
| নেজ্যীও শাব্দী | ••• | ••• | ••• | ১৯৬ |
| নরেশ পন্থী | ••• | • | ••• | ১৯৬ |
| পাঙ্গুল | ••• | ••• | ••• | ₹0₹ |
| কেউড়দাস | ••• | ••• | ••• | २०२ |
| ফকির সম্প্রদায় | ••• | ••• | ••• | ₹09 |
| কুন্তু পাতিয়া | ••• | •••• | ••• | ₹08 |
| থোজা | ••• | ••• | ••• | ₹0€ |
| | | টিপ্পনি। | | |
| বেদশান্ত্র বহু দেবতার | উপাসনা | । প্রতিপাদক কি না | ••• | २०७ |
| নবরত্ব | ••• | ••• | ••• | ২০৬ |
| রঘুবংশ ও কুমারসম্ভব | ••• | ••• | ••• | 209 |
| ভারতবর্ষীয় চিকিৎসা | ••• | ••• | ••• | २0৮ |
| কথাসরিৎসাগর ও ভে | াট দেশীয় | कर्-श्वात् | ••• | ২০৯ |
| শঙ্করাচার্য্য | ••• | ••• | ••• | ۲0۶ |
| অশোকের নাম পিয়দস | ্সি | ••• | ••• | ₹\$0 |
| পৌত্তলিকতা পরিত্যার্গ | - | ••• | ••• | ₹ >> |
| ভূপ | ••• | ••• | ••• | .२১১ |
| গয়া | ••• | ••• | ••• | २५७ |
| যবৰীপে হিন্দুধৰ্ম | ••• | ••• | ••• | 228 |
| বাজালা দেশীয় শিক্ষিত | লোক,- | –আত্মশাসন প্রভৃতি | • • • | - ₹₹ |

क्रिकेसीय छेशानकप्रकाश ।

প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ১০৫ পৃগার ৮ পঙ্জির পর।

উপনিষদে হিন্দু জাতির বৃদ্ধি-বিকাশের স্থাপন্ত পরিচর প্রাপ্ত হওরা গিরাছে। বৃদ্ধি-জ্যোতি: একবার প্রকাশিত হইতে আরম্ভ হইলে, আর স্থির থাকে না; নানা দিকে কিরথ-জাল বিকীণ করিতে থাকে। তদ্মু-সারে, বেদের সংহিতা, ত্রাহ্মণ ও উপনিষদ অবলম্বন করিয়া ক্রমে ক্রমে পরমার্থ-সংক্রান্ত করেকটি মত উৎপাদিত হর, তাহার নাম দর্শন। তাহার মধ্যে ছয়টি দর্শন প্রাচীন বলিয়া পরিগণিত আছে; সাঝ্যা, পাতঞ্বল, ভার, বৈশেষিক, মীমাংসা ও বেদাস্ত।

পরমার্থ-তত্ত্ব-অন্থসদানই শতারতবর্ষীয় দর্শনশাস্ত্র সমুদায়ের প্রধান
উদ্দেশ্য। জগতের কারণ-নির্মার্থণ ও মনুষ্টোর মুক্তি বা পারলোকিক
দলগতি-সাধনের উপায়-নির্দারণ-বিষয় দেই সমুদায়ে বিচারিত হইরাছে।
এ প্রবন্ধটি পরমার্থ-বিষয়ক; অত এব এ স্থলে সেই ছইটি পারমার্থিক বিষয়
ক্রমশং অতি সংক্রেপে লিখিত হইতেছে।

সান্তা।

মহর্ষি কপিল সাঙ্খ্য-মতের প্রবর্ত্তক। তিনি ঈশ্বরের অতিত স্বীকার করেন নাই,

र्रुखरासिष्ठे:।

मधि। धरहम । २२ एउ ।

কেম না ঈখরের অন্তিত্ব সঞ্চমাণ হয় না ⇒। যদি ঈশুরের অন্তিত্ব সঞ্চমাণ না হইবা, তবে কিরুপে বংগতের স্ষ্টি

কশিল, কবির এই নাতিকতা-বাদ প্রতিপদ্ধ করিবার উল্লেখ সাংখ্যপথিতেয়।
রানারপ তর্ক-বিওক করিয়াছেন। কেব কেব করেন, পায়ের মতে য়খন নির্ভূপ ও বর্গং

ভারতবর্ষীয় উপাসক-সম্প্রদায়

হর, এ বিষয় স্থতরাং তাঁহাকে বিবেচনা করিতে হইরাছিল। তিনি বিচার করিরা দেখিলেন,

नावसुनो वसुसिन्धि:।

সাধ্যপ্ৰবচন । ১। ৭৮ হত।

পূর্ব-ছিত বস্তু না থাকিলে, কোন বস্ত উৎপন্ন হয় না।

नासदुत्पादी तृशृङ्गवत्।

সাখ্যপ্রথাবচন। ১। ১১৪ প্রে।

মুমুব্যের শৃক্ত থাকা বেমন অসম্ভব, অসৎ অর্থাৎ অবস্ত হইতে কিছু উৎপক্ষ হওয়াও সেইরূপ অসম্ভব।

उपादाननियमात्।

সাখ্যপ্ৰক্ৰ। ১। ১১৫ কুতা।

भाषा। सदीव घट उत्पदाते तन्तुष्वेय पटंद्रत्येवं कार्य्याचासुपादानकार्यं प्रति

কেন না, প্রত্যেক বস্তুরই উপাদান-কারণ* খাকে এইরূপ নিরম আছে ; বেমন মৃতিকা ঘটের ও স্ত্র পটের উপাদান।

স্থাৰ অৰ্থাৎ নানাপ্সকার গুণ-বিশিষ্ট; অতএব নিগুৰ্ণ ঈখর হইতে কিরূপে স্থান সংসারের উৎপত্তি হইল প

साङ्ख्याचार्या चाहः निर्मृषलादीयरस्य क्षयं सगुणतः प्रजा जायेरन्।
७> সাংখ্য-কারিকার ভাষা।

সাখ্যাচার্ব্যেরা বলিরা পিরাছেন, নিশুণি ঈবর হইতে কিরপে সগুণ প্রজা উৎপন্ন হইল।
কান কোন ব্যক্তি বলেন, জগতে কেই বা হুখী ও কেই বা হুংখী ইইরা
খালে। যদি ঈবর স্বান্ধী করিতেন, ভাছা হইলে জীবের হুখ হুংখের এরপ বৈষম্যালোৰ ঘটিত না। অতএব ঈবর নাই। কিন্তু ঘটকা-যন্ত্র, বাল্পীর যন্ত্র, প্রস্থকারের
শ্বন্থইত্যাদি বল্পতে বেরপ বৃদ্ধি-কোলন বিদ্যানা আছে, বাঁছারা এই বিশ্ব-বন্ত্রে তদপেকা
শত সহত্র গুণ কৌশল রাশি দর্শন করিরা প্রজাবান্ বিশ্ব-কারণের অন্তিত্ব অঙ্গীকার
করেন, এবং সেই সমন্ত অন্তুত কৌশল অনির্বাচনীর-কৌশল-সম্পন্ন নৈস্গিক আদির
নির্বের কার্য্য জানিরা বিশ্ব-নিরন্তার অচিন্ত্য মহিমার অভিমাত্র আধিক্য প্রদর্শন
করিরা থাকেন, সাংখ্য-পণ্ডিভদিপের উলিধিত আগন্তি উল্লেক্তর বন্ধান বিশ্বরে
এক্দিন উল্লাপ্তিক ইংলে হইতে পারেন, ঐ আগন্তি ঈশ্বের ব্যর্গণনির্দ্ধার বিশ্বরে
এক্দিন উল্লাপিক হইলে হইতে পারে, কিন্তু উল্লার অন্তিত্ব-নির্বাণ্ধিব্যরে কোন রূপেই
সিরোজিত হইতে পারে না।

नाश: कार्णलय:॥

माबाध्यवहन । ১ । ১২১ खूज ।

कांत्रत्व लग्न शांख्यात्क नाम वर्णन

এই কয়েকটি স্তের তাৎপর্য এই যে, প্রথমে কিছু না থাকিলে, অকস্মাৎ অমনি কোন বস্ত উৎপশ্প হইতে পারে না। সকল বস্তই পূর্ব্ব-স্থিত কোন না কোন বস্ত হইতে উৎপশ্প হয়; যেমন মৃত্তিকা হইতে ঘট, ত্বশ্ব হইতে ছবি, রহত হইতে মৃদ্রা ইত্যাদি।

বে সময়ের কথা লিখিত হইতেছে, সে সময়ের পক্ষে এই ভাবটি অতাব প্রগাঢ়। ইহা কপিল ঋষির গুক্তর চিস্তার ফল। উল্লিখিত স্ত্র-গুলির ভাবার্থ পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে বোধ হয়, মহর্ষি যেন বুদ্ধি-যোগে জগতের স্পান-রহ্তীয়ের তল-স্পার্শ করিতে উন্মত হইয়াছেন; কিন্ত তাহার উপায় নাই!

কপিল ঐ করেক মূল স্ত্রামুদারে প্রকৃতিপুক্র নামে ছইটি নিত্য পদার্থ শীকার করেন। প্রকৃতি অচেতন-স্বরূপ অর্থাৎ জড়। ইহারই পরিণাম অর্থাৎ বিকার দারা সমুদায় বিশ্ল-ব্যাপার উৎপন্ন হইয়াছে।

এই প্রকৃতি আদি কারণ; ইহার আর কারণ নাই। কপিল ইহাকে অমূল-মূল বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন।

मृले मृलाभावादमृलं मृलम्।

माधाधबहन। >। ७१ यूर्व।

ম্নের অর্থাৎ প্রকৃতির মূল ৰাই, অতএব প্রকৃতি মূল-শুন্ত।

ফলতঃ সেই আদি কারণ হইতে ক্রমশঃ কার্যা-পরম্পরার উৎপত্তি হয় বলিয়াই, কপিল ধাষি ভাহারই নাম প্রস্কৃতি + রাধিরাছেন। উহা আদি কারণের নামমাত্র।

पारम्पर्येऽप्ये कत परिनिष्ठे ति संज्ञामात्रम्।

मार्थाञ्चरम्। ১। ७४ युव ।

কারণের কারণ ও সেই কারণের পুনরায় অন্ত কারণ এইরুণ যদি কারণ-পরম্পরা

मन्दीतीति प्रकृतिः।

থাকে, তাহা হইলেও একছানে গিয়া কারণের পর্যবসান হইবে। প্রকৃতিই সেই আদি কারণের সংজ্ঞাসাত বই আর কিছুই নয় ।

বেমন হগ্ধ হইতে দধি, দধি হইতে ন্রনীত ও নবনীত হইতে স্বত উৎপন্ন হয়, সেইল্লপ, সকল বস্তুই সাক্ষাৎ বা পরস্পরা সম্বন্ধে ঐ প্রকৃতিরই পরিণাম ছারা উৎপন্ন হইনা থাকে। জ্বগতের যাবতীয় পদার্থ মূল প্রকৃতিরই কার্যা-পরস্পরা মাত্র †।

জগতের বস্তু সমুদারের উত্তম, মধ্যম, অধম তিন প্রকার স্বভাব দেথিয়া
মহর্ষি কণিল উহার মূল-স্বরূপ উত্তম, মধ্যম, অধম তিনটি গুণ স্বীকার
করেন; সন্ধ, রজঃ ও তমঃ। পূর্ব্বোক্ত মূল প্রকৃতি এই তিনের সাম্যাবস্থা
বলিয়া উক্ত হইয়াছে।

सस्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः। 🗧

সাখ্যপ্রবচন। ১।৬১ হত।

প্রকৃতি সত্ব, রক্ষঃ ও তমোগুণের সাম্যাবছা-সরপ।

প্রকৃতি জড় পদার্থ, অথচ কিরুপে গুণের স্বরূপ বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে এ সংশয় উপস্থিত হইতে পারে। সংশয় কেন ? বৃদ্ধিমান্ ব্যক্তিরা অক্লেশেই বলিতে পারেম, এ কথাটি তো বৃবিবার কথা নয়। কিন্তু সহসা গুনিলে এ বিষয়টি যতদুর অবোধ-গম্য বোধ হয়, বাত্তবিক ততদুর নয়। সচরাচর গুণ শব্দের বেরূপ অর্থ প্রচলিত আছে, সাল্য্য-শাল্রোক্ত ঐ তিন গুণের সেরূপ অর্থ নয়। ঐ তিনটি উত্তম, মধ্যম, অধ্যম তিন প্রকার বস্তু-স্বরূপ। লোকে বেমন গুণ অর্থাৎ রক্জু দিয়া গো-মহিয়াদি পশু বন্ধন করে, সেইরূপ, পুরুষ অর্থাৎ জীব ঐ সন্থ রক্ষঃ প্রভৃতি তিন বস্তু ধারা বন্ধ হইয়া আছে; এই নিমিক্ত ঐ তিনটি পদার্থ গুণ বিলয়া উল্লিখিত হইয়াছে। অতএব সাল্যা-শাল্রোক্ত ঐ তিনটি গুণ প্রস্তুত গুণ নয়; গুণবিশিষ্ট বস্তু।

বিজ্ঞানভিকু-কৃত ভাব্য।

† অধুনাতন বিজ্ঞানবিৎ সর্ক্রথান ইয়ুরোপীয় পণিত-স্প্রবারের স্কৃতিবিবরক নত The Theory of Evolution: কিয়নংশে কি এই সাংখ্য-মতের অসুন্ধাপ বোৰ হর না ? তাহারা বলেন, বেনন শৃক কীট রূপান্তরিত হইরা প্রজ্ঞাপতি উৎপন্ন হর, সেইরূপ এক বস্তু ও এক প্রাণী পরিণত হইরা অন্তুর ও অক্ত প্রাণী উৎপন্ন ইইরা আসিরাছে। ক্লিল ক্রিছাদের ঐ সভের একটি সমুচিত অরুর রোগণ করিয়া সিরাছেন একথা বলিলে কি বলা বার না?

प्रकृतिरिष्ठ सूलकारबस्य संज्ञामार्वासत्यर्थः ॥

सस्वादीनि द्रव्याणि न वैभिषिका गुणाः संयोगिवभागवत्तात् समुख्यस्तत्वादि-धर्माकत्वाच । तेष्वत्र भास्त्रे युत्थादी च गुणभन्दः पुरुषीपकरणत्वात् पुरुषपग्रवन्यक-विगुणात्मकमद्वदिरज्जुनिर्माढलाच-प्रयुज्यते॥

সাখ্যপ্ৰবচন-ভাষ্য।

সন্ধ্, রজঃ, তমঃ এই তিনটি পদার্থ ক্রব্য; বৈশেষিক-মতামুদারী গুণ নর, কেন না ভাহারা সংযোগ, বিরোপ, লযুত্, চলত্ব, গুরুত্বিদি গুণ-বিশিষ্ট। লোকে বেমন গুণ অর্থাৎ রজ্জু দিরা বন্ধন করে, সেইরূপ, পুরুষ অর্থাৎ জীবাত্মারূপ পণ্ড সেই সন্ধাদি তিন ক্রব্যে প্রস্তুত মহন্ধাদি * ত্রিগুণ রজ্জু হারা বন্ধ হইয়া আছে, এই নিমিত্ত সান্ধ্য ও বেদাদি শাল্লে সেই তিন ক্রব্য গুণ বলিরা ব্যবহৃত হইয়াছে।

জগতের চেতনাচেতন সমুদার বস্ততে ঐ তিন গুণের শক্তি লক্ষিত ইয়া থাকে; যেমন সন্থ গুলুর শক্তিতে অগ্নির উর্জ-গতি এবং মহুব্যের স্থ ও পুণ্যের উৎপত্তি হয়। রজোগুণের প্রভাবে বায়ুর প্রচণ্ড বেগ এবং মহুব্যের পাপ জন্মে। তমোগুণের পরাক্রমে জল ও মৃত্তিকার অধোগতি এবং মহুব্যের মৃচ্তা ও মনস্তাপ উৎপন্ন হয়।

এই তিনটি গুণের কার্যা ও পরস্পর সম্বাদি লইরা সাখ্যা-শাস্ত্রে সবিশেষ আন্দোলন সহকারে অনেক তর্ক, বিতর্ক, বিচার ও সিদ্ধান্ত আছে। সেই সমস্ত কুটিল ও জটিল অবাস্তবিক বিষয়ের বৃত্তান্ত লিখিলে, পাঠকগণের অমুধ বই মুখের বিষয় হইবে না। ফলতঃ একবার মনে হয়, চিরকাল এই সমস্ত প্রাস্তি-ভার বহন করিবারই বা প্রয়োজন কি ? পুনর্বার ভাবি, ইতিহাস-রচয়িতা-দিগকে সত্য মিথ্যা সকলই কীর্ত্তন করিতে হয়। স্বর্য্য-জ্যোতিঃ বিশ্বদান্তন করিলে কখন বা মুখী ও কখন ছঃখিত হইতে হয়। এই পুস্তকের অধিকাংশই ভো প্রান্তি-ভ্ধরের বর্ণনা বই আর কিছুই নয়। মাহুষে বৃত্তি প্রতি ছর্ভেন্য ভ্ধর-শ্রেণীর বহুতর শৃক্ষ অভিক্রম না করিলে, তম্ব ভ্রন আরোহণ করিতে সমর্থ হয় না। অনেকেই ভ্রপাত-ঘটনা প্রযুক্ত চিরদ্বিন পর্বতে পর্বতে পূর্বিত হইতে থাকে।

পুরুষ চেতন-স্বরূপ, কিন্তু স্থা-ছ:খাদি-শৃষ্ট। ইনি অপরিণামী অর্থাৎ বিকার-শৃষ্ট, এবং অকর্ত্তা অর্থাৎ কোন কার্যাই করেন না। সমুদার বিষ্ণ ব্যাপারই প্রকৃতির কার্যা। এই পুরুষই প্রাণীদিসের আত্মা-স্বরূপ; স্থুতরাং

নহভবের অর্থ পশ্চাৎ কেবিতে পাইবে।

যত প্রাণী, ততই পুরুষ বলিতে হয়। কপিল ঋষি জগতের সচেতন অচেতন ছই প্রকার পদার্থ দেখিয়া তাহার মূলস্বরূপ ঐ ছইটি পদার্থের অভিত্ব স্বীকার ক্রিয়াছেন বোধ হয়।

ঐ প্রকৃতি ও পুরুষ পরস্পর-সাপেক। লোহ ষেমন চুম্বক সমীপত্ত হইলে চুম্বকের দিকে গমন করে, সেইরূপ, প্রকৃতি ঐ পুরুষ-সন্নিধান প্রযুক্ত বিশ্বনার প্রযুক্ত হইয়া থাকে। পঙ্গু ও অন্ধ প্রত্যেকে ষেমন স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র ইচ্ছান্ত কোন স্থানে গমন করিতে সমর্থ হয় না, কিন্তু যদি অন্ধ ব্যক্তি পঙ্গুকে নিজ্ক করেছিয়া তাহার প্রদর্শিত পথ অবলম্বন করে, তাহা হইলে উভয়েই নির্দিষ্ট স্থানে উপনীত হইতে সক্ষম হয়। সেইরূপ, প্রকৃতি নিজে জড় হইলেও পুরুষ-সহযোগে সংসার-ব্যাপার সম্পাদন করিতে সমর্থ হইয়া থাকে।

সাদ্যা-শাস্ত্রকার ঐ প্রকৃতি পুরুষ প্রভৃতি পঁচিশটি পদার্থ স্বীকার করিয়া তাহার নাম ওত্ব রাথিয়াছেন। সেই পঁচিশ তৃত্ব এই ; প্রকৃতি, পুরুষ, মহৎ *, অহঙ্কার † মন, এবং পশ্চাল্লিথিত পঞ্চ মহাভূত, পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্রির, পঞ্চ কর্মেন্দ্রির ৩ পঞ্চ ত্রাবে।

| 11 - 41-1 | | d. | |
|----------------|---------------|---------------|-------------------|
| মহা ভূত | জ্ঞানে ক্রিয় | ক শেম জিল স্ব | তন্মাত্র |
| মৃত্তিকা | 5 | হস্ত | দ্ধপ |
| ब ल ं | क र्ग | পদ | র্গ |
| বায়ু | নাসিকা | ব াক্ | গন্ধ |
| অগ্নি | রস্ন) | পায়্ | क्श्रा व्य |
| জাকাশ | ত্বক্ | উপস্থ | শক |

এই দর্শনে ঐ পটিশটি তত্তের সংখ্যা আছে, এই নিমিত্ত ইহা সাম্যাদর্শন ব্লিয়া প্রসিদ্ধ হইয়াছে।

বে অবস্থার সন্থ রজঃ ও তমঃ সমান ভাবে থাকে, অর্থাৎ উহার কোনগুণের উদ্রেক বা ক্রিয়া থাকে না, সেই অবস্থাকে তাহাদের সাম্যাবস্থা বলে। পরে ক্রমশঃ গুণের উদ্রেক হইরা জগতের সৃষ্টি হইতে থাকে।

মহতত্ত্ব বৃদ্ধি-বরণ। তত্ত্বারা বাবতীয় বিবরের কর্ত্তব্যকর্তব্যতা নির্দ্ধারত হয়।

[†] আনি করিতেছি, আমার গৃহ, আমার পুত্র, আমি ধনী, আমি গৃভিত ইন্ড্যারি অভিযান

দাখ্য-শাস্ত্রে যেরপ স্থাষ্ট-প্রেক্তিরা লিখিত আছে, পশ্চাৎ বিবরণ করা ঘাইতেছে।

'প্রকৃতি হইতে মহন্তবের উৎপত্তি হর, মহন্তব হইতে অহন্বার হর, সব-গুণোদ্রিক ঐ অহন্বার হইতে জ্ঞানেন্দ্রির, কর্ম্বেন্দ্রির ও মনের উৎপত্তি হর, রজোগুণোদ্রিক অহন্বার ইইতে পঞ্চতনাত্র জন্মে এবং পঞ্চতনাত্র ইইতে পঞ্চমহাভূত কর্মে। তাহারও প্রণাণী এইরূপ; শব্দ-তন্মাত্র হইতে আকাশ হর, আকাশের গুণ শব্দ। শব্দ-তন্মাত্র ও প্রশানি তন্মাত্র এই উভর হইতে বায়ু জন্মে, বায়ুর গুণ শব্দ ও স্পর্শ। ঐ তূই তন্মাত্রের সহিত রপ-তন্মাত্র ইইতে তেজ জন্মে, তেজের গুণ শব্দ, স্পর্শ ও রপ। ঐ তিন তন্মাত্রের সহিত রস-তন্মাত্র হইতে জন হর, জনের গুণ শব্দ, স্পর্শ, করপ আর রস। ঐ চারিটি তন্মাত্র সহকারের গন্ধ তন্মাত্র হইতে পৃথিবী হর, পৃথিবীর গুণ শব্দ, স্পর্শ, রস ও গন্ধ। এই পঞ্চ মহাভূত হইতেই চতুর্দ্দশ ভূবন ও তদন্তর্বব্রী কার্য্যজাত হয়।"

সাজ্য-শাস্ত্রের কোন কোন ক্লংশে সমধিক বৃদ্ধির প্রাথব্য প্রদর্শিত হইরাছে তাহার সন্দেহ নাই। কিন্তু এ অংশটি নিতান্ত মন:কল্লিত একথা এখন বলা বাহুল্য। যে সময়ে, ভূমগুলে বিজ্ঞান-রাজ্যের পশ-প্রদর্শক বেকন্ ও কোন্তের জন্ম হয় নাই, সে সময়ে আর অধিক প্রত্যাশা করাই বা কেন ?

সাধ্যা-পণ্ডিতের। সংসারের যাবতীয় তাপ অর্থাৎ ছংথ তিন ভাগে বিভক্ত করেন; আধ্যাত্মিক, আধিভৌতিক ও আধিদৈবিক। জরাদি রোগ, প্রিয় বস্তর বিয়োগ ও অপ্রিয় বস্তর সংঘটন, এবং কাম, ক্রোধ, লোভাদি ছারা বে সকল হংথের উৎপত্তি হয়, তাহার নাম আধ্যাত্মিক হংখ। অগ্নি, বায়ু, জলাদি হাবর এবং পশু, পক্ষী, কীটাদি অহাবর বস্ত হইতে যে সমস্ত হংখ-ঘটনা হয়, তাহাকে আধিভৌতিক হংখ বলে। শীত, উষ্ণ, বাত, বর্ষা, বজ্রপাতাদি হইতে উৎপন্ন হংখ সমুদায় আধিদৈবিক হংখ বলিয়া উলিখিত হয়।

सनामादुपजायते। पाधिदैविका देवानानिदं दैविकम् । दिवः प्रभवतीति वा दैवं तद्धिकाय यदुपजायते भौती शावातवर्षां मनिपातादिकम् ॥

ঈশ্রকৃষ-প্রণীত সাংধ্যদারিকার অন্তর্গত প্রথম কারিকার গৌরপাদকৃত ভাষ্য।

হংধ তিন প্রকার; আধ্যাত্মিক, আধিভৌতিক ও আধিদৈবিক। ঐ আধ্যাত্মিক হংধ ছই প্রকার; শারীরিক ও মানসিক। বাত পিত ও শ্লেম-ধাত্র ব্যতিক্রম জনিত জ্বরাতিসার প্রভৃতি রোগের নাম শারীরিক হংধ। জ্বী, পুত্র, ধনাদি প্রিম্ন পদার্থের বিয়োগ এবং কারারোধ ও কলঙ্ক রটনাদি অপ্রিম্ন ঘটনার নাম মানসিক হংধ। জ্বরায়ুজ, অগুজ, স্বেদজ্ক ও উদ্ভিজ্জ-জনিত চারি প্রকার হংথকে আধিভৌতিক হংধ বলে। তাহা মহ্য্য, পশু, মৃগ, পক্ষী, সরীস্থপ, দংশ, মশক, উৎকুণ, মৎকুণ, মংহ্য, মকর, কুন্তীর ও বৃক্ষাদি স্থাবর বস্ত হইতে উদ্ভূত হয়। দেবতা অথবা দিব, অর্থাৎ আকাশ হইতে উৎপন্ন হংথকে আধিদৈবিক হংধ বলে; বেমন শীত, উষ্ণ, বাত, বর্ষা, বজ্পাতাদি নিবন্ধন হংধ।

ব্যক্তিমাত্তেই এই তিন প্রকার তাপে সম্বস্তা। মহুব্যদিগকে এই ত্রিতাপ হুইতে মুক্ত করা সাজ্যা-দর্শনের প্রধান উদ্দেশ্য।

दु:खत्रयाभिघाता जिज्ञासा॥

माःशकातिका। ३।

जिविध-पू:ध-विनाटमंत्र **উ**शीय विकामा ।

বিবেক অর্থাৎ তত্ত্বজ্ঞানই এই রূপ মৃক্তি-সাধনের একমাত্র উপায়।

জীবের হুথ-ছ:খ পূর্ব্বোল্লিথিত মূল প্রকৃতির কার্য। ঐ উভরের নিংশেষে নির্ত্তি হওয়াকেই মৃক্তি কহে। তবজান ঐ মৃক্তির কারণ। প্রকৃতির সহিত পুরুষের ভেদ-জানকেই তবজান বলে।

এই দর্শনের মতে ধর্ম ছেই প্রকার; অভ্যাদর-ছেতু ও নি:শ্রেরস-ছেতু।
বজ্ঞাদির অমুঠান দারা যে ধর্ম-সাধন হয়, তাহাকে অভ্যাদর-ছেতু বলে;
তদ্ধারা ঐহিক ও পারত্রিক হথ সম্পন্ন হয়। অষ্টাঙ্গ যোগের অমুঠান দারা বে
ধর্ম্মের উৎপত্তি হয়, তাহাকে নি:শ্রেরস-হেতু কহে; তদ্ধারা তব্জ্ঞান উৎপন্ন
হুইরা মুক্তি লাভ হয়।

বেরপ জানের আবির্ভাব হইলে মুক্তি লাভ হয়, ঈশ্বরক্ষ তাহার পশ্চা-লিখিতরপ বর্ণন করিয়াছেন। एवं तत्त्वाश्वासात्रात्वा न न नास्तित्वपरिश्चित्रम् स्विपव्यं वास्तिस्त नेवलस्त्-पद्मते ज्ञानम्।

गाःशकात्रिका। ७८।

এইরূপ তত্তামূশীলন করিলে, আমি নাই; আমার শরীর নাই, কেন না আমি ভিন্ন, শরীর ভিন্ন; আমি অহকার-বর্জিত এই শেষ-সিদ্ধান্ত-ত্বরূপ এবং নিঃসংশ-রিতা-প্রযুক্ত বিশুদ্ধ একমাত্র জ্ঞানটি উৎপন্ন হয়। (এই জ্ঞানে মুক্তি হয়)।

চিরকাল হিন্দু-সমাজে বেদের কি অতুল প্রভাব ও চ্র্জন পরাক্রমই চলিরা আসিরাছে! কপিল ঈশরের অস্তিছ অক্রেশে অস্বীকার করিলেন, কিন্ত বেদের মহিমা অগ্রাহ্য করিতে পারিলেন না। তিনিও বেদার্থ প্রামাণিক বলিরা অঙ্গীকার করিরাছেন।

सिचकपवीष्त्वाद्वाक्यार्थीपदेश:॥

माधाश्यक्त। १। ३४ युवा

भाष--- हिरखारभीदीनां सिङ्गरूपस्य यथार्थस्य । रक्षतारकात व्यर्थानराम ध्यमान, रक्त ना उनीव क्छी वर्शार्थ वर्ष व्यक्तिरजन ।

সাখ্য একটি প্রাচীন দর্শন। স্থপ্রসিদ্ধ উপনিষ্ণ, মহাভারত ও **অস্থান্য** অনেক শাস্ত্রে উহার প্রসঙ্গ আছে।

> नित्योऽनित्यानां चेतनश्चेतनानां एकोबइनां यो विद्धाति कामान्। तत् कारणं सांस्ययोगाधिगम्यं जाता देवं सुचति सर्व्वपागै:॥

> > ষেভাষভয়োপনিষৎ। ৬।১৩।

বিনি সমুদর অনিত্য বস্তুর মধ্যে নিত্য ও সমত সচেত্দ প্রার্থের চেত্রবন্ধপ এবং বিনি এক হইরাও বহু জীবের কামনা পূর্ব করেন, সেই সাখ্যবোগের অধিগম্য ও কারণ-বন্ধপ ক্ষমনক কানিতে পারিলে সকল পাশ হইতে মুক্ত হওরা ধার।

কেবল সাঞ্চযোগ কেন ? ঐ বোগ-প্রবর্ত্তক কণিল ধ্ববির নাম পর্যন্ত ঐ উপনিবলে বিনিবেশিত আছে।

> म्हंबि' प्रस्तं कपिलं यस्तमग्रे शानेव्यिमसि । विषयिक्तानिकः । १ । १ ।

ৰিনি প্ৰস্তুত কণিল গাবিকে প্ৰথমে আন যারা পোৰণ করেন।

ৰহাভারতীয় শান্তিপর্কে সাংখ্যবোগের সবিশেষ বিষয়ণ ও বার পর নাই প্রশংসাবাদ সন্ধিবেশিত আছে ।

माण्डिगर्स । त्याक्यम् । २२२।२२८ व्यथार्वः

नास्ति साङ्ग्यसमं ज्ञानं नास्ति योगसमं बलम्।

মহাভারত। শান্তিপর্ক। মোক্ষর্ম। ৩১৮ আ।২।

সাখ্য বিদ্যার পর আর বিদ্যা নাই। বোগ-বল্কের পর আর বল নাই।

পশ্চাৎ দেখিতে পাওয়া যাইবে, মহুসংহিতা-রচনার সময়েও সাংখ্যদর্শন প্রচারিত থাকিবার বহুতর নিদর্শন লক্ষিত হইলা থাকে।

কপিল সগর-বংশ ধ্বংস করেন * এইরপ লিখিত আছে। গলাসাগরে কপিলাশ্রম নামে একটি স্থানও বিদ্যমান রহিয়াছে। প্রতি বংসর তথার ভার্ত্তিক মাসে ও মকর সংক্রান্তিতে মহাসমারোহ পূর্ব্বক তাঁহার পূজা হইরা থাকে। কপিল স্থপ্রসিদ্ধ নাত্তিকতাবাদী হইলেও, স্বধর্ম-পক্ষপাতী হিন্দুকাতির পূজা হইরা রহিয়াছেন ইহা সামান্য কৌতুকের বিষয় নর।

কপিল-প্রণীত সাংখ্যপ্রবচন ও তত্ত্বসমাস, বিপ্লানভিক্ষ্-কত সাংখ্য-সার ও সাংখ্যপ্রবচন-ভাষ্য, ঈশ্বরক্ষও-কত সাংখ্যকারিকা, গৌড়পাদ-কত সাংখ্যকারিকা-ভাষ্য, নারারণতীর্থ-কত সাংখ্যচন্দ্রিকা, ত্রিভ্তনিবাসী বাচম্পতি মিশ্র কত সাংখ্যতত্ত্বকৌমুদী ইত্যাদি অনেকানেক সাংখ্যশাল্রে এই দর্শনের বিষয় প্রতিপাদিত হইরাছে।

পাতঞ্জল দর্শন।

পতঞ্জলি মুনি এই দর্শন প্রাবর্ত্তিত করেন এই নিমিন্ত ইহাকে পাতঞ্জল দর্শন বলে। ইহা যোগ-শাল্ল।

সাংখ্যদর্শনের সহিত এই দর্শনের অনেক বিষয়ের ঐক্য আছে। কপিল বেষন প্রকৃতি প্রকৃষ প্রভৃতি পঁচিশটি মূল তত্ত্ব স্থীকার করেন, পতঞ্জলিও সেইরপ অঙ্গীকার করেরা গিরাছেন। বিশেষ এই বে, কপিল মূনি ঈশরের অতিত্ব অঙ্গীকার করেন নাই, পতঞ্জলি বিখাতীত বিখ-নির্মাতা সর্বব্যাপী সর্ব্বশক্তিমান্ প্রমেশরের সন্তা স্থীকার পূর্ব্বক মহুষ্যের পরিত্রাণ-সাধন উদ্দেশে যোগশাল্ল প্রবর্ত্তন করেন। এই নিমিত্ত পাতঞ্জলদর্শন সেশর ও কপিল-দর্শন মিরীশর সাংখ্যদর্শন বলিয়া উল্লিখিত হইয়া থাকে।

^{*} ভাগৰত-পুরাণ-কর্তা এই কথাটি অবিবাস করিয়া গিয়াছেন। তিনি এইরূপ বলেন, রাজপুত্রেরা মুনির কোপানলে দক্ষ হইরাছিল এ প্রবাদটি সত্য নর। বিনি মুমুকু লোকের ভব-সমুক্ত উদ্ভরণ উদ্দেশে সাধ্যরূপ নৌকা প্রস্তুত করিয়াছেন, তিনিই কিঁমপে ফোধের ক্রীভুত হুইছে, পারেন ?—ভাগৰত। ১৮৮১২৩১৬।

পতঞ্জালির মতে ঈশার লইয়া বড় বিংশতি তত্ত্ব হয়। জিনি বলিয়া গিয়াছেন জগদীখন খেচছামুসারে শরীর ধারণ করিয়া জগৎ নির্মাণ করেন। অভএব ভাঁহাকে একরূপ সাকারবাদী বলিলেও বলিতে পারা যায়।

षड्विंग्रस्तु परमिश्वर: क्रियक्यीविपाकाग्रवैषपराम्बष्ट: पुरुष: खेष्क्या निकाषकायमधिन स्राय जीकिकवैदिकसम्पदायप्रवर्षक: संसाराङ्गारी तप्यमानाना प्रायम्तामनुगाङ्कसः। नर्दार्णनगःथवः। शाउसनः।

পরমেশর বড়্বিংশ তত্ত্ব। সেই পুরুষ ক্লেশ+, কর্ম, বিপাক† ও আশর‡ বর্জিত; বিশ-রচনার্থ থেছে মুসারে সরীর ধারণ পূর্বক বৈদিক ও লৌকিক সম্প্রদার প্রবর্তিত করেন এবং সংসারানলে দহামান প্রাণিগণের প্রতি অনুপ্রই প্রকাশ করিয়া থাকেন।

মস্বাের নানারূপ চিন্তবৃত্তি আছে এবং সেই সমস্ত বৃত্তির ভিন্ন বিষয় নির্দািরিত আছে; যেমন দ্বালনের বিষয় রূপ, শ্রবণের বিষয় শব্দ, ছাণের বিষয় গদ্ধ ইত্যাদি। অন্তঃকরণকে ঐ সকল বিষয় হইতে নিবৃত্ত করিয়া প্রমেখরাদি ধ্যের বস্তুতে সংস্থাপন পূর্ব্ধক তন্মাত্র ধ্যান করাকে যোগ বলে। ঐ বােগের যম নিয়মাদি আটটি অঙ্গ আছে। পাঠকগণ এই পুস্তকের অন্তর্গত বােগি-সম্প্রদায়ের বিবরণ মধ্যে ভাহার স্বিশেষ বৃত্তান্ত দেখিতে পাইবেন।

পাতঞ্জলের মতেও তব্জ্ঞান বারা মুক্তি লাভ হয়। পুরুষ অর্থাৎ জীবাত্মা জড়ময় জগৎ হইতে নিতান্ত পৃথক্তৃত এইরপ জ্ঞানকে তব্জ্ঞান বলে। ইহার অন্ত একটি নাম বিবেকখ্যাতি। ক্ষটিক যেমন প্রভাবতঃ শুলু, সেইরপ জীব প্রভাবতঃ চিন্ময়মাত্র। জ্ঞানবশতঃ সংসারে প্রাবৃত্ত হইয়া আমি স্থী, আমি ছংখী, আমি কর্ত্তা ইজ্ঞানি বোধ হইতে থাকে। উল্লিখিতরপ ভব্জ্ঞানের উদ্রেক হইলে জ্ঞান রহিত হইয়া কেবল ঐ চিন্ময় প্ররপই বিশ্বমান থাকে। ইহাকেই কৈবলা ও ইহাকেই মুক্তি বলে। বাহার তত্ত্ঞান সম্পার হইয়াছে তাঁহার এইরপ বোধ হইতে থাকে, আমি বাহা কিছু জানিবার জানিয়াছি, আমার সমুদ্র ক্লেশ ও সমুদ্র অনিষ্ঠ বিনষ্ঠ হইয়াছে, আমার

^{*} ক্লেশ পাঁচ প্রকার ; (১) অনিত্যে নিত্য-বোধ, হুংথে হথ-বোধ ইত্যাদি এম, (২) স্থানি গেহাদির স্বরূপ এইরূপ বোধ, (৩) রাগ, (৪) হেব, (৫) মরণ-আস।

[†] विशादक व वर्ष बाग्न, कांग्नु ७ श्रूब-छू:ब-एकांग्रज्ञ व कर्य-कन ।

[া] আশরের দুর্গ কর্ম-জনিত বাসনা-নামক সংখার-বিশেষ। উহা অন্তঃক্রণে আবছিতি করে এবং উহা হইতে কর্ম-ফলের উৎপত্তি হর।

বৃদ্ধির ৩৭ সকল চরিতার্থ হইরাছে, আমার তত্তাম উৎপন্ন ও সমাবি স্থস-ম্পান হইরাছে, এবং আমার প্রকৃত অরূপ প্রকাশ পাইরাছে।

এক পতঞ্চলি পাণিনি ব্যাকরণের ভাষ্য করেন। উহা ফণিভাষ্য ও মহাভাষ্য বলিয়া প্রাকি আছে। ঐ গ্রন্থ স্থলর কৌশলক্রেমে খু, পু, বিতীয় শতাদীর প্রথমার্দ্ধে বিরচিত বলিয়া প্রতিপর হইরাছে *। উরিধিত গ্রন্থ ও

• অভিমন্ত্য নামে এক নৃপতি নৃনাধিক ষাট্ খ্রীষ্টাম্পে কাশ্মীর রাজ্যে রাজ্য করেন; তিনি তথার প্তপ্রতিন-কৃত পাণিনি-ভাষ্য প্রচারিত করিরা যান। অভএব ঐ সময়ের পূর্বে উহা বিরচিত ও প্রচলিত হর বলিতে হইবে। ইহা হইলে, পতঞ্ললি ঐ সময়ের পূর্বকার লোক বলিরা অবশাই পরিগণিত হব। তাহার কত পূর্বে তিনি বিল্যান ছিলেন, এবন তাহা লিখিত হইতেছে।

পতঞ্জি মহাভাষ্যের উদাহরণ-স্থলে লিখিরাছেন, তাহার সময়ে ববনেরা অংগাধ্যা নগর ও রাধ্যমিকদিগকে অবরোধ করে।

পাণিদি ব্যাক্ষণে এই একটি পত্ৰ আছে বে,

चनदातने खङ्।

91313331

অনদাতন ভ্তকালে, অর্থাৎ অদ্যকার পূর্ব-ঘটিত বিবর ব্বিতে লঙ্ সংক্ষক বিভক্তি হর। পোণিনির লঙ্ মুক্ষবোধে বী বলির। উক্ত হইরাছে)।

परीची च खीकविज्ञाते प्रयोक्तर्दर्भनविषये।

কাত্যায়ন-কৃত বাৰ্ত্তিক।

বঢ়ি কোন বিষয় লোক-প্রসিদ্ধ হয় ও বক্তার পরোক্ষে অর্থাৎ অসাক্ষাৎকারে উপস্থিত হইরা থাকে, অথচ তাঁহা কর্ত্ব দৃষ্ট হইলেও হইতে পারিত, তাহা হইলে সে হলে এ লঙ্ সংক্রক বিভক্তি হইবে।

भाजक्षान देशा ब्राइटि छेपाइत्रम अपर्यन करतम, छाहात्र अकृष्टि अहे रव.

चक्चवनः सानितम्॥

বৰনে অযোধ্যা অবস্নোধ করিরাছে। অপর একটি এই বে,

चर्चचनीमाध्यमिकान्॥

খবনে মাধ্যমিক্দিপকে (অর্থাৎ মধ্যদেশীর লোক্দিগকে অথবা মাধ্যমিক নামক বৌদ্ধ সম্প্রদায়কে) অবরোধ করিয়াছে (১)'।

⁽১) মাধ্যমিক শব্দের একটি অর্থ মধ্যদেশীর। ঐ বেশের উত্তর সীমা হিমালর, দক্ষিণ সীমা বিজ্ঞাচল, পশ্চিম সীমা বিদশন অর্থাৎ কুলক্ষেত্র এবং চুপুর্বে সীমা প্ররাপ। ﴿ মজু ২ । ২১ ।) বৌদ্ধ সম্প্রধার-বিশেবের নামও মাধ্যমিক ।

পাতঞ্জনপূর্ণন উত্তরই এক ব্যক্তির প্রণীত বলিয়া ভারতব্যীয় পণ্ডিতগণের

বে ঘটনা পতপ্ৰলিব দৃষ্টি-গোচর হইলে হইতে পারিত, তিনি তাহারই ঐ ছইটি উদাহরণ প্রদর্শন করিরাছেন। পাঠকগণ পশ্চাৎ দেখিতে পাইবেন, বহু পূর্ব্বে ভারতবর্ষীরেরা প্রীকদিপকেই যবন বলিরা জানিতেন। এখন, কোন্ সমরে কোন্ গ্রীক নরপতি অবোধ্যা নগর অবরোধ করেন ইহা নির্পাত হইলেই, পতপ্রলির সমর নির্পাত হইবে।

কণ্ডিথাত একৈ স্থাট আলেক্কাণ্ডার দিখিবরে বাতা করিয়া ভারতবর্ষ মধ্যে পঞাব দেশ পর্যান্ত আগমন করেন এবং সেই ছান হইতে প্রতিনিবৃত্ত হইরা মধ্যেশ কিরিয়া বান। অতএব তাঁহার বিষর উল্লেখ করা পতপ্রলির ঐ ছই উলাহরণের উদ্দেশ্ত হইতে পাবে না। তাহার পরে অন্ত কোন এক নৃপতি অবোধ্যা বগর ও মাধ্যমিক্দিপকে অবরোধ ক্রিয়াছিলেন তাহার সংক্ষেহ নাই।

প্রীটালের ২০০ (সার্দ্ধ ছাই শত বংসর) পূর্বের থীকেরা ভারতবর্বের পশ্চিমোদ্ধরাংশে বাল্ধ প্রদেশে একটি রাল্য প্রাপন করেন। ঐ রাল্য ক্রমণ: ভারতবর্বের মধ্যে সিদ্ধু, পঞাব ও তাহার পূর্ববিকে কিরদ্দুর পর্যান্ত বিস্তৃত হইরাছিল। ঐ রাল্যের নর জন শ্রীক নৃপতি থৃ, পৃ, ১৬০ এক শত বাট অবধি থৃ, পৃ, ৮০ পঁচালি পর্যন্ত ৭০ পঁচান্তর বংসর ভারতবর্ব-মধ্যে রাল্য করেন। হথাসিদ্ধ গ্রন্থকার স্ট্রেবো লিখিরা গিরাছেন, তর্মধ্যে বেনেওর নামক রাল্য বমুনা নদ্দ্ধী নিকট পর্যন্ত অধিকার করেন। ইদানীং মধুরার উহার একটি মুদ্ধাও প্রাপ্ত হওয়া গিরাছে। শ্রীমান্ লেসেন্ অমুসদ্ধান করিয়া দেবিরাছেন, ঐ রাল্য খৃষ্টান্মের নানাধিক ১৪৪ একশত চুয়ালিশ বংসর পূর্বের রাল্য-সিংহাসনে অধিরাভ হইয়া বিংশতি বংসরের অধিক কাল রাজ্য করেন। অতএব ই হাকেই অবোধ্যার অবরোধক বলিয়া বিবেচনা করিতে পারা বার।

বে ঘটনা পতঞ্জলির দৃষ্টিগোচর হুইলে হুইতে পারিত, তিনি ভাহারই উদাহরণ প্রদর্শন করিয়াছেন। স্থতরাং তিনি ঐ সমরে অর্থাৎ থু, পু, বিতীয় শতাকীর প্রথমার্ছে বিদ্যবাদ ছিলেন বলিয়া উল্লেখ করিতে পারা বার।

পাৰিনির অন্ত একটি স্ত্তে লিখিত আছে।

वर्तमाने खद्।

७ ज, २ भी, ३२७ च्वा

বর্জনান কালে লটু সংজ্ঞক বিভক্তি হয়। (পাণিনির লট্ মুগ্ধবোধের কী সংজ্ঞক বিভক্তি।)
কোন্ কোন্ছলে এই বিভক্তির প্ররোগ হইবে, পতঞ্জালি তাহার একটি নিরম করিয়া
দেন। তিনি লিবেন, বে ক্রিয়ার আরভ হইরাছে ক্তিত শেষ হয় নাই, ভারাতেই এই
বিভক্তি প্রয়োজিত হইবে। ভিনি ভাহার পশ্চালিখিত করেকটি উদাহরণ প্রদর্শন করেন।

प्रहाधीमद्वे। इह वसाम:। इह पुष्पितं याज्याम:॥

बर्गाणा ।

এহলে আমরা অধারন করি, এছলে আমরা বাদ করি, এছলে আমরা পুশ্বিজের বজে বাজন করি। দৃঢ় শংস্কার আছে *। তাহা হইলে বোগশান্ত্রের বরঃক্রম ন্যুনাধিক ছই সহস্র বংগর হর। কিন্তু ঐ উভয় গ্রন্থ বে এক পভগ্পলিরই ক্বত, পণ্ডিতগণের চিরসংস্থার ব্যতিরেকে তাহার অক্ত কোনরূপ প্রুমাণ প্রাপ্ত হওয়া যায় না।

পতঞ্চলি-ক্বন্ত যোগসত্র, বেদব্যাস-ক্বন্ত বলিয়া প্রচলিত পাতঞ্জলভাষ্য, বিজ্ঞান-ভিক্স্-ক্বন্ত যোগবার্ত্তিক, ভোজরাজ রণরঙ্গমল্ল-ক্বন্ত বলিয়া প্রসিদ্ধ রাজমার্ত্তিও, নাগোজী ভট্ট-ক্বন্ত পাতঞ্জল-স্ত্র-বৃত্তি ইত্যাদি যোগশাল্পে এই দুর্শনের মত বিবৃত্ত ও বিচারিত হইয়াছে।

এই খেৰোক্ত উদাহরণ-পাঠে স্পষ্ট ৰোধ হইতেছে, পতঞ্জলি বে সময়ে উলিখিত স্তের ভাষ্য লিখেন, সে সময়ে তিনি পুঞ্জমিতের বজ্ঞে যাজন করিতে ছিলেন।

পুশাসিত সগধ রাজ্যের অধীখন। মৎসা ও ব্রহ্মাণ্ড পুরাণামুসারে ধৃষ্টাব্দের ১৪২ বংসর পূর্ব্বে তাঁহার রাজত শেষ হর। ইতি পূর্ব্বে উল্লিখিত হইরাছে, যে যবন রাজা আবোধ্যা আক্রমণ করেন, তিনি ধৃষ্টাব্দের ১৪৪ বংসর পূর্ব্বে রাজ-সিংহাসনে অধিরুচ্ হন। এই চুইটি ঘটনার উপর নির্ভ্র করিয়া বিবেচনা করিলে এইরূপ সিদ্ধান্ত হইয়া উঠে বে, পতঞ্জলি ধ্, পু, ১৪০ বংসরের পরে এবং থ্, পু, ১৪১ বংসরের পূর্বে মহাভাব্যের ঐ ঐ অংশ রচনা করেন (১) I—Theodor Golds pucker's Preface to Ma'nava-Kalpa-Sutra, pp. 229—235 and an Article by Ra'mkrishna Gopa'l Bha'nda'rkar in the Indian Antiquary for October 1872, pp. 299—302.

বড়্গুরুশিব্য কাত্যারন-কৃত অফুক্রমণিকার ভাষ্যে লিথিরা গিরাছেন.

यत्प्रणीतानि वाकानि भगवांस्तु पतञ्जलि:।

व्याखात् * * * * * * ॥

योगाचार्यः खर्यं कत्तां योगशास्त्रनिदानयोः।

বাঁহার (অর্থাৎ পাণিনির) প্রণীত বাক্য সমুদার ভগবান প্তঞ্জলি ব্যাধা করেন।

• • *। তিনি বরং বোগাচার্য এবং নিদান ও বোগশাল্লের প্রণরন-কর্তা।

(১) পুপৰিত্ৰ সংক্ৰান্ত প্ৰমাণ্টি শ্ৰীযুত রাষকৃষ্ণগোপাল ভাঙারক্ষের প্রকৃষিত। ঐ রাজার রাজত্ব-কালের বংসর-সংখ্যাটি প্রাণোজঃ কোন প্রামাণিক ইতিহাসে লিখিত নর। জির জির প্রাণে সে বিষয়ে বঙ-ভেদও দেখিতে পাওরা বার। ঐ সংখ্যাটি সংস্যুও ব্রহ্মাণ পুরাণাস্পারে ৩৬ ছত্রিশ এবং বায় পুরাণাস্পারে ৬০ বাট্। (Wilson's Vishnu Purana 1840, p. 471) বদিও এই উভর সংখ্যার কোন্টি একবারে অন্তর নর বটে, কিন্তু কেবল মংস্যুও ব্রহ্মাও পুরাণাস্পারে পুপরিত্র ও পতঞ্জারির স্বর্ম বত বিশিষ্ট করিয়া লেখা হইরাছে, ভাছা নিভান্ত নিশ্চিত ও নিঃসংশর ব্যাহা উল্লেখ করা বায় না।

े বৈশেষিক।

কণাদ ঋষি এই দর্শনের প্রবর্ত্তক। কিছু পরেই দৃষ্ট হইবে, তিনি বিশেষ নামে একটি অতিরিক্ত পদার্থ স্বীকার করেন এই নিমিত্ত ইহাকে বৈশেষিক দর্শন বলে।

কণিল বেমন প্রকৃতি পুরুষকে নিত্য বলিয়া স্বীকার করেন, কণাদ সেই-ক্সপ হল, বায়ু, মৃত্তিকাদি প্রভৃতি নয়টি পদার্থ নিত্য বলিয়া অঙ্গীকার করিয়া-ছেন। সেই নয়টির নাম দ্রব্য পদার্থ *।

* বৈশেষিক পণ্ডিতেরা ক্রব্য, গুণ, কর্ম্ম, সামান্য, বিশেষ, সমবার, অভাব এই সাতটির মাম পদার্থ রাখিরাছেন। ক্রব্য ভাছারই প্রথম পদার্থ।

গুণ।—গুণ-পদার্থ চিকিশটি; রূপ, রস, গন্ধ, ম্পর্শ, সন্থ্যা, পরিমাণ, পৃথকত্ব, সংবোধ, বিরোগ, পরত্ব, অ্পরত্ব, বৃদ্ধি, হথ, হুঃথ, ইচ্ছা, হেব, প্রযত্ব, (১অ, ১আ, ৬ছ।) শন্দ, গুরুত্ব, জবত্ব, জেব, সংকার (১) পাণ ও পুণা।

কণাদ প্রথম ১৭টি গুণ পদার্থ গণনা করিয়া বান ; পরে তাহার সহিত শেব সাতটি সংবো-বিত হর।

কর্ম।---সমূদারে পাঁচটি কর্ম; উৎক্রেপণ, অবক্ষেপণ, আকুঞ্চন, প্রসারণ ও গমন।---> আ
> আ, পত্ন।

সামান্য।— বস্তব জাতি অর্থাৎ সাধারণ ধর্মকে সামান্য পদার্থ বলে; বেমন ঘটত্ব, গোত্ব, পশুত্ব ইত্যাদি। ঘট-জাতির নাম ঘটত্ব, গো-জাতির নাম পেত্ব, পশু-জাতির নাম পশুত্ব ইত্যাদি।—> অ. ২ আ. ৩কু।

विष्म ।--विष्मय-नमार्थित विषत्र नम्हां किथि इटेरव ।-- अस् श्या, अरु ।

সমবার।—সম্বন্ধ-বিশেষের নাম সমবার; বেমন গুণের সহিত গুণ-বিশিষ্ট আবোর স্থান, জবোর সহিত গুণীর পরমাণুর সম্বন্ধ, ঘটের সহিত সৃত্তিকার সম্বন্ধ, বল্লের সহিত ভদীর প্রের সম্বন্ধ, অব্যের সহিত ভদীর অংশের সম্বন্ধ, আতির সহিত ভদীর প্রত্তির সম্বন্ধ, কর্তার সহিত কর্মের সম্বন্ধ ইত্যাদি।—গ্লু, ২৩/পুত্র।

অভাব।—অভাবের অর্থ নিষেধ অথবা না থাকা। ইহা চারি প্রকার। প্রথমত:—ঘটাদি কোন বস্তু উৎপন্ন হইবার পূর্বে তাহার বে অভাব থাকে,তাহাকে প্রাগতাব বলে। বিতীরত:— ঘট পটাদি কোন বস্তু নই হইলে তাহার বে অভাব হর,তাহার নাম ধ্বংসাভাব। তৃতীরত:— গৃহ ঘট নর এইরূপ কথার তুই বস্তুর পরন্পর বে প্রভেদ বোধ হর, তাহা ভেদাভাব বলিয়া

⁽১) নংকার তিন প্রকার; অরণ-শক্তি, ছিতিছাপকতা ও বেগ। বেগ কিয়াছি বারা উৎপন্ন হয়। উহা গতির কারণ-করণ।

प्रियापस्तेजोवायुराकायः कालोदिगाका मन इति द्र्याणि।

देवरमधिक प्रर्गन। > व्यशात्र। > व्यक्तिमः। « श्वाः।

পृथिती, बन, एजब, तायू, आकान, कान, निक्, बाखा, मन এই श्रीन सवा नवार्थ।

পূর্বেই শিখিত হইরাছে বৈশেষিক শাল্লের মতে এই নয়টি পদার্থই নিত্য । কিন্তু তল্মধ্যে জ্বল, বায়ু, মৃত্তিকা, তেজ এই চারি প্রকার জ্বড় পদার্থের পরমাণু মাত্র নিত্য; আর পরমাণু সমষ্টি-স্বরূপ ঘট পটাদি সাবয়ব দ্রুব্য সমুদায় জ্বনিত্য।

नित्याऽनित्या च सा हे धा नित्या स्यादणुनचणा। स्रनित्या तु तदन्या स्यात् सैवावयवयोगिनो॥

ভাবাপরিচেছে । ৩৫ ও ৩৬ স্লোক।

পৃথিবী ছই একার; নিত্য ও অনিত্য। পৃথিবীর পরসাণু নিত্য, জার (দেই পরমা গুর সন্ধ্রি-বর্মণ ঘট-পটাছি) সাবরব পার্থিব জব্য সমুদ্র অনিত্য।

जनतं हिविधं नित्यमनित्य छ। परमाणुक्पं नित्यम्। ह्यणु-कादिकं सर्व्यमनित्यम् अवयवसमवितछ॥

সিদ্ধান্তম্কাৰ্লী। (ভা, প, ৩৯ লোকের টীকা।)

উরিধিত হয়। চতুর্থত:—এ গৃহে বস্ত্র নাই এরণ কথা বলিলে বে অভাব বুবার, তাহা অত্যম্ভাভাব বলিরা কীর্ত্তিত হইরাছে।

বৈশেষিক শাল্পে প্রথমে অভাব-পদার্থ পরিগণিত ছিল না; শাল্প-প্রবর্ত্তক কণাদ ঋষি পুরের মধ্যে কেবল ছয়টি পদার্থ গণনা করিয়া বাম।

षर्क्वविश्वष्ठमस्तादः द्रव्यगुणकाकंसामान्वविश्वषसमयायानां पदार्थानां साधकंत्रवैधकंत्रस्याः तस्वज्ञानाज्ञःविश्वसम् ।

रेव(भविक पर्यन ।) व्या) व्या । अरु ।

ধর্ম-বিশেষ হইতে ভবজাৰ লয়ে এবং ভবজাৰ হইতে নিঃশ্রেরস অর্থাৎ আতান্তিক ছুঃখ নিবৃত্তি হইরা থাকে। জব্য, ভণ, কর্ম, সামাজ, বিশেষ, সমবার এই ক্রেক প্রার্থের আবর্ম্ম বৈধর্ম্ম হইতে ঐ ভবজানের উৎপত্তি হয়।

ধ্বগতের বধার্থ বর্রণ ও প্রাকৃতিক নিয়ন দৃষ্টে এ বিভাগগুলি নির্মারিত হর নাই। অপ্তাপ্ত পদার্ঘের কথা দুরে থাকুক, অধুনাতন বিজ্ঞানবিৎ পণ্ডিতের। কাল ও মৃত্তিকা এক শ্রেণীভূক্ত বলিয়া অবেও মনে করিতে পারেন না।

বৈশেষিক দৰ্শন। ২ অধ্যায়। ২ আহিক, ৭ প্রা। ২ আ, ২ আ, ১০ হা। ২ আ, ১ আ, ২৮ পু। ২ আ, ১৩ খা, ১৩ খা, ২ আ, ২ খা, ২ খা, ২ আ, ২ আ, ৫ হা। ৫ আ, ১ আ, ১ হা। ৭ আ, ১ আ, ৪পু। জ্ঞ জুই প্রকার; নিত্য ও অনিত্য। জলের প্রমাণু নিত্য, আর (তদীর প্রমাণুর স্বাষ্ট-ব্রুপ) ছাণুকাদি * সমুদার সাব্যুব বস্তু অনিত্য।

तदृद्धिविधं नित्यमनिताञ्च। नित्यं परमाणुरूपम्। तदन्य दनित्य-मवयवि॥

সিদ্ধান্তমূক্তাৰলী। (ভা, প, ৪০ লোকের টীকা।)

ভাহা অৰ্থাং তেজ ছুই প্ৰকার; নিত্য ও অনিতা। তাহার পরমাণু নিত্য, আর (ঐ পরমাণুর নমটি:অরপ) সাবরব তেজ সমুদ্য অনিতা।

वायुर्हिविधो नित्योऽनित्यस्य । परमाणुरूपोनित्यस्तदन्योऽनित्यः समवेतस्य ।

সিদ্ধান্ত মুক্তাবলী। (ভা, প, ৪২ প্লোকের টাকা।)

বায়ুত্বই একার; নিত্য ১৪ জনিত্য । বায়ুর পরমাণু নিত্য, জ্বার ঐ পরমাণুর সমষ্টি শম্লর জনিত্য।

্মনও স্ক্র পরমাণু-বিশেষ। মহর্ষি কণাদই এই পরমাণুবাদ প্রবর্ত্তিত করেন এইরূপ প্রসিদ্ধ আছে। পরমাণুরু ও মূলপদার্থ। উহা নিত্য; কাহার কর্তৃক স্টেহর নাই।

सदकारणवर्तित्यम् ॥

दिरमिविक पर्नन। ८ व्य, २ व्या, २ व्या।

পরমাণু সৎ-সক্লপ নিত্য পদার্থ ; তাহার আর কারণ নাই।

প্রত্যক্ষ-গোচর যাবতীর জড়-পদার্থ উহারই সংবোগে উৎপন্ন হইরাছে।
বৃক্ষ, লডা, গুলা, কুগুল, কটাহ প্রভৃতি সমূলর বস্তুর আকার দেখিলেই তাহাদিগকে পরস্পার ভিন্ন বলিরা প্রতীতি জন্মে। কিন্তু পরমাণুর তো আকার
দেখা বান্ন না, তবে কিরণে জল, বায়ু গু মৃত্তিকাদি ভিন্ন ভিন্ন বস্তুর পরমাণু
ভিন্ন ভিন্ন প্রকান বিলান নিশ্চর হর এই প্রশ্নের সিদ্ধান্ত করিতে গিরা কণাদ
ধ্ববি করনা করিলেন, বিশেষ বিশেষ প্রকার পরমাণুতে বিশেষ নামে একটি
পদার্থ আছে, তাহারই শক্তিতে ভিন্ন ভিন্নরপ পরমাণু ভিন্ন ভিন্ন বলিরা নিশ্চর
হর।

তাঁহার মতে, অদৃষ্ট অর্থাৎ অদৃষ্ট কারণ-বিশেষ দারা উল্লিখিত পরমাণু সমুলারের সংযোগ হইরা বিখ-সংসার উৎপন্ন হয়। পশ্চাৎ ক্রেক্টি ক্রে উদৃত হইতেছে; পাঠ করিয়া দেখিলেই জানিতে পারা বাইবে।

घरे नत्रमान् अक्ज मानुक ब्हेरल छाहारक चानुक बरल ।

नोदनाभिघातात् संयुक्तसंयोगाच प्रशिष्यां कर्षा । तद्विधेषेणा-दृष्टकारितम् ॥

< च, २ खा, > ७२ ऱ्।

পৃথিবীতে সঞ্চালন, অভিযাত ও সংযুক্ত বস্তুর পরপার সংবোপ হইতে কর্মের উৎপদ্ধি হয়। ইহা ভিন্ন অন্তরূপে (ভূমি কম্পাদি) বে কোন ক্রিয়ার ঘটনা হয়, অদৃষ্ট ভাহার কারণ।

वचाभिसपेणमित्यदृष्टकारितम् ॥

৫ আ, ২ আ, ৭ পুতা।

বৃক্ষেতে যে রস সঞ্রণ হয়, অদৃষ্ট ভাহার কারণ।

श्रपसर्प णमुपसङ्घ णमश्रितपीतसंयोगाः कार्य्यान्तरसंयोगाश्चेत्यदृष्ट-कारितानि ॥

व चा २ च्या, ३१ व्या।

অপসর্পণ *, উপসর্পণ +, ভূক ও পীত বস্তুর সংযোগ, অন্ত অক্ত কার্বের সংযোগ ‡ এই সমুদার ব্যাপার অদৃষ্ট হইতে উৎপন্ন হয়।

श्रम्नेरुष्ठ ज्वलनं वायोस्तिय्वक् पवनमणूनां मनससाद्यं कर्या-दृष्टकारितम्॥

ধ আৰু ২ আৰু ১৩ পুত্ৰ।

অগ্নি-নিখার, উর্ব্ণেমন, বায়ুর তির্যাক্ গতি, পরমাণু ও **অল্ব:করণের আদিম অর্থা**ৎ স্পষ্টি-কালীন শ ক্রিয়া অদৃষ্ট হইতে উৎপর হয় §।

এইরূপ অদৃষ্ট কারণ-বিশেষ ঘারা, অথবা কোন কোন গ্রন্থায়ে ঈশ-রেচ্ছা, কাল বা অভ কারণ ঘারা অভ্-পরমাণু সমুদারের সংযোগ হয়। তুই

অয়নারায়ণ তর্কপঞ্চানন-কুত ক্ণাদ-পুত্র-বিবৃতি।

দেৰের সহিত অন্য অন্য কার্য্যের অর্থাৎ ইন্সির ও প্রাণের সংবোগ।

¶ बाद्यमिति सर्गाद्यकालीनमित्रर्थ: ॥

৫। ২। ১৩ সুত্রের উপস্থার।

आगा गरमत वर्ष रहित वर्धम-कानीन।

§ অদৃষ্ট-প্রতিপাদক স্তেগুলি পর্বালোচনা করিরা দেখিলে, ছই প্রকার অদৃষ্ট কারণ অথবা অদৃষ্ট কারণের ছই প্রকার স্বরূপ লক্ষিত হইরা থাকে। এছলে বেরূপ অদৃষ্ট ক্রিরার উদাহরণ সমুদ্র দর্শিত হইল, ভাহা জ্বড়পদার্থের গুণ-বিশেষ বা দক্ষি-বিশেষ ব্লিরা অধুবাত্তন লোকের প্রতীয়বাল হইজে পারে। আর একরণ অদৃষ্ট বাধ-বজাধি ক্রিরার

^{*} মৃত্যু-কালে দেহ হইতে মনের বহির্গমন।—শক্ষরিশ্র-কৃত উপস্থার।

⁺ महाख्राद्व मत्मत्र व्यावम ।-- म, छ ।

[‡] कार्यान्तराणामिन्द्रियप्राणानां दिन्न सह संयोगाः ॥

পার্থিৰ পরমাণ্ সংষ্ক্ত হইরা এক ছাণ্ক হয়। তিন ছাণুকে এক অসরেণ্ হয়। এইরূপ উত্তরোত্তর স্থুণতর অবয়ব উৎপন্ন হইরা অবশেষে সমূদর পার্থিব বস্তু বিরচিত হয়। এই প্রকারে জণীয় পরমাণ্র বোগে জলের অবয়ব, তৈজস পরমাণুর বোগে তেজের অবয়ব ও বায়বীয় পরমাণুর যোগে বায়ুর অবয়ব উৎপন্ন হইয়া থাকে। এইরূপে বিশ্বসংসার তৃষ্ট হইয়াছে।

ইয়্রোপের মধ্যে পরমাণুবাদ এখন সর্বাদি-সম্মত। শ্রীমান্ ডেল্টন্
ইদানীং * ইহার পুনরুস্তাবন করেন এবং রসায়ন-বিদ্যা-সংক্রাস্ত বিচারক্রমে
একরূপ সপ্থাণ অথবা অভিমাত্ত সম্ভাবিত করিয়া তুলেন। তাহার তৃই সহস্র
বংসর অপেক্রাপ্ত অধিক কাল পূর্ব্বে ভারতবর্ষে মহর্ষি কণাদ এই মত প্রবর্ত্তিত
করেন তাহার সন্দেহ নাই। পূর্ব্বেলাল গ্রীস্ দেশে শ্রীমান্ ডেমক্রিটস্ এইরূপ পর্মাণুবাদ প্রকাশ করিয়া যান। কণাদের সহিত তাঁহার কিরূপ সম্বন্ধ,
দ্বির করা কঠিন। এই উভরের মধ্যে কেহ কাহার নিকট ঋণ-বন্ধনে বন্ধ
আছেন কি স্বতন্ত্র স্বত্ত স্ব স্থ দেশে নিজ নিজ মত প্রচলিত করেন, নিশ্চর
বলা যায় না। ডেমক্রিটস্ গ্রীস-দেশীয় কণাদ এবং কণাদ ভারতবর্ষীয়
ডেমক্রিটস্।

অন্তান্ত দর্শনকার অপেক্ষা কণাদের জড় পদার্থের জানাফুশীলনে সমধিক প্রবৃত্তি জন্মে দেখা যাইতেছে। তিনি পরমাণুবাদ সংস্থাপন করিয়া সে । বিষয়ের স্ত্রপাত করেন। মেদ, বিহাৎ, বজাঘাত, ভূমিকম্প, বৃক্ষের রঙ্গ-সঞ্চরণ, করকা ও হিমশিলা, চুম্বক ও চৌম্বকাকর্ষণ, জড়ের সংযোগ-বিভাগাদি গুণ ও গত্যাদি ক্রিয়া প্রভৃতি নানা ব্যাপারে তাঁহার চিত্তাকর্ষণ হয়। † কিন্তু আক্ষেপের বিষয় এই বে, স্ত্রপাতেই অবশেষ হইল। অন্ত্র রোপিত হইদ,

ট টেপজার।

(कन मा, पृष्ठे कात्रण माइ अपृष्ठे कात्रण कल्लमात अव्यासन नारे।

অনুষ্ঠান বারা উৎপন্ন হর এইরূপ লিখিত আছে। বোধ হয়, যেরূপ কারণ দৃষ্ট হর না ডাহাই অদৃষ্ট বলিয়া উলিখিত হইরাছে। টীকাকারেরাও দৃষ্ট ও অদৃষ্ট এই উভন্ন প্রকার কারণের পরশার প্রভেদ ও বৈপরীত্য প্রদর্শন করিয়াছেন এবং বে বিবরের কারণ দৃষ্টিপোচর হর না, তাহারই সেই কারণ অদৃষ্ট বলিয়া উপদেশ দিরাছেন।

दृष्टे कार्णे सत्यदृष्टक त्यनानवकाशात्॥

^{*} অর্থাৎ খ্রীষ্টান্দের উনবিংশ শতান্দীর প্রথম ভাগে। তিনি ১৮৪৪ খ্রীষ্টান্দে প্রাণত্যাপ করেন।

[ं] दिस्थिक प्रभासित । ১ व्या, ७ व्या । ১ व्या, १ व्या

কিছ বৰ্জিত, পুলিও ও ফলিত হইল না। উহা সংস্কৃত, পরিবর্জিত ও বহুলীক্কত করিয়া ফল-পুলা-শোভার স্থানাভিত করা ভারতভূমির ভাগ্যে ঘটিল না। কালক্রমে সে সোভাগ্য বেকন্, কোও ও হয়োল্টের জন্মভূমিতে গিরা প্রকানিত ও প্রাহ্নভূতি হইয়া উঠিল। তথাপি আমাদের স্থাত, চরক, আর্য্যাভিটাদির পদক্ষলে বার বার নমস্কার।

জগতের কারণ নিরূপণ দর্শন-শাস্ত্রের একটি প্রধান উদ্দেশ্য। ইহাতে, কণাদ পদার্থ-গণনার মধ্যে আন্তিক-মাত্রেরই স্বীকৃত পরম-পদার্থ পর-মেশরের নাম উল্লেখ না করিলেন কেন? কেবল গণনা কেন, সমুদার বৈশেষিক স্ত্রের মধ্যে কুত্রাপি পরমেশরের নাম স্কুম্পন্ত উল্লিখিত নাই। উত্তরকালীন বৈশেষিক পশুতেরা জব্য-পদার্থের অন্তর্গত আত্মা শব্দের ছই প্রকার অর্থ করেন; জীবাল্মা ও পরমাল্মা। টীকাকারেরা কণাদ-কৃত স্ত্রে-বিশেষের শক্ষ-বিশেষ হইতে ঈশ্বরের বিষয় নিশার করা দর্শন-শাস্ত্রের একটি প্রধান প্রবোজন, তখন বদি ঈশ্বরকে বিশ্ব-কারণ বলিয়া তাঁহার শিক্ষ বাকিত, তাহা হইলে সে বিশ্বরের স্কুম্পন্ত বিবরণ না করা তাঁহার শিক্ষ কোন মতেই সঙ্গত হইতে পারে না।

ক্ষার-বিষয়ে বেরূপ বিশাস থাকাতে টীকাকারেরা প্রের মধ্যে তদীয় প্রসঙ্গ না শেথিয়াও ভাহা,হইতে যোগে থোগে কোনরূপে ক্ষার্যের অভিত্ব নিশার করিবার চেষ্টা পাইরাছেন, কণাদ ঋষির সেইরূপ বিশাস থাকিলে,

तदितानुपक्रान्तमपि प्रसिद्धिसञ्जतयेत्ररं पराच्यति ॥

তংশব্দের অর্থ ঈশর ইহা প্রসিদ্ধই আছে অতএব পূর্ব্বে ফ্চনা না থাকিলেও, এছলে উহা উপর-বাচক বলিয়া বিবেচিত হইতেছে।

কিন্তু বৰ্থন উত্থান পূৰ্ব্য পূৰ্যে ধৰ্মের প্ৰসঙ্গ আছে, তথ্য এই "তংশৰ" ধৰ্মবাচকট বলিতে ছইবে। পক্ষাৎ উভন্ন ক্ষম উদ্ধৃত করিয়া ব্যাশ্রুত অৰ্থ করা হইতেছে, পাঠকগণ বিবেচনা করিয়া দেখিলেই জানিতে পারিবেন।

यतीऽभुत्रदयनि:त्रेयससिन्धि: स धर्मः ॥

১ জ, ১ জা, ২ সু ৷

ৰাহা হইতে অভ্যানর ও বিঃশ্রেরস অর্থাং বর্গ ও অপ্বর্গ প্রাথ্য হওরা বার, তাহার বার ধর্ম।

तदचनादामायस प्रामाण्यम्॥

১ আ, ১ আ, ৩ হ।

द्वार छवहम वर्षाद शर्म-विवत्र वहन आंद्य विन्ना, देवन श्रीमानिक।

^{*} এ বিষয়ে একটি উদাহরণ প্রদর্শিত হইডেছে। শক্ষরমিশ্র বৈশেষিক দর্শনের ভৃতীর সূত্রের অন্তর্গত 'তং' শক্ষের নিয়-লিখিভরণ অর্থ করেন।

স্তুত্তের মধ্যে ঈশব-প্রসঙ্গ স্থাপতি না নিধিয়া তাহার অন্তর্গত শব্দ বিশেষের অভ্যস্তর-শুহার ভাহা প্রচ্ছর রাধা কি কোনরূপে সম্ভব হর ? টাকাকারেরা যদি নিজে ঐ প্রত শুলি রচনা করিতেন, তাহা হইলে এ বিষয়ে কিরূপ ব্যবহার कतिराजन. धाकवात (ভाবে দেখিলেই হয়। वातश्वात क्षेत्रांतत्र नाम कीर्खन করিতেনই করিতেন ভাহার সন্দেহ নাই। না করিবেনই বা কেন ? যাঁহার যাহাতে দ্য বিখান ও অবিচলিত ভক্তি থাকে, সুযোগ ও প্রয়োজন উপস্থিত হইলে. তিনি তাহা কীর্ত্তন না করিয়া থাকিতে পারেন না। কেবল ঈশবের নাম তো অন্ন কথা: তাঁহারা 'গোপবধুটীতকুলচৌরায়' ও অন্ত অন্ত বিশেষণে বিশেষিত ক্লফ, বিষ্ণু, ষষ্ঠী, পঞ্চানন প্রভৃতি কত কত দেবতার পদ-যুগলে প্রণিপাত করিয়। গ্রন্থের মঙ্গলাচরণ সম্পাদন করিতে পারিভেন। যদি তাঁহা-দের ন্যায় কণাদ ঋষির জুমারেতে আস্থা থাকিত, ভাহা হইলে তিনি পদার্থ-গণন স্ষ্টি-প্রক্রিয়া-বর্ণন ও মুক্তি সাধনাদি সংক্রান্ত কোন না কোনসূত্রে ঈশবের বিষয় ়স্থস্পষ্ট উল্লেখ না করিয়া থাকিতে পারিতেন না। প্রত্যুত তাঁহার মতে পর-মাণু-পুঞ্জের সংযোগে জড়মন্ন জগতের উৎপত্তি হয়; অদৃষ্ঠ অর্থাৎ অদৃষ্ঠ কারণ বিশেষ সেই সংযোগের প্রবর্তক। তাহাতে ঈশবের কর্তৃত্ব-প্রসঙ্গত কিছুমাত্র লিখিত নাই। এই সমস্ত পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে, তিনি ঈশবের অন্তিত্ব অঙ্গীকার করিতেন না এইরপই প্রতীয়মান হইয়া উঠে।

ষদিও বৈশেষিক দর্শনে অচেতন সচেতন নানাবিধ পদার্থের বিষয়ই সমধিক বর্ণিত ও বিচারিত হইয়াছে, তথাচ ধর্ম-নিরূপণ ও মুক্তি সাধনের উপায় নির্দান রুণ্ট এ শাস্ত্রের প্রধান উদ্দেশ্য।

क्नाम क्षथम ऋत्वरे नित्थन,

प्रयातो धर्मा व्याख्यास्यामः॥

दिदानिक पर्नम। १ व्य, १ व्या, १ व्यव।

অতঃপর ধর্মের বিষর ব্যাখ্যা করিব।

ধর্ম ছাই প্রকার : অভ্যাদর-হেতৃ ও নি:শ্রেরস-হেতৃ । ইহার মধ্যে নি:শ্রেরস অর্থাৎ মৃক্তি পরম পুরুষার্থ। অভ্যন্ত ছ:খ-নির্ভির নাম মৃক্তি। মৃক্তি-লাভ হইলে কোন কালেই কিছুমাত্র ছ:খ থাকে না। শরীরের সহিত আত্মার সহন্ধ-নাশ হইলেই উহার উৎপত্তি হয়।

श्रयमेव शरीरमनोविभागः।

৬ আ, ২ আ, ১৬ সুত্রের উপস্থার।

भन्नोत्र ७ मत्नत्र विष्कृष्ट स्थाकः।

কণাদ এ বিষয়ের নিম্নলিখিত স্ত্রেটি প্রণয়ন করেন।

भाष्मकभैसु मोची व्याख्यात:॥

देवस्थिक पर्नन। ७ व्य, २ व्या, ३७ व्युत्त।

আস্ব-কর্ম সম্পন্ন হইলে মৃত্তি হর এইরপ উক্ত হইরাছে। 🛎

টীকাকারেরা শ্রবণ, মনন, যোগাভ্যাস, নিদিধ্যাসন, আসন, প্রাণায়াম, শম, দম, আজু-সাক্ষাৎকার, পূর্ব্বোৎপর ধর্মাধর্ম জ্ঞান ইত্যাদি কতকগুলি বিষয় আজু-কর্ম বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন।

শ্রুতাদি-প্রতিপন্ন আত্মার গুণ ও শ্বরূপ শ্রুবণকে শ্রুবণ বলে এবং কণাদ-প্রণীত বৈশেষিক দর্শনে উপদৃষ্ট দ্রব্য, গুণ, কর্মাদি পদার্থ চিন্তনকে মনন বলে। এইরূপ মননই প্রথম আত্ম-কর্ম্ম বলিয়া উল্লিখিত হইন্নাছে।

षट्पदार्थं तत्त्वज्ञानमाद्यमात्मकमी॥

ঐ, হত্তের উপস্থার।

(পূর্ব্বোক্ত) ছর প্রকার পদার্থের তত্ত্তান প্রথম জান্ম-কর্ম।

এইরূপ শ্রবণ, মনন, নিদিধ্যাসনাদি সম্পন্ন হইলে, তত্ত্ব-জ্ঞান জন্মে, অর্থাৎ দেহাদি বে আত্মানয় এইরূপ নিশ্চিত জ্ঞান উৎপন্ন হয়। এই জ্ঞানের উদ্বর্গ হইলে রাগ-বেষ থাকে না; রাগ-বেষ নত্ত হুটলে ধর্মাধর্মে প্রবৃত্তি জন্মে না; ধর্মাধর্মে প্রবৃত্তি রহিত হুইলে আর প্রনায় জন্ম-গ্রহণ হয় না; ভাহা হুইলেই আর কিছুমাত্র কোন রূপ ছৃঃথ থাকে না। এইরূপ আত্যন্তিক ছুঃথ-বিনাশই মোক †।

স্থায় দর্শন।

মহর্ষি গোতম এই দর্শন প্রবর্ত্তিত করেন। তাঁহার অক্ত একটা নাম অক্ষপাদ, এই নিমিত্ত ইহা গোতম-দর্শন ও অক্ষপাদ-দর্শন বলিয়াও প্রচলিত আছে।

জনমারারণ **ভর্ক**পঞ্চানম-কৃত বিবৃতি।

(करण উक्त श्रेताहा।

🕇 बन्ननात्रात्रन छर्कनकानन कुछ 🗣 भ, २ भा, ১७ १९७-सिवृष्टि ।

^{*} भागमेऽभिष्ठित:।

গোতম ঈশবের সন্তা স্থীকার করিতেন এমন বোধ হয় না। পশ্চাৎ সে বিষয়ের প্রসঙ্গ উপস্থিত হইবে। উত্তরকালীন নৈয়ায়িক পণ্ডিতেরা স্পষ্টরূপে ঈশবের অন্তিত্ব অলীকার করিয়াছেন; কিন্তু তাঁহাদের মতে, তিনি জগতের স্পষ্টিকর্ত্তা * নন, নির্মাণকর্তা।

তাঁহারাও বৈশেষিক পণ্ডিতদের সহিত একমতস্থ হইরা, পরমাণুবাদ স্বীকার করেন, বিশেষ পদার্থ ব্যতিরেকে অপরাপর সমস্ত পদার্থ অঙ্গীকার করেন এবং মৃত্তিকাদি চারিটি জড় পদার্থের পরমাণু এবং অবশিষ্ঠ সমৃদ্য় দ্রব্য-পদার্থ নিজ্য বিশ্বাস করেন। বৈশেষিক দর্শনের বিবরণ-মধ্যে সে সমস্ত বিষয় সংক্ষেপে লিখিত হইয়াছে, অতএব এ স্থলে আর পুনক্ষক্তি করিবার প্রয়োজন নাই।

স্পতিরা যেমন ইটকাদি লইয়া গৃহ নির্মাণ করে, পরমেখর সেইরপ ঐ মৃত্তিকাদি জড়-পরমাণু লইয়াই ব্রহ্মাণ্ড রচনা করিয়াছেন। তিনি অশরীরী অর্থাৎ মন্ত্যাদির আয় তাঁহার শরীর নাই, স্তরাং শরীর-সাধ্য স্থ, ছঃথ রাগ ছেয়াদিও বিঅমান নাই। জীবের আয় ক্লণে ক্লণে তাঁহার ইচ্ছার উৎপত্তি ও ভঙ্গ হয় না। তাঁহার জ্ঞান, ইচ্ছা, যত্নাদি সকলই নিত্য। তিনি যাহা জানিবার ও ইচ্ছা করিবার, একবারেই জানিয়া ও করিয়া রাধিয়াছেন।

বৈশেষিক শাস্ত্রোক্ত উল্লিখিত পদার্থ সমুদর ব্যতিরেকে স্থার-শাস্ত্রে আরম্ভ্রী একরূপ বোণাট পদার্থ পরিগণিত হইরছে। পদার্থ শব্দ শুনিরা অনেকে মনে করিতে পারেন, ঐ বোণাট বুঝি জ্বল, বায়ু, মৃত্তিকাদির মত কোনরূপ জড় পদার্থ হইবে। না, তা নর। স্থায়-দর্শন প্রকৃত তর্ক শাস্ত্র। উহাতে তর্ক অর্থাৎ বিচার প্রণালী বিশেষরূপে উপদৃষ্ট হইরাছে। দেই বিচার-প্রণালী প্রদর্শনই প্রকৃত স্থায় দর্শন। তাহারই প্রমাণ, প্রমের, সিদ্ধান্ত প্রভৃতি বোলাট অন্ধনন পদার্থ বিলিয়া লিখিত হইরাছে। যাহার ঘারা কোন বিষয়ের নির্ণর করা বার, তাহাকে প্রমাণ বলে; বেমন প্রভাক্ষ, অনুমান, উপমান ও শক্ষ।

ইহার মধ্যে প্রত্যক্ষ ও অমুমানই বলবং প্রমাণ। অমুমান খণ্ড স্থার-দুর্শনের প্রধান অংশ। ভাহার আন্দোলন ও তৎসংক্রোন্ত বিচার-প্রণালী লইয়াই ঐ দর্শনের বাছলা ও গৌরব-বৃদ্ধি হইরাছে।

^{*} এপমে কেবল লগারই ছিলেন, অভ কিছুই ছিল না, তিনি সমুদার হাট করেন এইরণ হাটকর্ডা।

অমুমানের লক্ষণ সহজ করিয়া বলিলে এইরূপ বলা বায় বে, কার্য্য দেখিয়া কারণ নিরূপণ করাকে অনুমান বলে; বেমন কুআপি ধৃম দৃষ্টি করিলে তথার ভাহার কারণ স্বরূপ অগ্নি বিদ্যমান আছে এইরূপ নিশ্চর হয়।

অনুমানের পাঁচটি অঙ্গ, তাহার নাম অবয়ব। সেই পাঁচটির নাম প্রতিজ্ঞা, হেতু, উদাহরণ, উপনয় ও নিগমন। পশ্চাৎ সেই সম্দায়ের উদাহরণ প্রদর্শন করা বাইতেছে। প্রত্যেক অবয়বের অর্থ ও লক্ষণ লেখা অপেক্ষায় ঐ উদা-হরণ ঘারাই তাহার তাৎপর্যার্থ স্পষ্ট বৃথিতে পারা যাইবে।

পর্বতে ধুম দেখিয়া অগ্নির অন্তিত্ব অমুমান করা হইতেছে।

- ১--- গ্রতিজা। পর্কতে অগ্নি আছে।
- ২--হেতৃ। কেননা ইহা হইতে ধুম নিৰ্গত হইতেছে।
- ৩—-উদাহরণ। বাহা হইতে ধুম নির্গত হর, তাঁহা ক্ষমি-বিশিষ্ট ; বেমন রন্ধন-শালা।
 - ৪—উপনয়। এই পর্বত হইতে ধুম নির্গত হইতেছে।
 - ब्यानिक्रम्म । अञ्चल को प्रस्ति अविक्रम्म ।

গ্রীস্-দেশীর স্থায়দর্শন-প্রবর্ত্তক শ্রীমান্ত এরিস্টটল এইরূপ অমুমান-প্রণালী প্রচার করেন। গোত্তমের সহিত তাঁহার বিশেষ এই যে, তাঁহার তর্ক-প্রণালীতে প্রথম হুইটি অবয়ব বিজ্ঞমান নাই। ফলতঃ সে হুইটি তাদৃশ আব্শুক্ত বোধ হয় না। গৌতম-ক্ষৃত অমুমান-প্রণালী শোধন করিয়া গ্রহণ করিলে বেরূপ হয়, এ অংশে এরিস্টটলের অমুমান-প্রণালী সেইরূপ।

কোন জ্ঞাত বস্তর সাদৃত্য হারা কোন জ্ঞের বস্তর জ্ঞান-সাধনকে উপমান বলে; বেমন গো সদৃশ গবর। এস্থলে গোটি জ্ঞাত অর্থাৎ জানা বস্ত এবং গবর জ্ঞের বস্তা। বে ব্যক্তি পূর্বে শুনিরাছে, গবর-পশু গো-সদৃশ, সে সহসা ক্রিক্স কোন জ্ঞাত পশু দেখিলে বুঝিতে পারে, ঐটি গবর।

্ৰেমাদি আপ্ত-ৰাক্যের উপদেশকে শব্দ বলে।

श्राप्तीपदेश: गब्द:॥

न्। त्रिष्ठे । १। १ एवं ।

[#] স্থান্নপাত্তে কার্য কারণ ছলে তুইটি পারিভাবিক শব্দ ব্যবহৃত হইরা থাকে; ব্যাপ্য ও ব্যাপক। উক্ত উদাহরণে ধুম ব্যাপ্য এবং জয়ি ব্যাপক। কোন ছানে ধুম বাকিলেই ভথার জারি থাকে; কুত্রাপি তাহার বাভিচার নাই; এই নিমিত্ত জারি ধ্বের ব্যাপক এবং ধুম জারির ব্যাপ্য বলিরা উলিধিত হয়। তভিন্ন আরও তুইটি শব্দ প্রোজিত হয়; সাধ্য ও স্থেন। উলিধিত উদাহরণে জারি সাধ্য এবং ধুম সাধন।

আপ্র ব্যক্তির উপদেশকে শব্দ বলে ।।

প্রমাণ বারা যে সকল বিষধের নিশ্চিত জ্ঞান হয়, তাহাকে প্রমেয় বলে; বেমন আ্যা, হঃথ, মুক্তি ইত্যাদি। ভারশাল্পে বাদশ প্রকার প্রমেয়ের বিষয় বিচারিত হইয়াছে।

श्रात्मशरीरेन्द्रियार्थंबुडिमनःप्रवृत्तिदोषप्रेत्राभावफलदुःखापवर्गासु प्रमियम् ।

স্থারপুর। ১ আ, ৯ পু।

আগ্না, শরীর, ইন্দ্রির, ইন্দ্রির-বিষয়, বৃদ্ধি; মন, প্রবৃদ্ধি, দোষ, প্রেত্যভাব (অর্থাৎ বারংবার মরণোৎপত্তি), ফল, তুঃধ, অপবর্গ এই সমুদর প্রমেয়।

অনিশ্চিত বিষয়ের নিশ্চয় করাকে দিছান্ত বলে। এইরূপ, সংশয়, প্রয়োজন, দৃষ্টান্ত, বাদ, বিতণ্ডা, ছল প্রভৃতি অপর তেরটি পদার্থ অর্থাৎ বিচা-রের অঙ্গ নির্দিষ্ট হইয়াছে। তাহার মধ্যে অনেক গুলি তর্কপ্রবাহ বৃদ্ধি করিবার প্রবল উপায়।

মোক্ষাভিলাষী ব্যক্তিদের এই বোড়শ পদার্থের বিষয় বিশেষরূপে জানা আবশুক। জানিলে কি হয় ?ুনা, শরীর যে আত্মা নয় এইটি নি:শংশয়ে জানিতে পারা যায়। জানিলে মুক্তি লাভ হয়।

বাদশ প্রকার প্রমের পদার্থের মধ্যে ঈশর-পদার্থ পরিগণিত নাই কেন একথাটি বিবেচা। উত্তরকালীন নৈরায়িকেরা উহার অন্তর্গত আত্মা শব্দটি জীবাত্মা ও পরমাত্মা উভয়-প্রতিপাদক বলিরাই ব্যাথা। করেন †। কিছ বখন বিখ-কারণ নিরূপণ দর্শন-শাল্তের একটি প্রধান প্রয়োজন, তখন প্রমের পদার্থের মধ্যে ঈশরের নাম পৃথক নির্দেশ না করা কোনরূপেই সলত ও সম্ভাবিত নয়। একটি প্রতে ঈশরকে কারণ বলিরা উল্লেখ করা হইরাছে সত্য, কিন্তু উহার পর-স্তেই আবার মন্ব্য-কৃত কর্মাকে কারণ বলিরা নির্দেশ করা হইরাছে। পশ্চাৎ ঐ উভয় প্র বধাক্রমে উদ্ধৃত হইতেছে, পাঠ করিরা দেখিলেই জানিতে পারা যাইবে, প্রথম প্রতি পূর্বপক্ষ ও পর প্রতিটি সিদ্ধান্ত।

কণাদ এই চারি প্রমাণের সংখ্য উপধান ও দল পরিত্যাপ করিয়া বৃদ্ধিনতা প্রকাশ
করিয়াছেল। চার্কাকেয়াকেয়ল প্রত্যক্ষ এবং সাখ্য-পৃতিতেয়া প্রত্যক, অনুষান ও দল
প্রমাণ বীকায় করিয়া পাকেয়।

[†] আতিকভাবাদী এছ-ব্যাধ্যাতা পভিতের৷ মূল এছে ফুপাই ঈশর-এসফ নাই দেখিলে,
শীদ বিশেব হইতে তলীয় সন্থা নিপায় করিবার চেটা পাইবেল ইয়া অসম্ভব নর ৷

পূর্ব্বপক্ষ।

द्रेखर: कारण' पुरुषकस्माफस्यदर्भनात्।

স্তারস্কা। ৪ অব, ১৯ স্থ

ঈখর কারণ: কেন না মনুষ্য-কৃত কর্ম সর্বদা সফল হয় না।

সিদ্ধান্ত।

न, पुरुषक्रमाभावे फलानिष्यत्ते:।

স্থারহত। ৪ আ, ২০ হ।

মা, তা নয়। সমুষা কৃত কর্ম ব্যতিরেকে ফলোৎপণ্ডি হয় না *।

আত এব গোতম কণাদের স্থায় নাস্তিকতাবাদী ছিলেন এইরূপ প্রতিগন্ন হইরা উঠে। এ দিকে ত নাস্তিক, কিন্তু বেদ উভরের পরম শিরোধার্য্য বস্তু। এ তো একটি সামাস্ত কৌতুকের বিষয় নয়। ভাবিলে বোধ হয় ধেন, কণাদ ও গোতম নামে হইটি শুপ্ত বৃদ্ধ বেদ-বস্ত্র পরিধান করিয়া প্রচ্ছনভাবে ভূমগুলে বিচরণ করিভেছেন ।

গোত্ৰ অক্ত ক্তেও লিথিরাছেন,

पूर्वक्रतफलानुबन्धात्तदुग्पत्तिः।

912021

भूर्ववन्न-कुछ कर्ष-कटन कोरवत्र मंत्रीरतारपछि ईत्र।

বিশ্বাধ ভট্টাচার্য্য উপরোজ ছই স্থের টীকার ঈশর ও পুরুষ-কৃত কর্ম উভরকেই ক্লগতের কারণ ৰলিরা নির্দেশ করিরাছেন। কিন্তু তাহাতেই বা কি ? একে ঈশর পরমাণু প্রভৃতি মূল পদার্থের অষ্টা নন, তাহাতে আবার তিনি জীবের পূর্ব্য-কৃত কর্মের সহকারিতা ব্যতিরেকে কিছুই করিতে পারেন না, ইহাতে ঈশরের ঈশরত কি রহিল ? ফলতঃ ঐ উভর স্থের উল্লিখিত রূপ যথাঞ্জত সরল ব্যাখ্যা শ্রবণ করিলে, গোতমকে নিরীশর বলিরা প্রতীতি ক্ষেয়।

া বৌদ্ধ শারের সহিত জার বৈশেষিকালি হিন্দু শারের অনেক বিষরে সৌসাদৃশ্য আছে। উজর শারের মতেই, কর্ম-ফলে করা এইণ ও নানাবিধ যোলি অমণ হর; উভয়ের মডেই, কার এইণ করিলেই ছাব ভোগ করিতে হর; উভয়ের মডেই, কীবে নিজ নিজ কর্মান্ত্রার নানাঞ্জনার নরক ও ক্থাম্পদ জীবলোকে গিরা দণ্ড পুরস্কার প্রাপ্ত হইরা থাকে; উভরের মতেই কার এইণ নির্ভি অর্থাৎ মুক্তি (১) লাভই ছাব ইলে পরিআণ পাইবার উপার; এবং উভরের মতেই, মুক্তি পরম পুরুষার্থ ও জ্ঞানোদর হইলে তাহা প্রাপ্ত হওরা বার। বৃদ্ধ নিরীমরবাদী ইল, ভারা বইলে, বৃদ্ধের সহিত ভারাদের মুল বিবরে অধিক প্রভেদ থাকে না।

^{় (}১) বৌদ্দতাস্থারী মৃক্তির নাম নির্মাণ। ছিন্দুখাল্লে উহা মৃক্তি, খোক্ষ, নিংশ্লেরঃ, অপ্যর্প ও নির্মাণ বলিরা উলিধিত হটরাছে।

এই দর্শনের মতেও, তত্মজানই মুক্তির কারণ। কিন্তু এ শাল্পে শরীর বে আয়া নর এইরূপ জানই তত্মজান বণিয়া উল্লিখিত হইয়াছে।

दोषनिमित्तानां तत्त्वज्ञानादचङ्गारनिष्ठत्तिः।

ন্যারস্ত্র। ৪ অ, ৬৮ স্ত্র।

লোষাকর শরীরাদির তত্তজান অর্থাৎ শরীরাদি বে আত্মা নয় এইরূপ নিশ্চিত জ্ঞান * হইলে অহকারের নিবৃত্তি হয়।

বিখনাপ ভট্টাচার্য্য স্পষ্ট বলিয়াছেন, স্থায় দর্শনের মতে জীবাত্মাকে দেহ হইতে ভিন্ন বলিয়া জানাকেই বিবেক বলে।

श्रसामाते तु देशदिभिन्नाव्यसाचालार:।

১১১ ন্যারহজের বৃত্তি।

व्यामानित्त्रत्र मटक (महापि हटेएक खिन्न खोवाजात्र माकारकात्रहे वित्वक ।

সমাধি-বিশেষ অভ্যাস করিলে ঐ তত্ত্তান উৎপন্ন হয় †। নৈরায়িকেরা নিজে উহার কোন সাধন উদ্ভাবন না করিয়া যোগশাস্ত্র অবলম্বন করিয়াছেন‡।

तद्धं यमनियमाभ्यामात्मसंस्कारोयोगाचात्मविध्रापायः।

नार्गत्रह्या ८ व्य, ১১১ छ ।

সমাধি সাধনাৰ্থ যম নিরমাদি বোগানুঠান ও আত্মসাক্ষাৎকার বিধারক বাক্য হারা মৃক্তি-লাভের ক্ষমতা জন্মে।

এক দিকে বেদ ও বেদান্ত, অণর দিকে বৌদ্ধ ও চার্কাকশান্ত, গোতম ও কণাদ দর্শন ঐ উভয়ের মধ্য হুগ-বর্তী।

গোতমহত্ত ও কণাদহত্ত ভার ও বৈশেষিক দর্শনের মূল গ্রন্থ। পরে শব্দর মিশ্র কৃত কণাদ হত্তোপকার, বলভাচার্য্য-কৃত লীলাবতী, উদরনাচার্য্য কৃত বার্ত্তিক-তাৎপর্য্য পরিশুদ্ধি, বাচম্পতি-মিশ্রকৃত বার্ত্তিক-তাৎপর্য্য টীকা,কেশব-মিশ্রকৃত তর্ক-ভাষা, গোবর্দ্ধনমিশ্র-কৃত তর্ক-ভাষা-প্রকাশ, কোণ্ডভট্ট-কৃত পদার্থ-দীপিকা, গলেশোপাধ্যার-কৃত চিস্তামণি, জরদেবমিশ্র-কৃত ঐ চিস্তামণির আলোক নামক টীকা, ক্রমনারায়ণ তর্কপঞ্চানন-কৃত কণাদহত্ত-বিবৃত্তি ইত্যাদি

† समाधिविशेषास्यासात्।

नाविद्ध। ८ व्य, ১०७ छ।

সমাধি-বিশেষের অভ্যাস হইলে ত**ৰ্জা**ন হয়।

^{*} तत्र दीपनिमित्तानां ग्ररीरादीनां तत्त्वस्य भनावात्वस्य ज्ञानान्निवर्तते। वृष्टि।

[‡] বিশ্বনাৰ ভটাচাৰ্য্য ন্যার হতা-বৃত্তির সংখ্য মৃত্তি-প্রকরণে বারংবার বোগস্ত্র ও বোর-মত উদ্ধৃত করিরাছেন।

জনেক গ্রন্থে ভার ও বৈশেষিক দর্শনের মত ব্যাখ্যাত, সকলিত ও বিচারিত ইইয়াছে।

ষ্ঠার দর্শনে বাজালা দেশকে ও বিশেষতঃ সরস্বতীর গৌড় পীঠ-সর্বাপ স্থপ্রকিছ নবছীপ ভূমিকে জগছিথাত করিয়া রাধিরাছে। এক সমরে ঐ স্থানে ঐ
দর্শন ও উহার প্রিয় সহোদর বৈশেষিক দর্শনের সবিশেষ অমুশীলন ও সমধিক
আন্দোলন সহকারে উন্তরোত্তর উন্নতি লাভ হইতেছিল। তথার অনেকানেক
প্রধান পণ্ডিত উৎপন্ন ও প্রাত্তর্ভু হইয়া বহুতর প্রগাঢ় গ্রন্থ প্রস্তুত করিয়া বান।
পণ্ডিত-প্রবন্ধ মথুরানাথ তর্কবাগীশ ক্লত চিস্তামণি-টীকা *, সার-গ্রাহী ও ফল
সংগ্রাহী বিশ্বনাথ ভটাচার্য্য-রচিত ভাষাপরিছেদ, সিছাস্তম্কাবলী ও স্থারস্ত্রবৃত্তি এবং কুশাগ্রবৃদ্ধি রঘুনাথ শিরোমণি-প্রণীত চিস্তামণি-দীধিতি, এবং তদীয়
সহবোগিত্বরূপ গদাধর, জগদীশ, কৃষ্ণদাস, ভবানন্দ প্রভৃতি-বির্চিত দীধিতিটীকা ইত্যাদি নবদীপ-সভূত বহুবিধ পৃত্তক-রত্নে স্থায়-ভাণ্ডার পরিপূর্ণ করিয়া
রাধিরাছে। কাশী, কাঞ্চি, জাবিড়, পঞ্জাব প্রভৃতি নানাদিকের নানাস্থানের
পাঠার্থিগণ ঐ সরস্বতী-পীঠ নবছীপ-ভূমি সমাগমন পূর্বাক শিক্ষা-শুক্রর আপ্রবে
অধিবাস করেন এবং তদীয় সরিধানে পাঠ স্বীকংর করিয়া অপ্রচণিত প্রাতন
ব্রশ্বচর্য্যের যেন পুনক্ষভাবন করিয়া যান।

মীমাংসা দর্শন।

এই দর্শন মহর্ষি কৈমিনি-প্রণীত। এই নিমিত্ত ইহাকে জৈমিনি-দর্শনপ্র বিদিয়া থাকে। তর্ক-প্রণালীর উদ্ভাবন করা যেমন স্থায়দর্শনের উদ্দেশ্য, সেই-রূপ, শ্রুতি-বিশেষের অর্থ-সমর্থন ও স্থল-বিশেষে শ্রুতি ও স্মৃতির পরস্পর বিরোধ ভঞ্জন করিয়া ধর্ম সংস্থাপন করা এই দর্শনের প্রধান প্রয়োজন। ভদর্থ শ্রুতি-বিশেষের তাৎপর্য্যার্থ নিরূপণ এবং শ্রুতি-স্মৃতির বিরোধ সংক্রোন্ত কোনরূপ সংশেষ ও পূর্ব্ধপক্ষ উপস্থিত করিয়া তাহার বিচার ও সিদ্ধান্ত করা হইয়াছে। এই ব্যাপারকে অধিকরণ বলে । এই দর্শনে এইরূপ অনেক অধিকরণ আছে।

পুর্বোক্ত গলেশোপাখ্যার-কৃত চিন্তামণি গ্রন্থের টীকা।

[†] ভারণাত্রোক্ত অম্মানের ভার সীমাংসা-শারোক্ত অধিকরণেরও পাঁচটি অল ; বিষর, বিশর (অর্থাৎ সংশর), পূর্ব্জণিক, উত্তর ও সক্ষতি (অর্থাৎ সীমাংসা)। পশ্চাৎ এই পাঁচ অক্ষের উদাহরণ প্রদর্শন করা বাইডেছে, তাহা পাঠ করিলেই অধিকরণের বিষর সহক্ষে বুঝিতে পারা বাইবে।

এই দর্শনে কর্মকাণ্ড-বিষয়ক শ্রুতিরই সবিশেষ আন্দোলন, বিচার ও সিদ্ধান্ত করা হইরাছে। এই নিমিন্ত ইহাকে কর্মমীমাংসা বলে। ইহার মতে স্বর্গভোগই মনুষ্যের পরম পুরুষার্শ। বেদোক্ত বাগ যজ্ঞাদি কর্ম করিলে, উহা প্রাপ্ত হওরা যায়। যথাবিধানে ঐ সকল কর্ম্মের অনুষ্ঠান করিলে, অবশ্রুই অবশ্রু ফল-লাভ বটে; তত্তির অন্ত কোন কল্যাতা নাই।

পশ্চাৎ কোন কোন মীমাংসক এইরপ মত প্রকাশ করিরা গিয়াছেন বে, পরমেখরের প্রীতি-কামনার কর্মাফুষ্ঠান করা কর্ত্তব্য, অর্থাৎ বে কোন কর্ম করিবে তাহা ঈশ্বকে অর্পণ করিবে। করিলে মক্তি লাভ হর।

এই দর্শনের মতে বেদ নিতা। বেদের যে অংশ যে ব্যক্তির ক্বত স্পষ্টই লিখিত আছে, এবং তন্মধ্যে নানা স্থানে ও নানা কালে বিভ্যমান লোকসমূহের ভক্তি শ্রন্ধা, রাগ দ্বেদ, কাম ক্রোধ, বিপদ আপদ, বৃদ্ধ বিবাদ, বাসন বাণিজ্য ইত্যাদি অশেষ প্রকার ব্যাপারের বিবিধ বৃত্তান্ত বিনিবেশিত রহিরাছে, তথাপি কৈমিনি মহাশরের মত-প্রভাবে তাহা অপৌক্ষের, অর্থাৎ কোন প্রক্ষের কৃত নয়, স্বতঃসিদ্ধ নিত্য পদার্থ, তাহার আদিও নাই অন্তও নাই এইরূপ অঙ্গীকার করিতে হইবে। দর্শনকার কেনের নিত্যতা সপ্রমাণ করিবার উদ্দেশে শব্দও নিত্য বিলয়া স্বীকার করিরাছেন। সেই নিত্য শব্দ, সমুদার অনিত্য শব্দের অন্তর্ভ বহিরাছে।

नितरसु सराइर्रेनसर परार्थे लात्।

কৈমিনিস্ত ১ । ১ । ১৮ সূতা।

भस निछा, क्नमा अञ्चरक छेहात अर्थ-वाथ कताहेवात छेल्परम छेक्कात्रन कता हत । यहि

বেদে ব্যবস্থা আছে, ইন্দ্রযাগে উড়্ঘরী স্পর্শ করিবে, কিন্ত কাত্যায়নস্থতিতে লিখিত আছে, ঐ বাসে উড়্ঘরীকে আহত করিবে। এখন এইরূপ শ্রুতি-স্থৃতির বিরোধ-স্থলে কিরূপ অসু-ঠান করা কর্ত্তব্য ইহার মীমাংসাবিষয়ক অধিকরণের পাঁচটি অঙ্গ পশ্চাৎ লিখিত হইতেছে।

विवत । — छेडू पत्री कावत्र । ও न्यार्ग कत्र । त्रिवत्रक भावीत्र विधि ।

विभंग ।--- छेप्चती म्मर्ग कि आवत्रन कहा कर्खना এই সংশंत ।

পূর্ব পক।—উক্ত শ্রুতি ও স্মৃতির পরম্পর বিরোধ প্রতিপাদন করা; বেষন উড়্বরী ম্পর্কমাত্র করিলে স্মৃত্যুক্ত বিধি উলজ্বন করা হর, এবং আবরণ করিলে, শ্রুত্যুক্ত বিধানের অন্যধাচরণ করা হর।

উত্তর। —পূর্ব্বপক্ষ থওন।

সক্তি।—ঐতিতে উভূম্বীর বে বে ছান স্পর্-বোগ্য বলিয়া লিখিও আছে, ভাষা পরি-তাাগ ক্রিয়া অপরাপর সমন্ত ছান আবৃত ক্রা কর্তিয়।

ে এই অধিকরণকে বিরোধাধিকরণ বলে। এক এক বিষয়ে অধিকরণ <mark>অবস্থন করিয়া</mark> জেৎসাল্য গোলোকা লিক্ষনাল <u>শিক্ষিক করণ করে ।</u> উচ্চারণ মাত্রেই উহার বিনাশ হইত তাহা হইলে কেহ কাহাকে উহার অর্থ-বোধ করাইতে সমর্থ হইত না # ।

এরপ দর্শনের কাল অতীত হইরা যে, বিজ্ঞানের অধিকার বিস্তৃত হইতেছে, ইহাতে বিশুদ্ধ-বৃদ্ধি স্থানিক্ত ব্যক্তিরা এক প্রকার নিস্তার পাইতেছেন। সাধে কি রামমোহন রার সংস্কৃতকালেজ সংস্থাপনের বিরোধী হইরা তৎপরিবর্ত্তে ইংরেজী বিস্তালর স্থাপনার্থ অফুরোধ করেন † ? তিনি বলেন, কেবল সংস্কৃত শিক্ষা দিলে লোককে নির্বোধ করিয়া রাখা হইবে।

Neither can much improvement arise from such speculations as the following which are the themes suggested by the Vedanta;—in what manner is the soul absorbed in the deity? What relation does it bear to the Divine Essence? Nor will youths be fitted to be better members of society by the Vedantic doctrines which teach them to believe, that all visible things have no real existence, that as father, brother &c. have no actual entity, they consequently deserve no real affection, and therefore the sooner we escape from them and leave the world the better. Again, no essential benefit can be derived by the student of the Mimansa from knowing what it is that makes the killer of a goat sinless by pronouncing certain passages of the Vedanta, and what is the real nature and operative influence of passages of the Vedas, &c.

The student of the Nyaya Shastra can not be said to have improved his mind after he has learned from it into how many ideal classes the objects in the universe are divided and what speculative relation the soul bears to the body, the body to the soul, the eye to the ear, &c.

^{*} মামুবের মনের গতি অনেক হানে একরণ দেখিতে পাওরা যায়। চীনেদেরও এই রূপ একটি বচন আছে বে, একবার শক্ষোচোরণ করিলে, গগন-মণ্ডলে চির দিন তাহার প্রতিথ্যনি চলিতে থাকে।

[†] ইংলগুছ রাজপুরুবেরা এদেশীর লোকের শিক্ষা-সাধনার্থ এক লক্ষ চিনেশ হাজার টাকা প্রদান করেন এবং অত্যতা রাজপুরুবেরা তদারা একটি সংস্কৃতকালেজ সংস্থাপম করিতে উদ্যত হন। এই সংবাদ অবগত হইরা, রামমোহন রার সে সমরের শাসনকর্তা লর্ড এম্হর্শ ইকে এক থানি পত্র লেখেন। তাহাতে তিনি, সংস্কৃতকালেজের পরিবর্ত্তে একটি ইংরেজী বিদ্যালয় সংস্থাপন করিয়া নানাবিধ বিজ্ঞান শিক্ষা নিতে অনুরোধ করেন এবং সংস্কৃত শাল্পের অনুশীলন ও অধ্যরন অধ্যাপনা প্রচলিত রাখিবার উদ্দেশে এদেশীর চতুম্পাঠী সমুদারের অধ্যাপকগণের আমুকুল্য-প্রার্থনা লিখিরা দেন।

In order to enable Your Lordship to appreciate the utility of encouraging such imaginary learning as above characterized, I beg Your Lordship will be pleased to compare the state of science and literature in Europe before the time of Lord Bacon with the progress of knowledge made since he wrote.

If it had been intended to keep the British nation in ignorance of real knowledge, the Baconian philosophy would not have been allowed to displace the system of the schoolmen, which was the best calculated to perpetuate ignorance. In the same manner the Sanskrit system of education would be the best calculated to keep this country in darkness, if such had been the policy of the British legislature. But as the improvement of the native population is the object of the Government, it will consequently promote a more liberal and enlightened system of instruction, embracing Mathematics, Natural Philosophy, Chemistry, Anatomy, with other useful sciences, which may be accomplished with the sums proposed by employing a few gentlemen of talents and learning educated in Europe and pooviding a College furnished with necessary books, instruments and other apparatus.

In representing this subject to Your Lordship, I conceive myself discharging a solemn duty which I owe to my countrymen and also to that enlightened sovereign and legislature which have extended their benevolent care to this distant land.

সংস্কৃত একটি প্রধান ভাষা। ভারতবর্ষীয় ধর্মণাক্ষের অধিকাংশ সেই ভাষার রচিত। এদেশীয় লোকের তাহাতে যথেষ্ট শ্রদ্ধা আছে। অভএব উলিখিত বাক্যগুলি অনেকের ক্ষচিকর না হইলে না হইতে পারে। কিন্তু না হইলেই বা কি ইইবে ? ঐ কথাগুলি অবিনশ্বর হীরকমর অক্ষরে লিখিত। উহার এক একটি বাক্য এক এক গাছি হীরক-মালা। "ভাষা-শিক্ষা প্রকৃত জ্ঞান-শিক্ষা নয়; জ্ঞান শিক্ষার উপায় মাত্র। ভাষা জ্ঞানরূপ ভাঙারের হার-শ্রন্থ । সেই হার উদ্যাটন করিয়া জ্ঞানভাঙারে প্রবেশ করিতে হয়। চির জীবনই কেবল হার দেশে দণ্ডারমান থাকিলে, কির্নেণে জ্ঞানরূপ মহারক্স লাভের

^{*} Ram Mohun Roy's letter to Lord Amherst.

সম্ভাবনা থাকে ৷ জ্ঞানরত্ব লাভার্থে বছু না করিয়া কতকঞ্চিল ভাষা শিক্ষার কালকেণ করিলে, অসিদ্ধ কাম ভিকুকের ভার কেবল ছারে স্থারে শ্রমণ করা হয় *।" যে ভাষা প্রকৃত জ্ঞানরূপ বিশুদ্ধ রুছে পরিপূর্ণ, তাহাই সম্ধিক আদরণীর ও সর্বতোভাবে শিক্ষণীয়। বেরূপ জ্ঞান উপার্জ্জন করিলে, বুদ্ধি মার্জিত হয়, অম ও কুসংস্কার দুরীক্বত হয়, এবং লগতের প্রাক্বত নিয়ম-প্রশালী व्यवगं इहेब्रा कर्खवाकिखंबा निकाशन शूर्खक निस्कत ७ बन-ममास्कत मर्ख-বিধ তীর্দ্ধি সাধন করিতে সমর্থ হওয়া যায়, দেইরূপ জ্ঞান শিকা করাই কর্তব্য। ভ্রম, করনা ও কুসংস্থার সংস্কৃত শাল্রের সর্ব্ব স্থানে ওত্প্রোত-ভাবে ব।ाश्च त्रवित्राष्ट्र। याँशात्रा हेश्यत्रकी, कतांनी चलवा सर्थन् ভाषात्र স্থশিক্ষিত হন, প্রকৃত জ্ঞান-গাভ উদ্দেশে সংস্কৃত ভাষায় তাঁহাদের শিক্ষণীর অরই বিষয় আছে। সংস্কৃত শাস্ত্রের মধ্যে প্রকৃত জ্ঞান-সংজ্ঞার উপযুক্ত বংকিঞ্চিৎ বাহা বিভাষান আছে, উল্লিখিত তিনটি ইউরোপীয় ভাষার একটিতে অধিকার থাকিলে, তাহার শত সহস্তপ্তণ অক্লেশে একত প্রাপ্ত হওরা যায়। স্তৃপাকার শুল্র অন্ন প্রস্তুত পাইলে, তুবাবদাত করিয়া কতকণ্ডলি কণিকামাত্র সংগ্রহ করিবার প্রশোলন কি? তাহাও নির্বাচন করিয়া লওয়া ইউরোপীয় বিভায় প্রশিক্ষিত বিভন্ধ বুদ্ধির কার্যা। যদি কোন কুত্ৰিভ ব্যক্তি শক্বিভার বা ভারতব্যীয় পুরারুত বিভার অধবা অত্তত্য কোন দেশ-ভাষার এীবৃদ্ধি-দাধনে কৃত-সংকল হন, কিংবা ভারতবর্ষীর চিকিৎসা শাস্ত্র হইতে উত্তম উত্তম ঔবধ সংগ্রহ করিতে ইচ্ছা করেন, তাহা হইলে তাঁহার সংস্কৃতাদি অগু অক্স ভাষার অসু-भीगन कता উচিত বটে, किन्द खान-त्राप्तत्र चाकत्र-श्वत्र शृर्खाक जिनीं ভাষার একটি শিক্ষা করিবার উপায় থাকিলে প্রকৃত জ্ঞান-লাভ উদ্দেশে অপর সাধারণ সকলের সংস্কৃত শিক্ষা করিয়া কাল-ক্ষেপ ও আয়ুক্ষয় করিবার িক্ছুমাত্র প্রয়োজন নাই। ইউরোপীয়েরা এটিজের উনবিংশ শতাকী বলিয়া মনের তেজে বে জ্ঞানোজ্জলিত সমরের মহিমা প্রকাশ করেন, এই সেই সমরে নিপ্রবাজন কেবল ভাষা শিক্ষা করাকে বাস্তবিক শিক্ষা মনে করা উপহাসের विश्वं ।

এই কারণেই রামমোহন রায় সংস্কৃত কালেজ সংস্থাপনের পরিবর্তে ইংরেজী বিস্তালয় স্থাপন করিয়া বিজ্ঞান শিক্ষা দিতে অনুরোধ করেন। তিনি কোন্

⁺ ধর্মনীতি।

কালে কিব্ৰুপ বিজ্ঞানোৎসাহ প্ৰকাশ কৰিবা গিৰাছেন, ভাৰিলে শৰীৰ পুলকিভ इहेबा फेर्फ । त्व नमरत्र छात्र कवर्ष व्यक्तकारत व्यक्तित हिन वनितन हत्न, धवर यथन हिन्द-मयाद्य हेजेद्राभीय विकार्जय नात्याकायभाव विदाहिन कि ना मत्नर, এট দেশে দেই অন্ধকারময় সময়ে বিজ্ঞান বিষয়ে এরপ অভ্যাপ ও উৎসাহ প্রকাশ আশ্চর্য্যের বিষর *। ধন্য রামনোহন রায়। সেই সময়ে তোমার সতেজ বৃদ্ধিল্যোতিঃ বোরতর অজ্ঞানরূপ নিবিড় অন্দ-রাশি বিদীর্ণ করিয়া এডদুর বিকীর্ণ হইয়াছিল এবং তৎসহকারে তোমার স্থবিমল বচ্ছ চিত্ত বে নিল দেশে ও নিজ সময়ে প্রচলিত সকল প্রকার কুসংস্কার নির্বাচন করিয়া পরিত্যাগ করিয়া-ছিল, ইহা সামান্য আশ্চর্ব্য ও সামান্য সাধুবাদের বিষয় নয়। তথন তোমার জ্ঞান ও ধর্ম্মোৎসাহে উৎসাহিত হৃদয় জললময় পঙ্কিল-ভূমি পরিবেষ্টিভ একটি অগ্নিমর আথেরগিরি ছিল; তাহা হইতে পুণ্য পবিত্র প্রচুর জ্ঞানাগ্নি সতেকে উৎক্ষিপ্ত হইয়া চতৰ্দিকে বিক্ষিপ্ত হইতে থাকিত। তুমি বিজ্ঞানের অনুকল পকে যে অগভীর রণবাদ্য বাদন করিয়া গিয়াছ, তাহাতে বেন এখনও আমাদের কর্ণ-কুহর ধ্বনিত করিতেছে। দেই অত্যন্ত গন্তীর ত্বরীধ্বনি অদ্যাপি বার বার প্রতিধানিত হইয়া এই অংক্গ্যে দেশেও জয় সাধন করিয়া আসিতেছে। তুমি খদেশ ও বিদেশ-ব্যাপী ভ্রম ও কুসংস্কার সংহার উদ্দেশে আততারি-খরুপে রণ-তুর্মাদ বীর পুরুষের পরাক্রম প্রকাশ করিয়াছ, এবং বিচার-যুদ্ধে স্কল বিপক্ষ পরান্ত করিয়া নিঃসংশরে সম্ক্রপে জরী হইরাছ। তোমার উপাধি রালা। কড়মর ভূমিধও তোমার রাজ্য নয়। ভূমি একটি হুবিস্তর মনোরাজ্য অধিকার করিয়া রাখিয়াছ। তোমার সমকালীন ও বিশেষতঃ উত্তরকালীন স্মাৰ্জিড-বৃদ্ধি শিক্ষিত সম্প্ৰদায়ে ভোমাকে বাজ-মুকুট প্ৰদান করিয়া ভোমার অন-ধ্বনি করিয়া আদিতেছে। যাঁহারা আবহুমান কাল হিন্দু আতির মনো-রাজ্যে নির্বিবাদে রাজত্ব করিয়া আসিয়াছেন, তুমি তাঁহাদিগকে † পরাজর করিরাছ। অতএব তুমি রাজার রাজা। তোমার জন-পভাকা ভাঁচালেরট স্বাধিকার মধ্যে সেই বে উদ্ভোলিত হইরাছে, আরু পতিত হইল না, হইবেও না, নিম্নতই একভাবেই উজ্জীয়মান রহিয়াছে। পূর্বেবে ভারতবর্ষীয়ের।

এখন তো বিদ্যালোক-প্রকাশে সেই ভিমির-রাশির কির্দাণে ছেন-ভেদ হইরাছে, ভথানি
 এখনও ভাষার সাম্প্রদায়িক লোক খলিরা পরিচিত করেক ব্যক্তি আমার সমক্ষে বিলক্ষ্ণাবে
 মুক্তকঠে বিজ্ঞানের প্রতি বিরাধ ও বিবেষ প্রকাশ করিরাছেল। ধিক্ । ধিক্ । শতবার ধিক্।
 প্রচলিত হিন্দুবর্ম-যাবহালকলিলকে।

ভোরাকে প্রম শক্ত বলিরা জানিতেন, তদীর সন্তানেরা জনেকেই এখন ভোষাকে পরম বন্ধু বলিরা বিখাস করিভেছেন, ভাহার সন্দেহ নাই। কেবল ভারতবর্ষীরদের বন্ধু কেন, তুমি অগতের বন্ধু।

"The promotion of human welfare and especially the improvement of his own countrymen, was the habit of his life.

Rev. Carpenter.

"An ardent well-wisher to the cause of freedom and improvement everywhere." *

এক দিকে জ্ঞান ও ধর্ম-ভূষণে ভূষিত করিরা জন্ম-ভূমিকে উজ্জ্ব করিবার বন্ধ করিষাছ, অপর দিকে সকটমর স্থাভীর সম্ক্রসমূহ উত্তরণ পূর্বক বৃটিস্-রাজ্যের রাজধানীতে উপস্থিত হইরা নানাবিষয়ে রাজশাসনপ্রণালীর সংশোধন ও শুভ-সাধনার্থ প্রাণপণে চেষ্টা পাইরাছ †। সে সময়ের পক্ষে এ কি কাও!

তিৰি উলিখিত সমূদার গ্রন্থ ও প্রবদাদির সংগ্য ভারতবর্ষীর (লোকের পদ-বৃদ্ধির জন্য অনুরোধ ও ব্যাকুল চিত্তে কৃষিজীবীদের ছঃধ-ছরণার্থ প্রার্থনা করেন।

সেই সময়ে পার্নিএমেটে ভারতবর্ষের শাসনসংক্রান্ত নৃতন নিরমাবলী প্রভাবিত হয়; ভিনি ভদর্থে এত চিন্তিত থাকিতের বে, অনেকে বার্থ-সাধন বিষয়েও তত চিন্তিত থাকে কি না সন্দেহ।

তাহার ঐ পুত্তক ও এবজঙলি জন উপকারী হের নাই। বৃটিস্ রালপুরবেরা উহিার অভিপ্রারাস্থানে ক্রান ক্রে অনেক কার্য্য করিয়াছেন ও তদ্বারা বিশেষ উপকারও বর্ণিয়াছে ভাহার সন্দেহ নাই।

^{*} Miss. Lucy Aikin's letter to Dr Channing.

[🕇] বদেশের কল্যাণ-সাধন ও বিশেষতঃ ভারতবর্ষীর রাজ্য-শাসন-প্রণালীর সংশোধনই রামমোত্র রায়ের ইংলও গমনের প্রধান উদ্দেশ্য ছিল। প্রচলিত তিলধর্ম-পক্ষপাতী ব্যক্তিরা गरुमत्र-विरात-विरात क तांस्वितामत श्रीलक्ष शाल देशाए चारवेषनेभेख (श्रात करते : দেই বিষয়ের স্থবিচার সম্পাদন উদ্দেশে, ও ইস্ট ইপ্রিয়া কোম্পানির চারটার পরিবর্তন সমরে তৎসংক্রান্ত বিচারে লিপ্ত হটরা যদি ভারতবর্ষীরপের হিত-সাধন করিতে সমর্থ হন এই **অভিনাৰে, এবং বিশেষতঃ ইউরোপীয় বিভিন্ন জাতির আচার** ব্যবহার ধর্মাদি বিষয়ের অসু-সভাবার্থে তিনি ইংলও পদন করেন। দিল্লীর বাদসাহ একটি মোকদ্দমার ভারার্পণ করিয়া তাঁহাকে তথার পাঠাইরা দেন : ইহাতেই তাঁহার মনোরও পুরণের হবিধ। ও সভুপার ঘটিরা উঠে। তিনি বত हिन তথার অবস্থিতি করেন, তত हिन है के मकत बहु वाशांत माधनार्थ है ৰাত ও চিভিত ভিলেন ৷ তিনি বাছৰ ও বিচার-প্রণালী সংক্রান্ত অনেকগুলি প্রবন্ধ লিখিয়া বোড অব কটোল নামক রাজকীয় কার্যালয়ে অর্পণ করেন এবং সেই কার্যালয়ের অধ্যক্ষেরা হোস অব কমনস নামক সভার সেই সমস্ত পাঠাইরা দেব। ভত্তির ভিনি রামপুরুবদের অসুরোধক্রমে পার্লিএমেট ভবনে বিজে বারংবার উপস্থিত হইরা শাসন-প্রণানী সংক্রান্ত আপন অভিপ্রায় প্রকাশ ও সংপরামর্শ প্রদান করেন এবং ভারতবর্ষীয় রাজকীয় বাপিবের খণাখণ বিচার ও উত্তরকালীৰ শাসন-পছতি বিষয়ক নানাবিধ প্রভাব, বৃক্তি ও পরামর্শ লিখির। বিভাগাদির নক্সা-সম্বলিত একখানি পুত্তক প্রস্তুত করেন। ঐ সমুদার वाकित्तरक, हिन्मरमन मात्राधिकांत्र ७ छात्रक्वर्योत्र विठात-व्यवामीमरकांच जन्नाच श्रुप्तेक । ब्रह्मा करबन ।

কি ব্যাপার ! স্বাভাবিক শক্তির এতই মহিমা ! তুমি ইংলণ্ডে দিয়া অধিষ্ঠান করিলে, তথাকার স্থপণ্ডিত সাধু লোকে তোমার অসাধারণ গুণ-গ্রাম দর্শনে বিশ্বয়াপন্ন হইয়া যায় । তোমার সাক্ষাৎকার লাভ করিয়া, একবার তথাকার কোন সজ্জন-সমাজে চমৎকার-সম্বলিত এরপ একটি অপূর্ব্ব ভাবের আবির্ভাব হয়, বেন সাক্ষাৎ প্লেটো, সজেটিস্ বা নিউটন্ ধরণী-মণ্ডলে পুনরায় উপস্থিত হইলেন * । তুমি আপন সময়ের অতীত বস্তা। কেবল সময়েরই কেন ? আপন দেশেরও অতীত। ভারতবর্ষ তোমার যোগ্য নিবাস নয় । এক ব্যক্তিবলিয়া গিয়াছেন, এরূপ দেশে এরূপ লোকের জন্ম-গ্রহণ অবনী-মণ্ডলে আর কথনও ঘটিয়াছিল বোধ হয় না † ।

[&]quot;They" (Ram Mohun Roy's Communications to British Legislature) "show him to be at once the philosopher and the patriot. They are full of practical wisdom; and there is reason to believe that they were highly valued by our Government, and that they aided in the formation of the new system."

Dr. Carpenter.

^{* &}quot;Monthly Repository" of June, 1831.

[†] বে সমরে গুরুপাঠদালার গুভকরী আন্ধ ও কচিৎ পার্সী কার্দা (১) শিক্ষাবিধি সর্বসাধারণ বিষয়ী-লোকের বিদ্যাশিকার চরম সীমী ছিল, সেই সমরে বিলি পৃথিবীর প্রাচীন ও অপ্রাচীন বহতর প্রধান প্রধান ভাষা প্রভৃতি দশ ভাষার ও বিবিধ বিজ্ঞানে স্বীর অধিকার বিশুরে করেন (২); বিনি ভিন্ন ভিন্ন নানা ভাষার স্বদেশের কল্যাণকর বিবিধ পৃত্তক প্রস্তুত্ত করেন, আপনার দেশ-ভাষার রীতিমত পদ্য-গ্রন্থ-রচনার পথ প্রদর্শন করেন, সেই ভাষার ব্যাকরণ-রচনারি বারা তাহার শিক্ষা-প্রচলনের উপারাম্ভান করেন (৩) এবং বেরপ শিক্ষার লোকের বৃদ্ধি নাজ্যিত ও কুসংক্ষার বিনষ্ট হইরা বিশুদ্ধ জ্ঞান-পথে প্রবৃত্তি অলে, ইংরেজী বিদ্যালয়-সংস্থাপনাদি বারা ব্যান্থের পিলা-প্রণালী প্রচলিত করিবার কন্য যথোচিত চেটা পান বে সমরে তাহারা বাোরতর জ্ঞান ও অশেব প্রকার কুসংক্ষারে পদ্ধ হইরাছিল, সেই সমরে বিনি আপনার বৃদ্ধি, বিদ্যা ও তেজবিতা প্রভাবে সমৃদার কুসংক্ষার পরিত্যাগ পূর্বক ক্ষেদ্শের আচার, ব্যবহার, ধর্মাণি সংশোধন করিতে কৃতসক্ষর হন, ও সে বিবরে স্বিপূণ ও কৃতক্ষাব্য হইবার উদ্দেশে স্থল-পথে ও সমুক্ত-পথে কত কত অভিদ্র-স্থিত তুর্গন দেশ পরিজ্ঞান করেন (৪); বিলি ক্দেশীর প্রীলোকের ব্যথার ব্যথিত ও কাক্ষণ-রনে অভিবিক্ত ইইয়া তথার শিক্ষা বিবরে

⁽১) পার্সী ব্যাকরণ

⁽³⁾ The wide field over which his acquirements spread comprising sciences and languages, which individual knowledge rarely associates together." W. J. Fox.

⁽৩) সামনোহন রাম বাজালা ভাষার গৌড়ীয় ব্যাক্ষরণ ব্যতিরেকে থগোল ও জ্যাগ্রাহী নামে জ্যোতিব ও ভূগোল বিদ্যা বিষয়ক অপর ছুইখানি শিক্ষা-পুতক প্রস্তুত করেন।

⁽৪) ভোট দেশে তিন বংসর ও ইউরোপে সার্ক ছুই বংসর অবহিতি করেন। সে সময়ে নানাবিধ মুর্গন দেশে পরিজমণ পুর্বাক ভোট দেশ প্রান্ত গমনা করা। সামনা বালাগোলা জিলা স্থান

"Strange is it that such a man should have been given by India to the world.

Strange it is—but he was not of India, so much as for India."

Rev. W. J. Fox's Sermon.

"Such an instance is probably unparalleled in the history of the world." Mary Carpenter.

সহমরণ-নিবারণ, ব্রাহ্মধর্শ্ব-সংস্থাপন, দেশীর লোকের পদোরতি সাধন ইত্যাদি তোমার কত জরস্তম্ভ ও কীর্ষিত্ত জাজনামান রহিরাছে। না লানি কি কল্যাণমরী মহীরসী কীর্ত্তি সংস্থাপন উদ্দেশে অর্ক্ত-ভূমগুল অভিক্রেম করিতে । ক্রতসংকর ও প্রভিজ্ঞারত হইরাছিলে। তালৃশ স্থাব-স্থিত ভূথগু-বাসী স্থ্য-প্রিত্ত সাধু লোকেও তোমার অসামান্য মহিমা জানিতে পারিরা, প্রত্যুদসমন পূর্বাক তোমাকে সমাদর করিবার জন্য অভিমাত্র ব্যক্র ছিল। মনে মনে কতই গুভ সম্বর্গ সঞ্চারিত ও কতই দ্যাস্রোভ প্রবাহিত করিরাছিলে। কিন্তু ভার-তের কপাল মন্দ। সে সম্বায় কর্ম-ক্ষেত্রে আসিরা আবিভূতি হইল না।

সমূচিত যুক্তি প্রদর্শন ও নিতান্ত সামুক্ল ভাব প্রকাশ ০করেন, বছবিবাহ-রীতি ও বর্তমান দায়াধিকার বিষয়ক ব্যবস্থা তাহাদের অশেষ ক্লেশের মূল ও অনেক অনর্থের কারণ বলিয়া क्षाता करवम, व्यमक्क निश्रह मक्ष कतिवास धार्यमाल महमत्रमञ्जू विवयन धार्य निवात करवन अवः (प्रणावत अरे सम-अवार अठिनिछ रत्न (व. रेशन**७ हरे**ए अ**छा। भवन क**तिहा विश्वा-विवार श्राम्य । अपनात विकास के कि विकास के कि विकास के कि का कि হিতাম্চান ধর্মের মর্ম-গ্রহণ করিতেই পারিত না, সেই সমরে বিনি ঐ ধর্মটি আপনার চির-জীবনের এক্ষাত্র নিতাবত-বরূপ অবলম্বন করেন ও তাহাদের বিষম বিষেষ ও যোরতর প্রতিকৃত্তা অভিক্রম করিয়া তাহাদেরই তু:খ-হরণ, কুখ বর্দ্ধন ও সর্বধ্যকার উন্নতি সাধন করিতে নিরম্ভর প্রতিজ্ঞার্চ থাকেন; কেবল বজাতির ওভাবেবণ নর, বিনি ভূমগুলের অস্তান্ত প্রধান প্রধান ধর্ম সংশোধন ও অন্য দেশীয় লোকের ছিতামুঠান বিষয়েও উৎসাহ ও বছ ध्यकान करत्रव ; त्ववन बर्म्मानित शत्रिवर्तन नत्र यिनि चत्रः चांबीन स्मानत व्यविवासी ७ ताल-পুরুষের মধ্যে পরিপণিত না হইলেও নিজের বৃদ্ধি বিদ্যা ও ক্ষমতা প্রভাবে রাজশাসন-প্রণানীর সংশোধন ও উন্নতি সাধন করিরা ব্যবদীর লোকের ত্রংবছরণ ও বীবৃদ্ধি সম্পাদনার্থ অতিপর সাহসিকতা প্রদর্শন পূর্বেক কারননোবাক্যে চেষ্টা পান, ও অসাধারণ বৃদ্ধি-গৌরব, রাজনীতি-कार्जा, व्यश्चनात्र ७ উপচিकोशी अकाम मृत्रीक ये नमण व्यनामाना जियदे कित्रकोषन वासूत्रक थाकिया ता नमत्त्र ७ जाननाम कीविछ-कान मत्या चलमून मुख्य कुछ-कार्या इन, अवर विनि উল্লিখিভরণ মহৎ ক্রিরাস্টান, সর্বা-হিতিবিভা স্থাপরতা শিষ্টাচার ৩ মিষ্টালাপঞ্ধে সর্বোং-কুট্ট প্ৰসভ্য-লাতীয় বিশিষ্ট লোকের প্ৰীতি-পাত্ৰ ও ভক্তি-ভাৰৰ হইয়া বাৰ, তাহার সদৃশ উক্তরণ অসাধারণ রহতর গুণালকারে অলঙ্গুত ব্যক্তি ভূমগুলে এবং বিশেষতং এরণে অবোসঃ দেশে আর কথনও অলঞ্জি করিয়াছেম এঞ্জার দেখিতে পাওয়া বার না। একাধারে এরপ অলেব প্রকার অসামান্য-বিবরিণ অলোক-সামান্য বৃদ্ধি, ক্ষমতা ও হিতৈবিভার একল সংযোগ चात्र कथन चाउँ नारे त्यां रत्र ।

। আমেরিকা প্রস করিতে।

বৃদ্টল !—বুদ্টল ♦! তুমি কি সর্জনাশই করিয়াছ! আমাদিগকে একে-বারেই অনাথ ও অবসর করিয়া রাথিয়াছ! বাহাতে অশেষরূপ অমৃত-আদ কল-রাশি উৎপংখ্যমান হইরাছিল, সেই অলোক-সামান্য বৃক্ষমূলে সাজ্যাতিক কুঠার প্রহার করিয়াছ!

সেই বিপদের দিন কি ভয়ত্বর দিনই গিয়াছে ৷ আমাদের সেই দিনের মৃতা-শৌচ অদ্যাপি চলিতেছে ও চিরকালই চলিবে। সেই দিন ভারতরাজ্যের কল্যাণ শিরে বজাঘাত হইরাছে! এদেশীয় নব্য সম্প্রদার। সেই দিন ভোমরা নিরাশ্রয় ও নিঃস্থায় হইয়া রণজিং-শুন্য শিক দৈন্যের অবস্থায় পতিত হইয়াছ ৷ তঃখ-कोरो क्षिकीविश्रण (व मश्रस (जागदा चामण ७ वित्तरभव कर्ना चामणी चार গ্রন্থত করিয়াও নিজে বছেন্দ মনে ও নিরশ্রনমনে অত্যপরুষ্ট তণ্ডুল গ্রাসও গ্রহণ করিতে পাও নাই, ংসেই সময়ে বিনি ঐ ছঃসহ ছঃখ-রাশি পরিহার করিরা ट्यामाराज मख्य कारत मीजन कतियात बना वाक्न हिर्मन, धदः ज्ब्बना বুটিন রাজ্যের রাজধানীতে অধিষ্ঠান পূর্বক তোমাদের অজ্ঞান্ডসারে প্রত্যেক बाक्श्रस्यत् निक्रे चहुरछ निषिद्या विरमयक्रश कांछत्रछ। ध्यकाम करतन, + त्मरे দিনে ভোমরা দেই ক্রণাম্ম আশ্রয়ভূমির আশ্রয় লাভে চিরদিনের মত ৰঞ্চিত হইয়াছ ৷ ভারতব্যীয় চিয়ী-নিগ্রহ-ভাজন অবলাগণ ৷ ভোমাদের অশেষক্ষণ হু:খ-বিষোচন ও বিশেষরূপ উন্নতি-সাধন যাঁহার অন্তঃকরণের একটি প্রধান महत्र हिन, এবং यে कारत विशोर्ग-कात्री व्याभात खत्र वहेंदन मंत्रीरतत स्मानिज ওছ হইরা হুংকম্প উপস্থিত হর, যিনি নিতাস্ত অ্যাচিত ও অশেষক্রপ নিপ্তইত रहेबाও তোমাদের সেই নিদারুণ আত্ম**ণাত ব্যবস্থা ‡ ও ত**ন্ধিবন্ধন অ**ত্মনবর্গের** শোক-সন্তাপ, আর্ত্তনাদ ও অঞ্-বারি সমন্তই নিবারণ পূর্বক ভারতম্ওলের माजु-होन व्यनाथ वानटकत मरथा। द्वाम कतित्र। यान, तमहे नितन ट्यामात तमहे ৰ মামন্ন প্রমাবদ্ধকে হারা হইনাছ। বিবিধ পীড়ায় প্রপীড়িত জননী ভারত-ज्मि! य जाना नद्रातात्कद्र जीवन-श्रद्धन, त्रहे विम ट्यामाद त्रहे जानावती वृत्रि निभू न रहेशाह्य !

পূর্বজন শোক-সংবাদ নবীভূত হইয়া উঠিল! অঞ্-লল নিবারণে একে-

[•] रेश्नीत्थत्र जल्दर्गं वृत्रिन नामक शाल त्रामत्याहनं तात्त्रत मृत्यु ७ नमाधि इत ।

t Appendix to the Report from the Select Committee of the House of Commons on the affairs of the East India Company, published in 1831.

¹ गर्यद्व वर्षा।

বারেই অসমর্থ হইরা পড়িছেছি। এ সমরে বিষয়ন্তর শরণ করিরা উহা বিশ্বত হওরা আবশ্যক। একটি প্রবোধের বিষয়ন্ত আছে। আমাদের রাজা একেবারে নির্মাণ হইবার বস্তু নন। তিনি ভূ-লোক হইতে অন্তর্হিত হইরাছেন তথাচ চিরাবলম্বিত হিত-এত উদ্যোপন করিয়া যান নাই। তদীর সমাধি-ক্ষেত্র হইতে কতবার কত পরম প্রছের স্থাবিত্র মহানাদ বিনির্মাত ও প্রতিধ্বনিত হইরা কতই হিতোৎসাহ উদ্দীপন ও কতই শুভ সঙ্কর সম্পাদন করিয়া আসিরাছে *! অতএব তিনি প্রাণত্যাগ করিয়াও আমাদিগকে পরিত্যাগ করেন নাই; জীবৎ-কালের সদভিপ্রায়-বলে ও নিজ চরিতের দৃষ্টান্ত-প্রভাবে মৃত্যুর পরেও উপকার সাধন ও উপদেশ প্রদান পূর্মক আমাদের ভক্তি ও ক্রতজ্ঞতা ভাজন হইরা রহিয়াছেন। কেবল আমাদের নয়, ইয়ুরোপ ও আমেরিকাও ভক্তি-প্রছা সহকারে তাঁহাকে চির-শ্বরণীর করিয়া রাধিয়াছে।

"'Being dead, he yet speaketh' with a voice to which not only India but Europe and America will listen for generations"

Fox's Sermon.

"'Though dead, he yet speaketh'; and the voice will be heard impressively from the tomb, which, in his life, may have excited only the passing emotions of admiration or respect."

Dr. Carpenter's Sermon.

তিনি জীবদশার সদেশীর লোক কর্ত্বক নিগৃহীত হইরা প্রত্যাশা করিয়াছিলেন, উত্তরকালীন লোকে তাঁহার নিকট ক্লতক্ষ হইবে। কিন্তু একাল
পর্যান্ত তাহার তাদৃশ কিছু দৃশ্যমান চিহ্ন প্রকাশ পার নাই। ভাগ্যে স্থবিখ্যাত
ঘারকানাথ ঠাকুর মহাশহ ইংলগু ভূমিতে গমন করেন, ভাই তাঁহার একটি
রীতিমত সমাধি-মন্দির প্রস্তুত হয়। ভাল, ভারতবর্ষীরপণ! ভোমরা
তো মধ্যে মধ্যে ব্যক্তি বিশেবের শ্বরণার্থ ভালীর প্রতিরূপাদি প্রস্তুত করিছে
ক্রান্যর হও, কিন্তু রামমোহন রারের একটি সর্বাবেরব-সম্পান প্রতিকৃত্তি প্রস্তুত
করাইরা বেণ্টিক মহোদেরের দক্ষিণ হস্তের দিকে সংস্থাপন করিতে কি শ্বভিলাব

অর্থাৎ রামনোহন রারের অভিপ্রেত, তাঁহা কর্ত্বক প্রচিত, প্রপ্তাবিত, অথবা উাহার প্রার্থনা, বত্ব ও পরিপ্রমে রাজনিয়রে বিনিবেশিত অনেক বিষর তাঁহার মৃত্যুর পরেও আন্দোলত, প্রচলিত বা প্রবল হয়; বেষল গ্রী-শিক্ষা বিজ্ঞান-শিক্ষা, ইংরাজি শিক্ষার স্থবিপ্তার, প্রাক্ষধর্মের উন্নতি, বিষয় বিশেষে ত্রীলোকের প্রবৃদ্ধি, কৃষিজীবীকের গ্রংবোগশন বিষয়ক রাজনিয়ন বিশেষ, বিচারালয়ে কুড়ি বারা বিচার সম্পাদন ইত্যাদি।

হয় না ? প্রদেশীয় গ্রন্থকারগণ ! সবিশেষ অমুসদ্ধান পূর্ব্বক তাঁহার একথানি সর্বাধ-স্থাদ-স্থাদ জীবন-চরিত সঙ্কলন করিয়া স্বীয় লেখনী সার্থক ও পবিত্র করা এবং তত্মারা তাঁহার ঋণের লক্ষাঃশের একাংশ পরিশোধ করা কি অতিমাত্র উচিত বোধ হয় না ? আমরা কি অক্তত্ত ! কি নরাধম !

श्राप्त्रविक कथा-श्रवाह व्याम: वृद्धि हहेबा পड़िबाह्य मठा वर्ते, किन्न প্রিয়তম পাঠকরণ ! বিনি ভারতভূমির হু:ধহরণ ও শুভ-সাধনার্থ প্রাণ, মন, धन ममर्शन करतन, "मानव करनत हिण-माधन कताह भत्रामधात वर्षा छेशा-সনা'' এই মহার্থ-বোধক পরম পবিত্র পার্দিক বচনটি বিনি সভত আবৃত্তি করিয়া নিজ চরিতে নিরম্ভর সমাকরপে তাহার দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করেন, যেরপ অসাধারণ বৃদ্ধি, ক্ষমতা ও হিতৈবিতা শুণের একত্র সংযোগ ভূমগুলে আরু কথন ঘটিয়া-हिन, अमन त्रांथ इत्र ना ; विनि अकाधादत महेक्र थे नमस्य खन शांत्र शृक्षक यावब्बीयन महर महर कन्यानकत्र क्रियाचूष्ठांन करत्रन *, এवर छ-प्यर्ग नमान ইয়ুরোপ ও আমেরিকা ভক্তি পূর্বক যে অসামাক্ত পুরুষের নিকট উপদেশ ও পরামর্শ গ্রহণ করিয়া কুতার্থ হয়, মনের ধার উল্যাটন পূর্বক উচ্চৈ: স্বরে এবা गहकारत यांबात खन वर्गन ७ महिमा कीर्खन करत, यांबात गर्स-७७कत **उ**तात চরিত্র আন্তর্শ-স্বরূপ জ্ঞান করিয়া অন্তঃকরণের সহিত ভাহার অমুকরণ প্রার্থনা করে এবং এক সমত্রে বাঁহার সহিত সহবাস ও সদালাপ বভ্ষুল্য সম্পত্তি বিবে-চনা করিরা ভল্লাভার্থে বার পর নাই আগ্রহ ও ওংফুক্য প্রকাশ করে ও পরে বাঁহার অসদভাবে শোকাকুল হইরা তঃসহ ক্লেশানুভব পূর্বক বিলাপ ও ক্রেন্সন করে, উল্লিখিত কথাগুলি তাঁহারই পুণ্য-প্রদক্ষ বলিরা আমারে ক্ষমা করিও। †

এথন, বেদ-প্রাণ হিন্দুমণ্ডলি। শ্রবণ কর। তোমাদের প্রাচীন মীমাংসক-গণ অর্থাৎ বেদ-মন্ত্রের মীমাংসাকারী পূর্ব্বকালীন আচার্য্যগণ না ঈশ্বরই মানিতেন, না দেবভাই শ্বীকার করিতেন। তাঁহারা নিদেবি ও নিরীশর।

বে মীমাংসায় বাগ-বজ্ঞাদি কর্ম্মকাণ্ডের ব্যবস্থা আছে এবং সেই বিষয়েরই বিধি, নিষেধ ও ফলাফল বিশেষরূপে বিচারিত হইয়াছে, সেই মীমাংসাদর্শন যে নান্তিকভাবাদী একথা শুনিলে আপাততঃ অনেকে বিশ্বরাপর হইবেন বোধ হর। কিন্তু একথার অভ্যথা হইবার সন্তাবনা নাই। মীমাংসা-পণ্ডিতেরা বিশেষতঃ

^{*} ७७ ७ ७१ शृंधी (वर्ष ।

[†] এ প্রভাবে দ্লামনোহন রারের ৩৭-প্রাথ-সংক্রান্ত বে করেকট কথা ইলিভমাত্তে লিখিত হইন, রেবেরেও কার্পেটর ও বিশেষতঃ মেরি কার্পেটর, কর্তৃক বিরচিত ভদীর জীবন-বৃত্তান্ত বাঠ করিয়া বেধিনে, তাহার স্বিংশব বৃত্তান্ত জানিতে পারা বাইবে।

প্রাচীনতর মীমাংসকগণ, মুক্তকণ্ঠে ও স্থাপষ্টরূপে ঈশবের অন্তিত্ব অস্বীকার করিয়া গিয়াছেন। পঞ্চসংখ্যক কৈমিনিস্ত্তের ভাষ্যে বেদ পৌরুষের অর্থাৎ ঈশব-প্রাণীত কি না এই বিষয়ের বিচার উপস্থিত হইলে, ভাষ্যকার শবর স্বামী বৃত্তিকারের কথিত অসুক্ত অভিপ্রায় উদ্ধৃত করিয়াছেন।

'भगौरुषेय: एष: सम्बन्धः' इति पुरुषस्य सम्बन्धाभावात्। कथं सम्बन्धो नास्ति। प्रत्यचस्य प्रमाणस्याभावात् तत्पूर्व्वकलाचे -तरेषाम्।

এই শব্দার্থের সময় • অপৌক্ষের অর্থাৎ কোন পুরুষ কর্তৃক কৃত নয়, কেননা ঐকপ সম্বাকারী পুরুষ বিদ্যমান নাই। যদি বল, সম্বাকারী পুরুষ বিদ্যমান নাই কেন ? তাহার উত্তর এই যে, সে বিষ্যের প্রত্যক্ষ প্রমাণ নাই। প্রত্যক্ষ প্রমাণ না থাকিলে, অন্তান্ত প্রমাণেরও সন্তাবনা পাকে না †।

পূর্ব্বেই এইরপ উলিখিত হইরাছে বে, কেবল ঈশ্বর নর, এই দর্শনের মতে দেবতাও নাই বলিলে বলা যার। যাবতীয় দেবতা মন্ত্র-শ্বরূপ; শরীর-বিশিষ্ট নর। মীমাংসাদর্শনে এই অভিপ্রায়ের উপযুক্ত যুক্তি-প্রদর্শনেরও ক্রাট হয় নাই। যদি ইক্রদেব যক্তমানের আহ্বান গ্রহণ করিরা ঘটে বা প্রতিমাতে অধিষ্ঠিত হইতেন, তাহা হইলে ঐরাবতের ভার-বলে ঘট ও প্রতিমা একবারে চুর্ণার্মান হইরা যাইত।

কৈমিনিস্ত্র, শবর স্বামি-ক্বত শাবরভাষ্য, কুমারিল ভট্ট-ক্বত বার্থিক, লোম-নাথ-ক্বত ময়্থমালা, পার্থসারথি-ক্বত শান্ত্রদীপিকা, ভবনাথ মিশ্র-ক্বত মীমাংসা ন্তান্ন বিবেক, রাঘবানন্দক্বত ন্তান্নাবলী দীধিতি, মাধবাচার্য্যক্বত ন্তান্ন-মালাবিস্তার ইত্যাদি বহুতর গ্রন্থে এই দর্শনের মত প্রতিপাদিত হইন্নাছে।

(वमास्य।

অবশিষ্ট প্রধান দর্শনটির নাম বেদান্ত। মীমাংসা বেমন কর্ম্ব-মীমাংসা, বেদান্ত সেইরূপ ব্রহ্ম-মীমাংসা ‡।

বেদোক্ত শব্দ-বিশেষের যে অর্থ-বিশেষ নির্মাণিত আছে, সেই শব্দ ও অর্থের ঐরপ সক্ষর।

^{, †} পূর্বেই লিখিত হইরাছে, নীমাংসার মতে একটি নিড্য শব্দ সকল জ্মিড্য শব্দের জন্ত-ভূতি আছে; কেহ কেহ সেই শব্দকেই এক্স বলেন।

[‡] देविनि पर्नन पूर्व नीनारमा अवर विषय-पर्नन छेखा नीमारमा विनश्न अभिक

गांश रहेराज बनाराजत खेरशिख शिख थ अब रह, जिनिसे बना। जन्मादासम्बद्धाः यतः ॥

বেদাত্তত্ত ১ল ৷ ১ পা ৷ ২ হ ৷

বাহা হইতে এই লগতের জন্মাদি (অর্থাৎ উৎপত্তি, হিভি ও ভদ্) হয়, তিনি বন্ধ।

বেলান্তের ভাষার ইহাকে ব্রন্মের তটন্থ লক্ষণ বলে। তিনি স্ত্য-শ্বরূপ, জ্ঞান-শ্বরূপ ও অনন্ত-শ্বরূপ। তিনি অধিতীয়, অর্থাৎ তাঁহা ভিন্ন অন্ত কোন বস্তু বিদ্যমান নাই। তিনিই সত্য, অপর সমন্তই মিথ্যা। বেমন রাত্রিকালে সহসা রজ্জু দেখিলে, সর্প বলিয়া ভ্রম হইতে পারে, অথবা স্কৃত্তিকা দেখিলে, রক্ষত বলিয়া ভ্রান্তি জন্মিতে পারে, সেইরূপ, সং-শ্বরূপ পরব্রন্ম বিদ্যমান আছেন বলিয়া জগৎও বিদ্যমান আছে এইরূপ ভ্রম হইতেছে।

বিনি কোন সামগ্রী প্রস্তুত করেন, তিনি তাহার নিমিত্ত-কারণ। স্পার বে বস্তুতে ঐ সামগ্রী প্রস্তুত হয়, তাহা উহার উপাদান-কারণ। কুস্তুকার কলসীর নিমিত্ত-কারণ ও মৃত্তিকা উহার উপাদান-কারণ। এরূপ উপাদানকে পরিণাম-উপাদান বলে। প্রথমে এক্যাত্র অঘিতীয়-স্বরূপ পরমেশ্রই ছিলেন, আর

আছে। বেদান্তস্তের মধ্যে পুনঃ পুনঃ কৈমিনির নামোলেধও দেখা বার (১)। ইহাতে অঞা মীমাংসা এবং পশ্চাৎ বেদান্ত দর্শন প্রকাশিত হয় এইরূপ প্রতীয়বান হইতে পারে, অথচ কৈমিনিস্তের মধ্যেই বেদান্ত-প্রণেতা বাদরারণ, ব্যাসের নাম বিনিবেশিত আছে। (বীমাংসা বম স্ত্র)।

এই উভরকে সমকালবন্তা বলিরা মনে করিলে, এ বিরোধের একরপ করাৰ ইয়া বার।
কিন্ত কেবল মীমাংসা ও বেলার নর, ভিন্ন ভিন্ন নানা দর্শবের স্ত্র-প্রস্থের মধ্যেই পরস্পরের
মত-প্রসঙ্গ লক্ষিত হইরা থাকে। বেলান্তস্ত্রের অনেক স্থানে ন্যার ও বৈশেবিক দর্শবের মন্ত
ও অভিপ্রার উরিধিত আছে (২), সেইরপ আবার স্তারস্ত্রের মধ্যেও অর্থাপতি প্রভৃতি (৩)
বেলান্ত মতের স্পাই নিদর্শন দেখিতে পাওরা বার (৪)। এই বিষয়ট বিবেচনা করিরা দেখিলে
ঐ সমন্ত দর্শনের সমুদ্র স্ত্রগুলি একসমরে ও একজনের কৃত বলিরা কলাচ প্রভীরমান
হর্মনা।

⁽১) (वमाक्ट्या) का. २गा. २৮ ७ ७) ग्या ;)का, ७गा, ७) ग्या हेकामि ।

⁽২) বেদান্তপুতা। ২অ, ২পা। ১১, ১৩, ১৪ পুতা ইত্যাদি।

⁽০) সুলকার দেবদত দিবাভাগে ভোজন করেন না,একথা বলিলে এইটি বোধ হর বে,তিনি রাজিবোগে ভোজন করেন; কেননা একেবারে নিরাহার থাকিলে, সুলকার হওরা সভব নর। এই বিবর্টি উলিথিত বাজ্যের অর্থাধীন প্রাপ্ত হওরা বাইভেছে। ইহাকেই অর্থাপতি-প্রমাণ বলে। পূর্ব্বোক্ত প্রত্যক্ষাধি চারি প্রমাণ ব্যতিরেকে বৈদাভিকের। এইরূপ অতিরিক্ত করেক্টি প্রমাণ বীকার করেন। স্থার ওবৈশেষিকের মতে, সে গুলি বাভাষিক বতর প্রমাণ নর।

⁽⁸⁾ कांत्रर्व। २व, ७०ए। ७व, २०ए। ३व, ०१ए।

কিছুই ছিল না; অভএব তাঁহাকে জগতের নিমিত্ত ও উপাদান উভয় কারণই বলিতে হয়। কিন্তু তিনি নিজে পরিণত অর্থাৎ বিক্লন্ত হইয়া জগৎ উৎপাদন করেন নাই। অভএব পূর্কোক্ত উদাহরণে মৃত্তিকা বেমন কলসীর পরিণাম-উপাদান, তিনি জগতের সেরপ পরিণাম-উপাদান হইতে পারেন না।

পূর্ব্বেই লিখিত হইরাছে, রজ্জুতে সর্প-ভ্রমের মত পরপ্রক্ষে জগদ-ভ্রম হই-তেছে *। রজ্জুকে সর্পের ও পরপ্রক্ষকে জগতের উপাদান বলিতে হয় তাহার সন্দেহ নাই, কিন্তু এরপ উপাদানকে বিবর্ত্ত-উপাদান বলে। পরপ্রক্ষ জগতের বিবর্ত্ত-উপাদান কারণ।

এই মতকেই মায়াবাদ বলে। বেদে অর্থাৎ সংহিতা ও ব্রাহ্মণে এ মতের কোন নিদর্শন দেখিতে পাওরা বার না। উপনিবদ-ভাগই বেদাস্ক-দর্শনের প্রধান প্রমাণ। তাহাতে পরব্রহ্ম জগতের উপাদান-কারণ বলিরা বর্ণিত হইরাছেন † কিন্তু মারাবাদের স্পাই উল্লেখ নাই। প্রথমকার বৈদান্তিকেরাও এ মতটি প্রবর্ত্তিত করেন নাই। বেদাস্কস্থত্ত এই দর্শনের আদি গ্রন্থ; তাহাতেও মারাবাদের প্রসন্ধ নাই। উত্তরকালীন শঙ্করাচার্য্য প্রভৃতি ব্যাপক বৈদান্তিকেরা উহা উত্তাবন না সংগ্রহ করিয়া বেদাস্কমতে বিনিবেশিত করিয়াছেন। বৌদ্ধর্ম্ম

* विषाद्धित जारोत्र এইक्रम खमरक अधारताम राष्ट्रियारताम स्वाहित । असर्पभृते रज्जी सर्पारीपवत् वस्तुन्यवस्तारीपः अध्यारीपः ।

(तक्षेत्र प्रदेश ।

রজ্জু সর্প নর অথচ ভাহাতে বেমন সর্প-এম হয়, সেইরূপ পরএক্ষে প্রগদ্-এম হওরাকে অধ্যা-রোপ বলে।

আর বেমন ঐ সর্প ভ্রম দুরীকৃত হইলে রজ্জ্মাত বোধ হর, সেইরূপ ভত্তান হারা ঐ সংসার ভ্রম বিনষ্ট হইয়া পরভ্রম্মাতের ফুর্জি থাকে। বেদান্তগাত্তে ইহা অপবাদ বা অপবাদ-ভার বলিয়া উলিখিত হইরাছে।

भपवादीनाम रज्जुविवर्त्तसा संपेसा रज्जुमावलवन्, वस्तुविवर्त्तसानस्ति प्रानादेः प्रपचसा वस्तुमावलम्।

বেদাস্তসার।

ৰদি রজ্জুতে সর্প-জন হর, তবে সেই জম বিনষ্ট হইলে বেমন রজুমাত্র বোধ হর, সেইরূপ, পরত্রকোতে বে সংসার-জন কলিয়াছে, তাহা দুরীকৃত হইলে, এক্ষমাত্রের প্রকাশ থাকে। ইহাকেই অপবাদ বলে।

† यथीर्णनाभि: स्वते रिक्षते च यथा प्रथिव्यामीषधय: सभवन्ति । यथा सतः पुरुषात् केमलीमानि तथाचरात् सभवती इ विश्वम् ॥ मूरश्रीनिवर । ১ । १ ।

উর্ণনাতি বেমন উর্ণনাত স্কান ও গ্রহণ করে, পৃথিবী হইতে বেমন ওবধি সকল উৎপন্ন হয়, এবং জীবিত সমূব্যের শরীর হইতে কেল ও লোম সমূদায় সমূদ্ধত হয়, এেইয়ল, জাবিনাশী প্রত্ত্ব হয় তই অগতের উৎপত্তি হয়া থাকে।

প্রবর্ত্তক শাক্য দিংহ এইরূপ মত প্রচার করেন; তাহা হইতে ইহা হিন্দুধর্মে অবতীর্ণ হওরা অক্ষন্তব নর।

মারা পরব্রমের শক্তি-অরপ; তিনি মারাবিছির হইলেই জগতের উৎপত্তি হয়। কিন্তু স্থান্তরে তিনি আবার নিত্য-মুক্ত-সভাব বলিরা উরিধিত হইরাছেন। বৈদান্তিকেরা একটি উপমা দিয়া এই হুইটি পরস্পর বিরুদ্ধ কথার সাম-জ্ঞস্য করিয়া থাকেন। বেমন বৃক্ষ-শ্রেণীর অভ্যন্তর দিয়া উহার অন্তরালহ মহান্ আকাশ দর্শন করিলে, সেই আকাশ থও থও দেখায়, কিন্তু বাত্তবিক তাহা থতিত হয় না, সেইরূপ ব্রহ্ম মারাবিছির হইলেও বাত্তবিক অবিছির হন না; তিনি যেমন স্থভাবতঃ পূর্ণ ও মুক্তস্বরূপ, সেই রূপই থাকেন।

বেদান্তের মতে পরব্রহ্ম নির্গুণ, নিরাকার, নির্বিকার ও চিনায়-স্বরূপ।
কাণং যদি ভ্রমাত্র হইল তাঁহা হইলে, তিনি আর জগং-কর্ত্তা বলিয়া উলিধিত
হইতে পারেন না। তবে তিনি সর্ববিজ্ঞা সর্বানিয়ন্তা বলিয়া যে উক্ত হইয়াছেন,
তাহা আরোপমাত্র; বান্তবিক স্বরূপ নয়। যদি জগতের স্প্টিই মিথা। হইল,
তবে আর স্প্টিক্র্তা কিরূপে সন্তবে? ঐ সকল বিশেষণ দারা পূর্ব্বোক্ত অধ্যারোপ ক্রায়াম্নারে তাহার আন্রোপিত স্বরূপের বর্ণনা করা হইরাছে। আর
তিনি অকর্তা, অরূপ, অস্ক্র, অদীর্ঘ, অহুস্ব, নির্গুণ, নির্বিশেষ ও বাক্যমনের অগোচর বলিয়া যে উক্ত হইয়াছেন, ইহাই তাঁহার প্রকৃত স্বরূপের বর্ণন।

কীব বাস্তবিক পরক্রম বই আর কিছুই নয়। এই উভয়ের অভেদজ্ঞান সাধন পূর্বক আনন্দ-লাভই এই দর্শনের প্রয়োজন। "অয়মাত্মা ত্রহ্ম" অর্থাৎ এই জীবাত্মা ত্রহ্ম, "অহং ত্রহ্মাত্মি" আমি ত্রহ্ম, "তত্ত্মিসি" তুমি সেই ত্রহ্ম, এইরূপ জীব-ত্রন্মের অভেদ-প্রতিপাদক কতকগুলি বাক্য উপনিষদের মধ্যে বিভ্যমান আছে। এই সকল বাক্যকে মহাবাক্য বলে। এইরূপ মহাবাক্য সম্দায়ের অর্থ চিন্তন পূর্বক জীব-ত্রন্মের অভেদ জ্ঞান করাকেই তত্ত্বজ্ঞান বলে। এই জ্ঞানের উদয় হইলেই জীব-ত্রন্মে কার প্রভেদ থাকে না। "অহং ত্রহ্মাত্মি" অর্থাং আমিই ত্রন্ম এইরূপ স্থির নিশ্চর হইয়া কেবল হৈত্ত্ত্য-স্বরূপ ত্রন্মায়েরই ক্ষুর্তি থাকে। এই জ্বত্যা হইলেই মুক্তি-লাভ হয়। ইহাকেই নির্বাণ মুক্তি বলে।

বাঁহারা একেবারে এরপ জ্ঞানাভ্যাদে অসমর্থ, তাঁহারা প্রথমে প্রণব অর্থাৎ ওঁকার অবল্যনপূর্বক পরমাত্মার উপাসনা করিবেন এইরপ ব্যবহা আছে। মাঞুক্যোপনিষ্দ্রে এই উপাসনার সবিস্তর বিবরণ আছে। ঐ উপনিষ্দের সমগ্র ভাৎপর্ব্য এই বে, জাঞ্রৎ, ত্বপুষ্টি এই ভিন অবস্থার অধিষ্ঠাতা ও সৃষ্টি-

স্থিতি-প্রলয়-কারণ অধিতীর-স্বরূপ প্রমান্ধাই প্রণবের প্রতিপাদ্য। ঐ প্রণব অর্থাৎ ওঁকার অবলম্বন করিয়া তাঁহার উপাসনা করা হর্কবাধিকারী ব্রহ্ম-জিজ্ঞা-স্থুর পক্ষে অবশ্য কর্ত্তব্য।

> एतदालब्बनं श्रेष्ठमेतदालब्बनं परम्। एतदालब्बनं श्रात्वा ब्रह्मलोके महीयते॥

কঠোপনিষৎ ।২।১৭।

এই অর্থাৎ প্রণব অবলম্বনই শ্রেষ্ঠ অবলম্বন। ইহাই পরম অবলম্বন। এই অবলম্বন জ্ঞাত হইলে, ব্রেফাপাসক ব্রহ্মলোকে সিরা পুঞ্জিত হন।

> प्रणवो धनुः श्ररोश्चात्मा त्रश्च तक्षच्यमुख्यते । श्रप्रमत्तेन विद्वर्थं श्ररवत्तवायो भवेत्.॥

> > मुख्रकार्शनिष्र। २। २। १।

প্রণব ধমু-স্বরূপ, জীবাত্ম। শর-স্বরূপ এবং ত্রন্ধ লক্ষ্য-স্বরূপ বলিয়া উল্লেখ করা হইরাছে। অতএব প্রমাদ-শৃত্য হইরা পরত্রস্বরূপ লক্ষ্যে জীবাত্মারপ শর বিদ্ধ করিবে, এবং শর বেমন লক্ষ্যেত প্রবিষ্ট হইরা থাকে, সেইরূপ জীবাত্মা পরত্রস্বাতে প্রবিষ্ট অর্থাৎ লীন হইরা থাকিবে র্থ

ব্রন্ধোপাসনার প্রবৃত্ত **হইলে, শম, দম, উ**পরতি, তিতিক্ষা ও সমাধি অভ্যাস ক্রিতে হয়।

यमदमाखुपेतः स्थात्तयापि तु तिह्वधस्तदङ्गतया तेषामव-श्यानुष्ठे यत्वात् ।

(वर्गाख्युव। ७७। ४ ११। २ १४।

জ্ঞান-সাধনার্থ শম-দমাদি-বিশিষ্ট হইবে, কেন না শম-দমাদি জ্ঞান-সাধনের অঙ্গ-স্বরূপ এই নিমিত্ত ভাহার অনুষ্ঠান অবশ্র কর্ত্তব্য বলিয়া ব্যবস্থা দেওয়া হইয়াছে 🛊।

সাধন চতুষ্টর।

^{*} কেবল জান-সাধনের সমরে কেন ? পরস্থংস সদাবলের মতে শ্রহমাদি-বিশিষ্ট না ছইলে এ শাল্পে অধিকারই হর না। বিনি বেদ-বেদালাদি অধ্যরম করিয়া বেদার্থ জানিরা-ছেন, ইছ জল্মে বা জন্মান্তরে কাম্য ও নিবিদ্ধ কর্ম পরিত্যার পূর্বাক বিভা নৈবিভিকাদি ক্রিয়া-সুঠান দ্বারা বাঁহার পাশ-কর ও চিন্ত-শুদ্ধি ঘটিরাছে, এবং বাঁহার সাধন চতুইর অর্থাৎ পাকা-দ্বিবিত চারিপ্রকার সাধন সম্পন্ন হইরাছে, তিনি এই বেদান্ত শাল্পে অধিকারী।

১। বিভাগনিত্য-বত্ত-বিবেক অৰ্থাৎ ব্ৰহ্মই নিভ্য এবং অস্ত সমূহয় হয় অনিভ্য এইরাণ বিচার।

অন্তরিক্রির অর্থাৎ অন্তঃকরণ দমন করাকে শম, বহিরিক্রিরের শাসন করাকে দম, জানাভ্যাদের সমরে কর্ম ত্যাস করাকে উপরতি, শীতোফাদি সহু করাকে তিতিক্রা, এবং আগুন্ত ও প্রমাদ পরিত্যাগ পূর্বক একাগ্রমনে পরবন্ধ ভিত্তন করাকে সমাধি বলে।

একটি বিষয়ে বেদান্ত শাস্ত্রের সমধিক ঔদার্য্য দেখিতে পাওরা বার। সেটি এই বে, হিন্দুধর্ম্মোচিত আচার ব্যবহার অবলম্বন করিয়া না চলিলেও ব্রহ্ম-জিজান্থ ব্যক্তির তত্ত্তান-সাধনে সম্পূর্ণ অধিকার থাকে। আপন আপন বর্ণ ও আশ্রমের উপযুক্ত ধর্মান্ত্র্চান কর আর না কর, তত্ত্তানান্থনীলনের ইচ্ছা হইলেই সে বিষয়ে সম্যক্ অধিকারী হইবে।

चन्तरा चापि तु तदृष्टे:।

বেদাস্তস্ত্র। ৩ আ । ৪পা । ৯ স্থ।

বর্ণাশ্রমাচার পরিত্যাপ করিলেও, ব্রহ্মজ্ঞান-সাধনে অধিকার থাকে, কেন না রৈক্য বাচক্রবী প্রভৃতি বর্ণাশ্রম-রহিত ব্যক্তিদিগেরও জ্ঞানোৎপত্তি হইরাছে দেখা পিরাচে।

ইহার অনুরূপ অন্ত একটি বিষয়েও বিশুদ্ধ বৃদ্ধির অনুমোদিত ভাদৃশ উদার ভাব প্রকাশিত হইয়াছে।

यत्रैकाग्रता तत्राविश्रेषात्।

(वताखद्रव ! ४व्र, ५४१, ५५७ ।

বে স্থানে ও বে সময়ে মন স্থির হয়, সেই স্থানে ও সেই সময়েই উপাসনা করা বিধেয়; কেননা ব্রহ্মোপাসনায় দেশ-কালাদির বিচার নাই।

বিশ্ব ও বিশ্ব-কারণ সম্বন্ধে বিনি যে কোন মনঃক্ষিত মত উত্তাবন করুন না কেন, সংসারের হঃধ-রাশির পরাক্রম-চিন্তা অতিক্রম করিতে সমর্থ হন না এবং বিশ্ব-বিরাজিত স্থা-হঃধ-ঘটিত সমস্যা * পূর্ণেও প্রবৃত্ত না হইয়া থাকিতে পারেন না।

২। ইহামূত্ৰ কল-ভোগ-বিরাপ অর্থাৎ ঐহিক ও পারত্রিক সুধ-ভোগ-বিরাপ।

ও। শন-দ্যাদি সাধন-সম্পত্তি অর্থাৎ শম, দম, উপরতি, তিতিক্ষা, সমাধান অর্থাৎ ঈধর-বিষয়ক অবণাদিতে একাঞ্চিত্ততা এবং শ্রদা অর্থাৎ গুরুপদেশে ও বেদাভাদি শারে বিধাস।

৪। বোক্ষাভিলাৰ।

এই চারি সাধনকে সাধন-চতুরর বলে।--পরসহংস সদানক-কৃত বেদাভসার।

^{*} ৰণি প্ৰনেশনের দয়তি অনত এবং শক্তিও অনত ক্ইল, ভবে সংসারে জুংগ থাকে কেন এই সমস্যা।

পূর্বেই নিধিত হইরাছে * সাংখ্য-পণ্ডিভেরা কগতে ক্লেশ ও কীবের স্থ-ছঃধের ইতর বিশেষ দেখিয়া অভাভ অনেক দার্শনিক পণ্ডিভের স্বীকৃত ঈশরীয় স্বরূপের প্রতি নৈঘুর্ণ্য ও বৈষম্য দোষ অর্পণ করেন। বৈদান্তিক পণ্ডিভেরা তাহার নিম নিধিত রূপ প্রত্যুত্তর দিয়া গিয়াছেন।

কীবগণ অকৃত কর্মান্ত্রসারে শুভাশুভ ফল ভোগ করে, পূর্ব ক্লেম ধেরপ কর্ম করে, পর করে সেইরূপ ফল প্রাপ্ত হয়। অতএব পরমেশ্বর নিরপেক্ষ হইয়া স্পষ্ট করেন না; তাহাদের সেই সমস্ত স্ত্রকৃত-চ্ন্নুত্তসাপেক্ষ হইয়া কার্য্য করেন, অর্থাৎ ভাহারা ধেরূপ কর্ম করে, ভদন্ত্রপ স্থ্থ-চ্ঃথ বিভরণ করিয়া থাকেন।

सापेचोचोखरो विषमां सृष्टिं निर्मिमीते। किमपेचत इति चेचभाधभावपेचत इति वदामः। यतः सृजंग्रमानप्राणिधभाधभा-पेचा विषमा सृष्टिरिति नायमीखरस्यापराधः। ईखरसु पर्जन्य-वद्रष्टव्यः यथा हि पर्जन्यो व्रीहियवादिसृष्टी साधारणं कारणं भवति व्रीहियवादिवेषम्य तु तत्तदीजगतान्ये वासाधारणानि सामर्थ्यानि कारणानि भवन्ति एवमीखरो देवमनुष्यादिसृष्टी साधारणं कारणं भवतिदे वमनुष्यादिवेषम्य तु तत्त्तज्ञीवगतान्ये वासाधारणानि कभाणि कारणानि भवन्ति। एवमीखरः सापेचलान्न वेषम्यनेष्ट्रं ख्याभगं सुष्ठति।

শারীরিক ভাষা। ২অ, ১পা, ৩৪ স্থত্তের ভাষা।

লিখর সাপেক্ষ হইরাই অসমান স্টি করিরা থাকেন। যদি বল, কাহার অপেক্ষা করেন। আমরা বলি, ধর্মাধর্মের অপেক্ষা করেন। স্বজ্যমান প্রাণিবর্গের (পূর্ব্ব-কৃত) ধর্মাধর্মায়সারে এই অসমান স্টি হইরা থাকে। ইহাতে লিখরের অপরাধ নাই। ঈশ্বরকে মেশ্বের ন্তার দেখিতে হইবে। মেদ, যেরূপ ত্রীহি-যবাদির পৃষ্টি-সাধনের সাধারণ কারণ, আর ত্রীহি-যবাদি সমুদার বে পরস্পর সমান হর না, তাহাদের বীজগত শক্তি-ভেদই যেমন ভাহার অসাধারণ কারণ, সেইরূপ, ঈশ্বর দেব-মন্ত্র্যাদি-স্টির সাধারণ কারণ; আর সেই দেব-মন্ত্র্যাদির অবস্থা বে সমান হর না, ভাহাদের নিজ নিজ কর্মাই ভাহার অসাধারণ কারণ।

[•] २ गुर्श (१४।

এইরপ সাপেকতা প্রবৃক্ত ঈশর বৈষম্য ও নৈগুণ্য দোবে দ্বিত হইতে পারেন না।

বৈদান্তিকদের বিচার-প্রণালী, একেবারে অগ্রাহ্য না করিয়া, সাংখ্যপশুতেরা এইরূপ প্রত্যুত্তর করিতে পারেন, জীব যে সময়ে প্রথম স্পষ্ট হইল, সে সময়ে তো ভাহার পূর্ব-ক্বত স্থকত ছক্কত থাকা কোন রূপেই সভবে না। অতএব উল্লিখিত যুক্তি কিরূপে সক্ষত হইতে পারে? বৈদান্তিকেরা বলেন ঈশরও অনাদি, স্পষ্টিও অনাদি। ইহাতে সাংখ্য-পণ্ডিতেরা এইরূপ বলিতে পারেন, যে বস্তু তুই হইল, ভাহা আবার অনাদি এ কথাটি স্থনির্মাল সরল বৃদ্ধির গম্য নম্ব। বিশেষতঃ বৈভান্তিক মতের প্রমাণভূত উপনিষদে স্পষ্টই লিখিত আছে প্রথমে এক মাত্র অবিতীয়-স্বরূপ পরব্রহ্বই বিশ্বমান ছিলেন, ভিনি সমুদ্র স্থি করিলেন।

ফলতঃ অতর্কনীয় বিষয়ে তর্ক উপস্থিত করিলেই বৃদ্ধি বিপাক ঘটয়া উঠে। যে বিষয় অজ্যে ও অনির্কাচনীয়, তাহা জানিতে ও নির্কাচন করিতে গিয়া, মাছুবে বিপদাপর হইরা পড়ে। লোকে পরমেশ্বরকে একটি অসামান্ত মন্থার মত * মনে করিয়া এই বিপদ্ধ উপস্থিত করিয়াছে। রোমকরাজ্য-বিনাশের অবিনশ্ব-ইভিহাস-রচয়িতা শ্রীমান্ গিবন্ মুসলমান ধর্মের বিষয়ে যে নিয়লিখিত কথাটি প্রয়োগ করিয়াছেন, নিরপেক তত্ত্ব-জিজ্ঞান্থ ব্যক্তিরা প্রধান প্রধান জনেক ধর্মের বিষয়েই তাহা নিয়োজন করিতে পারেন।

*They struggle with the common difficulties, how to reconcile the prescience of God with the freedom and responsibility of man; how to explain the permission of evil under the reign of infinite power and infinite goodness."

Gibbon, 1820, Vol, IX, Chap, L, p. 263.

পরমার্থ-পরায়ণ ভক্ত লোকের মধ্যেও কেহ লিথিয়াছেন,

"To think that God is, as we can think him to be, is blasphemy."

আমরা ঈশ্বরকে বেরপ মনে করিতে পারি, তাঁহাকে সেইরূপ বলিয়া বিবেচনা করিলে, তাঁহার নিন্দা করা হয়।

মনুবোর বেরপ উৎকৃষ্ট মানসিক বৃত্তি আছে, অনেকেই ঈশরকেও সেইরপ সদোবৃত্তি-বালী বলিয়া বিবেচনা করেল।

"A God understood would be no God at all."

ঈশার যদি বৃদ্ধি-গমা হইপেন, তবে তিনি আর ঈশার নন।
উপনিষৎ-কর্ত্তারা স্থানোখিত ব্যক্তির স্থার এক একবার এ কথা স্পাইই
লিখিয়া গিয়াচেন *।

यतो वाची निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।

তৈজিরীয়োপনিষদ ব্রহ্মবল্লী। ৯ শ্রুতি।

याँहाटक ना भारेया वाका ७ मन निवृद्ध रय ।

বিনি মনে করেন, আমি ব্রহ্ম-স্বরূপ জানিরাছি, তল্বকার ঋষি তাঁহাকে বলিয়া গিরাছেন,

यदि मन्यसे सुवेदेति दभ्जमेवापि नूनं त्वं वेख ब्रह्मणो रूपम्।

जनसम्बार्गानिवस्। ।

ৰদি মনে কর, আমি ব্ৰহ্মকে স্থল্যকপ ফানিরাছি, তাহা হইলে তুমি ব্ৰহ্ম-স্থাপ স্বাই কানিয়াছ।

কলত: অবিজ্ঞের সর্রণ বিশ্ব-কারণের অতলম্পর্শ স্বরূপ-সাগরের তলম্পর্শ করিতে পারি এরূপ মনে করিতেও নাই। অন্ত একজন অনির্কাচনীয় বিশ্ব-কারণকে নির্কাচন করিতে গিয়া তদ্ধ অপরাধ-মার্জ্জনা প্রার্থনা করিয়াছেন।

> क्पं क्पविविक्किंतस्य भवतो ध्यानेन यहिर्णतं सुत्यानिर्व्वचनीयताखिलगुरी दूरीक्वता यस्या। व्यापित्वच विनाशितं भगवतो यत्तीर्थयातादिना चनाव्यं जगदीश तहिकलतादोषत्वयं मत्कृतम्॥

তোমার রূপ নাই, অথচ আমি ধ্যানে তোমার রূপ বর্ণন করিরাছি;
বিশ্ব-শুক্র ! স্থতি করিরা তোমার অনির্বাচনীর স্বরূপের পঞ্জন করিরাছি;
একু তীর্থ-বাত্রাদি করিরা তোমার সর্ব্বব্যাপিছ-শুণের নিরাকরণ করিরাছি।
অতএব জগদীশ ! আমার সেই বিকল্ডা-নিব্দ্ধন তিনটি অপরাধ মার্জনা
কর।

কিন্তু যদিও বিখ-করণ অজ্ঞের-অরপ তাহার সন্দেহ নাই, তথাচ সে বিষর চিস্তা না করিয়া একেবারে নিরস্ত থাকা উচিত নয়। তাহাতে স্থির-নিশ্চর হইবার উদ্দেশে যত দ্র সাধ্য জানিবার চেষ্টা করা আবশ্রক। জ্ঞানাচণ

^{*} अहे भूखत्कत अपन चारभन छेभक्रमि कारामन ১०० भृष्ठी स्त्रप ।

আবোহণ করিতে করিতে বধন শিধর-দেশ তিমিরময় কুল্মাটকাতে আচ্ছর দেখিবে, তধন জানিবে জার আরোহণ করিবার অধিকার নাই।

"Man is not born to solve the mystery of Existence; but he must nevertheless attempt it, in order that he may learn how to keep within the limits of the Knowable."

Goethe.

সাকারবাদীরাও সদসং পাঁচ কথা বলিতে বলিতে এক একটি অতি প্রধান কথা বলিয়া বসেন এবং কথন কথন বিশ্ব-কারণকে স্থস্পট্টরূপে অস্তের ও অনির্বাচনীয়-স্থরূপ বলিয়া উল্লেখ করেন।

কে জানে কালী কেমন। বজুদর্শনে না পার দর্শন। * * *
প্রসাদ ভাবে, লোকে হাসে, সম্ভরণে সিন্ধু-গমন। আমার মন ব্রেছে, প্রাণ
ব্রেনা, ধোর্বেশনী হোয়ে বামন *।

রামপ্রসাদ।

ঈশবের অন্ধণ বাক্যমনের অপোচর, বিশুদ্ধ বুদ্ধির পক্ষে এটি অভীব সহজ্ব কথা। তবে তাঁহার শারীরিক বা মানসিক রূপ করনা করিয়া প্রবীণ বয়সেও বাল্যক্রীড়ার আসক্ত হইয়া বল্যান্ধাদে আমেদিত থাকিলে আর উপার কি ?

বেদাস্তের কোন কোন স্তে † বৌদ্ধর্ম্মের মত-প্রসঙ্গ লক্ষিত হইরা থাকে। ভাষ্যকারেরা ও টীকাকারেরাও স্পষ্টই তাহা লিখিয়া গিয়াছেন।

কাষথানা নেৰ একটি সরল লোক ছিলেল; তাঁহার বধন বেরপ নিশ্চর বোধ হইডে, সেইরপ কার্ডন করিতেন। ইরুরোপীর বিজ্ঞানবিৎ প্রধানতর পণ্ডিতসম্প্রদারের মধ্যে অনেকে এখন এইরপ ষত প্রকাশ করিরাছেন বে, মানুবের ইচ্ছা খড্রা নর; লোকে নিল প্রকৃতি ও অক্ত অক্ত কারণের বশীভূত হইরাই কার্যা করে। বিনি বে অবহার বে কারণে বে কার্যা করেন, তিনি কিছুতেই তাহা না করিরা থাকিতে পারেন না। ইহা হইলে, মানুবে আর অপরাধী হইতে পারে না। রামপ্রসাদ রামপ্রসাদীভাবে ইহার অনুরপ অভিপ্রার প্রকাশ করিরা গিরাছেন।

र्न (वराष्ट्रयः । २व, २ग, २४, २৯ ७ ७० १ हेकाहि ।

⁽১) এই গনিট বিখ-প্রকৃতির উল্লেশে রচিত সবে ক্রিলে, বিশেষ অসক্ত বোধ র না।

ঐ দর্শন ও ভারদর্শনের কোন কোন স্থল + শৃক্তবাদীর মত-প্রভাব বলিরা পরিগণিত হইরাছে। বৌদ্ধর্ম খৃঃ পৃঃ বঠ বা পঞ্চম শতালীতে প্রবর্তিত হর। নাগার্জ্বন বে মাধ্যমিক নামক বৌদ্ধ-সম্প্রদার প্রবর্তিত করেন, শৃক্তবাদটি সেই সম্প্রদারের মত †। নাগার্জ্জ্বন উত্তরদেশীর বৌদ্ধদিগের মতক্রমে বৃদ্ধদেবের মৃত্যুর চারিশত বৎসর পরে এবং দক্ষিণ-দেশীর বৌদ্ধদিগের অভিপ্রারাম্পারে ঐ ঘটনার পাঁচ শত বৎসর পরে বিজ্ঞমান ছিলেন। প্রচণিত মতাহুসারে, ঐ বৃদ্ধ শক্যে মূনি খৃষ্টান্দের ১৪০ পাঁচশত তেতাল্লিশ বৎসর পূর্বের্ব প্রাণভ্যাগ করেন। তদহুসারে নাগার্জ্ক্র খৃষ্টান্দের ১৪০ এক শত তেতাল্লিশ অথবা কেবল ৪০ তেতাল্লিশ বৎসর পূর্বের জীবিত থাকিরা শৃক্তবাদ প্রচার করেন বলিতে হয়। কিন্ধ শ্রীমান্ ম, মূলরের মতে, বৃদ্ধদেব প্রীষ্টান্দের ৪৭৭ চারি শত সাতাত্তর বৎসর পূর্বের প্রাণভ্যাগ করেন। ইহা হইলে নাগার্জ্ক্র ও তাঁহার প্রবর্তিত শৃক্তবাদ এবং ভার ও বেদাস্তম্ব্রের উল্লিখিত স্থল সমুদারকে অধিকতর অপ্রাচীন বলিরা শ্রীকার করিতে হয়।

ব্যাস-কৃত ব্ৰহ্মস্ত্ৰ, বৌধায়ন-কৃত বলিয়া প্ৰচলিত তদীয় বৃত্তি, শহরাচার্য্য-কৃত শারীরক্ষীমাংসাভাষ্য ও উপনিষ্ডাষ্যাদি, আনন্দপিরি-কৃত তদীয় টীকা, আহৈতানন্দ-কৃত ব্রহ্মবিদ্যাভরণ, অনুণানন্দ-কৃত বেদান্তকরতক্ষ, বিদ্যানাথ ভট্টাচার্য্য-কৃত বেদান্তকরতক্ষপ্রত্নী, রঙ্গনাথ-কৃত ব্যাসস্ত্রবৃত্তি, গোবিন্দানন্দ-কৃত ভাষ্যরত্মপ্রভা, ব্রহ্মানন্দ সরব্ভী-কৃত বেদান্তস্ত্র্যাথ্যাচন্দ্রিকা, ধর্মরাজ দীক্ষিত-কৃত বেদান্তপ্রভাষ্য, ভবদেব মিশ্র-কৃত বেদান্তস্ত্র্যাথ্যাচন্দ্রিকা, ধর্মরাজ দীক্ষিত-কৃত বেদান্তপরিভাষা, সদানন্দ-কৃত বেদান্তস্কার, রামকৃষ্ণ দীক্ষিত-কৃত বেদান্তশিধামণি, মধুস্দন-কৃত বেদান্তসিদ্ধান্তবিন্দু ও বেদান্তকর্মণতিকা ইত্যাদি অনেকানেক গ্রন্থে বেদান্ত দর্শনের মত বিবৃত্ত হইয়াছে।

উলিখিত রূপ দার্শনিক গ্রন্থকারের। অনেকেই সতেত্র বৃদ্ধির স্থপুট বীজালীর জন্মগ্রহণ করিরাছিলেন। যদি তথাসুসন্ধানের প্রকৃত পথাবল্যন পূর্বক বিশুদ্ধ বিজ্ঞান-মার্গে বিচরণ করিতে পারিতেন, তবে বছকাল পূর্বের্ক ভারত-ভূমিও ইয়ুরোণ-ভূমির ক্লার এ জংশে ভূ-বর্গ-পদে অধিরুত্ব হইতেন, তাহার সন্দেহ নাই। তাঁহারা বিশের যথার্থ প্রকৃতি ও সেই প্রকৃতিসিদ্ধ নির্মাণনী নির্দারণ পূর্বক কর্ত্বব্যাকর্ত্ব্য-নির্পণের নিশ্চিত উপার চেই। না করিরা কেবল আগ-

[🔸] ভারহত। ১৭, ১৪ স্ ইত্যাদি।

[†] वह भएंड स्थानवसहरे महा नवा ; नकारे मूछ।

बारमञ्जू जल्द्यान-वर्ग हुई अकृषि श्रेकुछ भएतत्र महिल चानकश्रीन मनःक्रिक ছত উত্তাবন করিয়া গিয়াছেন। তাঁচাদের একটি পথ-প্রদর্শকের অভাব ছিল। একটি বেকন-একটি বেকন্-একটি বেকন্ তাঁহাদের আবশ্যক হইরাছিল। একটি তাদৃশ গুরুর আশ্রর-বিরহে, তাঁহারা মেবাছের ও ডিসিরার্ড নিশীর্থ সময়ে তুর্গম বনস্থলে পথ-প্রাপ্ত পথিকের ভার চিরজীবন পরিভ্রমণ করিরাছেন। যদি কদাচিৎ এক একবার ক্ষণস্থায়ী বিহ্যালতা প্রকাশিত হইরা অন্ধকারের বিচ্ছেদ ঘটাইয়া দেয়, পরক্ষণেই আবার খোরতর তিমির-রাশি উপস্থিত হইয়া সমুদার আছের করিয়া ফেলে। তাঁহাদের চিরস্থায়ী সূর্য্য প্রভা আবশাক ছিল। গহল গেনাদল স্থাপজীভূত হউক, স্থকৌশলক্রমে বাহ সমুদায় বিরচিত হউক, স্থতীক্ষ শাণিত অস্ত্রের তড়িং-সমান জ্যোতি:-প্রকাশে রণ-স্থল চক্ষক করিতে থাকুক, বুণ-পণ্ডিত সেনাপতি না থাকিলে, সে সকলই বিফল ও বিশুঝন। একটি রণজিং-একটি বোনাপার্-একটি ওয়াশিংটন আবশ্যক! ধী-শক্তি अःश्य **छा**तुम পরাক্রমশালী, দিখিলয়ী, বীরপুরুষ প্রাপ্ত হ**ইলে, ভারতভূমি** অক্লেশে অজ্ঞানের অধিকার হরণ করিয়া বিজ্ঞানকে সিংহাসন প্রদান করিতে পারিতেন। কিন্তু বুরি এ জলু-বায়ু-মৃত্তিকায় প্রকৃত তত্ত্ব-পথ-প্রদর্শিনী, যুগ-প্রশার-কারিণী, নবোডাবিনী, মহীয়দী বৃদ্ধি-শক্তির সমুদ্ধাব হওয়া সম্ভব নয়। সে ব্যাপারটি বুঝি ইয়ুরোপেরই কার্য্য। রত্ম-গর্ভা ইয়ুরোপ ছই কালে বেরুপ তুইটি অমূল্য রত্ন প্রস্ব করিয়াছেন, সেরপ আর কল্মিন কালে কুলাপি হয় নাই। বেকন্ও কোন্ত, ছই ভূ-খণ্ডের + উপর ছই স্ব্য। ঐ ছইট পরম পৰিত জ্যোতিশার শব মূর্তিমান্ জ্ঞানেরই সংজ্ঞা। ঐ ছুইটি নামের উজ্জ্ল মহিমার বস্থার উজ্জল হইরা রহিরাছেন। ঐ উভরের অভি শুল্র কিরণ-ঘটা বিকীৰ্ণ হইয়া অভূতপূৰ্ব অভূত প্ৰভাব বিস্তাৱ করিয়াছে ;-- মিশাদ্ধকালে আচ্ছেরবং অপরিজ্ঞাত বিখ-প্রকৃতির তিমির-পুঞ্চ হরণ করিরা অভ্যন্তর পর্যাত্ত প্রণীপ্ত করিবাছে, মানব-বৃদ্ধির অধিকার-নীমা নির্দেশ করিবা পরম পরিশুদ্ধ তত্ত-গিরি আরোহণে ত্রপ্রশন্ত সরল পথ প্রকাশ করিয়াছে, এবং ভদবল্ঘন পূৰ্বক সামান্ত জল-কণ-সমূতে শত সহত্ৰ মন্ত হন্তীর বল অৰ্পণ করিরাছে. क्ष्रहक्षन विश्वाहाङादक वभवर्खिनी कत्रित्रा पृष्ठ, छाउँ । श्र शवदकत्र कार्दा निवक्ष করিরাছে, স্থাতিস্কা স্থ্য-কিরণকে স্থকৌশলক্রমে অবক্লছ করিরা স্থানিপুণ চিত্রকরের ব্রড়ে বভী করিয়াছে, বিশাল ভূধর-শ্রেণীকে এক কালের জলমি-

देशमध् अ अनेन् तिर्मत ।

গর্ভ বিশ্বা নিঃসংশবে পরিচর দান করিরাছে ও বেন কি কুছকবলে, আকিঞ্চিৎকর অলার-পঞ্জকে রাজ-মুকুট-বিরাজিত জগদিখাত কোছিছরের পদে প্রতিষ্ঠিত করিরাছে।—তথাপি, স্থাচীন দার্শনিক পঞ্জিগণ! তোমরা পূর্ককালীন বুজিমান লোকের মধ্যে অগ্রগণ্য। তোমরাই মহুব্যের বুজিচালনার পথ প্রদর্শন করিরাছ। তোমাদের বিচার-প্রণালী ও তাহার ফলাফল পর্যালোচনা করিয়া বিজ্ঞানবিং স্থবৃদ্ধি ব্যক্তিরা মানবকুলের জ্ঞানাধিকারের চরম সীমা অক্লেশে নির্দারণ করিরাছেন। কিন্তু তোমরা বে ক্রেকটি মূল বিষয়ের ও তত্ত্বাহুসন্ধানে অন্তর্বক ছিলে, তাহা মহুব্যের জ্ঞের বিষয় নয় এবং যে তীর্থ-পর্যাটনে । প্রত্ত হইরাছিলে, তাহাও তাঁহার অধিগম্য নয়।

এই বড় দর্শনের মধ্যে প্রায় কোন দর্শনকারই জগতের স্বতঃ-স্টেকর্তা ‡
স্বীকার করেন নাই। কপিল-রুত সাখ্যে তো স্কুলাই নান্তিকতাবাদ, পতঞ্জলি
ঈশবের অন্তিত্ব অঙ্গীকার করেন বটে, কিন্তু তাঁহাকে বিশ্ব-শ্রুটা না বলিয়া বিশ্বনিশ্বাতামাত্র বলিয়া গিয়াছেন। গোতম ও কণাদের মতাহুসারে অড় পরমাণ্
নিত্য; কাহারও কর্তৃক স্টে হয় নাই। প্রাচীন শ্রীমাংসাপশুতেরা তো ঈশ্বরের অন্তিত্ব স্পটই অস্বীকার করিয়াছেন। বেদান্তের মতে জগৎ স্টেই হয়
নাই, বিশ্ববাপার শ্রম্মাত্র, ইহাতে আর স্টেকর্ডার সন্তাবনা কি ?

প্রথমে কিছু ছিল না, কেবল একমাত্র অবিতীয় প্রমেখ্রই বিদ্যমান ছিলেন, তিনিই পশ্চাৎ সমূদর জগৎ স্কল করেন, বাঁহারা কেবল ইহাকেই আজিকভাবাদ বলিয়া খীকার করিয়াছেন, তাঁহাদের মতে প্রায় সমূদর বড়্দর্শনকে নাজিকভা-প্রতিপাদক বলিয়া উল্লেখ করিতে হয়। উল্লিখিত বড়্দর্শনের প্রভি অনেকানেক আজিক্য-বৃদ্ধি ভক্তিমান্ লোকের বিশেষরূপ প্রদ্ধা আছে। ঐ ছয়েয় মধ্যে অধিকাংশই নাজিকভাবাদ ও কোন কোনটির মতে স্টেকর্জার অভিজ্ খীকৃত হয় নাই, এ কথা শুনিলে তাঁহারা চমৎকৃত হইয়া উঠিবেন বোধ হয়।

এই ছয় ব্যতিরেকে আরও কডকগুলি দর্শন শাস্ত্র বিদ্যমান আছে; তাহার মধ্যেও সমুদ্য আতিকভাবাদ নয়। চার্জাক তো বোর নাতিক; না ঈশরই মানেন, না পরকানই স্বীকার করেন।

বিশ-কারণের শরুপ, আদির স্ট-প্রশরণ ইত্যাদি বিবরে।

[🕇] সুক্তি প্রভৃতি পারলৌকিক অবস্থার জ্ঞান-লাভে।

[‡] श्रीपरम একমাত পরমেশরই ছিলেন, অপর কিছুই ছিল না, ভিনিই সমুদার হৃষ্ট করেন এইরূপ হৃষ্টিকর্তা।

न खगौं नापवगींवा नैवासा पारलीकिक:। नव वर्णात्रमाढीनां क्रियास फलदायिकाः॥ प्रिक्तिहोतं तयो वैदास्तिदण्डं भस्रागुण्डनम्। विषयीरुषष्टीनानां जीविका धाद्यनिर्मिता॥ पश्च विह्नतः खर्गं ज्योतिष्टोमे गमिष्यति । खिपता यज्ञमानेन तत्र कस्मान हिंस्यते ॥ स्तानामपि जन्तूनां यादं चेत्तृप्तिकारणम्। गच्छतामिन्न जन्तू नां व्यर्थं पार्ययकत्पनम् ॥ स्वर्गस्थिता यदा हिंति गच्छेयुस्तव दानतः। प्रासादस्थोपनिस्थानामत कसान दीयते॥ यावज्जीवेत सुखं जीवेद्दणं सुत्वा घृतं पिवेतु । भस्मीभृतस्य देशस्य प्रनरागमनं कृतः॥ यदि गच्छे तु परं लोकं देहादेष विनिर्गत:। कस्माइ यो न चावाति वस्यस्तेष्टसमाञ्जल:॥ ततस जीवनीपायो ब्राह्मणैवि हितस्विह । मृतानां प्रेतकार्थाणि न लन्यदियते क्वचित्॥ त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भण्डभूर्त्तनियाचराः। जफ रीतुफ रीत्यादि पण्डितानां वच: सा तम्॥ पाखस्यात हि यित्रम्तु पत्नीयाद्यं प्रकीत्तितम्। भग्डं स्तद्दत् परचैव ग्राष्ट्रजातं प्रकीर्त्तितम्॥ मांसानां खादनं तद्दवियाचरसमीरितम्॥

नर्समर्भनन्थकः ठार्साक मर्भनः

স্বৰ্গণ নাই, অপবৰ্গণ নাই, পরলোকে আন্ত্রাণ্ড থাকে না। ব্রাহ্মণাদি বর্ণপু বক্ষচর্যাদি আশ্রম প্রভৃতির ক্রিরাণ্ড ফলদায়ক হর না। অগিহোত্র, অক্
সামাদি ভিন বেদ, ত্রিদণ্ড, গাত্রে ভস্ম-লেপন এ সমুদার বিধাতা অবোধ কাপুক্ষ
ব্যক্তিদের জীবনোপার করিরা দিরাছেন। যদি জ্যোতিষ্টোম বজ্ঞে পশু হনন
করিলে, সে পঞ্চ স্বর্গণাভ করে, ভবে বজ্ঞান বজ্ঞে নিজ পিতাকে কেন না বধ
করেন? প্রাছ করিলে বদি মৃত ব্যক্তিদের তৃথি-লাভ হর, ভবে কেহ বিদেশ বাত্রা

করিলে, তাহার সলে পাথের দিবার ফল কি ? যদি মর্জ্য-লোকে বান করিলে, ব্যক্তিত ব্যক্তিদের তৃপ্তি-লাভ হর, তবে নির্ভ্তেল আহার-নামগ্রী দিলে, গৃহের উপরিভলন্থ ব্যক্তিদিগের তৃপ্তি-লাভ হইতে পারে। বত কাল জীবন থাকে, ততকাল হুবে থাকিবে। ঋণ করিরাও ম্বত পান করিবে। দেহ ভত্মাবশেষ হইলে, তাহার আর পুনরাগমন কোথার? যদি জীবাম্মা শরীর হুইতে বিনির্গত হইরা পরলোক গমন করিতে পারে, তবে বন্ধুগণের স্নেহ-পরবশ হুইরা পুনরাগমন না করে কেন ? মৃত ব্যক্তিদের যে প্রেত-ক্রিরার ব্যবস্থা আহে, তাহা আহ্মণেরা হুবীর জীবনোপারার্থ করনা করিরাছে; আর কিছুই নয়। ভত্ত, ধূর্ত্ত, রাক্ষ্য এই তিনে তিন বেদ রচনা করিরাছে। অর্ফারী তুর্ফারী প্রভৃতি (অনর্থ) বেদ-বাক্য পত্তিভগণের বাক্য বলিয়া উক্ত হুইরাছে। সেইরাপ, এই বজ্ঞে বন্ধমান-পত্নী অন্ধশিল্প গ্রহণ করিবে এই যে কথা আছে, তাহা এবং অন্তাভ ঐ রূপ গ্রাহ্ম বস্তু-সমূহ ভত্ত লোক কর্ত্ক উক্ত হুইরাছে। মাংস-ভোজন-পক্ষে যে সমস্ত ব্যবস্থা আছে, তাহাও ঐরপ নিশাচর কর্তৃক প্রয়োজিত হুইরাছে।

বে সময়ে উপনিষদ্ ও দর্শন-চর্চার প্রাছ্রভাব ছিল, সে সময়ের মধ্যে কাল-বাদ অভাববাদ প্রভৃতি আর কতকগুলি মত প্রবর্ত্তিত হয়। সে সমুদায়ও এক একরপ নান্তিকভাবাদ।

काल: खभावीनियतियेष्टच्छा भूतानि योनि: पुरुष इति चिन्त्या । ः (श्रेडाश्रेडरद्वार्गनियम् । २ । २ ।

কাল, স্বভাব, নিয়তি, যদৃহহা, ভৃত-সমূহ ও পুরুষ অগৎ-কারণ বলিয়া চিন্তিত হইয়া থাকে।

> श्रपरे स्वभावकारिणकां ब्रुवते । केन श्रुक्षीक्तता इंसा मयूराः केन चित्रिताः । स्वभावेनैवेति । गाःश्राकाद्विकाः । १३ । १३ । १४ । १४ ।

অন্ত আন্ত লোকে অভাবকে স্টির কারণ বলে। কে হংসকে শুক্লবর্ণ করিরাছে ? কেই বা ময়ুরকে চিত্রিভ করিরাছে ? – অভাবই করিরাছে।

> केषांचित् कालः कारणमित्यक्तं च कालः पञ्चास्तिभूतानि कालः संस्रते जगत्। कालः सुप्ते पु जागित्तं कालो सि दुरतिकामः॥ गाःशावादिका। ७०। शोषभावक्रक स्वस्

কেহ কেহ কালকেও স্থগতের কারণ বলিরা গিরাছেন। কাল পঞ্জুত-ত্বরূপ; কাল জগতের সংহার-কারণ; সকলে নিদ্রিত হইলে, কাল জাগরিত থাকেন। কালকে কেহ অভিক্রা করিতে পারে না।*

পূর্ব্বকালে গ্রীন্ দেশেও কতকগুলি দর্শন-শান্ত প্রবর্তিত হয়। তাহার সহিত ভারতবর্ষীর দর্শনের সোনাদৃশ্যের বিষয় ইতিপূর্ব্বেই কিছু কিছু স্থতিত হইরাছে । ফলতঃ ঐ উভর প্রকার দর্শন ঐক্য করিয়া দেশিলে, অনেক বিষয়েই সাদৃশ্য লক্ষিত হইরা থাকে। বিশ্ব-কারণ, বিশ্ব-স্কলন, স্থাই ও প্রভার পরস্পার, নিয়তি, অড় পদার্থের নিতাতা, উহার সহিত মনের সম্বন্ধ, পরমাশ্রাতে জাবাত্মার লয়-প্রাপ্তি এই সমস্ত, বিষয় হিন্দু ও গ্রীক্ উভর জাতির বিভিন্ন দর্শনে উত্থাপিত ও বিচারিত হইরাছে। একটি প্রধান বিষয়ে গোতমের সহিত প্রীক্ পণ্ডিত এরিস্টটলের মত-সাদৃশ্য পূর্বেই লিখিত হইরাছে। তাঁহার দর্শনে এবং স্থায় ও বৈশেষক দর্শনে অল মৃত্তিকাদি মহাভূত ইক্সির, জীব, কাল, দিক্ এই সমস্ত বিষয় বিচারিত হইরাছে।

আবস্ত হইতে বস্তর উৎপত্তি হয় না, এই সাংখ্য মতটি এরিস্টট্ল্ও লিউ ক্রিশিয়স্ প্রভৃতি অনেকানেক গ্রীক্ ও রোমক দার্শনিক পণ্ডিত স্বীকার করিতেন। প্রেটো, এরিস্টট্ল্, থেলিজ্ল্, ডায়জিনিজ্ল্, লিউক্রিশিয়স্, এনেক্সিমিনিজ্ল্, হেরাক্রাইটস্, হিসিয়ভ্, আনেক্সিমেগুর্, এম্পেডোক্লিজ্ল্, পার্মেনাই ডিজ্ল্, ইহারা সকলেই কপিল, গোতম ও কণাদাদির ভার একটি

^{*} এই সমত দর্শন ব্যতিরেকে, এই প্তকে বর্ণিত বা বর্ণনীর কোন কোন সম্প্রায় প্রবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে কতকণ্ডলি নব্য দর্শন উৎপন্ন হইরাছে; বেমন রামানুত দর্শন, পূর্ণপ্রক্র (অর্থাৎ মধ্যাচার্য) দর্শন, প্রত্যভিজ্ঞা দর্শন, শৈব দর্শন, রসেইর দর্শন, নকুলীশপাশুপত দর্শন ও আর্থত দর্শন। রামানুত্ত দর্শন ও পূর্ণপ্রক্র দর্শন বিকু-প্রধান। প্রত্যভিজ্ঞা, শৈব, রসেইর ও নকুলীশপাশুপত দর্শন শিব-প্রধান। এই সমুদার দর্শনের মত রামানুত্ত, মধ্যাচারী, শৈব প্রভৃতি সম্প্রদারের বিবরণ-মধ্যে কিরদংশ লিখিত হইরাছে ও পশ্চাৎ কতক হইবার সভাষমাও আছে। কোন দর্শনের (১) মতে বিকুর প্রতিয়র্থে অজ-বিশেষে তথ্য মুখা প্রহণ করা এবং অপর কোন দর্শনের (২) মতে মহাদেবের উপাসনার্থ শরীরে জন্ম-কোন, ভন্ম-শ্রায় শ্রম, হ হ হা-করিরা হাস্য, বাড়ের জার বিকট চীৎকার ও স্ক্রী ব্রীলোক দর্শনে কামানুরের জার ভাব প্রদর্শন ও তাদৃশ অভাজ অনেক রূপ অস্থ্রান করা কর্ত্ব্য। রসেইর দর্শনের মতে পার্থই সর্বেশ্বর ও সংসার-সমৃত্যের পার-কর্ত্তা। এই সমৃদারও মানুবের বৃদ্ধি-নিপার দর্শন শাল্প। বাহিত দর্শন জৈলাহি-মত-প্রতিপাদক।

^{†: &}gt;> ७ २० तृत्री तथ ।

⁽१) वृश्विक्षः वर्गस्वत्रः ।

^{্ (}২) নকুনীশপাঞ্চপত দর্শনের।

चनानि উপাদান-কারণ चन्नोका कित्रहा शित्राष्ट्रमः। हेनिस्त्रिक् नामक मध्यमात्रीता शिष्टे विस्तर देवगान्तिक स्टाउत चन्नक्रभ এक्टि चान्ध्यात्र व्यवर्त्धन करतनः। তাঁहाता विगायन, स्रभेट्ड क्रेचन, क्रेचन्रहे स्रभेट ।

ভারতবর্ষীর দার্শনিকেরা জীবের তুইট শরীর স্বাকার করেন; স্থুণশরীর ও স্ক্র-শরীর। সূল-শরীর নষ্ঠ হইলে, জীবাত্মা স্ক্র-শরীর লইরা বোনি-শ্রমণ করেন। প্লেটো ও অক্সান্ত গ্রীক্ ও রোমক দার্শনিকেরা তদমুক্রপ অভিপ্রার প্রকাশ করিরা যান। তাঁহারাও বলেন, মৃত্যুর পরে জীবাত্মা একটি স্ক্র আবরণে আবৃত হইরা বিচরণ করিতে থাকে।

शीम दिनी इ शिवारिशायरम्य मछ-उद्धास शार्क कतिरत, हिन्दभास है व्यथायन क्तिएकि (वांध इत्र । कोवाजा शत्रभाजात ज्ञान, कोटवत वहाउत्र (वांनि-ल्रमण ও অক্ত কর্ম্মের ফল-ভোগ পূর্বক ঈশ্বরেকে লয়-প্রাপ্তি, দেব ও মহুষ্য ভিন্ন चखरीकर चम्र बम्र बाग वाना श्राचार बीव-र्यानित चलिय. यन ६ जीवाचा भन्नामात्र ভিন্ন পদার্থ, পরমাত্মা দর্ব্বাত্মা ও দর্বত ব্যাপী, জীবকে দেহ-বন্ধন হইতে মুক্ত कतिबा (एर-चक्राप्त मिनिक कता पर्मन-मारखन अधान फेरक्स. अध मजनीका. मीर्च-कान-बन्नहर्या. आमिर छक्तरा अधिका, वृथामारम-ट्लाब्स्नव अदेवश्रजा, শিব্যদের প্রতি বৃক্ষাদি ছেদন ও তাহাতে আঁঘাত প্রতিবেধ এই সমস্ত মত ও অভিপ্রার পিথাগোরদ অদেশে প্রচার করেন। তাঁহার সম্প্রদারীরাও বিশেষত ওবেলদু নামক গ্রীক পণ্ডিত বিশ্ব সংসার ভিন ভাগে বিভক্ত করেন: পৃথিবী, অর্গ ও ঐ উভয়ের মধ্য-ছল। এই তিনটি হিন্দুশাস্ত্রোক্ত "ভৃতু বিঃ খঃ" व्यर्थाः जुरनाक, वर्गरनाक ও व्यष्ठत्रीक वरे बात किहुरे नत्र। क्षरिहा शृर्साः লিখিত করেকটি মত ব্যতিরেকে বোনি-ভ্রমণের বিষয়ও বিশেষরূপ ব্যবস্থা कतिया गान । लात्क मत्राभाखत श्रूनतात्र क्या श्रद्ध कतिया है इस्ता-क्रुड निक নিজ ওভাওত কর্মানুসারে স্থব হংথ ভোগ করে, তিনি কেবল এই সাধারণ नित्रम निर्देश क्रित्रा नित्रछ इस नाहे ; हिन्दूमाटक्यत असूत्रम এहे त्रश्रातिशान করেন যে, তাহারা আপন আপন অজ্ঞান ও অধর্মের তারতম্যামুসারে পশু. भक्तो. मश्कांपि विरागय विरागय स्थानि शाश्च स्टेशा शास्त्र । **এই मश्च**छ द ভারতবর্ষীর মত ইহা প্রাসিছই আছে।

^{*} এছলে বে সমন্ত একি-মতের নামোরেণ মাত্র করা ছইল, Enfield's History of Phlosophy, Stanley's School of Philosophy, Lewe's Biographical History of Philosophy এই সমন্ত পুত্তক পাঠ করিলে, ভাষার সবিশেষ বৃত্তান্ত জানিতে পাঁরা বাইবে।

নানা অংশে হিন্দু ও গ্রীক্ দর্শনের পরস্পার এরপ অভেদ ভাব বিনা কারণে সহনা সংঘটিত হইরাছে, ইহা মনে করা হৃক্তিন। ভারতবর্ষীর পশুিতেরা গ্রীক্দের নিকট ঐ সকল বিষয়ের উপদেশ গ্রহণ করেন, ইহার কিছুমাত্র প্রমাণ ও সম্ভাবনা দেখিতে পাওরা যার না। প্রত্যুত, গ্রীকেরা ভারতবর্ষীর-দের নিকট দর্শন বিষয়ের উপদেশ গ্রহণ করেন, ইহাই অনেকে বুক্তি-সিদ্ধ বিশিরা বিবেচনা করিরাছেন। পিথাপোরস্ স্থাদেশ হইতে যাত্রা করিরা পূর্বাফলে প্রমণ করিতে আসিরাছিলেন, এইরূপ একটি প্রবাদও বহুকালাবধি প্রচলিত আছে।

That the Hindus derived any of their philosophical ideas from the Greeks seems very improbable; and if there is any borrowing in the case, the latter were most probably indebted to the former.

H. H. Wilson.

The Indians were in this instance teachers rather than learners.

H. T. Colebrooke *

উপনিষদ্ ও দর্শন-শান্তে ব্যর্গ জ্ঞান-প্রকরণ ও যোগ-বিবরণ নিথিত হইরাছে, তত্ত্বপথাবলমী জর লোকেই এবং বিশেষতঃ ভাদৃশ উদাসীন ব্যক্তিরাই ভালা সাধন করিতে সমর্থ হন। সাধারণ লোকে কোন না কোন প্রকার সাকার দেবভার উপাসনা ও তৎসংক্রান্ত ক্রিয়াকলাপের অনুষ্ঠান করিয়া আসিরাছে। অতি প্রাচীন বৈদিক ধর্ম্মে অয়ি, বায়ু, প্র্যা প্রভৃতি বে সমস্ত ভ্তাধিষ্ঠাত্রী দেবভার উপাসনা প্রচলিত ছিল, তাহা পূর্কেই বর্ণিত হইরাছে †। পরে অনভিপ্রাচীন পৌরাণিক ধর্ম্মে ব্রহ্মা, বিষ্ণু, মহেশর ও তলীর শক্তিপণের আরাধনাই সর্ক-প্রধান বলিয়া প্রচারিত হয়। ঐ পূর্ককালীন বৈদিক ধর্মের প্রাত্তিব-কালের অব্যবহিত পরেই বে উক্তরূপ পৌরাণিক ধর্ম্ম একবারেই প্রবর্তিত হয়, এমন নয়। ঐ উভ্যের মধ্যত্বলে হিন্দুধর্মের আর একরপ

^{*} H. H. Wilson's preface to the Sankhya Karika, 1837, p. IX; H. T. Colebrooke's article in the Transactions of the Royal Asiatic Society, 1827, Vol. I. p. 579; H. M. Elphinstone's History of India, 1866, pp. 137-138; M. William's Indian Wisdom, pp. 68, 72 and 73

[া] এই প্তকের প্রথমভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৭৪ ও ৭৫ পৃঠা দেব।

অবস্থা দেখিতে পাওয়া যায়। মহুসংহিতায় ঐ অবস্থার সবিশেষ বৃত্তান্ত বর্ণিত ছইয়াছে। ঐ অবস্থায় ব্রহ্মা স্পষ্টি-কর্তা বলিয়া পরিগণিত ছিলেন।

মানব-ধর্ম্মশাস্ত্র।

বে সময়ে মহুসংহিতা রচিত ও সক্ষণিত হয়, সে সময়ের মধ্য হিন্দুরা হিমাণয় ও বিদ্যাশ্রেণীর অন্তর্গত সমুদয় হান অধিকার পূর্বাক গ্রাম ও নগর নির্মাণ করিয়া উপনিবেশ করিয়াছেন *, হিন্দু সমাজ ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশু, শুদ্র এই চারি বর্ণে ও নানাবিধ বর্ণসঙ্করে বিভক্ত হইয়াছে †, ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশু এই তিন প্রধান জাতিয় মধ্যে ব্রহ্মচর্য্য, গার্হস্য, বাণপ্রস্থ, ভৈকুক এই চারি আশ্রম ও ঐ সমন্ত বর্ণ ও বর্ণসঙ্করের অবলম্বিত নানাপ্রকার জীবন-রুত্তি স্থপ্রণাশীক্রমে চলিয়া গিয়াছে, এবং তল্মধ্যে বাণিজ্য-ব্যবদায়ীরা সমুদ্র-যাত্রাদি অবলম্বন ও দুর দ্রান্তর গমন পূর্বাক বিভিন্নদেশী ও বিভিন্নভাষী নানাজাতীয় লোকের সহিত বিস্তৃত বাণিজ্য-ব্যবদায়ে প্রবৃত্ত হুইয়াছে। ‡

सारासारञ्च भाण्डानां देशानाञ्च गुलागुणान् । लाभालाभञ्च पण्डानां पश्नां परिवर्षनम् ॥ स्रत्यानाञ्च स्रतिं विद्यात् भाषाञ्च विविधा तृणाम् । द्रव्याणां स्थानयोगांच क्रयविक्रयमेव च ॥

মনুদংহিতা। ৯। ৩০১ ও ৩৩২।

বৈশ্রেরা দ্রব্যের উৎকর্ষাপকর্য, দেশের গুণাগুণ, পণ্য দ্রব্য বিক্রের দ্বারা লাভালাভের বিষয়, পশুদিপের উৎকর্ষ-সাধন, ভৃত্যদের ভৃতি, বিবিধ প্রকার ভাষা, দ্রব্যের স্থান-যোগ অর্থাৎ কোন্ দ্রব্য কিরূপে স্থাপন করিলে বহুকাল থাকে ভবিষয়, ও ক্রের বিক্রয়ের রীতি অবগত হইবে।

> समुद्रयानकुत्राला देशकालार्थदर्शिन: । स्थापयन्ति तु यां हृषिं सा तत्नाधिगमं प्रति ॥ यष्ट्रगशहरू। ৮। ১৫१।

[🛊] সমুসংহিতা। ২। ১৭—২৩।

[†] বেদসংহিতার প্রাচীনতম ভাগে যে বর্ণ-বিচার-ব্যবস্থার ফ্লান্ট বিদর্শন লক্ষিত হর না, মনুসংহিতা-রচনার সমরে তাহা এরপ প্রাচীন বলিরা গণ্য হইরাছিল যে, সেই ব্যবস্থাটি এক্ষার কৃত্ত বলিরা উলিধিত হইতে পারিরাছে।

[🖠] मसूमरहिला। ১, २, ७, २ ७ २०।

সমূত্র-গমন বিষয়ে নিপুণ এবং দেশ, কাল ও লাভালাভদশী বণিকেরা ভাড়ার বিষয়ে যে ব্যবস্থা দেন, তাহাই প্রমাণ।

কিন্ত সে সময়ে যে বর্ণ যত প্রবল হউক না কেন, ব্রাহ্মণের মহিমা ও ব্রাহ্মণের প্রভূত একবারে গগন স্পর্শ করিয়াছিল। এমন কি সে বিষয় পাঠ করিয়া দেখিলে, মমুসংহিতাধানি কোন স্বন্ধাতি-পক্ষপাতী স্থপণ্ডিত ব্রাহ্মণের সৃষ্কলিত বলিয়া স্বভঃই প্রতীয়মান হইয়া উঠে!

ब्राह्मणो जायमानोहि पृथिव्यामधिजायते। ईखरः सर्व्वभूतानां धर्मकोषस्य गुप्तये॥

মমুসংহিতা। ৯। ৯৯।

বাহ্মণ জন্ম গ্রহণ করিয়া ভূমগুণের অধিপতি হন। তিনি সর্বভূতের অধী-খর ; কেননা তিনি ধর্মার্কপ ধনাগার রক্ষা করেন।

लोकानन्यान् स्रजेयुर्ये लोकपालांस कोपिताः। देवान् कुर्य्युरदेवांस कः चिणुंस्तान् सस्यभुयात्॥

মহুসংহিতা। ১।৩১৫

যাহারা অর্থাৎ ব্রাহ্মণের। রুষ্ট্র-ইলে অন্ত অন্ত জীব-লোক ও লোকপাল স্ফল করিতে পারেন, এবং দেবগণকেও অভিসম্পাত করিয়া অদেব আর্থাৎ মহয়াদি নিরুষ্ট জীব করিতে পারেন। কোন্ব্যক্তি তাঁহাদিগকে ক্লেশ দিয়া সমৃদ্ধি-শালী হইতে পারে ?

এইরপ ভূরি ভূরি বচনে ব্রাহ্মণের মহিমা বর্ণিত হইরাছে । অক্টে বিদি ব্যাহ্মণের অনিষ্ঠাচরণ করিত, তাহা হইলে তাহার আর শান্তির সীমা থাকিত না। কোন অপরাধে হস্ত-ছেদেন, কোন অপরাধে বা পদ-ছেদেন, কোন অপরাধে বা মুখে ও কর্ণ-মুগলে তপ্ত তৈল-ক্ষেপণ, এবং কোন অপরাধে বা রজ্জু-বিশেষে বন্ধন করিরা দগ্ধ করা হইত †। পরকালে তো তাহার আর আর নিস্তার থাকে না, এইরপ লিখিত আছে ‡।

বে সময়ে গর্ভাধান, জাতকর্ম ও উপনয়নাদি সংস্কার, উপনয়ন-কালে প্রণব ও গায়ক্র্যপদেশ-গ্রহণ, ব্রাহ্মণাদির নিজ গৃহে অগ্নি-ফাপন, প্রাতঃ ও সারংসদ্ধা

^{*} সমুদংছিতা। ১ অ, ৯৮; ১ অ, ১০০; ৮ অ, ৩৮০; ৯ অ, ৩১৬ ইত্যাদি লোক দেব।

[†] मसूनाहिला। ४। २१२, २४७. ७२०. ७१० इंडािषि।

[‡] मञ्जरहिष्ठा। ১৯। २०५ ४ २०५।

এবং প্রতিদিন দেবষজ্ঞ, ঋষিযক্ত, ভূতযজ্ঞাদি পঞ্চয়ক্তের জামুঠান করা জ্বশ্য কর্ত্তব্য বলিয়া পরিগণিত ছিল।

> ऋषियत्तं देवयत्तं भूतयत्तवः सर्व्वदा । मृयत्तं पिखयत्तवः यथामितः न हापयेत् ॥

> > মহুদংহিতা। ৪। ২১।

ৰাবিষক্ত *, দেৰ্থজ্ঞ †, ভূত্ৰজ্ঞ ‡, নৃষজ্ঞ §, পিতৃষক্ত গ এই পঞ্চৰজ্ঞ পাৰ্য্য-মাণে কথন পরিত্যাগ করিবে না।

যে সমরে ব্রাহ্ম, দৈব, আর্ষ, প্রাজাপত্য, আহ্বর, গান্ধর্ম. শৈশাচ, রাক্ষদ এই আট প্রকার বিবাহ, ভিন্ন ভিন্ন বর্ণের পরস্পার উবাহ-সম্বন্ধ অর্থাৎ নিরুষ্ট বর্ণের কল্পা গ্রহণ এবং বিধবা-বিবাহ ও বিধবা-জাত পুজের বিধি-বিহিত পুজত্ব স্বীকার প্রচলিত ছিল।

प्राक्त्य वार्ष यिता च सुत्रशीलवते स्वयम्।
प्राक्त्य दानं कन्याया ब्राह्मी धर्मः प्रकीर्त्तितः॥
यत्ते तु वितते सम्यग्टित्वजे कुर्म कुर्वते।
प्रवृक्तत्य सुतादानं देवं धर्मः प्रवृत्तते॥
एकं गोमियुनं हे वा वरादादाय धर्मतः।
कन्याप्रदानं विधिवदाधी धर्मः स उच्यते॥
सन्दोभी चरतं धर्ममिति वाचानुभाष्य च।
कन्याप्रदानमभ्यच्धे प्राजापत्यो विधिः स्नृतः॥
त्रातिभ्यो द्रविषं दस्वा कन्याये चैव प्रक्तितः।
कन्याप्रदानमभ्यच्ये प्राजापत्यो धर्मः उच्यते॥
इस्कृयान्योन्यसंयोगः कन्यायास्रवरस्य च।
गान्थव्धेः स तु विद्ययो मैयुन्यः कामसन्धवः॥

वर्षाद व्यश्वास्त्र व्यशानिमा ।

⁺ অর্থাৎ দেবোদেশে অগ্নিতে হোম।

[🖠] অৰ্থাৎ ভূতগণের উদ্দেশে বলি-প্রদান।

৪ অৰ্থাৎ অভিবি-সেৰা।

দ্ব অর্থাৎ অন্ন জলাদি দারা পিতৃ-লোকের তর্পণ।

इता किस्वा च भिस्वा च क्रोग्रन्तीं बदतीं ग्रहात्।
प्रसन्ध कन्याहरणं राज्यसी विधिबचाते॥
सप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रही यत्रोपगच्छति।
स पापिष्ठी विवाहानां पैशाचसाष्टमीऽधमः॥

মমুসংহিতা। ৩। ২৭—৩৪।

স্দাচারী স্থপণ্ডিত পাত্রকে আহ্বান করিয়া ও ক্ঞা-পাত্র উভয়কে বিধি-বিহিত বস্ত্র পরিধান করাইয়া দেই পাত্রকে কলা দান করা হয়; ইহাকেই আন্ধ বিবাহ বলে। যে পাত্ৰ আরম্ভ বতী হইয়া ঋতিকের কর্ম করিতেছে, সেই পাত্তে অলঙ্কার-ভূষিতা কন্তা-দান করাকে দৈব বিবাহ বলে। ধর্ম-সাধনার্থ পাত্রের নিকট হইতে এক বা ছই গো মিথুন অর্থাৎ এক একটি বা ছই তুইটি রুষ ও গাভী উভয়ই গ্রহণ করিয়া যথাবিধি কল্পা-দান করাকে আর্ঘ বিবাহ বলে। উভয়ে একসঙ্গে ধর্মামুষ্ঠান কর এই কথা বলিয়া অর্চনা পূর্বক কল্লা-দান করাকে প্রাঞ্জাপত্য বিবাহ বলে। কলাকে ও ক্ষার পিতা ভ্রাতা প্রভৃতিকে বধাশক্তি ধন-দান পূর্বক স্বেচ্ছানুসারে কন্যা গ্রহণ করাকে আহুর বিবাহ বলে। পরস্পারের ইচ্ছা ও কামামু-बांग-वमंद्रः मरस्रांशार्थ वत-कन्नांत्र शत्रम्भत मिननरक शासर्व विवाह बनिया कानित्व। त्य विधानकाम लाकि कन्।-शकीयनिशक एइन, एउन ७ विनाम পূর্বক উচৈত: ব্বরে রোরদ্যমানা কন্যাকে বল ছারা গৃহ হইতে হরণ করিয়া আনে, তাহাকে রাক্ষ্য বিবাহ বলে। যদি কোন কন্যা শয়ন করিয়া থাকে অথবা মদিরামন্ত বা প্রমন্ত হয়, আবু কোন ব্যক্তি সেই সময়ে গুপ্ত ভাবে जारांत्र मध्मर्ग करत्र, जारा रहेरन रमहे विवाहरक रेभमाठ विवाह वरन। रमहे षष्ठिम ध्यकात्र भाभमत्र विवाह मर्स्वारभक्का प्रथम विवाह।

পৈশাচ ও রাক্ষস বিবাহ নিরুষ্ট বিবাহ বলিয়া উক্ত হইয়াছে বটে, কিন্ত ৰলপূর্ব্বকি স্ত্রীসভোগ বে বিবাহ-সংস্থারের মধ্যে পরিগণিত হইয়াছে, ইহা এক্ষণ-কার লোকের পক্ষে সামান্য আশ্চর্যোর বিষয় নয়।

> सवर्णाचे दिजातोनां प्रयस्ता दारककाणि। कामनतु प्रवत्तानामिमाः स्यः क्रमणो वराः

श्द्रैव भार्या श्द्रस्य सा च स्वा च विशः स्मृते। ते च स्वा चैव राष्ट्रस्य तास स्वाचायज्ञस्यनः॥

মুমুদংহিতা। ৩। ১২ ও ১৩।

বিজ্ঞাতিগণের অর্থাৎ ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রির ও বৈশা বর্ণের পক্ষে অত্রে নিজ বর্ণেতেই বিবাহ করা প্রশস্ত। কিন্তু পরে যাহারা যদৃচ্ছাক্রমে পুনরার বিবাহ করিতে প্রবৃত্ত হন, তাঁহারা অন্ধুলোম ক্রমে পশ্চালিখিত নিয়মানুসারে বর্ণাস্তরের কন্যা গ্রহণ করিবেন। শূল-কন্যা শৃল্পের, শূল ও বৈশ্যকন্যা বৈশ্যের, শূল, বৈশ্য ও ক্ষত্রিয়-কন্যা ক্ষত্রিয়ের, এবং শূল, বৈশ্য ক্ষত্রিয় ও ব্রাহ্মণ কন্যা ব্রাহ্মণের ভার্য্যা হইতে পারে।

यस्या िस्रयेत कन्याया वाचा सत्ये कृते पति: । तामनेन विधानेन निजो विन्देत देवर: ॥ यथाविध्यिधगमेरनां शुक्तवस्तां शुचित्रताम् । मियो भजेदाप्रसवात् सकृत् सक्षद्दतावृतौ ॥

মুমুদংহিতা। ৯। ৬৯ ও ৭•

বে কন্যার বাগদান হইলে, বিবাহের পূর্ব্বে তদীর পতির মৃত্যু হর, তাহার দেবর এই বিধান ক্রমে তাহাকে পুলোৎপাদনার্থ গ্রহণ করিবে। শুক্ল-বস্ত্র-পরিধানা ও কারমনোবাক্যে শুদ্ধাচারিণী সেই কন্যার বাবৎ সম্ভান না জ্বন্মে, তাবৎ তাহার দেবর যথাবিধি বিবাহ করিয়া প্রত্যেক ঋতৃ-কালে এক এক বার তাহার সহিত নির্জনে সহবাস করিবে।

यस्तस्पनः प्रमीतसा क्षीवसा व्याधितसा वा । स्वधर्मीण नियुक्तायां स पुत्रः चित्रनः स्मृतः ॥

मञ्जारहिका। ৯। ১৬१।

সামী যদি নপুংসক, বন্ধা, বা মৃত হয়, তাহা হইলে ধর্মশাস্ত্র-বিধান ক্রমে, অন্ত পুরুষ সংসর্গে গুরুজনের নিয়োগাস্সারে তাহার ভার্যার যে পুত্র জন্মে, তাহাকে স্বৃতিকারেরা ক্ষেত্রজ পুত্র বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন।

> पित्वविश्वान कन्या तु यं पुत्रं जनयेदृष्टः । तं कानीनं वदेवाच्या वोढु: कन्यासमुद्भवम् ॥ मञ्चलश्चित्रं । ३ । ३ १३

অবিৰাহিতা কন্তা পিতৃ গৃহে থাকিতে গুপ্তভাবে পুরুষ-সংসর্গে যে পুত্র উৎপাদন করে, তাহাকে কানীন পুত্র কহে।

> या नर्भिणी संस्क्रियते ज्ञाताज्ञातापि वा सतो। वादु: स गर्भी भवति सहोददति चोच्यते॥

> > মমুদংহিতা। ৯। ১৭৩।

যে ব্যক্তি জ্ঞাত-পর্তা বা অজ্ঞাত-গর্তা কোন স্ত্রীলোকের পাণি-গ্রহণ করে, সেই গর্ভ-জ্ঞাত পুত্র সেই ব্যক্তির সহোঢ় পুত্র বলিয়া উল্লিখিত হয়।

> या पत्था वा परित्यक्ता विधवा वा खंयेच्छ्या। उत्पादयेत् पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते॥

> > মনুদংহিতা। ৯। ১৭৫।

বে স্ত্রীলোক বিধবা বা পতি কর্ত্বক পরিত্যক্ত হয়, সে বদি স্বেচ্ছান্নসারে পুনর্কার বিবাহ করিয়া পুত্রোৎপাদন করে, তাহা হইলে সেই পুত্রকে পৌনর্ভব বলে।

सा चेदचतयोनिः स्याद्गतप्रत्यागतापि वा। पौनर्भवेण भर्ता सं पुनः संस्कारमर्हति॥

ৰমুসংহিতা। ৯। ১৭৬।

সেই স্ত্রীণোক যদি প্রুষ্ধ-সংসর্গ না ঘটতে অন্য ব্যক্তিকে অবলম্বন করে অথবা পতি পরিত্যাগ পূর্ব্ধক অন্য ব্যক্তির সহিত সহবাস করিয়া পুনর্বার নিজ পতির নিকট প্রত্যাগমন করে, তাহা হইলে সেই ব্যক্তির বা সেই পতির সহিত তাহার পুনরায় উদ্বাহ-সংশ্বার আবশ্যক।

दासरां वा दासदासरां वा यः शूद्रसर सुतो भवेत्। सोऽनुजातो इरेदंशमिति धन्मीं व्यवस्थितः॥

মহুসংহিতা। ৯। ১৭৯।

নিক দাসীর অথবা দাস-সম্মীর কোন জীলোকের সংসর্গে যদি কোন শৃদ্রের ইজোৎপত্তি হয়, তাহা হইলে সেই পুত্র নিজ পিতার আজ্ঞান্থসারে তাহার বিবাহিতা পদ্ধীর গর্জজাত পুত্রের সৃহিত সমান ধনাধিকারী হইবে।

উদাহ-সংক্রাস্ত আর একটি বিষয়ও লেখা আবশুক হইডেছে। পূর্ব্যকালে এক্ষণকার মত, গাল্য-বিবাহের শ্লীভিও সচরাচর প্রচলিত ছিল না। ব্রাহ্মণের সক্ষে অষ্টম অবধি বোড়শ বৎসর বয়ঃক্রম পর্যান্ত, ক্ষত্রিয়ের পক্ষে একাদশ অবধি দ্বাবিংশ বংসর পর্যান্ত এবং বৈশ্রের পক্ষে দ্বাদশ অবধি চতুর্বিংশ বংসর পর্যান্ত উপনয়নের কাল নিরূপিত ছিল *। তাঁহারা ঐরূপ বয়সে উপনয়ন-সংস্কারসম্পন্ন হইয়া গুরু-গৃহে অধ্যয়ন করিতে ঘাইতেন; তথার ছত্রিশ, অষ্টাদশ অথবা নয় বংসর অধিবাসপূর্বক পাঠ সমাপন করিয়া গৃহে প্রত্যাগমন করি-তেন । এবং পরে ইচ্ছারুসারে ষথাবিধানে দার-পরিগ্রহ করিয়া গৃহাশ্রমে প্রবিষ্ট হইতেন। এরূপ হইলে, তথন পুরুষদের এথনকার মত দশম বা দ্বাদশ বর্ষে অথবা তাদৃশ অল্ল বয়সে উদ্বাহরূপ লৌহ-বন্ধনে বন্ধ হইয়া সংসার-ভারে ভারাক্রান্ত হওয়া সন্তবই ছিল না বলিতে হয়।

সে সময়ে এক্ষণকার মত স্ত্রীপোকেরও বাল্য-বিবাহ যে আবশ্রক ছিল না, গান্ধর্ম ও স্বয়ম্বর-বিবাহাদির ব্যবস্থায় সে বিষয়ে সাক্ষ্য দান করিতেছে। একটি বচনে লিখিত আছে, কন্সা ঋতুমতী হইয়া চিরজীমন পিতৃ-গৃহে বাস করিবে সেও ভাল, তথাচ তাহাকে নিগুলি পাত্রে দান করিবে না।

काममामरणात्तिष्टे दुग्टहे कन्य तुमित्यपि। न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हि चित्॥

মনুসংহিতা। ১। ৮১।

ক্সা ঋতুমতী হইয়া যাবজ্জীবন পিতৃ-গৃহে বাস করে সেও ভাল, তথাচ তাহারে গুণ-হীন পাত্রে সম্প্রদান করিবে না।

সে সময়ের হিন্দু-সমাজ সর্বাংশে বিশুদ্ধ ছিল না সত্য বটে, কিন্তু কোন কোন অংশে এক্ষণকার অপেকা উৎক্রষ্ট ছিল। উহার কি অধােগতিই হইয়া আালিয়াছে! এখন বিধবা-বিবাহ রহিত, অসবর্ণ-বিবাহ রহিত, গান্ধর্ক-বিবাহ রহিত, অসবর্গ-বিবাহ রহিত, গান্ধর্ক-বিবাহ রহিত, বাল্য-বিবাহের ই প্রাহর্তাব, ও কৌলীল্ল-প্রথার গৈশাচী কাণ্ড! ফলতঃ ঐ প্রাতন সমাজটি ক্রমে ক্রমে বিক্রত হইয়া এমন পচিয়া উঠিয়াছে যে, চতুর্দিকে ভাহার হুর্গদ্ধে আর ভিন্তিতে পারা বার মা।

^{*} মনুসংহিতা। ২। ৩৬ ও ৩৮।

[†] সমুসংহিতা। ৩।১।

[্] কলিকাতার দক্ষিণে কোন হাবে বর্ণ-বিলেবের সদ্যংগ্রন্থত শিশুর বিবাহের বিষয় প্রভাবিত এবং ছই তিন মাসের বালক বালিকার উবাহ-সম্বন্ধ নিবদ্ধ হইরা থাকে। কোন বিবরের আডিশব্য ঘটলে, তাহা উপহাস-ছল হইরা হাস্যোদর করিতে থাকে। অতএব গাঠকরণ, এখন এই বিষয়-স্চক ইতিবৃত্তের মধ্যে পশ্চালিখিত কথাটি গাঠ করিয়া কিছু হাস্ত করিতে থাকুন। সভান গর্তে থাকিতেই তাহার পিতা মাতা অভ শিশুর পিতা মাতাকে কহিরা থাকেন, এবার আমার কন্তা হইলে তোমার পুত্রের সহিত বিবাহ দিব। কি মুধা ও কি লক্ষার বিষয়।—এখন হাস্ত দ্বের গিয়া অন্যান অঞ্চ-পাত উপহিত হইল।

হিন্দুধর্ম্মের এইরূপ অবস্থায় মদ্য-পান ও গো-মাংসাদি নানাবিধ মাংসভোজন সচরাচর প্রচলিত ছিল।

न मांसभच्चणे दोषो न मद्ये नच मैथुने। प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिः सु महाफला॥

মমুসংহিতা। ৫ । ৫৬।

মাংস-ভোজন, মদ্য-পান ও স্ত্রীপুরুষ-সংসর্গে দোষ নাই। এই সকল বিষয়ে প্রাণীদিগের স্বভাব-সিদ্ধ প্রবৃত্তিই আছে, কিন্তু নিবৃত্ত হইতে পারিলে মহাফল জ্বাে।

> मधुपर्के च यज्ञे च पित्रहैवतककाषि । स्रुतिव पस्रवो हिंस्सा नास्यते त्यववीकानः ॥

> > মহুসংহিতা। ৫। ৪১।

মধুপর্কে, জ্যোতিষ্টোমাদি যজ্ঞে, পিতৃ-ক্নত্যে ও দৈব-কর্মে পশু বধ করা বিধেয়, কিন্তু অন্ত স্থলে নয়, এই কথা মন্ত্র বিলয়াছেন।

পূর্ব্বে মধুপর্কে অতিথিকে গোমাংস দান করিবার রীতি ছিল। প্রাচীন ও অপেক্ষাকৃত অপ্রাচীন অনেকানেক গ্রন্থে এবিষয়ের ভূরি ভূরি নিদর্শন লক্ষিত হইয়া থাকে। এ নিমিত্ত অতিথির অন্ত একটি নাম গোল্ল অর্থাৎ গোহত্যাকারী। ভবভূতি এক স্থলে এবিষয়টি অতীব স্পষ্ট করিয়া লিথিয়াছেন।

समांसो मधुपर्कः इत्यान्नायं बहुमन्यमानाः श्रोत्रियाम्यागताय वत्सतरीं महोद्यं वा महाजं वा निर्व्वपन्ति ग्रहमिधन इति हि धर्षै-स्रुतकाराः समादिशन्ति ।

উত্তর্কারিত, চতুর্থ অহ।

"নমাংনোমধুপর্ক:" এই বেদ-বাক্যে সাতিশর শ্রদা করিরা গৃহস্থ লোকে বেদজ্ঞ অতিথিকে একটি নই-বাছুর বা বড় ব্য অথবা বৃহৎছাগল প্রদান করে; ধর্মস্ত্রেরচয়িতা পণ্ডিতেরা এই ব্যবস্থা দেন। *

ফলত: आমাদের ঋষি-মুনি প্রভৃতি সকলেই পো-খাদক ছিলেন তাহার

^{*} এদিকে আবার গো-বধে গুরুতর পাপ ও তাহার ফ্রুটেন প্রায়ন্চিত্তের বিষয় লিখিত হইরাছে।—(মফুসংহিতা। ১১। ১০৮—১৭।) অতএব সমুসংহিতার ভিন্ন ভিন্ন সমনের ও ভিন্ন মতের বচন সমুদ্দ একতা সঞ্চলিত হইয়াছে বলিতে হর।

সন্দেহ নাই! সে বিষয়ে পাদ্রি উইল্সন্ ও শেখ অলিউলার সহিত ঋষিরাজ বশিষ্ঠ ও বিখামিত্রের কিছুমাত্র প্রভেদ দেখা যার না।

ভদ্ধিন, সে সময়ে ছাপ, নানাপ্রকার মৃগ, শশাক্ষ, কূর্ন্ম, গণ্ডার, মেষ, বহুপ্রকার পক্ষী, শৃকর ও মহিষের মাংস-ভোজন প্রচলিত ছিল। মহিষ-ভক্ষণটি বৈদিক ব্যবহার বোধ হয় । শ্রাদ্ধ উপলক্ষে উল্লিখিত মাংস সম্দায় দারা পিতৃ-লোকের তৃপ্তি-সাধন করিবার বিশেষরূপ ব্যবহা আছে †।

মনুসংহিতার পরত্রক্ষের উপাদনা সর্ব্বপ্রধান পরিশুদ্ধ ধর্ম বলিয়া পরিগণিত হইয়াছে। এমন কি দ্বিজ্ঞপণ অস্তু অস্তু সমুদার কর্ম পরিত্যাগ করিয়া তত্ত্ব-জ্ঞানের অনুষ্ঠান করিবেন এইরূপ ব্যবস্থা আছে।

सर्वेषामपि चैतेषामाकाज्ञानं परं स्मृतम् । तद्ययं र सर्वे विद्यानां प्राप्यते श्वस्तं ततः ॥

মমুসংহিতা। ১২। ৮৫।

এই সমুদাধের মধ্যে পরমাত্ম-তত্ত্ত্তানই সর্ব-প্রধান বলিয়া উক্ত হইয়াছে; কেননা আত্মবিদ্যাই সকল বিদ্যার প্রধান ; ভাষা হইতে মুক্তি লাভ হয়।

यथोक्तान्यपि कर्माणि परिहाय दिजोत्तमः। भाष्मज्ञाने यमे च स्त्राहेदाभ्यासे च यक्षवान्॥

मञ्जाहिका। ३२ । ३२ ।

ধিজ্ববেরা শাস্ত্রোক্ত যাবতীয় কর্ম পরিত্যাগ করিয়াও আত্মজ্ঞানে, ইক্সিয়-নিগ্রহে ও বেদাভ্যাসে যত্নবান হইবেন।

जिप्रेनेव तु संसिध्येत् ब्राह्मणीनात् संगयः। कुर्यादन्यन्न वा कुर्यात् मैतोब्राह्मण उच्यते॥

মহুসংহিতা। ২।৮৭।

প্রণবাদি জপ করিলেই বাহ্মণের সিদ্ধি-লাভ হর ইহাতে সংশর নাই। তিনি অন্ত কর্ম করুন, বা নাই করুন, সর্বপ্রাণীর মিত্র হইরা পরব্রহে লয় প্রাপ্ত হন এইরূপ উক্ত হইরা থাকে।

^{*} ঝথেদসংহিতার দেবগণের মহিব মাংস রজন ও ভোজনের বিষয় পুন: পুন: পিবিত আছে । (৮ম, ১২ ফু,৮ ঝ ও ৬৬ ফু ১০ ঝ)। উলিবা উহা ভক্ষণ করিলে, তদীর উপাস-কেরা কেননা প্রসাদ প্রহণ করিবেন ? বিশেষতঃ যথন মমুসংহিতার তদ্বারা পিতৃলোকের ভৃতি-সাধন করিবার ব্যবস্থা আছে, তথন পূর্বভন হিন্দুসমান্ধে ভাহা প্রচলিত ছিল ইহা অক্লেশেই মনে করিতে পারা বার।

[†] সমুসংহিতা। ৩। २৬৮—২৭২।

মন্থদংহিতার নাংখ্য স্থারাদি দর্শন শাস্ত্রের ভিন্ন ভিন্ন নাম বিদ্যমান নাই বটে, কিন্তু শ্লোক-বিশেষে ঐ সকল শাস্ত্রোক্ত মত ও অভিপ্রার প্রচলিত থাকিবার স্থাপষ্ট লক্ষণ লক্ষিত হইরা থাকে। বচন-বিশেষে ব্যবস্থাত অব্যক্ত, অহকার, মহৎ, ত্রিগুণ প্রভৃতি সাংখ্য-শাস্ত্রোক্ত পারিভাষিক শব্দে ও প্রত্যক্ষ অনুমানাদি তিন প্রকার সাংখ্য-প্রমাণের উল্লেখে ঐ শাস্ত্র-প্রচারের পরিচয় দিতেছে *। এমন কি মন্থাংহিতার স্টি-প্রণালী অনেকাংশে সাংখ্য শাস্ত্রের অনুরূপ †।

শোক-বিশেষে আবিক্ষিকী ও আত্মবিদ্যা ‡ অর্থাৎ স্থায় শাস্ত্র ও ব্রহ্ম-বিদ্যা এবং হৈতৃক গ ও তর্কি নামে তৃই প্রকার ধর্ম-মীমাংসক পণ্ডিতের নাম উল্লিধিত আছে §। কুলুকভট্ট এই শেষোক্ত তৃইটি পদ স্থায়ক্ত ও মীমাংসা শাস্ত্রোক্ত বিদয়া ব্যাথা করিয়াছেন। তাঁহার মতামুসারে, মনুসংহিতা রচনার সময়ে বৌদ্ধাদি নান্তিক সম্প্রদার প্রচালত ছিল।

पाषिण्डिनो वेदवाच्यव्रतिलङ्गधारिणः शाक्यभिच्चचपणकादयः।

মনুসংহিতা। ৪ অ। ৩০ খোকের ব্যাখ্যা।

পাষণ্ডী শব্দের অর্থ বেদ-বিরুদ্ধ ধর্ম-চিক্র্ধারী অর্থাৎ শাক্য, ভিক্ষু, ও ক্ষপ্রকাদি ।

* মফুসংহিতা। ১ জা। ৬, ১৫, ১৫ ও ১৬ লোক এবং ১২ আ। ১০৫ লোক দেখ।

† বেলান্তের মতে, প্রমেথর জগতের উপাদান কারণ। সাংখ্য-শাল্রামূসারে, প্রকৃতি

ইতে মহৎ, অহকার, পঞ্চ তথাতা, পঞ্চেন্তির, পঞ্চ মহাভূত প্রভৃতি ক্রমশঃউৎপন্ন হয়। এই

ইটি মত একতা মিলিত হইলে বেরূপ হয়, মফুসংহিতার সৃষ্টি-প্রক্রিয়া-বর্ণন প্রায় সেইরূপ।

া মনুসংহিতা। ৭ আ । ৪৩ লোক ।

শ স্থলান্তরে আবার হৈতুকদের ষৎপরে বালিড নিন্দা করা হইরাছে।

योऽवमनेत्रत ते मुखे हेतुशास्त्रात्रयादहिजः । स साधुभिवेहिष्कार्यो नासिको वेदनिन्दकः॥

मयूनः(इडा। २ व्य। ३) क्षांक।

যে ব্যক্তি হেতু শাস্ত্ৰ অবলম্বন পূৰ্বাক শ্ৰুতি ও স্থৃতির অবমাননা করে, সেই বেদ-নিক্ষক ৰাত্তিককে সাধু-সমাল হইতে বহিছত করিয়া দিবে।

§ मञ्जरहिला। २२ व्या ३३३ क्षांका

। এই তিনই বৌদ্ধ-নতাৰলথী। ঐ মত-প্ৰবৰ্ত্তক বৃদ্ধের নাম শাক্য। মফুসংহিতার জ্ঞান্ত স্থলেও বেদ-বিরোধী কৃতকী লোকের প্রতি কটাক্ষপাত আছে(১); তাহারও কিরদংশ বৌদ্ধর্ম বিবরক হওরা সন্তব। বৃদ্ধ থ, পূ, পঞ্চম বা বঠ শতাকীতে প্রাণ্ডাপ করেন। জ্ঞত্বক কৃত্তকটের উলিখিত ব্যাব্যাস্কারে মফুসংহিতা ঐ সমরের পরে রচিত বা সক্লিত বলিতে হয়। ফলতঃ ঐ সংহিতাধানি তদপেকা অধিক প্রাচীন বোধ হয় না। উহা প্রস্তুত ইবার পূর্বে হিন্দুসমাল একরূপ পুরাত্তন, তদীর অবহা অনেকাংশে উর্ভুত, আ্যান্ড্রিত

⁽१) (वमन। १२व्य । २८ (अ(क्)

হিন্দ্ধর্মের উল্লিখিত অবস্থার বেমন বৈদিক ধর্ম ও বৈদিক ব্যবহারের প্রচার ছিল, সেইরূপ আবার পৌরাণিক অথবা ইদানীস্তন ধর্ম ও ব্যবহারেরও

সভ্যতা-স্লভ দোষ সমূদর পরিব্যাপ্ত এবং বছ-কাল-ব্যাপী বৃদ্ধি-চালনার ফল-ছরণ ফার সাংখ্যাদি দার্শনিক মতও প্রবর্ত্তিত হইরাছিল। স্ত্রীলোকের বছ বিবাহ একটি অতি প্রাচীন বৈশিক প্রথা (১)। মুসুসংহিতা-রচনার পূর্বে ভাষা একেবারে বিলুপ্ত হুইরা বার। ঐ সংহিতা ৰদি সম্ধিক প্ৰাচীন হইত ও দে সময়ে ৰদি ঐ প্ৰথা প্ৰচলিত থাকিত, তাহা হইলে পূৰ্বো-লিখিত বিবাহ-বাৰছা ও প্ৰোৎপাদন-প্ৰকরণে সে বিষয়ের প্ৰসঙ্গ থাকিতই থাকি ত। কিন্ত বধন মমুসংহিতার বিদ্যাচল আর্যাকুলের আবাস-ভূমির দক্ষিণ সীমা ৰলিরা নির্দেশিত হই-রাছে (২), তথন ঐ এম্ব অধিক অপ্রাচীন হওয়াও সম্ভাবিত নয়। বরাহমিছির খ্রীষ্টাব্দের বঠ শতালীতে জীবিত ছিলেন। তিনি বৃহৎসংহিতার মধ্যে বারংবার মনুর নামোলেথ ও এক স্থানে তদীর প্রস্তের ও প্রসঙ্গ করিয়াছেন। (বুহৎসংহিতা। १৪।৬।) বুটানের পঞ্চ শতা-सीत सामक शूर्व्स कछकक्षित हिन्तू ववधीरण ७ शांत्र छथा इट्रेंट्ड वानिधीरेश शित्रा वाप्त करत्र । এখন ঐ শেষ্তে দ্বীপে মনুদংহিতা নামে কোন পুত্তক বিদামান নাই ৰটে, কিন্তু তথায় প্রবৃষ্ট্র আদিম ব্যবস্থাপক বলিরা প্রসিদ্ধ আছেন (৩), এবং পূর্যেদিগম নামে একথানি গ্রন্থ ও তাঁছারই প্রণীত বলির। প্রচলিত রহিরাছে। হিন্দুসমালে সহমরণ-প্রথা প্রথমে বিদ্যমান ছিল না; কালক্রমে প্রচলিত ও প্রাত্নভূতি হইয়া উঠে (৪)। বে সময়ে, গ্রীক দৃত মিপেছিনিজ ভারতবর্ষে আগমন করেন, ভিনি সে সমরে, অর্থাৎ খু, পু, চতুর্প লতাকীতে, উল্লিখত প্রথা মগধ পৰ্যান্ত বলবং দেখিতে পান। মতুসংহিতাগ সে বিবরের প্রসঙ্গ নাই। বদি ঐ গ্রন্থ রচনা ও সম্বলনের সময়ে ঐ রীতি প্রচলিত থাকিত, তাহা হইলে, বর্ণাশ্রমের বিবরণ ও প্রাদ্ধ বিবাহাদি সমুদর সংকারের ব্যবস্থা করা বে শান্তের প্রধান উদ্দেশ্য, তাহাতে উলিধিত রীতির বিধান না থাকা কোনকপেই সম্ভব হইত না। অতএব মনুসংহিতা ঐ সময়ের পূর্বে রচিত এছ বলিয়া অক্লেশেই বিবেচনা করিতে পারা বার। কিন্তু কত পূর্বে, তাহা নিন্দিষ্ট করিয়া

⁽১) প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৭৯ পৃষ্ঠা দেখ।

^(*) The Journal of the Indian Archipelago, February, 1849. p. 137.

⁽৪) বেদসংহিতার সে বিবরের কিছুমাত্র নিদর্শন নাই। কোঁতুক দেশ, যে বেদ-ব্রপ্তলি তাহার প্রবাণ বলিরা পরিগৃহীত হয়, তাহাতে সে প্রধার পোযকত। করা দূরে থাকুক, বিপরীত মতই সমর্থন করিরা দিতেছি, অর্থাৎ মৃত ব্যক্তির শোকাকুল ভাগ্যাকে নিজ পতির অসুগ্মন-ব্যবহা না দিরা পুনরার সংসারে অর্থাৎ গৃহে-প্রত্যাগমন করিতে আবেশ দিতেছে।

चदीर्षं नार्यभिजीवलीकं गतासुनितसुपशेष एडि इसगाइसा दिधिषीसवेदं पतुर्जिनिसमिसंवभूव॥

चर्यपगरहिला। २०म। २०म् । २०१४ ॥।

নারি! তুমি নির্জানের নিকট শরন করিয়া আছে। উথিত হও; জীবলোকে (অর্থাৎ জীবিতদিগের হানে) আগমন কর। এস, পাণিগ্রাহী ও গর্ডাধানকারী পতি হইতে ভোষার জননীয় সম্ভূত হইরাছে।

এই মত্ত্ৰের ভাংপর্ব্যার্থ বিধবা পদ্মীর গৃহ-প্রভ্যাগ্যমানেশ ব্যভিরেকে অন্ত কিছুই বোধ হয় না।—The Journal of the Royal Asiatic Society, Vol XVI• pp- 201—214 and Vol· XVII- Part I- pp- 209—220 দেখ।

ক্ত্রপাত দেখিতে পাওরা বার। পূর্ক্কালে যে গায়ত্রী সবিতা অর্থাৎ ক্র্যান্তির স্থাতিনে সে সিরবেশিত ছিল *, ঐ অবস্থায় তাহা ব্রহ্মগায়ত্রী বলিয়া পরিগণিত হয়। সত্য, ত্রেতা, য়াপর, কলি এই চারি মুগ ও কয়াদি † কাল-বিভাগ সম্যক্ষপে প্রবর্তিত হয়, এবং স্ত্রীজাতির বেদ-পরিচিত বছবিবাহ এক বারেই অপ্রচলিত হইয়া যায়। ঐ অবস্থায় ব্রহ্মাদি-কয়েকটি পৌরাণিক দেবতাও হিল্পুদের দেব-মঙলীর মধ্যে সমিবেশিত হল। পুরাণের মতে, ব্রহ্মা বিষ্ণু শিব এই তিন দেবতার মধ্যে শিব ও বিষ্ণুই প্রধান দেবতা। এমন কি ঐ শাস্ত্রে তাঁহারা প্রকৃত পরমেশ্বর বলিয়াই বর্ণিত হইয়াছেন। প্রামাণিক উপনিষদ্ ও মমুসংহিতা প্রচলিত পুরাণ অপেক্ষা প্রাচীন বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে; বাস্তবিকও তাহাই বটে। ঐ ছই শাস্ত্রে ত্রিমূর্তির মধ্যে ব্রহ্মারই প্রসঙ্গ ও প্রাধান্ত দেখিতে পাওয়া যায়।

ब्रह्मा देवानां प्रथम: सम्बभूव विष्वस्य कत्तां भुवनस्य गोप्ता। स ब्रह्मविद्यां सर्व्वविद्याप्रतिष्ठामथर्व्वाय ज्ये ष्ठपुन्नाय प्रान्ह ॥ मशृत्काणनिवर्त । ১ । ১ ।

দেবতাদিগের অগ্রে ব্রহ্মা উৎপন্ন হন। তিনি জগতের কর্ত্তা ও পালয়িতা। তিনি অর্থবর্ধ নামক জ্যেষ্ঠ পুত্রকে সকল বিদ্যার আশ্রয়-স্বরূপ ব্রহ্মবিস্থা কহিয়াছিলেন।

বলা যার না। ঐ শান্তের প্রারত্তে লিখিত হইরাছে, এক্ষা নিক্লে উহা উৎপাদন করিয়া নিক্ল পুত্র স্বায়জুব মুকুকে অর্থাৎ প্রথম মুকুবাকে উপদেশ প্রদান করেন, তিনি পুনরার ভৃগু মরীচি প্রভৃতিকে শিক্ষা দেন এবং তল্পধ্যে ভৃগু অবিগণকে উহা প্রবণ করান (১)। ঐ প্রস্থ অতিমাত্র প্রচীন বলিরা প্রচার করাই একখার উদ্দেশ্য। প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ১২ পৃঠার ঐ পুত্তক-রচনার বিবর দেখ। তথার উহা মানব-কল্পুত্র হইতে সংগৃহীত বলিরা বিবেচিত হইরাছে। ইহা হইলে, সংপ্রহ্কার মানব নামক প্রাক্ষণ-কুলের কোন ব্যক্তি ইইবেন বোধ হর। কিন্তু উহাতে বে নানা সমরের রচিত বচন-সমূহ সলিবেশিত আছে একথা ইতিপুর্বেই একবার স্টিত হইরাছে। (৬৫পুঠা দেখ)। টীকাকারেরা বৃহন্মকু ও বৃদ্ধমন্থ লাবে অপর একথানি পৃত্তকের নাম পুনঃ পুনঃ উল্লেখ করিরাছেন।

- वद्यनगः विखा। ०भ, ७२ ऱ्, ১० ॥।
- † বেদের সর্বাপেক্ষা আধুনিক ভাগে অর্থাৎ উপনিবদে কাল-বিশেষ-বাচক কর পক্ষের প্ররোগ আছে।

"पुराकल्ये प्रचीदितम्।"

ষেতাখভরোপনিষদ। ৬। ২২।

⁽⁾ मनूमःहिला।)। १४-७०।

यो ब्रह्माण विद्धाति पूर्व योवै वेदांश्व प्रहिणोति तस्मै। (श्वाश्वद्धार्थनिवन्। ७। ১৮।

যিনি পূর্ব্বে ব্রহ্মাকে স্কলন করেন ও তাঁহাতে বেদ সমুদায় সংস্থাপন করেন।

মন্থ্যংহিতাতেও ত্রিমৃত্তির মধ্যে ব্রহ্মাকেই প্রথম ও প্রধান দেব বিশিষ্টা পরিচয় দিতেছে। বেদশাস্ত্রের প্রাচীনতম ভাগে ব্রহ্মার নাম মাত্রও বিশ্বমান নাই, কিন্তু মন্থ্যংহিতায় ভিনিই স্থাষ্ট ও সংহারের কর্ত্তা প্রধান দেব বিশিষ্টা বর্ণিত হইয়াছেন।

तदण्डमभवडेमं सहस्रांश्यसमप्रभम् । तस्मिन् जन्ने खयं ब्रह्मा सर्व्वलोकपितामहः ॥

[°]মনুসংহিতা। ১। ৯।

(স্বয়স্তু কর্তৃক জলে বিস্ত ট) সেই বীজ সহত্র স্থ্য-সদৃশ স্বর্ণময় অপপ্তরূপে-পরিণত হটল; তাহাতে সর্বলোক-পিতামহ ব্রহ্মা উৎপন্ন হ**ইলেন।**

यत्त लारणमव्यक्तं नित्यं सदसदात्मकम् । तिहस्रष्टः स पुरुषो लोके ब्रह्मे कि कोर्त्तरते ॥

মহুসংহিতা। ১। ১১।

সেই সং ও অগৎ-স্বরূপ, নিত্য, অব্যক্ত * কারণ হটতে উৎপন্ন সেই পুরুষ ভূ-মণ্ডলে ত্রহ্মা বশিয়া প্রসিদ্ধ আছেন।

तस्मित्रण्डे स भगवानुषित्वा परिवस्मरम्। स्वयमेवासनीध्यानात्तदण्डमकरोद् दिधा॥

মহুসংহিতা। ১। ১২।

ভগবান্ এক্ষা দেই অতে এক বৎসর অবস্থিতি করিয়া আপনার চিন্তাবলে তাহা তুই ভাগে বিভক্ত করিলেন।

> ताभ्यां स शकलाभ्याच्च दिवं भूमिच्च निर्ममे । मध्ये व्योम दिश्वचाष्टावपां स्थानच्च शास्त्रतम् ॥ यश्रश्रह्ण । ১ । ১० ।

* अव्यक्तं विद्विशिद्ध्यागीचर्'।

व्यवाङ भरकत्र वर्ष वास्थित्रत्र व्यरशाहत्र ।

তিনি সেই হুই ভাগ দারা ভূলোক ও হালোক এবং তাহার মধ্যস্থলে আকাশ, অষ্টদিক ও নিতা জল-স্থান নির্মাণ করিলেন।

প্রথমত: ।—প্রচলিত পুরাণ ও উপপুরাণ অপেক্ষায় প্রাচীনতর মন্থাংহিতায় ব্রহ্মাই স্ষ্টেকপ্তা বলিয়া বর্ণিত ইইয়াছেন। দ্বিতায়ত:—পূর্বেই দৃষ্ট ইইয়াছে প্রামাণিক উপনিষ্ণেরও স্থানে স্থানে তিনি জগৎকপ্তা ও প্রথম দেবতা বলিয়া লিখিত ইইয়াছেন। তৃতীয়ত: ।—বাল্মীকি রামায়ণ শিবপ্রধান ও বিষ্ণু-প্রধান প্রচলিত পুরাণ সমৃদ্য অপেকা প্রাচীন তাহার সন্দেহ নাই সেই রামায়ণের একখানি পুরাতন পুস্তকে * ব্রহ্মাই সমস্ত জগতের স্কল-কর্তা বলিয়া কার্বিত ইইয়াছেন।

श्रसृजच जगतार्वे सह पुत्रै: कतात्मिः।

(ব্রহ্মা) ক্লতাত্মা পুল্রগণ সম্বলিত সমস্ত জগৎ সৃষ্টি করিলেন।

চতুর্থত: ।—পঠিকগণ বিষ্ণুবতারের প্রসঙ্গে দেখিতে পাইবেন, এক্ষণকার প্রাণাদিতে যে সমস্ত কথা বিষ্ণুর মহিমা প্রকাশ উদ্দেশে নিয়োজিত হইয়াছে, প্রাচীনতর গ্রন্থে ও প্রাচীনতর উপাধ্যানে তাহা ব্রহ্মারই মাহাত্ম্য প্রতিপাদক বিশ্বা বর্ণিত আছে।

পঞ্চমতঃ।—এক্ষণে নারায়ণ বলিলে কেবল বিষ্ণুকেই ব্ঝায়, উক্ত সময়ে ঐ শক্টি কেবল ব্রহ্মারই প্রতিপাদক ছিল। নারা শক্ষের অর্থ জল, ব্রহ্মা জলশায়ী ছিলেন, এই নিমিত্ত তাঁহার নাম নারায়ণ।

श्रापो नारा इति प्रोक्ता श्रापोवै नरस्नवः। ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्नतः॥

মনুদংহিতা। ১। ১০।

আপ অর্থাৎ জল নরের অর্থাৎ পরমাত্মার অপত্য-স্বরূপ এই নিমিত্ত উহা নারা বলিয়া উক্ত হইয়াছে। পূর্ব্বে ব্রহ্মা উহাকে আশ্রয় করিয়া অবস্থিত ছিলেন এই নিমিত্ত তিনি নারায়ণ বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছেন।

এই সমস্ত কারণে স্পষ্টই বোধ হইতেছে, ত্রিমৃর্ত্তির মধ্যে ব্রহ্মাই প্রথম দেবতা। ঐ ভিনের মধ্যে তাঁহার মহিমা ও তাঁহার উপাসনাই সর্বাঞ্চে প্রাছ্তৃতি হয়। পরে শিব ও বিফুর উপাসকেরা প্রবল হইরা তাঁহার মহিমা ধর্ম ও তাঁহার উপাসনা লুগু-প্রায় করিয়া ফেলে। অগ্রে ব্রহ্মার পাঁচটি মস্তক

রেপেল, কর্তৃক প্রকাশিত রামায়ণের অযোধাকাও, ১১০ সর্গ, তৃতীয় ও চতুর্থ লোকে।

ছিল, মহাদেব ক্রোধ-পরবশ হইয়া ভাহার একটি ছেদন ক্রিয়া ফেলেন, এই পৌরাণিক উপাধ্যানে উল্লিখিত ব্যাপারই প্রকাশ ক্রিতেছে বোধ হর।

ব্রহ্মা একটি নৃতন দেবতা কি কোন প্রাচীন বৈদিক দেবতার রূপান্তর ইহা সহজেই জানিতে ইচ্ছা হয়। বাজসনেরী সংহিতার, ঋথেদ-সংহিতার দশম মগুলে ও শতপথ-ব্রাহ্মণে পুরুষ নামে একটি দেবতার প্রসঙ্গ আছে। তাঁহা হইতে এই জগৎ ও জগতের অন্তর্গত বস্তু সমুদায় উৎপন হয়। সেই স্প্টিপ্রকরণের সহিত মনুসংহিতাপ্রোক্ত স্প্টি-প্রকরণের বেদ, বর্ণ, বিরাট্ প্রভৃতি করেকটি বিষয়ের এরূপ সৌনাদৃশ্য দেখিতে পাওয়া যায় বে, ঐ উভয়কে কথনই অসম্বন্ধ বিদ্যা উল্লেখ করিতে পারা যায় না। পশ্চাৎ ঐ উভয়ের অন্তর্গত সেই কয়েকটি বিষয় পার্যাপার্যী করিয়া লিখিত হইতেছে, দেখিলেই জানিতে পারা যাইবে।

পুরুষ

ततः, संवत्सरे पुरुषः समभवत् स प्रजापतिः।

শতপথ-ব্ৰাহ্মণ। ১১।১।৬।২।

দমৎসর পরে সেই অও হইতে পুরুষ জন্ম গ্রহণ করিলেন, তিনিই প্রজাপতি।

तस्माद्विराङ्जायत विराजो अधिपुरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पद्मादुभूमिमयो पुरः ॥ ब्रार्थमृशह्छ। ১० म । २० एक । ४॥ । ব্ৰহ্মা

तदण्डमभवहै मं सह्स्वांग्रसमप्रभम् । तिस्मन् जन्ने स्वयं ब्रह्मा सर्व्य सोकपितामहः॥ मञ्जाहणा । २ । ३ ।

সেই বীজ সহস্র-স্থ্য-সদৃশ স্বর্ণমন্ত্র অগুরূপে পরিণত হইল; তাহাতে সর্ব্ব-লোক-পিতামহ ব্রহ্মা উৎপন্ন হইলেন †।

हिधा कत्वात्मनी दैष्ट-मर्डेन पुरुषोऽभवत्। श्रहेंन नारी तस्यां स विराजमस्रजत् प्रभु:॥

गरुनःहिडाः ১। ७२।

এই স্ভের নাম পুরুষস্ক।

† এক্ষাও পুরুষের স্থার এক বংসর সেই অংশু অবস্থিতি করেন। ৭০ পৃঠা দেখ। शूक्य।

ব্ৰহ্ম।

তাঁহা হইতে বিরাট জন্ম গ্রহণ করিলেন এবং বিরাট হইতে পুরুষ উৎপদ্দ হইলেন। উৎপদ্দ হইরা, পশ্চাৎ ও সন্মুধ উভন্ন দিকেই ভূমগুল অতিক্রম করিয়া বিস্তৃত হইলেন।

तस्माद् यज्ञात् सर्व्वद्यत-श्रम्यः सामानि जित्तिरे । इन्दांसि जित्तिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत ॥ • भाराष्ट्र माहिला । ১० म । २० म । २० म ।

সেই সর্কমির রক্ত হইতে ঋক্, সাম, বজু ও ছল সঙ্গার উৎপদ্ন হইল।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाझ् राजन्य: क्रत: । जक् तदस्य यद्देश्य: पद्मगं शूद्रो चजायत ॥

খবেদসংহিতা। ১০ম। ৯০স। ১২ খ।
ব্রাহ্মণ তাঁহার মুধ হইরাছিল,
ক্ষত্রিরকে তাঁহার বাহু করা হয় এবং
বৈশ্র তাঁহার উরু। শুদ্র তাঁহার পদযুগল হইতে উৎপন্ন হইরাছে।

ব্রহ্মা নিজ দেহকে ছই ভাগে বিভক্ত করিরা একার্দ্ধে পুরুষ ও অপরার্দ্ধে নারী হইলেন, এবং সেই নারী-সহবোগে বিরাট্ উৎপাদন করিলেন।

ष्रिनवायुरविभ्यसु त्रयं त्रद्म सनातनम् । दुदोष्ट यज्ञसिष्ट्रार्थसम्बज्धः सामलचणम् ॥

মমুসংহিতা। ১। ২৩।

তিনি বজ্ঞ-দাধনার্থ অগ্নি, বার্
ও স্ব্যা হইতে ঋক্, বজু, দাম এই তিন
দনাতন বেদ উদ্ধৃত করিদেন।

सोकानान्सु विद्वहर्यथें
मुखवाह्नक्पादतः ।
ब्राह्मणं चित्रयं वैद्यं
शुद्रश्च निरवर्त्तयत् ॥

মনুসংহিতা। ১। ৩১।

লোক-বৃদ্ধির উদ্দেশে আপনার মুধ, বাহু, উরুও পদ হইতে ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শুদ্র উৎপাদন ক্রিবেন।

পুরুষস্থের বচনাত্মসারে, পুরুষের সহস্র মন্তক *। ব্রহ্মারও চারি
দিকেই মুথ। ঋথেদসংহিতার দশম মণ্ডলের একাশী স্থাকে বিশ্বকর্মার প্রসঙ্গ
শাছে। তাহাতে সকল দিকেই তাঁহার মুধ, সকল দিকেই চকু, সকল দিকেই

⁺ बर्यक्रमःहिका ১ म । ३ - म । ३ स ।

ৰাছ ও সকল দিকেই পদ এইরূপ বর্ণিত হইরাছে। তিনিই ভূলোক ও গ্লালোক উৎপাদন করেন।

विम्बतसञ्जरत विम्बतोसुखी विम्बतोवाङ्गरत विम्बतस्यात्।

ঋথেদসংহিতা। ১০ম। ৮১ স্থ ০ খা।

(বিশক্তার) সকল দিকেই চকু, সকল দিকেই মুথ, সকল দিকেই বাছ এবং সকল দিকেই পদ।

এই বচনামুসারেও ব্রহ্মার সকল দিকে মুখ ও সকল দিকে চকু কল্লিড হওয়া অসম্ভব নয়।

ইতি পুর্বেই দৃষ্টি করা গিয়াছে, মন্ত্রশংহিতায় যেমন অণ্ড হইতে ব্রহ্মার উৎপত্তি প্রসক্ষ আছে, শতপথ-ব্রাহ্মণে পুরুষের বিষয়ও অবিকল সেইরূপ লিখিত হইয়াছে। তাহাতে তিনি প্রকাপতির সহিত অভিন্ন বলিয়া বর্ণিত হইয়াছেন।

सएव पुरुषः प्रजापतिरभवद् श्रयमेव स योऽयमग्निश्चीयते।

শতপথ-ব্রাহ্মণ। ৬।১।১।৫।

নেই পুরুষই প্রজাপতি হইলেন। এই যে অগ্নি প্রজ্ঞলিত হয়, নেই পুরুষই । এই অগ্নি।

উল্লিখিত শতপথ-ব্রাহ্মণ বা তাদৃশ কোন প্রাচীন গ্রন্থের প্রমাণানুসারে মন্মুসংহিতার অণ্ডোৎপত্তির বিবরণ সঙ্কলিত হইয়াছে তাহার সন্দেহ নাই। পুরুষস্ক্ত ও শতপথ-ব্রাহ্মণের পুরুষ মনুসংহিতার ব্রহ্মা। সেই ব্রহ্মারও অন্ত একটি নাম প্রকাপতি।

এই হুই একরপ দেবতার মধ্যে প্রাচীনতর শাস্ত্রে পুরুষের প্রসঙ্গ ও তদপেক্ষা অপ্রাচীন শাস্ত্রে ব্রহ্মার বিবরণ সরিবেশিত আছে। অতএব অগ্রে পুরুষ পরে ব্রহ্মা হিন্দুদের দেব-মণ্ডলীর মধ্যে অবতীর্ণ হন। স্কৃতরাং ব্রহ্মা পুরুষ দেবেরই পরিণাম বলিয়া সহজেই প্রতীয়মান হইয়া উঠিতেছে। ব্রহ্মার অত্য একটি নাম পুরুষ * এবং জন-সমাজে তিনি আদি পুরুষ বলিয়া প্রবাদও আছে।

[⇒] ভাগবতাদি অপ্রাচীন গ্রন্থে বিষ্ণুও পুরুষ ও পুরুষের অমুরূপ ওণবিশিষ্ট বলিয়া বর্ণিত
হইরাছেন। (ভাগবত ২ফ। ১, ৫ ৪ ৬অ)। পাঠকগণ পশ্চাৎ দেখিতে পাইবেন, একণে
যে সমস্ত উপাধ্যান বিষ্ণুর মাহাক্স-প্রতি-পাদক বলিয়া প্রচলিত আছে, তাহার মধ্যে কতক-

ইতি পূর্ব্বে ব্রহ্মার বিষয়ে যৎকিঞ্চিৎ যাহা লিখিত হইল, তদ্বারা এইটি প্রতীয়মান হইয়া উঠিতেছে যে, পূর্ব্বকালে শিব ও বিষ্ণুর উপাসনা প্রাহত্তি হইবার অগ্রে ব্রহ্মার উপাসনা প্রচলিত ছিল। গ্রন্থ-বিশেষে ব্রহ্মমহোৎসব নামে একটি মহোৎসবের বর্ণনা দেখিতে পাওয়া যায়। তত্পলক্ষে মল্লগণ নানা স্থান হইতে উপস্থিত হইয়া পরস্পর যুদ্ধ করিত এবং সিংহ, ব্যাঘ, হন্তী প্রভৃতি বলবান্ জন্তুর সহিতও যুদ্ধ করিয়া নিজ নিজ বল-বিক্রমের পরিচয় দিত এইরপ লিখিত আছে *। শঙ্করাচার্য্যের সময়েও ব্রহ্মার উপাসক-সম্প্রদায় বিশ্বমান ছিল; তাহারা চতুমুর্থ, কমগুলু এবং শুশ্রু প্রভৃতি চিহ্ন ধারণ করিয়া থাকিত।

चतुर्भं खकमण्डलुकूर्यादिचिक्कधरीमुक्तः क्रीड़ित ।

শঙ্করবিজয়। ১১ একাদশ প্রকরণ।

চতুমুখি, কমগুলু, শাশ্রু প্রভৃতি চিহ্ন-ধারী হিরণ্যগর্ভোপাদক মুক্ত হইরা ক্রীডা করেন।

এক্ষণে ব্রহ্মার উপাসনা এক প্রকার লুপ্ত হইয়াছে বলিলেই হয়। কেবল এদেশে গৃহ-দাহ-নিবারণ উদ্দেশে গ্রীয়কালে স্থানে স্থানে ব্রহ্মার অর্জনা হইয়া থাকে। আজমীরের অন্তর্গত পৌথর ও দোয়াবের অন্তঃপাতী বিঠুর এই ছই স্থানে অত্যাপি কিয়ৎপরিমাণে ব্রহ্মার পূজা প্রচারিত আছে। বিঠুরের মধ্যে ব্রহ্মবর্জ্ডাট নামে একটি ঘাট আছে, তথার প্রতি বৎসর অগ্রহায়নী পৌর্ণমাসীতে একটি উৎসব হইয়া থাকে। লোকের এইরূপ সংস্কার আছে যে, ব্রহ্মা স্থাই-ক্রিয়া সমাপন করিয়া সেই স্থানে অন্থমেধ যজ্ঞের অন্থর্চান করেন। নবদীপের সিরিকট ব্রহ্মানীতলা নামে একটি পীঠস্থান আছে, তথার প্রাবণ মাসের সংক্রা-স্থিতে একটি মহোৎসব হয়। চতুপ্পার্শ্বের অন্তাঞ্জ অবধি ব্রাহ্মণ পর্যান্ত সকল বর্ণেই তথায় ব্রহ্মানীর পূজা দেয় এবং দ্রদ্রান্তর ইইতে ব্যবদারী লোকে নানা-বিধ দ্রম্জাত লইয়া বিক্রম্ম করিতে যায়। এই উপলক্ষে মহাসমারোহ হইয়া থাকে।

গুলি পূর্ব্বে ব্রহ্মার মাহাত্ম্য প্রতিপাদক ঘলিয়া প্রচারিত ছিল। এছলেও অবিকল সেইরূপ ঘটির।ছে। পুরুষ দেবের যে সমস্ত গুণ প্রথমে ব্রহ্মার গুণ বলিয়া বর্ণিত হর, সেই সমস্ত পরে আবার বিষ্ণুতে আরোপ করা হইরাছে। রামারণের একটি অপেক্ষাকৃত অগ্রাচীন স্থলে অর্থাৎ যুদ্ধকাণ্ডের ১১৯ সর্গে রামও পুরুষ এবং নানা অংশে পুরুষ গুণ-বিশিষ্ট ঘলিয়া উলিখিত হইরাছেন।

মহাভারত। বিরাট পর্বে। ১৩ অধ্যার।

ব্রহ্মার মাহাত্মা-প্রতিপাদক মন্ত্রণংহিতার শিব বিষ্ণুর নাম উল্লিখিত আছে বটে, কিন্তু ঐ গ্রন্থের রচনা ও সঙ্কলনের সময়ে তাঁহারা এক্ষণকার মত উন্নত পদ প্রাপ্ত হন নাই। তাঁহারা ঐ শাস্ত্রে কেবল অঙ্গ-বিশেষের অধিষ্ঠাতা বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়াছেন।

मनसीन्दुं दियः श्रोत्रे क्रान्ते विश्वुं बले हरम्। वाश्यग्निं मित्रमुक्तर्गे प्रजने च प्रंजापतिम्॥

मञ्चनः शिखा । ১२ । ১২১ ।

মনের অধিষ্ঠাতা চক্র, কর্ণের অধিষ্ঠাতা দিক্, পদের অধিষ্ঠাতা বিষ্ণু, বলের অধিষ্ঠাতা হর, বাক্যের অধিষ্ঠাতা অগ্নি, পায়ু-দেশের অধিষ্ঠাতা মিত্র ও অপ-ত্যোৎপাদন স্থানের অধিষ্ঠাতা প্রজাপতি। এই সমস্ত দেবতাকে ঐ ঐ অঙ্গের সহিত্ত অভিন্ন বলিয়া ভাবনা করিবে।

উক্ত শ্লোকেই দেখিতে পাওয়া যায়, অগ্নি, মিত্র প্রভৃতি প্রধান বৈদিক দেবতাদের আর পূর্ব্ব-গৌরব ছিল না; তাঁহারা সে সময়ে সামাস্ত দেবতার মধ্যে পরিগণিত হইয়াছিলেন। অন্তত্র ইন্দ্র, বরুণাদি অক্সান্ত বৈদিক দেবতারও প্রসঙ্গ আছে, কিন্তু তাঁহারাও তথার বেদ-প্রসিদ্ধ উচ্চ পদ হইতে প্রচ্যুত বলিয়া প্রতীয়মান হইয়া থাকেন *। এ হুইটি সর্ব্বপ্রধান বৈদিক দেব প্রত্যেকে কেবল দিখিশেবের অধিষ্ঠাতা বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়াছেন †।

বচন-বিশেবে দক্ষী ও ভদ্রকাদীর নাম দৃষ্ট হইরা থাকে ‡। পৌরাণিক মতে দক্ষী বিষ্ণু-শক্তি ও ভদ্রকাদী শিব-শক্তি। এখন বে ছইটি বিষণুবতা-রের উপাসনা অভিযাত্র প্রবল হইরা উঠিয়াছে, মন্থ্যংহিতার সেই রাম ও ক্ষের নাম গদ্ধও বিশ্বমান নাই। কিন্তু উহা রহিত হইবার পূর্ব্বে প্রভিমা-পূজা প্রবর্ত্তিত হইরাছিল বোধ হয়। উহাত্তে দেব প্রভিমা ও দেবল ত্রাক্ষণের প্রসঙ্গ আছে য়, কিন্তু দেবলের প্রতি অপ্রদ্ধা প্রকাশ করা হইয়াছে। দেবগণকে ম্বতাহতি প্রদান করাই প্রচলিত ছিল, এক্ষণকার মত পূপাচন্দন নৈবেদ্যাদি প্রদানের রীতি থাকিবার কোন নিদর্শন লক্ষিত হয় না।

ক ইক্র. বারু, বন, বরণ, ধবন্তরি, দ্যৌ, পৃথিবী, কুরু, অনুমতি, য়লদেবতা ও বনস্থতি অর্থাৎ বনদেবতার নামোলেও এবং তাঁহাদের উদ্দেশে হোম ও বলি প্রদান করিবার ব্যবস্থা আছে। (য়নুসংহিতা। ৩।৮৫—৮৮ এবং ৯।৩০৩।)

[†] সমুসংহিতা। ৩। ৮৭।

[🗜] সমুসংহিতা। ৩। ৮৯।

न मञ्जारिका। ७। ১४२ वदः ४। २৮४।

বে বিষ্ণু ও শিব মনুসংহিতা-সঙ্কলনের সময়ে পদ ও বলের অধিষ্ঠাতা মাত্র বলিরা পরিচিত ছিলেন, রামায়ণ, মহাভারত, পুরাণ ও তত্ত্বে তাঁহাদের মহিমা পরিবর্দ্ধিত করিয়া তাঁহাদিগকে পরাৎপর পরমেশ্বরের পদে প্রতিষ্ঠিত করা হইয়াছে।

যে প্রকার ভাষায় ঋগেদসংহিতার মন্ত্র সমুদায় বিরচিত হয় এবং যাহা কিছু কিছু রূপান্তরিত ও পরিস্কৃত হইয়া পশ্চাৎ সংস্কৃত নামে প্রসিদ্ধ হয় ৬, সেই স্প্রাচীন আর্য্য-ভাষা পূর্ব্বকালে জনসমাজ-বিশেষের দেশ-ভাষা ছিল †। বেমন বাঙ্গালায় বাঙ্গলা, হিন্দুস্থানে হিন্দুস্থানী ও মহারাছে মহারাষ্ট্রী ভাষা কথোপকথনে ব্যবহৃত হইয়া থাকে, এককালে আর্য্য-সমাজে ঐ বৈদিক ভাষা সেইরূপ হইত। ঐ ভাষাই ক্রমশঃ পরিবর্ত্তিত হইয়া পালি ও প্রাকৃত ভাষা সমুদায় উৎপন্ন হয় তাহারে সন্দেহ নাই ‡। বৈদিক ভাষার সহিত ঐ হুই

া বেমন বাঙ্গালার দেশ-ভাষা পরিক্ষত ও সংস্কৃতাস্থাত করির। তাহার নাম সাধ্ভাষা দেওয়া হইরাছে, সেইরূপ, পূর্বকালে কথোপকখনে বাবহুত আর্য্ভাষা পরিক্ষত ও ব্যাকর-পাস্থাত করিরা তাহার নাম সংস্কৃত রাথা হয়। সংস্কৃত শব্দের অর্থ পরিক্ষত বই আর কিছুই নাম। রামারণ অপেকা প্রাচীনতর কোন গ্রন্থে এই নামটি বিদ্যানা নাই। এখন বৈদিক ও সারসিক উভর প্রকার ভাষাই সংস্কৃত বিলিয়া উলিখিত হইর। থাকে; বেমন বৈদিক সংস্কৃত ও সারসিক সংস্কৃত। তদকুসারে, এই শ্রীবন্ধের মধ্যে ছানে ছানে বৈদিক ভাষাও সংস্কৃত বিলিয়া লিখিত হইবে।

† বত সমন্ন ব্যাপিনা অংখদসংহিতার মন্ত্র সমৃদান্ন বিরচিত হর, তাহার মধ্যে সিছু নদের পশিচমোত্তর হইতে গঙ্গা ও যমুনার অন্তর্গত অন্তর্বেদী পর্যান্ত আর্যবংশীর হিন্দুদের বসতিবিতার হইরা বার (১)। এইরূপ বিত্তত তুমি-থণ্ডে এরূপ একটিমাত্র অভিন্ন ভাষা প্রচলিত যে, ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশে তাহার শব্দ ও বিভক্তির কোন অংশে কিছুমাত্র প্রভেদ ছিল না এটি একটি অসন্তব কথা। কথোপ কথনে প্রচলিত ভাষা স্থান-ভেদে ও সমন্ত ভেদে পরিবর্তিত না হইরা যার না, ভারতবর্তীর পগুতেরাও ইহা একরূপ শীকার করিয়া গিরাছেন। কৌশিতকী ব্রাহ্মণে লিখিত আছে, উত্তর দেশের ভাষা উৎকৃষ্ট বলিরা পরিগণিত ছিল। বাব্দ কবি বলেন: অক্ত স্থানে অপ্রচলিত গতার্থ ক্রিয়া-বিশেব কাব্যোক্ত দেশে প্রচলিত ছিল। দেশ বা প্রদেশ বিশেব সংস্কৃত ভাষার বে অবস্থা বিশেব উৎপন্ন হর, ঐ সকল ঘাক্য-প্রমাণে তাহা স্পষ্টই বৃষ্ণিতে পারা যাইতেছে (২)।

া লেনেন্ ও বিওকু ফ্ প্রণীত Essai Sur le Pali নামক পুত্তকথানি এ বিষরের এক-থানি ক্ষম্পর এছ। শ্রীমান্ বেবের এবিবরের একটি বৃতত্ত মত প্রকাশ করেন। তিনি বলেন, প্রাকৃত ভাষা, সমুদার বৈদিক ভাষার সমকালবর্তী। তাঁহার এই অভিপ্রারটি না ভারতবর্ষীর প্রাচীনপণ্ডিতগশের মতাকুবারী না অধুনাতন ইউরোপীর প্রধান প্রধান সংস্কৃতক্ত

^{(&}gt;) প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৬৫ পৃষ্ঠা দে**থ**।

⁽২) প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৮ ও » গৃষ্ঠার এবিবরের প্রমান দেখিতে । গাইবে।

প্রকার ভাষার অনেকাংশে সাদৃষ্ট দেখিতে পাওয়া যায় *। অতএব বৈদিক ভাষা হইতেই সেই সম্লায়ের উৎপত্তি হওয়া সম্ভব। সেই সমস্ত পুনরায়

পণ্ডিভগণেরই অনুমোদিত খ্রীমান্ ওকে ই, স্পষ্টাক্ষরে ইহরে প্রতিবাদ করিয়াছেন (১)। প্রাকৃত যে সংস্কৃতের রূপান্তর, একথা ভারতবর্ষীয় বৈয়াকরণেরাও অঙ্গীকার করিরা গিরাছেন। তাহারা বনেন, প্রাকৃতের মধ্যে তিন প্রকার শব্দ সন্নিবেশিত আছে; তৎসম অর্থাৎ বিশুদ্ধ সংস্কৃত, তদ্ভব অর্থাৎ সংস্কৃত এবং দেশ অর্থাৎ দেশ-প্রচলিত অসংস্কৃত শব্দ। তাহাদের এ অভিপ্রান্ত বিভান্ত প্রমাণ-সিদ্ধ। পূর্ববিতন পালি ও প্রাকৃতে এবং অধুনাতন দেশ ভাষা সম্দারে এইরূপাই দৃষ্ট হইয়া থাকে।

এবিষয়ের তুই চারিটি উদাহরণ প্রদর্শিত হইতেছে, দেখিলেই কয়দক্ষম হইবে।

পালিতে গো শব্দের বর্তার ঘ্ছ্ঘ্যনে গোণাং হয়। এটি বৈদিক গোনাং পদেরই অমুরূপ। পালি ভাষায় ফল, অস্থি, মধু এই সকল ক্রীবলিক্স শব্দের কর্ত্তা ও কর্ম কারকের বছবচনে ফলা অথী ও মধু হয়। এ সমুদায়ই বৈদিক রূপ। সংস্কৃত কুজা পদের পরিবর্ত্তে পালি ও প্রাকৃতে কর্জান বা কাতুন হয়। এটিও বৈদিক শব্দরেপের অমুরূপ। সারসিক পীজা ও ইষ্ট্রা পদের স্থলে বেদে পীজাতম্ ও ইষ্ট্রান্ম পদের প্ররোগ আছে। নিক্তক্তে (৬)৭) লিখিত আছে, বয়মু পদের সকল কারকেই অমুহে হইয়া থাকে; যেমন কর্তা কারকে অমুহে কর্ম কারকে অমুহে ও অমুহাকম্, করণে অমুহে প্রথম অমুহে এবং সম্বন্ধ কারকে অমুহাকম্। সারসিক সংস্কৃতে অকারান্ত শব্দের করণ কারকের বছচনে ঐ অকারের পরিবর্ত্তে ঐঃ আদেশ হয়। যেমন শিবৈং। বেদে ঐঃ এবং এভি: উভয়ই ইয়া থাকে। যেমন অগ্রিঃ পূর্বেভি: ঝিডিরীভ্যোন্তনৈকত। (ঝ—সং ২ বক।) পালিতেও এন্থলে এভি ও এহি আদিই ইইয়া থাকে; যেমন বুদ্ধেভি বা বুদ্ধেছি।

ছন্দের অমুরোধেই হউক, বা অস্থা কারণেই হউক, গুই, তিন ও চারি অক্ষরের সংস্কৃত শব্দের যুক্তাক্ষর-বিশেষের স্থানে অযুক্তাক্ষর আদিষ্ট হইরা বাঙ্গালা ভাষার যেরূপ যথাক্রমে তিন, চারি ও পাঁচ অক্ষরের শব্দ হইরাছে, যেমন যত্নে, রত্নে, ধর্মে, ব্র্ক্তা, দর্শনে ও অদর্শনে পদ, বৈদিক ভাষাতেও অবিকল সেইরূপ দৃষ্ট হইরা থাকে; যেমন ত্বম্, তুর্বাম্, মত্যার, বরেণাম্, অমাত্যম্ ইত্যাদি পদের স্থানে তুঅম্, তুরিরম্, মর্তিআর, বরেনিঅম্ ও অমাতিঅম্ পদের প্রয়োগ দেখিতে পাওরা যার। প্রাকৃত ভাষা সমুদারেও শব্দ সমূহের ঐরূপ অক্ষর-বৃদ্ধি দৃষ্ট হইরা থাকে। জ্বী, ত্ব্ম, জাজা, চল্রেন, শ্রেমি, চৈত্রঃ, কার্ম্বং, ভাল, ক্রিরা, নিরাকৃত্য ইত্যাদি সংস্কৃত পদের স্থানে সিরি, তুমং, জাপিঅ, চাদ্বেণ, সকণোমি, চইত্রো, কার্ম্বও, সালজ, কিরিআ, শিরাকরিঅ ইত্যাদি পদ প্রচলিত দেখা যার।

এই সম্পার বিবেচনা করিয়া দেখিলে বৈদিক ভাষাই প্রাকৃত ভাষার মূল এইটিই প্রতীর-মান হইরা উঠে। পালি ও প্রাকৃত বে নিতান্ত অপ্রাচীন নর তাহারও যথেষ্ট প্রমাণ আছে। খৃ, পু, চতুর্থ শতাব্দীতে পালি বে, দেশ ভাষা ছিল ইহা পুর্বের প্রদর্শিত হইরাছে (২)। লালিত বিস্তর নামক ব্ছাচরিত প্রস্থে গাখা নামক কতকণ্ডালি বচন বিনিবেশিত আছে। চীন-দেশীর বৌদ্ধদিরের পুত্তকে লিখিত আছে, ঐ গ্রন্থ ৭৬ খৃষ্টাব্দে চীন ভাষার অনুবাদিত হর। ইহা হইলে খৃষ্টাব্দ-প্রবর্তনের অর্থাৎ ১৯০০ উনিশ শ বৎসবের পুর্বের ঐ গ্রন্থ ও স্কতরাং উহার

⁽³⁾ Professor Aufrecht's remarks on Professor Weber's opinion inscrted in Muir's Original Sanskrit Texts, Vol. II, 1871, p. 131,

⁽২) উপক্রমণিকাংশের ৮০ পৃষ্ঠা দেখ !

ক্রমে ক্রমে রূপান্তরিত হইরা অধুনাতন হিন্দী বাঙ্গালা প্রভৃতি বিভিন্ন দেশভাষায় পরিণত হইরাছে। সেই মূলীভূত বৈদিক ভাষা সমুদায় কথোপকথনে
প্রচলিত না থাকিলে কখনই এরপ ঘটতে পারে না। লেসন্, ওফ্রেষ্ট্র,
বেন্ফি, কুন্, মিয়র্ প্রভৃতি প্রধান প্রধান ইউরোপীয় সংস্কৃতক্ত পণ্ডিতেরা

অন্তর্গত গাথা সমস্ত প্রচারিত ছিল বলিতে হয়। পালিমহাবংশ নামক পুস্তকের ৩৭ স'াই ব্রিশ পরিছেদে গাথার প্রসক্ষ আছে (১)। অশোক রাজার খোদিত অনুশাসনপত্রে মুনিগাথা অর্থাৎ মুনিপ্রণীত গাথার উল্লেখ আছে (১)। অতএব খৃষ্টাব্বের তিন চারি শত বৎসর পূর্বের গাথার ভাষা প্রচলিত ছিল তাহার সন্দেহ নাই। গাথার মধ্যে অনেকানেক অবিকৃত সংস্কৃত শব্দ এবং অবিকল পালি ও প্রাকৃত পদ বা তাহার অনুরূপ শব্দ-সমূহ সন্নিবেশিত আছে। উহার ভাষা এক দিকে সংস্কৃত ও অপরদিকে পালি ও প্রাকৃত এই উভরের মধ্যস্থলবর্তী। সংস্কৃত ভাষা কথোপকথন-ক্রমে ক্রমশঃ অপত্রই ইইয়া যে সকল ভাষা উৎপন্ন হইয়াছে, গাথা তাহার একটি স্থাচীন ভাষা। সংস্কৃত্তর সহিত প্রাকৃত অপেক্ষা পালি ভাষার অধিক সাদৃশ্য ও নৈকটা সম্বন্ধ দেখিতে পাওয়া যার: যেমন—

| সং স্কৃত | প।বি | প্রাকৃত |
|---------------------------|-----------------|----------------|
| জী বিত্ত স্ | জীবিত: | की विषर, की वर |
| পিতা | পিতা | পিষা |
| ক থরিতুম্ | ক েণ্ডুং | কধেছং |
| य ष्टिः | ষ্ট্ঠি• | লট্ঠি |

অতএব পালি ভাষা সংস্কৃত, সাহিত্যে ব্যবহৃত সমুদার প্রকার প্রাকৃত অপেকা প্রাচীন এবং গাখার ভাষা পালি অপেকা প্রাচীন হওয়াই সম্ভব।

যথন অশোক রাজার অমুশাসনপত্তে অর্থাৎ খৃষ্টান্দ-প্রবর্তনের তিন চারি শত বংসর পূর্ব্বে একরপ পালি ভাষা প্রচলিত ছিল দেখা গিরাছে (৩), তথন গাথার ভাষা খৃ, পু, পঞ্চম শতান্দী অপেকা অপ্রাচীন হওর। সন্তব নয়। ফলতঃ উহা শাক্যমূনির সময়ের অর্থাৎ খৃ, পু, পঞ্চম বা ষঠ শতান্দীর দেশ ভাষা-বিশেষ বলিরাই অনুষিত হইরাছে (৪)।

বেদের ব্রাহ্মণভাগের মধ্যেও নিকৃষ্ট ভাষা-কথনের প্রাসঙ্গ আছে। ঐতরের ব্রাহ্মণে শ্রুপর্ণ নামক সন্ত্-বংশীরেরা অপবিত্র-ভাষী (পূতারৈ বাচো বদিতার:) এবং পঞ্চবিংশ ব্রাহ্মণে ব্রাত্যেরা ইতর-ভাষী বলিরা উদ্লিখিত হইয়াছে। শতপথ ব্রাহ্মণে (৩,২,১,২৪)

⁽³⁾ Turnour's Mahavanso, 1837, p, 252.

⁽২) বিওমুক এই "মুনিগাধা" মুনি-প্রণীত অর্থাৎ শাক্য-প্রণীত বলিয়া অর্থ করেন। কিন্ত প্রিলেপ্ ও উইলসন্ হিন্দু-শান্ত-বিশেষ বলিয়া উহার ব্যাথ্যা করিয়াছেন।—Journal of the Royal Asiatic Society, Vol., XVI., pp. 359, 363 and 367.

⁽৩) বৌদ্ধ শান্তের পালি ও অশোক রাজার খোদিত নিপির পালি এই উভরে কিছু কিছু বিশেষ দেখিতে পাওরা যায়। এমন কি পালির কতকগুলি শব্দরূপ খোদিত নিপি অপেকা প্রাচীন এবং খোদিত নিপির কতকগুলি শব্দরূপ পালি মপেকা প্রাচীন।

⁽⁸⁾ Rajendra Lall Mitra's dissertation on the Gatha dialect in No 6 of the Journal As. Soc., Bengal. 1854. and Muir's Original Sanskrit Texts, Vol., II., 1871, chap. I., sec: VII

জনেকে এবিষয়ে বিবিধ প্রবন্ধ রচনা করিয়া এই অভিপ্রার প্রকাশ ও অঙ্গীকার করিয়া গিয়াছেন।

শ্রীমান্ মিরর্ তাঁহার স্থপ্রমাণ-সিদ্ধ সমীচীন গ্রন্থাবদীর দিতীর থণ্ডের একটি প্রবন্ধ মধ্যে স্থপষ্ট প্রদর্শন করিয়াছেন, লাটন্-ভাষা বেরূপ পরিবর্তিত হইরা ইটালীর ভাষার পরিণত হইরাছে, সংস্কৃত-ভাষা-সন্তৃত পালি ও প্রাকৃত ভাষাতেও অনেক স্থলে অবিকল সেইরূপ শব্দ-পরিবর্ত্তন দৃষ্ট হইরা থাকে। এ বিষরটি বাঙ্গালা-দেশীর পাঠকগণের হৃদয়ঙ্গম করিয়া দিবার উদ্দেশে ঐ প্রবন্ধ হইতে তাহার করেকটি শব্দ এই প্রস্তাবসংক্রাস্ত অন্ত অন্ত বিষর সন্থলিত পশ্চাৎ উক্ত হইতেছে। পাঠ করিলে দেখিতে পাইবে।

সংস্কৃত ও লাটিন্ উভয় ভাষার শব্দের ক্র বা স্কৃ, প্রা পট্ প্রা ক্র, প্রা এই সমন্ত যুক্ত বর্ণ স্থানে পালি, প্রাক্ষ্ত ও ইটালীয় ভাষায় ও বা উ্ত্বা উ, প, বা ক্র এবং জ্জু বর্ণের জ্লেশ হয়। শব্দ-বিশেষের ক্, প, ল, ও ব্, বর্ণ লুপ্ত হইয়া পর-বর্ণের ও কলাচিং পূর্ব্ব-বর্ণেরও দ্বিভ হয়।

| শাটিন্ | ইটালীয় | সংস্কৃত | পালি বা প্ৰাক্কত |
|---------------------|----------|----------|--------------------|
| পর্ফেক্টস্ | পের্কেটো | मूख्नम् | মুজে |
| बद ्डेम् | জুণ্টো | ভক্তস্ | ভত্তো |
| ট্ৰে ক্টস্ | টু াটো | ভুক্তপ্ | ভূত্তো |
| র গ্ট স্ | বোটো | উপ্তস্ | উত্তো |
| কেপ্টাই ্বস্ | কাটিবো | ভৃষ্ঠিদ্ | তিন্তি · |

জহরের। এরপ নীচ ভাষী বলিরা নিশিত ইইরাছে। (১) যদি ঐ সমত ইতর ভাষা অপত্রষ্ঠ সংস্কৃত অর্থাৎ প্রাকৃতাদি দেশ-ভাষা হর, তাহা হইলে, ত্রাহ্মণ-রচনের পূর্বে অর্থাৎ সার্মিক্ সংস্কৃত উৎপত্র হইবার অত্রেই বৈদিক ভাষা রূপান্তরিত হইরা ক্রমশং গাখা, পালি ও প্রাকৃত ভাষা সমুদারের উৎপত্তি হর এরূপ খীকার করিতে হইডেছে। কিছু পরে দেখিতে পাওরা ঘাইবে, ত্রাহ্মণেরা এক সমরে দেব ও মুখুবা উভর ভাষাতেই কথোপকথন করিতেন। ইহা ত্রাহ্মণভাগের মধ্যে লিখিত আছে। সেই মুখুবা-ভাষা যদি প্রাকৃত হর, তাহা হইলে সেই ত্রাহ্মণ-বচনকেও উক্ত সিদ্ধান্তেরই পোবক বলিয়া অঙ্গীকার করিতে হর।

সারসিক সংস্কৃতে সন্ধি-সমাসের বেরূপ আড়বর, কথোপকথনে ব্যবহৃত ভাষার সেরূপ থাকা সন্থব নর। তাহা হইলে লোকের বোধগমাই হর না। বৈদিক সংস্কৃত সেরূপ নর; অভি সরল। হতরাং কথোপকথনে ব্যবহৃত হইবার নিতান্ত উপবৃক্ত। এ বিবেচনা অনু-সারেও, সারসিক অপেকা বৈদিক সংস্কৃতই দেশভাষা মরূপ প্রচলিত থাকা অধিকতর সন্থব ও সক্ষত।

⁽³⁾ Weber's History of Indian Literature, p 180.

| শাটন্ | ই টালী য় | সং স্কৃত | পালি বা প্ৰাক্তত |
|-----------------------------|----------------------|-------------------|------------------|
| এ দ্সম্প টস্ | আহণ্টো | তপ্তস্ | তত্ত |
| প্ৰে ক ্ট স ্ | পিয়াণ্টো . | বিক্লব স ্ | বিক্কবো |
| স ব্জে ক্টস্ | গেড্ৰে ট্রো | কু জ্বস্ | খুজে। |
| অব্ভেক্টস্ | ওড্ ন্তে ট্রো | অ জ্ঞ স্ | অজো |
| ডি উ স্ | ভেটো | যুক্তস্ | জুন্তো |
| फ ुक्टे न ् | क् टूडी | গিক্থ ক্ | ' স ত্থও |
| ফেুক্টস্ | ফ ু†ছৌ। | সক্তস্ | সত্তো |
| এপ্টস্ | আটো | মুপ্তম্ | হু ত্তো |
| দেপ্টেম্ | ে শট্টে | नूश्रम् | লুন্তে। |
| স ব্টস্∗ | স ট্টো | সপ্তমস্ | সত্তমে। |

উল্লিখিত লাটিন্ ও সংস্কৃত পদ সমূহের অন্তস্থিত অস্ভাগের স্থানে ইটালীর, পালি ও প্রাকৃত পদে ওকারের আদেশ দেখিতে পাওয়া যাইভেছে। এইরূপ বিভক্তি-পরিবর্ত্তনেরও সৌসাদৃশ্র লক্ষিত হইরা থাকে ।

জগতের কোন পদার্থই প্রাঞ্জিক নিয়মের বহিভূতি নয়। ইটালি ও আর্যাবর্ত্তে ভাষার পরিবর্ত্তন একরীপই ঘটিয়াছে। যখন ইটালি দেশে কথোপ-কথন-ক্রমেই ভাজার ঐক্লপ পরিবর্ত্তন সংঘটিত হয়, তথন আর্যাবর্ত্তেও ঐ কারণেই পালি ও প্রাক্তত শব্দরূপ উৎপন্ন হইন্নাছে বই আর কি মনে করিতে পারা বার ?

এক রূপ সংস্কৃত বে, ভারতবর্ষীর আর্য্যকুলের দেশ-ভাষা স্বরূপ প্রচলিত ছিল, প্রাচীন সংস্কৃতজ্ঞ পণ্ডিতেরাও তাহা স্বীকার করিয়া গিরাছেন। বাস্ক ও গাণিনি নিজ নিজ সমরের প্রচলিত সংস্কৃতকে ভাষা এবং বৈদিক সংস্কৃতকে অবধ্যার, ছন্দস ও নিগম প্রভৃতি বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন।

तेषामिते चितारः उपमार्थं भवन्ति इति । 'इव' इति भाषायाश्व चन्त्रध्यावश्व 'मप्रिरिव' 'इन्द्रः इव' इति । 'न' इति प्रतिषेधार्थीयी भाषायासुभयमन्त्र ध्यायम् ।

निक्का ।)। 8

সেই সমুদার নিপাত শব্দের মধ্যে চারিটি উপমার্থে ব্যবস্কৃত হয়। ভাষা ও অষ্ধ্যার (অর্থাৎ বেদ) উভয়েতেই ইব শব্দের এই অর্থ। অগ্নিরিব, ইস্ত্র-

লাটিব্ শব্দ গুলির প, ট, ল প্রভৃতি অকার সংযুক্ত হল বর্ণ সঙ্গায়ের উচ্চারণ সম্বিক

য়ব্দ লানিতে হইবে। সন্বেক্টস্ ও সেপ্টের্ শব্দের একারও ঐরপ রুব।

ইব, অর্থাৎ অগ্নিসদৃশ, ইন্দ্রসদৃশ। ন শব্দ ভাষার কেবল:এতিবেধার্থে প্রয়ো-জিত হয়। বেদে নিষেধ ও উপমা উভরার্থেই ব্যবহৃত হইরা থাকে।

এইরূপ পাণিনি ব্যাক্রণেরও 'ভাষারাং, সদবস্থাবঃ (০।২।১০৮।), ''স্থেচ ভাষারাং ''(৬।০।২০।), ''বিভাষা ভাষারাং''(৬।০) ১৮১।), ''প্রেথমারাশ্চ ধিবচনে ভাষারাং''(१।২।৮৮।) এই সমুদার স্ত্রে ভাষার উল্লেখ করিয়া ভাষা পদ সমুদার সিদ্ধ করা হইরাছে। সে সমুদার পদ এই, সেদিবান, অধ্যবিবান, উশ্রুবান, সমস্থঃ, কৃটস্থঃ, পঞ্চভঃ, তিস্ভিঃ, চতস্থিঃ, বৃষাং, আবাং, য্বরোঃ, আবরোঃ। এ সমুদারই সংস্কৃত পদ দেখা যাইতেছে। আর পাণিনি স্ত্রবিশেষে যে সমস্ত বৈদিক পদ সিদ্ধ করিরাছেন, তাহা ছন্দদ্, নিগম, মন্ত্রাদির প্রয়োগ বলিয়া উল্লিখিত হইরাছে *। এই সমুদার শব্দের অর্থ বিদ। অতএব যাস্কের ভার ভাঁহারও সময়ে বৈদিক পদ ও ভাষা পদ পরস্পর স্বতন্ত্র বলিয়া পরিক্রান্ত ছিল ইহা স্পাইই জানিতে পারা যাইতেছে।

উল্লিখিত ভাষা শব্দ দেশ-ভাষা-বাচক ভিন্ন আর কি হইবে ? অদ্যাৰধি ভারতবর্ষে দেশ-ভাষা ভাষা বলিয়া উক্ত হইয়া থাকে। ব্রজ্ঞভাষার অর্থ বুলাবন অঞ্চলের দেশ-ভাষা। বাঙ্গলা-দেশীয় ব্রাহ্মণ পঠিন্তেরা বাঙ্গলা গ্রন্থকে ভাষা-গ্রন্থই বলিয়া থাকেন। রামমোহন রায় মাঞুর্ক্যোপনিষদ ও বাঙ্গনের সংহি-ভোপনিষদের ভাষা-বিবরণ প্রচার করেন। সেই "ভাষা-বিবরণ" পদের অর্থ বাঙ্গলা অন্থ্যাদ বই আর কিছুই নয়। অতএব যথন যান্থ ও পাণিনি গ্রন্থে সংস্কৃত পদ সমুদার ভাষা-পদ বলিয়া উক্ত হইয়াছে, তথন তাঁহাদের সময়ে ভারতভূমিতে † সংস্কৃত ভাষা দেশ-ভাষা স্বর্মণ প্রচলিত ছিল বলিতে হইবে।

^{* &#}x27;বিভাষাজ্ঞলসি' (১৷২ ৷ ৩৬ ৷) ''জয়ম্মরাদীনি ছন্দসি' (১৷৪৷২০ ৷), ''বলে ঘসহবর-মশব্দহাদ্ব্চ্কুগমিজনিভাো লেঃ' (২৷৪৷৮০ ৷), ''বল্লে চর্বেী' (৪৷৪৷৯৬৷), ''সাট্যৈ সাট্য সাচেডিনিগমে'' (৬৷৩৷১১৩৷), "বচি ভূমু্যমক্ত্কুলোক্সরাগাং" (৬৷৩৷১৩৩৷), ''বা বপুর্বক্ত বিগমে'' (৬৷৪৷৯ ৷) এই সম্পার প্রে ছন্দঃ মন্ত্র, নিগমাদি বেদ-বাচক শব্দের উল্লেখ করিরা বৈদিক পদ সম্পার সিদ্ধ করা হইরাজে; বেমন অরম্মর, সাঢ়া, সাঢ়৷ ইভ্যাদি ৷ সারসিক সংস্কৃত্তে এই সক্ল শব্দের স্থলে অরোমর, সোঢ়া, সোঢ়া ইভ্যাদি প্রচলিভ আছে।

[†] অশোক রাজার অমুশাননপর যে করে ক প্রকার দেশ-ভাষার বিরচিত হর, তাহার একটি আর্থাবির্ত্তের পূর্বে থণ্ডে. অক্স একটি পেসোরার প্রদেশে এবং অপর একটি গুজরাট অঞ্চলে প্রচলিত ছিল। অত এব ঐ সমরের পূর্বেক কথোপকথন ক্রমে উৎপন্ন সেমন্ত ভাষার মুলীভূত সংস্কৃত্তও ভারতভূমির ঐ সমন্ত ভাগের দেশ-ভাষা ছিল যলিতে হইবে।

সিন্ধু নদের পশ্চিম প্রদেশের অনেকানেক গ্রাম নগরাদির সংস্কৃত নাম ছিল, ঐ অঞ্জের অধুনাত্তর কোন কোন ভাষা সংস্কৃত-মূলক বলিরা প্রতীয়মান হর, চীন-দেশীর তীর্থবাত্তীদের জন্ম বিবরণে ঐ অঞ্চল সংস্কৃত ভাষা প্রচলিত থাকিবার নিদর্শন লক্ষিত হুইরা থাকে। এই সমগ্র

महारहिका-कात्रक कार्या ७ सिक्ष इहे थाकात्र छात्रात्र थाना कित्राहिन।
सुखवाह्रक्पकानां या लोके जातयो विष्टिः।
स्त्रो क्छवाचसार्थ्यवाचः सर्वे ते दस्यवः स्मृताः॥

मञ्जारिका। > । १८॥

বান্ধণ, ক্ষত্তির, বৈশ্র ও শৃদ্রের মধ্যে বাহার। ক্রিয়া-লোপাদি দোবে সমাজ-বহিভূতি হর, তাহার। আর্য্য-ভাষী বা স্লেচ্ছ-ভাষী হউক, সকলেই দস্য বলিয়া উলিখিত হইরাছে।

নিক্লস্ত-পরিশিষ্টের ভাষ্যে উদ্ত একটি ব্রাহ্মণ-বচনে **লিখিত আছে,** ব্রাহ্মণেরা হুই প্রকার ভাষায় কথোপকথন করেন; দেবভাষা ও মনুষ্য-ভাষা।

ब्राह्मणा उभयीं वदन्ति या च देवानां या च मनुष्राणाम् । निकलः १७ विषेष्ठे-छाषा । ১ । ১ ॥

বোধ হয়, এই ব্রাহ্মণ-রচনার সময়ে ব্রাহ্মণেরা বৈদিক ও প্রচলিত সংস্কৃত অথবা প্রচলিত সংস্কৃত ও প্রাকৃত ভাষা * উভয়ই বাবহার করিতেন ইহাই নির্মাচন করা এই বচনের উদ্দেশ্য। ইতিপ্রেই (২৫৮ পৃষ্ঠায়) অস্তাম্ভ ব্রাহ্মণেও অসংস্কৃত-কথনের প্রুদিস আছে দৃষ্ট হইয়ছে। অত এব শেষোক্ত কয়ই সর্মতোভাবে সন্তাবিত বোধ হয়। যাহা হউক, ব্রাহ্মণেরা যে এক সময়ে সংস্কৃত-ভাষী ছিলেন, এই বচনে তাহার স্কুম্পষ্ট পরিচয় প্রাপ্ত হওয়া যাইতেছে। ভারতবর্ষীয় আর্ঘ্যসমাক্রের থেরপ অবস্থায় স্ত্রীলোক ও শৃদ্র-জাতীরেরা বেদ-রচয়িতা বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছে †, স্কৃতরাং যে অবস্থায় অপর সাধারণ সকলেই সংস্কৃতভাষী ‡ছিল, উল্লিখিত ব্রাহ্মণ-বচনটি তাহার উত্তরকালীন অবস্থার পরিচায়ক।

শ্রমণিকুসারে জানিতে পারা বাইতেছে, পূর্বকালে সংস্কৃতই ঐ প্রদেশে দেশ-ভাষা ছিল।
অধুনাতন মহারাষ্ট্রীর ভাষা সংস্কৃত-মূলক। স্তরাং পূর্বকালে উহার মূল-অরপ সংস্কৃত ভাষা
দেখানেও প্রচলিত ছিল বলিতে হর। অতএব এক সমরে আর্থাবর্ত সম্বলিত বহু-বিস্তৃত
ভূমি-থণ্ড-নিবাসী কোটি কোটি লোক একরূপ সংস্কৃত ভাষী ছিল ইহা নিঃসংখ্যে নির্দ্ধারিত
হইতেছে। উজ্জারনী, কাশ্মীর, কাশ্মকুজ প্রভৃতি নানার্থনে বিরচিত নাটক মধ্যে ব্যবকৃত
সংস্কৃত-মূলক প্রাকৃত ভাষাতে ঐ সিদ্ধান্তেরই পোষক্তা করিতেছে।

ভারতবর্ষীর পঝিতের। সর্বাপ্রকার সংস্কৃতকেই দেব-ভাষা বলির। বিশাস করেন।
 ভদকুসারে, এছলে উলিখিত মুকুর-ভাষা প্রাকৃত ভাষাই বেধি হয়।

[†] এই পৃত্তকের প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৭৩ পৃঠা ও বিতীর ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ১৪০ পৃঠা দেব।

[🚶] व्यर्था९ देवनिक मःकुछ ।

ভোৰদেব প্ৰণীত বলিয়া প্ৰচলিত সরস্বতীকণ্ঠান্তরণ নামক **অলহার-এ**ছের একটি স্লোকে লিখিত আছে,

केऽभूवबाद्यराजस्य राज्ये प्राक्ततभाषिणः।
कासे त्रीसाइसाङ्कस्य के न संस्कृतवादिनः॥

गत्रवडोकशिष्यगार शतिरुक्ता ३७ स्थाक।

স্বাদমণ্ডলে প্ৰথম রাজার রাজ্যে কে প্রাক্তত-ভাষী ছিল ? সাহসাঙ্কের স্বাধাৎ বিক্রমাদিত্যের সময়ে কে না সংস্কৃত কহিত ?

সরস্বতীকণ্ঠাভরণ-রচরিতা খৃষ্টাব্দের একাদশ শতাব্দীর লোক। এককালে বে, ছিন্দুরা সংস্কৃত ভাষার কথোপকথন করিত, তাদৃশ অপ্রাচীন সমরের পণ্ডিতেরাও ইহা বিখাস করিতেন।

নাটক-নাটকার ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিরাদি উচ্চ শ্রেণীস্থ ব্যক্তি সকলে সংস্কৃত-ভাষী এবং ক্রীলোক ও নিকৃষ্ট-শ্রেণীস্থ লোক প্রাকৃত-ভাষী দেখিতে পাওরা বায়। বে সময়ে ভারতবর্বে ঐ শাস্ত্র প্রবর্ত্তিত হয়, সে সময়ে ভাষা-বিষয়ে অনসমাজের ঐক্লপ অবস্থা বিস্তমান ছিল ইহা ব্যতিরেকে আর কিছুই মনে করিতে পারা বার না। তথনও উচ্চ শ্রেণীস্থ পুরুষেরা সংস্কৃত ভাষাতেই কথোপকথন করিতেন।

ু ভারতবর্ষে প্রাক্কত-ভাষা সমুদার বেমন প্রচঁগিত হইতে লাগিল, সেই সঙ্গে সংস্কৃত-ভাষা কথোপকথন হলে অপ্রচলিত হইরা আসিল। শুদাদি ইতর লাতীরেরা সংস্কৃত-কথনে অসমর্থ হইরা প্রাক্কভাষী হইরা উঠিল, কিন্তু গে সমরে ব্রাক্ষণাদি শ্রেষ্ঠ লাতীরেরা কিরংকাল সংস্কৃত ভাষী ছিলেন। রামারণের কোন কোন হলে হিন্দু-সমাজের এইরূপ অবস্থার পরিচর প্রাপ্ত হুরা বার। ইহাই উপক্রমণিকাংশের ৭৯ পৃষ্ঠার লিখিত হুইরাছে। আমরা ভারতবর্ষীর প্রাচীন আর্য্যভাষাকে বৈদিক সংস্কৃত ও প্রাচীন সংস্কৃত বলিরা উল্লেখ করি বটে, কিন্তু প্রথমে উহার এ নামটি বিদ্যমান ছিল না। সংস্কৃত শব্দের অর্থ পরিস্কৃত। বোধ হর, প্রাচীন আর্য্য-ভাষা বে সমরে পরিস্কৃত হুইরা সারসিক সংস্কৃত পরিণত হুইতে লাগিল, সেই সমরে উহার এ নামটি উৎপন্ন হর। রামারণে এই বিষয়ের স্কুন্সর নিদর্শন লক্ষিত হুইরা থাকে। সংস্কৃত্ত শব্দ কোন স্কুলে ভাষার গুণবাচক ও কোন স্থলে উহার সংজ্ঞা স্বরূপ উক্ত হুইরাছে।

संस्कृतं चेतुसम्पन्नमर्थवच यदुक्तवान्।
प्रच्यास्तदचः सर्व्यमसाद्याका कतां गतम्॥
स्नादकार्थः। ৮२ । ७॥

প্রহন্ত হেতৃ-সম্পন্ন সদর্থ-বিশিষ্ট সংস্কৃত (অর্থাৎ পরিষ্কৃত) বে সমন্ত বাক্য বলিলেন, মামার বাক্যের সহিত তাহার ঐক্য আছে:

संस्कृतं सक्षरं ऋष्णमर्थवद्यसंहितम् । स्वयभूरिति भगवान् प्रहृष्टेनासरासना ॥

युष्ट-काश्व। २०४। २॥

ভগৰান ব্ৰহ্মা স্বষ্টাস্তঃকরণে সংস্কৃত, মধুর, নত্র, অর্থ-বিশিষ্ট ধর্মসংযুক্ত বাক্য ৰলিলেন।

শ্রীমান্জ, মিয়র্ বিবেচনা করেন, এই ত্ই স্থলের সংস্কৃত শব্দের অর্থ পরিস্কৃত; ভাষা-বিশেষ বলিয়া বোধ হয় না।

ञ्चनत कारखन ১৮. मर्रात : ৮ स्नारक निधिष्ठ चाहि,

दु:खेन बुब्धे चैनां इनूमान् मार्तात्मजः ॥ संस्कारेण यथा हीनां वाचमर्थान्तरं गताम्। तिष्ठन्तीमनसङ्गरां दीप्यमानां खतेजसा ॥

সুন্দরকাও। ১৮। ১৮ ও ১৯॥

বাক্য থেমন সংস্কার-শৃক্ত (অর্থাৎ ব্যাক্রণ-ছষ্ট) হইরা অর্থান্তর প্রাপ্ত হইলে, কণ্টে ভাহার অর্থ-বোধ হয়, পবন-পুত্র হমুমান্ সেই রূপ কণ্টে সীভাকে জানিতে পারিলেন। ভিনি বেশভ্ষা-বিবর্জ্জিত চইয়াও কেবল নিজ ভেজ:-প্রভাবে দীপ্তি পাইতেছিলেন।

এ স্থলে সংস্কার শব্দ ভাষা-বিশেষের পরিচারক বা সংজ্ঞা-প্রতিপাদ্ধক নয়।
কিন্তু শ্রীমান্ বেবের্ ও মিরর্ বিবেচনা করেন, সংস্কৃত শব্দ বে, ক্রমে ক্রমে
উত্তর কালে সংস্কৃত-ভাষা-বাচক হইরা উঠে, উল্লিখিত সংস্কার শব্দে তাহাই
লক্ষিত হইতেছে। কোন স্থলে সংস্কৃত পদ পরিস্কৃত অর্থে, কোন স্থলে সংস্কার
শব্দ ব্যাকরণ-শুদ্ধি অর্থে এবং অপর কোন কোন স্থলে সংস্কৃত শব্দ ভাষা-বিশেষ
বাচক অর্থে প্রযোজিত দেখা বাইতেছে। অত্তরে ঐ নামটি ক্রমশ: যে
স্থাসিদ্ধ সংস্কৃত ভাষার সংজ্ঞা হইরা উঠিয়াছে, রামারণের মধ্যে ঐ সকল
স্থলে তাহারই নিদর্শন দৃষ্ট হইতেছে বোধ হয়। হয়তো উহার কোন কোন
স্থল রচিত হইবার সময়ে সংস্কৃত-ভাষার নাম সংস্কৃত বলিয়া প্রচলিতই হয় নাই।

রামায়ণ ও মহাভারত।

রামারণ, মহাভারত ও বিশেষতঃ পুরাণ-প্রচারের সহিত শিব, বিষ্ণু ও ভদীর শক্তিদের উপাসনা প্রচারিত হয়। এই তিন প্রকার গ্রন্থের মধ্যে রামারণ সর্বাপেকা প্রাচীন বলিরা প্রাসিদ্ধ আছে। বাস্তবিকও তাহাই বোধ হয়।

প্রথমতঃ। বে সময়ে আদিম রামায়ণ বিরচিত হয়, সেই সময়ে দক্ষিণাপথে অর্থাৎ ভারতবর্ষের দক্ষিণ থণ্ডে ব্রাহ্মণ ক্ষতিয়াদি আর্থা-জাতীয়দের বাস-বিস্তান্ত্র হয় নাই। তথন উহা অরণ্যময় ও স্থানে স্থানে অসভ্য অনার্য্য লোকের বাস-ভূমি ছিল #। রামায়ণে ঐ অরণ্য দণ্ডকারণ্য বলিয়া লিখিভ আছে।

ৰিতীয়ত:। ঐ গ্রন্থের কোন কোন স্থানে উল্লিখিত আছে, ব্রাহ্মণাদি আর্য্য-জাতীয়েরা সে সময়ে সংস্কৃত ভাষায় কথোপকথন করিতেন। অরণ্যকাণ্ডে লিখিত আছে, ইবল নামে এক রাক্ষস ব্রাহ্মণ-রূপ ধারণ পূর্বক সংস্কৃত কথা কহিরা বিপ্রগণকে নিমন্ত্রণ করিল।

धारयन् ब्राह्मणं रूपमिलुलः संस्कृतं वदन् । भामन्त्रयति विप्रान् स श्राष्ठमुहिष्य निष्ट[°]णः ॥ श्रद्यगुरु(७ । ১১ प्रर्त । ८७ क्षां रु ।

নিষ্ম-শ্বভাব ইবল ব্ৰাহ্মণ-ক্লপ ধাৰণ পূৰ্ব্বক সংস্কৃত কথা কহিয়া শ্ৰাদ্ধ-উদ্দেশে ৰিপ্ৰগণকে নিমন্ত্ৰণ কৰে।

স্থারকাণ্ডে নিধিত আছে, হন্থান্ লঙ্গাপুরী প্রবেশ পূর্বক সীতার সহিত সাক্ষাৎকার বাসনায় ভাবিতেছেন,

> यहं श्वातितत्रसे व वानरस विशेषतः । वाचचीदाहरिष्यामि मातुषीमिह संस्कृताम् ॥ यदि वाचं वदिष्यामि हिजातिरिव संस्कृताम् । रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति ॥ यवस्यमेव वक्तव्यं मातुष्रां वाक्यमयवत् । मया सान्त्रयितुं शक्या नान्यथेयमनिन्दिता ॥

স্থারকাণ্ড। ৩০ সর্গ। ১৭, ১৮ ও ১৯ শ্লোক।

त्रात्रात्रत्व निर्मेख वानत्र ७ त्राक्तन के क्रण क्रमार्थ लाक वह क्रांत्र किछू है नत्र ।

আমি কুদ্রকার, তাহাতে আবার বানর, তথাচ মহুবোর স্থার সংস্কৃত কথা কহিব। বদি আমি বিজ্ঞানের প্রার সংস্কৃত ভাষার কথা কই, তাহা হইলে জানকী আমাকে রাবণ বিবেচনা করিয়া ভীত হইবেন। অতএব অপর মহুবোর প্রায় অর্থ-সঙ্গত (সংস্কৃত) বাক্য বণাই আমার অবশ্য কর্ম্বব্য, তম্ভির অক্ত কোন রূপে ইহাঁকে সাম্বনা করিছে পারিব না।

খু, পু, ২৩৩ অবধি ২২৩ পর্য্যন্ত অশোক নামে একটি স্থপ্রসিদ্ধ রাজা ভারতবর্ষের উত্তরশতে রাজত্ব করেন। তিনি বৌদ্ধর্ম অবলম্বন করেন। এবং গিরনার, পেশোরার, দিলি, প্ররাগ, উড়িয়া প্রভৃতি নানাস্থানে আপনার ধর্ম ব্যবস্থা ও রাজ্য-শাসন-প্রণালী সংক্রোস্ত কতকগুলি অমুশাসনপত্র থোদিত ক্ষাইয়া যান। ঐ পত্রপ্তলি একরপ পালি ভাষায় লিখিত। সংস্কৃত ভাষা ক্রমশ: রূপাস্তরিত হইরা ঐ ভাষাটি উৎপন্ন হয় *। এরূপ ঘটনা কিছু একে-वादब्रहे चित्रिक भादब ना । हेहा मुल्लब्र हहेटक ब्यानक कान बाकीक हरेबाहिन তাহার সন্দেহ নাই। অভ এব তাঁহার সময়ে অর্থাৎ খু, পু, তৃতীয় শতাকীতে ও স্থতরাং তাহার পূর্বেও ঐ ভাষা প্রচলিত অর্থাৎ দাধারণ লোকের কথোপকথনে ব্যবস্থৃত ছিল। ক্লামায়ণে উল্লিখিত সংস্কৃত ভাষায় কথোপকথন-প্রসঙ্গ হিন্দুসমাজের তদপেক্ষা পূর্বতন অবস্থার পরিচায়ক বলিতে হয়। যদি ঐ গ্রন্থ-রচনার সমরে পালি ভাষা প্রচলিত থাকিত, তাহা হইলে হনুমান অপর মমুবোর প্রার পালি-ভাষায় কথা কহিতে ক্লতসংকর হইলেন এইরূপই লিখিত হইত। এই যুক্তি অমুসারে, আদি রামায়ণ থানি খু, পু, তৃতীর এবং বোধ হয় চতুর্থ শভান্দীর পূর্ব্ব-বিরচিত বলিয়া বিবেচিত হইতে পারে। কত পূর্ব্ব তাহা নিশ্চয় করা স্থকঠিন।

তৃতীয়তঃ। সে সময়ে বৈদিক ভাষা ক্রমশঃ পরিবর্তিত হইরা সংস্কৃত অর্থাৎ পরিস্কৃত হইরাছিল বটে, কিন্তু তথনও সর্কতোভাবে সাহিত্যের ভাষার পরিণত হয় নাই। রামারণের ভাষা শূক্রক কালিদাসাদির অপেকার অনেক প্রাচীম। ভাহাতে সারসিক প্রয়োগ-বিরুদ্ধ অনেকানেক পদ দেখিতে পাওয়া যায়। পশ্চাৎ উদাহরণ-স্বরূপ কতক গুলি প্রদর্শিত হইতেছে, পাঠ করিলেই জানিতে পারা বাইবে।

^{*} Essai sur le Pali par Bournouf et Lassen.

৮৮ ভারতববীয় উপাসক-সম্প্রদায়।

| সর্গ | | শ্লোক _. | ••• | সারসিক-প্রয়োগ-বিরুদ্ধ | ••• | সারসিক |
|------------|-------------|--------------------|-------|--------------------------|------|----------------------|
| বাশকাণ্ড | | | | | | |
| > | ••• | be | ••• | প্রমূদোদ | ••• | थ्रमूप्त । |
| ર | ••• | > | ••• | অনপায়িনম্ | ••. | অনপারি। |
| ર | ••• | \$8 | ••• | করুণবেদিশ্বাৎ | ••• | ক রুণাবেদিত্বাৎ |
| ર | ••• | २२ | ••• | হন্তাৎ | ••• | হতবান্ । |
| 8 | ••• | >9 | ••• | প্রশন্তবো | ••• | প্ৰশংস্তব্যৌ। |
| > | ••• | २ऽ | ••• | গেচ্যেতাং | ••• | স-উচ্যতাং। |
| >• | <i>.</i> :. | >@ | ••• | আশ্রেমপদ: | ••• | আশ্রমপদং। |
| >6 | ••• | > | ••• | পুত্রিস্নাং | ••• | প্ৰীয়াং । |
| >9 | ••• | ৩৪ | ••• | অক্য়ন্ | ••• | व्यक्तियन् । |
| 74 | ••• | २৮ | ••• | শিশ্বিদ্ধনঃ | ••• | नऋौवर्कनः। |
| 6 ¢ | ••• | २५ | ••• | ভ তোখার | ••• | ভত-উত্থায়। |
| >> | ••• | ٤5 | ••• | ব্যধী দত | ••• | ব্যৰীদৎ। |
| २> | ••• | ۲ | ••• | করিষ্যেতি | ••• | করিষাইভি। |
| २> | ••• | ১৩ | ••• | প্রশাসতি | ••• | প্রশান্তি। |
| २> | ••• | >9 | ••• | হরাক্রামান্ | ••• | হরাক্রমান্। |
| ૨૭ | ••• | • | • • • | তপ্য ভাং | ••• | তপভাং । |
| २० | ••• | • | ••• | ৰদত্তে | ••• | বসন্তি। |
| २७ | | ₹• | | অভিরঞ্ন ন্ | ••• | অভ্যরঞ্যন্। |
| २७ | ••• | २१ | ••• | অভিপূত্ত য়ন্ | ••• | অভ্যপ্ৰয়ন্। |
| ৩৭ | ••• | >> | ••• | অভিজা রত | ••• | অভ্যক্ষায়ত । |
| % | ••• | २७ | | সমভিজায়ত | ••• | সমভ্য জারত । |
| るぐ | ••• | 28 | ••• | অসু গচ্ছ থ | ••• | অমুগচ্ছত। |
| 8• | ••• | > | ••• | করিষ্যাম | ••• | করিব্যামঃ। |
| 8• | ••• | >> | ••• | নিব র্ন্ত ত | ••• | নিবর্দ্তধ্বং। |
| 89 | ••• | প্রথমে | ••• | সম্পাসভ | ••• | সমূপাত্তে ৷ |
| 80 | ••• | • | *** | তস্তাবলেপনং | ••• | তভাষ্বলেপনং। |
| 80 | ••• | 2¢ | ••• | অমূ র ক ৎ | ,••• | অম্ব ত্রত ়। |

| সর্ব | | শ্ৰেক | সারদিক-প্রয়োগ-বিরুদ্ধ | ••• | শ্বসিক |
|----------------|-----|------------|------------------------|-----|---------------------------|
| 85- | ••• | \$ | উ वा | ••• | উবিশা। |
| 8 br | ••• | >> | मृ अ | ••• | षृष्टे । |
| | | | অযোধ্যাকাণ্ড। | | |
| > | ••• | ૭ | শ্বরভাং | ٠ | অশ্বতাং। |
| ь | ••• | २७ | সপত্নি | ••• | সপত্নী। |
| > 5 | ••• | 42 | व्यञ्जि भूषी | ••• | অভিধ্যাশ্বস্তী। |
| • १ | ••• | ь | পছতী | ••• | গচ্ছী। |
| ૭૨ | ••• | ٤> | মেশগীনাং | ••• | মেখলিনাং। |
| ৩২ | ••• | 8 \$ | জিজ্ঞা দিতুং | ••• | জ্ঞাতুং। |
| 83 | •• | ৯ | • নপায়য়ন্ | ••• | নাপারয়ন্। |
| ¢> | ••• | ٧ | ততোবাচ | ••• | ন্তত উবাচ। |
| ¢٤ | ••• | २৮ | বৎস্থামহেতি | | বৎস্থামহ ইতি। |
| ¢২ | ••• | 92 | প্রণমৎ | ••• | প্রোপমং। |
| 46 | ••• | ৩১ | আনুয়ামাস , | ••• | আনিক্তে। |
| e 6 | ••• | > 6 | অভিবাদয়ন্ | | অভ্যবাদয়ন্। |
| હુ | ••• | # 2 | উদ্ধরং | ••• | উ षधत्रः । |
| હ 9 | ••• | ર હ | সংবদত্তোপতিষ্ঠত্তে | সংব | मञ्जूष िष्ठेरस । * |

অনেক স্থলে ছন্দের অমুরোধে এরপ অশুদ্ধ-পদ-প্রয়োগ আবশুক ইইরাছিল মনে হইতে পারে, কিন্তু কালিবাসাদির সমরে কোন বিষয়ের অমুরোধেই এরপ ব্যবহার চলন-সহ হইতে পারিত না। অতএব, এরপ অসারসিক-পদ-ব্যবহার সংস্কৃত ভাষার একরপ পূর্ববিস্থার পরিচায়ক বলিয়া প্রভীয়মান হয়।

[°] বে সমরে আমি বাল্যাক রামারণ দেখিয়া বাই, সে সমরে কুরোপি উহা সমগ্র মৃত্তিত হর নাই। প্রীমান গোরেশিও সমন্ত রামারণ মৃত্তিত করিতে প্রবৃত্ত হইরাছিলেন, কিন্তু তথন তাহা সমাপ্ত হইলা উঠে নাই। তাহার অনেক পূর্বে প্রীরামপুরে প্রীমান কেরিও মার্শমেষ ছই কাও ও তুতীর কাবেরও কিরদেশ প্রচার করেন, এবং তাহার বিংশতি বৎসর পরে হবিখাত ওমেন পতিত শ্রীমান শ্রেগেল প্রথম ছই কাও মাত্র প্রকাশ করিয়া বান। এই নিমিন্ত আমি একথানি হত্ত-লিখিত রামারণ পাঠ করিলা বাই। তাহা হইতে অক্ত অক্ত বিবরের সহিত সার্বিদ-প্রমাণ-বিকল্প কতকওলি পদ লিখিয়া রাখি। ভাহারই কিরদংশ এছলে উদ্ধৃত হইল। এখন আর মানারূপ মৃত্তিত পৃত্তকের সহিত ঐক্য করিয়া দেখিতে পারিলাম না। রামারণের ভিন্ন তিয় ভিন্ন পৃত্তকে পাঠ-ভেদাদি নানা বিবরের বিভিন্নতা দৃষ্ট হইয়া খাকে। অতএব উলিখিত পদগুলি বে সমন্ত রোকের অক্তর্গত, রামারণের পৃত্তক বিশেবে তাহার পাঠান্তর, সংখ্যান্তর বা অক্ত কোন রূপ ব্যত্তিক্রম-বটনা অসত্তব নয়।

চতুর্থত:। রামারণ প্রায় অকুটুপ্ নামক প্রাচীন সহজ ছন্দে বিরচিত। উহার ভাষা সরল, রীতি-শুদ্ধ এবং সমুচিত বিভক্তি-বিশিষ্ট। উহাতে নৈযধাদি আধুনিক সাহিত্যের স্থায় দীর্ঘ ছন্দ, ক্রতিমভার, উৎকট বর্ণন এবং শব্দ ও অকু-প্রাসের আড়ম্বর নাই। এই কর লক্ষণে উহাকে প্রাচীন বলিয়া পরিচয় দিতেছে।

পতঞ্জি মহাভাষ্যের মধ্যে রামায়ণের বুদ্ধ কাণ্ডের ১২৮ সর্গের একটি শ্লোকার্দ্ধ উত্ত করিয়াছেন। শ্লোকটি এই

कल्याणी वत गाथेयं स्तीकिकी प्रतिभाति माम्। एति जीवन्तमानन्दो नरं वर्षेप्रतादिष ॥

পাণিনি। ৩। ১। ৬৭ সুত্রের ভাষা।

পতঞ্জলি পাণিনি স্ত্তের তৃতীর অধ্যারের প্রথম পাদের সাভষ্টি স্ত্তের ভাষো এই শ্লোকের শেষাদ্ধ উদ্ভ করিয়াছেন। অভএব তাঁহার সময়ে অর্থাৎ খু, পু, দিতীয় শতালীতে বালাকি-রামায়ণের প্রাচীনতর অংশ বিস্তমান ছিল বলিতে হয়। কিন্তু একটি কথা আছে। ঐ শ্লোকাদ্ধিটি একটি গাথা। গোরেশিও কর্তৃক প্রকাশিত রামায়ণে উহ'পুরাতন গাথা বলিয়াই উল্লিখিত হইয়াছে।

पौराणी चैव गाथेयं लौकिकी प्रतिभाति मे।

युक्क वार्थ। ১১० मर्ग। २ (झाक।

সতেএৰ ঐ গাথাটি পূৰ্বে প্ৰচলিত ছিল; বালা:কি ও প্ৰঞ্জি নিজ নিজ গ্ৰেহে স্বতন্ত্ৰ উদ্ত ক্ৰিয়া লইয়াছেনে ইহা অসম্ভব নয়।

রামারণের ভাষার প্রাচানস্থ, তন্মধ্যে সংস্কৃত কথা-প্রচলনের নিদর্শন *, তাহাতে লিখিত আর্ঘ্য কুলের বাস-সীমা এই করেকটি বিষয় পর্য্যালোচনা করিয়া দেখিলে প্রাণাদি পুর্বোলিখিত ত্রিবিধ গ্রন্থের মধ্যে রামারণ সমধিক প্রাচীন বলিয়া প্রতীয়মান হইয়া উঠে।

প্রীক্ দৃত মিগেন্থিনিজ্বে সময় মহারাজ চক্রগুপ্তের সভায় আগগনন করেন, দে সমরে অর্থাং খু, পু, চতুর্থ শতাক্ষীতে সহমরণ-গমনের প্রথা পূর্ব্ব বিক্তিম্পধ্নেশ পর্যান্ত প্রবল রূপে প্রচলিত ছিল। সমগ্র রামায়ণে এ বিষয়ের

^{*} কিছিল্যাকাণ্ডে রামচন্দ্র হনুমানের অপশন্ধ-শৃন্ত, ব্যাকরণ-শুদ্ধ, বিশুদ্ধ শিষ্টালাপের যেরপ প্রশংস। করেন লিখিত-আছে(ও সর্গ, ২৮-৩২ দ্বোক), তাহাও পাঠ করিলে, সেই অংশ রচিত হইবার সময় সংস্কৃত-ভাষা প্রচলিত ছিল এইরপ প্রভীয়মান হইডে থাকে।

একটি উদাহরণও দেখিতে পাওয়া বায় না। বদি ঐ গ্রন্থ-রচনার সময়ে ঐ প্রথা বিদামান থাকিত, তাহা হইলে দশরথের মৃত্যু ঘটনার বিবরণ খলে তাহার কোন না কোন মহিষী সহগামিনী বলিয়া বর্ণিত হইতেন *। অত এব ঐ মহাকাব্য খু, পু, চতুর্থ শতাকীর সমধিক পূর্বেবিরচিত হয় এ কথা সর্বতো-ভাবে বিবেচনা সিদ্ধ বলিতে পারা যায়।

ডিয়ন ক্রিসদ্টোমস্ প্টাবের প্রথম শতাকীর মধ্য ভাগে করাগ্রহণ করেন। ওঁহোর সময়ে এইরাপ লিখিত ছিল যে, ভারতব্যীয়েরা হোমর্-ক্লত কাব্যের অফুবাদ বা অফুকরণ-স্বরূপ মহাকাবা-বিশেষ কীর্ত্তন করিয়া থাকেন। শ্ৰীমান লেসেন্ প্ৰদৰ্শন করিয়াছেন, এই কথাগুলি মিগেফিফিজের প্রস্থ হইতে সকলিত বা অমুবাদিত। হোমর-প্রণীত ইলিয়ড ও অডিসি কাবোর সহিত রামায়ণ ও মহাভারতের অনেকাংশে সৌসাদৃশ্র আছে †। পূর্ব্ব কালে লোকে রামায়ণ গান ও কীর্ত্তন করিয়া বেড়াইত ইহা ঐ গ্রন্থেই স্থুস্পাষ্ট লিখিত আছে 🛊 ৷ অতএব তাঁহার সময়ে অর্থাৎ খু, পু, চতুর্থ শতান্দীতে ও তাহার शृत्स थे इरे मश्कुष महाकारवात मून डेलाशान প্রচলিত ছিল বলিয়া था छी प्रमान वस ह ; जार और कड़ा स्थम कड़ि विम्नू-त्मव छारक दवकम् ख হরকিউলিজ বলিয়া উল্লেখ করেন, সেইরূপ, এঙ্গানে ঐ এই ভারতব্রীয় মহা-কাব্যকেও হোমরের অমুকরণ বা অমুবাদ বলিয়া কীর্ত্তন করিয়া যান। নতবা হিন্দুর। গ্রাক্ কাব্যের অনুবাদ করিয়। রামায়ণ ও মহাভারত প্রস্তুত করিয়াছেন এ কথাটি কোন রূপেই বৃক্তি-সিদ্ধ নয়। ফলত: ঐ চুই গ্রীক্ গ্রন্থকারের উল্লিখিত কথাতেও বামায়ণকে খু, পু, চতুর্থ শতাব্দীর পূর্ব্ব-রচিছ পুত্তক বলিয়া সাক্ষ্য দান করিতেছে।

ৰখন মন্ত্ৰংহিতা-বচনার সময় পর্যান্ত শিব ও বিফুর মহিমা পরিবদ্ধিত

^{*} অবোধ্যাকাণ্ডের ৬৬ সর্গের ১২ ক্লোকে লিখিত আছে, কৌশলা। কহিতেছেন, আজি আমি বামীর এই শরীর আলিজন করির। অগ্নি-প্রবেশ করিব। এই কথাটি কৌশলাার প্রবল শোক-বর্ণন হওবাই সন্তব। বলি বাত্তবিক সহমরণ-সূচক হইত, তাহা হইলে, হর, কৌশলাার প্রকৃত অনুমরণ-বৃত্তাপ্ত, নর, সে প্রসঙ্গের সমধিক আন্দোলনের বিষয় বণিত থাকিত। বরং বানর অর্থাৎ আনার্যা বর্বের লোকের মধ্যে ঐ প্রথা প্রচলনের স্থানা বৈধিতে পাঁওরা বার। (কিছিলা) ২১। ১৩—১৬)।

t Indian Wisdom by Monier Williams, Lecture XIV-1941

[‡] বলক ও। ৪ সর্। ৮ ও ২৮ লোক।

[§] Indian Wisdom by Monier Willams, P. 316. পেব।

হর নাই +, তথন রামায়ণোক্ত দে বিষয়ের কথা গুলি ঐ সংহিতা অপেক্ষা অংশাচীন ইহা সহজেই স্বীকার করিতে হয়। রামায়ণে নমুর নাম সুস্পষ্ট নিখিত ও মমুসংহিতার শ্লোক প্রায় অবিকল উদ্ধৃত হইরাছে।

सूयते मनुना गीती स्नोकी चारित्रवस्नकी।
ग्रहीती धर्माकुशके स्तथा तच्चरितं मया॥
राजभिष्टे तदण्डास्य काला पापानि मानवाः।
निर्मेकाः स्वर्गमायान्ति सन्तः सुक्ततिनो यथा॥
शासनाहापि मोचाहा स्तेनः पापात् प्रमुच्यते।
राजा लशासन् पापस्य तदवाप्रोति किल्विषम्॥

किकिता। ১৮। ७०, ०১ ७ ७२।

ইহার মধ্যে শেবোক্ত জুইটি বচন মনুসংহিতার ৮ম অধ্যায়ের ৩১৬ ও ৩১৮ লোক।

পশ্চাৎ দৃষ্ট হইবে, রামারণের প্রাচীনতর ভাগে বৈদিক ধর্মই প্রধান ও প্রচলিত ধর্ম বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে। ঐ গ্রাছে বৌদ্ধ ধর্মের নিদর্শন অতীব বিরল। শ্রীমান্ লেদেন উহার প্রাচীনতর ভাগ "বৌদ্ধ-ধর্ম-প্রচারের পূর্বাতন বলিয়া বিবেচনা করিয়াছেন। যদিও উহার অন্তর্গত নিম্ন-লিখিত বচনে বৃদ্ধ-দেবের প্রসঙ্গ আছে, কিন্তু সেটি প্রাক্তিথ বচন বোধ হয়।

ययाचि चौर: स तयाचि बुद्धस्तयागतं नास्तिकमत विदि । अत्याशाकाछ। ১०३ मर्ग। ७८ (अ) क

চোর যেরূপ, বৃদ্ধও সেইরূপ, নাজিককেও দেইরূপ জানিও।
বদি এই বচন আদিম রামারণের অন্তর্গত হর, তাহা হইলে ঐ গ্রন্থ
পুঠান্বের ষষ্ঠ বা পঞ্চম শতাকার অপেক্ষার অপ্রচীন হইরা পঞ্চে। কিন্ত ইয়্রোপীয় প্রধান প্রধান সংস্কৃতক্ত পণ্ডিত ঐ বচনটি প্রক্ষিপ্ত বদিয়া বিবেচনা

করিয়াছেন।

শান্তকারদের মতে অত্যে রাম, পশ্চাৎ বৃদ্ধাবতার। অতএব গ্রন্থকার সেই রামের উক্তির মধ্যে বৃদ্ধের নাম সন্নিবেশিত করিবেন ইংগ কোন রূপেই সঙ্গত ও সন্তব নর। জাবালি রামচক্রকে চার্কাক-মত উপদেশ দেন। তাহার প্রত্যন্তর-স্থলে বুদ্ধের প্রতি ,বিধেব-স্চক্ট্র বাক্য প্রমোগ করিবার প্রমোজন দেখিতে পাওয়া যায় না। অভএব ঐুবচনটি প্রক্রিপ্ত হওয়াই সম্ভব *।

আদিম রামারণ:সমধিক প্রাচীন হইলেও অপরাপর অনেক, সংস্কৃত গ্রন্থের স্থার, ইহাতেও উল্লিখিতর প: নৃতন নৃতন টুবচন প্রক্রিপ্ত হইগাছে তাহার সন্দেহ নাই †:। এই জন্ম, এই মহাকাব্যের ভিন্ন ভিন্ন প্রতকে ভূরি ভূরি পাঠ-ভেদ

* ছলান্তরের লোক-বিশেষও বৌদ্ধ-ধর্ম-প্রচারের প্রিচারক বোধ চইতে পারে। আদি-কাজের চতুর্দ্দশ সর্গের বাদশ লোকে শ্রমণ শব্দ আছে। ঐ শব্দের অর্থ বৌদ্ধ-সন্যাসী।

> ब्राह्मणा भुञ्जते नित्यं नायवन्त्रय भुञ्जते । तापसा भुञ्जते चापि जनसायैव भुञ्जते ।

ব্রাহ্মণ, শৃত্র, তপৰী ও শ্রমণগণে নিরস্কর ভোজন করিতে লাগিল। কিন্তু রামাসুজ এই শ্রমণ শক্ষ বিকল্পোসয়াসিমাত্র-বাচক্বলিয়া ব্যাখ্যা করিরাছেন।

यहा श्रमणपदं सत्रासुर्यास्यम्।

वान, ১৪, ১২ প্লোকের টীকা।

† রামারণে যে মধ্যে মধ্যে নৃত্তন লোক ও সর্গ-বিশেষ সল্লিবেশিত .হইরাছে এটি একটি প্রসিদ্ধ প্রধা। টাকাকারেরাও তাহা খীকার করিরাছেন ও অনেকানেক বচন ও কোন কোন সর্গ প্রক্রিপ্ত বলিরা অসীকার করিরা গিরাছেন; বেমন আর্ণা, ব্দ, ২৩; ৩১স, ৩৩ ও ও ; কিছিল্লা, ব্দস, ২৪ ও ২ব; হন্দর, ১স, ৯৭ ও ৯৮; ২৪স, ৪২; ২৭স, ২০; ২৭স, ৩১ ও ৩২; বেস, ৯; বেস, ১৮ ও ১৯ ইত্যাদি। রামচন্দ্রের অলৌকিক অথবা দেব সদৃশ-ওণ-বর্ণনাত্মক কতকগুলি লোক ও তারিশিষ্ট করেকটি সর্গ প্রক্রিপ্ত বলিরা কতকাদি টাকাকার তাহার খ্যাধ্যা করেন লাই।

वस्तुतस्तु एतेवां श्लीकानां तहतां सर्गाणाच प्रचिप्ततात् न ते प्रमाणभूताः चतएव ते सर्गाः कतकादिभिक्षीर्येन च न व्याख्याताः।

আরণাকাও। ৩১ সর্গের ৩৩ ও ৩৪ লোকের রাম।মুধ-কৃত টীকা (১)।

বস্ততঃ এই সমন্ত লোক ও তদিশিষ্ট সৰ্গ সমুদায় প্ৰক্ৰিপ্ত। অতএব সে সমন্ত প্ৰামাণিক নয়। এই হেতু তীৰ্থ ও কডকাদি পণ্ডিতেরা তাহা ব্যাব্যা করেন নাই।

রামারণের প্তক-বিশেষে বে নৃতন নৃতন রোক রচিত হইরা একিও চ্ইরাছে, ইছাও টাকাকারেরা স্থানে স্থান দীকার করিয়া গিরাছেন।

⁽১) রাষাক্ষ বে প্রকার রোমারণের চীকা করেন, এই প্রবৃদ্ধে ঐ প্রস্থ-সম্মীর প্রমাণ ভূনির অধিকাংশ ভাহা:ভ্টভেই গৃহীত হুইয়াছে ।

ও মত-ভেদ দেখিতে পাওয়া ন্যায়। এক দেশ-প্রচণিত রামায়ণের সহিত অন্ত দেশ-প্রচণিত রামায়ণের সর্বতোভাবে : ঐক্য নাই। গৌড়ীয় রামায়ণের দহিত পশ্চিম-দেশীর রামায়ণের এবং ঐ উভ্যের সহিত দক্ষিণ-দেশীর রামায়-পের বিশেষ রূপ বিভিন্নতা দৃষ্ট হইয়া থাকে। কেবল এই তিন প্রকার নয়, পাঠ-ভেদ ও শ্লোকভেদাদি বশতঃ বহুতর প্রকার রামায়ণ উৎপন্ন হইয়া পড়ি-য়াছে। এই গ্রন্থ এখন ষেরূপ দেখিতে পাওয়া যায়, সহস্র বা তুই সহস্র বংসর পূর্বেক অবিকল সেইরূপ ছিল এমন বলিতে পারা যায় না।

শ্রীমান্ বেবের তাঁথার রামারণ-বিষয়ক প্রবন্ধ মধ্যে লিখিরাছেন, কবিরামারণ প্রাচীন বালাকি-রামারণের অনুবাদ নর। ভারতবর্ষের দক্ষিণ খণ্ডের তামিল, তেলগু কর্ণাট, মলরল প্রভৃতি ভাষার বালরামারণ, সংগ্রহ-রামারণ ও প্রসন্ধনারণ নামে কতকগুলি রামোপাখ্যান প্রচলিত আছে। কোন খানি ৭ সর্গ কোন খানি ২১ সর্গ ও কোন খানি ১০৬ শ্লোক মাত্রে সম্পূর্ণ। কবিরামারণও সেইরূপ একখানি রামোপাখ্যান মাত্র।—On the Ramayana by Dr. Albrecht Weber, translated from the German by the Rev. D. C. Boyd M. A., 1873, pp. 97—99.

কতকগুলি হিন্দু ভারতবর্ষ পরিত্যাগ পুর্বক যব ও বাণিদীপে গিয়া অধিবাস ক্ষেন। বালিদীপে হিন্দু-ধর্ম ও হিন্দু-শাস্ত্র অক্সাপি বিদ্যমান রহিয়াছে †। তথায় কবি-ভাষায় বিরচিত এক থানি রামায়ণ আছে। ভারত-বর্ষের বাল্মাকি রামায়ণ যেরূপ কাণ্ডাদি বিভাগে বিভক্ত, বালিদীপের বাল্মীকি

चत्र मध्ये साखं सुवनमित्यादयी वहनः श्लीका रामानुजसम्प्रदायपुक्तकेषु दृश्यन्ते ते प्रचित्रा इति कतकादयीऽच्ये च।

হুন্দর কাও। ২৭ সর্গের ২৮ লোকের রামাত্রন্ধ-কৃত চীকা।

ইহার মধ্যে 'সাতং ভ্রনং' ইত্যাদি বহুসংখাক শ্লোক রামাকুক্ত-সম্প্রাই প্রক্রি পুত্তকে দৃষ্ট ইইরাখাকে। কতকাদিও অক্ত অক্ত পতিতের মতে, সে সমুদায়ই প্রক্রিপ্ত।

[•] যব অর্থাৎ বাছাপ এই নামটি সংস্কৃতাসুযারী। প্রীক্ গ্রন্থকার টলেমি প্রীক্ ভাষার ঐ দীপের নাম বেরপ লিখিল। পিলাছেন, তাহারও অর্থ অবিকল ববছীপ। তিনি ধৃষ্টাব্দের বিতীয় শতাব্দীর প্রথমছেন বিদ্যান ছিলেন। অতএব হিন্দুরা তাহার পূর্পে ঐ দীপে প্রমন্দরাতে, উহার ঐ নামটি প্রচলিভ হইরাছে বোধ হর। রামারণেও যবদীপের প্রসক্ষ আছে। (কিছিল্যা কান্ড।৪০।৩০।) অতএব হিন্দুরা তথার গমন করিবার পরে ঐ নামটি তাহাতে সরিবেশিত হর বলিতে হইবে।

ተ এই পুস্তকের অন্তর্গত শৈষ-সম্প্রদার-বিষরপের ১৩ - ১৬ পৃঠা দেখা

রামায়ণ সেরপ নয়। তাহাতে ক্রমাগ ত সমগ্র পুস্তক এক এ বর্ণনা করিরা করেকটি সর্গে বিভাগ করা হইয়াছে। উত্তরকাণ্ড উহার সহিত সংযোজিত নাই; ঐ কাণ্ড থানি বাল্মীকি-রুত একথানি স্বতন্ত্র পুস্তক বলিয়া প্রচলিত আছে। বালকাণ্ডের অন্তর্গত গলাবতরণ ও সাগর বংশ বর্ণন প্রভৃতি অনেকানেক উপাধ্যানও বালিমীপের রামায়ণে সন্নিবেশিত নাই *। যে সময়ে হিন্দুরা ঐ প্রাচীন গ্রন্থ সলে লইয়া যবন্ধীপে গমন করেন, সে সময়ে ভারতবর্ণীর রামায়ণের ঐ রূপ অবস্থাই বিদ্যমান ছিল এই কথা ব্যতিরেকে আর কি বলিতে পারা যায় ? উত্তরকাণ্ড সে সময়্ব পর্যাস্ত উহার অন্তর্নিবেশিত হয় নাই। ঐ কাণ্ড অপেক্ষাকৃত অপ্রাচীন বোধ হয়। টীকাকারেরাও উহার অন্তর্গত অনেক গুলি স্লোক প্রক্রিয় বিলয়া তাহার ক্রিণা করেন নাই।

হিন্দুরা অত্যে যবনীপে, পশ্চাৎ বানিদীপে গিয়া বাস করেন। চীন-দেশীয় তীর্থ-বাত্রী ফাহিয়ন্ ভারতবর্ষ পরিভ্রমণ পৃশ্ধক খুষ্টান্দের পঞ্চম শতান্দীয় প্রারম্ভ ঐ যবদীপে গিয়া উপ'স্থত হন এবং তথায় হিন্দুধর্ম প্রবন্ধ হাছত তিনে থিতে পান । যদি তাঁহায়া প্রথমেই অক্সান্ত শাল্পের সহিত ই মহাকাব্যেও সলে নইয়া, থাকেন, তাহা হইলে নে সময় অর্থাৎ খুষ্টান্দের পঞ্চম শতান্দীর কিয়ৎকাল পূর্বেশ ঐ মহাকাব্যের উল্লিখিত রূপ অবস্থা ছিল বলিতে হইবে।

রামারণের স্থানে স্থানে ফলিত-জ্যোতিব সংক্রাম্ভ বহুতর শব্দ ‡ এবং তন্মধ্যে রাম, লক্ষণ, ভরতাদির জন্ম-বিবরণে মীন কর্কটাদি রাশির নামও দোধতে পাওয়া যায় ঀ। পশ্চাৎ দৃষ্ট হইবে, হিন্দুরা গ্রীক্দের নিকট জ্যোতিষ-শাজের অন্তর্গত রাশিচক্রাদি নানা বিষয় শিক্ষা করেন। গ্রীকেরা খু, পু, প্রথম শতাকাতে ঐ রাশিচক্রের বিষয় সম্পূর্ণ রূপ অবগত্ত হন। অতএব রামারণের ঐ স্থণটি ঐ সময়ের পরে বিরচিত বলিয়া সহজেই স্বীক্ষার করিতে হয়।

[•] The Journal of the Indian Archipelago, February 1849, pp. 131 & 132.

[†] The Pilgrimage of Fa Hian, 1848, pp. 358, 359 & 363.

[্]বালকাখ। ৭১স, ২৪। অনুধ্যে। ৪স, ২১; ১৫ স, ৬ ও ৮০স, ১৭। আর্শ্য। ৬৮স. ১৩ ইত্যাধি।

[·] म वामकाखा अध्य, क ख ३०।

রামারণের বালকাপ্তের ১৮ সর্গে করেকটি রাশির উল্লেখ আছে। হিন্দুরা खीक्षिरशत निक्र तानिहत्कत विवत निका करत्रन अहे बिरवहना कतिता श्रीमान **८वरवत्र ८महे काम थु. शू. প্রথম শতাকীর উত্তর কালে বিরাচ্ত বলিয়া বিবেচনা** ক্ষিরাছেন +। কিন্তু শ্রীমান লেদেনের অভিপ্রার এই বে ভারতবর্ষীরের। **टक्न** जिम्रा + तम्मीम त्याजिसिममिश्तर निक्छे थे रिवश मिका करतन। जिनि বলেন, হিন্দুরা ভাদৃশ সেমেটিক্ ‡ জাতি-বিশেষকেই ধবন বলিয়া জানিত। কিন্তু শ্রীমান বেবের এই কথা বলিয়া প্রত্যুত্তর দেন বে, উক্ত অভিপ্রায়ের কিছুমাত্র প্রমাণ নাই। এলেগ্রেওরের ভারতবর্ষ-আক্রমণের পর হিন্দুরা প্রীকদিগকে সবিশেষ অবগত হয়। প্রিয়দশীর থোদিতলিপি তাহার প্রত্যক প্রমাণ রহিয়াছে। হিন্দুরা গ্রীকদিগের নিকট জ্যোতিব সংক্রান্ত নানাবিষয় শিক্ষা করে, হিন্দু শাস্ত্রেই ভাষার পরিচর প্রাপ্ত বওরা যার। ভাহারা বে. কেল ডিয়া-দেশীর পণ্ডিতগণের সরিধানে ঐ শাস্ত্রের জ্ঞান লাভ করে ইহার স্পষ্ট প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া যায় নাই। ঐ মতের অমুকৃণ পক্ষীয়েরা উহার প্রতিপোষক বচনাদি উদ্বত করুন তথন বিবেচনা করা ঘাইবে । **হিন্দুরা** व्यथ्य औक्षिश्रक यवन विनेदा क्षानिक ना अहे विषय श्रीकिशामनार्थ द्रारक्क-লাল বাবু একটি স্থদীর্ঘ প্রবন্ধ বচনা করেন § বেবের গাছেব ভাহাতেও অবজ্ঞা ও উপহাস-প্রকাশ করিরাছেন **।

छेनक्षमिकात > १ पृष्ठी (प्रथ ।

[†] পারসীক উপসাগরের উদ্ভর দিকে বাবিক্রব অর্থাৎ ব্রেবিলন্ দেশ (১) ছিল। তাহারই অক্স নাম কেলভিরা। এখন তাহাকে ইরাক্ আর্বি কছে। খু, পু, ৬৮০ অকে এসিরিরা-দেশীরেরা তাহা অধিকার করে। কিছু কাল পরে সেই দেশ আবার পারসীকদিপের অধিকারছ হর। পরে একি সমাট্ এলেগজেওর দিখিলরে বাত্রা করিরা ভাহা লয় করিরা লন। পূর্ব্বিলালে কেলভিরাতে জ্যোতির্বিদ্যার স্বিশেব চর্চা ও সমধিক প্রান্ত্রিব হর। হুপ্রস্কি এক্ জ্যোতির্বিদ টলেরির এছে এ দেশীর পণ্ডিতগণের কৃত করেকটি এহব-প্রশার বিবরণ আছে; খু, পু, ৭২০ অকে তাহার একটি সংঘটত হয়। এলেগ-কেওর ভাহাদের কৃত ১৯০০ বংসরের এহব-প্রনা সংগ্রহ করেন এইরূপ লিখিত আছে। ভাহা ক্তদুর এমাণিক বলিতে পারা বার না।

[‡] এসিরিয়া, কেলভিরা, বেবিলন্, সিরিরা, ফিনিশিরা, আরব, ইণিওপিরা এই সমস্ত দেশীর লোক এবং রিচদিরা সেমেটিক জাতি বলিরা উল্লিখিত হর।

[¶] Indian Antiquary, 1875, p. 244 and pp. 246-279.

[§] Journal of the Asiatic Society of Bengal. 1874

[•] Weber's History of Indian Literature, 1878, p. 220.

⁽১) ইহার উত্তর সীমা ইউফেটিল নদী ও মাদ অর্থং মীভিনা-দেশীর দীর্ঘ প্রাচীর, পূর্ব্ব সীমা টাই প্রিস্ নদী, দক্ষিণ সীমা পারসীক উপসাগর এবং পশ্চিমসীমা আর্থ-দেশীর সক্ষুমি ।

ঐ মহাকাব্যের কোন কোন হলে শক ব্বনাদির অসদ আছে । ব্বন অর্থাৎ গ্রীক্ জাতীরেরা খৃ, পৃ, চতুর্থ শতাকীতে সইস্পু ভারতবর্ধে আগ্রন্মন করে এবং পরে খৃ, পৃ, ভৃতীর শতাকীর মধ্যভাগে বাহ্লিকরাকা স্থাপন করিয়া ভারতবর্ধেও অন্তর্গত করেক প্রদেশের অধিকারী হয়। শক, জাট প্রভৃতি কভকপ্রলি অসভ্য আতীর লোকে খৃষ্টাব্দের কিছুকাল পূর্বে হইছে ধন অথবা বঠ শতাকী পর্যান্ত নিজুনদের পশ্চিমভাগ অধিকার করিয়া থাকে †।। ইহাতেই ভারতবর্ষীরেরা ঐ সমস্ত জাতির সবিশেষ পরিচয় প্রান্ত হন। অভ-এব ঐ সমস্ত অটনার প্রপাত হইবার পর কোন সম্বে উল্লিখিত গ্রন্থের ঐ সক্ষণ স্থল রচিত হওয়া স্বিতোভাবে সম্ভব।

ভিন্ন ভিন্ন তালের ও ভিন্ন ভিন্ন সমরের রামারণে পরস্পার এত ইডর বিশেব দেখিতে পাওরা বার বে, মধ্যে মধ্যে নৃতন নৃতন নানা বিষর বিরচিত ও সংবোজিত হইরা আসিরাছে ইহা বিখাস না করিরা থাকা বার না। উত্তরেজর এত বচন প্রক্রিপ্ত হইরাছে বে, কোন প্রকার প্রচলিত রামারণ অধ্যান্তন এত বার আদিন রামারণের ‡ তাৎপর্যার্থ নিরূপণ করা সহজ্ঞ কর্মা নামারণের প্রধান উদ্দেশ্ত বোধ হর, কিন্ত প্রথমে উভার সেরপ উদ্দেশ্ত হিল এরপ বলিতে পারা বার না। রাজা দশরণ পুত্র-কামনার অধ্যমেধ বজ্ঞের অনুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হন ও ভার্থ ধ্বাশৃক্ষকে আনরন পূর্বক বরণ করেন। ঐবজ্ঞ সম্পার হইল;

এই উভর ছলে শক ব্যনাদির সহিত কাবোজদিগের নাম উলিবিত আছে। তারারা ভারতবর্ধের পশ্চিমোন্ডরাংশের সংস্কৃতভাষী জাতি-বিশেষ ছিল (১)। অন্যাণি হিন্দুকুশ পর্বন্ধে কৌষোলি, কাবভাল, কাবোজ প্রভৃতি নামে কতকওলি জাতির অধিবাস আছে; তাহাদেরও ভারা সংস্কৃত বৃদক্ষ। অতএব ব্যন ও শক শব্দে বাহ্দিক দেশহ গ্রীকৃ ও ভারতবর্ধ আক্রমণ-কারী লাভিই বৃষ্ঠিটে হইবে।

[†] ब**रे भूख**रकेन्न चक्रपंड टेमव-मच्चनंदात्र » शृंशे दार्थ ।

[্]ব প্ৰক্তি আংশঙ্কি সংবোজিত হইবার পূর্বে রাবায়ণ বেরূপ অবস্থাপর ছিল, এ প্রথম্বে ভাষ্টি আদির রাবায়ণ বলিয়া উল্লিখ্য হইরাছে।

⁽२) वरे प्रायम व्यवस्थातम व्यवस्थातम व्यवस्थातम ।

নাদ্রণপণ অপর্যাপ্ত ধন প্রাপ্ত হইরা প্রস্থান করিলেন : যজের ফল-প্রস্ত্যাশা ব্যতিরেকে আর কিছুই বর্ণনা করিবার প্ররোজন রহিলুনা। শাল্রের মডে বর্ধাবিধানে সম্পন্ন এরপ সর্বাল-স্থলর অ্যমেধের ফল অবগ্রুই উৎপন্ন হর। ঐ যজ্ঞ সম্পন্ন হইডে না হইডেই এবং নিমন্ত্রিত ব্যক্তিগণ গৃহ-প্রত্যাগমন না করিতে করিতেই, মহারাজ ঐ বজ্ঞের ফলাফল প্রতীক্ষা না করিরাই ঐ মহ্বিকে পুত্র-লাভার্থ পুনরার পুত্রেটি বাগে ব্রতী করেন। এই উপলক্ষে দেবগণ ভগবান বিষ্ণুকে রাবণ-বিনাশার্থ দেহ পরিগ্রহ করিতে অমুরোধ করেন, এবং ভদস্সারে তিনি রাজমহিবী কৌশলার গর্ডে জন্ম গ্রহণ করিরা ভূমগুলে অবতীর্ণ হন।

বিশেষ হেতু নির্দেশ ও কোন অভিনব প্রােঞ্জন উত্থাপন ব্যভিরেকে প্র
শেষাক্ত প্রেটি বাগের বিবরণটি সহসা আরক্ত হইরাছে। উহা পরিভাগি
করিলে রামাণাখানের কিছুমাত্র বাতিক্রম হর না। বালকাণ্ডের চতুর্দশ
সর্গে অখনেধ-বিবরণ এবং অষ্টাদশ সর্গের প্রথমে অখনেধ-ভঙ্গের পর দেবপণের
অ অভাগ প্রহণ পূর্বেক বর্গারোহণ, রাজা দশরও ও রাজমহিবীদের পূরপ্রবেশ ও নিমন্ত্রিত নৃপতিগণের অদেশ-প্রভাগিমন-বৃত্তান্ত লিখিত হইরাছে।
মধ্যত্বল অর্থাৎ ১৫, ১৬ ও ১৭ সর্গে পুরেটি বাগে, বিষ্ণুবতরণ ও দেবপণ
কর্ত্ব বানর-সৈত্ত উৎপাদনের বিষর বর্ণিত হইরাছে। ঐ শেবোক্ত তিনটি
সর্গ না থাকিলে, কিছুমাত্র অসলত হর না, বরং অসলতই হয়। বিদ্ রামক্রে
বিষ্ণুবতার বলিরা প্রতিপন্ন করা আদিম রামারণের উদ্দেশ্ত থাকিত, ভারা
হইলে প্রেই অর্থাৎ অর্থমেধ-বর্ণনা-স্থলেই এ কথার স্ক্রন। করা হইত।
এই সমন্ত পর্বান্যান্তানা করিয়া দেখিলে, রামলক্রণাদিকে বিষ্ণু-অবতার
বিরা প্রচার করিবার উদ্দেশে, উত্তরকালে কোন ব্যক্তি প্রাহীরমান হইরা উঠে।

রাম আপনাকে দশর্থ পুত্র প্রাক্ত মহুব্য বণিরাই জানিতেন। বুছকাণ্ডের ১১৯শ সর্গে শিখিত আছে, জিনি বে শ্বরং পূর্ণপ্রক্ষ ভগবান এ কথাটি
ক্রন্ধা তাঁহাকে অবগত করেম। ঐ শ্বনে রামচক্র বার পর নাই ঈশবরোচিত
ভূরি ভূরি বিশেষণে বিশেষিত হইবাছেন। তাঁহাকে বিষ্ণু ও সীতাকে লক্ষী
বলিরা প্রতিপর করাই উহার উদ্দেশ্ত। উহা পাঠ করিয়া দেখিলে বোধ হর,
ঐ স্বাটি রচিত হইবার পূর্কে পৌরাণিক দেব-মণ্ডলী ক্রনা এক্রপ সম্পর্ম
ইইরা বার। রামানগরে ঐ অংশটিও প্রক্রিপ্তানা হইরা বার না। উর্বার

মধ্যে ক্ষেত্রৰ নামোরেশ পাকাতে •, এ অভিপ্রায়ট সর্বভোভাবে স্প্রমাণ ছইতেছে। রামচুক্তের সর্বত্ত প্রস্থায়র ভার ব্যবহার বর্ণনা দেখিরা, কোন ভক্তিমান্ ব্যক্তি রামায়ণের, মধ্যে উহা সন্নিবেশিত করিয়াছেন বোধ হয়।

স্থবিচক্ষণ পণ্ডিত শিরোমণি শ্রীমান্ লেসেন্ বিবেচনা করিয়াছেন, রামারণ ও মহাভারতের বে বে হলে রাম ও রুফ বিফ্বতার বলিয়া বর্ণিত হইয়াছেন সেই সমুদার হল এরপ অসহজ্ঞ ও মূল উপাধ্যান কীর্ত্তন বিষয়ে এরপ অনাবস্থক বে, সেই সমুদার অপেকারুত অপ্রাচীন মনে না করিয়া থাকা হার না। সেই অংশগুলি আদিম রামায়ণাদির অন্তর্গত ছিল না; ঐ হুইটি বীর পুরুবের স্থারত-সংস্থাপন-উদ্দেশে পশ্চাৎ প্রক্রিপ্ত হইয়াছে। শ্রীমান্ প্রেগল বারংবার বলিয়াছেন, যে সকল বচনে রা মবিফ্বতার বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছেন, ভাহা পরিত্যাগ করিলে, রায়োপাধ্যানের কিছু মাত্র ক্ষত্তি হয় না। পুর্ব্বে লিখিত হইয়াছে মন্ত্রগত্তির রাম রুক্তের নাম-গন্ধও নাই। অতএব রামারণ ও মহাভারতে রাম, রুফ, পরশুরামাদির যে ঐশী শক্তি বর্ণিত হইরাছে, ভাহা মন্ত্রগত্তি-সঙ্গনের পর করিত হইয়াছে বোধ হয়।

বৈশিদ্যের দশরণ জাতকের অন্তর্গত রামোপাধ্যান বালীকি রামারণ অপেক্ষা প্রাচীন, রামারণাক্ত রাম-রাবণের যুদ্ধ বৌদ্ধ ও হিন্দুদের পরক্ষার বিরোধ-বিজ্ঞাপক, রাম ও ক্রমিকার্য্য-প্রবর্গক বলরাম একই ব্যক্তির নাম, রাবণ কর্তৃক সীতাহরণ ও রাম-রাবণের যুদ্ধ-ব্যাপার গ্রীস্ দেশীর হোমর্-কৃত্ত ইলিরড্ কাব্যের অন্তর্গত হেলেন্-হরণ ও টুর্-সংগ্রামের অন্তর্গ, বর্ত্তমান প্রচলিত রামারণ প্রাক্তের বিতীয় শতাকীর উত্তরকালীন গ্রন্থ, শ্রীমান্ লেসেন্ ক্ষাইক্রে শ্রীমান্ বেবেরের এই সমস্ত অভিপ্রান্তের ‡ প্রতিবাদ করিয়াছেন।—

সীতা দল্মী এবং তুমি বিষ্ণু, দেব-কৃষ্ণ ও প্রস্লাপতি।

হিন্দুপাছের মডে, রাবের অনেক কাল পরে কৃষ্ণ জন্ম গ্রহণ করেন। অভএয এহলে তদীর অসুস্থ এবৰ অসুস্ত বে, টাকাকার ঐ শব্দের অর্থ কুফবর্ণ বলিয়া ব্যাখ্যা করিয়াহেন।

^{*} सीता लच्चीर्भवान् विचार्देवः क्षचः प्रजापतिः। युद्ध कांच ১১৯ मर्गः।

[†] Lassen's Indian Antiquities, Vol I. pp. 488 and 489 extracted and translated in Muir's Original Sanscrit Texts, Part IV. 1863, pp. 142 and 143.

[‡] Weber's History of Indian Literature, 1878, pp. 1929 and on the Ramayana in the Indian Antiquary for 1872.

Prof. Lassen on Weber's dissertation on the Ramayana translated from the German by J. Muir, in the Indian Antiquary for 1874, pp. 102 and 103.

রামারণ-সংক্রান্ত বংকিঞ্ছিৎ বাহা লিখিত হইল, সম্বন্ধ পর্যালোচনা করিরা দেখিলে, এই রূপ প্রতীতি জান্মিতে পারে বে রামোপাখ্যানটি একটি স্থপ্রাচীন উপাখ্যান; তাহাতে পুন: পুন: নানালোক কর্তৃক নানাবিধ বিষয় সংযোজিত হইরা নানারূপ প্রচলিত রামারণ প্রস্তুত হইয়াছে। *

বেদ-শান্ত্রেও এক সীতার অসল দেখিতে পাওরা যার। তৈতিরীর রাক্ষণে (২) লিখিত আছে, সীতা সবিতার অর্থাৎ প্রজাপতির কলা; চল্লের প্রাত ওঁছোর প্রণর-সঞ্চার হর; এ দিকে চল্ল শ্রছাকে ভাল বাসেন। ইহাতে সীতা প্রজাপতি-সমীপে সমন করিয়া আপনার মনস্বামনা অবগত করিলেন এবং প্রজাপতি মন্ত্র পাঠ করিয়া গক্ষমণা বিশেষ ঘারা উংহার অকরণে করিয়া দিলেন। অনন্তর তিনি চল্ল-সন্নিধানে উপস্থিত, হইলে, চল্লে উট্যের অকরণে করিয়া দিলেন।

सीता साविती सीमं राजानं चक्तमे । श्रद्धातु स चक्तमे ।

• चाक्षाई वदाज । इतिस्योवाच । सपमावकं स्वित ।

প্রকাপতি কল্পা সীতা চল্লের প্রতি অসুরক্ত হন। কিন্ত চল্ল শ্রন্ধার প্রতি প্রধানকত হিলেন। * * * * সীতা চল্লের নিকট সমন ক্রিলেন। তাহাকে দেখিয়া চল্লে ব্লিকেন্ ভূমি আমার সমীপে অবস্থিতি কর।

⁽১) ঐ গ্রন্থানুসারে রাম সীতার সংহাদর, তিনি বনবাসের পর খণেশ প্রভাগের্ক কহিছা আপনার সেই সংহাদরাকে বিবাহ করেন। জীনান বেবের ঐ গ্রন্থ প্রচলিক ব্যাকি স্থানারপের কডকওলি লোক একরণ অভিন বলিয়া প্রদর্শন করিবাছেন।

⁽२) टेडिखडोब जाकार। २। ७, २०, २---७।

সংক্রের বেক্যান-প্রণীত বলিরা প্রচলিত আছে, কিন্তু স্বথা মহাভারত এক স্বয়েরও রচিত নর, এক জন কর্তৃত্বও স্ক্রনিভ হর নাই। মহাভারত-কর্তারা নির্বেট এ কথা খীকার করিয়া গিরাছেন।

मन्दादि भारतं केचिदास्तिकादि तथापरे।
तथोपरिचराद्यन्ये विष्ठाः सम्यगधीयते॥
विविधं संद्विताज्ञानं दीपयन्ति मनीषिषः।
व्यास्थातुं कुश्रसाः केचिद्यन्यान् धारयितुं परे॥
वाति शर्साः २४ वशाः। १८ ३ ४० क्षांक।

কোন কোন ব্রাহ্মণ প্রথম মন্ত্র অবধি, কেছ কেছ আজিক পর্ব অবধি, কেছ বা উপন্নিচয় রাজার উপাধ্যান অবধি এই ভারতের আরম্ভ বিবেচনা করিয়া অধ্যয়ন করেন। 'পণ্ডিত ব্যক্তিরা অশেষ প্রকারে সংহিতার ভাবার্থ প্রকাশু করেন। কেছ কেছ গ্রন্থ ব্যাধ্যা বিষয়ে পটু, কেছ বা গ্রন্থাধারণা বিষয়ে নিপুণ।

কাকে কাকেই বলিতে হর, যিনি এই চুইটি বছন রচনা করেন, তিনি বহা ভারতের উলিখিত চুই প্রকার অবস্থা ঘটনার পঞ্জের নিজের রচিত প্লোক আনি তাহাতে সলিবেশিত করিরা যান। আরও দেখ, ঐ গ্রন্থেই অন্তর্গত অনুক্ত বচনে লিখিত আছে, প্রথমে ভারত-সংহিতা চুতুর্কিংশতি-সংশ্রুপেন মন্ত্রীছিল। অভএব বোধ হর, কোন সমরের পশুতেরা মহাভারত চুতুর্কিংশতি-সংশ্রুপ্রশ্রুপেন করিতেন, পরে সমরে সময়ে অনেকানেক বচন ও উপাধ্যান সন্থলিত ও প্রক্রিপ্র হওরাতে, উহা লক্ষাধিক প্লোক বিশিষ্ট এতাদুশ বৃহৎ হুইলা পড়িরাছে।

चतुर्विंगतिसाइसीं चक्रे भारत-संहिताम्। हपास्थानिर्व्वना तावद्वारतं प्रोस्वते बुधैः॥ ततोऽध्यद्वेगतं भूयः संदेपं कतवादृषिः। सनुक्रमिषकाध्यायं दृत्तान्तानां सपर्व्वपाम्॥ वाहिनर्वतः > म वशावः। >०२ ७ २०२ (क्षाकः।

এই উপাধানে অসুসারে, সীতা চল্লের পদ্মী। রাষারণে রাষও প্ল-বিশেষে রাষ চিল্লা বিলিয়া কীর্তিত ভর্তরাজেন।

প্রথমে ব্যাসদের চতুর্বিংশতি-সহস্র-শ্লোকমন্ত্রী ভারত-সংহিতা রচনা করিনাছিলেন । পণ্ডিতেরা করেন, উপাধ্যান-ভাগ পরিভ্যাগ করিলে ভারতের
সংখ্যা এইরপ হয়। অনন্তর তিনি সংক্ষেপে সর্বার্থ সঙ্গন পূর্বাক সার্দ্ধ-শত্তপ্রোক-বিশিষ্ট অম্ক্রমণিকা রচনা করিলেন।

এই স্লোকে মহাভারতের অন্ত্রমণিকা-ভাগ ১৫০ শ্লোক বিশিষ্ট বিনরা
নিথিত আছে। কিন্তু এইকণকার মহাভারতের অন্ত্রমণিকাধারে নানাধিক
২৬৮ টা স্লোক প্রাপ্ত হওর। যায়। আর মহাভারতের পর্কসংগ্রহে ৯৬৮৩৬
স্লোক শিথিত আছে, কিন্তু প্রচলিত মহাভারত গণনা করিরা দেখিলে ১০৭ ৯০
স্লোক দেখিতে পাওরা যার। পর্কসংগ্রহে প্রতিপর্কে বেরূপ স্লোক-সংখ্যা
নির্দিষ্ট আছে, আর একণে গণনা করিরা সেই সেই পর্কেব ত শ্লোক প্রাপ্ত
হওরা যার, উত্তরই পশ্চাৎ লিখিত হইতেছে। পাঠ করিরা দেখিলেই ভানিতে
পারা ঘাইবে।

| | পৰ্ব্ব | | পর্কাগপ্রেছে (| গণিত খোক- | | | |
|-----------------|-------------------|--------------|----------------|-----------|---------------|------------------------|--|
| | | শ্লোক-সংখ্যা | | | न श्या | | |
| • | चामि | পৰ্ব্ব | 66 68 | ••• | ••• | F845 | |
| • | সভা | " | 5622 | | ••• | ₹ 4•> | |
| ø | বন | " | >> 648 | ••• | ••• | 39896 | |
| | বিশ্বাট | £4 | २•६• | ••• | ••• | " ૨૭ ૧ ৬ | |
| • | উদ্যোপ | 16 | 4634 | ••• | ••• | 1060 | |
| • | ভীম ' | " | (7 78 | ••• | ••• | *** | |
| 1 | জোণ | " | 6 064 | ••• | ••• | 36 5 9 | |
| • | কৰ্ণ | • | 8043 | ••• | ••• | 6.80 | |
| \$ | देशमा | • | ७३ २• | ••• | ••• | 9493 | |
| ٠د | নোগ্রিক | 44 | -9 • | ••• | ••• | F33 | |
| >> | ন্ত্ৰী | • | 114 | ••• | ••• | F298 | |
| ११ | শান্তি | •• | >8902 | ••• | ••• | 08606 | |
| 70 | অমুশাসৰ | " | b | ••• | ••• | 1924 | |
| >8 | অখনেধিক | • | ०७ २ • | ••• | ••• | **** | |
| 36 | বাশ্রমবাসিক | (1 | >6.5 | ••• | ••• | >>•€ | |
| >• | ८मोयन | " | ७ २० | ••• | ••• | . 4>4 | |
| | | | | | | | |

| ১৭ মহাপ্রস্থানিক | ** | •2• | ••• | ••• | 406 |
|------------------------|----|-------|-----|-----|---------------------|
| >৮ वर्गात्वादन | •• | ₹•₽ | ••• | ••• | ०७२ |
| ১৯ चिन हत्रिवःम | •• | >>+++ | ••• | ••• | >4018 |
| | | ಎಆ೬೦೬ | ••• | | >09 2 > 0 |

অভ এব পর্বাগঞ্জই সমাপ্ত ইইবার পরেও অনেক স্থান পরিবর্ত্তিত ও অনেক বচন প্রকিপ্ত ইরাছে। আদিপর্বের অক্ত এক স্থানে * লিখিত আছে, তৃমগুলে লক্ষ-প্রোক-বিশিষ্ট মহাভারত প্রচারিত হয়। এটি একটি প্রকৃত্ত কথা বলিয়া বিবেচনা করিলে ইহাকে ঐ প্রস্থের অন্য এক অবস্থার,পরিচারক বলিয়া অক্টাকার করিতে হয়।

বালি বীপের কবি-ভাষার মহাভারতীর ভিন্ন ভিন্ন পর্কের অমুবাদ আছে।

ঐ সকল পর্কের নাম যে মহাভারত, তথাকার লোকেরা ভাহা অবগত নর ।।

ঐ গ্রন্থ বে সমরে ঘববীপে নীত হয়, সেই সমরে কি ঐ পর্ক সমুদার একত্ত সঙ্গলিত হইয়া মহাভারত নামে প্রচলিত হয় নাই ? পরিমাণ-বিষরে ঐ সমজ পর্কের সহিত একণকার প্রচলিত সংস্কৃত মহাভারতার পর্কের অনেক ইতর বিশেব দেখিতে পাওয়া বার । ৢ সমুদার বে সংস্কৃত গ্রন্থের অমুবাদ, হয়ত,
ভাহা ঐরপ অবস্থাপর ছিল ।

মহাভারতেরই অন্তর্গত উলিখিত করেকটি প্রমাণ অফুসারে ঐ গ্রন্থের চারি
পাঁচ প্রকার অবস্থা লক্ষিত হইতেছে। ফলতঃ ঐ সমস্ত প্রমাণ বারা বংকিঞ্চিৎ
বাহা জানিতে পারা বার এবং পশ্চাৎ ঐ গ্রন্থের বিবরে বাহা কিছু লিখিত হইবে,
জন্মান এইটি প্রভীরমান হইরা উঠিতেছে বে, ক্রমাগতাই নুতন নুতন উপাধানে
প নুতন নুতন স্নোক রচিত ও সংবোজিত হইরা ঐ গ্রন্থকে এরপ বৃহদাকার
করিরা তুলিরাছে।

বিনি মনোবোগ পূর্বক মহাভারতের ১০।১৫ অধ্যার আর্পূর্বিক পঠি করিরাছেন, তিনি আর কথনই ভাহা এক গ্রন্থকর্গার প্রণীত বোধ করিতে পারেন না। ভাহাতে এক এক বিষয় পুনঃ পুনঃ দিখিত হইরাছে ‡, এক

[•] चातिनर्स, भ्य चयात्र, भ्रव्य (श्राक् ।

[†] The Journal of the Indian Archipelago, February 1849, p. 135.

[়] বেসৰ অধিপৰ্কের ১০ হইতে ১০ অধ্যার এবং ১৫ হইতে ৪৮ অধ্যার প্রাপ্ত জরৎ-কালয় উপাধ্যান।

উপাধ্যান কৰিত হুটতে হইতে বিশিষ্ট কারণ ব্যতিরেকৈ অস্থ উপাধ্যান উথা-পিত হুইরাছে +, পূর্ব স্চনা ব্যতিরেকে সহসা ব্যক্তি-বিশেবের বাজ্য সমাবিষ্ট ছুইরাছে †, এবং পরস্পার অসম্পন্ধ উপাধ্যান শমুদার একত্র স্থাপিত হুইরাছে ‡। এক্ষণকার প্রচলিত সমগ্র মহাভারত এক বাজি কর্তৃক প্রণীত হুইলে এরপ অব্যবস্থা কথনই হুইতে পারে না। প্রত্যুত্ত, এরপ বিশৃথ্যনার উল্লিখিত গ্রন্থে ভিন্ন ভিন্ন সমরে ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ন নানাই পরিচর দান করিতেছে।

আনি পর্বে স্থান বিশিত আছে ব এ গ্রন্থ বেদবান প্রথমে বাচনিক বলেন, বৈশম্পানন ও উহা জনমেলরের সর্প বজে বাচনিক লাওন করেন, উগ্র-শ্রবা নৈমিবারণ্য-বাসী অবিগণকে উহা বাচনিক শ্রবণ করান, এবং অক্ত অক্ত কত কত পণ্ডিতও ঐ পুত্তক বাচনিক বর্ণনা করিয়া বান। ইহাতে এই-প্রকার জানিতে পারা হাইতেছে বে, আদিম রামারণের প্রায় হ আদিম মহা-ভারতও প্রথমে নিশি-বন্ধ ছিল না; শ্রাতি-পরম্পরা ক্রমে বাচনিক উপদেশি বারা চলিবা আইসে।

ইলানীং কেছ কেছ রামারণকে মহাভারত অপেক্ষা অধুনিক বলিয়া বিবেচনা করেন, কিছ তাঁহাদের এমতে অনেক গুলি আপতি উপস্থিত আছে। মহাভারত তো বছকাল বাাপিয়া ক্রমাগতই নৃত্ন নৃত্ন নানা বিষয় সন্ধিবেশিত হইয়া আনিয়াছে। রামায়ণেও মধ্যে মধ্যে সর্গ ও প্লোক প্রক্রিষ্ট হয় ইহা পূর্বেই প্রক্রিছে। ইহাতে, এই উভয়ের মধ্যে অসুক গ্রন্থ প্রাচীনভার অধ্যা অসুক গ্রন্থ খানি অপ্রাচীনভার এরণ নির্দেশ করাই সক্ত বোধ হয় না;

^{় 🧸} যেমৰ পৌৰা পৰ্বে আঞ্চৰি ও উপমন্থাৰ উপাধ্যানগা

[†] বেষৰ আদি পৰ্কে চতুৰ্বিংশ অধ্যাহে ক্লক ও এমতিক কথোপক্ষৰ। দাক্ষ অধ্যাহ বেষ পোৰ এলপ উজি আছে বটে বে, ক্লক বীয় পিতা এমতির নিকট আজীকোপাব্যাল এবণ করিয়াছিলেন, কিন্তু তংপরে তাহার আর ভোন একল নাই, এত্যুত, এরোক্ষ অধ্যাহে উপ্পর্কা কহিতেছেন, আমি পিতা লোমহর্বপের নিকট আজীকোপাব্যান বেরুণ এবণ করিয়াছি, অবিকল সেইল্লপ বর্ণনা করিতেছি।

[া] বৈষম পৌৰা সংক্ষা সৰ্প সত্ৰান্ত্ৰাম-স্চনার পরেই পৌলন পর্কৌ ভূত-বংগের বর্ষা।
প্রাচিপ্য ১। ২০, ২২, ২০ ৩ ২০।

^{\$} विवाद त्यत्व विषया करतम, वामात्व अवस्य निशिष्ण हिन का प्रतिशाहे, स्थ-त्यत्व काहात अ अवसा गाउँ-त्यत् क व्यवदी-त्यत्व परिवादह ।— Weber's History of Indian Literature, 1878, P. 104.

ভাগাচ এই ত্ই পুস্তকের পরস্পার তুলনা করিয়া দেখিলে, রামায়ণের অধিকাংশ মহাভারতের অধিকাংশ অপেক্ষা প্রাচীনত্র বলিয়া প্রভীয়মান হইতে থাকে।

প্রথমতঃ পূর্বেই লিখিত হুইয়াছে; য়ামায়ণ রচনার সময়ে আর্ণ্য-বংশীয়েরা পূর্বেদিকে অঙ্গ ও মিথিলা এবং দক্ষিণে কেবল ষমুনা তট-পর্যন্ত উপনিবেশ করেন; সে সময়ে দক্ষিণাপথ কেবল অরণ্য ও স্থানে স্থানে অসভ্য অনার্য্য লোকের আবাস-ভূমি ছিল *। কিন্তু মহাভাবতে দেখিতে পাওয়া যায়, তাঁহারা উহার মধ্যে অনেকানেক জনপলে, এমন কি প্রায় উহার দক্ষিণ সীমা পর্যান্তও, আপনাদের আবাস ও আধিপত্য বিস্তার করিয়াছেন। যত কাল ব্যাপিয়া মহাভারত রচিত ও সঙ্গলিত হয়, তয়ধ্যে আর্যা-বংশীয়েরা দক্ষিণাপথে অন্ত অন্ত নানা দেশ ও নানা রাজ্যের সহিত কলিজ, জাবিড়, পাণ্ডা + ও কেরল এবং পূর্বে দিকে অঙ্গ, বঙ্গ, গুলুগ্রম্যাতিষ, মনিপুর ও সাগরতট পর্যান্ত আপনাদের বাস ও অধিকার বিস্তার করেন এইরূপ লিখিত আছে ‡ মহাভারত পাঠ করিয়া গেলে, ভারতবর্ষের অধিকাংশেই আর্ণ্য-বাস, আর্য্য ধর্ম ও আর্থ্য-সভ্যভা বিস্তানরের বিষয় দেখিতে পাওয়া যায়। ঐ গ্রন্থের যে সকল স্থনে এই বিষয় বর্ণিত রহিয়াছে, ঐ সমুদায় স্থান ঐ ঐ নামে বিখ্যাত হইবার পরে ভাহা রচিত হইবারে বলিতে হইবে।

দিতীয়ত:। যদিও ভাষা-নিষয়ে মহাভারতের বহুতর হলের সহিত রামারণের সম্পূর্ণ দাদৃগু আছে; এমনকি, উভয়েতেই দারদিক-প্রয়োগবিক্লন প্রাচীন
পদাদি দৃষ্ট হইয়া থাকে, তথাচ অনেক ইতর বিশেষ দেখিতে পাওয়া যায়।
মহাভারতের ভাষা সরণ বটে, কিন্তু অনেক হানে রামান্নণের অপেক্ষা রচনার
বৈচিত্রা ও চাতুর্যা দৃই হইয়া থাকে। যদিও অধিকাংশই মুপ্রাচীন অমুষ্টুপ ৡ
ছেনেই রচিত, কিন্তু স্থাবিশেষে অপেক্ষাক্ত ইক্সবেজ্ঞাদি দীর্ঘ ছন্ত বাবহাত

^{*} ४७ मुठी (मय।

[†] পাও্যরাজ্য থ্রী, পূ. বঠ অংখবা পঞ্ম শতাকীতে সংস্থাণিত হর বলিরা বিবেচিত ছইয়াছে। শৈৰ সম্প্রদার ১০ পৃঠাদেশ।

¹ দভাপর্ক, ২৫—৩০ এবং ৫০—৫১ অধ্যায়; উদ্যোগপর্ক, ১৯৬ ও ১৯৭ অধ্যায়; ভারমেধিক পর্ক, ৭১—৮৪ অধ্যায় ইত্যাদি।

[§] মনু, রামারণ ও মছাভারতাদি অনতিপ্র!চীন গ্রন্থের মধ্যে যে সকল ছন্দ বাংশত ছইরাছে, ভাহারই মধ্যে ততুষ্টুপ ছন্দ প্রাচীন। ঐ সকল শাল্রেই ঐ ছান্দর লোকাবলী দৃষ্ট ছইয়ে গ.ক। বৈদ মন্ত্রচনার সমরে ভাদৃশ রচনা গ্রাণীর স্বাটি হয় নাই।

হইয়াছে। বাল্যীকি রামায়ণেরও প্রতি সর্গের শেবে এক একটি স্থমধুর দীর্থ ছন্দের কবিতা আছে এবং তাহা সাহিত্য-রচনার বহুকাল-সাধ্য সমূদ্ধতি ও পরিপাটির পরিচায়ক বলিরা গণ্য করিতে হ্র সত্য বটে, কিন্তু মহাভারতের বহুতর স্থলে উল্লিখিতরূপ দীর্ঘ-ছন্দ লোকাবলী ক্রমাগত চলিরা গিরাছে। এমন কি, এক এক বা উপর্গুপরি বহু অধ্যার তাদৃশ শ্লোক সমূহে পরিপূর্ণ দেখিতে পাওরা বার *।

তৃতীয়ত:। সহমরণ ধর্মটি হিন্দুজাতির আদিম ধর্ম নর ইহা পুর্বেই নির্দেশিত হইয়াছে । রামারণে আর্ঘাবংশীয়দের মধ্যে উহা প্রচলিত থাকিবার কিছুমাত্র নিদর্শন নাই, কিন্তু মহাভারতে ঐ প্রথা-প্রচলনের স্থুস্পষ্ট প্রমাণ বিদ্যানার বহিরাছে। গাঞ্ রাজার মৃত্যু হইলে তদীয় প্রির পদ্মী মাজী তাঁহার চিতারোহণ করিয়া প্রাণত্যাগ করেন !।

চতুর্থত:। রামায়ণে আরীক্ষিকীর গ উল্লেখ ও লোকায়তিক দর্শনের প্রাসক আছে §; কিন্তু মহাভারতে সাংখ্য, পাতঞ্চল, বেদান্তাদি দর্শনের সবিত্তর বিবরণ ও রাজনীতি, ধর্মনীতি ও অক্ত অক্ত নানা বিদ্যার বহল বৃত্তান্ত বিনিবেশিত রহিরাছে **। রামায়ণ-রচনার সময়ে ঐ সকল শাল্র উৎপর বা সমূলত হয় নাই বোধ হয়। অতএব এ বিষ্কৃতিও মহাভারতের অপেক্ষাকৃত অপ্রাচীনছের পরিচায়ক বলিতে হইবে।

পঞ্চমতঃ। মহাভারতের মধ্যেই রামোপাধ্যান সরিবেশিও আছে ††।
বিদিও ভাহাতে বাঙ্গাকির নাম বিদ্যান নাই, এবং কোন কোন অংশে
বাঙ্গাকি রামারণের সহিত ভাহার ঐক্যপ্ত দেখিতে পাওরা বার না ‡; কিন্তু
ঐ গ্রন্থের অক্ত অক্ত ভ্লেনুপুনঃ পুনঃ তাঁহার প্রসক্ষ দৃষ্ট হইরা থাকে।

चाक्रिक्, ३ च, ३३৮—२३६ (इंकि ७ ৮१ च—३७ च ; महान्क, ६६—६१ च ;
 वननर्क, ३३३, ३२०,७ २७१ च हेलाकि ।

[🕇] ७१ ७ ७৮ १३। 🚶 कांविनर्स, २२७ बवास, ७० ७ ७ । आंक ।

त अव्याशानांक २००। ७३। § अव्याशानांक २०४।

শভাপর্ক, ৫ অথার; ভীরপর্ক, ১০—৪২ অধার; শান্তিপর্ক, রাজধর্ম, নোক্রধর্ম,
 ভাগছর্মের অন্তর্গত বহতর হল ইত্যাদি।

^{††} यनगर्स २१० - २a) खर्गात ।

<sup>এ রাবারণের মতে রাম ও লক্ষণ শর-ফালে বল্প ইইলে, হতুমাক্ উবধ আনরন করিয়া
ভাহার প্রতীকার সাধন কবে, কিন্তু মহাভারতীর উপাধ্যানালুসারে, ক্লিরাল স্থীপ্রব বিশল্য</sup>

भिष्यायं प्ररागीतः स्नोको वाल्योकिना भवि। न इन्तव्याः स्त्रिय इति यद् व्रवीपि प्रवक्तमम्॥ (ज्ञाननर्सः ३३० भगातः। ७२ स्नाकः।

পুকাৰে বালাকি ও ভূমওলে: এই শ্লোক বিলিয়া গিয়াছেল যে, বানর! যাহা বলিভেছ, স্ত্রীলোকের প্রাণ বধ করা কলাচ কপ্তব্যুনর।

श्लोकसाय' पुरा गीती भागविष महास्मना।
पाख्याने रामचरिते त्रपति' प्रति भारत॥
भाष्टिभक्ष । ११ व्यक्षाः। १० व्यक्षिः।

ভারত ! পূর্বকালে তার্গৰ অর্থাৎ বাত্মীকিও রামোণাখ্যানের মধ্যে নৃপত্তিকে উদ্দেশ করিয়া এই শ্লোক বলিয়াছেন।

এই উভয় শ্লোকেই বাত্মীকি পূর্বকালের লোক বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়াছেন।
ভত্তিয়, আদি পর্বের ৫৫ অধ্যারের ১৪ শ্লোকে, সভা পর্বের ৭ অধ্যারের ১৫
শ্লোকে, উন্যোগ পর্বের ৮২ অধ্যারের ২৭ শ্লোকে ও শাস্তি পর্বের ২০৭
অধ্যারের ৪ শ্লোকে বাত্মীকির নাম নিধিত আছে। এ সমস্ত ব্যতিরেকে,
বন পর্বের ১৪৭ অধ্যারে ও জোণ পর্বের ৫৯ অধ্যারে রামোপাধ্যান বর্ণিত

নামক মহৌবধ প্রদান পূর্বক শলা বিষোচন করিয়া দের (১)। বাদ্মীকি রামারণে লিখিত আছে, রাবণ-বধ সম্পন্ন ছইলে, রানচন্দ্র সীতার সতীত বিবরে সন্দেহ করিয়া পশ্চং আরি-পরীক্ষা হারা উছোকে গ্রহণ করেব। কিন্ত মহাভারতামুসারে, রামচন্দ্র সীতাকে পরিত্যাগ করিতে কুত-সংকল ২ইলে, সীতা আয়ি, বারু, বল্লণাদি দেবগণকে অরণ করেন; তাহারা উপস্থিত হইরা সীতার সূচ্চারিত্রতার বিবরে নি:সংশরে সাক্ষ্য দেন, এবং তদমুসারে রামচন্দ্র উছোর সহিত সন্মিলিত হইরা আবোধা। পুরী প্রভাগমন করেন (২)।

এইরপ অন্তান্ত কোন কোন অংশেও ঐ উতর উপাধ্যানের পর্পার বিভিন্নতা দৃষ্ট হইরা থাকে। উভরের পরপার ঐরপ বিভিন্নতা দেখিবা বোধ হর, পূর্বে একটি প্রাচীন রামোগাল্যান বিদ্যানার ছিল, তাহা ক্রমণঃ পরিবর্তিত হইরা এক দিকে বাল্মীকি রামারণে ও অপর দিকে ঐ মহাভারতীর রাবোপাধ্যানে পরিণত হইরাছে। বাল্মইউক মহাভারতের এই অংশট সংগৃহীত হইবার পূর্বে একরপ রাবোপাধ্যান বিদ্যান্য ছিল; ইহাতে আর সন্দেহ বহিল না।

^{(&}gt;) वनगर्स । २०५ प्रशाह ।

হট্যাছে। অত এব মহাভারতের এই সমুদার উপাথ্যান সন্থলিত হইবার পুর্বে একরপ রামোগাথ্যান প্রচণিত হয় এবং উল্লিখিত বাল্মীকির সংজ্ঞানি বিশ্বস্থি হলগুলি এবং তাহার পূর্বে ও সমকালে, রচিত সমুদার স্থল বিরচিত হইবার পূর্বে বাল্মীকি-কৃত কোনরূপ রামাধ্য বিদ্যান্য থাকে ইহাতে আর সন্দেহ রহিল না। মহাভারতীয় উপাথ্যানের স্থানে স্থানে রামচক্র বিফ্বতার বলিয়া প্রতিপন্ন বালয়া বর্ণিত হইয়াছেন *। অত এব রামকে বিফ্বতার বলিয়া প্রতিপন্ন করা বথন আদিম রামায়ণের উদ্দেশ্র ছিল না বোধ হইতেছে †, তথন মহাভারতীয় উপাথ্যান বা ভাহার অন্তর্গত ঐ সকল স্থল উহার অপেক্ষা অপ্রাচান বলিয়া প্রীকার করিতে হয়। যথন মহাভারতে রামোগাথ্যান পূনঃ পূনঃ কান্তিত হয়াছে ও বাল্মীকি-কৃত রামায়ণের বিষয় স্থান্ত রামোগ্রান পূনঃ পূনঃ কান্তিত হয়াছে ও বাল্মীকি-কৃত রামায়ণের বিষয় স্থান্ত গিবিত হইয়াছে, অথচ রামায়ণকে প্রাচীনতর গ্রন্থ বিলয়া সহজেই মনে হইজে পারে। এই সমস্ত কথার সহিত এ বিষয়ের চির-প্রথাণ ‡ ও পূর্বেলিজ যুক্তি সমূহের ঐক্য করিয়া দেখিলে, ঐ গ্রন্থের অধিকাংশ মহাভারতের অধিকাংশ অপেক্ষা প্রাচীন বিলয়া প্রতীয়নান হয়।

রামায়ণের অবোধ্যা-বর্ণনাধি কতকগুলি বিষয় মহাভারতোক্ত কুকপাওবের বৃত্তান্ত অপেক্ষার সভ্যতা সঞ্চারের পরিচারক বোধ হয়। তাদৃশ
পূর্ব্বকালে বিস্তৃত ভারতভূমির সমস্ত জন-সমাজ কিছু একেবারে সমানরপ
সভ্য হইয়া উঠে নাই। তন্মধ্যে অপেক্ষা-কৃত উন্নত জনপদ-বিশেষের উপাব্যান লইয়া রামায়ণ রচিত হইলে এরপ. হইতে পারে। পূর্ব্বকালীন পারসিকদের অবস্তা শাস্ত্রে সরয় নদীর নামোলেথ থাকাতে মি, ভারতবর্ষধধ্যে
অযোধ্যা প্রদেশ আর্য্য-কুলের একটি প্রাচীন আবাদ-ভূমি বলিয়া প্রতিপন্ন
হইতেছে। কোন দেশ অত্যে উপনিবিষ্ট হেইলে ও তাহার শ্রীবৃদ্ধি সাধনের
অনুকৃল কারণ ঘটিলে, অত্যে উন্নত হওয়া স্ব্র্বেভাভাবে সম্ভব।

রামায়ণের ভার মহাভারত-রচনারও প্রক্ত সময় নির্দারণ করা স্থকটিন।

^{*} বনপর্ব্, ৯৯ অধ্যার, ৪৩, ৬৩, ৬৭ও ৭৪ স্লোক, ১৪৭ অধ্যায়, ৬১ স্লোক ও ২৭৫ অধ্যায়, ৫ সোক। † ৮৮-- ৯০ পৃঠা দেও।

[🛊] মহাভারতের অংশকায় রামায়ণ দস্ধিক প্রাচীন গ্রন্থ এই প্রচলিত প্রবাস।

শ अवन छ।र्गः अकामिल উপক্রমণিক।रশের २৮ পৃষ্ঠ।।

আখলায়নাদি কলস্ত্রে বৈদিক ধর্মেরই সবিস্তর বৃত্তান্ত স্মিরেশি চ আছে, আর রামায়ণাদিতে অভিনয় ধর্ম-প্রণালী সঞ্চারিত হইয়াছে, ইহা দেখিয়া অনেকে বিবেচনা করিতে পারেন, রামারণ ও মহাভারত সমগ্রই কল্পত্র সমুদার সমাপ্ত হইবার সমধিক কাল পরে বিরচিত হয়। কিন্তু এরপ মীমাংসা কলাচ স্ব্রিজ-দন্ত ভ লহে। বেদের অন্তর্গত ব্রাহ্মণ-ভাগ বেমন সংহিতা-ভাগ-সাপেক, কল্পত্র সমুদার সেইরূপ ব্রাহ্মণ-ভাগ সাপেক। সভ্তব এই ডিনের পারস্পর্য্য বিষয়ে দংশয় হইবার স্ভাবনা নাই। কিন্তু রামায়ণ ও মহাভারত দেরপ কর্মত্ত্র-সাপেক্ষ নয়। অত্তর্তু কর্মত্ত্রের সহিত ঐ উভয়ের দেরপ পারম্পর্য্য-দম্বর নির্দ্ধারিত হইতে পারে না ৷ রামারণ ৩ মহাভারতের প্রাচীনতর অংশ-বিশেষ কল্পত্র অপেক্ষা প্রাচীন হওয়া অসম্ভব ও অসকত নয়। মহুদংহিতা ও আখলায়নাদির গৃহস্ত্তেও ইতিহাস-পাঠের বাৰস্থা আছে *। মহাভাৱত ইভিহাদ বলিয়া প্ৰিগণিত। ভদ্মুদারে क्लुक ভট के रेलिशन भरकत कर्य मशंचात्र छात्रि विलया बार्या करत्रन । কিন্তু সেটি । লেহ-স্থল। ঐ বর্ত্তমান বৃহৎ পুস্তকের অনেকাংশ শিব ও বিষ্ণুর মহিমা বর্ণনে পরিপূর্ণ। যদি ঐ পুত্তক মহুসংহিতা রচনা বা সকলনের সময়ে প্রচলিত থাকিত, তাহা হইলে তাহীতেও ঐউভয় দেবতার মাহাত্মা-বিবরণ ও উপাসনা-প্রদক্ষ সলিবেশিত হইত। তবে ঐ ইতিহাস শব্দ বর্ত্তমান মহা-ভারত-বাচক না হউক,: উহার অন্তর্ভুতি মূল উপাথ্যান ও অন্য অন্য প্রাচীন উপাথ্যান-বিশেষ প্রতিপাদক হওয়া সন্তব। পশ্চাৎ পুরাণ-প্রসঙ্গে দৃষ্ট হইবে, প্রচলিত পুরাণ ও মহাভারত রচিত ও স্কলিত হইবার পুর্বে প্রাচীনভর এছ বা প্রবন্ধ-বিশেষ পুরাণ ও ইতিহাস বলিয়া প্রসিদ্ধ ছিল। সেই সমস্ত ইতিহাস একণকার প্রচলিত মহাভারতের অন্তর্নিবিষ্ট থাকা সর্বতোভাবে সম্ভব। এরপ জনপ্রবাদই আছে যে, 'ভারত ছাড়া কথা নাই।"

পশ্চাৎ হরিবংশের প্রদক্ষে দৃষ্ট হইবে, বাসবদন্তা-রচয়িতা স্থ্বরু খৃষ্টান্দের সপ্তম শতান্দীর প্রারন্তে অথবা তাহার কিছু পূর্বেব বিদামান ছিলেন ও তাঁহার সময়ে হরিবংশ-পুত্তকও সচ্গাচর প্রচণিত ছিল। মহাভারতের অপরাপর অংশ তদপেক্ষার প্রাচীন ইহাও ঐ স্থলে দেখিতে পাওগা যাইবে। অভ এব আদি, সভা, বন প্রভৃতি অষ্টাদশ পর্ব্ব ঐ সময়ের বহু পূর্ব্বে সঙ্কলিত ও বির্চিত হয় তাহার সন্দেহ নাই। বাসবদ্ভার অন্তর্গত কুক্ক-বংশ, ভয়ত-বংশ,

^{*} আখলারন গৃহস্তাও। ও।। 🕂 মহুসংহিতা। ুও বেওহ লোকের টীকা।

শাস্তম্প্রান, ভীন, অর্জুন, দ্রোণ, কর্ণ, ক্লফা, ক্লফা, গুইছার, কীচক, ব্ররণা বিরাট, উত্তরগোগ্রহ, উত্তরগোগ্রহে ব্ররণার প্রকাশ, ভারত-বৃদ্ধ, মহাভারত-বৃদ্ধ, দৃত-ক্রীড়ার পাশুবগণের রাজ্য-চূচ্চি, ছর্গ্যোধনের উক্ল-ভঙ্গ, ভীরের শর-শ্যা উল্ল, দ্রোণ ও শকুনি ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রগণ সম্বলিত ক্ল-সৈন্যের অধ্যক্ষ, অর্জুনের বাণ দারা ক্লুল-সৈন্য সমাক্রান্ত ইত্যাদি মহাভারতীর মূলো-পাধ্যান সংক্রান্ত প্রধান প্রধান ব্যক্তির নাম ও যুদ্ধাদি নানা বিষয়ের উল্লেখ এবং ঐ গ্রন্থের প্রস্থান উপস্থিত নত্ন, পুরোরবা, ছল্লন্ত ও শকুন্তনা-প্রসঙ্গ, নল ও দ্বরন্তী-প্রতাব প্রভৃতি মহাভারত্ব সংক্রান্ত বিষয়ের প্রস্তাব প্রভৃতি মহাভারত্ব সংক্রান্ত বিষয়ের প্রস্তাব প্রক্রিণ বিবর সমস্ত উত্তরোত্তর পাঠ করিতে করিতে, তাঁহার সময়ে কোনরূপ অবস্থাপর বর্তমান মহাভারতই প্রচলিত ছিল এই রূপ প্রতীতি হইতে থাকে। ফলতঃ ঐ গ্রন্থে পর্যন্তিত মহাভারতের নামও স্থাপাই লিখিত আছে।

"भारतेनेव सुपर्व्वणा। *"

ধার্বার্ প্রদেশের অন্তর্গত ইবরী নামক স্থানের একটি শৈব মন্দিরে ধোনিত শিরনিপি-বিশেবে কানিনাসু ও ভারবির নাম উল্লিখিত আছে। ঐ সমরের মধ্যে তাঁহাদিগের যশঃ-সৌরভ চতুর্দিকে ব্যাপ্ত হইবা বার। উহা পাঁচ শত ছব শতাব্দে অর্থাৎ পাঁচ শত চুরাশী খুটাকে থোনিত হর †। অতএব তাঁহারা ঐ সমরের পূর্বতিন লোক। বখন বাসবদন্তার প্রমাণাত্সারে খুটাকের সপ্তম শতাকীর প্রারম্ভে ও তাহার পূর্বের মহাভারত বিদ্যান ছিল খীকার

[°] ঐ সমরে একরপ রামারণও বিদ্যান ছিল। বাসবদন্তার কেবল রাম, লক্ষণ, ভরত, শক্রম, এনক, অনক-বজ্ঞত্মি, সীতা, দশবণ, রাবণ, কনক-মৃগ কর্ভুক রাবের চিড়াকর্বণ, স্থান, স্থান-স্থোক-স্

[&]quot;रामाय येनैव सुन्दराकाख चावचा।"

অন্তএৰ হ্ৰব্ৰুৰ সময়ে ও তাহাৰ কিছু পূৰ্বে অৰ্থাৎ ন্যাধিক চৌৰু শত বংসর পূৰ্বে কোনত্ৰপ অবহাপর বৰ্তমান রামারৰ ও মহাভাৰত সচরাচর প্রচলিত ছিল ইহাতে আর কিছুমান সন্দেহ নাই। বে দেশ-সম্মীর কোন প্রাচীন বিব্যের সময় নিরুপণ করা ছঃসাধ্য বা অসাধ্য বাাুপার, সে বেশের পক্ষে এটি একটি আদরণীয় কথা।

[†] The Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vo. IX, p. 315.

করিতে হইতেছে, তথন উহার ছই এক শত বৎসর পূর্বের গ্রহকারের। #
নিজ সমরে প্রচলিত মহাভারতীর উপাধ্যান অবশ্বন করিয়া অভিজ্ঞানশক্ষণ ও কিরাতার্জ্নীর রচনা করিরাছেন এ কথাও সর্বভোডাবে সন্তাবিত
ও র্জি-সিদ্ধ বলিতে হর। মৃদ্ধকৃতিক এই সম্পার অপেক্ষার প্রাচনে গ্রহ †।
এমন কি, খুটাকের বিতীর বা তৃতীর শতাকী অপেক্ষার কোন মতেই অপ্রাচীন
বোধ হয় না। তাহাতেও রামারণোক্ত রাম ও হন্মানাদির ন্যার মহাভারভোক্ত ধৃতরাই, ব্ধিন্তির, জৌপদী, স্ভভ্রাদির ‡ নাম সন্নিবেশিত আছে।
পশ্চালিধিত প্রোক্টিতে কুক ও পাত্তব বংশীরদের প্রদ্ধ-সহকারে বুধিন্তিরের
দ্যত-ক্রীভার পরাক্ষর ও পাত্তবদিগের বনবাস পর্যান্ত স্বন্সপ্ত লিধিত হইরাছে।

কালিদাসের সময় নিরূপণ বিষয়ে ইউরোপীর প্রধান প্রধান পশুন পশুত কর্তৃক এত বিভিন্ন মত প্রবর্তিত হইরাছে বে, তাহা পাঠ করিলে, এটি নির্দারিত হইবার বিষয় বলিয়াই মর্নে হর না। কেছ § তাঁহাকে পৃষ্টাব্দের বিতীয় কেহ বা ব ভূতীয় বা ষঠ, কেহ কেহ বা || পঞ্চম ও কেহ বা ** ষঠ শতান্দীর লোক বলিয়া বিবেচনা করিয়াছেন। কালিদাস উজ্জ্বিনীর স্বধীশ্বর বিক্রমাণিত্যের সভাসদ ছিলেন এইরূপ প্রাসিদ্ধি আছে। বিক্রমাণিত্য নামে নান রাজা নানা সময়ে উজ্জ্বিনীর রাজুসিংহাসনে অধিক্রচ থাকেন; এই নিমিন্তই, কালিদাস কোন্ বিক্রমাণিত্যের সভাসদ ছিলেন; ইহা নিরূপণ করা ত্রসাধ্য স্বধা অসাধ্য হইরা উঠিয়াছে।

ভারতবর্ষীর লোকের বিখাস এই বে, একণে বে বিক্রমাণিত্যের সহতের বিংশ শতান্দী চলিতেছে, অমর, কালিদাস, বরাহমিহির প্রভৃতি নবরত্ব তাঁহারই সভাসদ ছিলেন। কিন্তু সেই প্রবাদটি বে, কোন রূপেই সম্ভব ও সম্ভত নর

অভিজ্ঞানশক্তল এপেতা ক্পাসিত কৰি কালিদাস পৃষ্টাব্যের বিভীর শতাকীর পর

 বট শতাকীর পুরে বিদ্যাসাল ছিলেন।

[†] শৈ ব-সম্প্রদার ৬ পৃঠা দের। তথার মুদ্ধকটক কেনর্কি অর্থাৎ সংস্কৃত শাল্লোক্ত কনিক রাজার উত্তরকালে রচিত বলিয়া বিবেচিত ক্ষরাছে। শ্রীনান্ কেসেনের বিচার:সুসারে বিবেচনা হর, ঐ রাজা খ্রীষ্টাক্ষের প্রথম শতাক্ষার প্রথম তানে রাজত ক্রেন।

I अपन बदक मकादबब केकि दाव।

[§] **ल**द्मन् । 🦥

⁴ CACAR

[|] विन्तिन, छेरेन, स्मार्ड । अन विन्देशन् ।

^{**} है। दें हात्र मक्काल्यारत्र कानियान «१०, ३०० ७ ३००० क्होरक वित्रासनाम फिल्हा वासात्र अंकहित मकानम हिरमन।

ইহা পৃর্বের্ব প্রদর্শিত হইয়াছে *। খ্রীদেব-প্রণীত বিক্রমচরিত নামে একথানি গ্রাছে উজ্জায়নীর অধীশ্বর বিক্রমাদিত্যের চরিত-বর্ণন আছে, কিন্তু তাহাতে কালিদাসের কিছুমান্র প্রদক্ষ নাই। ভাওদান্ধি কালিদাসকে খ্রীষ্টাব্দের মন্ত্র শতাক্ষীতে বিদ্যমান হর্ষ-বিক্রমাদিত্যের সভাসদ বলিয়া প্রতিপন্ন করিবার চেষ্টা পাইয়াছেন এবং ঐ উজ্জায়নীবিয়ান্ধিত কবি-কেশরী ও কাশ্মীর-রাজ্যাধিপতি মাতৃগুপ্ত এই উভয়ের চরিত-বিষয়ক উপাধ্যানের যৎকিঞ্চিৎ সাদৃশ্য দেখিয়া এই অভিপ্রান্ধ প্রকাশ করিয়াছেন যে, যিনি কালিদাস, তিনিই মাতৃগুপ্ত †। এই উভয় এক ব্যক্তির নাম হইলে, অভিজ্ঞানশক্তল-প্রণেতা ভারতবর্ষীয় কবি-সম্রাটের সমন্ন নির্দ্ধারণটি নিঃসংশলে সম্পন্ন হয়। কিন্তু তাঁহার এই মতটিও স্বৃদ্ধ যুক্তি-সম্পন্ন ও সর্বতোভাবে বিচার-সিদ্ধ বলিয়া পরিগণিত হয় নাই। কোন বিষয় যেরূপ সংশ্বছেদ্দী যুক্তি সহকারে স্থাস্থিক হয় নাই । কোন ক্রিয়ে পারা যায়, ভাওদান্ধির প্রবন্ধে দেরূপ প্রদর্শিত হয় নাই ‡। স্থা-বিশ্বে কালিদাসের অন্ত অন্ত নাম লিখিত আছে বা, কিন্তু মাতৃগুপ্ত ক্রাপি নাই।

বে বিক্রমানিতার সম্বতের এখন ১৯০৮ অক্টেনিতেছে, কালিনাস প্রতৃতি নবরত্ব তাঁহার সভাদন ছিলেন এইরপ জন-প্রবাদ আছে একথা ইতি পূর্বেই উল্লিখিত হইরাছে, এবং দৈর উপর বৈ নির্ভর করিতে পারা যার না, ভাহাও পূর্বেই স্থাছে। তারির, ভোল নামক নৃশতি-বিশেষের সভাতে কালিদাস প্রভৃতি নয় জন পণ্ডিত; নবরত্ব নামে বিখ্যাত ছিলেন এইরপ একটি জনশ্রুতিও প্রচলিত ও লিপিবজুরহিয়াছে। একটি সংস্কৃত প্রবদ্ধে কালিদাসের ভোজ-সাক্ষাৎকার-সংঘটনের কৌতুকাবহ বর্ণন আছে। কালিদাস একটি জকিঞ্চিক্ষর কবিতার রচনা করিয়া ভোজ-সভাদদ শঙ্কর পণ্ডিতের হত্তে অর্পণ করেন। শক্ষর কাণিদাসকে হাস্যাম্পাদ করিবার উদ্দেশে সেই প্রোক-স্থণিত হাজসভাষা কইয়া যান-।

^{*} এই পুতকের তথম ভাগে প্রকাশিত উপত্মণিক ংশের ৫২ পৃষ্ঠা ও বিতীয় ভাগে প্রকাশিত উপক্ষণিকাংশের ১৭৬ ও ১৭৭ পৃষ্ঠা।

[†] The Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, 1861, pp. 19-30 and 207-230.

[‡] Bhau Daji's identification of him (Matrigupta) with Kalidasa does not rest on any reasonable foundation.—A. Weber on the Ramayana, 1873. Page 81,

कालिदासेन सहितो भोजराजसभां ययौ। भाषा दृष्टा स राजानमाशिषं प्रजगाद ह ॥

মহাপদ্যের উপক্রম। ৪।

(শহর) কালিদাসকে সমভিব্যাহারে করিয়া ভোজ রাজার সভায় উপস্থিত হুইলেন। কালিদাস রাজাকে দর্শন করিয়া আশীর্কাদ করিলেন।

বিক্রমাণিত্যের ন্যায় ভোজ নামে নানা রাজা নানা স্থানে রাজত্ব করিয়া গিয়াছেন। কাশ্মীর, মালব, উৎকল, রাজত্বান, কাশ্যকুজ প্রভৃতি বহুতর দেশের ইতিহাসে বা উপাথ্যানে ও কোন কোন স্থানের থোদিত লিপিতেও ভোজ-নামধারী ভিন্ন ভিন্ন নূপতির প্রসঙ্গ ও উপাথ্যান দেখিতে পাওয়া যায়। কেহ ৫৭৫২, কেহ ৪৮৬ †, কেহ ৩৭০ ‡, কেহ ৪৮৩ শ, কেহ ৮৭৬ §, কেহ সহস্রাধিক য়, কেহ ১১৬০ * * ও কেহ ১৫৭৬ † † প্রীষ্টাব্দে জীবিত ছিলেন এইরূপ লিখিত আছে ‡‡। তন্মধো মালব রাজ্যের অধীশ্বর ধারা-নগর-নিবাসী। ভোজ রাজা নিজে স্থপত্তিত ও পণ্ডিতগণের আশ্রম্ন ভূমি বলিয়া বর্ণিত হন। কালিদাসাদিকে তাঁহারই সভাসদ করা পূর্কালিখিত প্রবাদের উদ্দেশ্য §§।

- अवात-तःभोत वालय-ताल (Tod's Rajasthan, 1829, vol. I., p. 800)।
- † মালব রাজ্যের অক্ত এক রাজা (Journal Asiatique, Mai, 1844, p. 354)।
- ‡ Description Historique et Geographyque de l'Inde, par Teiffenthaler vol. I., p. I.
- ¶ মূল রাজার উত্তরাধিকারী (Prinsep's Indian Antiquities by Edward Thomas. vol. II., Part II., p. 250)।
- \$ কাজমুক্ত ও বোলালিয়নের রাজা (Colonel Cunningham's plates, pl. II., fig. 4. and Journal of the Asiatic Society of Bengal, vol. XXXI., p. 397)।
 - । ভোলপ্রবন্ধ, ভোলচম্পুও ভোলচরিতে বর্ণিত ভোল রালা। ১১৫ পুঠা দেখ।
 - * লোডোরবার রাজা (Tod's Rajasthan, 1832, vol. II., p. 242) !
 - †† হাবৌতির রাও ভোল (Tod's Rajasthan, 1832, vol. II., p. 475)।
- ‡‡ Journal of the Asiatic Society of Bengal, vol. XXX II., pp. 93-101 (74)
- §§ কিন্ত গ্রন্থকার-বিশেবে কার্লিদাসকে অপর ভোল-বিশেবেরও সভাসদ্ করির।

 বিতে ছাড়েন নাই। উৎকলের পুত্তক-বিশেবে লিখিত আছে, তথায় একটি ভোল

সিংহাসনদ্য বিংশিকায় ভোদদেব বিক্রমাদিভারে উত্তরকালীন লোক এইরূপ লিখিত আছে। কিন্তু কত উত্তর, তাহা নির্দ্দেশিত নাই। খোদিতলিপি-প্রমাণে প্রতিপন্ন হয়, ঐ রাজা ঐষ্টান্দের একাদশ শতাকীতে প্রাহৃত্ ত হন ♦। স্বতরাং তদস্পারে, ঐ নবরত্ব ঐ সময়ের লোক হইরা পড়েন। অতএব এ বিষয়ের,

রাজা খ্রী, পু. প্রথম ও বিভীর শতাকীর কিরদংশে রাজত করেন। তাঁহার সভার ৭০০টি কবি বিদ্যমান ছিলেন; কালিদাস তাহার স্কাপ্রধান।—Asiatic Researches, vol. XV., P. 259. রাসলীলার চিত্রপটে এক এক স্বীর পার্য-দেশে যেমন এক একটি কৃষ্ণরূপ চিত্রিত ছইরা থাকে, ভারতব্যাঁর উপাধ্যানে সেইরপ ভিন্ন ভিন্ন সময়ে বিদ্যমান বিভিন্ন ভূপতির সভার এক একটি কবি কালিদাসকে সন্নিবেশিত করা হইরাছে।

* অল্বীরাণী খ্রীষ্টাব্দের একাদশ শতাবাণীর প্রথমার্কে ভোজ রাজাকে আগনার সমকালীন বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন (১)। সৌভাগ্যক্রমে ভোজ-রাজার অধন্তন প্রুব-পরস্পরার নাম ও সময় নিঃসংশরে নির্দ্ধারিত হইরাছে। মেজর্ উড্ উজ্জিনী হইতে ইংলণ্ডের রএল্ এিসয়াটিক্ সোসাইটি নামক প্রসিদ্ধ সমাজে তিন থানি থোদিতলিপি প্রেরণ করেন এবং স্ববিগাত কোল্ত্রক্ ভাষার অর্থান্তেদ করিয়া প্রকাশ করেন (২)। সেতারা হইতেও ভোজবংশের বে খোদিতলিপি (৩) প্রাপ্ত হওরা যার, ভাষার সহিত উলিখিত তিন খোদিতলিপর বিশেষ কিছু বিভিন্নতা নাই। নাগপুর সমিহিত ওয়েন্সক্সা নদীর পশ্চিমতীরস্থ একটি দেবমন্দিরের একখানি থোদিতলিপিতেও ভোজবংশের বিবরণ আছে (৪)। গুজনপুর পরগণার অন্তর্গত পিরিয়ানগর গ্রামের একখানি ভাত্রপত্রে ঐ বংশীর উদয়াদিতা, নরবর্মা, বংশাবর্মা, জয়বর্মা দেব প্রভৃতি নুপত্তি-পরস্পরার প্রসক্ষ আছে। ভাষতে লিখিত আছে, জয়বর্মা। দেবের উত্তরাধিকারী হরিশ্চক্র দেব ১২০০ সম্বতে অর্থাৎ ১১৭৯ খ্রীষ্টাব্দে গোদান ও ভূমিনান করেন (৫)। এই সমন্ত খোদিতলিপি-প্রমাণে জানিত্রে পারা গিয়াছে, জালী-

⁽⁾ Journal Asiatique, Sept. 1844, p. 250.

^(*) The Transactions of the Royal Asiatic Society, vol. I., pp. 230-239 and 462-466. (Colebrooke's Essays, 1873, vol. 2., pp. 263 265.)

^(*) Deciphered and noticed by Prof. Lassen, and alluded to by Rajendra Lala Mitra in the Journal of the Asiatic Society of Bengal, vol. XXXII., p. 104.

^(*) Journal Bombay B. R. A. Society, Vol. I., pp. 259-281 (Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1863, No. II., p. 103.)

⁽e) Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol., VII. p. 736.

লিখিতই হউক বা ৰাচনিক্ই হউক, প্রস্পারাগত প্রবাদের প্রমাণ একবারেই

বর্ত্মার শিতা যশোবর্ত্মা, যশোবর্ত্মার পিতা নরবর্ত্মা, নর বর্ত্মার পিত। উদয়াদিত্য এবং উদরা-দিত্যের পিতা ভোষা।

(Sta

ঐ সমস্ত খোদিতলিপিতে দেখিতে পাওয়া বার লক্ষীবর্মা ১২০০ সম্বতে অর্থাৎ ১১৪০ খ্রীষ্টাব্দে এবং ভাঁহারু পিত। বশোবর্দ্মা ১১৯১ দম্বতে অর্থাৎ ১১০৫ খ্রীগালে বিদ্যমান ছিলেন। বশোদ্রশ্বার পিতা নরবর্দ্মা ১১৬১ সম্বতে অর্থাৎ ১১০৪ থীষ্টাব্দে বর্তমান ছিলেন। ঐ ঘশোবর্দ্মার প্রপৌত্র অর্জ্জনবর্দ্মা ১২৭২ সম্বতে অর্থাৎ ১২১৫ খীষ্টাব্দে রাজত করেন। যশোবর্ত্ম। ১১৯১ সম্বত্তে অর্থাৎ ১১৩৫ গ্রীষ্টাব্দে কার্ত্তিক মাদের গুরুপক্ষীর ষষ্ট্রমী তিথিতে নিজ পিতা নরবর্থার আছোপলকে ব্রাক্ষণবিশেষকে ছুইথানি গ্রাম দান করেন। অতএব নরবর্দ্মা ঐ বংস্বে অবধবা ভাহার কিচ পুর্বে প্রাণত্যাগ করেন বলিতে হট্বে। পুরুষ-পরম্পরার আয়ুঃ সংখ্যা বা নুপতি-পরম্পরার রাজত্বাল গণনা করিতে হইলে, গড়ে ২০০০ পঁচিশ ত্রিশ বৎসর করিয়া পড়ে। তদমুদারে, নরবর্ণা ও তদীর শিতা উদয়াদিত্যের রালত্বলাল-সমষ্টি নাুনাধিক পঞ্চাশ বংশর ইইতে পারে। ইহা হইলে উদ্রাদিতে র পিতা ভোল রালার রাজতকাল এটাবেদর একাদশ শতাকার শেষভাগে অতীত হওয়া সন্তঃ। ভোলচরিত ও ভোলপ্রবন্ধে নি:র্দ-শিত আছে, ঐ রাজা ৫৫ বংসর ৭ মাস ৩ দিন রাজসিংহাসনে অধিক্ষয় থাকেন। তদকুদারে খ্রীটাক্ষের একাদশ শতাকীর প্রথম ভাবে তাহার রাজ্যাভিবেক দম্পন্ন হর এইটিই প্রতীন্নমান হইরা উঠে। অতএব অল্বীকৃণী বে ভাষাকে আপনার সমকালবর্তী ৰলিয়া উল্লেখ করেন, তাহা ঐ সমস্ত ধোদিতলিপির প্রমাণ্যায়া সর্বতোভাবেই সক্ষত ও বিবেচনাসিদ্ধ বোধ হইতেছে। বাহা হউক, মালব রাজ্যের অন্তর্গত ধারানগর নিৰাসী ভোজ বাজা একাদৰ শতাকীতে বাজত করেন, ইহাতে কিছুমাত্র नव्यह बारे।

পরিতাপি করিয়। যুক্তি-পথ অবলম্বন করা শ্রেয়:। নবরত্ব * নামে নয় অবন পণ্ডিত বিক্রমাদিতা-বিশেষের সভাসদ ছিলেন, এ প্রবাদটি নিতান্ত অল্প প্রাচীন নয়। খুষ্টাব্দের ১০ম শতান্ধীতে বিরচিত বুদ্ধগয়ার একথানি খোদিতলিপিতে তাহা লিখিত আছে †। তাদৃশ সময়ে বিরচিত খণ্ডনথওখাদ্য-প্রণেতা শ্রীহর্ষ নিজ গ্রন্থের শেবভাগে কালিদাস-কৃত কুমারস্ভবের শ্লোকার্দ্ধ উদ্ভ

पूर्वेरिय लोकसिडलाडावहृताः केवलमसाभिरेव तर्कपद्याम-भिषितास्ततो न प्रबन्धेन निरस्यन्ते "विषव्यचोऽपि संबर्धेत्र स्वयं स्क्रेत्त-मसाम्यतम्।"

সে সম্দার লোক-প্রসিদ্ধ বিশিয়া পূর্ব্ব পূর্ব্ব পণ্ডিতেরা তাহা ব্যবহার করিয়াছে। করিয়াছেন। কেবল আমরাই তাহা তর্ক-পদবীতে অভিষিক্ত করিয়াছি। এখন আর প্রবন্ধ-রচনা ধারা নিরাস করা ধার না। যে বৃক্ষ সম্বন্ধন করা যার, তাহা বিষরক্ষ হইলেও আর স্বয়ং ছেদন করা যার না।

উদ্তি-চিহ্নে চিহ্নিত এই শ্লোকার্দ্ধ কালিদাসের কুমারসম্ভবের বিতীয় সর্বের ৫৫ শ্লোকের শেষ ছই চরণ। স্মতরাং কুমার হইতেই উদ্ভা

এই শ্রীহর্ণই নৈষধ-রচ্মিতা। তদীয় টীকাকার প্রেমচন্দ্রের ব্যাখ্যান্ত্র্সারে, নৈষধের ষষ্ঠ অধ্যারে ১১৩ শ্লোকে বণ্ডনথণ্ডথাদ্য গ্রন্থের আভাস পাওয়া যায়।
শ্রীহর্ণ খ্রীষ্টান্দের দশন শতাকাতে বিদ্যমান বলিয়া বিবেচিত হইয়াছেন। স্ক্তরাং কালিদাস ঐ সমরের পূর্বে জন্মগ্রহণ করিয়া স্বকীয় কীর্ত্তি-প্তাক। উড্ডায়মান করেন বলিতে হয়।

বাণভট্ট এটিান্দের সপ্তম শতাক্ষীর প্রথমাংশে বিদ্যমান ছিলেন ইহা পুর্বে প্রেদর্শিত হইয়াছে ‡। তিনি হর্ষচরিতের প্রারম্ভেই কালিদাদের প্রসক্ষ করিয়াছেন।

> निसर्गस्रवंग्रस्य कालिदाससर स्तिषु। प्रीतिर्मधुरसाद्रीसु मञ्जरीष्टिव जायते॥

পুষ্পমঞ্জরীতে লোকের যেকপ প্রীতি জন্মে, নিদর্গ দেবনন্দন অর্থাৎ স্বভাব

^{*} নবরত্ব নামে নর জন পণ্ডিত সম্বৎ-সংস্থাপক বিক্রমাণিভারে সভাসদ ছিলেন। এ প্রবাষটি জ্যোতির্বিধাভরণ ব্যতিরেকে অঞ্চ কোন সংস্কৃত গ্রন্থে বিদ্যমান নাই।

⁺ छनक्मिन > १७ श्री।

[🕽] উপক্রমণিকা ১৫২-১৫० পৃষ্ঠা

নিছ-শক্তিশালী কালিলাদের মধুর রগাভিষিক্ত স্থচারু বচনেও দেইরূপ হয়।

ष्या अव व व विवास के भाषा स्वतं श्रासं कन त्या क जो हो ।

০০৭ শকান্দে অর্থাৎ ৫৮৫। ৮৬ খৃষ্টান্দে: বিরচিত থোদিত লিপিতে কালিদান ও ভারবির নাম স্থাপট লিখিত আছে *। অতএব তিনি ঐ অন্দের উত্তরকালীন লোক নন, এইটিই নিঃদংশরের নির্দ্ধণিত হইল। উহার কত পূর্বে বিদ্যমান ছিলেন, ভাহার নির্বাচন করিবার উপার নাই বলিলেই হয়। রঘুবংশ ও কুমার সম্ভবে ফলিত জ্যোতিষ-সংজ্ঞান্ত এরূপ কতকগুলি কথা আছে যে, প্রীমান্ হ, যেকোবি একটি প্রবন্ধে সেই সমন্ত পর্যা-লোচনা করিয়া বিবেচনা করেন, ঐ ছই কাব্য খৃষ্টান্দের চতুর্থ শঙাকার মধ্যভাগ অপেকা প্রাচীন হওয়া কোন রূপেই সম্ভব নয় †। প্রীমান্ বেবেরও এই অভিপ্রায়ে অনুমোদন করিয়াছেন। ‡ উলিখিত ছই কাব্যে এইরূপ লিখিত আছে যে,

यहैस्ततः पञ्चभिरुञ्चसं स्रयेरस्र्यंगैः स्वितभागासम्पदम् । भस्त पुत्रं समये श्वीसमा विसाधना श्रक्तिरिवार्यमञ्चयम् ॥ वयुवरण । ०। ১०॥

বেমন প্রভ্শক্তি, মন্ত্রশক্তি ও উৎসাহশক্তি অক্ষয় ফল উৎপাদন করে, সেইরূপ, শচী-তুল্য রাজমহিধী স্থদক্ষিণা যথাসময়ে পুত্র প্রসব করিলেন। সেই সময়ে অস্থ্যাভিগামী পাঁচটি গ্রহ উচ্চ স্থান-স্থিত হইয়া তাহার সৌভাগ্য-সম্পদ স্চিত করিয়া দিল।

षयीषधीनामधिपस्य वृष्ठी तिथी च जामित्रगुणान्वितायाम्। समितवस्यु हिमवान् सुतायाः विवाहदीचाविधिमन्वतिष्ठत्॥ कृशात्रमञ्जरः। १। ১॥

^{*} The Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, vol. IX.. p. 315.

[†] Monatsberichte der Koniglich Preussischen Akademie der Wissenschaften zu Berlin, 1873, pp. 554-558. আমার পরমান্ত্রীয় নিতাসদর শ্রীযুত আনন্দ-কৃষ্ণ বহু বাবু অনুগ্রন্থ পূর্বক ঐ ব্যক্ষেবিরচিত প্রবন্ধের যুক্তি বিবরণগুলি আমাকে লিখিরা পাঠান; ইহাতেই এছলে প্রস্তাধিত বিবর প্রতিপাদন পক্ষে ব্ধেষ্ট উপকার দর্শিরাছে।

Weber's History of Indian Literature. 1878, P. 195.

হিমাণর চন্দ্রের শুক্লপক্ষীর জামিত্রগুণায়িত তিথিতে বন্ধ্বাস্ক্রব-সমভিব্যা-হারে কস্তার বিবাহ-সংস্কার-ক্রিয়ার অনুষ্ঠান করিলেন।

ৰত্গ্ৰহ উচ্চস্থিত হইলে রাজ্যাদি সম্পদ লাভ হয়, এমন কি পঞ্জাই উচ্চস্থ থাকিলে যে সে ব্যক্তিও রাজ্যপদ প্রাপ্ত হয়। এ কথাট লঘুকাতক নামক জ্যোতিষ-গ্রন্থে সম্পাষ্ট উল্লিখিত আছে।

> तिप्रस्तिभिक्चस्यैन्द्रिपवंश्मवा भवन्ति राजानः। पञ्चादिभिरन्यकुलोद्भवास तदत् तिकोणगतैः॥

> > লঘুকাভক । ১। ২৩।

ন্ন সংখ্যা তিন গ্রহ উচ্চ * স্থানে থাকিলে রাম্বক্লোন্তব ব্যক্তিগণ রামা হন। পঞ্গ্রহ উচ্চস্থানে থাকিলে অন্য বংশোন্তব ব্যক্তিগণও রামা হন। পঞ্গ্রহ যদি ত্রিকোণ্ড † হয়, তাহা হইলেও ঐরপ ফলপ্রদ হইবে।

ভারতবর্ষীরেরা যে এীক্দিগের নিকট হইতে জ্যোতিষ শাস্ত্র শিক্ষা করেন, এই পুস্তকের উপক্রমণিকার মধ্যে ভাহার কিছু কিছু প্রমাণ প্রদর্শিত হই-রাছে ‡। উল্লিখিত কুমানুরসন্তবোক্ত বচনের অন্তর্গত জামিত্র শন্দটি গ্রীক্-ভাষার ঐ অর্থ-প্রতিপাদক শন্দ বিশেষের সংস্কৃতরূপ বই আর কিছুই নর। মলিনাথ জামিত্রই শন্দের এরূপ অর্থ করিয়াছেন যে.

় * এক এক রাশি এক এক এহের উচচ্ছান বলিয়া নির্দেশিত আহাছে; বেষন রবির সেষ, চক্রের বৃষ, সঙ্গলের মকর, বুধের ক**ঞ**া, বৃহস্পতির কর্কট, ওকের মীন ও শনির তুলা।

> भेषीवषोस्गः कन्या कर्किमीनतुलाधराः । भास्तरादेभैवनुप्रचारराभयः क्रममस्त्विने॥

> > রঘুনন্দন-কৃত ভাোতিৰতত্ব।

† এক এক রাশি এক এক গ্রহের ত্রিকোণ বলিয়া ব্যবস্থিত আছে; বেমন রবির সিংহ, চল্লের বৃষ, কুলের নেব, বৃধের কস্তা, বৃহম্পতির ধমু. শুক্রের তুলা ও শনির কৃষ্ণ।

> सिंही तथय मेषय कन्या धन्धी घटी घट:। चर्जादीनां विकीषानि मूलानि राश्यः क्रमात्॥ द्रष्टुनमन-कृष्ट (क्राहियउ**ष्**।

‡ क्रमभावकात्र ३३१--३३१ मुझे दर्थ।

जामित्रं सम्नात् सप्तमस्थानम्।

লগ্ন * হইতে সপ্তম স্থানের নাম কামিত্র।

গ্রীকৃ ডিয়ামিট্স শব্দেরও অর্থ অবিকল এইরপ। উহার লাটিন্ রূপ ডিয়ামিটম্। শ্রীমান ক, মেটন্স্লাটিন্ ভাষায় উহার যেরপ অর্থ করেন, ভাহা পশ্চাৎ উদ্ভ হইভেছে। সেই অর্থ পুর্বোক্ত মলিনাথ কৃত জামিত্র শব্দের ব্যাখ্যার অবিকল অঞ্রুপ।

A Signe ad aliud signum. quod septimum fiuerit. hoc est diametrum.

এক রাশি হইতে সপ্তম স্থান স্থিত অন্ত রাশিকে ডিয়ামিট ম বলে।

কি স্থলর ঐক্য!—কি সম্পূর্ণরপ স্থলর ঐক্যই দৃষ্ট হইতেছে! পরস্পর দ্রন্থিত উভয় দেশীয় বিষয় বিশেষের এতাদৃশ অবিদিতপূর্ব ঐক্য-প্রতিপাদন অপার উল্লাসের বিষয়। ইহাতে কি অপারজ্ঞাত গুপুকথাই ব্যক্ত করিয়া দিতেছে! আরও দেখা। কুমারসন্তবে আমিত্রের যেরূপ গুণ উল্লিখিত হইয়াছে, শঘুক্লাতকেরও বচন-বিশেষে তাহার অন্থরপ তাৎপর্য্য নির্দেশিত আছে †। ঐক জ্যোতির্বিদেরা ডিয়ামিটু স্ রাশিরও সেইরূপ শক্তি বর্ণন করিয়াছেন। কুমারসন্তব ও ঐক জ্যোতিষ উভয়ের মতেই উহা উদাহ-পক্ষেত্তকর। ফ, মেটনুস্কুস্পর্ট লিথিয়াছেন, ডিয়ামিটু ম্ অর্থাৎ ঐ সপ্তম রাশি বা সপ্তম স্থান হইতে উদ্বাহ্ণকাল নিগ্র করিতে পরো যায়।

ex hoc loco quantitatem quaeramus nuptiarum (Firm. Mat. II. 22, 7.)

কুমারসম্ভবের পূর্ব্বোক্ত বচনে রাশি-বিশেষস্থ চক্রকল। স্ত্রীলোকের উদাহ-পক্ষে শুভকর বলিয়া নির্দ্ধেশিত আছে। লবুজাতকেও স্ত্রীলোকের পক্ষে চক্রের বিশেষরূপ শক্তি বর্ণিত হইয়াছে :। গ্রীক্ জ্যোতিবিদ টলেমিও চক্রকে

^{*} মেব, বৃষ, মিথুনাদি রাশির উদয়কে লগ্ন বলে।

⁺ भन्ठालिथि वठन (मणा

[‡] स्त्रीपुं सीजंग्राफलं तुल्यं किन्त्रत्र चन्द्रलग्न स्थम्। तरल्यीगारपुराकृतिय सीभाग्यमसमये॥

লঘুজাতক ৷ ২ ৷ ১ ৷

রী ও পুরুবের জন্ম ফল জুলা, কিন্তু এছলে (অর্থাৎ ব্রীলোকের গক্ষে) লগ্ন ও চক্র উভয়ই কলপ্রদ। তাহাদের বলামুদারে শ্রীর ও আফুতি হয়। আর বদি লগ্ন হইতে সথম র শিতে চক্রের অব্ছিতি হয়, তাচা হইলে ব্রী দেভিগোবতী হইয়া শাকে।

⁴रे वहन्छि (क्यांकिव:विशेषिकात द्वारलात्कत सन्त्र-कल-कथन श्राचादन छेकुछ एरेवार्ड

স্ত্রীলোক-সম্মীর বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। এমন কি, কুমারসম্ভবের ন্যার উহোরও গ্রন্থে লিখিত আছে, শুক্রপক্ষীয় চন্দ্র স্ত্রীকাতির পক্ষে শুভপ্রদ।

সংস্কৃত জ্বাতকগুলি এটক শাস্ত্রের অনুষ্থী। ঐ জ্যোতিষ শাস্ত্রের নাম হোরাশাস্ত। ভারতব্যীয় হোরাশাস্ত গ্রীক জ্যোতিষ অবলম্বন করিয়া রচিত **इत्र का**ना गित्राष्ट्र ∗। रहातां है धीक् भवा। शृत्वि विथिष्ठ इटेब्राएक्, वदाह-মিহিরের একথানি গ্রন্থের নাম হোরাশান্ত। যেকোবি গ্রীক ক্যোতিষের সহিত ভারতবর্ষীর জ্যোতিষ শাস্ত্রের ঐক্য করিয়া প্রদর্শন করিয়াছেন, গ্রীক-দিগের ঐ শাস্ত্র সর্বতোভাবে সম্পূর্ণ হইবার পর, ভারতবর্ষীয়ের। তাঁহাদের নিকট উহা গ্রহণ করেন †। গ্রীস্ দেশীয় হোরাশাস্ত্র খুটাব্দের তৃতীয় শতা-কীতে সম্পূর্ণ হয়। অনত এব ভারতবর্ষে উহা ঐ শতাকীর পর ভিন্ন পূর্বে কদাচ ষ্পবতীর্ণ হওর। সম্ভব নর। উলিখিত হুই কাব্য গ্রন্থে ঐ শাল্পে গ্রন্থকারের যেরপ পারদর্শিতার পরিচয় প্রাপ্ত হওয়া যার, তঃহাতে তাঁহার সময়ে ভারত-ৰুৰ্বে ঐ বিষয় বিলক্ষণ প্ৰচাৱিত হইৱাছিল বলিতে হয়। এই সমস্ত পৰ্যা-লোচনা করিয়া দেখিলে, ঐ ছই গ্রন্থ খুটান্দের চতুর্থ শতান্দীর মধ্যভাগের পুর্বের विविष्ठि इश्रा कानकालि मञ्जर त्यां इम्र न्। देखि शृर्कि तथामिखनिनिव व्यमानाक्षमादा निः मः नादा निक्तिनि इदेशाष्ट्र, कालिनाम श्रृष्टीत्कत वर्ष मठाकीत শেষ ভাগের পূর্বভিন লোক ‡। অতএব তিনি ¶ শ্বষ্টান্দের চতুর্থ শতাব্দীর মধ্যভাগের পর ও ও ষ্ঠ শতান্দীর শেষভাগের পূর্ব্বে বিদামান ছিলেন এইটিই একরপ প্রতীয়মান হইয়া উঠিতেছে। কিন্তু এই উভয় সীমার মধ্যস্থলে কোন

- উপক্রমণিকার ১১২—১১৫ পৃষ্ঠার এবিষয় দেখ।
- + Dissertation de Astrologiae Indicae "Hora." Bonn 1872, pp. 12 and 13.
 - ‡ २१७ पृष्ठी।
- শ কালিদাস-প্রণীত স্প্রচলিত কারকথানি কাব্য-নাটক ব্যক্তিরেকে অপর করেকথানি প্রস্থ উাহারই বিরচিত বলিয়া লিখিত আছে; বেমন জ্যোতির্বিদাভরণ, শত্রুপরাভব, রাত্রি-লগ্ননিরপণ ইত্যাদি। কিন্তু এইগুলি নানাকারণে অপরাপর লোকের রচিত বলিয়া অসুমিত হইয়াছে। রঘুনংশ ও কুমারসম্ভব-প্রণেতা কালিদাস খ্রীষ্টান্দের চতুর্থ শতংশীর উত্তরকালীন লোক এইটিই প্রতিপাদৰ করা এছলের উদ্দেশ্য জ্ঞানিতে হইবে। প্রীমান্ বেবের অসুমান

নির্দিষ্ট সময়ে জিনি প্রার্হভূত হন, তাহার নিঃসংশরে নিরূপণ করিবার উপার দেখিতে পাওয়া যার না। তবে জিনি পূর্ব্বোলিখিত নবরত্বের অন্তর্গত অমর ও বরাহমিহিরের সমকালবর্তী বলিয়া যে চির-প্রবাদ আছে, তাহার সহিত ঐ উভয় সীমা-নির্ণয়ের কিছুমাত্র অসক্ষতি নাই বলিতে হইবে। সেই প্রবাদটি প্রামাণিক হইলে, যথন বরাহমিহির খুষ্টাব্দের ষষ্ঠ শতাকীর মধ্যভাগে বিদ্যমান বলিয়া প্রতিপন্ন হইয়াছেন *, তথন তাঁহাকেও খুষ্টাব্দের ঐ শতাকীর লোক বলিয়া বিবেচনা করিতে হয়।

কালিদাসের নামোচ্চারণ মাত্র তদীর গুণ-গ্রাম শ্বরণ হইরা শরীর ও মন পুলকিত হইরা উঠে। পূর্ব্বকালে ভারতমগুলে যত বিষয়ের যত গ্রন্থ রচিত হয়, তাহার মধ্যে সাহিত্য-বিষয়ক রঘুৰংশ ও অভিজ্ঞানশকুষ্তল সদৃশ সর্বাজ্ঞাল নিক্ষণ নিক্ষণ প্রথমন পুত্তক কোন বিষয়েই বিদ্যমান নাই। ঐ উভয় পাঠ করিতে করিতে নিরস্তর একরূপ অপূর্ব্ব চিন্ত-চমৎকার উপস্থিত হইয়া নিরূপম স্থানশ্বল স্বর্গ স্থথ অমূভূত হইতে থাকে। তাঁহার উপমার তো উপমা নাই। অবনিমপ্তলে উটি একটি অবিতীশ পদার্থ হইয়া রহিয়াছে। উৎপ্রেক্ষাও সেই-রূপ। তাঁহার শভাববর্ণন অতীর্ণ মনোহর। তদীয় বলবৎ ভ্রমণোৎসাহ ও নৈস্বর্গিক বস্তু পর্যাবেক্ষণ-বাসনাও তাঁহার অসাধারণ প্রকৃতির পরিচায়ক। ভারতবর্ষে এখন ভাদৃশ পর্যাবেক্ষণ-শক্তি ব্রি আর বিদ্যমান নাই। ফলতঃ তিনি ভারতভূমির অসাধারণ প্রাল্বশ্ব।

কেহ কেহ তদীর গুণে মুগ্ধ হইরা তাঁহাকে কবিছ-গুণের সর্কাংশে সমানক্সপ প্রধান শক্তিশালী বলিয়া বর্ণন করেন; এমন কি, ভূমগুলের কোন কবি

করেন, রঘুবংশ:ভোজ-বংশীর নৃপতি-বিশেষের প্রীতি-সাধন উদ্দেশে বিরচিত ছর (১)। আর দিকে, শত্বে পাতৃবঙ্গ পঞ্জিত একটি প্রবজ্জে রঘুবংশ, কুমারসম্ভব ও অভিজ্ঞানশকুন্তলের নারা অংশে পরশ্বের সোসাদৃষ্ঠ প্রদর্শন করির। ঐ তিনই এক গ্রন্থকারের গ্রন্থ বলির। বিবেচনা করিরাছেন (২)।

প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৫২ পৃঠা।

⁽³⁾ Weber's History of Indian Literature, 1178, p. 195.

⁽२) Transactions of the London Congress of Orientalists, 1876, pp 227—254 (甲4)

কোন বিষয়ে তাঁহার অপেকা অধিকতর শক্তি প্রাপ্ত হন নাই। কিন্তু মানবীয় মনের তল-স্পর্নী সের পিয়র গান্তীর্য্য-মহার্থি মিল্টন্, প্রচণ্ড তেজশুরী প্রংক্তাপালী বায়্রন্থ করণ, গান্তীর্য্য, রৌদ্রাদি বিবিধ-রস-সিদ্ধু সার্ব্যানিধান বাল্মীকির নাম বিদ্যমান থাকিতে উল্লিখিত অভিপ্রায়ে অমুমোদন করিতে পারা বায় না। কিন্তু মধুরতা বিষয়ে কালিদাস কোন দেশের কোন কবি অপেকা নান নন। রঘুবংশ ও অভিজ্ঞানশক্তলের স্থাময় স্বভাব-বর্ণনাদি অধ্যয়ন করিতে করিতে সংশয় হয়, কালিদাস কি ভারতবর্ষীয় ? যদি সংশ্বত সার্বাসিক কাব্য-প্রণেতা অপরাপর সমস্ত কবি ভারতবর্ষীয় হন, তবে কালিদাস ইয়ুরোপীয় ! কিন্তু ইয়ুরোপীয় কবিতা কবির্থ-সামগ্রী পরিপূর্ণা রসবতী ভারত-ভূমিতে অবতীর্শ হইলে ধেরূপ চমৎকারিণী হওয়া সন্তব্ , কালিদাসের কবিতা সেইরূপই! ইয়ুরোপীয় স্থাতিগণেই অন্বিতীয় আগ্রায় তাজ্ প্রস্তুত করিয়াছে।

एतत्तबृतराष्ट्रचक्रसद्यं मेघात्यकारं नभी
हृष्टो गर्ज्जति चापि दर्पितवली दुर्व्योधनी वा शिखी।
प्रच्चतृतजितो युधिष्ठिर इवारखंगतः कीकिली
इंसाः सम्मति पाख्वा इव वनादज्ञातचर्यं गताः।

মুচ্ছকটিক পঞ্চম অহ।

মেখাদ্ধকারময় গগনমগুল ধৃতরাষ্ট্রের কৌশলচক্রের সদৃশ হইরাছে। ময়্র বল-দর্পে দর্পিত ছর্যোধনের তার হাই মনে গর্জন করিতেছে। কোকিল দ্যুত কৌড়ায় পরাজিত যুধিষ্ঠিরের স্থায় বন-মধ্যে গমন করিয়াছে। পাগুবেরা যেরূপ বনবাস পরিত্যাপ করিয়া অজ্ঞাতবাসে অবস্থিতি করেন, সম্প্রতি হংসগণ সেই-রূপ বন (অর্থাৎ জল) পরিত্যাপ করিয়া অজ্ঞাত-চর (অর্থাৎ অদৃশ্র) হইয়াছে।

এই গ্রন্থে বামারণ ও মহাভারতোক্ত উল্লিখিতরূপ বিষয় সমূহ সন্নির্দেশিত থাকিয়া মৃচ্ছকটিক-প্রণয়ন-কালে ও ভাহার কিছু পূর্ব্বে ঐ ছই মহাকাব্য বা ভুতদীয় মুলোপাথ্যান-প্রচলন পক্ষে সাক্ষ্য দান করিতেছে। ঐ ইবলীর খোদিত লিপির তারিখে ভারত-যুদ্ধের স্থুন্সাই উল্লেখ আছে।
ঐ লিপি ঐ যুদ্ধের ৩৭০০ তিন হাজার সাত্রণত ত্রিশ বংসর পরে খোদিত বলিয়া
লিখিত রহিয়াছে। ইহার পূর্ব্ধে খুটাব্দের চতুর্থ শতাব্দীর প্রথমার্দ্ধে খোদিত
চালুক্য ও গুর্জ্জর রাজ-বংশীয়দের তাত্রপত্রে কতকগুলি শ্লোক সন্নিবেশিত আছে।
তাহা যুখিটিরকে সন্বোধন পূর্বক লিখিত ও বেদব্যাস কর্ত্বক বিরচিত * বলিয়া
উলিখিত হইয়াছে †। অত এব ঐ সমুদার তাত্রপত্রাদি খোদিত হইবার সময়ে
মহাতারতীয় মূল উপাধ্যানটি, এবং ব্যাসোক্তির উল্লেখ থাকাতে বোধ হয় য়ে,
এক রূপ মহাভারত গ্রন্থই প্রচলিত ছিল। আর নাসিক নামক স্থানের গিরিগুহার খুটাব্দের প্রথম বা চতুর্থ শতাক্ষীতে ‡ খোদিত কতকগুলি লিপি বিদ্যমান
আছে, তাহার এক থানিহত ভাম, অর্জুন, জনমেজ্বরের সহিত মহারাজ গোত্রমী
প্রত্রের তুলনা করা হইয়াছে শ ।

অষ্টাদশ পর্বের কোন পর্বেন্যনাধিক সতর শত বৎসরের মধ্যে সংঘটিত কোন স্থনির্দিন্ত ঘটনা ও স্থনিশ্চিত বিষয়ের কিছুমাত্র নিদর্শন লক্ষিত হয় না। অতথ্য ঐ সমস্ত ঐ সময়েক মধ্যে বিরচিত বলিয়া অনুমান করিবার কোন কারণ নাই।

পশ্চাৎ দৃষ্ট হইবে, পূর্ব্বোল্লিখিত করণ্যক্রকার আখলায়ন ও বৈয়াকরণ পাণিনি প্রায় এক সময়ে অথবা কিঞ্চিৎ অগ্র পশ্চাৎ জীবিত ছিলেন। সেই পাণিনির ব্যাকরণে মহাভারতীয় মূলোপাথ্যানের বছবিধ বিষয় লক্ষিত

^{* &}quot;उन्नच भगवता वेदन्यासेन व्यासेन"।

[†] The Journal of the Royal Asiatic Society, New Series, vol. I. pp. 269, 270 and 276.

[‡] উহার তারিধ উনবিংশ সংবৎসর বলিয়া লিখিত আছে। উটি প্রচলিত সংবৎ হইলে, সাতান্তর খুটাক এবং বল্ভি অব হইলে তিন শত সাঁইত্রিশ খুটাক হয়।

श राम केसवे जुन भीमसेन तुलपरकामस * * * * * * खभाग नहुस जनमेजय सकार (कारि ?) यथाति रामा वरिस समतेजस ।

রাম, কেশব, অর্জুন ও ভামসেনের তুল্য পরাক্রমশালী * * * * । পতাপ, মহস অনমেজর, শকারি অর্থাৎ বিক্রমাদিত্য, ব্যাতি ও বলরামের তুল্য তেলখী। Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, vol. V. p. 41.

ছইরা থাকে। তদীর স্ত্তের মধ্যেই কুক্স-বংশ, অর্জ্জুন, ব্ধিন্তির, বাস্থদেব ও সহাভারতাদি নামের প্রসঙ্গ বা স্থাপাই নিদর্শন বিদ্যমান রহিরাছে।

ऋषान्धकवृश्चिक्तस्यस् ॥ (८।२।२८८।)

ঋষি, অন্ধক, বৃষ্ণি, কুরু এই সমস্ত বংশ-বাচক শব্দের উত্তর অপত্যার্থে অণ্ হয়: যেমন বাপুদেব, নাকুল, সাহদেব ইত্যাদি।

वासुदेवाजु नाभ्यां वुन् । (८।०१४)

্বাস্থাবে ও অর্জুন এই ছই শব্দের ষষ্ঠার্থে বৃন্ আদেশ হয়; ধেমন বাস্থ-দেবের প্রতি যাহার ভক্তি, দে বাস্থাদেবক, এবং অর্জুনের প্রতি যাহার ভক্তি সে অর্জুনক।

मन्दान् ब्रीश्चपराङ्गग्रष्टीष्वासजावालभारभारतहैलिहिलरीरव-प्रवृद्धेषु । (৬।২।৩৮।)

ত্রীহি, অপরাহ্ন, গৃষ্ঠী, মাদ, জাবাল; ভার, ভারত, হৈলিহিল, রৌরব, প্রবৃদ্ধ এই দশ শব্দ পরে থাকিলে, তাহাদের পূর্ব্বে মহৎ শব্দ সংযুক্ত হয়; যেমন মহাত্রীহি, মহাপরাহ্ন, মহাভারত * ইত্যাদি।

नभ्याज्नपात्रवेदोनासत्यानमुचिनकुजनखनपु'सकानच्रत्नकानोकेषु प्रक्रत्या । (৬।৩)৭৫।)

নভাজ, নপাত্, নবেদস্, নাসভাা, নম্চি, নকুল, নধ্, নপুংসক, নক্ষত্ত, নক্ত্র, নক্ত্র, নক্ত্র, নক্ত্র, নক্ত্র, নক্ত্র, নক্ত্র, নক্ত্রক্তি এই সকল শব্দের প্রকৃতি-ভূত নঞ্জ্ঞধাৎ নিষেধার্থক নকারের লোগ হয় না; যেমন যার কুল নাই, সে নকুল ইত্যাদি।

गवियुधिभ्यां स्थिर:। (৮।०।०८।)

গৰি ও যুখি শব্দের উত্তর স্থির শব্দের সকার স্থানে ধকারের আদেশ হর; বেমন গবিভিন্ন ও যুখিটির।

[্] শ্ৰীমান্ বেঁবের এছলের মহাভারত শক্ষ ভারত-ক্লোভব প্রধান ব্যক্তিবাচক বলিয়া বিবেচনা করিয়াছেন। (History of Indian Literature translated by Mann and Zachariae, p. 185.) ইবা ব্ইলে, মহাভারতে বর্ণিত ভারত-বংশের বিষয় পাণিনির সময়ে স্থানিক হিল ইহাই বিজ্ঞাপন করা এই স্থা উদ্ভ করিবার উদ্দেশ্য মনে করিতে হইবে।

এই করেকটি প্রের মধ্যে খিতীয় প্রে প্রকাশ করিতেছে, পাণিনির সময়ে অর্থাং তাদৃশ পূর্ব্বকালীন মহাপুরুষ বলিয়া পরিগণিত ছিলেন। পাণিনি-প্রের ব্যাখ্যাতে উলিখিত সমুদায় নাম এবং ভীম, সহদেব, কুন্তী, মাদ্রী স্বভ্রায় নাম ও ভারতসংগ্রামের বিষয় স্থাপন্ত লিখিত আছে *। কলতঃ পাণিনি ব্যাকরণ পাঠ কর্মিয়া গেলে, তাহা রচিত হইবার সময়ে মহাভারতীয় মূল উপাধ্যানটি একটি লোক-প্রসিদ্ধ প্রাতন কথা বলিয়া প্রচলিত ছিল, ইহা প্রতই প্রতীয়মান হইতে থাকে।

পতঞ্জলি ঐ পাণিনি-স্তের মহাভাষ্যের মধ্যে নকুল, সহদেব, ভীমসেন, ছ:শাসন ও চ্র্যোধনের নাফ লিখিয়া গিয়াছেন । তিনি ভীম, নকুল ও সহদেবকে কুরু-বংশীর এবং যু্ধিটিরকে অর্জুনের জ্যেষ্ঠ সহোদর বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন ‡। তাঁহার সময়ে ঐ সমস্ত ব্যক্তির নাম সর্বলোক-প্রসিদ্ধ ছিল এইরূপ প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন গু। কেবল কৌরব ও পাশুবগণের নামোল্লেখ করিয়া নিরস্ত হন নাই; ভারত যুদ্ধের বিষয়ও কীর্ত্তন করিয়াছেন।

धर्मीण स्म कुरवी युध्यन्ते । (৩।২।১১৮। সূত্রের ভাষ্য।) কুরু-বংশীয়েরা স্থায়-সঙ্গত যুদ্ধ করিয়াছিলেন।

এইরপ প্রচুর প্রমাণ ব্যতিরেকেও, মহাভাষ্যের মধ্যে একটি স্থলে § গ্রন্থবিশেষ হইতে উদ্ধৃত ও পাঞ্চব-মুদ্ধের বর্ণনাত্মক একটি বাক্য পদ্যছন্দে রচিত
দেখিয়া, রামক্ষ লোপাল ভাগুারকর বিবেচনা করিয়াছেন, পভঞ্জার সময়ে
মহাভারতীয় উপাখ্যান-বিষয়ক কাব্য-বিশেষ বিদ্যমান ছিল, ভাহা হইতে তিনি
উক্ত চরণটি উদ্ধৃত করেন। সে চরণটি এই,

श्वसिद्धितीयोऽ नुससार पाण्डवम् । चक्त्रा रुख कतिया পाखरवत পन्छार भन्छार गमन कतियाहित्वन ॥।

⁺ शानिन । हारास्ट, २१६ छ ३११॥ हाराइरहा हाराहस्य हाराहस्य काराहरू

^{† 8, &}gt;, 8 এवः ७, ७, > मःश्रकं भागिनि-श्राजत्र छ। या ।

[‡] ২, ২, ৩৪ সংখ্যক পাণিনি স্ত্রের-ভাষ্যে।

গ ৮, ১, ১০ সংখ্যক পাণিনি স্তের ভাষ্যে।

[§] পাণিনির বিভীয় অধাায়ের বিভীয় পালের চব্বিশ হত্তের ভাষ্যে।

[🎚] পতঞ্জলির ও ভাঁহার পূর্বভেল এছকার-বিশেবের এছে পাওর শব্দ দেখিতে পাওরা

ঐ মহাভাষ্য-রচয়িতা মহাভারতীয় উপাধ্যান বিষয়ক গ্রন্থ-বিশেষ অবগত ছিলেন এমন নয়, বেমন, তৈতিরীয় আরণ্যকে ও সামবিধান আলগে সলিবিষ্ঠ

যাইতেছে। কাত্যায়নও পাণ্ড ও পাণ্ড নস্তান-বাচক পাণ্ড শব্দ ব্যবহার করিয়াছেন। কিন্ত পাণিনি-সত্তে পাণ্ড ও পাণ্ডব নাম বিদামান নাই। বেদ শাল্পে কুরু ও ভারত-বংশীর্দিগের নাম সন্নিবেশিত আছে, কিন্তু পাণ্ডব নাম দেখিতে পাণ্ডরা যায় না। ভূটহাতে কুরু-পাণ্ডবের যুক্ক প্রসঙ্গও দৃষ্ট হর না।—Muller's Ancient Sanskrit Literature, p, 44.

বৌদ্ধ-গ্রন্থকারেরা পাওব নামে পর্বন্ত-বাসী একটি জাতির নাম উল্লেখ করিয়া দিয়াছেন; তাহারা উজ্জ্বিনী ও কোশল-বাসীদের শক্ত ছিল। (Weber's H. I. Literature 1878, p. 185.) মহাভারতে পাওবদিগকে হন্তিনাপুরবাসী বলিয়া বর্ণন করা হইয়াছে বটে, কিন্তু প্রস্থেষ্ঠ ছল-বিশেষে লিখিত আছে, প্রথমে তাঁহারা হিমালয় পর্বতে থাকিয়া পরিবর্দ্ধিত হন।

एवं पाखीः मुताः पञ्च देवदत्ता महावलाः । * * *

* * विवर्षमानाले तव पुर्व्य हैमवते गिरौ॥

व्यक्तिशर्ख । ३२८।२१---२३।

এইরপে, পাভুর দেব দত্ত গাঁচটি মহাবল পুত্র, * * * সেই পবিত্র হিমালয় পর্বতে পরিবর্দ্ধিত হইতে থাকেন।

প্লিনি ও নোলিন্স্ নামে খ্রীক্ গ্রন্থকারের। ভারতবর্ধের পশ্চিখোত্তর দিকে বাহলীক দেশের উত্তরাংশে সোণ্ডিরেনা দেশের একটি নগরের নাম পাঙা বলিরা উল্লেখ করিরাছেন এবং সিক্ নদীর মুখ-সমীপথ জাতি-বিশেবকেও পাঙা বলিরা লিখিরা গিরাছেন। ভুগোলবিৎ টলেমি পাঙা নামক লোকবিশেবকে বিভণ্ডা নদীর সমীপত্ব বলিরা কীর্ত্তন করিরাছেন। কাডাায়ন একটি পাণিনিস্ত্রের বার্ত্তিকে পাঙ্ হইতে পাঙা শক্ষ নিপার করিরাছেন। লক্ষীধর ক্তৃত বড়্ভাষাচন্ত্রিকার মধ্যে কেকর বাহ্লীকাদি উত্তর দিক্ত কতকগুলি জনপদের সহিত পাঙা দেশের নাম উল্লেখ করিরাছেন এবং সে সমুদারকে পিশাচ অর্থাৎ অসভ্য দেশ-বিশেষ বলিরা কীর্ত্তন করিয়া গিরাছেন।

"पाख्यतेकयवाह्नीक * * * * • एते पैशाचदेशाः सुरः।''

হরিবংশে দক্ষিণ দিক্ছ চোল কেরলাদির সহিত পাণ্ডা দেশের নাম উল্লিখিত আছে। (হরিবংশ, ও২অ, ১২৪ লো।) অতএব উহা দক্ষিণাপথের অন্তর্গত পাণ্ডা দেশ। শ্রীমান্
উইল্,সন্ব্ বিবেচনা করেন, ঐ জাতীর লোক প্রথমে সোগ্ডিয়েনা দেশের অধিবাসী ছিল, তথা
হইতে ক্রমশঃ ভারতবর্ধে আসিরা বাস করে এবং উত্তরোম্ভর ঐ সমত্ত ভিন্ন ভিন্ন ভানে অধিবাস করিরা পশ্চাৎ হণ্ডিনাপুর-বাসী হয়, ও অবশেষে দক্ষিণাপথে সিরা পাণ্ডা রাজ্য সংস্থাপন
করে।—Asiatic Researches, Vol. XV, pp. 95 and 96.

রাজতরঙ্গিনীর মতে কাশ্মীর রাজ্যের প্রথম রাজারা কুল-বংশীর। অতএব তৎপ্রদেশ ছইতে পাওবদের হভিনার আসিরা উপনিবেশ করা সম্ভব। ভাঁহারা মধ্যদেশ-বাসী অবচ

शाद्याणा ग्रायक्षाः।—वार्षिकः।

'ব্যাস পারাশর্যা' শব্দ দৃষ্টে প্রভীতি হয়, তাদৃশ প্রাচীন গ্রন্থকারেরাও ব্যাস-সংক্রান্ত কথা জানিতেন, সেইরূপ ঐ ভাষ্যের অন্তর্গত 'শুক বৈরাসকি' শব্দ পাঠে জানিতে পারা যায়, পভঞ্জলি ব্যাস-বিষয়ক উপাধ্যানও জ্ঞাত ছিলেন ভাষার সন্দেহ নাই • ।

এই সমস্ত পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে, এইটি প্রতীয়মান হইয়া উঠে বে, পতঞ্জলি ও পাণিনির সমরে মহাভারতের মূল ব্রত্তাস্কটি একটি পুরাতন কথা বলিয়া প্রচলিত ছিল। পাণিনি ব্যাকরণ-স্ত্র ও কাত্যায়ন তাহার বার্ত্তিক করেন, এবং পতঞ্জলি ঐ উভয় লক্ষ্য করিয়া মহাভাষ্য প্রস্তুত করিয়া যান। পতঞ্জলি খু, পু, দ্বিতীয় শতান্ধীতে বিদ্যমান ছিলেন †। পাণিনি তাঁহার বহু

কিরপে পাত্র বলিরা পরিচিত হইলেন এই সমস্যা-প্রণার্থেই কি পাত্-পূত্র পাত্র বলিরা ক্রমশঃ একটি জনপ্রবাদ প্রচারিত হইলে ? তাঁহাদের জন্ম-বৃত্তান্ত ঘটিত গোলবোগ প্রসিদ্ধই আছে। লোকেও তাহাতে সংশ্র প্রকাশ করিয়াছিল তাহারও নিদর্শন পাওরা বার।

यदा चिरसतः पाण्डः कथं तस्रीति चापरे।

• আদিপর্বা১।১১৭।

অস্ত অন্ত লোকে ৰলিল, বহুকাল অভীত হুইল, পাণ্ডু প্ৰাণত্যাগ করিরাছেন; অভএব ই হারা ক্রিপে তদীর পুত্র হুইতে পারেন ?

ইয়ুরোপীয় কোন কোন প্রধান গ্রন্থ অমুমান করেন, পাওুও পাওব শব্দ সংক্রান্ত কথাগুলি প্রথমকার মহাভারতে সন্নিবিষ্ট ছিল না।—Muller's Ancient Sanskrit Literature, PP. 44—45 দেখ।

* Weber's History of Indian Literature, p. 184 (74)

কেবল হিন্দুর। নর, হিন্দুছেবী বৌদ্ধের ও বাদে নামের মহিমা বীকার করিতে ক্রটি করেন নাই। তাহাদের বৃদ্ধেদের একটি জন্মান্তরীণ নাম কন্ত-দিপারন। এটি কৃষ্ণ-ছৈপা-য়নের রূপান্তর বই আর কিছুই নয়।— Ibid.

† ১০ পৃষ্ঠা দেখ। পতপ্রলি মগধ-রাজ্যের মৌর্বংশীর রাজাদের বিষর যেরূপ নিধিরা-ছেন, ২ তাছাতে বোধ হয়, তিনি সেই সমস্ত নৃপতিকে অথবা তল্মধ্যে কতকণ্ডলিকে পূর্বতনলোক বলিরা জানিতেন। তাঁহারা থ্, পূ, তিনশত পোনর হইতে থ্, পূ, একশত পাঁচানকাই বংসর পর্বাপ্ত বাজাত করেন। এ কথাটির সহিত উলিখিত অভিপ্রায় স্ব্তিভোগে সঙ্গত দেখা যাইতেছে। রাজতরঙ্গিনীর ১৷১৭৬ লোকে লিখিত আছে, কাশ্মীরের রাজা অভিমনুর সমরে ঐ রাজ্যে মহাভাষ্যের আধ্যয়ন-অধ্যাপনা প্রবর্ত্তিত হয়। তিনি চৌষ্টি

👣 । ৯৯ পাণিনি-স্তের ভাষ্য ।

युवर्गिकिनावी त्मोद्यावरश्चेत्वत्रा (नव-अधिवा अधिका करवन ।

^{*} मौर्वेर्ष्ट्रियार्थिभिरक्षीः प्रकल्पिताः।

পূর্বের লোক ভাষার সন্দেহ নাই। হিন্দু জাতিরপ্রাচীন ইতিহাস সম্বন্ধ অনেক বিষয়েরই সময় নিরপণ করা চঃসাধ্য বা অসাধ্য ব্যাপার। পাণিনির সময়টিও তাহার মধ্যে পরিগণিত। কথাসরিৎসাগরে লিথিত আছে, পাণিনি ও কাত্যারন উভয়েই মহারাজ নন্দের সমকালবর্তী ছিলেন। নন্দ খু পু, চতুর্থ শতাকীতে মগধ-রাজ্যে রাজত্ব করেন। অতএব ঐ কথামুদারে পাণিনিও সেই সময়ে জীবিত ছিলেন বলিতে হয়। একথানি উপাধ্যান গ্রন্থের উপাধ্যান বিশেষের উপর নির্ভর করিয়া এই সিদ্ধান্তটি করা হইরাছে। কিন্ত কাত্যায়ন যথন পাণিনি-স্তুত্তের বার্ত্তিক অর্থাৎ অর্থপরিষ্কার করেন, তথন পাণিনি, তাঁহার অপেকার পূর্বতন লোক হওয়া সর্বতোভাবে সম্ভব। কাত্যায়নের পূর্বে পাণিনি-স্ত্রের অর্থ-স্বরূপ কতক গুলি পরিভাষা প্রাচলিত হয়; কাড্যায়ন মধ্যে মধ্যে তাহা উদ্ধৃত করিয়া যান *। সেই সমস্ত পরিভাষা-রচিয়িভাদের নাম ৰুপ্ত হইয়া গিয়াছে। কাত্যায়নও তাহা অবগত ছিলেন না। অতএব তাঁহার সময়েও সে সম্বায় প্রাতন বলিয়া গণ্য হইয়াছিল। অতএব পাণিনির ঠিক পরেই যে কাত্যায়ন বার্ত্তিক করেন এমন নম্ভ; তাঁহার পূর্বের ঐ সমস্ত পরি-ভাষা বির্চিত হয়। ইহা হইলে ঐ উভয়কে কোন মতেই সমকালবর্ত্তী বলিয়া বিবেচনা করা যায় না। কথাসরিৎদাগরের বচনামুদারে তাহার অক্তথা ত্বীকার

খ্টাব্দ পর্যান্ত রাজত্ব করেন। অতএব এ বিষয়টির সহিতও ঐ সিদ্ধান্তের কিছুমাত্র অসক্ষতি নাই। মহাভাষোর রচনা কালটি স্ক্রেরপ কৌশল ক্রেমে একরপ নির্দারিত হইলেও তাহা একেবারে অবিস্থানিত নাই। স্থীমান্ বেবের ভারতবর্ষীর অনেক বিষয়েরই প্রাচীনত্ব সন্তাবনার প্রতিকৃল পক্ষে অবিচলিত ভাবে দণ্ডায়মান রহিয়াছেন। তিনি এবং বর্নেল এ ঐ গ্রন্থকে একথানি অপ্রাচীন সংগ্রহ-পৃত্তক ও এমন কি, খ্টাব্দের সংগ্রহ বা আইম শতাব্দীতে সংকলিত বলিয়া ব্যক্ত করিয়াছেন। এই শেষোক্ত কথাটিরত কিছুমাত্র প্রমাণ দেখিতে পাওয়া বার না। প্রীমান্ কিল্হরন্ ও রামকৃষ্ণ গোপাল ভাতারকর উহাদের মুক্তিগুলি একাদিক্রমে পর্যালোচনা করিয়া সতেলভাবে উত্তর প্রধান করিয়াছেন। এই প্রকারে এ বিষয়ে অনেক দিন ব্যাপিয়া উভয় পক্ষের বাদান্ত্রাদ চলিয়া আসিয়াছে।—Indian Antiquary August 1876, pp. 241—251. December 1876, pp. 345-350. October 1877. pp. 301-307, Kielhorn's Essay on Katyayana and Patanjali, December 1876 এই সমন্ত দেখিও।

^{*} বেমন ১।১।৬৫ পাণিনিস্ত্তের বার্তিকে উক্ত ''নানর্থকে জলো অস্তাবিধিঃ'' ইত্যাদি পরি ভাষা।

^{*} In the Essay on the Aindra School of Grammarians, p. 91.

করিবার প্রয়েজন নাই। সংস্কৃত গ্রন্থকারেরা ও বিশেষতঃ উপগ্রাস রচয়িতারা ভিন্ন ভিন্ন সমধের ব্যক্তিদিগকে একত্র মিলিত ও পরস্পার সাক্ষাৎ করাইয়। দেন এ বিষয়ের উদাহরণের অসভাব নাই। শ্রীমান্ গোল্ডস্টুকর পাণিনিকে কাত্যায়ন অপেক্ষা বহু পুর্বের লোক—এমন কি, বৌদ্ধর্ম-প্রচারেরও পূর্বেকালীন মহয়ে বলিয়া বিবেচনা করিয়াছেন। শ্রীমান্ বেবের্ একটি পাণিনি-স্ত্রে শ্রমণ ও কুমারী শ্রমণার প্রসঙ্গ দেখিয়া তাহা বৌদ্ধ ধর্মেরই পরিচায়ক বিবেচনা করিয়াছেন *। শ্রমণ শব্দের অর্থ বৌদ্ধ সয়্রাসীও শ্রমণা শব্দের অর্থ বৌদ্ধ সয়্রাসিনী। অতএব এই মুক্তি-প্রমাণে ঐ স্ত্র-রচয়িতা বৌদ্ধ-ধর্ম প্রবর্জনের উত্তরকালীন লোক হইয়া পড়েন। সে স্ত্রটি এই,

कुमारत्रमणादिभि:।

श्राविति। २। ३। १०॥

শ্রমণা প্রভৃতি শক্ষের সহিত কুমার শক্ষের সমাস হয়; হইলে, শ্রমণা প্রভৃতি যে লিঙ্গ-বাচক, কুমারও সেই লিঙ্গ বাচক জানিতে হইবে; যেমন কুমার-শ্রমণা অর্থাৎ কুমারী-শ্রমণা।

শ্রমণ শক্টি বৌদ্ধ-সন্নাসি-বাচক বিশিন্ন অনেকেরই হৃদয়ঙ্গম আছে। জেনেরেগ্ কনিংহেম্ তো একটি প্রবন্ধে এবিষর প্রতিপাদনার্থ সবিশেষ চেষ্টা পাইয়াছেন †। এটি প্রতিপান হইলে শ্রীমান্ বেবের্ কৃত উল্লিখিত সিদ্ধান্তের অন্তথা-ঘটনার সম্ভাবনা থাকে না। কিন্তু তাতো বোধ হয় না। শ্রমণ শক্ষ যে কেবল বৌদ্ধ-সন্নাসি-বাচক, শ্রীমান্স, বীল্ ও নারায়ণ ঐয়েকর যিমোগ এই মতের প্রতিবাদ করিয়া এক একটি প্রবন্ধ প্রকাশ করেন। তদমুসারে, এই মভিপ্রায়টি না হিন্দু না গ্রাক্ কোন শাস্তের বা কোন গ্রম্থেরই অনুমোদিত নয় ‡। শ্রমণ শক্ষের আভিধানিক অর্থ যতি ও ভিক্ অর্থাৎ সন্নাসী §।

[·] History of Indian Literature, 1878, p. 305.

[†] Bhilsa Topes, p. xii.

[‡] Indian Antiquary, May, 1880, p. 122 and May, 1881, pp. 143-145.

[§] হেমচজ্র ও মেদিনী।

তৈ জ্বিরীয় আরণ্যকের দ্বিতীয় প্রপাঠকের সপ্তম অন্থবাকে শ্রমণগণ ঋষিদের শ্রদ্ধাম্পদ ও মন্ত্রোপদেষ্টা বলিয়া বর্ণিত হইয়াছেন।

वातरशना हवा ऋषयः श्रमणा जर्द्वभिष्यनो वुभूषस्तातृषयोऽ-र्थमास्तेऽनिलायमचरँ स्तेऽनुप्रविश्वः कुषाण्डानि तास्तेष्वन्वविश्वज्ञ -च्छ्रद्वया च तपसा च तातृषयोऽब्रुवन् क्यानिलायं चर्यति त ऋषी-नब्रुवन्नमो वोऽस्तु भगवन्तोऽस्मिश्वान्ति केन वः सपर्य्यामिति तातृ-षयोऽब्रुवन् पवित्रन्नोत्रूत येनारेपसस्यामिति त एतानि स्नृत्तान्यपश्चन् यद्देवा देव हेलनं यदीव्यन् तृणमहं वभूवा युष्टे विश्वतो दधदित्ये-तेराच्यं जुद्दुत वश्वानराय प्रतिवेदयाम दत्युपतिष्ठत यदर्वाचीनमेनो भ्रूणहत्यायास्त्रसान् मोच्च दति त एतर्र्यज्ञहतुस्ते ऽरेपसोऽभवन् कर्मादिष्ये तेर्जु द्वयात् पृतो देवलोकान् समश्चृते॥

তৈতিরীয় আরণাক। বিভীয় প্রপাঠক। সপ্তম অথবাক।

বাত রশনা অর্থাৎ বিবন্ত ও উর্জমন্থী অর্থাৎ উর্জবেতা নামে ছই প্রকার শ্রমণ ছিলেন। ঋষিগণ তাঁহাদের নিকট প্রার্থনা করেন। তাঁহারা অর্থাৎ শ্রমণ গলায় ব্রতের অনুষ্ঠান করিতেছিলেন ও কুয়াও মন্ত্রে প্রবিষ্ট হইয়াছিলেন। ঋষিগণ প্রদা ও ওপস্থা সহকারে তাঁহাদিগকে প্রাপ্ত হইলেন। তাঁহাদিগকে বলিলেন, কি কারণ তোমরা অনিশার-ধর্মের অনুষ্ঠান করিতেছ? তাঁহারা (অর্থাৎ শ্রমণগণ) ঋষিগণকে কহিলেন, ভগবন্! তোমাদিগকে নমারার। এই ধামে কিরূপে ভোমাদের সেবা করি । থামিগণ তাঁহাদিগকে বলিলেন, মাহাতে আমরা নিস্পাপ হই, আমাদিগকে এইরূপ কোন পবিত্র মন্ত্র উপদেশ কর। তাঁহারা (অর্থাৎ শ্রমণগণ) এই সকল স্কে দৃষ্টি করিয়াছিলেন, শর্মহারা মৃতাছতি প্রদান করিও। "বিশ্বান্যায় সনিইব্র্যান" এই মন্ত্র জারা বৈশ্বানরের অর্চনা করিও। ইহাতে জ্রণহত্যা ব্যতিরেকে অপর সমস্ত পাপ হইতে মুক্ত হইবে। তাঁহারা (অর্থাৎ ঋষিগণ) এই সমুদায় মন্ত্রোচ্চারণ পূর্বকি হবন

করিয়া নিষ্পাপ হইলেন। কর্মারস্তে এই সকল মন্ত্র দ্বারা দেবার্চনা করিবে। করিলে, পবিত্র হইয়া দেবলোকে গমন করে।

সায়নাচার্য্য এন্থলে শ্রমণ শব্দ তপব্দি-বাচক বলিয়া ব্যাথ্যা করিয়াছেন।

श्रमणाः तपस्विनः ।

যে শ্রমণগণ বেদ মন্ত্রের উপদেষ্টা, তাঁহারা কদাচ বৌদ্ধসন্ত্যাসী নন। ভাগ-বতেও উল্লিখিত উদ্ধিষ্টা প্রভৃতি বিশেষণে বিশেষিত এইরূপ শ্রমণগণেরই প্রসঙ্গ আছে।

वर्हिषि तिस्मिन्नेवं विशादत्त भगवान् परमिषिभः प्रसादितो नाभेः प्रियचिकीर्षया तदवरोधायने मेक्देव्यां धर्मान् दर्शयतुकामोवातवस-नानास्योगामू ह्वं मन्यिनां श्रुक्तया तन्वा श्रवततार ।

ভাগবত ৷ ৫ ৷ ৩ ৷ ২১ ৷৷

বিষ্ণুদত্ত! এই যজ্ঞে ভগবান্ প্রধান প্রধান ধাষি কর্তৃক প্রসাদিত হইয়া নাভির প্রীতি-সাধন ও উর্দ্ধমন্থী অর্থাৎ উর্দ্ধরেতা বাত-বসন অর্থাৎ বিবস্ত্র শ্রমণ গণকে ধর্ম-প্রদর্শন-উদ্দেশে সেই ব্লাজার অন্তঃপুরে মেক দেবীর গর্ভে বিশুদ্ধ সন্ত-মূর্ত্তি ধারণ করিয়া অবজীর্ণ হইলেন।

नवाभवनाहाभागा मुनयोद्यर्घशंसिन: । स्रमणा वातवसना स्रात्मविद्याविश्रारदा: । कविहेविरन्तरीच: प्रबुद्ध: विप्पलायन: । स्राविहोत्वोऽय द्रविडसमस: करभाजन: ॥

ভাগবত ১১ । ২ । ১ ৯ ।

কবি, হবিং, অন্তরীক্ষা, প্রবৃদ্ধ, বিপ্পলায়ন, আবির্হোত্র, দ্রবিদ্ধ, চমস ও করভাজন এই নয়জন পরমার্থ-নিরূপক, আত্মবিদ্যা-বিশায়দ, বাত-বসন সর্থাৎ বিবস্তু ও মহাভাগ্যশালী শ্রমণ হইয়াছিলেন।

রানারণের মধ্যেও স্থানে স্থানে শ্রমণের প্রসঙ্গ পাওয়া যায়। রাজা দশর্থ অখনেধ যজ্ঞে শ্রমণগণকে ভোজন করান এইরূপ লিখিত আছে *। অরণ্য-

^{*} রামায়ণ। বলেকাও। ১৪ সর্গ

কাণ্ডের ৭৩ সর্গে শবরী নামে একটি শ্রমণার উপাথান আছে। তিনি পল্পাতীরস্থ একটি আশ্রমে ঋষিগণের পরিচারিকা ছিলেন; রাম লক্ষ্ণকে দর্শন পূর্বক নিজ আত্মাকে পৰিত্র ও চরিতার্থ জ্ঞান করিয়া অগ্লিকুণ্ডে প্রবেশ করেন।

तेषां गतानामद्यापि दृश्यते परिचारिणी।
श्रमणा श्रवरी नाम काकुत्स्य! चिरजीवनी॥
श्रवण काल्या १०। २५॥

রাম! সেই পরলোক-গত ঋষিগণের শংরী নামে একটি চিরজীবনী শ্রমণা তথায় অবস্থিতি করিতেছে দেখিতে পাওয়া যায়।

টীকাকার রামানূজ এন্থলে ভাপদী মাত্র বলিয়া শ্রমণা শব্দের ব্যাখ্যা করিয়াছেন।

शवरी नाम शवरीत्याख्या श्रमणा तापसी।

किक्का-कात्थ निश्व शाह्य, बाम वानित्क वित्यख्या,
श्राय्येण मम मान्धात्रा व्यस्नं घोरमीसितम्।
श्रमणेन कृते पापे यथा पापं कृतं त्वया॥

किक्का-काथ । ১৮ : ৩०॥

তুমি বেরপ পাপকর্ম করিয়াছ, কোন শ্রমণ সেরপ করিলে, তাহার ঘোর-তর শান্তি হয়। আমার পূর্বপুরুষ মান্ধাতা এইরপ ব্যবস্থা করিয়া গিয়াছেন। যে শ্রমণা চিরদিন ঋষিগণের পরিচর্য্যা করেন, তাঁহার বৌদ্ধমতাবদ্ধিনী হওরা কোনমতেই সম্ভব নয়। মহাভারতীয় অর্জ্জুনবনবাদপর্ব্বে শ্রমণের উল্লেখ আছে।

कथकाश्वापरे राजन् श्रमणाश्च वनीकस:।
दिव्याखानानि ये चापि पठन्ति मधुरं दिजा:॥
एतेश्वान्येश्व वहुभि: सहायै: पाण्डुनन्दन:॥
वानि १४४ । २ ९ ६॥

অন্ত অন্ত কথকগণ, বনবাসী শ্রমণগণ, সুমধুর-দিব্যাখ্যান-বক্তা ব্রাহ্মণগণ ও অপরাপর অনেক গোক পাণ্ড,নন্দনের সহিত প্রাস্থান করিল। এই সমস্ত পর্য্যালোচন। করিয়া দেখিলে এইটিই প্রতীয়মান হইয়া উঠে যে, প্রথমে শ্রমণ শক্ষটি সাধারণ সৃদ্ধ্যাদি-বাচকই ছিল, পরে বৌদ্ধ ও জৈনেরা নিজ নিজ সম্প্রদায়ের সন্মাসীদিগকে ঐ নামেই বিখ্যাত করেন এবং থৌদ্ধ সম্প্রদায়ে ঐ উপাধির প্রাহর্ভাব দেখিয়া, হিল্কুরা ভাহা পরিভ্যাগ করেন।

উল্লিখিত পাণিনি-সূত্রে শ্রমণা অর্থাৎ কুমারী শ্রমণার প্রসঙ্গ আছে। যাহারা চিরজীবন অবিবাহিত থাকিয়া কৌমার-কাল অবধি সন্ত্রাস-ধর্ম অবলম্বন করিয়া চলে, ভাহারাই কুমার-শ্রমণা : রোমান কেওলিক নামক খুষ্ঠীয় সম্প্রাণায়ী ননের। যেমন চিরজীবন সন্ন্যাস-ত্রত পালন করে, বৌদ্ধদেরও সেইরপ একটি সল্ল্যাসিনী-সম্প্রদান্ত বিদ্যুমার ছিল। তদকুসারে, পাণিনি-স্তত্তের প্রমণা বৌদ্ধ সন্ন্যাসিনী হওয়া স্তব। ঐত্তরপ কৌমারসন্ন্যাস যদি কেবল বৌদ্ধ-শাস্ত্র-সম্মত হয় এবং হিন্দুশাস্ত্রের অনুমোদিত না হয়, তাহা হইলে, ঐ সূত্র-রচয়িতা বৌদ্ধ-ধর্ম-প্রচারের পূর্বকালীন লোক হইতে পারেন না। কিন্তু তাত নয়। পূর্ব-कारल हिन्दुनिरशव ७ रव अभगा नध्य मन्नामिनी-मञ्जनात्र हिन, भवतीव उपाधान প্রমাণেই তাহা স্থস্পষ্ট প্রতীয়মান হইতেছে। হিন্দু স্ত্রীলোকেও যে, কৌমার কাল অবধি চিরজীবন অবিবাহিত থাকিয়া সন্নাস ব্রত পালন করিত, ভাহারও গ্রমাণের অস্তাব নাই। শবরীর উপাধ্যান যেরূপ বর্ণিত আছে, তাহা পাঠ ≱রিলে, তাহার যে কোন উদাহ-সংস্কার সম্পন্ন হইয়াছিল এরপ বোধ হয় না। ামায়ণে তিনি "চিরজীবনী" "পরিচারিণী" বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছেন। ান্তিপর্কের ৩২২ অধ্যায়ে স্থলভা-ধর্মধ্বজ নামে একটি উপাখ্যান আছে, লভা একটি ভিক্ষকা অর্থাৎ সন্ন্যাসিনী ; সম্বাস-ধর্ম অবলম্বন পূর্বকে নানা-াশ পরিত্রমণ করিয়া জনক-বংশোদ্ভব ধর্মধ্বজ রাজার সভায় আগমন করেন। তিনি পাণিগ্রহণ করেন নাই: কৌমারাবস্থাতেই সন্যাদ-ধর্ম অবলম্বন द्वन ।

> साइं तिसान् कुले जाता भक्तर्थ्यसित मिहिधे। विनीता मोचधर्म्मोषु चरामेत्रका सुनिव्रतम्॥

> > **माञ्चिभर्स । ७२२ । ১৮**৫

সেই নামি তাঁহার (অর্থাৎ প্রধান নামক রাজর্ষির) বংশে জন্মগ্রহণ করিয়াছি। আমার অন্ত্র্রুণ পাত্র উপস্থিত না থাকাতে, মোক্ষধর্মে উপদিষ্ট হইয়া একাকী মুনি-ব্রতের অনুষ্ঠান করিতেছি।

এই উপাধ্যানের মধ্যে বেদ, উপনিষদ, যজ্ঞ, মোক্ষ, ইক্রাদি দেবতা প্রভৃতি হিন্দ্ধর্মসংক্রান্ত নানাবিষয়ে ফুলভার ভক্তি-শ্রদ্ধা প্রকাশিত আছে। অতএব তাঁহাকে হিন্দু বলিয়া বর্ণন করা হইরাছে, তাহার সন্দেহ নাই। বেদাবলম্বী হিন্দু সমাজে স্ত্রীলোকের কৌমারাবস্থায় সন্ন্যাস-গ্রহণের ব্যবস্থা না থাকিলে, এরূপ বর্ণন করা সম্ভব হইত না। সংস্কৃত সাহিত্যের মধ্যেও ঐ ব্যবস্থার ফুম্পষ্ট নিদর্শন লক্ষিত হইরা থাকে। কি জানি শকুন্তলা বৈধানস অর্থাৎ বাণপ্রস্থ অবলম্বন করিয়া চিরজীবন পাণিগ্রহণে বিরত থাকেন এই আশস্কার ত্মন্ত তদীয় স্বীগণকে জ্ঞানা করিতেছেন,

वैखानमं किमनया व्रतमाप्रदानात् व्यापाररोधि मदनस्य निष्वितव्यम् । त्रत्यन्तमेव सद्दशेचणवक्षभाभि राहो निवत्स्यति समं हरिणाङ्गनाभि: ॥

প্রথম অঙ্গ।

ইনি কি পাণিগ্রহণ কাল পর্যান্ত পুরুষ-সংসর্গ-বিবর্জ্জিত বান প্রস্তুব্রের অমু-ষ্ঠান করিবেন ? না চিরজীবনই সদৃশ-নয়ন প্রীতি-ভাজন হরিণীগণের সহিত একত্র বনবাসিনী হইয়া থাকিবেন।

কৌমার-সর্যাস অবশ্বনের নিয়ম প্রচলিত না থাকিলে, এরপ আশক্ষা ও প্রশ্ন করা কোন রূপেই সম্ভব ও সঙ্গত হয় না। অতএব উল্লিখিত পাণিনি-স্ত্রের শ্রমণা ও কুমার-শ্রমণা শব্দ বৌদ্ধর্মের পরিচায়ক বলিয়া কোনরূপেই নির্দ্ধারণ করা যায় না। বেদাবল্থী প্রাচীনতর ভারতব্যায় পণ্ডিতেরা অপেক্ষার্মত অপ্রাচীন শাস্ত্রকারদের স্থায় স্ত্রীলোকদিগকে জ্ঞান ও ধর্মাধিকারে বঞ্চিত করেন নাই তাহাদের বেদে অধিকার ছিল জ্ঞানেও অধিকার ছিল এবং ভিক্ষা-শ্রমের স্পষ্টি হইলে, তাহাতেও সম্পূর্ণ অধিকার ছিল। বিশ্ববারা প্রভৃতি বেদ রচনা করেন *, গাগাঁ ও মৈত্রেয়ী তত্তজানে উপদিষ্ট হইয়া ব্রহ্মবাদিনী হন †
এবং শবরী স্থলভা প্রভৃতি কৌমারাবস্থায় সন্ন্যাসাশ্রম অবলম্বন পূর্বক চিরজীবন তদীয় ধন্ম পরিপালন করেন এইরূপ লিখিত আছে।

ফলতঃ ভারতবর্ষ সংক্রান্ত কোন বিষয়ের সময়-নিরূপণ-প্রস্তাব উপন্থিত হইলেই প্রমাদ ঘটিয়া উঠে। পাণিনি বুদ্ধের পূর্ব্ব কি উত্তরকাণীন লোক এবিষয়ে ইয়ুরোপীয় পণ্ডিত-সমাজে অস্তাবধি মত-ভেদ চলিতেছে। লেসেন্ ও বেন্ফি পাণিনিকে বুদ্ধ অপেক্ষা প্রাচীন বলিয়া বিবেচনা করেন না।

পাণিনির সময়ে যে সকল শক্ষপ প্রচলিত ছিল, কাত্যায়নের পূর্ব্বে তাহার মধ্যে কতকগুলি অপ্রচলিত বা অশুদ্ধ বিদ্ধা গণ্য হয়; যেমন বায়য়,ত্য়য় ও ক্লাবলিঙ্গ বাচক একতরদ্ ‡। পাণিনির সময়ে যে শব্দের যে অর্থ প্রচলিত ছিল, কাত্যায়নের পূর্বে তাহার মধ্যে কতকগুলির অর্থায়র উপস্থিত হয়; যেমন ভক্ষা ও পেয় উভয়ু অর্থে ভক্ষ্য শব্দ §। পাণিনির সময়ে প্রচলিত মনেক শব্দ ও শব্দার্থ কাত্যায়নের সময় মধ্যে অব্যবহার্য হইয়া যায়; যেমন ভক্ষণার্থ প্রত্যবসান শব্দ ৸, বেদমন্ত্র-বাচক ঋষি শব্দ ঀ, ঋত্বিক-বাচক হোত্রা ক্ষি * * কাত্যায়নের সময়ে কোন কোন প্রচলিত শাস্ত্রই পাণিনির সময় ময়্যায় প্রবর্ত্তিত হয় নাই; যেমন আরণ্যক । শত্দিনির দেময় আরণ্যক ও উপনিষদ ‡‡ শব্দের অন্তর্জপ অর্থ করিয়াছন; শাস্ত্র-বিশেষ বলিয়া ব্যক্ত করেন নাই। তাহার সময়ে ঐ ত্রই শাস্ত্র গাকিলে, তাহা না করা কোনজপেই সন্তব নয়। এই সমস্ক পর্যালাচনা করিয়া দেখিলে পাণিনিকে কাত্যায়নের বছ পূর্বের লোক বলিয়া হজেই বিশ্বাদ করিতে হয়। এমন কি শতাধিক বৎসরের অপেক্ষা অল্প পূর্বের নে করিতে পারা যায় না। পাণিনি-স্বত্রের কোন স্থানে বৌদ্ধর্ম্ম-প্রবর্ত্তক

প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৮২ পৃঠা।

[†] প্রথমভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ১১৭ পৃঠা।

[‡] পাণিকি হর । বাঙাং ও ৮/৪/৪৫। § বাজ্ঞ । ॥ ৩/৪/৫৬। ॥ ৪/৪/৯৬। * * ৫/১/১৩৫।

^{† †} এই পুস্তকের প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৯৭ পৃষ্ঠা দেও।

^{‡‡} পাণিনিস্ত্ত। ১।৪।৭৯।

শাক্য মুনির নাম উল্লিখিত নাই। বৌদ্ধমতামুখায়ী মুক্তির নাম নির্বাণ। পাণিনি একটি স্কে (অথাৎ ৮। ২। ৫০ স্কে এ শব্দের-অন্তর্মপ অর্থ করেন; উল্লিখিতরূপ মুক্তি বলিয়া উল্লেখ করেন নাই। তাঁহার সময়ে বৌদ্ধার্ম প্রচলিত থাকিলে, তাহা না করা কোন মতেই সম্ভব নয়। বৌদ্ধান্ত্রাক্ত নির্বাণটি ক্লাবলিঙ্গবাচক বিশেষ্য-পদ, কিন্তু পাণিনি-প্রোক্ত নির্বাণ শক্টি ত্রিলঙ্গ-বাচক বিশেষ্ণ। অভএব তাঁহাকে ঐ ধর্ম-প্রচলনের অর্থাৎ খু, পু, পঞ্চম শতাকীর পূর্বাতন লোক বলিয়া বিবেচনা করাই যুক্তি-সিদ্ধ বোধ হয় *।

যাহা হউক, খু, পু, পঞ্চম বা ষষ্ঠ শতাকীতে মহাভারতের মূল উপাধ্যানটি একটি পুরাতন উপাধ্যান বলিয়া প্রচলিত ছিল এ কণা অক্লেশেই স্বীকার করা যায়। পুর্বেও মিপেস্থিনিজ ভারতব্যীয় মহাকাব্য-কীর্ত্তনের বিষয় যাহা লিখিয়া গিয়াছেন, তাহাতেও ইহার সম্পূর্ণ পোষকতা করিয়া দিতেছে। † ইহা হইলে আদিম মহাভারতের বয়:ক্রম চবিবশ বা পাঁচিশ শত বৎসর অপেক্রা নান হয় না।

উলিখিত বৈশ্বাকরণ কাত্যায়নই কল্পত্রকার কাত্যায়ন। তিনি ষেমন পাণিনিস্ত্রের বার্ত্তিক করেন, সেইরূপ কল্পত্রে প্রভৃতি অন্যান্ত অনেক পুস্তক্ত প্রস্তুত করিয়া যান, এইরূপ লিখিত আছে। পণ্ডিতসমাঙ্গেও তাহা স্বীকৃত হইরা থাকে। বড়্গুক্শিয় কাত্যায়ন-কৃত সর্বাপ্তক্র মুনির বিবরণে লিখিয়া গিয়াছেন।

> कात्यायनमुनिर्मं ने चयोदशकमत्र तु ॥ शौनकीयं च दशकं तिच्छिष्यसा निकं तथा। द्वादशाध्यायकं स्तृतं चतुष्कग्रह्ममेव च ॥ चतुर्थारण्यकं चेति द्याखलायनस्त्रकम्। सिश्चिशौनकाचार्य्वत्योदशकविन्मुनि:॥ वाजिनां स्तृक्षसान्तामुपग्रत्यसा कारकः। स्रातेष्व कर्त्तां स्लोकानां स्त्राजमानां च कारकः॥

[•] Goldstucker's Manava Kalpa Sutra. Preface pp. 112—140.

^{🕇 🔪} शृं हो (पथ ।

श्रयर्वणां निर्मे यः सम्यग्वे ब्राह्मकारिकाः। महावार्त्तिकनौकारः पाणिनीयमहार्णवे॥

কাত্যায়ন মূনি এয়াদশ থানি স্ত্ত-গ্রন্থ স্বীকার করেন; তন্মধ্যে দশথানি শৌনকের ক্বত ও তিনথানি তদীয় শিষ্য আখলায়নের * প্রণীত। ঘাদশ-অধ্যায়-বিশিষ্ট স্ত্র, চারি-অধ্যায়-বিশিষ্ট গৃহ্যস্ত্র এবং চতুর্থ আরণ্যক এই তিন প্রকার গ্রন্থ আখলায়নের ক্বত। শৌনক ও তদীয় শিষ্য আখলায়নের ত্রেরাদশ থানি গ্রন্থ অবগত হইয়া কাত্যায়ন মূনি বাজিন্ নামক শুক্র-যজুর্কেদী আচার্য্য-দিগের স্ত্র সমূদয়, সামবেদের উপগ্রন্থ, স্মৃতির শ্লোক, * * * আথর্কণ-দিগের সমাক্ ব্রহ্মকারিকা এবং পাণিনি-স্ত্র-রূপ মহাসাগরের পোত-স্বরূপ মহাবার্তিক প্রস্তুত করেন। প

ইহাতে স্পষ্ঠ দেখিতে পাওয়া ষাইতেছে, আখলায়ন কাত্যায়নের পূর্বতন লোক। অগ্রে শৌনক, পর্টের আখলায়ন, অনন্তর কাত্যায়ন কর্মস্ত্র রচনা করেন। যদি কাত্যায়ন থ, পূ, চতুর্থ শতাকীর লোক হন, তাহা হইলে আখলায়নকে তদপেক্ষা প্রাচীন বিলতে হইবে। কন্ত প্রাচীন, তাহা নিশ্চয় বলা য়য় না। চরক † ও রহদেবতাদি অপেক্ষায়ত প্রাচীন গ্রন্থে আখলায়নন্তর প্রাচীন গ্রন্থে আখলায়নন্তর প্রাচীন গ্রন্থে আখলায়নন্তর প্রাচীত বিলয়া কীর্ত্তিত রহিয়াছে। গ্রন্থ-বিশেষের স্থানে স্থানে আখলায়নব্রাক্ষণ নামক ব্রাহ্মণ-বিশেষের বচন উদ্ধৃত হইয়াছে। একথানি আয়ণ্যকের নাম আখলায়ন-আরণ্যক। ‡ এই সমন্ত প্রমাণাম্ব্যারে, আখলায়নক্রে একটি সমধিক প্রাচীন গ্রন্থকার বলিয়া প্রতীতি জ্বে। কিন্তু পাণিনির সময় পর্যান্ত আরণ্যক-শাল্পের স্থিট হয় নাই ৪। অতএব পাণিনিকে প্র

^{*} भीनकस्य तु भिष्योऽभृद्भगवानायलायनः। स तस्माक्ततसञ्जेत्रः स्वं क्रला न्यवेदयत्। * यष्ट्रश्वनिद्याः।

[†] চরকসংহিতা। ১ অ. ৭ লোক।

[‡] ঐতরের আরণ্যক পাঁচ ভাগে বিভক্ত; **ডাহারই চতুর্থ ভাগ আখলারন-আরণ্যক** বলিরা উল্লিখিত হইরাছে।

[§] প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৯৭ পৃষ্ঠা ।

আন্ত্রণাক স্ক্রিভা আখলায়ন অপেক্ষা পূর্বতন লোক বলিয়া মনে হয়। কিন্তু
অধিক পূর্বতনও বোধ হয় না। পাণিনি তদীয় গুরু শৌনকের নাম উল্লেখ
করিয়াছেন। * ইহা হইলে পাণিনি ও আখলায়ন উভয়কে প্রায় সমকালবর্তী
বলিয়া বিবেচনা করিতে হয়। তবে আখলায়ন কিছু পরে প্রায়ভূতি হইয়া
থাকিবেন। সেই আখলায়ন গৃহ্যস্ত্রের মধ্যে মহাভারতের নামোলেথ করিয়া
গিয়াছেন। উপনয়ন-কালে যজ্ঞোপবীত গ্রহণ করিবার সময়ে ঋষিদিগের তৃথি
সাধন করিবার ব্যবস্থা আছে, তাহার মধ্যে অন্ত অন্ত ঋষির সহিত ভারত বা
মহাভারত-ধর্মাচার্য্যাণ্যের নাম সন্ধিবেশিত হইয়াছে।

सुमं तुजैमिनिवैशम्यायनपैलस्त्रभाष्यभारतधर्माचार्याः वः * * * * * ये चान्ये श्राचार्यास्ते सर्वे तृपान्विति।

আখলায়ন-গৃহাস্ত্ । ৩। ৪।

স্মন্ত, লৈমিনি, বৈশম্পায়ন, পৈলস্ত্তভাষ্য, ভারত-ধর্মাচার্য্য এবং অন্তান্ত যত আচার্য্য সকলে তৃপ্ত হউন।

ভারত বক্তা বলিয়া কীর্ত্তিত ঐ বৈশম্পায়নের নাম সাংখায়ন-গৃহস্ত্তেও উল্লিখিত আছে কল্লস্ত্র বৈদিক ধর্মেরই বিবরণ-বিষয়ক। পশ্চাৎ দৃষ্ট হইবে, বর্ত্তমান মহাভারতে তাহার সহিত অহারূপ নৃতনতর ধর্ম-বিবরণ মিশ্রিত রহিন্দ্রিছে। অত এব কল্লস্ত্রকার আখলায়নের উল্লিখিত মহাভারত এক্ষণকার এই বৃহদাকার প্রচলিত মহাভারত বোধ হয় না; তবে ইহার অন্তর্নিবিষ্ট থাকিতে পারে। ভাহাই ক্রমাগত পরিবর্দ্ধিত ও নৃতন নৃতন সংকলিত বিষয়ের সহিত সংযোজিত হইয়া এক্লপ অবস্থা প্রাপ্ত হইয়া থাকিবে। ‡ আখলায়নের

এই পুস্তকের প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৬৮ পৃষ্ঠা দেখ।

[†] আখলায়ন-স্ত্তের কোন কোন পুস্তকে মহাভারতাচার্য্য বলিয়া লিখিত আছে:— Muller's Ancient Sanskrit Literature pp. 42—43 (एथ)

[‡] শ্রীমান্ ম্লর বলেন, পাণিনির খাকেরণে পাণ্ড ও পাণ্ডৰ শব্দ বিদ্যমান নাই; অতএব তাঁহার সমকালবর্তী অথবা কিছু অগ্র পশ্চাৎ ফ্রীবিত আখলারনের গ্রন্থে যে মহাভারতের নাম লিখিত আছে, তাহা একণকার মহাভারতের সহিত অবশ্যই ভিন্ন হইবে। (A.S. L. pp. 44 and 45.) শ্রীমান্ বেঁবের্ ঐ আখলায়নোক্ত মহাভারতকে বর্তমান মহাভারতের মূল স্বরূপ একথানি অনুরূপ গ্রন্থ বলিয়া বিবেচনা ক্রিয়াছেন। Ilistory of Indian Literature, 1878, p. 57.

সময় অপেক্ষা অনেকানেক অপ্রাচীনতর ঘটনা ইহার মধ্যে সন্নিবেশিত দেখা যায়। ন্যনাধিক ছই সহস্র বৎসর পূর্ব্ব-ঘটিত অথবা তদপেক্ষাও অপ্রাচীন অনেক বিষয় ইহাতে প্রক্রিপ্ত হইন্নাছে। মহাভারতের মধ্যে যবন-জ্ঞাতি ও যবন ভূমির পুন: পুন: উল্লেখ দেখিতে পাওয়া যায়। * এমন কি, ভারত্যুদ্ধে শক ও যবন দৈল্ল কুরুদৈল্লের মধ্যে সন্নিবেশিত হয় বলিয়া বর্ণিত হয়রাছে। যবনদিগের সহিত আলাপ পরিচয় ও বিশেষরূপ ঘনিষ্ঠতা না থাকিলে, গ্রন্থের মধ্যে এরূপ বর্ণন করা সম্ভব হয় না। কেবল আত্মীয়তা ও ঘনিষ্ঠতা নয়, বচন-বিশেষে পরক্ষার প্রতিক্লাতারও স্থাপাই নিদর্শন প্রাপ্ত হয়া যায়।

काम्बोजराजः, कमठः कम्पनश्च महावतः। सततं कम्पयामास यवनानेक एव यः॥

मङाभर्य। 8। २२।

কাষোজরাজ কমঠ ও মহাবল কম্পন (রাজস্র যজ্ঞের সভার উপস্থিত ২ন)। কম্পন রাজা একাকী ধ্বনদিগকে সতত ধুদ্ধে কম্পমান করিয়া ছিলেন।

এই বচনটি হিন্দু-ঘবনের যুদ্ধ-ঘটনার বিজ্ঞাপক বোধ হয়। পূর্ব্বকালে ভারতবর্ষীয়েরা গ্রীকলিগকেই ধবন বলিয়া জানিতেন। † ভারতবর্ষের পশ্চি-মোত্তরাংশে বাহলাক অর্থাৎ বাল্ধ্ প্রদেশে গ্রীক্দিগের একটি রাজ্য সংস্থাপিত হয়। তাহা কিয়ৎকাল ভারতবর্ষ মধ্যে পঞ্জাব ও দক্ষিণে গুজুরাট পর্যান্ত

^{*} मखां १० वर्ष, १३ वर्ष, १० वर्ष, १४ ; ७० वर्ष, १३। छे छा। १ वर्ष, १३७ वर्ष, १३ वर्ष, १३ वर्ष, १४ वर्प, १४ वर्ष, १४ वर्

[†] ইণানীস্তন সংস্কৃত গ্রন্থকারের। পাঠান, আরব, তুর্ক প্রভৃতি সক্ষল ফাতীর মোসলমান্দিগকে যবন বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। কিন্তু মোসলমান্ধর্ম-প্রবর্তনের পুর্বকালীন
রামায়ণ মহাভারতাদি অনেকানেক গ্রন্থে জাতিবিশেষকে যকন বলা হইরাছে। অভ্যান সে যবন কদাচ মোসলমান্ হইতে পারে না। বৌদ্ধবর্মাবলম্বী অশোক রাজা স্থানে স্থানে কতকভলি অনুশাসনপত্র থোদিত করিয়াদেন; ভাহার মধ্যে লিখিত আছে,

[&]quot;पन्योकी नाम योन जाजय वापि तस पन्यिकस सामना जाजाने देवानस्पियम पियदासिनीवनी दे चिकिका कता।"

ব্যাপ্ত হইয়া থাকে ৷ ঐ গ্রীকৃদিগেরই সহিত হিন্দুদের আলাপ পরিচা, বিবাদ

অন্তিরোকনামক যোন রাজার রাজ্যে তদীয় সমিত্তেরা রাজ্য করিতেন, সেই রাজ্য পর্যান্ত সর্বাত-দেবশ্রিয় পিয়দসি অশোক রাজার ছুই প্রকার চিকিৎসা স্থাপিত হইল (১)।

গ্রীক্ ও পারসিক ইতিহাসে এই (অর্থাৎ Antiochus) দামে একটি গ্রীক্রাজার রাজত্বলাল ও তৎসংক্রান্ত অন্ধ্র অন্ধ্র রাজত্বলাল ও তৎসংক্রান্ত অন্ধ্র অন্ধ্র ব্যাপারের সহিত অশোক রাজার রাজত্বকালালির ঐক্য করিয়া এই স্থির করা হইরাছে যে, অশোক রাজার অনুপাসন-পত্রে ঐ গ্রীক্রাজাই যোন রাজা বলিয়া লিখিত হয়। কেবল এ কিয়োকস্নয়, ত্রমায়ো, অন্তিকোন, মকো ও অলিক ফ্রনির নামে আর চারিটি রাজার উল্লেখ আছে। ইহারা টলেমি, এন্টিগোনস্, মেগেস্ ও এলেগ্জেওর নামক ফ্রাসিল্ল থীক্রাজা বই আর কেহই নম। উল্লিখ্য অমুশাসন-পত্রগুলি ভিন্ন ভিন্ন প্রকার প্রাকৃত অর্থাৎ দেশ ভাষায় বিরচিত। প্রাকৃত ভাষার যোন শব্দ সংস্কৃত যবন শব্দেরই রূপান্তর। অতএব ভারতবর্ষীর প্রাচীন গ্রন্থকারেয়া গ্রীক্লিগকেই যবন বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন ইহাতে আর সম্প্রহর্ষার না।

क्रश्रीमक स्माजिदिर गर्भ यवनिमग्रक स्माजिय-भारत भारतमी विनय वर्गन कतियास्त्र ।

स्ने च्छाडि यवनासोषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम् । ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्हें विवद^{ीर्}नः॥

পর্গদংহিতা।

যবনেরা অবশ্যই স্লেচ্ছ; তাঁহাদের মধ্যে এই শাস্ত্র স্মাক্রণে প্রচলিত আছে; অতএব ওাঁহারাও ধ্বির ন্যায় পুলিত হইলা থাকেন। ইহাতে জ্যোতিষ্ক্ত ছিল কেন না হইবেন?

এক দিকে গর্গ মূলি ধেমল ব্যানদের যথেষ্ট এ গংসা করিরাছেল, অপর দিকে সেইরূপ পুরাণ-বিশেষে গার্পোর সহিত ব্যান-জাতীয় নৃপতি-বিশেষের সমধিক ঘনিষ্ঠতার বিরয় বর্ণিত রহিরাছে। বিশুপুরাণ। ৫ অংশ। ২৩ অধ্যায়।১—৫ লোক।

यांशांत्रा क्रमखरात्र थाहीन हेलियुक व्यवश्व व्याहन, कांशांत्रा व्याह्म वृत्तित्व भावित्वन,

(১) শ্রীমান্ জেম্ন প্রিন্দেপ, এই বাক্যের এই রূপ অর্থ করিয়া বান। (Journal A. S. No. 74.) কিন্ত হ, হ, উইল্, সন্ ইহার কিছু অন্তথা করিয়া ব্যাপ্যা করিয়াছেন। উভয়ের ব্যাথ্যাতেই বোন অর্থাৎ যবন রাজা অভিয়োক প্রীক্রাজা একিয়োকস্বলিয়া উক্ত হইয়াছে। পূর্ব্বোক্ত অকুশাসন-পত্র কেব-প্রিয় পিরদসির কৃত বলিয়া লিখিত আছে। উলিখিত প্রিন্দেপ এ পত্রের অর্থান্তেক করেন। তিনি এবং শ্রীমান্ লেসেন্ প্রভৃতি অকু অক্ত পভিতেরা নানা-রূপ যুক্তি-সহকারে ঐ পিরদসিকে মগধ রাজ্যের অধীবর অশোক রাজা বলিয়া একয়প অবধারণ করেন। তাহাদের সেই অভিপ্রায়টি প্রথমাবিধি সর্ব্বতে পরিগৃহীত হইয়া আসিয়াছে। মথ্যে শ্রীমান্ হ, হ, উইল, সন সে বিষয়ে সংশয় প্রকাশ করিয়া একটি প্রবন্ধ রচনা করেন।—Royal Asiatic Society's Journal, Vol, XII, 1850, pp. 153—251 and Vol. XVI, 1856, pp. 357—367 দেখ। শ্রীমান্ কর্ন্ সেই সমন্ত পিনির প্রয়ায় অনুবাদ করিয়াছেন। তিনি ভাহা অশোক রাজার পত্র বলিয়া লিধিয়াছেন্ট কিন্তু বৌদ্ধ লাব্রে ও অক্ত অক্ত প্রবাহার পরশার বেরপ বর্ণন আছে, ভাহার সহিত অনুশান্দ্-পত্রেক অশোকের প্রকৃতি ও ব্যবহার পরশার ভিন্ন বলিয়া সিদ্ধান্ধ করিয়াছেন।—Indian Antiquary, vol. III. pp. 77-81, and vol. V. pp. 257-276.

বিসংবাদ ও আত্মীয়তা-ঘনিষ্ঠতা-সংঘটিত হওয়া সম্ভব। নানা গ্রন্থে ধবন ও

এীকেরাই এইরূপ জ্যোতিষজ্ঞ যবন জাতি হওয়া সর্বতোভাবে সম্ভব। সংস্কৃত শান্তে এ বিষ-রের আরও ভুরি ভুরি প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া বায়।

বরাহমিহির-কৃত বৃহৎসংহিতাদি এয়ে পুলিশসিদ্ধান্ত, রোমকনিদ্ধান্ত ও মনিথ নামে এয় ও প্রস্কারের নাম লিখিত আছে। পুলিশ সংস্কৃত শব্দ নর ; হয় প্রীক, নর রোমক। অল বীরুনী তাহাকে প্রীক্ বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। আর একখানি এয় মনিখ-কৃত বলিয়া লিখিত আছে। একটি প্রীক জ্যোতির্বিদের নাম মানীখো ছিল। পুর্বোক্ত মনিখ সেই মানীখো বলিয়া বিবেচিত হইয়াছেন। দিন-গণনারজ-প্রসক্তে ববনপুর নামে একটি নগরের নাম লিখিত আছে। শ্রীমান্ কর্ন বরাহমিহির প্রভৃতি জ্যোতির্বিদের অভিপ্রায়্ত অবলখন প্র্বাক উহা এলেগ্জেণ্ডিয়া বলিয়া বিবেচনা করিয়াছেন। বরাহমিহির-কৃত বৃহৎ সংহিতায় ছার্রিশটি:প্রীক্ শব্দ সলিবেশিত আছে; যেমন ক্রিয়, তাব্রি, জিতুম, ছেলি, হিয়, কোণ, হোরা, কেন্দ্র, জেরাণ, লিখা, অনফা, স্বন্দা ইত্যাদি। বাদরায়ণের কৃত বলিয়া লিখিত একগানিজাতকে আপোর্ক্রিয়, পণক্ষর প্রভৃতি কতকগুলি গ্রীক্ শব্দ বিদ্যমান আছে। Transactions of the Madras Literary Society Part I. pp. 67—73, Madras Journal, vol. 14, p. 151, Asiatic Society's Journal, No 167, p. 109 and Kern's Preface to the Baihat Sanhita of Varahamihira, pp. 28, 29, 48, 51, 52 and 54.

সমধিক প্রাচীন সংস্কৃত প্রস্থে রাশিচকের কিছুমাত্র প্রস্থান বাই। হবিচকণ জমেন্ পণ্ডিত জীমান্ হল্ট্ছ্মেন্ প্রীক ও সংস্কৃত লাগ্রান্ত রাশিচকের ইতিবৃত পর্যালোচনা করিয়া ছির করিরাছেন, হিন্দুরা প্রীক্দিগের নিকট ঐ বিষর শিকা করেন। এইরপ কারণবশতই ভারত্বর্ষার প্রস্কারেরা তাহাদের প্রতি ভক্তি শ্রদ্ধা প্রকাশ করিরাছেন তাহার সন্দেহ নাই। বরাহমিহির-কৃত একথানি প্রস্কের নামের অর্দ্ধাংশ গ্রীক ভাষা। এথানির নাম হোরাশান্ত। গ্রেরাটি গ্রীক্ শব্দ। ঐ শান্তে তিনি প্রহ ও রাশি সমুদায়ের প্রীক নাম ব্যবহার করেন, প্রহণণের সংস্কৃত নামের সহিত গ্রীক নাম প্রয়োগ করেন, এবং রাশিগণের গ্রীক নাম সংস্কৃত ভাষার অনুবাদ করিয়া লিখেন (১)।—Transactions of M. L. Society, pp. 72 and 73 and Weber's H. I. Literature, p. 254.

এক দিকে ছিল্পুরা যেমন উল্লিখিত রূপে যবনদের অর্থাৎ গ্রীকণের নিকট জ্যোতিব-বিদ্যা বিষয়ক উপদেশ গ্রহণের বিষয় শীকার করেন, ও নিজ এছে গ্রীক শব্দ প্ররোগ ও গ্রীক জ্যোতিবের অন্তর্গত বহুতর বিষয় সাধ্রবেশিত করিয়া যান. আর দিকে গ্রীকেয়াও সেইয়প শ্লষ্টাক্ষরে লিখিয়া গিয়াছেন, হিল্পু গ্রীক শাল্রে স্বিশেষ, শ্রদ্ধাক্ষরের ও উচ্চপ্রেণীয় ব্যক্তি স্কলে উল্লিখ্যা করিয়া থাকেন (২)। Weber's History of Indian Literture, p. 252.

⁽১) শ্রীমান্ লেটোন্ অবধারণ করেন, একিবের রাশিচক্র-বিবরক জ্ঞান থু, পু, প্রথম শতাকার পূর্বে সম্পূর্ণ হয় নাই। অতএব হিন্দুরা ঐ সমরের কিছু পরে বার প্রছে ঐ বিবর সংগ্রহ করেন, তাহার সন্দেহ নাই। ইহা হইলে, গ্রীষ্টাব্দের বঠ শতাকীতে বিদ্যালন বরাহ মিহিরাদির প্রকে এ বিবর সরিবেশিত হওরা সক্তোভাবেই সভব; কোন রূপেই অসকত নর।

⁽২) ফিলস্ ট্রাটস্ নামক এছকীর খ্রীষ্টাব্দের বিভীর শতাবীতে এপলোনিরস নামক গণ্ডিত বিশেবের দ্বীবনচরিতের মধ্যে এই কথা লিবিয়া যান।

কাথোজের নাম একতা লিখিত দেখা যায়। পূর্ব্বোক্ত পিয়দিনি রাজার অফু-শাসন-পত্তেও উহাদের নাম এরপ দৃষ্ট হইরা থাকে। •

১৩৯ পৃষ্ঠায় উদ্ভ মহাভারতীয় শ্লোকে কাম্বোজ-রাজের পরেই ধবন-বৈরী কম্পনের নাম সলিবেশিত রহিয়াছে। কাম্বোজেরা ভারতবর্ষের পশ্চিমোত্তর

এই সমন্ত পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে, গর্গ মুনির পুজাপাদ ও শ্রদ্ধাপাদ জ্যোতির্বিৎ যবনেরা যে এটক জাতি এবং স্তরাং প্রাকৃত যোক ও সংস্কৃত যবন শক্টি ধে এটকজাতি-প্রতি-গাদক ইহাতে আর কিছুমাত্র সন্দেহ থাকে না।

আবোনিয়া দেশীয় স্বিথাত এক দিগের নাম হইতেই এই শক্টি উংপন্ন হইয়া পাকিবে। হিক্র ভাষায় উহাদের নাম যবন, পার্মী ও আর্বীতে যুনানী, এবং পার্মীক দেশের প্রাচীন কীলক্ষণা শিল্পলিবি ভাষায় যুনা বলিয়া উল্লিখিত হইয়া আনিয়াছে। দরায়ুষ্ নামে স্থাসিল্ল পার্মীক নরপতি খ্,,পু ং২১ হইতে ৪৮৫ বংসর পর্যন্ত রাক্স্থ করেন। তাহার সেনাদল মধ্যে ভারতব্যীয় সৈল্প সলিবেশিত ছিল। অতএব যথন গ্রীকদের পার্মীক ও ভারতব্যীয় নাম প্রায় এক রূপ, তথন ঐ ভারতব্যীয় সৈক্তেরা পার্মীক দেব নিকট ঐ নামটি অবগত হইয়া আসিয়াছে ইহাই সম্বিক সম্ভব বোৰ হয়।

থীকদের পঞ্চাবাধিকারের উদ্ভর কালে আরব ও পারসীক প্রভৃতি অস্ত আছে আতি ও অবংশবে সকল জাতীয় মোসলমান এবং এমন কি মোসলমান ধ্যাবলয়া ভারতব্যীয়েরাও ববন বলিয়া উলিধিত হইরাছে। কালিদাস পারসীক স্ত্রালোকদিপকে ববনী বলিয়া কার্তিন করিরাছেন।

यवनी सुखपद्मानां सेई मधुमदं न स:।

রঘুবংশ ।৪।৬১।

তিনি ধৰনীগণের মণ্য-পান-নিৰন্ধন মুখ-পদ্ম-রাগ সহ্ম করিতে পারিলেন না।

কালিদাস অভিজ্ঞানশকুস্তলেও হিল্ নৃপতিদিগের নিয়োজিত ধ্বনগরিচারিকাগণের প্রস্ক করিয়াছেন।

एसी वाणासण्डलाडिं जन्नणीडिं वणपुणभालाधारिणीडिं परिबुदी इदी एव्य भागुच्छदि पिनवसस्ती।

অভিজ্ঞানশকুত্তল। দ্বিতীয় অস্ক।

বিষ্ণবর্ক্ত এই আগমন করিতেছেন। যবনাগণ শরাসন ও বনপুপামালা হতে ধারণ পুর্বক ভাঁহাকে পরিবৃত করিয়া আসিতেছে।

দশকুমারচরিতের প্রথম ও চতুর্থ উচ্ছানে কাল্যবন্দীণ এবং ষঠ উচ্চানে ঘৰন ও ঘৰন পোতের প্রমন্ত আছে। হ, হ, উইল্মন ঐ ঘৰন আতি ও ঘৰনপোতকে আরব জাতি ও আরব-পোত বলিয়া বিবেচনা করিয়াছেন।—H. H. Wilson's Introduction to the Dasa Kumara Charita reprinted in his Essays, Vol. I., 1864, p. 371.

• The Khalsi inscription in Cunningham's Archaeological Survey, I, 247, PI, XLI., line 7.

প্রদেশীয় লোক। * অতএব তাঁহাকেও ঐ প্রদেশীয় নৃপতি-বিশেষ বিবেচনা করাই মহাভারত-রচিরতাদিগের. অভিপ্রেত হইবে। তাহা হইলে তিনি ষে ববন জাতির সহিত যুদ্ধ করেন, তাহারা এবং অস্তাক্ত হলে উল্লিখিত ষবন-জাতীয়েরা ঐ দিকের ঐ বাহলীক রাজ্যের যবন অর্থাৎ গ্রীক্ বাতিরেকে অস্ত লোক হওয়া সন্তব নয় ঐ রাজ্য খু,পু প্রায় সার্দ্ধ তুই শত বৎসর হইতে খু, পুন্যানাধিক সাতার বৎসর পর্যান্ত বিদ্যানান ছিল। অতএব মহাভারতের অন্তর্গত যবন-সংক্রান্ত কথাগুলি ঐরপ সময়ে অথবা উহার কিছু পরে লিখিত হইয়াছে বলিতে হয়। †

ারামায়ণের ন্যায় মহাভারতেও স্থানে স্থানে 🛊 শক ও পঞ্চাব নামক

[•] এই পুন্তকের প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের >> গৃঠা এবং দিতীর অর্থাৎ এই ভাগের উপক্রমণিকাংশের >৭ শান দেও। শেবোক্ত গৃঠার কাবোজ-বংশীর বলিরা অনুমিত ছিলুকুশ-নিবাসী কোমোজি, কামজেলাক, কামোজ প্রভৃতি নামে পরিচিত যে সমন্ত লোকের বিষয় লিখিত হইরাছে, তাহাদের মধ্যে এইরূপ প্রবাদ প্রচলিত আছে বে. ভাহারা মোসলমান-দের কর্তৃক কালাহারের সন্নিহিত দেশ-বিশেষ হইতে বহিছত হইরা ঐ পর্কতে গিরা বাস করিতেছে।—Journal R. A. S. No. 13, and Elphinstone's Cabul, Vol. 2. p. 376.

[🕇] কিন্তু এ ৰাহলীক রাজ্য সংস্থাপনের পূর্ব্বেও গ্রীকদিগের ভারতবর্ষে প্রমনাগ্রমন ছিল। এীক রাজার। মগধ-রাজ্যাধিপতি মহারাজ চক্রগুপ্তাদির সভার বারংবার দৃত প্রেরণ করেন। গ্রীক নপতি সিলিউকস খ্রীষ্টান্দ প্রবর্তনের প্রায় তিন শত বংসর পুর্বেচ ক্রাঞ্চায় মিগেন্তিনিঞ্কে প্রেরণ করেন। পরে এণ্টিরোকস্ভিউমাকস্নামক এক ব্যক্তিকে এবং ৰিতীয় টলেমি ডিয়োনিসিয়স্কে ও বোধ হয় বেসিলিস নামক অল্প এক দৃতকে ঐ চক্সগুপ্তের পুত্র অমিত্রঘাতের নিকট পাঠাইরা দেন। এণ্টিয়োকস একটি ভারত্বর্বীর **রাজার** সহিত সন্ধিৰদ্ধন করেন। ঐ রাজা হতগদেন বলিরা অফুমিত হইরাছেন। উলিখিত সিলিউকস চন্দ্র এথকে নিজ কলা সম্প্রদান করেল। এ কল্ঠার সংচরী বা পরিচারিক। স্বরূপ অপরাপর এীক স্ত্রীলোক মগধ রাজ্যের রাজধানী পাটলিপুত্রে আগমন করিয়াছিল ভাতার সন্দেহ নাই। ভারতবর্ষের কোন কোন খোদিত লিপিতে যবনীগণকে অর্থাৎ গ্রীক যুবতীদিগকে উপঢ়োকন श्वक्रभ अभाग किंद्रवाद विषय वर्षिण द्रश्चिमारक ।-- (Weber's H. I. Literature, p. 251. দেৰ) অতএব বাহনীক বাজ্য সংস্থাপনের পূর্বেও গ্রীকদিপের সহিত হিন্দদের আলাপ পরিচর ও पनिष्ठे । हिल, जारात्र मत्मर नारे। विख छात्रजवर्षीय रेमरकात्र मर्सा औक रेमका महिन বেশাদি কতকগুলি বিষয়ের কথা নিকটম্ব বাহ্লীক রাজ্যের ঐীক্দিগের সহিত আলাপ পরি-চল্লের বিজ্ঞাপক হওরাই সর্বতোভাবে সম্ভব। কাম্বোজাদি শদের নিকটে যবন্দিগের নাম উলিখিত থাকাতে, তাহাই সপ্রমাণ হইতেছে, ইহা পুর্বেই লিখিত হইলাছে।

[়] সভাপর্ব। ৩১।১৭॥ ই০।২৩॥ ৫১।১৫ ও ॥১৬ উল্যোগপর্ব। ১৯৬।৭। ভীম-পর্ব।৯।৪৪,৪৭ ও ৫১॥

ছইটি জাতির প্রান্ধ আছে। যবন, কাছোজ ও পারদ * জাতির সহিত ঐ হুইটি জাতির নাম নানা সংস্কৃত গ্রন্থে একত্র লিখিত হুইয়া থাকে। † ইহারা সকলেই ভারতবর্ধের পশ্চিমোত্তর-নিবাসী লোক। খুষ্টান্দের প্রায় দেড় শত বংসর পূর্বে শকেরা ভারতবর্ধের পশ্চিম প্রদেশ অধিকার করিয়া ক্রমশং উত্তরে হিন্দুকোহ্ পর্বত হুইতে দক্ষিণে সিন্ধু নদের মোহনা পর্যায় আপনাদের আধিপত্য বিস্তার করে। পূর্বে তাহাদের বিষয় যেরূপ লিখিত হুইয়াছে, ‡ তদমুসারে মহাভারতের ঐ ফল গুলি হুই সহস্র অথবা তদপেক্ষাও অল কালের মধ্যেই বিরচিত বলিয়া স্বাকার করিতে হুইবে।

ইদানী পহলব জাতির পহলব নামটি খৃষ্টাক্ষ-প্রবর্তনের পর প্রবর্তিত বলিয়া বিবেচিত হইরাছে §। ইহা হইলে রামারণ, মহাভারত ও মনুসংহিতার যে যে হলে পহলব শক্ষ সন্নিবিষ্ট আছে, তাহা ঐ সময়ের পরে প্রক্ষিপ্ত গু হইরাছে বলিতে হয়।

রামায়ণ ও মহাভারত মুক্তকাবলী-সমাকীর্ণ দুর্ব্বাময় শাঘল-বিশেষ। ঐ উভয়ে বৈদিক ও পৌরাণিক ধর্মের বিষয় ওতপ্রোত ভাবে পরিব্যাপ্ত রহিয়াছে। একদিকে বৈদিক ধর্ম ৫ বৈদিক সপাখ্যান বিঅমান থাকিয়া নিজ নিজ পূর্ব্ব গৌরব প্রকাশ করিতেছে, অপর দিকে পৌরাণিক ধর্ম ও পৌরাণিক উপাধ্যান অবতীর্ণ হইয়া বিফু শিবাদি পৌরাণিক দেবতাদিগকে হিন্দু সমাজস্থ

^{*} কোন কোন গ্রন্থে পারদ-জাতি পরান্ত এবং পহলং-জাতি পল্লব ও পহ্লব বলিয়া লিখিত জাছে I—Wilson's Vishnu pura'na, 1840, pp. 189, 194, 195 and 374.

[†] স্মু। ১০। ৪৪। বিষ্ণুরাণ। ৪। ৩।

[‡] २१ श्रेश।

ষ্ঠ অমেন্ গণ্ডিত আমান অল্স্হজেন্ বিবেচনা করেন, সংস্কৃত পাজোক্ত পহলব শক্টি পহলব শব্দ হৈ উৎপন্ন এবং ঐ পহলব পর্যব (১) শব্দের অপভংশ। আমান্ নেলডিকিও ১৮৭৫ খ্রীষ্টাব্দের শেষ ভাগে এই বিষয় সম্বন্ধীয় ও বিশেষতঃ ঐ অপভংশ-ঘটনার কাল-নিরূপণ সংক্রান্ত একটি প্রবন্ধ প্রকাশ করেন। এছলে পর্যব শব্দের প্রকারের স্থানে হকার আদিই হইরা পহলব শক্টি নিপান্ন হইরাছে। এইরূপ প্রকারের স্থানে হকার আদেশ হওরাটি খ্রীষ্টাব্দ-প্রবর্তনের পূর্বের ঘটিবার কোন প্রমাণ দেখিতে পাওরা যার না। আমান্ বেবের অনুমান করেন, খ্রীষ্টাব্দের প্রথম শতাকার পর ও পঞ্ম শতাকার প্রের ঐ শক্টি ভারতবর্ষে আদিয়া বাবহৃত হর।— Weber's H. I, Literature pp. 187, 188 and 318.

[¶] বালকাণ্ড। «৪।২০ ॥ সভাপর্ক। ৩১।১৭ ও ৫১।১৫॥ সনুসংহিতা ১০।৪৪॥

⁽³⁾ Parthians.

ধর্ম-বেদির উপরে প্রতিষ্ঠিত করিয়া দিতেছে। উভয় গ্রন্থেই বৈদিক ধর্ম সমধিক প্রবল দৃষ্ট হয়। রামারণের মধ্যে স্থানে স্থানে দেবগণের সংখ্যা ভেত্রিশটি বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে।

यथाक्रमेण ग्रंपसि वरं मम ददासि च। तत् ऋणुन्तु वयस्तिं ग्रहेवाः सेन्द्रपुरोगमाः॥ व्यवसार्वाछ । ১১১১०।

তুমি বথাক্রমে শপথ করিয়া আমাকে বর প্রদান করিতেছ; ইহা ইস্রাদি তেত্রিশ দেবতা শ্রবণ করুন।

मदित्यां जित्तरे देवास्तयस्तिं ग्रदिन्दम । मादित्या वसले रुट्रा मिष्वनी च परन्तप ॥

আরণাকাও। ১৪। ১৪ ও ১৫

আদিতির গর্ভে আদিত্যগণ, বস্থগণ, কল্পগণ, অখিন-যুগল এই রূপ তেতিশটি দেবতা জন্ম গ্রহণ করিলেন।

দেবগণের এই সংখ্যাটি বেদোক্ত ও অতি প্রাচীন ভাষার সন্দেহ নাই *।
পরাণোক্ত তেত্রিশ কোটি দেব-সংখ্যা করিত হইবার বহু পূর্ব্বে উরিথিত
সংখ্যাটি প্রচলিত ছিল। ঐ তেত্রিশটি দেবতাও বৈদিক দেবতা। পূর্ব্বোক্ত শোকের অন্তর্গত "ইক্সপুরোগমাং" পদে তাহাই সপ্রমাণ করিরা দিতেছে।
অতএব এই কথাটি নিতান্ত বেদামুগত ও অতিমাত্র প্রাচীন কথা। দশর্থ।
রাসচন্দ্র, বুধিন্তিরাদি রাজগণ কর্ত্বক অমুন্তিত বলিরা বর্ণিত অখ্যমেধ-বক্ত,
রাজস্ম-বক্ত, পুল্রেন্টি-যাগ এই সমুদারই বৈদিক ক্রিয়া। পূর্ব্বতন হিন্দু
সমাজে প্রচলিত বলিয়া পরিকীর্ত্তিত শ্রম্বর †, বিধবা-বিবাহ ‡, শ্লামি-

প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিভাংশের ৩৪ পৃঠা।

[†] ঘেষন দমরতী ও জৌপদীর বিবাহ।—বনপর্বন। ৫৪—৫৭ ও জাদিপর্বন। ৮৪-১৯২-জ।

[া] যেমন নাগৰাজ ঐয়াবতের বিধৰাক্সার সহিত অর্জুনের বিবাহ।—ভীমপ্রক।

সংহাদরের সংসর্গ ধারা সম্ভানোৎপত্তি *, গান্ধর্ম-বিবাহ †, অসবর্ণ-বিবাহ ‡, জীলোকের বছবিবাহ §, ও বয়:হা হইয়া বিবাহ শ, অবিবাহিতাবছায় প্রীগণের সম্ভানোৎপত্তি-প্রচলন ॥, পতি নিরুদ্দেশ হইলে তাহাদের প্রের্মার বিবাহ **, বলপুর্মক কল্যাপহরণ-প্রথা ††, পরক্ষেত্রে

- ং বেমন বিচিত্রবীর্ব্যের পত্নী অভিকাপ্ত অবালিকার গর্প্তেপ্ত ব্যাদদেবের ঔরসে ধৃতরাষ্ট্র ও পাওর লক্ষ-প্রহণ। আদিপর্বা। ১০৬ অ।
 - 🕂 বেমন শক্তলার সহিত দুল্লন্তের বিবাহ।—আদিপর্বা। ৭৩ আ।
- া বেমন অঞ্চরাজ-লোমপাদ-কল্পা শান্তার সহিত খ্যাশৃঙ্গ খ্যির ও বৈশুক্তা বিশেষের সহিত ধৃতরাষ্ট্রের বিবাহ। —রামারণ, ১।১০।৩২। মহাভারত। ১।১১৫।১।
- ∮ বেষন পঞ্চ পাওবের সহিত ট্রোপদীর বিবাহ। মহাভারতে ঐ প্রথাট সনাতন ধর্ম
 বিলয়া উলিবিত ও উহার অফাল্ট উলাহরণও প্রদর্শিত হইয়াছে।

एव धर्मी भूवी राजंबरैनमविचारयन्।

व्यापिशर्या । ১৯१। ७১।

রাজন্। ইছা (অর্থাৎ স্ত্রীলোকের বছবিবাছ) স্বাতিন ধর্ম। ইছার অনুষ্ঠান করুন; আবার বিচার করিবেন না।

> यूयते हि प्राचेऽपि जटिला नाम् गौतमी । ऋषौनध्यासितवती सप्त धर्मास्तां बरा । तयैव सुनिना वार्चा तपीभिभीवितालनः । संगतासूह्य सातृनेकनासः प्रचेतसः॥

> > चामिनर्या >>७। >৪ ও >৫।

এইরণ পুরাণ কথাও গুনিডে পাওরা বার বে, জাটিলা নামে গৌতম-বংশীর একটি ধর্ম পরারণা কলা সাত খাঁবিকে বিবাহ করেন। সেইরূপ বাক্ষা নামে একটি মুনি-কলা প্রচেতা নামক তপফি-প্রধান দশ সংহাদরের সহধর্মিণী হন।

¶ বেমন কুন্তী, শকুন্তলা, জৌপদী ও দময়ন্তীর বিবাহ।

। বেমন কন্তা-কালে কুন্তার গর্ভে কর্ণের ও সত্যবতীর গর্ভে ব্যাসের জন্ম।—কাদিপর্ক। ১১১। আদিপর্ক। ৬০। ৬৪—৮১।

** বেমন নল নিক্লেশ হইলে, দশর্জীর পূন: বর্গর-কল্পনা — বনপ্র্ব। ৭০।২৪ ইত্যাদি।

†† বেমন অর্জন কর্ড়ক হজান-হরণ এবং তীম কর্তৃক কাশীরাল কন্তা অধা, অধিকা ও অধালিকার অপহরণ এবং দুর্ব্যোধন কর্তৃক কলিল দেশের রালা। চিত্রালদের কলা-হরণ।— আদিপ্রব। ২১৯,২২০ ও ১০২ অধ্যার এবং শান্তিপর্ব্ব, রালধ্যাহিশ্যান প্রবিধ্যার,৪র্থ অধ্যার।

পূর্বতন বিলু সমাজে বলপূর্বক কঞাপহরণ সাতিশয় প্রশংসনীর বলিরা গণ্য ছিল।

प्रमध्य तु इतामाहुज्यायसी' धर्मावादिन:।

व्यक्तिभव्य । २०२ । २२ ।

ধর্মবাদী পশুতেরা বলপুর্লক অপজ্ঞ কন্যাকে সর্ব্ব শ্রেষ্ঠ বলিলা কীর্ত্তন করিলাছেন।

*, ও দাসী গর্ভে †, সন্তানোৎপাদন, সচরাচর মন্ত-পান ও গোমাংসাদি নানা-বিধ মাংস-ভক্ষণ ‡ এ সমস্তও বেদোক্ত ও মনুসংহিতাপ্রোক্ত ধর্ম-ব্যবহার। বেদসংহিতার ইহার অধিকাংশেরই সুস্পষ্ট প্রমাণ প্রাপ্ত হওরা যার।

श्रश्यत् । — कियति योषा मर्यतो वधूयोः परिप्रीता पन्यसा वार्येण । भद्रावधूर्भवति यत्सु पेशाः खयं सा मित्रं वनुते जने चित् ॥

* বেমন বলিরাজের মহিবী ফুলেফা ও তদীয় ধাতেরী শূকার গর্ভে দীর্ঘতম ধবির বারা সন্তানোংপাদন।— আদিপর্কা। ২০৪ অ।

বে সময়ে লোক-সংখ্যা অল ছিল, সেই সময়ে এইরূপ ব্যবহারের স্ত্রপাত হইরা থাকিবে। জনসমাজের যখন বেরূপ অবস্থা ঘটিয়া উঠে, আনেকস্থলে সেইরূপ ধর্ম প্রবর্ত্তিত হইতে দেখা বার। জাতীয় ধর্মের তে। এই দশা।

- 🕇 (यमन नामी गर्छ ७ बारमत छेत्रस विदूरतत छे९लाख ।— आमिलव्स । ১०७ 🗷 ।
- া যেশন অযোধ্যাকাথে র_ু ১ একানকাই সংগ্ ভরত-দৈন্য-ভোজন বৃত্তান্তে এবং সভা-পর্কের ৩২ বজিশ অধ্যারে রাজস্ব-যজ্ঞ-বিবরণে ও শান্তিপর্কের ২৯ উন্দ্রিংশ অধ্যারে রন্তি-দেব রাজার উপাধ্যানে নানাবিধ মদ্য ও ছাগ্, মৃগ্, শৃক্র, গো, কুরুটাদির মাংস ব্যবহারের অসক।

পূর্বতন ও অধুনাতন হিন্দু-সমালে অর্গ-মর্জ্য-প্রভেদ। ঐ উভরের ব্যবহার দৃষ্টে, এ জাতি যেন সে জাতি নর বোধ হয়। ইতি পূর্বে মহিব মাংসের বিষয় লিখিত হইরাছে (১) চরকাদি প্রাচীন বৈদ্যক শাস্ত্রে গো, নরাচ, কুর্ট মাংসাদি ভোজনের ভূরি ভূরি ব্যবহা আছে। চরকের অল্লপান বিষয়ধ্যায়ের ভূতীর সর্গে ঐ সমস্ত ও মেয়াদি অভ অভ বছবিধ মাংসের গুণ-সমৃত্ বণিত হইরাছে। চরকের স্বেহাধ্যারে লিখিত আছে।

(১) ७७ शृष्टी (१४।

यदि प्रवत्त सत्पते सङ्खं मिड्वाँ षघः। षादित्त इन्द्रियं मिड्ड प्रवावधे॥

サーア: レンミア

হে সংপতি মহান ইন্দ্র! বধন তুমি সহত্র-সংখ্যক মহিষ ভক্ষণ কর, তথন তোমার বীধ্য বছপ্রকার হইয়া বৃদ্ধি পায়।

> खावतैत्तिरिमायूर्डांसवाराङकौक्कुटाः । गव्याजौरसमात्श्वास रसाः सुः सं इने हिताः । (सर्वाशास ।

লাৰপন্ধী, ভিত্তিরপন্ধী, ষয়ুর, হংস, বরাহ কুরুট, গো, অজা, মেষ মংস্য এই সকল পশু-পন্মানিরকাশ সেহ-পান বিষয়ে হিডকারী। কত দ্বালোক আপনার প্রণয়াভিলাষী ঐশব্য ভোগ-শালী মহব্যের প্রতি অহুরক্ত হয়। বে নারী রূপবতী, সেই ভাগ্যবতী। সে নিকে লোক মধ্যে আপনার বন্ধুরে বরণ করে।

মাধবাচার্য্য এই ঋকের ভাষ্যে নল ও অর্জুন এবং দময়স্তী ও দ্রৌপদীর নাম উদাহরণ স্বরূপ উল্লেখ ক্রিয়াছেন।

त्वित्र-मःभर्ग।—को वां श्रयुत्ना विधवेव देवरं मधें न योषा क्रणुते सधस्य श्रा।

∜-7:। >•म। ४•छ। २ ४।

(অখিন্!) ধেমন বিধবা স্ত্রীলোকে আপন শ্ব্যার দেবরকে আকর্ষণ করে, অথবা বেমন নারী নরকে আকর্ষণ করে, সেইরূপ কে ভোমাদিগকে আকর্ষণ করিরা থাকে ?

মাধবাচার্য্য এই ঋকের ভাষ্যে দিতীয় বর বশ্লিয়া দেবর শক্ষের বাংপত্তি করিয়াছেন।

व्यवर्ग-विवार ७ खीलां कित वहरिवार।—उत यत् पतयो दश स्त्रियां पूर्वे अब्राह्मणाः। ब्रह्मा चेद इस्तं अग्रहीत् सएव पतिरे कथा॥

व्यवस्तित्वम । १ : ५ १। ৮।

ভাৰ একাশ, রাজনির্ঘট, রাজবল্প এই সমত প্রস্থ-রচরিতার। প্রত্যেকে গোমাংসের বা কুকুট মাংসের নানারপ স্বাস্থ্যকর গুণ বর্ণন করিয়াছেন। রাজা রাণাকাল্ত দেব বাহাত্র নিজ প্রস্থে সে সমত উদ্ধৃত করিয়া যান (১)।

এ বিবরের একটি কৌত্কাবহ উপাথ্যান আছে। রস্তিদেব নামে একটি রালা বার পর নাই ধার্মিক ও ক্রিয়াবান্ ছিলেন। রাত্রি-কালে তদীর গৃহে অতিধি সমাগম হইলে, উাহাদের ভোলনার্থ বিংশতি সহত্র একশত সংখ্যক গো-বধ করা হইত, ইহাতেও উাহাদের সকলের সমাবেশ ও তৃত্তি-সাধন হইত না। পাচকেরা এই বলিরা চাৎকার করিত বে, অদ্য আপনারা স্প্রথাত অলমাত্র ভোজন করুল। পাচকেরা এই বলিরা চাৎকার করিত বে, অদ্য আপনারা স্প্রথাত অলমাত্র ভোজন করুল। পাচকেরা এই বলিরা চাৎকার করিতে পাইবেন না (২)। লিখিও আছে, ঐ রাজার বজ্ঞে এরূপ বহুসংখ্যক পশু-বধ হর বে, সেই সমন্ত পশুর চর্মা-ক্রেদ ছইতে একটি মহানদা উৎপন্ন হইরাছে। তাহার নাম চর্মাণ্ তা (৩)। ঐ চর্মাণ্ তার বর্জনাম নাম চক্ষা। বেঘদুত এপেতা কালিদাস উহাকে রন্তিদেবের "স্বভিতনরালভ্জাং" অর্থাৎ গোবধ-ক্ষমিত রক্তোভত্তবা নদী বলিয়া বর্ণন করিরাছেন।—(বেঘদুত ৪৪।)

^{(&}gt;) अक्काक्यम (शां ७ क्कृष्टे अका

⁽२) माखिनक्त ।२२।>२৮ ७ >२२।

⁽७) माखिनर्स ।२३।३ ५८।

এবং কোন স্ত্রীলোকের ব্রাহ্মণ ভিন্ন অন্ত, কাডীয় দশটি পূর্বসামী থাকিতে যদি কোন ব্রাহ্মণ ভাহার পাণি-গ্রহণ করেন, তাহা হইলে ভিনিই ভাহার পতি। *

ञ्चीत्नारकत अधिक वग्रतम विवार।—युवं नरा सुवते क्षिणयाय विष्णाप्तं ददय विष्वकाय। घोषायै चित्पित्वषदे दुरोणे पतिं जूर्यत्या ग्रम्बनावदत्तं।

ৠ-तः । २४ । २२१२ । १ **स** ।

অধিনায়ক অখিন্-যুগল! তোমাদের স্তবকর্তা কৃষ্ণ-তনর বিশ্বককে তাহার বিষ্ণাপু নামক বিনষ্ট পুত্র দান করিয়াছিলে। ঘোষা নামে (একটি খ্রীলোক) জরা-গ্রস্ত অর্থাৎ প্রাচীন হইতেছিল, তোমরা তাহাকে পতি প্রদান করিয়াছিলে।

বিধবা-বিবাহ ও গার্ষ্মর্ব বিবাহ ।— বখন জীলোকে স্থামিসত্ত্ব অন্ত পুরুষকে বিবাহ করিতে পারিত, তখন বিধবা জ্রার পুনঃ সংস্থারের প্রথা প্রচলিত থাকা সর্বভোভাবেই সন্তর্ত্ব ! এই পুসুক্ষের প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের মধ্যে † এবিষয় একবার আলোচিত হইরাছে । ঋগ্বেদ-সংহিতার দশম মণ্ডলের অন্তর্গত দশম স্তক্তে সন্নিবেশিত যম-বমী-সংবাদ গান্ধর্কবিবাহ-প্রচলনেরই বিজ্ঞাপক বলিয়া প্রতীয়মান হইতে পারে । ভাহাতে লিখিত আছে, বমী ষমের প্রতি কামাত্রক্ত হইয়া বিবাহার্থে প্রার্থনা করিত্তেন, কিন্তু যম কিছুতেই সে বিষয় স্থীকার পাইতেছেন না ।

वलश्र्वक कन्तारद्वन । —यस्यानचा दुहिता जात्वास कस्ताँ विदाँ यभिमन्याते यंधां। कतरो मेनिम् प्रति तम् सुचाते य ईम् वहाते यः ईम् वा वरेयात्।

#-- 7:1 > 0 파 1 국 9 장 1 > > # 1

ৰাহার ছহিতা দৃষ্টি-হীন, কে জ্ঞাতসারে তাহার সেই আন ছহিতাকে

^{*} প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ১৯ পৃঠা দেখ। 🕴 🕇 ৮৮ পৃঠার

অভিনাষ করে? বে ব্যক্তি এরপু কল্পাকে নইয়া যায় বা ভাহার সঙ্গিত বিবাহ কামনা করে, কে ভাহার প্রতি মেনি + নিক্ষেপ করে ?

দাসী-গর্ভে সন্তানোৎপাদন।—-কবৰ ঋষি ঋগ্বেদসংহিতার দশম মণ্ডলের অন্তর্গত কতকগুলি স্কু রচনা করেন। তিনি দাসী-পূত্র। ঐভরের ও কৌষীত্তকি-ব্রাহ্মণে তাঁহার প্রসঙ্গ আছে। † বজ্ঞ-স্থলে ঋষিপণ তাঁহাকে বলেন,

दास्या वै त्वं प्रतोऽसि न वयं त्वया सह भन्नयिष्याम:।

कोशैजकि वाक्षण। ১১।

তুমি দাসী-পুত্র। আমরা ভোমার সহিত একত্র ভোজন করিব না।

কক্ষীবান্ও ঐ সংহিতার প্রথম মণ্ডলের একটি ঋষি; তিনি দীর্ঘতমার উরসে ও অপরাজমহিষীর দাদীর গর্ভে জন্ম গ্রহণ করেন এইরূপ লিখিত আছে। ‡

ममाशान ।— इत्यु पीतासी युध्यं ते दुर्सदासी न सुरायां । उधर्षे नम्ना जरंते ॥

(ইক্স:) তুমি সোম সমস্ত পান করিলে, তাহারা তোমার উদরে গিরা মদোন্মন্ত ব্যক্তিদের মত যুদ্ধ করিতে থাকে। তুমি হগ্ধ-পূর্ণ গোল্ডনের সদৃশ হও। স্তোত্পণ তোমার স্থাতি করে।

नकी रेवन्तं सख्याय विंदसे पीयंति ते सुराम्बः।

∜-नः। ५२। २००। ३८ ४।।

ইক্স! তুমি কোন ধনী ব্যক্তিকে বন্ধ-ভাবে প্রাপ্ত হও না। স্থরাসক্ত ব্যক্তিরা ভোমার হেষ করে।

(गांगाः त्रज्या । — शक्तमयं धूममारादपम्यं विषूवता पर एनाव-रेण। उच्चाणं प्रश्निमपचंत वीरास्तानि धनीाणि प्रथमान्यासन्।

^{*} অন্ত বিশেষ।

[†] ঐতবের রাহ্মণ।২।১৯ ও কৌবীতকি রাহ্মণ।১১।

[🗜] মুক্তিত খগ্ৰেদদংহিতার প্রথম থণ্ডের ১১৭ পৃঠা।

আদাতিদ্রে গোমর-ধ্ম দেখিতেছি এবং সেই ব্যাপ্তিমান্ নিরুষ্ট ধ্ম খারা আমি দর্শন করিতেছি ঋতিকেরা শুক্লবর্ণ ব্য রন্ধন করিতেছেন। সে সমুদার প্রথমকার ধর্ম।

কি অশ্চর্যা। এই অবদন্ধ-প্রায় নিন্তেজ হিন্দু জাতি কি এতই বীর্যাবান ও এতই তেজীয়ান ছিল বে. অখ্যেষ, রাজস্ম, এক্ষোৎসব, সর্পস্ত, স্বর্ম্বর, লক্ষ্য-ভেদ, ধমুর্ভঙ্গপণ এই শব্দগুলি প্রমার্থ-বোধক ও সামাজিক ব্যবহার-প্রতি-शासक इटेटल ए उर्शाल किवन वन-विक्रम ए (मोर्श-वीर्याहे ध्वकान क्रिएएह)। ফলতঃ রামায়ণের সমধিক ভাগ রণ-প্রতিজ্ঞা, রণোত্মোপ, রণোৎসাহ ও রণ-ক্রিরার বিবরণেই পরিপূর্ণ বলিলে, অসমত হয় না। একটি ভয়ানক বৃদ্ধ-বর্ণনই সমগ্র মহাভারতের মূল উদ্দেশ্র। বালি দ্বীপে ঐ গ্রন্থ ভারতবৃধ্ বলিরাই প্রসিদ্ধ। মৃর্ত্তিমান বীর্য্য-শ্বরূপ চিরপ্রাসিদ্ধ কুরুক্তেত চির-দিনের নিমিত্ত হিন্দু জাতির পরম পবিত্র মহাতীর্থ বলিয়া পরিগণিত রহিয়াছে। উহাতে কত বীর-দম্ভ ও কিরপ শ্র-কীর্ত্তি প্রকাশিত হয় কে জানে ? ঐ নামটি উচ্চারণ মাত্র, বল, বীর্গ্যা বিক্রমাদিকে মন্তকে করিয়া উৎসাহ-ভরক উলক্ষন করিতে থাকে। ভীম ও অর্জ্জন ভীয় ও কর্ণ, রূপ ও দ্রোণ, রাম ও পরশুরাম * এই তেজোমর শক্ষ গুলিতে দে সমরের কি অপূর্বা প্রভাব ও ज्रुक् तोत्रज्दे अकाम कतिराह ! जांदात्मत्र नारमाक्रात्रण माळ मत्रीत्मत्र শিরা সমুদ্র চঞ্চল হয়. শোণিত-প্রবাহ প্রবল হইরা উঠে, নয়ন-যুগল অরণ-প্রভাব প্রকাশ করে, গাত্র হুইতে যেন অগ্নিফুলিক সকল নির্গত হয় এবং চির-निर्वान चारश्वतित्र व्यश्वारभारतत्र नाम छेरमाहानम क्षराविष्ठ स्टेर्ड बारक । चामारमञ्ज कछ रमत्राधन ७ कछ धर्म शिनत । नाम मुश्र इहेन्ना शिन्नार क

^{*} হিন্দু জাতির তো প্রকৃত ইতিহাস নাই। হতরাং ভীমার্জ্ন প্রভৃতি বে কিরপ গণ-শালী ছিলেন, কে নিশ্চর বলিতে পারে ? তবে, পাঠকগণ ! পূর্ক্কালে বে সমত বীরপুরুষ বীর-প্রস্তা ভারতভূমির খাধীনত হও সঞ্চর করিয়া বান, ঐ উৎসাহ-প্রদ্দীপক সংজ্ঞাওলি তাঁহাদেরই বিজ্ঞাপক বলিয়া বিবেচনা হইতে হইবে। ক্রিড-রূপ স্বম্যা-প্রস্ন-সভলে বতই উভীয়মান হও না কেন, তত্ব-প্রাবিশ্বত হইও না।

[া] আঁকেরা পারসিকদের সহিত সংগ্রাস-কালে এই ছুই স্থানে অসাধারণ শৌর্য-বীর্ব্য ও বদেশ-হিতৈবিতা প্রকাশ করেন।

জানে ? কত লিওনাই ডেন * ও কত কোড্রস্ ‡ এই বীরভূমিতে জন্ম গ্রহণ কবিয়াছিলেন তাহাই বা কে বলিতে, পারে ? একটি হিরোডোটদের অসভাবে সে সমস্ত বীর-কীর্তি হয় তো একবারে লুপ্ত হইয়া গিয়াছে।

There is not a petty state in Rajasthan that has not had its Thermopylæ, and scarcely a city that has not produced its Leonidas; but the mantle of ages has shrouded from view what the magic pen of the historian might have consecrated to endless admiration: Somnath might have rivalled Delphos; the spoils of Hind might have vied with the wealth of the Lybian king; and compared with the array of the Pandus, the array of Xerxes would have dwindled into insignificance. But the Hindus either never had or have unfortunately lost their Herodotus and Xenophon.—Tod, vol. I. Introduction.

এককালে বীর-কেশরী গ্রীকেরা ভারতবর্ষীয়দের বীরত্ব ও রণ-পাণ্ডিত্য দর্শনে চমৎকৃত হইয়া মৃক্তকণ্ঠে যেরপ গুণ-কার্তন করিয়াছেন, এবং তাঁহা-দিগকে যেরপ দীর্ঘ-কায়, পরাক্রম-শালী ও রণ পাণ্ডিত বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন ।, এখন তাহা কেবল প্রার্ত্তের বিষয় ও উপাখ্যানের স্থল হইয়া পড়িয়াছে। দে আকার নাই, প্রকার নাই, বীর্ঘ নাই ও আত্ম-রক্ষারও ক্ষমতা নাই। গুভারতভূমি! তোমার মহিমা-স্থ্য একবারেই অন্ত গিয়াছে! তোমার কীর্ত্তিচক্ত আর সঞ্চরণ করে না! কেবল তোমার ভ্রন-বিশ্যাত বত্মুল্য দৃশ্যমান

লিওনাই, ভদ্নামক প্রীক্ বীর পারসীকলের সহিত যুদ্ধ উপলক্ষে রণকেত্রে অভ্ততপূর্বে
 অভত বীরত ও অসামাল্প দেশ-হিতৈবিতা প্রদর্শন করেন।

[†] কোড্রস্ নামে এীক রাজা আদেশের কাণীনত-ক্থ-রক্ষণার্থ বেচছাকুসারে কৌশলক্ষে প্রাণত্যাস করেন।

[‡] Elphinstone's History of India, 1866, p. 266.

শ এবলে একটি আশ্চর্যা ব্যাপার শারণ হইতেছে। ইদানী একশন্ত বংসরের মধ্যে ভারতবর্ষীরদের বেরপ বল-কর ও বার্যা-কর ঘটিরাছে, পূর্বে সহস্র বংসরেও কোন কারণে সেরপ কিছুই হয় নাই। বাক্লা-দেশীয়েরা তো এ বিয়ে একটি অতিমাত্র হীন জাতি হইরা গড়িরছে। ৫০।৬০ পঞ্চাশ ব।ট্ বংসর পূর্বেও এদেশে বেরপে বলবান্ লোক বিদামান ছিল, এখন তাহার কিছুই নাই। এদেশীয় গ্রহকারদিগের মধ্যে কেছ যদি খদেশীয় পূর্বতন

কহিন্রই অন্তরিত হইরাছে এমন নর, তাহার বহু পূর্বে চির-সঞ্চিত অম্ল্য অন্তরস্থ কোহিন্র * একেবারে অন্তর্গুত হইরা গিরাছে। দীর্ঘকার এখন অতি ক্ষীণ ব্রস্থ কারে পরিণত হইরাছে। কোধার সিংহ-শাদ্লের ভরাবহ গর্জনধ্বনি, আর কোধার ঝিলীগণের মৃত্-মন্দ আর্ত্ত-স্বর! কোধার বীরগণের বীর-দর্প ও স্পর্জা-সহক্ত সাহস্কার হুলার-ধ্বনি, আর কোধার দীন হীন আশ্রিত জনের ক্বতাঞ্জলিপুটে কুপা-প্রার্থনা! সেই হিন্দু এখন এই হিন্দু! এক কালের সিংহ-শাদ্ল-প্রস্বিনী ভারতভূমি এখন শশ-মূলিক-প্রস্বিনী হইরা কতই লাঞ্চিত হইতেছেন। তদীর পূর্ব-প্রভাপের চিতারি হইতে কি স্থার্ম ও ঘনীভূত ধূমাবলী উথিত হইতেছে। তাহার বর্ত্তমান অবস্থা অরিমর; ভবিষাৎ গাঢ়তর ধ্যে আছের।

বৃদ্ধ-কায় ভারতভূমি আর অধর্মের ভার বহন করিয়া কুপোয়া-পোষণ

"বিচিত্র করিতে গৃহ বত্ন কর মনে মনে। কিন্তু গৃহ ক্ষমুল হইতেছে দিনে দিনে" ফলতঃসক্ষধে ঘোর অক্ষরার ৷ ঘোর অক্ষরার ! ধোর অক্ষার !

লোকের শারীরিক অবস্থা ও তৎসংক্রান্ত রাঞ্চা রঘুরাম রামচন্দ্র, (১) রাধাপোরালা, আশানন্দ টেকি, রামদাস বাবু, তারিণী চট্টোপাখ্যার প্রভৃতি বলিঠ ব্যক্তিদের ইতিবৃত্ত সংগ্রহ করিয়া প্রকাশ করিতে পারেন, তাহা হইলে সেই সমস্ত বিষয় লোকের স্মৃতিপথ হইতে একেবারে অন্তর্গত হয় না। কেবল উপ্রাণ বিধিয়া ও যাত্রা ক্রিয়া আয়ুংশেষ করা কি প্রম্কারের কার্য।

অর্জ শতাকীর মধ্যে এদেশীর লোকের শরীর কোন ছলে অর্জ-হন্ত ও কোথাও বা এক-হন্ত প্রমাণ হ্রন্থ হইয়া পড়িরাছে। বল-বীর্ব্যের পরিমাণের তো কথাই নাই। ৰালালা-দেশীর পরীর্যামন্থ পাঠকরণ ! নিজ নিজ গ্রাম ও অন্য অন্য পরিচিত হানের প্রতি দৃষ্টি-পাত করিয়া দেখিবেন দেখি, ভদ্রলোকের সংখ্যা হ্রাস হইতেছে কি না ? ও বংশ-বিশেবের লোপাপত্তি সভাবনা ঘটিরাছে কি না ? আমি নিজে এ বিষয় মতদুর জানিতে পারিরাছি, তাহা কোন-রূপেই ওল্প্টেক নর। কোন কোন বিচক্ষণ আরীর ব্যক্তিকে জিজানা করিরা ৰাহা জানিরাছি, তাহাও দেইরূপ। অনেক হ্রেল ইতর লোকের বিষয়ও সেইরূপ দৃষ্ট হইরা থাকে, এক এক হানের বৃত্তান্ত অভীব শোচনীয়। অলাতির উন্নতি প্রত্যাশার পূর্কে ভদীর শারী-রিক অবহাও জন্মহিতিলরের বিষয় একবার লক্ষ্য করা আবহাক। শারীরেক উন্নতি সকল উন্নতির মুলীভূত।

^{*} জ্যোতি:-পর্বত অর্থাৎ তেলোরাশি।

⁽১) রব্রাম ও রামচন্দ্র প্রাণ্ডার রাজা ক্ষচন্দ্রর পূর্বপুরুষ। তিনি ঐ রব্রামেরই পূত্র। জীবৃত কার্তিকচন্দ্র রার বাব্র প্রণীত কিতীশবংশাবলীর ৮৭ ও ১২।১৫ পৃঠার ইহাঁদের বল বিক্রমের বিষয় দেখিতে পাইবে।

করিতে সমর্থ হন না ৷ ভীম-জননী ও অর্জ্জ্ন-মাতা আর কাহার মুধাবলোকন कविश्वा ज्यांना-११ ज्यवस्य कविरवन ? शशनम्शर्मिव हिमानत्र ७ ज्यांशांवर्खत्र ৰ প্ৰ-বিশেষ বিদ্যাচল বাহাদের বল ও বিক্রম. বীৰ্য্য ও উৎসাহ এবং ধর্ম ও প্রতিষ্ঠা রুদ্ধ করিয়া রাখিতে পারে নাই, দেই মহাপুরুষদের বংশে এখন এই অধম পামর-শ্বরূপ আমরাই জন্মগ্রহণ করিয়াভি। তাঁহাদের শোণিত কণা হিন্দু জাতির রক্ত শিরা হইতে একবারে অন্তর্গুত হইয়াছে। তদীর চিতা-ভন্ম-কণাও বিদ্যমান নাই। সে সমস্ত পুরাতন মহত্তর পদার্থ একেবারে অদৃশ্য হইয়া গিয়াছে। তাহার সহিত আর কণামাত্রও সংবোজিত হইল না, কথনও हरेटवर ना । छाराइ किছू किছू क्वित छात्र छात्र छ कथात शति गठ हरेत्राट छ শ্রুতি-পথমাত্রে অবস্থিত রহিয়াছে। অন্ত্র-শিক্ষা ও অন্ত্র-পরীক্ষা যে জাতির বালক-সমূহের ধর্ম-কর্ম বলিয়া পরিগণিত ও আবাল-বৃদ্ধ-বনিতা সকলেরই উৎসাহ-छन हिन এবং প্রধান প্রধান ধর্ম-ক্রিয়া ও সামাজিক ব্যবহার বল-বিক্রম, তেজবিতা ও রণোৎসাহেরই পরিচায়ক ছিল * সেই হিল্পু এখন এই হিলু ৷ যে জাতীয় লোকের সমগ্র তৃতীয়াংশ যুদ্ধ-ব্যবসায়ে প্রবৃত্ত বুদ্ধামোদে আমোদিত ও বৃদ্ধ-মদে উন্মন্ত ছিল, যাহারা বৃদ্ধে বিমুখ ও যুদ্ধস্থলে ভয় প্রাপ্ত ছইলে, ক্ষত্রিয়-কুল-বহিভুতি কুলাঙ্গার বলিয়া ঘুণিত ও তিরস্কৃত হইত, ধর্মা-যুদ্ধে প্রাণ ত্যাগ করিলে নিশ্চয়ই স্বর্গ-লাভ হইবে বলিয়া বাহারা বিশ্বাদ করিত এবং अम्बा विर्तिभीत्र वीत शुक्रस्यता यांशांतिशतक महाभूताकुम्मानी व्यथान त्यांका বলিয়া বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন, † সেই হিন্দু এখন এই হিন্দু ! যাহারা অভ্ততপূর্ব্ব প্ৰভূত শৌৰ্য্য বীৰ্য্য ও পরাক্রম প্রভাবে তৃষার-মণ্ডিত হিমালয় অবধি সমুদ্র-সলিল-ভুলিগ্ধ ক্সাকুমারী ও দাগর-পার-স্থিত দ্বাপ-দ্বীপান্তর পর্যান্ত আপনাদের জয়-পতাকা ও ধর্মপতাকা উড্ডীয়মান করিয়া অতুল কীর্ত্তি প্রকাশ করিয়াছে এবং ৰলবৎ নদী প্রবাহের পুরস্থিত তৃণ-পুঞ্জ-সদৃশ আদিম নিবাসীদিগকে নির্ভয়ে ও নৃশংস ভাবে গহন ও গিরি গুহাম তাড়িত করিয়া যার পর নাই রণ-প্রভাপ ও জিগীয়া প্রভাব-প্রদর্শন করিয়াছে, সেই হিন্দু এখন এই হিন্দু। তদীয় পূর্ব-প্রভাব ও পূর্ব্ব-মহিমার ভগ্নাবশেষও বিদ্যমান নাই। সমস্ত বাষ্পীভূত হুইয়া গিয়াছে ! কোথায় সে হস্তিনা ও ইক্সপ্রস্থা ? কোথায় বা সে মথুরা ও উত্তর-কোশলা ? কোথায় বা সে উজ্জ দ্বিনী ও পাটলিপুত্র ? নাম আছে, কিন্তু পদার্থ নাই। অঙ্গার আছে, তাহাতে অগ্নি নাই। দেহ আছে তাহাতে জীবন নাই। माकाबवामीत अध्य मूल विक कवाउँ-भूना खब्रा-खोर्ग दम्यमन्तित विमामान तह-ষাছে, তাহাতে দেব-বিগ্রহ বিরাজমান নাই। জন্মী ও রাজ্ঞী দেবী একে-বারে অন্তর্গত হইয়া গিয়াছেন।—মামুদশা ও সবক্তিজীন *। তোমারা ঐরাবতের भाग त्लोह-मुख्यन यद्भ कतिशाह। जाशात्र आत त्याहन रहेन ना ; त्याध रहा হইবেও না। মোগল্ ও পাঠান-কুল !—ছর্দ্ধর্য ঘবন-রাজ-কুল ! ভোমরা ক্রমা-গতই তদীয় কঠিন বন্ধনের উপর কঠিনতর বন্ধন সংঘটন করাইয়াছ! ভারার আর পদ-চারণ ও পার্থ-পরিবর্ত্তনেরও সামর্থ্য নাই। তোমরা ভাষাকে পর-বশতারূপ কঠিন কারাগৃহে চির কালের মত রুদ্ধ করিয়া ফেলিয়াছ। এন্থলে পরবশ কি ভয়ানক শব্ । • হিন্দের নরক, খুষীয়দের হেল্ও মোদলমান্দের জাহান্মও বুঝি দেরপ ভয়ানক নয় ! নর-কুলের কাল-স্বরূপ জলিজ, তৈম্র ও নাদির শার ভাষণ নামওদেকপে ভাষণতর ভাব ধারণ করিতে পারে না ! ধে দিন তোমরা তাহাকে † ম্পর্শ করিয়াছ, দেই দিন তাহার স্বাধীনতা-স্থবের মৃত্যু দিবন! -জননা ভারতভূমি! সেই দিন ভোমার চির-দিনের মত ছদিন উপস্থিত হইল। সেই দিন ভোমার চির-সঞ্চিত **স্থ**সন্ন ভাগ্য-জ্যোতিঃ **খোরা**দ্ধকারে পরিণত হইল। সেই দিন আমাদের ভারত-গৃহে অসীম-কাল-ব্যাপী মৃতাশোচের ক্রন্দন কোগাংল উথিত হইতে আরম্ভ হইল। তোমার অবিশ্রাম্ভ অঞা-বর্ষণ আর নিরস্ত হইল না! কত শিলা-পাত, ঝন্ঝাবাত ও বজালাত ‡ প্রভাবে स्महान् आमा-वृक्त এ क्वाद्र উत्रू'लेड । ও विनष्टे इहेबा आकाम-भरव উड्छोब-मान ও অञ्चर्ण बहेशा शिन। जननो । এथन अजित्यक-वांत्रित पत्रिवर्ख क्विन অঞ্জলে তোমার চরণ-যুগল অভিধিক করিতেছি !—একি !—লাগ্রত স্বপ্ন ! প্রবল চিন্তা-বেগে মনের ভাবকে মৃর্তিমান্ করিয়া ভোলে। সম্প্রে যেন একটি মহারদা মুর্ত্তি প্রভাক্ষ-গোচর হইল। বিহাতের স্থার নিমেষ মাত্রে আবিভুতি ও তিরোহিত হইয়। গেল। মূর্তিধানি পরম পবিত্র, কিন্ত শোক-ছঃথে সমা-কীৰ্ণ হইরা অভিমাত সান হইরা গিয়াছে। মলিন বদন, সজল নরন, তুই চকে

स्वामनवाम् ताकारकत मत्या व्यथम अहे हुई स्वत्म छात्रजन्दं लाक्तमन करत्ना ।

[†] ভারতবর্ধকে।

[🗜] তৈমুর্ নাদির্শা প্রভৃতির ভয়কর উপদ্রব শ্বরণ কর।

শতধারা বহিতেছে, ও চক্ষের জল বক্ষঃস্থলে আসিয়া শ্রম-ক্রেশ-জনিত খেদ-ধারার মিলিতেছে। যেন কতই হঃথ ও কতই টুমনস্তাপ ঘটিয়াছে। মুখে বাক্য ক্রিতেছে না। ধেন উপস্থিত বিপদ-চিস্তায় ও উত্তর-কালীন অশুভ আশকায় মুখ মণ্ডল বিবর্ণ ও ললাট-দেশ কুঞ্চিত হইয়া গিয়াছে। দেখিলে বোধ হয়, বেন কোন রাজরাজেখরী রাজমহিষী ভাগ্য-দোষে রাজ্য-চ্যুত হইয়া कूरभाषाबर्रात প্রতিপালনার্থ পর পরিচ্গ্যা অবলম্বন করিয়াছেন। দেখিয়া কোন দৃশ্যমান উৎকট পীড়ায় পীড়িত বোধ হয় না। কিন্তু যেন কোন অস্ত-ভূতি ক্ষমকর রোগে শরীর ক্রমশঃ ক্ষম করিয়া' আনিতেছে।—কি হঃনহ দর্শনই সংঘটিত হইল !--চক্ষের জল বক্ষাস্থলের স্বেদ-ধারায় আদিয়া মিলিতেছে !---ভারতভূমির 🔹 এমনি শ্রম-ক্লেশই ঘটিয়াছে ৰটে !---এক সময়ে রাজ-সিংহাসন विनामिनो এখন एम-कान-विकक निम्नाविन वनवर्खिनो इरेमा भन्नोत-भाज क्रिटिंग्डिंग, ज्थां द्राव-जिल-जिल्म मुथ-वामिन क्राद्रन नाः, नित्रस्त्रहे जय उ ভাবনায় কাতর হইয়া আপনার অঞ্জলে আপনিই প্লাবিত হইতেছেন।— ইংলও । ইংলও । তুমি অকেশে ছঃসাধ্য বিষয় সিদ্ধ করিয়াছ। বছদুর স্থিত লক্ষ্য অনারাদে বিদ্ধ করিয়াছ। অগঞ্জনের চির-বাঞ্ছিত সম্পত্তি হুকৌ-শলে করত্ব করিয়াছ। বলিতে কি, তুমি অসাধ্য দাধন ও অবটন-সংঘটন করিয়া বিশ-কনের নয়ন-যুগল বিক্ষারিত করিয়াছ। সমগ্র ভারতভূমিকে এक छ्व। क तित्र। ভाরত वरीत्र क वीन्द्र शानत मनः क ज्ञना मक्त क तित्राष्ट्र এवः वान्यीकि, कानिमान, क्लान ও आर्याज्यक्षेत्र श्वकाजीयवर्गटक शमावनक क्रिया নিজ সিংহাদন উজ্জ্ব ও উন্নত করিয়াছ। আমরা মন্ত্রণা-বলে তোমাকে রাজ-সিংহাসনে অধিকাঢ় করিয়া রাজমুকুট প্রদান করিয়াছি ও প্রীত মনে ভোমারে ধন-প্রাণ সমর্পণ করিয়া ভোমার বশতাপল হইলা বহিরাছি। একবার ভাৰিয়া দেশ, কত কোটা লোকের হ্রথ হঃথ, ধর্মাধর্ম, ভঞাভদ্র, মানাপমান ও এমন কি, জীবন-মরণও তোমার হত্তে সমর্পিত রহিরাছে। তোমার অধি-कारत आमारतत पाया-कत्र, वन-कत्र, आयुः कत्र ७ धर्ष-कत्र घरिष्ठ ह। जुनि অধিক বিভরণ কি সংহরণ করিতেছ, কে বলিতে পারে ? ভুমি শিক্ষা দান

[🛊] অর্থাৎ ভারতবর্ষীয়দের।

করিতে গিল্পা স্বাস্থ্য হরণ করিতেছ *, অর্থোপার্জ্জনের বিবিধ পথ প্রস্তুত করিতে গিয়া শ্রমাতিশয় ও তাহার বিষময় ফল-পুঞ্জ উৎপাদন করিতেছ, বাণিজ্য-বৃত্তি প্রসারণ করিতে গিরা অশেষ-দোষাকর হৃষ্ণ্যতাদোষ + ও তৎসহ ক্রত অধর্ম-বংশের বৃদ্ধি করিতেছ, এবং সভাতা-মুথের পরিচায়ক মুখ-সামগ্রী সকলের সংঘটন করিতে গিয়া ভোগাভিলাষ প্রদীপন পূর্বক পাপের স্রোত প্রবল করিতেছ। ভারতরাজ্যের আব গারি-ব্যবস্থার কলকময় ফল-পুঞ তোমার রাজমুকুট-বিরাজিত উজ্জল হীরক-থণ্ড সমুদায়কে গাঢ়তর কলুষ-কালিমার প্রকৃত অক্লার-খণ্ড করিয়া ফেলিয়াছে। ফলত: তোমার প্রকারা चक्रात्म नाहे। প্রায় যাবৎ জাগ্রৎ-কাল নানারূপ ক্লেশ করিয়া কষ্ট-শ্রেছে দিনপাত করা কোটি কোটি ব্যক্তির জীবন-ত্রত হইয়া উঠিয়াছে। বহুতর इरलरे (पिरिट ଓ अनिएक भारे, श्राम मकरलरे स्था, मकरणरे विवक जन मकरलई नाना हिन्छात्र हिन्छाकून। এक है आताम नाहे, आताम नाहे, आताम নাই! হুমুল্যতা-দোষে অনেকেই উচিত মত ও আবশাক মত আহার সামগ্রী প্রাপ্ত হয় না। ইতাতে, ধর্ম্ম-চিম্মা, ধর্মানুশীলন ও ধর্ম-নিষ্ঠা বেন একবারে উঠিয়া যাইতেছে। নর-কুলের শিতান্ত আবশাক নিয়মিত ধর্মালোচনা ও ধন্মোপদেশ-শ্রবণের তো সম্পর্কই নাই। বিদ্যালয়ে অধর্মের সঞ্চার, লোকালয়ে তাহার স্প্রকাশ ও বহু-বিস্তার এবং বিচারালয়ে তাহার পরীক্ষা ও প্রাহর্ভাব बहेबा थाटक। इर्क्तिनीज वाना-कारनत भाभ योवरन भविभक श्व अवः मरक्रव मनी इटेशा वार्कका भर्याञ्च हिलाया थाटक। किवन विनागत्यत्र कथा किन ?

^{*} অধুনাত্ম যেরপ শিক্ষা-প্রণালীকে বিশ্ববিদ্যালর-প্রণালী বলে, তাহা প্রবর্ত্তিত হইবার প্রেরিও এইরূপ ঘটে; পরে ক্রমশঃ বৃদ্ধি হইরা আসিরাছে। পঠদ্দশাতেই এ বিষয়ট ফ্রম্পষ্ট জানিতে পারি এবং তিশ খংসরের অধিক হইল, প্রবন্ধ-বিশেষের মধ্যে ইছার প্রদক্ষ করি। (তদ্ধবোধিনী পত্রিকা ১৭৭১ শক, পৌর, ১৩৯ পৃঠা ও ১৭৭২ শক, জাদ্দিন, ৯৮ পৃঠা দেও।)

[†] There seems to be a vague idea, that when prices rise, values rise also, and every one grows richer. But such a thing as a general rise of values is impossible; and with regard to the rise of prices, instead of being an advantage, it is a great evil.—The elements of Social Science, 1865, p.569.

তাহার বাহিরেই বা কি?—ততোধিক।* ইতর লোকের কুবাবহারে ভদ্র লোকে অভির হইতেছে। পল্লী মধ্যেই এবিট হই বা রাজপণেই ভ্রমণ করি। প্রায়ই, স্বার্থ স্চক, বিরোধবোধক ও ব্যান-বিজ্ঞাপক বই অন্ত শব্দ কর্ণ-কুহরে প্রবেশ করে না। যাবতীয় জাগ্রৎকাল পয়সা টাকা, দর দাম, আকাল আক্রা, पृत्तिन प्रसादिक, माकी मार्प, छेकिन दर्काशिन, दर्कार्ड स्माकक्रमा, जान জালিরাত এই সমস্ত অভিচার মন্ত্রাদি জপ ও পুরশ্চরণ করাই কি মানব-কুলের প্রম পুরুষার্থ হইল ? ধর্ম-চিন্তা ও ধর্মোপদেশ-গ্রহণের অবসর ও অভিশাষ উভরই অন্তর্গুত হইতেছে। এই সমুদার প্রত্যক্ষত্ত বাস্তবিক ব্যাপার। ইহার অভথা হইবার বিষয় নাই। যে স্থসভ্য বা সভাতাভিমানী রাজার রাজাতক্ষে মানবীয় মনের এরপে তথবস্থা সংঘটিত হয়, সে রাজারও কল্ফ দে রাজ্যের জলঙ্ক, দে সভ্যতারও কলঙ্ক।—দেখিতে বেথিতে কি পরিবর্তনই चित्रा उठिल! तम विषयात श्रृक्ताशत व्यवसा शर्यात्वाहना । श्रमर्थन कत्रा व्यामात এ নিস্তেজ মনের কার্য্য নয়। তাহা করিতে হইলে, মুদীর্ঘ-কায় সতেজ জন-সমাজের পরিবর্ত্তে মানব-নামের অযোগ্য একটি রোগ-জীর্ণ বামন-সমাজের উৎ-পত্তিপ্রদঙ্গ ও তদীয় ভয়ন্ধর পরিণাম-সম্ভাবনা কীর্ত্তন করিতে হয়, স্থমুলাতা-स्रत्य स्थी, चक्रम-हिंछ, अभाख लात्कत्र भाख जाव अकात्मत्र পतिवर्त्त इर्मुना-ভারপ অগ্নি-শিখায় চির-দগ্ধ, রাজকীয় কর-পঞ্জ-ভাবে ভারাক্রাস্ত, ব্যতিব্যস্ত, श्राष्ट्रज প্রজামগুলের হাহাকার ধ্বনির প্রতিধ্বনি করিতে হয়, গুণ-গ্রাহী,

* ১৮৭৯ খ্রীষ্টাব্দে এই পৃষ্ঠা মুদ্রিত হইল। ইহার পূর্ব্ব আটি বংদরের প্রত্যেক বংদর যত লোকের কারা-প্রবেশ ও হাজত হয় তাহা নির্দেশ করা বাইতেছে।

| बृ हो क | 2642 | ५ ७१२ | 3 290 | 3648 | >৮৭৫ | > > 10 | 3619 | אראנ |
|----------------|------------------|--------------|-------------------|-----------------------|-------|------------------|---------------|--------|
| লোক সংখ্য। | @ 9 2 2 6 | 696% | 4 5 p.3 .5 | ७ २२० १ | 90666 | 14225 | 6 596. | 196086 |

⁻Administration Report on the Jails of Bengal for 1871-1878.

১৮৭১ এটাবে সাতার হাজার নর শত ছাবিশ এবং ১৮৭৮ এটাবে আটান্তর হাজার পারতানিশ বাজিকে রুদ্ধ কর। হর, যে সমস্ত দোবের হৃক্টিন রাজনত নিরূপিত আছে, তাহারও পরিমাণ কিরূপ বৃদ্ধি হইয়া আনিরাছে দেও। বে সমুদার দোবের সেরূপ রাজনতের বাবস্থা দাই, তাহার তো বক্তা আনিরাছে; সেই পাপমর বক্তার বাজনা দেশ প্লাকিত হইয়া পোল।

श्वरतारमाही, গুণাশ্রয়, আয়-পর-হিতৈষী, অধর্মনিষ্ঠ, দান-শীল প্রেতন ধনি-সম্প্রদায়ের পরিবর্ত্তে আহার্য্য-শোভামুরক্ত, বিলাদ-প্রিয়, সকীয় স্বাস্থ্য ও সম্পত্তি-বিনাশক অন্ত এক রূপ লঘু-চেতা ধনি-সম্প্রদায়ের জীবন-বৃত্তান্ত প্রণয়ন করিতে इस नमी जुदल निमञ्ज्यान जुबी नमुर्दे जाम स्वा-नमीत जुबन-श्रवार क्षरमान ও মজ্জমান লক্ষ লক্ষ হ্রাসক্ত লোকের অঙ্গভঙ্গি, মুথ-বৈকলা এবং শারীরিক, মানসিক ও বৈষ্যাক নিতান্ত অবঃপাতের চিত্র-পট প্রস্তুত করিতে হয়, অন্তি, পঞ্জর ও চিতা-ভত্ম দারা, বারম্বার তুর্ভিক্ষ-পীড়ায় প্রপীড়িত, উৎকলদেশাদি-সমন্ত্রত, বর্ত্তমান ভারত রাজ্যের অত্যরত কীর্ত্তিস্ক নির্মাণ করিতে হয়, এবং মারিভার-সমাক্রান্ত, অর্থা-মূল-বিদ্ধ, বক্ত তৃণাদি-সমাকীর্ণ, বিষাদ চ্ছারায় সমাবৃত পরিত্যক্ত গৃহসমূহের ভগ্নভাব-দর্শনে, শোক-মুগ্ধ ও বিক্ষিপ্ত-চিত্ত হইয়া বক্ষঃস্বলে করাঘাত পূর্মক হাহাকার রবে নিরস্তর মাতম * করিতে হয়। এ সমুদায়ই মনুব্যের শারীরিক ও মানধিক হুরবস্থার পরিচারক। আহার্য্য শোভা ও বাহ্ আড়ম্বরে কি ইহার প্রতিকার হইতে পারে? স্বাস্থ্য-নাশ ও ধর্ম-নাশের কি প্রতিশোধ আছে? উভয়ের কি ভীষণ পরিণাম! কি ভীষণ পরিণাম। যাহা হউক, ইংগণ্ড! তোমার দ্যা-প্রকাশ ব্যক্তিরেকে আর আমাদের উপার নাই। আমরা রূপা-পাত্র; আমাদিগকে রূপা-দৃত্তে দৃষ্টি কর এই প্রার্থনা। আমাদের রীতিমত রোদন-স্বর নির্গত করিবারও দামর্থা নাই। তুমি অনুসন্ধান করিয়া আমাদের বেদনা সমুদায় নিরূপণ ও নিবারণ কর। তুমি আমাদের প্রতি নির্দর নও ইহা প্রনিদ্ধই আছে। তোমার বিদ্যালয়, চিকিৎসালয়, রাজ্পথ, বাঙ্গীয়-রথ, অপূর্বে সেতু ইত্যাদি কত বস্তু ও কত ব্যাপার সে বিষয়ে সাক্ষ্য দান করিতেছে। কিন্তু আমাদের সন্নিপাতের তৃঞা। প্রদোষ-কালের কিছু পুর্বের কোন বিহলম স্থ্যাভিমুৰে বৃক্ষ-শাৰার উপবিষ্ট হইয়া মধুর স্বরে গান করিতে-ছিল শুনিয়া, ভাব-সিন্ধু করালী গ্রন্থকার মিশলে ভুবন-বিখ্যাত পণ্ডিত-শিরোমণি क बीख (शिव मुद्धाकांनीन এक विकथा । श्वतं शर्वक मानव-कृत्नत खडान-वित्याहन- शार्थनात्र विषयं कैंद्रिन, "क्याहि: ! स्वत्रीय ! आतल क्याहि: !"!

^{*} শোকার্ত্ত হইরা বিলাপ করাকে সাতম্বলে। মোসলমানেরা মহরমের সময়ে সাতম্ কিরিয়া থাকে।

[া] প্ৰেটি পূৰ্ব অব্যান সৰ্বাদেশেৰে "জ্যোতিঃ ! আরও জ্যোতিঃ !' এই কথাটি উচ্চারণ ক্ষিত্র বিশ্বস্থা স্থান বিশ্বস্থা ক্ষিত্র বিশ্বস্থান ক্ষেত্র বিশ্বস্থান ক্ষিত্র ক্ষিত্র বিশ্বস্থান ক্ষেত্র বিশ্বস্থান ক্ষিত্র বিশ্বস্থ

সেইরূপ, ইংগও! আমরাও খোর রজনী সমুখীন দেখিয়া আরও দয়া আরও দয়া বলিয়া তোমার চরণ-সলিধানে বোদন ক্রিতেছি।

এক কালে বিনি অপর্যাপ্ত অন্ন বস্ত্র ও নানাবিধ বিশাস-দ্রব্য বিতরণ করিয়া কত কত নর-কুলের রক্ষণ, পরিপালন ও স্থ-সাধন করিয়াছেন; * বিনি জ্ঞান-জ্যোতি: বিস্তার ও আবোগ্য ব্যবস্থা প্রদান করিয়া, বিদেশীয় লোকের অজ্ঞান বিমোচন ও রোগ, মৃত্যু ও তন্নিবন্ধন অশেষবিধ হু:সহু যন্ত্রণা নিবারণ করিয়া-ছেন; † যাঁহার সমীপে হিতোপদেশ ও ধর্মোপদেশ প্রাপ্ত হইয়া, সভ্য ও

* বহু পূর্ব্বিধি ভারত্ত্বর্বের বিবিধ প্রদেশ হইতে পশ্চিম দিকে পারসীক, বেবিলন্, আরব, ফিনিনিরা, কুণ্দাগরের সমীপত্ব বত্ত্ব নগর, মিশর, ইনুরোপের অন্তর্গত রোমক প্রভিত বহুত্ব দেশ এবং উত্তর ও পুর্কদিকে বোধারা, সমরুকন্দ, তাতার, চীন, বর্মা, যবখী-পাদি নানা দীপ ইত্যাদি বিভিন্ন দেশে ধাক্য, কার্পাদ, শর্কর, নীল, লাক্ষা, তিল-তৈল, কাশ্মীরি শাল, পৈন্টিক স্বরা, তাল-মদা, স্বর্গ, রোপা, বৈদ্ব্যাদি বহুন্লা রত্ন, চলন, দাক্চিনি, ত্বচ, এলাচ, প্রভৃতি তেজন্বর গল্পব্য, লোবানাদি আহেয় গল্পব্য, শৃক্ত্র, কেন্দু, লটামাংনী, বানর, কুল্র ইত্যাদি ভক্ষ্য, পের, ব্যবহার্য ও কোত্ত্ক-প্রদ নানাবিধ বিভিন্ন পণ্য-দাম্প্রী নীত ও প্রেরিভ ছইরা আদিরাছে।

অনেক কাল অতীত হইল, তত্ত্বোধিনী পত্ৰিকায় শুই বিষয়-সংক্ৰান্ত একটি প্ৰবন্ধ প্ৰকাশ ক্ৰি, তাহাতে সবিশেষ বৃত্তান্ত লিখিত আছে। এই পুন্তকের এই ভাগ প্ৰচারিত হইবার কিছু পরে, অক্স চুই একটি প্ৰবন্ধ-সংলিজ তাহা পুনরায় মুক্তিত করাইবার ইচ্ছা রহিল।

া ভারতবর্ষীর গণিত, দ্যোতিৰ ও চিকিৎদা-শাস্ত্র বিষয়ক বহুতর পুত্তক আরব ও পার্দীক দেশের ভাষার অফুবাদিত হইয়া সেই সেই দেশে প্রচারিত হয়। উয়ন অল অস্বাফি তল কাতল অত্বা নামক একথানি গ্রন্থে লিখিত আছে, ভারতবর্ষীর পণ্ডিতেরা আরবের অন্তর্গত বোগ দাদের রাজসভার উপস্থিত হইয়া জ্যোতিষ ও বৈদাক শাস্তাদি শিক্ষা দেন। ইহার মধ্যে কাহারও নাম মহঃ, কাহারও বা কহঃ, কাহারও নাম বা বাধর বলিয়া লিখিত আচে। মতঃ মাণিকা এবং বাধর ভাকর (অর্থাৎ ভাকরাচার্যা) বলিরা অফুমিত হইরাছেন। আরব-রাজ্যের হরুন অলুরসীদের উৎকট পীড়া হয়। কোনরূপেই তাহার প্রতীকার না হওয়াতে ভিনি ভারতবর্ষ হইতে ঐ মল্লংকে চিকিৎসার্থ লইয়া বান ও তদীর চিকিৎসার গুণে দে রোগ হইতে মুক্ত হন। তদ্ভিন্ন. ঐ আরবী পুতকে দাহর্, জব্ হর্, রাহঃ, অকরে, অন্দি. गकः, जन्म , छाति, अञ्चल, यानाक, मनसङ्ग धरे ममछ (का। विषक्ष ७ हिकि एमा-भारत्क ভারতব্যীয় প্রিতের বিষয় বৃশিত ছইয়াছে। ইহাদের প্রণীত অনেক গ্রন্থ আরুবী ও পার্নী ভাষায় অনুবাদিত হয়। পূর্বোক্ত আরবী গ্রন্থে ঐ নাম গুলি বিকৃত করিয়া লিখিত হইয়াত তাহার সন্দেহ নাই। উহাতে আরব দেশে নীত নিরক, সমদ্ও বেদান নামে তিন গানি ভারতবর্ষীর বৈদাক-প্রন্থের বুড়ান্ত আছে; তাহা সংস্কৃত চরক, সুশুত ও নিদান বই জাত্র কিছুই নর। १९৩ খ্রীষ্টান্দে বা কিছু পরে অল্মন্তর নামক আরবীর নরপতির অভ্নতি ক্ষে আর্থী ভাষায় এক থানি জ্যোতিখ-শাব্র অকুবাদিত হয়, উহার আয়্ণী নাম সিন্দ্ হিন্দ। কোল্জ্ৰক্ উহাকে সংস্কৃত ব্ৰহ্মসিদ্ধান্ত বলিয়া বিবেচনা করেন। যাক ব নামে একটি গতুকার ঐ সিল হিলাপুত্তৰ অবলঘন করিয়া একথানি স্নোতিব-শাস্ত্র প্রস্তুত করেন।

অসভা কতকত নর-জাতি আপনাদিগকে বিশুদ্ধ ও চরিতার্থ জ্ঞান

বীজগণিত বিদ্যা প্রথমে ভারতবর্ষেই প্রবর্ত্তিত হয়। ডায়োফেক্ট্স নামে একটি এীক গণিত-বেতা এীস দেশে ঐ বিদ্যা প্রথম প্রচার করেন ; তিনি নিজ পুস্তকে ভারতবর্ষীয় বীজগণিত भौत्यत अमान वात्रवात उद्घा क किताहन *। अञ्चत औरकता अविवास किलाम तिकह ঋণী আছেন; অলমামুষ্নামক বাদসাহের সময়ে একপানি সংস্কৃত বীজগণিত আরবীতে व्यक्तामिक द्या) २ २ ७, ८ ८ ७, १, ४, ३ এই नव व्यक्त-मूर्वि এवः अकः तमः भावः महत्वः ইত্যাদি দশগুণোত্তর সংখ্যা গণনার যেরূপ প্রণালী সর্ব্বে প্রচলিত রহিয়াছে, ভারতব্যীর আর্যোরাই তাহা উদ্ভাবন করেন। আরবী ও পারসীক পাটিগণিত-প্রশেতারা সকলেই এক বাকো ভাহা স্বীকার করিয়া গিরাছেন। (A. R. vol. XII., pp. 183 and 184.) ু আরবীয়েরা হিল্পের নিকট উহা শিক্ষা করিয়া খদেশে প্রকাশ করিয়া দেন ও ভ্রিষয়ক প্রস্থ-রচনা ও বাণি সা-বিস্তার দ্বারা বোগদাদ নগর হইতে স্পেনের অন্তর্গত করছোবা ন্পর পর্যান্ত প্রচার করিয়া যান। পুলাসং-উল-হিসাব নামক আরবী পুত্তকের ভূমিকার ও অক্তান্ত পারসীক প্রস্তে উ।হাদের ঐ অস্ক-প্রণালী-শিক্ষার বিষয় সুস্পষ্ট লিখিত আছে। সুবিখ্যান্ত ত্রীক পণ্ডিত পিথাগোরস একখানি গ্রন্থে অন্ত-গণনার যেরূপ পদ্ধতি প্রকাশ করেন এবং বিধিয়দের জামিতি শাল্পে তাহা বেরূপ ব্যাখ্যাত হইয়াছে, তাহা ঐ ভারতবর্ষীয় অল-প্রণালীর সহিত একরূপ অভিন। অকটি ফরাসী গণিত জ পণ্ডিত + বিচার করিয়া দেখিয়াছেন পশ্চিমাঞ্চলের খ্রীষ্টানের। আর্বীয়দের পূর্বেও ভারতব্যীর অন্ত-প্রণালী অবগত হইয়াছিলেন। ৭৮৬--৮০৯ খ্রীষ্টাব্দে আরবীয় নরপতি ছক্ষন অল র্থীদের আদেশাসুসারে পর্বোক্ত ফুঞ্চত ও চানক্য-কৃত বিষ-চিকিৎদা বিষয়ক একথানি গ্রন্থ উলিখিত মল: কর্ত্ক পারসীক ভাষার অক্রাদিত হয়। চানকা-কত বলিয়ালিখিত পশু-চিকিৎদা বিষয়ক একথানি এছ আর্থী ভাষায় এবং চরক নামক স্থানিদ্ধ বৈদ্যক-শান্ত্রও আরবী ও পারসীক উভয় ভাষাতেই অনু-বাদিত হইয়া এচলিত হয়। ১৩৮১ খ্রীষ্টাব্দে মুক্রান্ত-গুরু কর্ত্তক প্রশীত বলিয়া উল্লিখিত প্র চিকিৎসা বিষয়ক অপর একধানি সংস্কৃত এন্ত অনুবাদিত হয়। অলবীকানী নামক আর্থীর পণ্ডিত ৯৭০ খ্রীষ্টাব্দে প্রন্ম গ্রহণ করিয়া ১০৩৮ খুষ্টাব্দে প্রাণত্যাগ করেন। তিনি জ্যোতিষ শান্তের উপদেশ গ্রহণ উদ্দেশে ভারতবর্ষে আদিয়া উপদ্বিত হন, সাংখ্য ও বোগ শান্ত বিষয়ক এক একথানি এন্থ আরবী ভাষায় অনুবাদ করেন এবং হিন্দুদের সাহিত্য ও বিজ্ঞান শান্তের विवत्रभाष्ट्रक अन्न अक्षानि शुष्टक तहना कतिशे शन। >>०० औष्टेरिक आयु मार्गक् दास-গণের শিক্ষা বিষয়ক একথানি সংস্কৃত গ্রন্থ আর্থী ভাষার অনুবাদ করেন। এই সম্বত্ত গণিত ও চিকিৎসা বিদ্যা আরৰ হইতে পুনরার মিশর দেশীর এলেগজেও য়া নগরের বিদ্যালয় সমূহে এচলিত হর, এবং মোসলমানের। পোন দেশ অধিকার করিরা তথার বিদ্যালয় সংস্থা-পন করিলে, তাছাতে আরবী প্রভাষার বিরচিত ভারতব্যার ঐ সমস্ত জ্যোতিযালি শালের অধান-অধ্যাপনা প্রবার্তিত হইরা ইয়ুরোপে প্রচানিত হইরা যায়; পীঞ্জানপরনিবাসি লিছোনার্চ নামে একটি পঞ্চিত বাৰ্বারি দেশে পিরা আরবী ভাষার বিরচিত বাজগণিত শিক্ষা করেন এবং ১২০২ প্টাব্দে তাহা লাটিন ভাষায় অনুৰাদ করিয়া খদেশে প্রচার করিয়া যান। অসভিখাতে অশ্বাণ পণ্ডিত হথোল্ট্ বলিয়া পিয়াছেন. আরবীয়দের কর্তৃক ভারতব্বীয় অঞ্ঞালী এবং ऑग ७ छात्रजन्य उछत्र (मगीत वीक्र निक थहात्रिक इट्डा आकृष्ठिक विख्वात्मत्र ग्रनिकाश्यमत

[•] Asiatic Researches, vol. XII. pp. 161-164.

t · Chasles.

করিয়াছে; * বাঁছার যশঃ-দৌরভে বিমুগ্ধ হইয়াও তদর্থ বাঁহার উদ্দেশে অগাধ

বিশেষরূপ উন্নতি সাধন করিয়াছে এবং জ্যোতিষ, দৃষ্টিবিজ্ঞান, প্রাকৃতিক ভূগোল, তেজো-বিজ্ঞান ও চুম্বকবিজ্ঞানের হুরাহতর ভাগ সমুদায় মনুবোর বৃদ্ধি-গম্য করিয়া দিয়াছে। নচেৎ थे मकन विकास थे ममल व्यापनात, इस क चारतान्याहिना इहेक ना +। ना इहेरल, कुतारदाइ বিজ্ঞান বেদীর ঐ প্রহটি ভারতবর্ষীয় অনখর দোপানের অসদ্ভাবে অনেকানেক অতীব ওরুতর অংশে মানবীয় বৃত্তির অসামান্ত মহিমা প্রকাশই পাইত না। পৃক্তিমের ক্রায় পুর্বেদিকেও ভারতবর্ষীয় গণিত বিদ্যা প্রচলিত হয়। খ্রীমান রেনো নামে একটি ফরাসী পণ্ডিত প্রদর্শন कबिबाट्डन, व विना १२० थहात्म ठीनदम्म पर्वाष्ट श्रीवराश्च इट्रेश यात्र +। त्यागम সম্রাট আক্রবর রামারণ, মহাভারত, অমরকোষ এবং অথব্ববেদ (বা ক্তক্তলি উপনিষ্দ) পারদীক ভাষায় অমুবাদ করান। তাঁহার প্রপৌত্র ঘারা ১৬৫৭ খ্রীষ্টাব্দে পারদীক ভাষায় উপনিষদ সকল অত্বাদ করেন এবং পশ্চাৎ অাকেতীই ছ পের কর্তক ঐ পারসীক অত্-वारमञ्ज्ञ नाहिन ও कतानी अञ्चलन मन्नज इत ।—Revd. W. Cureton's Extract from the Arabic work entitled Ayun ul Amba &c with H. H. Wilson's remarks in the Journal of the Royal Asiatic Society, vol. 6, pp. 105-119, Max Muller's Lectures on the science of Language, first series 1862, pp. 145-153. Colebrooke's dissertation on the Arithmetic and Algebra of the Hindus Strachey's early History of Algebra in the Asiatic Researches, vol. XII., pp. 159–185, Alexander Von Humboldt's Cosmos translated by E. C. Otté, vol. II., 1849, pp. 535 and 593–600, Mémoire sur I' Inde par Reinaud,pp. 312–322 and Elliot's Historians of India,pp. 259 and 260.

এীকের। ছিলুদের নিকট দর্শন শাল্তের উপদেশ গ্রহণ করেন ইছা সর্বতোভাবে বিবেচনা সিদ্ধ ৰলিয়া ইতিপুর্বেই উল্লিখিত হইয়াছে।

ভাষ-দেশীর ভাষার বিরচিত বিশেষ বিশেষ পুতকের অন্তর্গত রাম ও লক্ষ্ণ-চিরিত্র, রাবণ কর্তৃক সীতা হরণ, রাম-রাবণের যুদ্ধ-বর্ণন, অনিক্ষ্ণ পোথানে ভগবতী-মাহাস্ম্য কথন স্থাবি-সংহাদের বালা রাজার বৃত্তান্ত, এবং কামধেত্র, নাগ-ক্তা, যক্ষ্ণ, রাক্ষ্যাদি সংক্রান্ত নানা বিষয়ক প্রত্তাবে সংস্কৃত শান্তেরই সম্পূর্ণ কাষ্যকারিত্ব লক্ষিত হুইরা থাকে। এক্ষদেশের ভাষারত রামচরিত্রাদি বিষয়ক অনেক গ্রন্থ দেখিতে পাওরা বার। উলিখিত উভর ভাষাতেই ঐ সমন্ত বিষয় সংক্রান্ত ৰহত্র কাব্য ও নাটক বিদ্যমান আছে। ঐ সম্পারই ভারতব্যীর, অভএব মুখ্য বা গৌণ রূপে সংস্কৃত শান্ত ইইতে সংক্রিত তাহার সম্পেই নাই।—Asiatic Researches, London, vol. X., 1811 pp, 234 and 248—251.

- সংক্ষৃত পঞ্চন্ত একধানি ফলব নীতি গ্রন্থ। ইয়া হইতেই প্রচলিত হিতোপদেশ
- * Both these effects—the simultaneous diffusion of the knowledge of the science of numbers and of numerical symbols with value by position—have variously, but powerfully favoured the advance of the mathematical portion of natural science, and facilitated access to the more abstruse departments of astronomy, optics, physical geography, and the theories of heat and magnetism, which, without such aids, would have remained unopened.—Cosmos translated by E. C. Otté, vol. 11., 1849. pp. 599 and 600.
- + Relation des Voyages faits par les Arabes dans l' Inde et à la Chine, par Reinaud, tome I,, p., cix; tome II,, p. 36.

সিন্ধু সম্ভরণ করিয়। স্থসভ্য জাতীয়ের। অর্দ্ধ ভূমণ্ডলের মাবিজিয়া ও তদীয় অতুদ ঐশব্য লাভ করিয়াছেন; এবং ইংলগু! তুমি ও তোমার সহোদরাগণে বছকালাবধি যাহার অফুগ্রহ-প্রত্যাশায় প্রত্যাশাপর ছিলে, এই দেই এককালের রাজমহিবী মহীয়সী ভারতভূমি এখন নিতান্ত দীন ভাবে তোমার শরণাগত ও চরণাবনত হইয়া আহি আহি বলিয়া কাতর স্বরে ক্রন্দন করিতেছেন। এখন, ইংলগু! তোমার উচিত কর্মা তৃমি কর। বিজ্ঞান-বিশোধিত দয়া প্রকাশ কর, দেশ-কাল-পাত্র বিবেচনা করিয়া ব্যবস্থা কর, রাজভাবকে এক পার্শে রাধিয়া প্রজ্ঞা-

मङ्गिल रहा। এই পঞ্জন্ত धौक, लाहिन, शब्लबी, खांडबी, शाउमीक, मीबिश्वक, हिन्द्र, স্পেনিশ, ইটালিক, অর্থাণ, ফরাদী, ইংরেলী, তাতার, তুরকী, মলে এই সমস্ত বিদেশীর ভাষার অমুবাদিত হইর। ভূমগুলের বছতর অংশে নীতি-বিদ্যা প্রচার করে। ইহার ও কথাসরিং-সাগরের অন্তর্গত বহুতর উপস্তাস আরবীক ও পারদীক বিবিশ পৃত্তকে পরিব্যাপ্ত হুইরা পড়িয়াছে। ফুপ্রসিদ্ধ আরব্য উপস্থাদ অনেক হলে এই ভূবণে বিভূষিত। এমন কি, ঐ উপস্থাস পুস্তকের প্রথম উপাধাইনই অর্থাৎ শাহরিয়ার ও শাহরেমানের কথাই সংস্কৃত ক্থাস্বিৎসাগ্র হইতে স্কলিত। ঐটি উক্ত সংস্কৃত গ্রন্থে লিখিত হুই যুবা ব্রাহ্মণ ও এক যক্ষের উপাপ্যান বই আর কিছুই নয় * ু ভট্ডিল, ঐ আরবী পুস্তকের অন্তর্গত এদ সিন্দি-বাদের আথানি, রাজা, রালপুত্র, যুবতী ও সপ্ত মন্ত্রীর উপস্থাস, জেলীরাদ, তদীর পুত্র ও মন্ত্রী ষেশাদের উপকথা ইত্যাদি উপাথান এ বিষয়ে স্থাপন্ত দান করিতেছে।-The Oriental Magazine and Calcutta Review, vol. I., pp. 493-506, H. H. Wilson's Essays on subjects connected with Sanskrit Literature, vol. II., 1864, pp. 1-80, Colebrooke's Introductory remarks to his edition of the Hitopadesa, Essai sur les Fables Indiennes, par M. Loiseleur Des Longchamps . British and foreign Review vol. XI., p. 227 ff. and The Thousand and one Nights, translated by E. W. Lane, vol. III., 1841, pp. I-117. 160 and 741-747.

ভারতবর্ষীর রাজনীতি, ধর্মনীতি, ধর্মণান্ত, সাহিত্য শাত্র প্রভৃতি সমুল অভিক্রম পূর্বক ববলীপ ও বালি ঘীপে নীত ইইরা ধর্ম ও নীতি প্রকাশ করিরছে। (এই পুস্তকের অন্তর্গত শৈব সম্প্রদার বিবরণের ১৩—১৭ পৃষ্ঠা দেখ।) কেবল যব ও বালি ঘীপে নর ঐ অঞ্চলের অন্তান্ত দীপত্ব লোকেরও শিক্ষা ও সভাতা সাধন বিষয়ে যে হিন্দুদিগের বিশেষক্রপ কার্যকারিত জিল, নানা বিষয়ে তাহার অনেকানেক নিদর্শন দেখিতে পাওরা বার। এমন কি স্মানা, লেখা, দেশিবিজ্ঞ প্রভৃতি ঘীপের বর্ণাবলীও দেবনাগরাদি ভারতবর্ষীর অক্ষরের স্তার কবর্গ চবর্গাদি বর্গ-বিভাগের নির্মান্ত্রসারে বিভক্ত দেখা বার।—The Journal of the Indian Archipelago, vol. II., No XII., pp. 770—774.

^{*} British and foreign Review, No, XXI.. p. 266.

গণের প্রতি মাতৃভাব প্রদর্শন কর এবং যদি সভব হর, অবসর-প্রার ভারত-ভূমিকে রক্ষা করিয়া তাহার অঞ্জল বিমোচন কর।

ভাগ এক অপ্রাসন্ধিক প্রস্তাব উপস্থিত করিরা এধীর হইরা পড়িতেছি।
শোচনীয় ব্রুবনের প্রসঙ্গ ও হাদর-ভেদী আর্ত্ত-নাদের উদ্গীরণ আর সহু হই-ভেছে না। এখন আমার শস্তঃকরণ একটি জাজগ্যমান অগ্নি-ক্ষেত্র হইরাছে।
আমার হাদর-স্থল একটি ভয়ানক মার্মেরগিরি হইরা উঠিয়াছে! আমার জলিড
মস্তক ভন্মীভূত হইরা বাইতেছে। ব্যথার ব্যথিত পাঠকগণ! কি বিষাগ্নি-লোতই প্রবাহিত করিয়া ভোমাদিগকে দগ্ধ করিতেছি। এখন অপেক্ষারুত শীতলতর প্রস্কৃত প্রস্তাবের অনুসরণ করাই শ্রেমঃ।

ন্ধামারণ ও মহাভারতে পূর্ক-লিখিত বৈদিক ধর্ম ও বৈদিক ব্যবহার-বৃত্তান্তের তার অভাত অনেক রূপ স্থপাচীন বৈদিক কথা-প্রদক্ত বিদ্যান

খুষ্টান্দের চতুর্থ শতাক্ষী হইতে দশন শতাক্ষী পর্যান্ত চীন দেশীর ভূরি ভূরি তীর্ধবাত্রী ভারতবর্ধে আগমন পূর্বেক ধর্ম পুত্তকাদি সংগ্রহ করিয়া লইয়া বার।

আমেরিকা খণ্ডের অন্ত: পাতী পিকবিরা দেশে প্রচলিত রামসিতোরা? নামক মহোৎসব ও ঐ দেশীর নৃপত্তিপণের সূর্বাবংশ হুইতে উৎপত্তি প্রবাদ †, ঐ খণ্ডের মধাস্থলবাসী কতকগুলি জাতির ভাষার ঈষরের নাম সিব্, আসিরার অন্তর্গত ক্রিক্রা দেশীরদের একটা উপাস্ত দেব-তার নাম সেবা বা সেবাধিরস্, ঐ দেবোপাসকদের দীক্ষা কালে সর্প-ঘটিত ব্যাপার-বিশেষের অন্তর্গন-প্রথা, মিশ্ব দেশীরদের একটা দেবতার নাম সেব্, বা সেব্রা বা সোবক্ ‡ এই সমস্ত কথা এই প্রতাব-স্থকে লিখিরা রাখা অসক্তেনর।

ভারতভূষি ভূমওলে কেবল জ্ঞান, ধর্ম ও আবোগা বিস্তার করিরাই নিরত হন নাই, বিদেশীয়দিগকে দোষ-শৃক্ত আমোদ-প্রমোদের উপারও শিক্ষা দিয় ছেন। তারীপূল্ হোক্মা নামক গ্রন্থে লিখিত আছে, আরবীরেয়া এথান হইতে সঙ্গীত-শাস্ত্র-বিশেষ সংগ্রহ করিয়া অদেশে প্রচার করেন। উহার নাম বিরাফর্ অর্থাৎ বিদ্যাক্ল বলিয়া লিখিত আছে।

বে গৌদ্ধ-সম্প্রদায় অন্যাপি ভূমওলের অন্য ধর্ম-সম্প্রদায় অপেক্ষা বিস্তৃত বলিয়া বিবেচিত হইরাছে *, ভারতবর্ধেই তাহা প্রবর্তিত, হইরাছিল। এই স্থান হইতে ভাহা চীন, ক্রাপান, বর্মা, সিংহল, তাতার প্রভৃতি নানা দেশে প্রচারিত হয়। বৌদ্ধ-ধর্ম প্রচারকেরা সেই সমস্ত দেশে উৎসাহ সহকারে গমন পূর্বক স্বধ্য প্রচার করিরা আইসে।

[•] এখন প্রায় ৪৫৫০০০০০০ পঁরতালিশ কোটা পঞ্চাশ লক লোক বৌদ্ধর্ম থীকার করে।

-physical Atlas by Berghaus extracted in Max Muller's "Chips from a German Workshop," 1868, Vol. I.,p. 216 দেখ।

⁺ A. R. vol. I. p. 426.

[†] Serpent and Siva worship and Mythology in Central America' Africa and Asia, by Hyde Clerke, pp 10—11

আছে। জনক, জনমেজয়, পরিক্ষিৎ প্রভৃতি বৈদিক সময়ের * লোক। বে
সময়ে তাঁহারা জীবিত ছিলেন, বেদের ব্রাহ্মণ-ভাগ সে সময়ের পুর্বে প্রবর্তিত
হইয়াছিল কি না বলা যায় না, কিন্তু সম্পন্ন হয় নাই। ঐতরেয় ও শতপথব্রাহ্মণে পরিক্ষিৎ জনমেজয়াদির প্রসঙ্গ দেখিতে পাওয়া য়য়। অত্তর তাঁহারা
ও তদীয় পূর্বপ্রথম ভীমার্জুন মুধিষ্ঠিয়াদি ঐ ব্রাহ্মণ-সচনার পূর্বতন লোক স্পষ্টই
জানা যাইতেছে।

एतेन हवा ऐंद्रेण महाभिषेकेन तुरः कावषेयों जनमेजयं पारिचितमभिषिषेच तस्मादु जनमेजयः पारिचितः समंतं सर्वतः पृथिवौं जयन् परीयाय।

बेल्डाय बाक्षण। ৮ शक्षिका। २५।

কবষ †-পুত্র তুর এই ঐক্র মহাভিষেক-ক্রিয়া ধারা পরিকিৎ-পুত্র জনমেজরের অভিষেক কার্য্য-সম্পন্ন করিয়া দেন। তদীয় ফলে পরিকিৎ পুত্র জনমেজর সমস্ত ভূমগুল সর্কাংশে জয় করিয়া পরিভ্রমণ করেন।

एतेन इवा ऐंद्रेण मङ्गाभिषेकेन दीर्घतमा मामतेयो भरतं दीम'तिमभिषिषेच तसादु भरतो दीम'ति: समन्तं सर्व्वत: पृथीवी' जयन् परीयाय।

ঐতরেয় ব্রাহ্মণ। ৮ পঞ্চিকা। ২৩।

মমতা-পূজ দীর্ঘতমা এই ঐক্ত মহাভিষেক ঘারা গ্রাপ্ত-তন্য ভরতের রাজাা-

বহুকালাৰধি অনেকানেক সভ্য জাতীয়েয়। যে শতরঞ্চ ক্রীড়ার আমোদে আমোদিত ইইরা আসিতেছেন ও জানোজনিত ইউরোপ থওেও অধুনা যে আমোদ-তরঙ্গের প্রবাহ চলিডেছে. তাহা ভারতবর্ষে উৎপল্ল হর। পারসীক গ্রন্থকারেরা এ বিষয় এফবাকো স্বীকার করিয়া গিরাছেন। তাহারা বলেন, খ্রীষ্টাব্দের ষষ্ঠ শতাব্দীতে ভারতবর্ষের পশ্চিম থও ইইতে ঐ ক্রীড়াটি পঞ্চতপ্রের সহিত পারস্থানে নীত হয়। উহার সংস্কৃত নাম চত্রক। প্রচিন পার্নীকেরা উহাকে বিকৃত করিয়া চত্রক্ ক্রেন এবং আর্বী ভাষার ঐ শন্দের আদান্ত অক্র না থাকাতে, আর্বীরেরা পরে উহা শত্রঞ্ব বলিয়া উচ্চারণ করেন। তদকুসারে, পারস্তানেও ভারতবর্ষে উহা সত্রঞ্ব বলিয়া প্রচলিত হয়।—Asiatic Researches, London vol. 11., pp. 159—165,

^{*} বে সময়ে কেবল ৰৈদিক ধৰ্ম ও বৈদিক আচার বাবহার প্রচলিত ছিল; পৌয়াণিক ধর্ম প্রবর্তিত হয় নাই, সেই সময়কে বৈদিক সময় বলিয়া উল্লেখ করা গেল।

[†] ঋৰি বিশেষের নাম কবম। ঋগ্বেদের মন্ত্রশেষের মধ্যেও কবমের নাম সলি-বেশিত আছে।

ভিষেক-ক্রিয়া সম্পাদন করিয়া দেন। তদীয় ফলে ছন্মস্ত-পুত্র ভরত সমস্ত ভূম-গুল জয় করিয়া পরিভ্রমণ করেন।

षध युतं कवषं व्रह्मम्खतु दुत्त्युं नि व्यायवज्ञवाहु:। (१४। ४४ए।४२३।)

ৰজৰাহাঞ্জ শ্ৰুত, কৰম, বৃদ্ধ ও ক্ৰহ্যকে মথাক্ৰমে জলমগ্প করিয়।ছিলেন।

তিনি দাসী-পুত্র। ঐতরের * ও কৌষিত্রিক ব্রাহ্মণে তাঁহার প্রসঙ্গ আছে। লিখিত আছে, একবার সরস্থতী-তীরে বজ্ঞত্বলে তিনি উপস্থিত ছিলেন, ঋষিগণ তাঁহাকে দাসী-পুত্র বলিয়া অবজ্ঞা প্রকাশ পূর্বক বলেন

दास्वा वै त्यं पुर्वीऽसि न वयं त्यया सह मचयिष्रामः।

কৌষিত্রকি ত্রাহ্মণ। ১১।

তুমি দাসী-পুত্র: আমরা তোমার সহিত ভোজন করিব না।

এই কবৰ ধৰি ধাগ্ৰেদ-সংহিতার দশম মণ্ডলের অন্তর্গত ৩০ ত্রিংশ, ৩১ একত্রিংশ, ৩২ বাত্রিংশ, ৩০ তারপ্রিংশ ও ৩৪ চতুত্রিংশ † স্কুর রচনা করেন, ও তদীর পুত্র পরিক্ষিৎ-তনর মহারাজ জনমেজরের রাজ্যাভিবেক-ক্রিয়া সম্পাদন করিয়া দেন। পশ্চাৎ দৃষ্ট হইবে, কক্ষীবান্ ধবি ধর্ণেদ-সংহিতার কতকগুলি স্কুর রচনা করেন; তিনিও একটা দঃসী পুত্র ‡। ছান্দোপো।পনিবদে চতুর্ব প্রপাঠকের অন্তর্গত জানশ্রুতি আবারিকার লিখিত আছে, বৈক্ ক্ষি আনশ্রুতি রাজাকে শুত্র জানিয়া ও বার বার তাঁহাকে শুত্র সম্বোধন করিয়া পশ্চাৎ বেদবাকা বারা সংবর্গ বিদ্যা উপদেশ দেন।

स तस्मै होवाच वायुवीय संवर्गः ('इंडाापि)

তিনি (অর্থাৎ রৈক) তাঁহাকে (অর্থাৎ শুদ্র কুলোন্ডব জানক্রতিকে) বলিলেন বায়ুই সংবর্গ ইতাদি।

অপেকাকৃত অপ্রাচীন শান্তাক্সারে, প্রী-শৃদ্রের বেদাধিকার নাই, অথচ রৈক ঋষি
শৃদ্রজানশ্রুতিকে বেদোপদেশ করেন এই বিরোধ ভপ্তনউদ্দেশে,শঙ্করাচার্য্য বেদাস্তক্তের প্রথম
অধ্যারের তৃতীর পাদের চৌত্রিশ স্তের ভাষ্যে স্তক্তারের অভিপ্রারাম্সারে শৃদ্র শদের
প্রচলিত অর্থ পরিত্যাগ পূর্বাক শোক।ছেন বলিয়া ঐ শদের ব্যাধ্যা করিরাছেন।

चात्मनीऽनादरं मू,तवती जानमुतः पीचायनस्य धगुत्रोदे तास्ववीरैकः स्दशस्यैनानेन स्वयान्वस्य चात्मनीऽपरीचक्रताख्यापनाय ।

আপনার অনাদর-বাক্য এবণ করিয়া জান্শতির শোক অর্থাৎ মনঃ পীড়া উপস্থিত হ্য়। বৈক্ষ অপরোক্ষ বিষয়ে নিজের অভিজ্ঞতা প্রকাশ উদ্দেশে তাঁহাকে (শোক-হুচক) শূদ্র শব্দে সম্বোধন করিয়া সেইটিই বিজ্ঞাপন করিলেন ওঁ।

- ঐভরেয় ব্রাহ্মণ। ২।১৯।
- 🕂 ৩৪ চৌন্মশ স্কৃটি কবষ বামুজবং-পুত্র অক্ষ ঋষির কৃত বলিয়া লিখিত আছে।
- § আচার্যাল্য প্রবর নিজের ব্যুৎপত্তি-বলে শুচ্ আর্থাৎ শোক এবং ক্রাক্তর বোগে শুক্র
 শক্ষ শোকাছের বলিয়া ব্যাব্যা করিয়াছেন।

एतेन हेन्द्रोतो दैवाप: शीनक:। जनमेजयं पारिचितं याजयांचकार तेनेष्ट्रा सर्वां पापक्रत्यां सर्वां ब्रह्महत्यामपज्ञधानः। भठनश्र बाक्षः। ১०। ८। ४। ১।

ইল্রোভো দৈবাপ শৌনক পরিক্ষিত পুত্র জনমেজয়ের অগ্নেধ-য়জ্ঞে য়াজন করেন। তত্ত্বারা জনমেজয় সমস্ত পাপ ও সমস্ত ব্লাহত্যা হইতে মুক্ত হন।

মহাভারতের সস্তব পর্কাধ্যায় অনুসারে, পরিক্ষিতের অপর তিন পুত্তের নাম ভীমনেন, উগ্রদেন, ও হংদেন *। শতপণ ব্রাহ্মণের ব্রয়োদশ কাণ্ডের পঞ্চম অধ্যায়েও তাঁহাদের প্রসঙ্গ আছে; বিশেষ এই যে মহাভারতোক্ত স্থানেনের পরিবর্ত্তি শ্রুত্তমেন সন্নিবেশিত দেখা যায়। ইহাঁরা সকলেই অখামেধের অনুষ্ঠান হারা গুরুতর পাপ হইতে মুক্ত হন এইরপ লিখিত আছে †। ইহাতে স্প্রইই বোধ হইতেছে, ঐ ব্রাহ্মণ-রচ্যিতা তাঁহাদিগকে পূর্ককালীন লোক বলিয়া অবগত ছিলেন।

এইরপ, জনক-বৈদেহ[®] অর্থাৎ মিথিলাধিপতি জনক, তুম্মস্ত শকুস্তলা ‡ ও তদীর পুত্র ভরত, রাজা ধৃতরাষ্ট্র § ইত্যাদি রামায়ণ ও মহাভারতের মূলো-

বিখনারা, রোমশা, যমী, উর্বাণী প্রভৃতি প্রালোকেরাও বেদ মন্তের রচয়িত্রী বলিয়া উলিখিত হইয়াছেন। ইইারা সকলেই ঋথেদ-মন্ত্র * প্রণয়ন করেন। ইইাদের বাকাই বেদ ছইয়া পিয়াছে। এইরপ বৃহদারণাকোপনিবদের তৃতীয় অধ্যায়ের অষ্টম রাহ্মণে ও চতুর্ধ অধ্যায়ের পঞ্চম ব্রাহ্মণে বিনিবেশিত গাগাঁও মৈত্রেয়ীর বাকাণ্ডলিও বেদ বলিয়া পরিগণিত হয়। কি আশ্চর্যা ব্রাহ্মণেরা যে স্তাশ্ত্রের বিরচিত বেদ-মন্ত্র কঠন্ত করিয়া আপনাদিপকে কৃতার্থ মনে করিয়া আশিসয়াছেন, পশ্চাৎ তাহাদিগকেই বেদাধিকারে একেবারে বঞ্চিত করিয়া রাখিয়াছেন। ভাহাদের পক্ষে বেদ পাঠ দ্রে পাক্ক, প্রবণ্ড বিষম পাতক। ভাল । আহ্মণ ঠাকুর ! ভাল !

- * व्यामिशक्ता वहा 40 8 48 1
- .† मजभ्ध ब्राज्ञन। ১७। e। s। ७ **क खिका**।

§ আদিপক্ষের ১৪ অধাারের ee রোক অমুসারে, জনমেলরের এক পুত্রের নাম ধৃতরাষ্ট্র।

[‡] শতপথ আহ্নণে শক্সতলা অধ্সরা বলিরা লিখিত হইরাছে। ''শক্সতলা নাডপিতাপেরা ভরতং দধে" (শ. প্.আ.।১৩: ৫।৪।১৩)। ''ভেন হৈ তেন ভরতো দৌংবস্তিরীজো' (শ. প. আ.।১৩।৫।৪।১১)।

कयं पुनः ग्रूट्रश्चरेन ग्रुगुत्पन्ना सूच्यतः इति उच्यते । तदा द्रवणात् ग्रचमिभदुद्राव ग्रचावाभिदुद्रुवे ग्रचा वा रैक्समिभदुद्राविति ।

পঞ্চন মণ্ডলের ২৮ ক্তে, ও প্রথম মণ্ডলের ১২৬ ক্তেরে সপ্তম অক্ এবং দশম মণ্ডলের ১০. ও ৯৫ ক্তের অভ্যতি মন্ত্রনুহ।

পাথ্যানোক নান। ব্যক্তি সম্বদ্ধীয় নানা বিষয় শতপথ ব্ৰাহ্মণাদির মধ্যে স্থচিত দেখা যায়।

মহাভারতাত্মারে, অর্জুন কৃষ্ণ-ভগিনী স্বভ্রা হরণ করেন এবং ভীন্ন কাশীরাজ্য-ক্সা অধা, অধিকা 'ও অধানিকাকে বল-পূর্বক অপহরণ করিয়া আনেন এবং তদীয় ভ্রাতা বিচিত্রবীর্য্যের সহিত অধিকা ও অধানিকার পাণিগ্রহণ সম্পন্ন করিয়া দেন। অধিকার গর্ভে ধৃতরাষ্ট্র ও অধানিকার গর্ভে পাঞ্ছল্ম গ্রহণ করেন *। বাজসনেরিসংহিভার অন্তর্গত অধ্যমেধ ধজ্যের প্রকরণে ঐ চারিটি স্ত্রীলোকেরই নাম একত্র সন্নিবেশিত আছে। রাজমহিবী বলিতেছেন,

श्रक्वेऽश्रक्विके श्रक्वालिके न मां नयति कश्चन। ससस्त्रश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

বাজ্যনেষ্ক্রিসংহিতা। ২৩। ১৮।

অধে ! অধিকে ! অধালিকে ! কেই আমাকে অখ-সান্নধানে লইয়া যাত্ৰ না।
(ৰাদ আমি নিজে না বাই), ভাহা হইলে নিক্ত অখ-কাম্পাল-নগর
নিবাসনী ৰোনাক্ত স্কুভ্রার মত অন্যের সহিত সহবাস করিবে।

একত্র সন্নিবেশিত এই সমস্ত নামাদির সাহত মহাভারতোক্ত ঐ সমস্ত
ব্যক্তির নামাদি কোনরপেই অসম্বন্ধ মনে করিতে পারা বার না। বালসনোরসংহতার একটি মন্ত্রে (১০।২১) অর্জুনের নাম আছে, কিন্তু সেটি ইন্দ্র-বাচক।
মহাভারতোক্ত অর্জুনও ইন্দ্র-পূত্র বালয়া পরিগণিত। এইরপ রামায়ণ ও মহাভারতের আমুসন্দিক কথা সংক্রোন্ত বশিষ্ঠ, বিশ্বামিত্র, বাজবল্ক্য, দার্ঘতমা, কন্দ্রীবান্ প্রভৃতি অনেক অনেক শবির প্রসঙ্গ, এবং জল-প্রান্তর পুরুষবা
ভ উর্কানির উপাধ্যান, শুনংশেপের বিষয়, চাবনের পুনং বৌবন-প্রাপ্তি ইত্যাদি
বহুত্র উপাধ্যানও বেদ-বৃশক। বেদের মন্ত্র ও আহ্মণ উভর ভাগের মধ্যেই
এই সমস্তা বিষয় বিনিবেশিত আছে। পশ্চাৎ পার্শ্বাপাশি করিয়া তাহার
করেকটি উন্নাহরণ প্রদশিত হইভেছে, পাঠ করিলেই ফানিতে পারা যাইবে।

[•] আড়ির্গর্ব ১০৬

(वन।

রামায়ণ ও মহাভারত।

বালকাণ্ডের ৫২—৫৬ ও অস্ত

অক্ত নানা সর্গের নানা স্থানে এবং

(शारक ७ २२ व्य. ६ (शारक धवः

১৭৩, ১৭৪ ও ১৭৫ অধ্যায়ে ও অন্ত

স্থানে উপাথ্যাত।

স্থরূপে

উপদেশ্ল

আদি পর্বের ৯৪ অধ্যায়ের

বসিষ্ট (বশিষ্ট)।

ভা গ্ৰ

कीर्तिछ।

স্কামুক্রমানুসারে, ঋগ্রেদ সংহি-ভার সপ্তম মণ্ডলের অন্তর্গত এক হইতে একশত চারি পর্যান্ত প্রায় সমুদায় স্তুক্তের রচরিতা। বসিষ্ট ও বসিষ্ট-সন্তানেরা ঐ সংহিতার প্রথম মণ্ড-লের ১১২ জু. ১ ঋ : এবং সপ্তম मखरनद्र १ स, १ स, ३, ७; ১२, পর্বের ৩•৩—-৩০৯ অধ্যায়ে জ্ঞান ও o; ১৮, 8; २०, ১; २७, €; ००, ধর্মের ১—১৪: ৩৭, ৪ ইত্যাদি বহুতর ঋকে উল্লিখিত। তৈজিবীয় **সংহিতার** সপ্তমাষ্টক, ঐতবেয় ব্রাহ্মণ (৮, 💫), কৌষাত্তকি ব্রাক্ষণের ৪র্থ অধ্যায়. শতপথ ব্রাহ্মণের হাদশ वर्षाधाम (১, ०৮), সামবেদের ব্ৰাহ্মণ (১, ৫) ইত্যাদি ষড় বিংশ বছত্তর বেদ-শাস্ত্রে কীর্ত্তিত উপাখ্যাত ৷

বিশ্বামিত্র।

বালকাণ্ডের অষ্টাদশ সর্গের ৩৯ সর্বাম্পুক্রমানুসারে, ঋথেদ সংহি-শ্লোক অবধি ৭৪ সর্গের ১ প্রথম শ্লোক ভার তৃতীয় মণ্ডলের মন্তর্গত ১ এক পর্যান্ত এবং আদি পর্বের ১৭৫ একশত হইতে ১২ বার এবং ২৪ চবিবশ হইতে ৬২ বাষটি পর্যন্ত গ্রায় সমুদায় সক্তের পঁচাত্তর অধ্যায়ে উপাধ্যাত রচয়িতা* ৷ ঋ-সং, ৩ম,১সু, ২১ঋ ; ৩ম, কাণ্ডের ৬২ সর্গের ১৭ খ্লেকে বিশা-

⁻ ইত্রার মধ্যে, তুগাচার্য্য নিক্লক ভাব্যে জুতীয় মগুলের ৫০ সুক্তের ২০ থকটি 'বসিষ্ঠ-(विविषी' व वर मात्रजाहार्य। केशात २३, २२, २७, २८ वर हात्रिहि अक्ट 'विमिन्ड-(विविष्ठाः' अर्थाद

বেদ

রামায়ণ ও মহাভারত।

১৮ম, ৪ঝ, ০ম, ৫০ম, ৭, ১২ ও ১০ঝ; মিত্র নিজ সন্তানগণকে নীচ জাতি ১০ম, ৮৯ম, ১৭ঝ; ১০ম, ১৬৭ম, ৪ঝ প্রাপ্ত হইবি বঁলিয়া অভিসম্পাত করেন ইত্যাদি ঋকে এবং ঐতরেয় ব্রাহ্মণের এইরূপ উক্ত হইয়াছে। সপ্তম পঞ্চিকার অন্তর্গত শুন: শেপ-প্রস্তাবে (১৩—১৮)উল্লিখিত ও পরিকীন্তিত। ঐ ব্রাহ্মণের ঐ স্থলে বিখানিত্র-সন্তানের। নানা প্রকার দন্ত্য বিলয়া লিখিত আহে। (বৈখামিত্রা দম্যানাং ভৃষিঠা:।)

यां छव वद्या ।

শুক্রবন্ধুর্বেদীর শতপথ প্রান্ধণের ১, শান্তি পর্বের ৩১১—৩১৯ অধ্যারে ২, ৩, ৪, ৫, ১১, ১২, ১৩ ও ১৪ উপদেষ্টা ও যন্ধুর্বেদ-প্রকাশক বলিয়া কাপ্তের নানা স্থানে উপদেষ্টা স্বব্ধণে উপা্থ্যাত। উপাধ্যাত।

দীৰ্ঘতমা।

দর্বাস্থ্যনার্দারে, ঝাথেদ সংহিতার আদি পর্বের ১০৪ অধ্যায়ে প্রথম মণ্ডলের অন্তর্গত ১৪০ হইতে উপাধ্যাত। ১৬৪ পর্যাস্থ সমুদার স্ক্রের রচন্ধিতা।

বশিঠের প্রতি বিষেষ-স্চক বলিয়া বাগে। করিয়াছেন। অতএব রামায়ণ ও সহাভারতে বশিঠ-বিশামিত্রের যে বিরোধ বর্ণন আছে, উল্লিখিত উভর ভাষাকারের অভিপ্রারামুসারে বেদসংহিতার মধ্যেও তাহার নিদর্শন পাওয়া যাইতেছে বলিতে হয়। রাজা ফ্লাস্ কথন বিসিঠকে ও কথন বিশামিত্রকে আপনার পৌরহিত্য গদে নিযুক্ত করেন (খ-সং, ৭, ১৮, ৪ ও ৫ এবং ২১—২৫; ৮, ৩৬, ১—৬; ঐ, রা, ৮, ২১; এবং খ-সং, ৩, ৫৬, ৯—১৩)। কিন্তু আবার বিশামিত্রকে দুরীভূত করিয়া দেন ও কোন সমরে বিস্ঠতনরের প্রাণনাশ করেন এইরূপ লিখিত আছে (খ-সং, ৭, ৩৬, ৬; তৈত্তিরীয় সংহিতা, ৭ অই; কৌষীতকি ব্রাহ্মণ, ৪ অ; এবং সায়নাচার্য্য কর্তুক খ-সং, ৭য়, ৩২।ফ্জেন ভাব্যে উক্তৃত শাট্যায়ন ও ভাত্য ব্রাহ্মণ)। (Muir's S. texts, vol. I., 1872, pp. 371—375 দেখ)। এই ব্যাপারটি ঐ উভর খবির প্রশাসর প্রতিযোগিতা ও বিবাদ-বিস্থাদের সঞ্চারক ও বিজ্ঞাপক বলিয়া অমুমিত ইইতে পারে।

বেদ

রামায়ণ ও ম**হা**ভারত।

कंकीवान।

সর্বাস্থ্রনাম্সারে, ঋ, সংহিতার ১ম, সভাপর্ব, ৪অ, ১৭ শ্লোক এবং ১১৬—১২৬ * স্তের রচয়িতা। অস্শাসন পর্বা, ১৫০অ, ৩০ শ্লোক ও ১৬৫অ, ৩৭ শ্লোকে উল্লিখিত।

क्ल अन्य।।

শতপথ ব্রাহ্মণের প্রথম কাণ্ডের বনপর্বের ১৮৭ অধ্যারে বর্ণিত। অষ্টমাধ্যারে উপাধ্যাত।

পুরুরবা ও উর্বাণী।

ঋথেদ-সংহিতার ১০ম, ৯৫ শুক্ত; আদিপর্বের ৭৫ অধ্যায়ের ১৮—২৪ বাজসনের সংহিতার ৫, ২; ১৫, ১৯; শ্লোকে, বনপর্বের ১১০ অধ্যায়ের ৩৫ শতপথ বান্ধণের ৩, ৪, ১, ই২; ১১, শ্লোকে এবং শান্তিপর্বের ৭২ ও ৭৩ ৫, ১, ১ এই সকল স্থলে প্রস্তাবিত্ব। অধ্যায়ে উপাধ্যাত বা উলিবিত।

१७नः ८ मेर ।

ঋথেদ সংহিতার প্রথম মণ্ডলের বালকাণ্ডের ৬১ ও ৬২ সর্গে ষষ্ঠামুবাকের ১— ৭ স্কু-প্রণেতা ও উপাধ্যাত। ঐতরেম্ব বাহ্মণের সপ্তম পঞ্চিকায় (১৩ – ১৮) উপাধ্যাত।

অখিন্-যুগলের প্রসাদে চ্যবন বা চ্যবানের পুনর্যোবন-প্রাপ্তি।

क्ष-गः हिलांत्र >, >>१, >० (ग्रुवं वनशर्संत्र, >२२ ७ >२० व्यशारित्र च वनशर्संत्र, >२२ ७ >२० व्यशारित्र च वनसम्बिना जरन्त' पुनयु वान' विवित्त ।
 च क्रायु: श्रचीभि:); >, >>৮, ७;
 ६, १६, ६; १, ७৮, ७; ७वः १, १०,
 ६ श्री क श्री क विवित्त ।

২৬ হজের সওম ঋক্টি রোমশা কর্তৃক বিরচিত।

বেদ

রামায়ণ ও মহাভারত।

উদালক-আরুণি ও খেতকেতু।

ঐতরের ব্রাহ্মণ, ৮, ৭; শতপথ আদিপর্বের, ০ও ১২২ অধ্যারে ব্রাহ্মণ, ১, ১, ২, ১১; ২, ৩, ১, উপাথ্যাত। ৩১; ৩, ৩, ৪, ১৯; ৪, ৫, ৭, ৯; ৫, ৫, ৫, ১৪; ১১, ২, ৬, ১২; ১১, ৪, ১, ১; ১১, ৫, ৩, ১; ১২, ২, ১৩; ১৪, ৯, ৩, ১৫; ১৪, ৯, ৪, ৩০; বৃহদারণ্যকোপনিষদ্, ৩, ৭, ১; এবং কঠোপনিষদ্, ১, ১১ শ্রুতিতে কথিত।

ফলতঃ মহাভারতের মধ্যে এরূপ প্রাচীনতা কথা বিনিবেশিত আছে ধে, বেদ ভিন্ন অন্ত কোন গ্রন্থে সেরূপ বিস্তমান নাই। হন্ধ ত, অন্ত অন্ত সকল শাস্ত্রেরই অপেক্ষা অধিকতর পূর্বতন কথা ভারতের মধ্যে সন্নিবিপ্ট আছে। যে সমন্ত্রে আর্থ্য-বংশে দম্পতির সম্বন্ধ-বন্ধন অন্তান্ত শিথিল ছিল, মহাভারতে সে সমন্ত্রেরও অরণ-স্চক উপাথ্যান দেখিতে পাওয়া যায়। এইরূপ একটি উপাধ্যান আছে বে সে সমন্ত্রে স্ত্রীলোকেরা পরপুরুষ গমন করিলে প্রত্যবান্ত্র হন্ত না; পরে উদ্দালক-পূত্র খেতকেতু নিজ জননীকে অন্ত পূরুষ কর্তৃক আক্রান্ত দেখিয়া এই নিয়ম করিলেন, অদ্যাবিধি যে স্ত্রীলোক পরপুরুষ-সংসর্গ করিবে, এবং যে পুরুষ পতিব্রতা স্ত্রীকে পরিত্যাগ করিয়া পরস্ত্রীতে অন্তর্রুক্ত হবৈ, উভরেই জনহত্যা সদৃশ গুরুতর পাপে পরিলিপ্ত হববে *! স্ত্রী-পুরুষের উল্লিখিডরূপ স্কেচারর প্রথা যদি একটি বাস্তবিক কথা হন্ধ, তাহা হইলে এই উপাধ্যানটি হিন্দু-সমান্তের একটি অতীব প্রাচীন অবস্থার পরিচান্ধক বলিয়া গণ্য করিতে হববে।

तामायन ও महाভात्र ए प्रमण्ड जेशांशात्मत्र मिवल्यत्र वर्गम व्याह्न, त्वर

শাস্ত্রে ভাহার অনেকগুলির স্ত্রপাত মাত্র, কতকগুলির বা অপেক্ষারুত অল্প প্রসঙ্গ, ও কোন কোনটির বা সবিশেষ বৃত্তাস্তও বিদ্যমান দেখা যায়। অনেক অনেক বৈদিক উপাধ্যান নানা অংশে পরিস্ত্রিত ও পরিবৃদ্ধিত হইয়া ঐ ছই মহাকাব্যের মধ্যে সনিবেশিত হইয়াছে একথা বলা বাহল্য। এই সম্দায়ের মধ্যে কোন প্রাচীনতর বৈদিক কথা অপেক্ষারুত অপ্রাচীনতর পৌরাণিক দেব-বিশেষের মহিমাপ্রকাশ বিষয়ে নিয়োজিত হইয়া অভিনব রূপ ধারণ করিয়াছে। পশ্চাং বিষ্ণু বৃত্তারের প্রসঙ্গ মধ্যে ভাহার কিছু কিছু উদাহরণ প্রদর্শিত হইবে।

মহাভারতীয় অনেক উপাথানে বেদোক্ত ধর্ম-লক্ষণই লক্ষিত হইয়া থাকে।
নলোপাথান ও বিশেষতঃ •দময়ন্তীর স্বয়ম্বর-বৃত্তান্তি একটি প্রাচীন প্রবন্ধ।
শতপথ প্রাহ্মণে নিষ্ধ-পতি নল ''নলনৈষিধ'' বলিয়া উক্ত ইইয়াছেন। উল্লিখিত
স্বয়ম্বর-সভার বর্ণনাম ইক্র, অয়ি, যম ও বায়ুকে দেখিতে পাইবে। তাঁহারা
দময়ন্তীর প্রণয়াভিলাষী হইয়া তথায় উপন্তিত হন। ঐ স্বয়ম্বর-বৃত্তান্ত-রচনার
সময়ে পৌরাণিক ধর্ম প্রচলিত পাঁকিলে, গণপতি হন্তি-শুভ লইয়া গমন করিতে
পার্ফন আর না পার্ফন, রূপের সাগর কার্ত্তিক স্ব্রাত্তা সভাস্থ ইইয়া গল-দেশ
প্রসারিত করিয়া উপনিষ্ট ছিলেন এইরূপ বর্ণিত হই ইইত ভাহার সন্দেহ
নাই।

প্রথমে আর্য্য-সমাজে বর্ণ-বিচার ছিল না; কালক্রমে উহা প্রবর্ত্তিত হয়।

হইলে, ব্রাহ্মণেরা ক্রমশঃ প্রবল হইয়া উঠেন। তাঁহারা ষাজন-ধর্মামুসারে
ক্রিয়াদির পৌরহিত্য-পদে নিযুক্ত হইয়া উদ্বাহাদি সংস্কার সমুদার সম্পন্ন
করিয়া দিতে থাকেন। নলোপাথানে দেখিতে পাওয়া যায়, তাঁহারা দৌত্য-কর্মে ব্রতী হইয়া নলের অন্ত্রমণে চতুর্দ্ধিকে গমন করেন, কিন্ত তাঁহাদের পৌরহিত্য-পদ লাভের উল্লেখ নাই। পুরোহিত ধোমা ষেমন যুধিষ্টিরাদির সাহত
জৌপদীর উন্নাহ-ক্রিয়া সম্পন্ন করিয়া দেন, নলদমন্ত্রীর বিবাহ সেরপ কোন
ব্রাহ্মণ-পুরোহিত্তের দ্বারা সম্পন্ন হইবার কথা লিখিত নাই; রাজা নিজেই ক্রা
সম্প্রদান করেন। যথন মহাভারতীয় নলোপাথ্যানের প্রাচীনত্ব-বোধক পূর্ব্বলিখিত অন্ত অন্ত লক্ষণ বিদ্যান্যন রহিয়াছে, তথন এ বিষয়টিকেও তাদৃশ একটি
লক্ষণ বিদ্যান্যন করিতে পারা যায়। মন্ত্র্যাহিতা-রচনার সময়ে ব্রাহ্মণের

মহিমা ও ব্রাহ্মণের প্রভুত্ব গগন স্পর্শ করিরাছিল ইহা পুর্বেই দৃষ্ট ইইরাছে *।
অভএব নলোপাখ্যানের মূল বৃত্তাস্তাটি ঐ সমরের পুর্বে উৎপন্ন বলিয়া সহজেই
প্রতীয়মান হইয়া উঠে। ব্যাতি ও দেব্যানীর উপাখ্যানে ব্রাহ্মণ-বর্ণের মহিমা
ও পরিমা অতিমাত্র প্রবল দেখিতে পাওরা যায় †। অতএব সে উপাখ্যান
এবং তাদৃশ অভ অভ উপাখ্যান অপেক্ষাকৃত অপ্রাচীন বলিয়া বিবেচিত
ইইয়াছে ‡।

রামায়ণ ও মহাভারতে বর্ণিত কতকগুলি সামাজিক রীতি নীতি অত্যন্ত প্রাচীন এ কথা পূর্বেই একরপ লিখিত হইরাছে। এমন কি, মমুসংহিতা-প্রোক্ত ধর্ম-প্রণালী প্রচারিত হইবার পূর্বেও ভাহার কোন কোন বিষয় প্রচলিত ছিল। যে সময়ে রামায়ণ ও মহাভারতে দেই সমস্ত বিষয়ের উপাধ্যান সঙ্কলিত হয়, দে সময়ের পূর্বে হিন্দু সমাজ হইতে সে সমস্ত ভিরোহিত হইয়া যায়। এই নিমিত্ত ঐ উভয় গ্রন্থ-সংগ্রহকারেরা মেই উপাধ্যানগুলি পরিবর্ত্তন প্রংসর নিজ সময়ের উপযুক্ত ও নিজ মতের প্রতিপোষক করিয়া বর্ণন করিয়াছেন। এ স্থলে এ বিষয়ের ছই একটি ভালহরণ প্রদর্শিত হইতেছে; পাঠ করিলেই জানিতে পারা যাইবে।

স্ত্রীলোকের বহুবিবাহ হিন্দু-সমাজের একটি প্রচণিত প্রথা ছিল। বেদসংহিতার সে বিষয়ের প্রসঙ্গ আছে ও মহাভারতের মধ্যেও ভাহার নিদর্শন
রহিরাচে §। তদমুদারে, যুধিন্তিরাদি পঞ্চণাওব এক দ্রৌপদীর পাণিগ্রহণ
করেন। মহাভারতে ঐ উপাধ্যান সঙ্গলিত হইবার পূর্ব্বে উল্লিখিত উদ্বাহব্যবস্থা নিবারিত হইরা যায়। এই নিমিত্ত সংগ্রহকার এন্থলে শিখিলেন,
পাওবেরা দ্রৌপদী-সমভিব্যাহারে গৃহ প্রত্যাগমন পূর্ব্বক নিজ জননীকে কহিলেন, মা! আমরা অদ্য অমূল্য নিধি লাভ করিয়াছি। তদীয় মাতা এই
পর্যান্ত শুনিয়াই কহিলেন, বৎস! তোমরা পাঁচ সংহাদরে উহা বিভাগ করিয়া

^{*} ৬০ পৃষ্ঠা দেখ।

⁺ আদিপ্রবি। ৮১ আবার।

[‡] Talboys Wheeler's History of India, vo I. 1., 1867, Part III, Chapters II and III (१४)।

६ > १७ पृष्ठी (मण ।

লও। মাতৃ-আজ্ঞা লজ্মন করিতে নাই, অতএব পাঁচ সংহাদরে এক জৌপদীর পাণিগ্রহণ করিলেন *।

রামারণে লিখিত আছে, রাজা দশরথ একটি ঋষি-কুমারের প্রাণবধ করেন। কিন্তু শাস্ত্রান্থারে রহ্ম-বধের পর গুরুতর হৃদ্ধ আর কিছুই নাই †। রাজা দশরথ পরম ধার্মিক পুণ্যাত্মা পুরুষ, তাঁহার এইরূপ অষশস্কর অসঙ্গত পাপ-কর্মণ সংঘটন সন্তব নয়। এই নিমিত্ত লিখিত হইয়াছে, সেই ঋষি-কুমার রাহ্মণতনয় নয়; বৈশ্রের ঔরদে ও শুদ্রার গর্ভে তাহার জন্ম হয়‡; তাহারে বধ করিলে ব্রহ্ম-হত্যার ফলভাগী হইতে হয় না।

পূর্ব্বে হিন্দু-সমাজে স্ত্রীলোকের ও অধিক বয়সে বিবাহ-প্রথা প্রচলিত ছিল। কথন কথন কন্তা-কালেও পুরুষ-সংসর্গ ঘটিয়া সম্ভান জ্বনিলে, সেই সম্ভান কানীন বলিয়া উল্লিখিত হইত। মনুসংহিতায় এবিষয়ের প্রসঙ্গ ও ব্যবস্থা আছে শ। কর্ণ কুন্তীর কানীন পুত্র। যে সময়ে এ বিষয়ের বৃত্তান্ত বিরচিত

^{*} বৈদিক সমাজে প্রীলোকের বহুবিশ্বাহ একটি প্রচলিত প্রথা ছিল। দ্রৌপদীর পঞ্চামিগ্রহণ যদি একটি বাল্ডবিক ঘটনা হইরা পৌকে, তাহা হইলে ঐ প্রাচীন সমাজেই উহা সম্পন্ন
হইরাছিল তাহার সন্দেহ নাই। কালক্রমে উহা অপ্রলিত হইয়া পেলে, মহাভারত-সংগ্রহকার
পণ্ডিত-বিশেষ মহাভারতের মধ্যে দ্রৌপদীর বহুবিবাহটি কৌশলক্রমে প্রচলিত-প্রথা-বিরুদ্ধ
একটি অসামাক্ত বাগার বলিয়া বর্ণন করিরাছেন। ভোট দেশে প্রীলোকের বহুবিবাহ
আদ্যাপি প্রচলিত আছে। তথাকার ঐ প্রথাটি ট্রৌপদীর পঞ্চামি-গ্রহণেরই অবিকল অমুরূপ। সচরাচর তুই কিম্বা তিন সহোদরে এক ভার্যা লইয়া একত্র সংসার ধর্ম করে এইরূপ
দেখা যায়। কোন কোন পরিবারের মধ্যে পাঁচ ছয় সহোদরকেও এক প্রীর পাণিগ্রহণ
করিতে দেখা গিরাছে। সিংহল দ্বীপে ও বিশেষতঃ তথাকার ধনি-লোকের মধ্যে এই প্রধা
প্রচলিত আছে। কিন্তু তথার সহোদর ব্যতিরেকে স্বপরিবার্হ্থ অপরাপ্র স্ব-সম্পর্কার
ব্যক্তিতেও এক স্ত্রীকে বিবাহ করিয়া খাকে। কালম্প, টাস্মেনিয়াবাসী, উত্তর আমেরিকাবাসী ইরাকোরা ইত্যাদি বহুদ্রম্ব জাতির মধ্যে এই কৌতুকাবহু রীতি বিদ্যমান বলিয়া
লিখিত ইইয়াছে। তোদা নামক দাক্ষিণাত্য লোকের মধ্যে অদ্যাপি ইহা বিলক্ষণ চলিত
রহিয়াছে। তুবন-বিখ্যাত রোমক্ষ-সম্রাট সিজার্ বলিয়া গিয়াছেন, গ্রেটব্রিটেনেও এই প্রধা
প্রচলিত আছে »

[†] মনুসংহিতা। ৮। ৩৮১।

[🚶] व्यविधाकां । ७० मर्ग । ८५ (म्राक ।

[¶] ৬৩ পৃষ্ঠা দেখ।

^{*} The Abode of Snow by A Wilson 1875, pp. 224-236 (14)

ও নহাভারতে সন্নিবেশিত হয়, সে সময়ের পুর্বে ঐ বাবহায়ট রহিত
হইয়া য়য়। এই নিমিত্ত লিখিত হইয়াছে, ছব্রাসা কুষ্টার অতিথি-সংকারে
সম্ভপ্ত হইয়া তাঁহাকে পুজোৎপাদন বিষয়ের একটি ময় উপদেশ দেন; কুষ্টা
কন্তা-কালেই সেই মন্ত্র পাঠ হায়া স্থাদেবকে আহ্বান করেন; স্থা সেই ময়
প্রভাবে তংসারবানে উপস্থিত হইয়া তাঁহার গর্ভাধান করিয়া য়ান, এবং মহাবীর
কণ সেই গর্ভে জন্ম গ্রহণ করিয়া নিজ জননার উবাহ-সংস্কার সম্পন্ন হইবার
প্রেই ভূমিষ্ঠ হন ৩। অতীব পুরে হিন্দু-সমাজে যে সমস্ত আচার ব্যবহার
সচরাচর প্রচালত ছিল, তদম্বায়ী জিয়া-বিশেষ যথন ব্যক্তি-বিশেষের কারণাধান দৈব-ঘটনা বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে, তথন তাহার উল্লিখিত রূপ মীমাংশা
ব্যতিরেকে অন্ত কোনরূপ মীমাংসা সন্তব ও সঙ্গত হয় না।

রামারণ ও মহাভারত কেবল বৈদিক ধর্মের বৃত্তাস্ত নয়। এই উভয়ই
বৃক্ষক্ষহা-সমাকার্ণ বিশাল রক্ষের ভূমিস্বরূপ। বৈদিক ধর্ম রূপ প্রাচীনতর তর্কক্ষেরে পৌরাণিক ধর্মরূপ প্রবল রক্ষরহা বন্ধমূল হইয়া ঐ মহার্ক্ষকে নিস্তেজ
করিয়া ফেলিতেছে এইরূপই দৃষ্ট হইয়া থাকেও। ঐ অভিনব ধর্মের মতে ব্রহ্মা,
বিষ্ণু, শিব ও তদায় শক্তি সমুদায়ই প্রধান দেবতা ও মহুয়ের প্রধান উপাশু।
ঐ তিনটি দেবতার সমবেত নাম বিমৃতি। পৌরাণিক ও তান্ত্রিক মতামুষায়ী
ব্যাখ্যামুসারে, ঐ নিমৃতি ওক্ষারের প্রতিপাদ্য। পশ্চাৎ পুরাণ-প্রসঙ্গের পর ঐ
বিষ্ণু শিবাদির মূল বৃত্তান্তের বিষয় বিবেচিত হইবে। মহাভারতের ব্রহ্মার
মহিমা অপেক্ষারত থবা দেখা যায়; শিব ও বিষ্ণু-উপাদনারই প্রাহর্ভাব দৃষ্ট
হয়। স্থানে স্থানে ব্রন্ধার পূর্ব্ব মহিমার কিছু কিছু নিদর্শনও লক্ষিত হইয়া
থাকে। এই অনতি প্রাচীন মতে বৈদিক দেবগণ একবারে অগ্রাহ্থ নয়;
কিন্তু অপেক্ষারত নিরুষ্ট পদে অবস্থাপিত হইয়াছেন। ইক্র দেবরাজ বিলয়া
লিখিত বটে, কিন্তু ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও শিব তদপেক্ষা অভিমাত্র উচ্চতর পদে প্রতিক্রিত। বঙ্গণ আর্থ্য-কুলের অতি প্রাচীন প্রধান দেবতা †। বেদ-মন্ত্রে দৃষ্ট
হইতেছে, তিনি কথনও ভূলোক ও হালোক স্ক্রন ও রক্ষণ এবং রাজা ও

[🛩] व्यानिभर्द्य। ३३३ व्यक्षांग्रा

[†] अथम ভाগে अकाणिक উপক्रमणिकारमात्र २०-२२ वदः १८-१५ पृष्ठी मार्च ।

সম্রাট সংজ্ঞা গ্রহণ পূর্ব্বক প্রজাপুঞ্জের শাসন করিতেছেন ', কথনও বা নিশাধি-পতি হটয়া চক্সমণ্ডল পরিচালন এবং নক্ষত্রগণ প্রকটন ও অপ্রকটন করিতে-চেন ১ কথনও বা মিত্রাদেবের সহিত সমিলিত হইয়া নভোমওল প্রদীপ্ত ও সুর্যামগুলের গণ প্রশন্ত করিতেছেন ", কথনও বা সর্বজ্ঞ, সর্বনশী ও পাণ-ু পুণোর শাস্তা ও পুরস্কর্তা স্বরূপে লোকের সত্য মিথ্যা ও শুভাশুভ ক্রিয়া সমুদায় অনুসন্ধান পূর্বক দণ্ড-পুরস্কার বিধান করিতেছেন, এবং কখনও বা অপরাধী ব্যক্তির স্ততি-শ্রবণে পরিতৃষ্ট হইয়া গুরুতর অপরাধন্ত মার্জ্জন। করিতেছেন । কিন্তু ঐ অভিনৰ ধৰ্ম-প্ৰণালীর বিবরণে দৃষ্ট হয়, তিনি এই সমস্ত বিভিন্ন ক্ষমতা-ধারণে বঞ্চিত হটরা কেবণ জলদেবতাশ্বরূপে অবস্থিতি করিতেছেন। রাগায়ণ ও মহাভারতের যে সকল ফলে বিষ্ণু শিবাদি পৌরাণিক দেবাদির মাহাত্মা-কথন ও তল্পধ্যে রাম-ক্লেয়ের ঈশরত্ব-প্রতিপাদন-কথা বিনিবেশিত হই-म्राट्ड. অথবা সেই দকল স্থলের যে দকল অংশে धे मभूमात्र विषय সুস্পষ্ট উল্লি-থিত রহিয়াছে, তাহা অপেঞ্চাকত অপাচীন বলিয়া অক্লেশেই নির্দেশ করিতে পারা যার। কিরাত অর্জুন সংবাদ", যুধিষ্টির-ক্কুত বলিয়া উল্লিখিত তুর্গা-স্ততি । ঐক্লপ দক্ষ-ক্লত শিব-স্তোত্র', অর্জুন-ক্লত হুর্গা-স্তব^৮,মহাদেব কর্ত্তক পণ্ডবশিবি-রের ধার-রক্ষা ও অখখামার সহিত তাঁহার যুদ্ধ ও তৎকর্তৃক শিবস্তোত্রাদি-বর্ণন",বিষ্ণুর রামরপে অবতরণ" ',ক্লফ্ল-মাহাত্ম্য বিশিষ্ট ভগবদ্গীতা", গুক্রাচার্য্য-

১। ঝংখেদ-সংহিত্যিও। ৪২ । ও ও ৪ ॥ ৫। ৮৫। ১ ∦ ৬। ৭০। ১ ॥ ৭।৮৬। ১ ॥ ৭। ৮৭-।৫ ও ৬ ইত্যাদি।

२। अर्थन-मर्हिडा। २। २८। २०॥ २ । ८८। २८॥ २। २। ७। ७। ४८। २৮ हेडामि।

^{ं ।} अर्थन मः हिंखा। ১। २८। ৮॥ २०। ७८। ० ই छानि ।

৪। ঋথেদ-সংহিতা। ১। ২৫। ৭, ৯ ও ১১॥ २। ২৮। ৫, ৭ ও ৯॥ ৭। ৪৯। ও ॥ ১০ ৮৫। ২৪ ইত্যালি। অধ্ব-সংহিতা। ৪। ১৬॥

वनशक्त। ७৮—8) क्यादा।

७। विद्राहेणर्यः। ७ व्यथात्रः।

१। माखिन्द्रा २৮० व्यथात्र।

४। श्रीवानर्या २०।8--->४।

৯। সৌথিক পর্ব। ৬ ও ৭ অধ্যার।

২০। রামারণ। বালকাও। ১৬ ও ১৭ সর্গ।

३>। छोद्मशर्खा ३०—८२ ख्रशास ।

কৃথিত বিষ্ণু-মাহাত্মাই, অস্তু অন্ত নানান্তলে লিখিত বিষ্ণু ও ক্লফের নানারূপ মাহাত্মা-বর্ণনই, ইত্যাদি রামারণ ও মহাভারতোক্ত অনেকানেক বিষয় অপেক্ষা-ক্লত অপ্রাচীন ধর্ম-প্রতিপাদক অপ্রাচীনতর কথা বলিয়া অঙ্গীকার করিতে হয়। ত্রিমূর্ত্তির উপাদনা সহকারে তাঁহাদের বিশেষ বিশেষ অবতারই, কল্ল-ভেদই, সত্যত্রেতাদি যুগ-ভেদ ও যুগ-ধর্মই, মহুষোর অসন্তব ও অসঙ্গত পরমায়ুই-সংখ্যা এই সমস্ত অপেক্ষাকৃত অভিনব বিষয় প্রচলিত হয়। লোকে সহস্র বৎসর ও তন্মধ্যে কেহবা দশসহস্রবর্ষ বা তত্যোধিক কাল জীবিত ছিল এইরূপ লিখিত আছেই। কেহ সহস্রই, কেহ বা দশ সহস্র, অপর কেহ ষষ্টি সহস্র বৎসরই তপস্থা করেন এইরূপ বর্ণিত হইয়াছে। একথা গুলি অতীব

- >। শান্তিপর্ব। ২৮০ অধ্যার।
- २। मङालर्खा २०९० च वाषात्र ॥ উन्योत लर्खा । २२२ ७ २०० चपात्र ॥ मास्त्रिलर्ख। २०१ चर्षात्र हेन्द्रानि ।
 - ৩। মংস্ত, কুর্ম, বরাহ, রাম, কৃঞাদি।
 - ৪। শান্তিপর্ব। ২৮০, ৩০০ ও ৩১২ অধার।
- ৫। শান্তিপর্ক। ২৩১। বাজসনের সংহিতার তিংশ অধ্যারের অষ্টাদশ অমুবাকে কৃত, তেন্তা, ঘাপর এই তিনটি শন বিদ্যমান আছে, কিন্তু তাঁছা অক্ষ-বাচক। সারনাচার্বা তৈন্তিরীর ব্রাহ্মণের প্রথমাইকের প্রকাশধারের একাদশ অমুবাকে বিশেষ বিশেষ চারি ন্তোমের নাম
 কৃত ও অপর একটি ন্তোমের নাম কলি বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন।

ये वै चलारसीमा: कृतंतत्। प्रथये पञ्च कलि: स:।

সামনাচার্য্য উহার ভাষে ঐ ভোমগুলিকে কৃত-যুগ থরূপ ও কলিযুগ বরূপ বলিয়া ৰাখ্যা করিয়াছেন। তাঁহার বহু পূর্ব্বে শকরাচার্য্য ও আনন্দগিরি ছান্দোব্যোপনিষ্পের ভাষ্যে ও টাকার মধ্যে ঐ সকল শক্ত অক্ষ-বিশেষৰাচক বলিয়া বিশেষরূপে ব্যাথ্যা করিয়াছেন।

"क्तताय" क्तानाम यी ट्रातसमये प्रसिद्ध अतुरङ्कः।

ছान्नारगार्शनियम्. ८ थ शां, ८ अञ्चित मकब्र-छ। शां : ७

দাত সক্ষেত বিষয়ে যে অক্ষন্তাগ চারি চিহ্ন বিশিষ্ট, তাহাকে কৃত বলে।

चचस्र यस्मिन् भागे तयोऽदाः स व तानामायो भवति। यततु हावद्वी स हापर-नामकः। यतैकोऽद्वः स कलिसंच इति विभागः।

উলিখিত শ্রুতির আনন্দরিরি-কুত টীকা।

অক্ষের যে ভাগে তিন চিহ্ন থাকে, তাহা ত্রেডা, যে ভাগে চুই অঙ্ক থাকে, তাহা দ্বাপর, আর যে ভাগে এক অঙ্ক থাকে তাহা, কলি বলিয়া উল্লিখিত হয়।

- ७। भाखिनर्ति : २० (१७, ७२ ७ ३) १। ७०। २॥
- ৭। যেমন বিথামিত। বালকাত। ৫৭। ৪।
- ৮। (यमन (१) डम। माखिन (१) २२३। ८।

প্রাচীন নয়। অতিপূর্বে হিন্দু সমাজে শতায়ুই দীর্ঘায়ু: বলিয়া পরিগণিত ছিল। প্রাচীনতম সংস্কৃত শাস্ত্রেও তাদৃশ অপর বৈদিক শাস্ত্রে উর্দ্ধারণ শতবর্ষই লোকের দীর্ঘায়ু: বলিয়া কার্ত্তিত রহিয়াছে। (এই পুথকের প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৪৬ পৃষ্ঠা দেখ)।

पश्चेम शरदः शतं जीवेम शरदःशतम्।

स-मः। १।७७।७७।

আমরা যেন শত-সংখ্যক শরৎ দর্শন করি। যেন শতসংখ্যক শরৎ জীবিত থাকি।

कुर्व्ववेच कमीण जिजीविषेच्छतं समा:।

বাজসনেয় শংহিতোপনিষদ্। ২।

ক্রিয়া-কলাপের অনুষ্ঠান পূর্বক ইহলোকে শত বংসর দ্বীবিত থাকিতে ইচ্ছা করিবে।

মহাভারতে বৌদ্ধর্ম ইইতেও কোন কোন মতৃ গৃহীত হয়। শান্তিপর্কে অহিংসা-ধর্মের বিস্তর প্রশংসা আছে'। কিন্তু এটি হিন্দুদিগের আদিম ধর্মের অন্তর্ভ ছিল না। সংহিতা জ্ঞারালণ উভয়েতেই অধ্যেধ, গোমেধাদি হিংসা-ক্রিয়ার ভূরি ভূরি বাবস্থা আছে। বৌদ্ধেরাই প্রথমে অহিংসা-ধর্ম প্রচার করিয়া যায়; স্তরাং তাহা হইতেই এটি হিন্দু-ধর্মে সক্ষলিত হইয়াছে বলিতে হয়। এইরূপ মায়াবাদ ও নির্কাণ-মুক্তিও * বৌদ্ধর্মা হইতে পরিগৃহীত হইয়াছে।

মহাভারতের বিষয়ে এ পর্যাপ্ত যাহা কিছু লিখিত হইল, সমস্তই অষ্টাদশ পর্বা বিষয়ক জানিতে হইবে। হরিবংশ একথানি স্বতন্ত্র গ্রন্থ। উহা উত্তর কালে বিরচিত; এই নিমিত্তই উহার নাম খিল হরিবংশ। খিল শব্দের অর্থ উত্তর কালে সংযোজিত †। অষ্টাদশ পর্বের সহিত হরিবংশের অভিধের বিষয়ের ভূলনা করিয়া দেখিলে, ইহা অন্ত সময়ের অপ্রাচীনতর পুস্তক বলিয়া স্বতই প্রতীতি জালা। বস্ততঃ এথানি একথানি বৈষ্ণব-স্প্রাদায়া পুস্তক বলিলেই হয়।

१। भाखि भर्ता २१२।

भ्राष्ट्रिय विश्व । २५ । १२ ॥ ७३ । ३८ ॥

[†] প্ৰাত্তপরিশিটে।

যদিও ইহা অটাদশ পর্কা অপেক্ষা অপ্রাচীন, তথাচ নিতান্ত আধুনিক গ্রন্থ নয়। খৃথীকের একাদশ শতাকীতে পূর্ব্বোক্ত আরবীয় গ্রন্থকার অল্থীয়নী নিজ গ্রন্থে ইহার প্রসঙ্গ করিয়া গিয়াছেন *। কিছু পরেই দেখিতে পাওয়া যাইবে, ঐ সময়েরও অনেক পূর্বে বাসবদত্তা-প্রণেতা স্বব্দু উপমা হলে ইহার নামোল্লেথ করিয়া যান। কাদখরী ও হর্ষচরিত রচয়িতা বাণভট্ট বাসবদত্তার বিস্তর প্রশংসা করিয়াছেন।

कवीनामगलदुदर्भी नूनं वासवदत्तया।

হর্ষচরিত। ২ শ্লোক।

वानवम्खा श्रकाम श्रेत्न, कविशत्नत पर्श धकवाद्वरे हुर्न श्रेत्रा त्रन ।

অতএব বাণভট্টের সময় নির্মাণত হইলেই প্রবন্ধর সময় নির্মাণনের উপায় নির্দারিত হইতে পারিবে। হিউএন্থ্সজ্নামক চীন-দেশীয় তীর্থাতী খুইা-দের সপ্তম শতাশীর প্রারম্ভে ভারতবর্ষে আসিয়া ভ্রমণ করেন। তিনি লিখিয়া গিয়াছেন, কান্তক্জের রাজা শিলাদিত্য ত্রিশ কংসরের অধিক কাল রাজ্ঞ করিয়া ৬৫০ ছয় শত পঞ্চাশ খুইাকে প্রাণত্যাগ করেন। ঐ শিলাদিত্যের অন্ত নাম হর্ষবর্দ্ধন ও তদীয় পিতার নাম প্রভাকর্ষদ্ধন। এদিকে শ্রীমান্ ফ, হল্ হর্ষচারিতের মধ্যে প্রতাপশীল প্রভাকর্ষদ্ধন ও তদীয় পুত্র হর্ষবর্দ্ধনের নাম প্রাপ্ত হইয়া স্বপ্রকাশিত বাসবদ্তার উপক্রমাণকার মধ্যে তাহার প্রসঙ্গ উপস্থিত করেন। অন্ত এক পুত্রের নাম রাজ্যবর্দ্ধন ও কলার নাম মহাদেবী বা রাজ্যশ্রী। হর্ষচারিতের চতুর্থ উজ্বাসে ইহাঁদের জন্ম-বৃত্তাস্তাদি বিনিবেশিত আছে। চীন দেশীয় উল্লিখিত তীর্থবাতীর ভ্রমণ-বৃত্তাস্তোদ হর্ষবর্দ্ধন প্রান্ধান জ্লাত্র ক্রমণ সঙ্গত হ্রত্তেছে। প্রভাকরবর্দ্ধন উদ্ধিতন পুরুষ এবং হর্ষবর্দ্ধন ও রাজ্যবর্দ্ধন তাহারে ক্রমণ্ডন পুরুষ। অতএব প্রভাকরবর্দ্ধন, রাজ্যবর্দ্ধন ও হর্ষবর্দ্ধন তাহার ক্রমণ্ডন পুরুষ। অতএব প্রভাকরবর্দ্ধন, রাজ্যবর্দ্ধন ও হর্ষবর্দ্ধন টাহার

^{*} Journal Asiatique, Tome IV, August 1844, p. 130.

[†] Voyages des Pelerins Bouddhistes par Stanislas Julien, Vol. II., p. 247.

[্]ৰি প্ৰীহৰ্ষের নাম কোন ছলে কেবল হৰ্ষ, কুত্ৰাপি হৰ্ষদেব ও কোন কোন ছলে ফুপ্সষ্ট হৰ্ষক্ষন বলিয়া লিখিড হুইয়াছে।

ণিতা পুজের সংজ্ঞা বিষয়ে হর্ষচরিতের সহিত উলিথিত তীর্থধাত্রীর ভ্রমণ-বৃত্তাস্তের সম্পূর্ণ ঐক্য দেখা যাইতেছে। হিউএন্থ্সঙ্গ, ও বাণভট্টের প্রদর্শিত প্রমাণ পার্যাপার্মী করিয়া লিথিত হইতেছে, দেথিলেই স্ম্পষ্ট জানিতে পারা যাইবে।

> হর্ষচ্যিত। প্রতাপশীল প্রভাব র্দ্ধন

ধিউএন্ থ্সঙ্গের ভ্রমণ-রৃতাস্ত।

ভোপশীল প্ৰভা ব ৰ্ধন প্ৰভাকরবৰ্ধন

া রাজ্যবর্দ্ধন হর্ষ বা মহাদেখী রাজবর্দ্ধন এবং শিলাদিত্য হর্ষবর্দ্ধন বা রাজ্যশ্রী বা হর্ষবর্দ্ধন

উল্লিখিত তীর্থবাতীর ভ্রমণ-বৃত্তান্ত অমুসারে, হর্ষবর্জন খুষ্টাব্দের সপ্তম শতালার প্রথমবিদ্ধি বিদামান ছিলেন। দক্ষিণাপথের চালুক্য-বংশীর রাজা বিজয়াদিত্যের ভাত্রপত্রে থোদিত দান-পত্রে লিখিত আছে, ভদীর প্রাপিতামহ রাজা সত্যাশ্রর উত্তরদেশীর হর্ষবর্জনকে পরাভব করেন। বিজয়াদিত্য ৬২৭ শকাকে অর্থাৎ ৭০৫।৬ খ্রীটাকে জীবিত ছিলেন। এই প্রমাণ অমুসারেও খ্রীব্দের সপ্তম শতালীর প্রথমার্দ্ধের বিদামান থাকা সর্ব্ধতোভাবে সন্তব ও সঙ্গত হয় *। আর একটি প্রমাণে এ বিষয়টি একরপ নিঃসংশয় করিয়া তুলিতেছে। বাণ-রুত হর্ষচরিত্রতে লিখিত আছে, হর্ষবর্জন প্রাগ্রেডাতিষে অর্থাৎ কামরূপে উপস্থিত হইয়া অবশেষে ভদীর রাজা ভারর বর্দ্মার সহিত মিত্রতা করেন †। ওদিকে উল্লিখিত চীন-দেশীর তীর্থ-যাত্রীর ভ্রমণ-বৃত্তান্তে দেখিতে পাওয়া যায়, তিনিও কামরূপের অধীশ্বর ভায়র বর্দ্মার সহিত সাক্ষাৎ করেন ‡। প্রাগ্র্ড্যোতিষের অন্ত এক নাম কামরূপ।

राज्यवर्षन रात हर्षवर्षन दति सर्व्वसामिव पृथिव्यामाविभूतः श्रव्दप्रादुर्भावी स्तल्योय-सैव कालिन हीपान्तरेष्वाप प्रकाशकास्त्रसतुः।

হৰ্চরিত। চতুর্থ উচ্ছাস।

[•] The Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society 1851, pp. 203-210.

[†] হধ্চরিত। স্থ্রৈমেছে । সা

[†] Voyages des Pelerins Bouddhistes, Vol. 1., pp. 390-391; and Vol. III.; pp. 76-77.

পশ্চাৎ বাম ভাগে হর্ষচরিতের অন্তর্গত উক্ত বিষয়ের প্রমাণ ও দক্ষিণ ভাগে চীনদেশীয় ভীর্থযাত্রীর ভ্রমণ-বৃত্তান্তে লিখিত ঐ ভাস্কর বর্মা-সংক্রান্ত কথাগুলির ভাৎপর্য্যার্থের ইংরেজী অনুবাদ উদ্বৃত হইতেছে; দেখিলেই, বিশেষরূপ হৃদয়ঙ্গম হইবে, ভাহার সন্দেহ নাই।

হর্ষচরিত সপ্তমোচ্ছ্বাস।
প্রাগজ্যোতিষাধিপতি ভাস্কর বর্মার প্রেরিত হংসবেগ নামক দৃত কান্ত-কুজাধিপতি হর্ষবর্জনকে কহিলেন,

××× तस्य च सुग्रहीत-नाम्त्रो देवस्य महादेव्यां ग्यामा-देव्यां भास्करदुर्गतर्भास्करवर्मापर-नामा ग्रान्तनो स्तनयो भीष इव कुमार: समभवत्।

× × সেই (মৃগান্ধ নামক)
 হ্রবিখ্যাত রাজার ঔরসে মহাদেবী
 ত্রামাদেবীর গর্ভে শান্তমু-পুত্র ভীয়ের
 মত স্থ্য-সদৃশ তেজাোবশিষ্ট কুমার
 জনাগ্রহণ করিলেন, তাঁহার অন্ত এক
 নাম ভারর বর্মা।

× × प्राग्च्योतिषेखरोदेवेन सह × × अजय्यमित्रमिच्छति।

প্রাগ্জ্যোতিষের (অর্থাৎ কাম-রূপের) অধীশ্বর, মহারাজের সহিত × × × অজ্যামিত্রতা * করিতে অভিলাষ করেন।

হংসবেগ এই কথা বলিলে পর, হর্ষবর্জন কহিলেন,

इंसवेग! कथमिव तादृशि

উল্লিখিত চীনদেশীয় তীর্থযাত্রীর ভ্রমণ-ব্লভান্তের প্রমাণ।

Hiouen Thsang ×××× thence proceeds eastward to Kamarupa (Assam), ×××× Its king was a Brahman, named, Bhaskaravarma, and he bore the title of Kumara; although not a follower of Budcha, he received Hiouen Thsang with kindness and treated him with every mark of respect, Elphinstone's History of India, edited by E. B. Cowell, 1866, p 294.

হিউএন্ ধ্নস্ ××× তথা হুইতে পূর্বমুথে কামরূপ যাতা করেন। × × × ভাস্বর বর্মা নামে এক ব্রাহ্মণ তথাকার রাজা ছিলেন; তাঁহার উপাধি কুমার

তিনি বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ী ছিলেন না, তথাচ হিউএন্ থ্সঙ্গের প্রতি সদয়ভাব প্রকাশ ও সর্বতোভাবে সন্মান-চিহ্ন প্রদশন করেন।

হুর্জয় শক্রর সহিত মিক্রভাকে অলব্যমিক্রতা বলে।

र्श्वहित् मश्राम्बर्गम ।

सहात्मनि × × × परीचरु
हृदि सिह्यति सति महिधस्थान्यया स्वप्ने हिप वर्तते ।

হংসবেগ ! তাদৃশ মহাত্মা যথন
স্থল্পের অনাক্ষাৎকারে স্নেহ প্রকাশ
ক্রিভেছেন তথন মাদৃশ ব্যক্তির
স্থপ্রেও কিরূপে তাহার অন্তথ্যসংগ
করা যাইতে পারে !

হর্ষচরিতের সপ্তমোচ্ছ্বাদের নানা স্থানে ভান্ধর বর্মার নামান্তর বা উপাধি-বিশেষ কেবল কুমার বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছে।

नरेन्द्रस्तावदिति विस्ट्रेयानु-जीविनोच्चं सबे गमादिष्टवान् कथ्नं कुमारसन्देश इति ।

রাজা আশিত ব্যক্তিদিগকে পরি-ত্যাগ করিয়া হংসবেগকে কহিলেন, কুমারের কথা কি ?

এরপ অসম্বন, বিভিন্ন, দ্ব-দেশীর গ্রন্থ হইতে তিমিরাচ্চন্ন অবিদিত-পূর্ব্ব বিষয়ে স্বাংশে পরস্পর এমন নিতান্ত নির্বিশেষ প্রমাণান্ত্রসাত প্রপ্তের থমাণান্ত্রসারে, হিউ এন্ তত্ত্ব-জিজান্ত্রদের পক্ষে সৌভাগোর বিষয়। উক্ত প্রমাণান্ত্রসারে, হিউ এন্ থ্নাঙ্গ, ভারর বর্মা, হর্ষবর্জন ও তাঁহার সভাসদ বাণভট্ট এক সময়ে অর্থাৎ থ্টাব্দের সপ্তম শতান্দীর প্রথমার্জে * বিদ্যমান ছিলেন ইহা নিঃসংশরে নির্দ্ধারিত বলিতে পারা যায়। স্তরাং ঐ বাণ কর্তৃক উল্লিখিত বাসবদন্তা-প্রণেতা স্বন্ধ তাঁহার সমকালীন বা কিছু পূর্ককালীন লোক হইতে পারেন। যাহা হউক, উভরের রচনা এরণ স্কুসদৃশ যে, কোনমতেই অধিক পূর্কতন

হিউএন্ধ্নক্ ৬২৯ গ্রীষ্টাকে অদেশ হইতে বারো করিয়া ভারতবর্ব পরিভাষণ পূর্বক
 ৬৪৪ গ্রীষ্টাকেয় বসন্তকালে নিল গৃহে প্রত্যাপত হন।

বলিয়া মনে হয় না। বিশেষণ-ঘ্টা, উপমাচ্চটা, দ্রায়য়-দোষ, ক্রত্রিম ভাবের প্রাহর্জাব, সারল্য-ভাবের বৈলক্ষণ্য ইভাাদি অসরল ও অস্বাভাবিক রচনাচাতুর্য্য উভয়েরই গ্রন্থে জাজল্যমান রহিয়াছে। কালিদাসাদি * পূর্বতন কবির
রচনায় সেরূপ ক্রাপি দৃষ্ট হয় না। অভ এব বাণ ও স্থবন্ধু যদিও সমকালবর্ত্তী
না হন, তথাচ পরস্পর নিকট সময়ে প্রাহ্ছুত হন বলিতে হয়; অগ্রে স্থবন্ধু,
পরে বাণভট্ট। †

ঐ স্থবন্ধু এক স্থলে হরিবংশ ও তাহার অন্তর্গত পুরুরোপাধ্যানের বিষয় উল্লেখ করেন।

इरिवंशैरिव पुष्त्ररप्रादुर्भावरमणीयै:।

বাসবদতা। ফ,হল্ কর্তৃক মৃদ্রিত পুস্তকের ১০ ও ১৪ পৃষ্ঠা।

গ্রন্থ-ব্যাখ্যাতা ত্রিপাঠি শিবরাম এন্থলে পুরুর শব্দের অর্থ হরিবংশ পক্ষে প্রজ্বোপাথ্যান বলিরা ব্যাখ্যা করিয়াছেন। ‡ হরিবংশের ১৯৭ অধ্যার অবধি ৩১০ অধ্যার পর্যান্ত স্থবিস্থত পুন্ধরোপাখ্যান বিতি হইরাছে। অতএব খৃষ্টা-ব্যের ষষ্ঠ ও পঞ্চম শতাকীতে কোন রূপ "অবস্থাপর বর্ত্তমান হরিবংশই অথবা তাহার প্রচুর ভাগ প্রচলিত ছিল ইহাতে থার সন্দেহ রহিল না।

এথানি একথানি বিষ্ণু-প্রধান পুরাণ-বিশেষ এরপ কথা পূর্বেই একরপ স্টতি হইয়াছে। ইহার ভূরি ভাগ বিষ্ণুর বরাহ, বামন, নৃদিংহাদি অবভার,

^{*} কালিদাস বাণের ন্যার হ্বক্ষরও প্রকালীন কবি ছিলেন। ইহার প্রমাণ উভয়েরই
গ্রান্থে দেল্পামান রহিয়াছে। বাণ বেমন হয়্চরিতের প্রারত্তে কালিদাসের প্রসক্ষ করেন,
হ্বকু সেইরূপ বাসবদভার মধ্যকলে অভিজ্ঞান শকুতলের অন্তর্গত শকুত্তলার প্রতি ত্রকাসার
অভিশাপ-বৃত্তান্ত উল্লেখ করিয়া যান * 1 এ বিবয়টি ঐ কালিদাসের কৃত হ্পপ্রসিদ্ধ নাটকেরই
কথা: মহাভারতীর শকুত্তলোপাখ্যানের কথা নর।

⁺ Fitz Edward Hall's preface to Vásavadattá, 1859, pp. 11-17 and 51-52, and the first article of the Journal of the Asiatic Society of Bengal for 1862 715 411

[‡] इरिवंश रिव पुष्तरपादमीव पाख्यानविशेवस्तेन।
भूद्वाल गूजिल वागवन्छ।। ১০৩ ১৪ পৃঠা।

^{*} चफलमेव दुधन्तस्य कृते प्रकुन्तला दुर्वाससः शापमत्वभूव । वामवनका । क, हन् क प्रवक्तिल भूष्टरकत्र ১०० भृक्ष ।

নানা প্রকার দৈত্য দানবাদির সহিত বৃদ্ধ ও অন্ত অন্ত বিবিধ সংকীর্ত্তি বর্ণনে পরিপূর্ণ। বিশেষতঃ ৬০ বাট্ অধ্যায় অবধি ১২৬ অর্থাৎ শেষ অধ্যায় পর্যায় প্রায়ই ক্লফের জন্ম, বৃন্দাবন-লীলা, মাধুরলীলা, দারকা-কীর্ত্তি প্রভৃতি তদীর প্রাহান্ত্রিবরণ বই আর কিছুই নয়।

পুরাণ।

সমত্ত পুরাণ ও উপপুরাণ একত্র করিলে একটি স্তুপ হইরা উঠে। স্থবিধাত উইল্সন্ ও বিওম্ফ্ সে সমস্ত বিলোজন করিয়া তৎসংক্রান্ত বহুতর তত্ত্ব
উদ্ভাবন করিয়াছেন। পুরাণ শব্দের অর্থ পূর্বতন; তদমুসারে পূর্বতন ঘটনাদির বিবরণ করা পুরাণের উদ্দেশ্ত হইতে পারে। পশ্চাৎ দেখিতে পাওয়া
ঘাইবে, প্রচলিত পুরাণ সমৃদর কোনরূপেই অধিক প্রাচীন নয়, কিন্তু অন্ত প্রকার গ্রন্থ বা প্রবন্ধ-বিশেষ-বাচক পুরাণ শক্টি সমধিক প্রাচীন। আফাণ,
কল্পত্র ও প্রামাণিক উপনিষদ প্রভৃতি যে সমস্ত গ্রন্থ প্রচলিত পুরাণ ও উপপুরাণ অপেক্রায় প্রাচীনতর ধণিয়া প্রসিদ্ধ আছে, ভাহারও মধ্যে কোন কোন
প্রস্থে প্রস্থ বিশেষ বা প্রবন্ধ-বিশেষ পুরাণ বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছে।

শতপথ ও গোপথ-ত্রাহ্মণে এবং সাংখ্যায়ন ও আর্থনায়ন-স্ত্রে * পুরাণবেদ বলিয়া একরূপ শাস্ত্রের প্রাসদ আছে। অর্থনেধ যজ্জের নবম দিবসে অধ্বযু ভাহা আবৃত্তি করেন ।

द्यध्वयु स्ताचरीं वैपख्यतो राजित्याह * * * *
पुराणं वेद: सोऽयमिति किंचित् पुराणमाचचीत ।
भड़नथडाक्षन । २०। ৪। ७। २०।

ক্ষর্যু "তাক্ষ্যো বৈপশ্যতোরাজা" ইত্যাদি কথা বলিতে থাকেন।

• • • প্রাণ্বেদ; এই সেই বেদ; এই কথা বলিয়া প্রাণ-বিশেষ কীর্ত্তন
করিতে থাকেন।

এইরপ শতপথব্রাহ্মণের অন্তান্ত স্থানে ও অথর্কসংহিতাদি অপরাপর বৈদিক গ্রন্থের নানাবিদ শাস্ত্র-সংজ্ঞার মধ্যে পুরাণ ইতিহাসাদির উল্লেখ আছে।

⁽विश्वि-बाक्कवा २ । २०। मा(बा(बन-क्वा २०। १) काविनाइन क्वा २०। १ ।

"ऋग्वे दो यज्ञवेदः सामवेदोऽयर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः स्रोकाः स्त्राण्यनुत्र्याख्यानानि त्याख्यानानि।"

শতপথবাহ্মণ ৷ ১৪ | ৬ | ১০ | ৬ |

"इतिहासञ्च पुराण' च गायाश्च * नाराग्रंसीश्च।" अशर्त्त-मःहिला। ১৫। ७।

"ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्पान् गाथानाराशंसी:॥" टेल्डितीब चावगुरु । २ । »।

"इतिहास: पुराण' विद्या उपनिषद: श्लोका: स्त्राखनुव्याख्या-नानि व्याख्यानानि।"

त्रमंत्रगुक। २। ८। ১०।

* গাথা শক্টি অতীব প্রাচীন। হিন্দু ও পারসীরা একত্র সংস্ট থাকিতেই উহার উৎপত্তি হয় দেখা গিরাছে *। ধর্মনিষ্ঠ নৃপতিগণের প্রশংসা-স্চক সংগীত-বিশেষের নাম গাথা। ঋথেদসংহিতার তুর্থ মণ্ডলের ৪২ স্ত্তে ঐতরের ব্রাহ্মণের শেষ পরিছেদে, শতপথ ব্রাহ্মণের ত্রেরাদশ কাতে এবং মহাভারতের শান্তিপর্ব্বে ঐ সকল গাথা সন্ধিবিষ্ট আছে; তবে কোন কোন স্থলে কিছু কিছু প্রভেদ দেখিতে পাওরা যায় †। এই উপক্রমণিকায় যে সকল ধর্মণরায়ণ নৃপত্তির কথা লিখিত হইয়াছে, তাহার মধ্যে ভীমদেন, উগ্রসেন, শত-দেন, ত্রন্থ, ভরত, ধতরাষ্ট্র ও জনমেলয়ের প্রসঙ্গ গাথারই অন্তর্গত। রামায়ণোক্তে একটি গাথার প্রসঙ্গ কিছু প্র্বেই উপন্থিত করা হইয়াছে। ললিতবিন্তরাদি বৌদ্ধশান্ত্রেও গাথা নামে কতকগুলি বচন বিনিবেশিত আছে। শ্রীমান স্কুর্ বৈদিক ও সেই বৌদ্ধ গাথা এই প্রকার বিলয়া উল্লেখ করিয়াছেন ‡।

গাথা শব্দের একটি আভিধানিক অর্থ সঙ্গীত বা গেয়-শ্লোক। তদমুসারে পাথা সমুদর পূর্বে গীত হইত বোধ হয়।

^{*} প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৩৫ প্রচা ।

^{. +} Weber's History of Indian Literature, 1878 p. 124 (741

[‡] Indian Antiquary, November 1880, p. 289,

যদিও বেদের উপনিষদ্ ভাগ অভান্ত ভাগের অপেকান বা, কিন্তু ভারত-ব্যার পণ্ডিতদিগের মতে তৎসম্দারও প্রাণের অপেকার প্রাচীন। বাস্তবিকও এক্ষণে যে সকল প্রাণ ও উপপ্রাণ প্রচলিত আছে, ভারা প্রামাণিক উপ-নিষদ্ সম্দায়ের পরে সফলিত চইরাছে। উল্লিখিতরূপ কোন কোন উপনি-ষদের মধ্যেও প্রাণ শান্তের স্বন্ধ উল্লেখ আছে।

सहोवाच ऋग्वेदं भगवोऽधेरमि यजुर्वेदं सामवेदमायर्वणं चतुर्यमितिहासपुराणं पञ्चमं।

ছान्नारगार्थनियत्। मध्य अशार्धकः।

তিনি কহিলেন, ভগবন্! আমি ঋথেদ, যজুর্বেদ, সামবেদ, আথবনি নামক চতুর্থ বেদ এবং পঞ্চম বেদ-স্বরূপ ইতিহাস-পুরাণ জ্ঞাত আছি।

श्रस्य महतोभूतसा 'निष्वसितमितयदृग्वे दोयजुर्वेद: सामवेदोऽ-यर्व्वोङ्गिरस इतिहास: पुराण'।

वृश्मात्रगारकाशनियम्।

এই পরমাত্মা হইতে ঋথেদ, যজুর্বেদ, সামবেদ, অথব্ববেদ, ইতিহাস ও পুরাণ উৎপন্ন হইয়াছে। •

হিন্দু সমাজে রামায়ণ ও মন্ত্রসংহিতা পুরাণ অপেক্ষার পুরাতন গ্রন্থ বলিয়া প্রাদ আছে। বাহুবিকও, ভাহাই বটে। রামায়ণের স্থানে স্থানে অযোধ্যাধিপতি রাজা দশরথের সার্থি স্মন্ত্র পুরাণবিৎ বলিয়া বারংবার পরিকীর্ত্তিভ হইয়াছে।

दतुरक्कान्तः पुरद्वारमाजगाम पुराणवित्। सदासक्रञ्च तद्वेश्म सुमन्त्रः प्रविवेश ह

व्यरगंधाकाख । ১৫ नर्ग । ১৯ श्लोक ।

এই কথা বলিয়া, পুরাণজ্ঞ হৃমন্ত্র অন্ত:পুরের বারদেশে উপস্থিত হইলেন এবং দেই সতত-অবারিত-হার গৃহ মধ্যে প্রবেশ করিলেন।

এইরপ, উক্ত কাণ্ডের বোড়শ সর্গের প্রথম শ্লোকে স্থমন্তের পুরাণা-ভিজ্ঞতা, বালকাণ্ডের নবম সর্গের প্রথম শ্লোকে স্থমন্ত কর্তৃক পুরাণকথন এবং ঐ কাণ্ডের অষ্টাদশ সর্গের বিংশ শ্লোকের ও অবোধ্যাকাণ্ডের ষষ্ঠ সর্গের ষষ্ঠ লোকের টীকার "স্তা: পোরাণিকা:" বলিরা স্তগণের পুরাণ-ব্যবসার উল্লিখিত হইরাছে। এই সকল স্থানের পুরাণ শব্দ কলাচ বর্ত্তমান পুরাণ-বাচক হওয়া সম্ভব নর। এইরূপ, মনুসংহিতার মধ্যেও পুরাণ ও ইতিহাস অধ্যয়নের ব্যবস্থা আছে।

खाध्यायं त्रावयेत् पित्रे धर्मश्रास्त्राणि चैव हि । श्राख्यानानीतिष्टासांस पुराणानि खिलानि च ॥

মহু। ৩ আ । ২৩২ শ্লোক।

শ্রাদ্ধ-ক্রিরাতে ত্রাহ্মণদিগকে বেদ, ধর্মশাস্ত্র, আধ্যান, ইভিহাস, পুরাণ ও থিল * নামক শাস্ত্র শ্রবণ করাইবেন।

অতএব প্রচলিত প্রাণ সম্দার অপেকার প্রাচীনতর বলিয়া স্থানিদ্ধ সংহিতা, ব্রাহ্মণ, আরণাক, কল্পত্র, উপনিষদ, রামায়ণ ও মহুসংহিতার যখন প্রাণের প্রসক্ত আছে, তখন সেই পুরাণ কদাচ প্রচলিত পুরাণ হইতে পারে না। অধুনাতন অস্তাদশ মহাপুরাণ ও অস্তাদশ উপপুরাণ রচিত বা সঙ্কলিত হইবার পুর্বে অস্তর্মণ গ্রন্থবিশেষ পুরাণ বলিয়া প্রচলিত ছিল বলিতে হইবে।

মহাভারতেরও মধ্যে লিখিত আছে, ইহাতে ইতিহাস ও পুরাণের অর্থ সমর্থন করা গিয়াছে † এবং মহাভারতে বর্ণিত অনেকানেক নির্দিষ্ট উপাধ্যান পৌরাণিক কথা বলিয়া লিখিত হইয়াছে।

এই সমন্ত পর্যালোচনা করিয়। দেখিলে স্পষ্ট প্রতীতি হয়, এক্ষণকার প্রচলিত পুরাণ ও মহাভারত রচিত বা সঙ্গলিত হইবার পূর্ব্বে পুরাতন কথা বিষয়ক গ্রন্থ-বিশেষ পুরাণ ও ইতিহাস নামে প্রাসিদ্ধ ছিল। ফলতঃ পূর্ব্বে ষে অন্ত পুরাণ ছিল, এক্ষণকার প্রচলিত পুরাণের মধ্যেও ভাহা স্পষ্টরূপে লিখিত আছে। কিছু পরেই দৃষ্ট হইবে, পুরাণের মধ্যেই এরূপ একটি উপাধ্যান সামিবেশিত আছে বে, প্রথমে বেদব্যাস একধানি পুরাণ-সংহিতা প্রস্তুত করিয়া স্ত-কুলোডব লোমহর্ষণকে প্রদান করেন; লোমহর্ষণ তদমুসারে এক সংহিতা

[🔹] কুল্কভট লিখিরাছেন, শীস্তা, শিবসকল প্রভৃতি শাল্তের নাম খিল।

[†] साङ्गोपनिषदाश्चैव वेदानां विस्तरित्रयाः । इतिहासपुराणानामुन्त्रोषं निर्मितश्च यत् । श्वाणात्रज्ञ । व्यानिनर्स्त । ०२ ७ ०७ (द्वाक ।

এবং তাঁহার তিন শিষ্য তিন সংহিতা প্রস্তুত করেন; এই চারি সংহিতার সার সঙ্গলন পূর্বক বিষ্ণুপুরাণ রচিত হয়।

পুরাণ ও ইতিহাস বিষয়ক যে সকল শ্লোক উদ্ভ হইল, ভাহার কোন বচনে পুরাণ ও ইভিহাসের সংখ্যা নির্মণিত নাই। ইহাতে বোধ হইতে পারে, পূর্বে এই উভরেরই সংখ্যা নির্দ্ধিই ছিল না; নানা প্রকার পুরাহন কথা ঐ ঐ নামে প্রচলিত ছিল। ভারতবর্ষীয় বিচক্ষণ পণ্ডিভেরাও কেহ কেহ ঐরপ আদি পুরাণের অভিত্ব অঙ্গীকার করিয়া গিয়াছেন। উপনিষ্দের মধ্যে যে পুরাণ ইভিহাসের প্রসঙ্গ আছে, ভ্রিষ্বের সায়নাচার্য্য লিখিয়াছেন, বেদের অন্তর্গত দেবাস্থরের বৃদ্ধ বর্ণনা প্রভৃতির নাম ইভিহাস, আর সৃষ্টিপ্রক্রিয়া-বিবরণের নাম পুরাণ।

देवासुरा: संयत्ता भासित्वत्यादय इतिहासा: । इदं वाभग्रे नैव किञ्चिदासीदित्यादिकं जगत: प्रागवस्थासुपक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणं।

श्रद्धारमारमाम्बाज ।

শক্ষরাচার্য্য ও প্রাণের বিষয় এইরপ নিধিয়াছেন। তিনি বলেন, উর্কানী পুরুরবার কথোপ্কথনাদিক্ষরপ ব্রাহ্মণ-ভাগের নাম ইতিহাস আর স্ষষ্টিপ্রক্রিয়া-ঘটিত বৃত্তান্তের নাম পুরাণ।

इतिहास इतुर्ग्वशीपुरुवसीः संवादादिरुर्व्वशीहापरा इत्यरादि ब्राह्मणमेव पुराणमसद्दा इदमय श्रासीदित्यादि।

व्श्मात्रगांदकाशनियामत ठजूर्य बान्नात्व खादा ।

অতএব, শহরার্য ও সারনাচার্য্যের অভিপ্রারান্নারে, বেদের অন্তর্গত স্প্তিপ্রক্রিরা-ঘটিত কথা সম্লারের নাম প্রাণ এবং দেব, অপ্সর, গহুর্ব্ব, মস্বাাদির কার্য্যসম্বানীর পরস্পরাগত পুরাবৃত্তের নাম ইতিহাস ছিল। রামারণের বালকাণ্ডের নবম সর্গ অবধি একাদশ সর্গের একাদশ প্রোক পর্যান্ত ধ্বাশ্লের চরিত্র, লোমপাদ রাজার রাজ্যে অনাবৃত্তি, তাঁহার ক্ত্রা শাস্তার সহিত ধ্বাশ্ল ধ্বির বিবাহ ইত্যাদি পুরাতন ব্যাপার সকল প্রাণ বলিরা বর্ণিত আছে। যেরূপ স্থলে বে প্রকারে সেই সমন্ত বিবর পুরাণোক্ত ব্লিরা

লিখিত হইরাছে, তাহাতে রামায়ণ-রচনার সময়ে প্রাবৃত্ত-বিষয়ক গ্রন্থ ও উপা-খ্যান- বিশেষের নাম যে প্রাণ ছিল, ইহা একরূপ অবধারিত বলিতে হয়।

রামারণে হত সুমন্ত্র পুনঃ পুনঃ পুরাণবিং বলিয়া বর্ণিত আছেন, টীকা-কারেরাও স্তাদিগকে পৌরাণিক বলিয়া নির্দারণ করিয়াছেন, ইহা ইভিপুর্বেই উল্লিখিত इहेब्राटि *। अधुनांजन পুরাণ সমুদায়ে এই প্রকার বর্ণনা আছে যে, বেদবাাদ পুরাণ প্রস্তুত করিয়া স্তুত লোমহর্ষণকে সমর্পণ করেন, এই হেতৃ তিনি পুরাণ-বক্তা হন। তদমুদারে অনেকের এরপ সংস্কার আছে যে, কেবল বাাস-শিষ্য লোমহর্ষণই পুরাণ-বক্তা; তাঁহার অন্ত একটি নাম স্ত ; তদীয় পুर्वा भूक विश्व ता वारमात्र हिल ना; उत्य उाँ हात्र भूख छ श्रञ्जा दि भूतान বক্তা হন, তাহার কারণ এই যে, বলদেব ঋষিদিগের অমুরোধে তাঁহাকে তদ্ব-ষয়ে অধিকারী করেন। কিন্তু এ সমুদায় অভিপার যুক্তিসিদ্ধ বোধ হয় না। এই সকল কথা কত দুর প্রামাণিক তাহা নিশ্চর করা হুমর, কিন্তু স্ত-কুলোদ্ভব লোমহর্ষণ ও উগ্রশ্রবার পুরাণ-ব্যবসায়-বিষয়ক বুতান্তের সহিত হত श्रमाखाक भूतान-विषयक উপाधानित धेका क्रांत्रता निधित প্রতীতি হয়, পুরাণ-কথন স্ত জাতির একটি ব্যবসায় ছিল। আরু যদি ব্যাসদেব যথার্থ ই পুরাণ সঙ্কলন পূর্ব্বক ভাহা ত্রাহ্মণ ক্ষত্রিয়কে শিক্ষা না দিয়া লোমহর্ষণকে সমর্পণ করিয়া থাকেন, ভাহারও কারণ এই বে, লোমহর্ষণ পুরাণব্যবসায়ী সূতের সম্ভান। সত যে আতি-বিশেষের নাম স্মৃতি ও পুরাণে তাহার ষথেষ্ট প্রমাণ আছে। তাহা যে লোমহর্ষণের কৌলিক নাম, প্রকৃত নাম নয় তাহারও বিস্তর উদাহরণ প্রাপ্ত হওয়া যায়।

तया चेत्रे स्तपुत्रो निइतो लोमहर्षण:। वलरामास्त्रयुक्ताला नैमिषेऽभूत् स्रवाच्छ्या॥

ক্দ্বিপুরাণ। ২৭ অধ্যায়।

সেইরপ, হত-পুত্র লোমহর্যণ স্বেছাফ্সারে নৈমিষ ক্ষেত্রে বলরামের অস্ত্র ছারা হত হইয়াছিলেন।

३৮१ पृष्ठी (१४।

श्राजगाम महातेजाः स्तप्रवी महामतिः। व्यासिश्यः पुराणज्ञी रोमहर्षणसंज्ञकः॥

নারসিংছ পুরাণ। প্রথম অধ্যায়।

হত পুত্র, ব্যাস-শিষ্য, মহামতি, মহাতেজগী, পৌরাণিক লোমহর্ষণ *
আগমন করিলেন।

व्यासिष्यं सुखासीनं स्तं व रोमचर्षणम्। तं पप्रच्छ भरदाजो सुनीनामग्रतस्तदा॥ नृतिः ह शूद्रान । প्रथम वशाव

ব্যাস-শিষ্য স্থত লোমহর্ষণ স্চ্ছন্দে উপ্রিষ্ট হইলে, স্ক্রাগ্রে ভর্মাজ মুনি উাহাকে জিজ্ঞাসা করিলেন।

এই ছই বচন প্রমাণে লোমহর্ষণ স্তের পুত্র। তাঁহার নিজ নামও যে স্ত ইহা এক প্রকার প্রসিদ্ধ আছে এবং তাহার যথেও প্রমাণও প্রাপ্ত হওয়। যায়।

सवाको स्तमनधं नैमिषीया महर्षयः ।

पुराणसंहितां पुणर्गं पप्रच्छ लोमहर्षणम् ॥

त्वया स्त महाबुद्धे भगवान् ब्रह्मवित्तमः ।

' इतिहासपुराणार्षे व्यासः सम्यगुपासितः ॥

কৃর্মপুরাণ। প্রথম অধ্যায়। ২ ও ৩ শ্লোক।

যজ্ঞ সাক্ষ হইলে পর, নৈমিষারণ্যবাসী মহর্ষিগণ নিম্পাপ শরীর হত লোমহর্ষণকে পৰিত্র পুরাণসংহিতা জিজ্ঞাসা করিলেন। মহামতি হত ! তুমি ইতিহাস পুরাণ শিক্ষার্থে পরম ব্রহ্মজ্ঞ ভগবান্ ব্যাস দেবের উপাসনা করিয়াছিলে।
লোমহর্ষণের ভায় ভাঁহার পুত্র উত্যশ্রবারও হত সংজ্ঞা প্রাপ্ত হওয়া যায় + 1

^{*} ইহাঁর নাম কোন কোন ছানে লোমহর্বণ এবং কোন কোন ছানে রোমহর্বণ বলিয়া লিখিত আছে।

[†] মহাতারতের আদিপর্ক ১ অধারে ১০ লোক, ৫ অধার ৪ লোক, ৮ অধার ১, ১৭ অধার ১, ১৮ অধার ৬, ৪২ অধার ২০, ৪৪ অধার ১, ১৮ অধার ৬, ৪২ অধার ২০, ৪৪ অধার ১, ৪৫ অধার ১৯, ৫০ অধার ৪১, ৫৮ অধার ২৭, আর ভাগবভের ১ জন্ধ ২০ অধার ৫ লোক, ১ জন্ধ ২ অধার ৮ লোক ইতাদি ।

शीनक उवाच।

स्त स्त महाभाग वद नो वदतां वर। कथां भागवतीं पुखां यदाइ भगवान् शुकः॥

ভাগবত। ১ হয়। ৪ অধ্যায়। ২ শ্লোক।

শোনক উগ্রশ্রবাকে কহিলেন স্ত! তুমি অতি ভাগাবান্ এবং সম্বস্তা-দিগের মধ্যে অগ্রগণ্য। ভগবান্ ওকদেব যে প্রিত্র ভাগবত-কথা কীর্ত্তন করিয়াছিলেন, তুমি আমাদিগের সমীপে ভাহা বর্ণন কর।

शीनक उवाच।

उक्तं नाम यथा पूर्वं सर्वं तच्छ तवानहम्।
यथा तु जातो ह्यास्तीक एतदिच्छामि वेदितुम्।
तच्छ ता वचनं तस्र स्तः प्रोवाच श्रास्ततः॥
यश्चात्रजः जानिश्वं। ४० वशात्रः। ४ दशकः।

শৌনক কৰিলেন, তুমি বাহা বাহা কহিলে, সমুদায় প্রবণ করিলাম।
এক্ষণে আন্তীকের জন্ম-বৃত্তান্ত জানিতে অভিগাঁব হইয়াছে। স্ত উগ্রপ্রবা এই
বাক্য প্রবণ করিয়া শাস্তান্ত্রসারে কহিতে লাগিলেন।

कूर्य श्वार निविज जाहि, शु वश्याद्धव लामहर्वन कहिरहाइन,

मदन्वये च ये स्ताः सम्भूता वेदवर्ज्जिताः । तेषां पुराणवक्तृत्वं द्वत्तिरासीदजान्नया॥ कृष्वश्रुवान । ১२ वशाव । ७५ ७ ७० क्षाकः।

আমার বংশে যে সকল হতের উৎপত্তি হইরাছিল, তাঁহাদের বেদে অধিকার ছিল না; তাঁহারা ভগবানের আক্ষান্ত্রসারে পুরাণ বাবসায় করিতেন।
অত এব,কেবল হত নামক ব্যক্তি-বিশেষ পুরাণ-বক্তা ছিলেন এ কথা কোন
ক্রমেই প্রামাণিক নর। প্রত্যুত, পুরাণ-কথন হত নামক জাতি-বিশেষের
ব্যবসায় ছিল, ইহাই সর্বতোভাবে যুক্তি সিদ্ধ। স্থমন্ত্র, লোমহর্ষণ, উগ্রপ্রবা
ইহারা হত-কুলোত্তব, অত এব পৌরাণিক ছিলেন। ইহারা কি প্রকার প্রাণ
বাবসায় ক্রিতেন, তাহা অহুসন্ধান করা কর্ত্ব্যা পুরাণে হত জাতির বেরুপ

ষ্ঠি নিরূপিত আছে, তাহা বিবেচনা করিয়াদেখিলেই প্রথম প্রকার প্রাণের অরপ ও তাৎপর্যার্থ অবশ্রই কিছু না কিছু জ্ঞাত হওয়া যাইতে পারে।

तस्य वे जातमावस्य यज्ञे पैतामहे ग्रुभे । स्तः स्त्यां समुत्पनः सौत्येऽहिन महामितः ॥ तस्मिने व महायज्ञे जज्ञे प्राज्ञोऽय मागघः । प्रोत्तौ तदा सुनिवरस्तावुभी स्तमागधौ ॥ स्तूयतामेष रूपतिः पृथर्वेखः प्रतापवान् । कर्मोतदनुरूपं वां पावं स्तोवस्य चाप्ययम् ॥

विकुश्वान। > जःम। > अधाव। १ • --- ६० (मांक।

দভোজাত পৃথু রাজার শুভ ষজ্ঞে দোমাভিষ্ব-ভূমিতে ভূপতির জন্মদিবদেই
ক্তের উৎপত্তি হইল এবং জ্ঞানবান্ মাগধও দেই মহাযজ্ঞে উৎপত্ন হইলেন।
পিতামহ ব্রহ্মা এই যজ্ঞের কেবজা। তথন মুনি সকলে তাঁহাদের উভয়কে
কহিলেন, তোমরা এই বেণ-ড-শ্ব পৃথু রাজার স্কৃতি কর, ইহাই জোমাদের
ব্যার্থ কার্য এবং ইনি তোমাদের স্কৃতির উপযুক্ত পাত্ত।

ते जचुन्हे षय: सर्वे स्तूयतामेष पार्थिव: ।
तैनि युत्ती सुकर्माणि प्रयोगिन महात्मन: ।
तुष्टु बुस्तानि सर्व्वानि सासीर्व्वादांस्तत: परान् ॥
विश्व पृथा वृथ्य উপाधान नामक स्वधान ।

সেই ঋষিগণ শ্বত ও মগধকে কহিলেন, তোমরা এই ভূপতির শুব কর।
প্তত ও মাগধ তাঁহাদের কর্তৃক নিযুক্ত হইয়া মহাস্থা পৃথুর সংকীর্তি সমুদার
কীর্তিন করিয়া তদীয় কল্যাণ কামনা করিলেন।

বায় ও পদ্মপুরাণেও স্তের এই প্রকার বৃত্তান্ত আছে। এই ছই পুরাণে নিধিত আছে, স্তের ছই প্রকার বৃত্তি নিরূপিত ছিল; পুরাণ-কীর্ত্তন ও ক্ষত্রির-কর্ম । রামারণ ও মহাভারতেও তাহাদের সারণ্য ক্ষ্ম ও রাজবংশের

^{*} यत चतात् समभवत् त्राश्च त्यां स च शीनितः। पूर्विषेत तुसाधकार्यादिक्षिकार्ता प्रकीर्तिताः॥

বশোবর্ণন এই উভর বৃত্তি থাকিবার প্রচুর প্রমাণ প্রাপ্ত হওরা যার +।
এইরূপে তাহাদেরই কর্তৃক রাজ-বংশাবলি-বিবরণ ও তৎসংক্রান্ত কিছু কিছু
পুরাবৃত্ত রক্ষিত হইয়া পুরাণ নামে প্রসিদ্ধ হয়। রামায়ণের অন্তর্গত স্বমন্ত্রোক্ত
পৌরাণিক কথা তাহার দৃষ্টান্ত-স্থল। আর মহাভারতের অনেক স্থানে বংশবিশেষের কীর্ত্তনই যে পুরাণ বলিয়া লিখিত আছে তাহারও এই কারণ।

महर्षि भोनक कहिलान,

पुराणे हि कथा दिव्या भादिवंशास धोमताम् । कथ्यन्ते ये पुरास्माभिः श्रुतपूर्व्वाः पितुस्तवः॥ महाडात्रछ। भानि १९६०। १९११मात्रः। २ ८क्षांकः।

পুরাণে সমুদার মনোহর কথা ও বৃদ্ধিমান ব্যক্তিদিগের আদি-বংশের বৃদ্ধান্ত আছে। পূর্ব্বে আমরা ভোমার পিতার স্থিধানে সে সমস্ত কথা শ্রবণ করিয়াছি।

मध्यमीच्ची व स्तस्य धर्मः चन्नीपजीविनः।
पुरागेष्यधिकारी मे इंडितो ब्राह्मणैरिङ्॥
स्टिष्णः व्यवसाधाः॥

* पठिना पाणिखनिकामागधामधुपिकेका:। वैताखिकाय स्ताय तुष्टुबु: पुरुषर्घभम्॥ वहाखावछ। জোণপর্ব। ৮২ অধ্যার।২ শ্লেফ

तं शब्दं तुमुक्तं युत्वा द्रोणी यन्तारमद्रवीत्। एव सूत रणे कृदः धास्त्रतानां महारयः॥ दारयम् वहुधा धैन्यं रणे चरति कास्त्रत्। यचेष शब्दसुसुस्त्रत्व सूत रथं नय॥

त्वाननर्स । ३२३ चनांत्र । ८१—८» त्वांक

चपस्थितेकांगवस्तवन्दिभिसायैव वैतासिकसीखशायिकै:। कभिष्ट वित्रर्गुवती न्द्रपात्मकं समावतं दारपयं ददम[ः] सः॥ (त्रादिभिष्ठ थात्राहिक) नानावत् २ । ३२ ०० ভারত বক্তা উগ্রশ্রবা কহিলেন,

इसं वंशमद्दं पूर्वं भागवन्ते महासुने। निगदामि यथायुक्तं पुराणाश्रयसंयुतम्॥

श्वामि शर्व। शक्ष्माशाता । ७ ७ १ (क्षांक।

মহামূনি! পুরাণে এই পুরাতন ভৃগু-বংশের বেরূপ বৃত্তান্ত আছে, আমি তাহা ধণোপযুক্ত বর্ণন করি।

মহাভারতের আদি পর্কের প্রথমাধ্যারে স্পষ্ট লিখিত আছে, পুরু, কুরু, বহু, শ্র, বিশ্ব, অণ্হ, ব্বনাশ, কক্ৎস্থ, রখু, বিজয়, বীতিহোত্র, অঙ্গ, ভব, খেত, বৃহদ্পান, উনীনর, শতর্থ, করু, দলিছহ, জ্ম, দভোত্তব, বেণ, সগর, সঙ্কৃতি, নিমি, অজের, পরশু, পঞু, শস্তু, দেবার্থ, দেবাহ্বর, স্প্রতিম, স্প্রতীক, বৃহদ্রথ, স্থাকুত্র, নিষ্ধাধিপতি নল, সতাব্রহ, শাস্তভয়, স্থাত্তম, স্থাত্তম, কর্ত্বল, বলবন্ধু, নিরামর্জ, কেতৃগৃঙ্গ, বৃহহ্বল, ধৃষ্টকেতৃ, বৃহহ্বল, ধৃষ্টকেতৃ, বৃহহ্বল, ধৃষ্টকেতৃ, বৃহহ্বল, ধৃষ্টকেতৃ, বাহার্ক, পরহা, ক্রতি ইড্রাদি সক্ষ্ম সহস্ম নরগতির কর্ম, বিক্রম, দান, মাহাম্মা, আফিকা, সতা, শৌচ, দয়া ও আর্জব বিভাবান্ সংক্রিণণ কর্ত্তক প্রাণে বর্ণিত হুইয়াছে । অত এব পূর্বেলক প্রমাণামুসারে স্থভ জাতির বেরূপ বৃজ্জি নির্মণিত ছিল এবং রামারণে ও মহাভারতের স্থানে স্থানে যে প্রকার উপাধ্যান প্রোনিক কলা বলিয়া লিখিত আছে, তাহা স্বিশেষ পর্য্যালোচনা করিয়া প্রতীতি হুইতেছে, প্রথমে বংশ-বিশেষের যশোবর্ণনা এবং তাহার আনুষ্কিক কোন কোন প্রাতন কলা কীর্তন করা স্ত জাতির এক প্রকার ব্যবসায় ছিল।

এক্ষণে বেদ-শাস্ত্রের যেকপ বিভাগ ও শৃন্ধালা প্রচলিত আছে, তাহা কৃষ্ণ-বৈপায়ন বাাসের কৃত বলিয়া প্রাণিদ্ধ। সমুদায় অষ্টাদশ প্রাণ ও সমগ্র মহাভারত তাঁহারই প্রণীত বলিয়া বিখ্যাত আছে। কিন্তু রচনা ও ধর্ম সম্বনীয় মতামত প্রভৃতি বছবিধ বিষয়ে ভিন্ন ভিন্ন প্রাণের এত বিভিন্নতা দেখিতে পাওয়া যায় যে, সমস্ত প্রাণ এক কনের রচিত বলিয়া কোন ক্রমেই স্মীকার করা যায় না। ফলতঃ এক্ষণকার অষ্টাদশ প্রাণের এক প্রাণও বে বেদবাসের রচিত নয়, তাহা পশ্চাৎ নিঃসংশবে প্রতিপর হইবে। মহাভারত বে এক জনের বিরুচিত নয় ইহা ইতি পূর্ব্বে প্রদর্শিত হইয়াছে। বেদব্যাস অষ্টাদশ প্রাণের রচনাকর্ত্তা এ প্রবাদও বে অপেক্ষাকৃত আধুনিক, প্রাণের মধ্যেই তাহার নিদর্শন লক্ষিত হইয়া থাকে। তাহাতে এইরূপ লিখিত আছে বে, বেদব্যাস একথানি প্রাণ-সংহিতা প্রস্তুত করিয়া স্ত-কুলোম্ভব লোম-হর্ষণকে প্রদান করেন, এবং লোমহর্ষণ তাহা খীয় শিষাদিগকে শিক্ষা দেন। বিষ্ণু, ভাগবত ও আগ্রেয় প্রাণে এই কথাটি স্থাপাইরূপে লিখিত আছে। এছলে বিষ্ণুপ্রাণ হইতে উদ্ধৃত হইতেছে।

श्राखरानेशापुरपाखरानेर्गाथाभिः कल्पश्रिष्ठिभिः।
पुराणसंहितां चक्रे पुराणार्थं विश्वारदः॥
प्रखरातो व्यासिश्रव्योऽभूत् स्तो व लोमहर्षंणः।
पुराणसंहितां तस्र ददी व्यासो महामुनिः॥
सुमितश्वाग्निवर्श्वाश्व मित्राशुः शांश्रपायनः।
श्रक्ततव्रणोऽय सावणिः षट् शिष्यास्त्रं सर चामवन्॥
काश्यपः संहिताकर्त्तां सावणिः शांश्रपायनः।
लीमहर्षंणिका चान्या तिमृणां मूलसंहिता॥

বিফুপুরাণ। ৩ অংশ। ৬ অধাায়। ১৬---১৯ শ্লোক।

পুরাণার্থবিং বেদব্যাস আখ্যান, উপাথ্যান, গাথা ও কয়শুদ্ধি লইয়া
একথানি পুরাণ-সংহিতা রচনা পূর্বাক স্থপ্রসিদ্ধ শিষা স্থতকুলোত্তব
লোমহর্ষণকে প্রদান করিলেন। স্থমতি, অগ্নিবর্চাঃ মিত্রায়ু, শাংশপারন,
অক্তত্ত্বণ ও সাবর্ণি নামে তাঁহার ছয় শিষা ছিল। তল্মধ্যে কাশ্রপ,
লাবর্ণি, শাংশপারন ইইারা এক একথানি পুরাণসংহিতা করেন।
লোমহর্ষণ লৌমহর্ষণিকা নামে যে সংহিতা প্রস্তুত করিয়াছিলেন, তাহাই এ
তিনের স্ল্।

ভাগবভোক্ত প্রাণ-সঙ্কলন-বিষয়ক উপাধ্যানও প্রান্ন এইরূপ। শ্রীধর স্থামী তাহার টাকায় এই প্রকার লিথিয়াছেন বে, বেদব্যাস ছয়ধানি পুরাণসংহিতা প্রস্তুত করিয়া লোমহর্ষণকে প্রাণান করেন, লোমহর্ষণ ভাহা অধ্যাক্ষণি প্রাভৃতি ছয় শিধ্যকে অধ্যয়ন করান এবং উগ্রশ্রবা তাঁহাদের নিক্ট ঐ ছয়থানি সংহিতাই শিক্ষা করেন *। বেদব্যাস এক, কি চারি, কি ছয়থানি সংহিতা সঙ্কলন করিয়াছিলেন, পশ্চাৎ ভাহা বিবেচিত হইবে।

উল্লিখিত পুরাণ-সঙ্কলন বিষয়ক উপাধ্যানের সমুদায় কথা যথার্থ কি না, তাহা নি:সংশয়ে নিরূপণ করা স্থকঠিন বটে, কিন্তু কোন সময়ের পণ্ডিতেরা যে বেদব্যাসকে কেবল একথানি পুরাণসংহিতার কর্ত্তা বলিয়া বিশ্বাস করিতেন এবং তাঁহার অষ্টাদশ পুরাণ রচনা বিষয়ক উপাধ্যান যে তাহার বছকাল পরে কল্লিত হয়, ইহা পুর্বোক্ত বচন-দর্শনে স্পষ্ট প্রতীত হইতেছে। তিনি যে ছয়থানি সংহিতা করিয়াছিলেন, ইহা কোন পুরাণে লিখিত নাই †। বরং বিষ্ণু-পুরাণের অন্তর্গত পুরোক্ত বচনে স্পষ্ট লিখিত আছে, বেদব্যাস একথানি পুরাণসংহিতা করিয়া লোমহর্ষণকে প্রদান করেন। লোমহর্ষণ তদমুবারী একথানি

† বিষ্পুরাণের বচন পূর্বে উদ্ধৃত ইইরাছে, এবং ভাগবত ও অগ্নিপুরাণের তদ্বির্ক বচন পশ্চাৎ লিখিত ইইতেছে, তাহা পাঠ করিয়া দেখিলে জানিতে পারা বাইবে।

वयार्गणः सम्यपय सावर्णिरक्षतवणः।
शिश्रपायनहारीतौ वड्वै पौराणिका इमे॥
सधीयन व्यासिश्चात् शंहितां मित्तुर्भृखात्।
एकैकामहमेतेवां शिष्यः सर्व्वाः समध्यगाम्॥
काम्यपीऽहच सावर्णौरामशिष्योऽक्षतवणः।
सधीमहि व्यासशिष्याचवारी मूलसंहिताः॥

ভাগবত। ১২ কর। ৭ অধ্যার। ৪-- ৬ প্লোক।

प्राप्य व्यासात् पुराषादि स्ती वै लीमहर्षणः । सुनतिशाणिवर्जाय निवायुः शांशपायनः ॥ क्रतवतीऽय सावर्षिः शिष्यासस्य चाभवन् । शांशपायनादयस्कृः पुराषानाम् संहिताः॥

[•] प्रथमं व्यासः षट् संहिताः क्रता मित्रवे रीमहत्र पाय प्रादात् तस्य च सुखादिने वय्याक्ष्यादयः एकैकां रिहतामधीयम्त एतेषां वचां प्रिचीऽइं ताः सर्व्याः समधीतवान्।

> श्वरकात १ काशास्त्रत्र e स्नाटकत्र हीका।

সংহিতা রচনা করেম এবং তদীয় শিষ্য কাশ্যপ, সাবর্ণি ও শাংশপায়ন ভদ্টে এক একথানি সংহিতা প্রস্তুত করিয়া যান,।

অধুনাতন পণ্ডিতের। সকলেই সমুলায় অষ্টাদশ পুরাণ বেদবাাস-প্রণীত বিলিয়া বিশাস করেন, অতএব বাাস-কর্তৃক একমাত্র পুরাণ-সঙ্কলন বিষয়ক পুর্বোক্ত বচন তাঁহাদের মতের বিরোধী বিনা কথনও পোষক ছইতে পারে না; স্বতরাং ঐ বচন তাঁহাদের কর্তৃক কল্লিত হওয়া কোনক্রমেই সম্ভাবিত নয়। যাঁহারা ভাগবত, আগ্রেম্ব ও বিষ্ণুপুরাণ সঙ্কলন পূর্বাক বেদবাাস-প্রণীত বিলিয়া প্রচার করিয়াছেন, তাঁহাদেরও কর্তৃক ঐ কথা কল্লিত হইবার নহে। একারণ ঐ উপাধ্যানটি কোনক্রমেই আধুনিক বোধ হয় না এবং উহা বেছলে যেরপে বণিত আছে, তাহাতে নিতান্ত অমূলকও জ্ঞান হয় না। বোধ হয়, পুরাতন গ্রন্থ বিশেষে লিখিত ছিল, পরে অধুনাতন পুরাণকর্তায়া স্ব গ্রম্থে উহা উক্ত করিয়া লইয়াছেন। যিনি বেদ সম্বায় সংগ্রহ ও বিভাগ করেন, তাঁহার পুরাণ ও ইভিহাস সঙ্কলন করিতেও পূর্বাতিন ব্যাপার কার্ত্তন করিত, তিনি তাহা সঙ্কলিত ও শৃঙ্খলাবদ্ধ করিয়া ভাহার অধ্যয়ন-অধ্যাপনা বিষয়ে উৎসাহ প্রাল করিবেন ইহা অসম্ভব নয়। বাহা হউক, এক সময়ে একথানি মাত্র পুরাণ প্রচলিত ছিল, উল্লিখিত বচনে ইহাই প্রদর্শন করিতেছে।

বিষ্ণুপ্রাণোক্ত ঐ পুরাণ সংহিতা কিরূপ ছিল, তাহা এতদিন পরে নিরূপণ করা একরূপ অসাধ্য বলিতে হয়। বিষ্ণুপ্রাণকর্তা লিথিরাছেন, বেদব্যাস আধ্যান, উপাধ্যান, গাধা, করাওজি এই চারি বিষয় লইয়া পুরাণ-সংহিতা প্রস্তুত করেন। ঐ পুরাণের টীকাকার লেখেন, স্বরং দৃষ্টি করিয়া যে সকল বিষয় কথিত হইয়াছে তাহার নাম আধ্যান, পরম্পরা শ্রুত কথার নাম উপাধ্যান, পিতৃ-বিষয়ক ও পৃথী-বিষয়ক গীত ও অক্তান্ত কোন কোন গীতের নাম গাধা এবং শ্রাদ্ধ-করাদি নিরূপণের নাম করগুজি *। বেদব্যাস পুরাণ-সংহিতা

स्वयं दृष्टार्थक्यमं प्राहराख्यानकः बुधाः ।
 युतस्यार्थस्य कयममुपाख्यानं प्रचचते ॥
 गाथास्तु पित्रपृथ्वीप्रश्वतिगीतयः ।
 कल्पग्रुद्धः त्राजुकल्यादिनिर्णयः ॥

প্রস্তুত করুন বা নাই করুন, বে সমরে পূর্বোক্ত পুরাণ-সকলন-বিবয়ক আখ্যানটি রচিত হইয়াছিল, সে সময়ের প্রচলিত পুরাণ এইরূপ ছিল বলিতে হয়।

বছকাল পূর্বে পুরাণের এইরপৈ অবস্থা থাকা সমাক্ সম্ভব, কিন্তু তাহার পদ্মেই যে অধুনাতন পুরাণ সম্লায় সঙ্গলিত হইরাছে এমনও নয়। পুরাণ সম্লার ক্ষোগত পরিবর্ত্তিত হইরা আ। দিয়াছে এবং তাহাতে কালে কালে নৃতন নৃতন বিষয় বিনিবেশিত হইরাছে। অমরসিংহ অমরকোষে নিধিয়াছেন, পুরাণের পাঁচ লক্ষণ, "পুরাণং পঞ্চলক্ষণং।" দেই পাঁচ লক্ষণ কি কি, তাহা ঐ গ্রন্থের চীকাকারেরা সকলেই সবিশেষ বর্ণন করিয়াছেন।

सर्गञ्च प्रतिसर्गञ्च वंशोमन्वन्तराणि च। वंशानुचरितञ्चेव पुराणं पञ्चलचणम्॥

এই বচন-প্রমাণে প্রতীতি ইইতেছে, অমরাসংহের সময়ে যে সমস্ত প্রাণ প্রচলিত ছিল, তাহাতে সৃষ্টি, বিশেব সৃষ্টি*, বংশ-বিবরণ, মহস্তর-বর্ণনা এবং প্রধান প্রধান বংশোন্তব ব্যক্তিদের চরিত্র-বিষয়ের বৃত্তান্ত সরিবেশিত ছিল। ধর্ম-সংক্রান্ত ক্রিরাকলাপাদি উপট্টেশ করা ইহার একটি বিষয়েরও উদ্দেশ্ত নয়। কিন্তু এক্ষণকার প্রচলিত প্রাণ ও উপপ্রাণ সমুদার দেবদেবীর মাহাত্মান কথন, দেবার্চনা, দেবোৎসব ও ব্রত-নিয়মাদির বিবরণেতেই পরিপূর্ণ। তাহাতে প্র্যোক্ত পঞ্চ লক্ষণের অন্তর্গত যে যে বিষয় প্রাপ্ত হওয়া যায়, তাতা আনুষ্পিক মাত †। যদি ধর্মোপদেশ-দান ইদানীন্তন প্রচলিত প্রাণের ভার প্রাণ্ড হ

भूतमाचेन्द्रियधियां जना सर्ग छदाञ्चतः । ब्राह्मणी गुणवेषस्यादिसर्गः पौरुषः सृतः ॥ णात्रवरु ।२।>२|६|

ত্ব-ক্ষেত্ৰ বৈষয়াবছা প্ৰবৃক্ত প্ৰবেষর কর্তৃক পৃথিবাদি পঞ্চন্ত, দক্ষাদি পঞ্চন্তাত্ৰ, ইক্ৰিয় সমূহ, ৰংগত্ব ও অহনায়তত্বের বে হুটি, তাহার ৰাম সর্ব। পৌক্ষ হুটি (অর্থাৎ এক্ষা কণ্ডক চলাচর-হুটি) বিসর্ব বনিয়া উক্ত হয়।

† তবে সকল পুরাণ সমান নর। বিকৃত বার্-পুরাণে ঐ পঞ্চ লক্ষণের প্রার সম্পার বালাধিক ভার আছে। কিত ভতির অনেকানেক নুতন বিবরত ভারতে বিনিক্ষেতিত হই-

[•] ভাগৰতের এক ছলে সৃষ্টি ও প্রতিসৃষ্টি দর্গ ও বিদর্গ বলিং। উক্ত হইগছে। প্রমেশর কর্তৃক পৃথিব্যাদি পঞ্ভূত, রূপ রুদাদি গুল-সমগ্র ও ইক্রিয়াদি-সৃষ্টির নাম দর্গ এবং এক্ষা কর্তৃক চর্গ্র-সৃষ্টির নাম বিদর্গ।

পুরাণেরও উদ্দেশ্য থাকিত, তাহা হইলে উহা স্ত জাতির ব্যবসায় না হইয়া অধুনাতন আন্ধান কথকের জায় ষট্কর্মালালী আন্ধান-বর্ণেরই হুন্তি-বিশেষ বলিয়া ব্যবস্থিত হইত। ঋষি মুনি ও অপর সাধারণ আন্ধানগণকে ধর্ম-শিক্ষা দেওয়া স্তাদি নেরুই জাতির ব্যবসায় হওয়া কদাচ সম্ভব নয়। অতএব অমর্নিংহের সমরে, অর্থাং ন্নাধিক অয়োদশ শত বৎসর পূর্বে যে সকল পুরাণ প্রচারত ছিল, তাহার সহিত অধুনাতন পুরাণ সম্লায়ের আকাশ-পাতাল প্রভেদ দেখিতে পাওয়া যায়। স্থতরাং বলিতে হয়, এই সকল পুরাণ অমর্নিংহের পরে সক্ষলিত হয়াছে, অথবা তাঁহার উলিধিত পঞ্চ-পক্ষণাক্রান্ত পুরাণ সম্পায় এত পরিবর্তিত হয়া আদিয়াছে এবং তাহাতে এত নৃতন নৃত্র প্রত্যাব প্রক্ষিপ্ত হইয়াছে যে, সেকলকে এক প্রকার নৃত্রন সক্ষলিত বলা যাইতে পারে।

ব্দ্ধবৈষ্ঠ-পুরাণে মহাপুরাণ দশাধিক লক্ষণাক্রান্ত বলিয়া লিখিত আছে। তদ্মধ্যে শ্রীহরির গুণ-কার্ত্তন একটি লক্ষণ ও অস্তান্ত দেবতাদির বর্ণনা অপর একটি লক্ষণ। * শ্রীক্ষয়ের গুণ-কার্ত্তন ও মাহাত্ম্য-বর্ণন করা ব্রহ্মবৈষ্ঠ্য পুরাণ-কর্তার উদ্দেশ্য। তাঁহার ক্ষত ও অস্ত কর্ত্ত্ম বিরচিত সমুদার প্রচলিত পুরাণ অমর-লিখিত পঞ্চ লক্ষণের অমুষায়ী নয় দেশিয়া, তাঁহাকে উলিখিত দশবিধ

য়াছে। অপরাণর অনেক প্রাণে ঐ পঞ্চ লক্ষণের অলই নিগদন পাওরা যায়। তাহার পরিবর্তে দেবদেবীর মাহায়াও এতনিয়মাদি অভান্ত পারমার্থিক বিষয় সবিশেষ বর্ণিত হইয়াছে।

লক্ষণ করনা করিতে হইয়াছে তাহার সন্দেহ নাই *। যে ব্যক্তি যে প্রন্থ রচনা করে, সে ব্যক্তি অবশ্রুই সে গ্রন্থের ভদুষ্যারী লক্ষণ করিয়া থাকে। অন্তএব তাঁহার ক্তত লক্ষণ ঘারা সে গ্রন্থের প্রামাণ্য ও প্রাচীনত্ব অবধারণ করা যায় না। অমরসিংহ এক জন অভিধানকর্ত্তা; প্রাণের লক্ষণ করনা করা তাঁহার পক্ষে আবশ্রুক ও সম্ভাবিত নয়। করিলে, তাঁহার পক্ষে অপকার ভিন্ন কিছুমাত্র উপকার নাই। তাঁহার সমরে যে প্রকার প্রাণ প্রচলিত ছিল, তিনি তাহারই ভদুষ্যারী লক্ষণ করিয়াছেন। বিশেষতঃ যদি প্র্রে প্রাণের ঐ পঞ্চ লক্ষণ সর্ব্বাদি-সন্মত না হইত, তবে অধুনাতন প্রাণকর্তারা তাহার প্রতিবাদ করিতে ক্রুটি করিতেন না। প্রত্যুত, ভাগবত, ব্রন্ধবৈবর্ত্ত প্রভৃতি কয়েক প্রাণে ঐ পঞ্চ লক্ষণ উদ্ধৃত বা উল্লিখিত হইয়াছে †। অতএব অধুনাতন প্রাণ সকল সক্ষণিত বা রচিত হইবার পূর্বকার প্রাণ সমুদ্য পূর্বোক্ত পঞ্চ লক্ষণাক্রাম্ভ অন্তর্মণ প্রাণ ছিল এরপ মীমাংসা করা কোন মতেই যুক্তি-বিক্রম নয়।

বৃদ্ধবৈদ্ধলিক বা সপ্রাণিত প্রাণান্ত্রায়ী লক্ষণ করনা করিলেন এবং পূর্ব পরশারা ক্রমে প্রাণের বে বিক্রম করিলেন প্রাণির করি আছে, তাহার কোন প্রকার মীমাংসা করা আবশুক বিবেচনা করিয়া এইরপ একটি করিত কথা লিখিলেন যে, উপপুরাণ সকল পঞ্চ-লক্ষণাক্রান্ত,আর মহাপুরাণ সকল দশাধিক-লক্ষণযুক্ত। কিন্তু এক্ষণে যে সকল গ্রন্থ উপপুরাণ বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে,তাহা অমরকোষোক্ত পঞ্চ-লক্ষণাক্রান্ত হওয়া দ্রে থাকুক, অমরসিংহের সময়ে যে সে সকল রিভ হইয়াছিল এমন বোধ হয় না। উপপুরাণ সমুদায় যে উলিখিতরূপ পঞ্চ-লক্ষণাক্রান্ত নয়, পাঠ করিয়া দেখিলেই তাহা অক্রেশে জানিতে পারা যায়। পুরাণে ঐ পঞ্চলক্ষণের যাহা কিছু আছে, উপপুরাণে তাহাও নাই। এক্ষলে সেবিষ্বের ছই একটি উলাহরণ প্রদর্শন করা যাইতেছে। একখানি উপপুরাণের

^{*} ভাগবতের দাদশ ক্ষমে সপ্তমাধ্যারে পুরাণের বে দশ লক্ষণ লিখিত আছে, বিশেষতঃ এথির স্বামী তাহার বেরূপ ব্যাধ্যা করিয়াছেন, ভাছা প্রায় ব্রহ্মবৈষ্ঠপুরাণোক্ত দশ্বিধ লক্ষণের চুলা, কিন্তু ভাদৃশ স্থুপাই নর।

[†] दम्भिर्श्वचौर्युत्त' पुरार्ण तहिदी विदु:।

केचित् पचिविधं ब्रह्मन् भइदर्व्यव्यवस्थ्या॥

जानवर्षः। > दमः। १ वशावः ॥ आहर

ৰাম কালিকাপুরাণ। তাহার চতুর্থ অধ্যার হইতে একাদশ অধ্যার পর্যান্ত শিবের বিবাহ-মন্ত্রণা, সভীর জন্ম-কথন, সভীর শিবারাধনা ও শিবের সহিত তাঁহার বিবাহ, চতুর্দশ ও পঞ্চদশ অধ্যায়ে শিবের সহিত সভীর কৈলাস-গ্রমন ও তাঁহাদিগের নানাত্রপ ক্রীড়াকোতুক-বর্ণন, ষোড়শ, সপ্তদশ ও অষ্টাদশ অধ্যায়ে দক্ষজের অনুষ্ঠান, দেই যজে সতীর প্রাণত্যাগ, সতী-শোকে শিবের বিলাপ ও উন্মাদ, দতীর মৃত দেহ থণ্ডন দারা পীঠস্থানের উৎপত্তি ও কাম-ক্মপাদি ঐ সমন্ত তীর্থ-ভূমির মাহাত্ম্য-বিবরণ, চতুর্বিংশ অধ্যায়ে শিবের তপজ্ঞা-वन्यन, बन्नानि कर्जुक भाषात्र खिछ এवः क्राय-श्राप्त व्यमात्र हिन्छ। कृतिवा সার বস্ততে শিবের চিত্তার্পণ, বত্তিশ অধ্যায় হইতে সাঁাইত্রিশ অধ্যায় পর্যান্ত মৎশ্ৰ, কুৰ্ম, বরাহাদি অবভার-প্রস্তাব ইত্যাদি শিব, শক্তি ও অন্থান্ত দেবতা-প্রসঙ্গেই এই উপপুরাণ পরিপূর্ণ। কল্পি নামে একখানি উপপুরাণের অধিকাংশ বিষ্ণু বতরণ, কজিরপী বিষ্ণুর জন্ম, উপনয়ন, বিবাহ, শিব-স্থোত্র, শিব-স্মাপে অখ-করবালাদি-প্রাপ্তি এবং বৌদ্ধ, জৈন, মেচ্ছাদির সহিত যুদ্ধ, রাম, পরশুরাম ও ক্লফাবতার-কার্তন, হরিভক্তির লক্ষণ ইত্যাদি দেব-চরিত ও দেব-ভক্তিরই বিবরণ মাত্র। অপর একথানি উপপুরাণের নাম শিবপুরাণ। তাহা শিব ও শিবলিকের মাহাত্মা ও পূজা-প্রকরণ, নানাপ্রকার শিব-মৃত্তি ও শিবোপাথ্যান, শিব-তীর্থ ও বোগ-সাধন ইত্যাদি শিব-মহিমা ও শিবোপাসনা-সংক্রাস্ত বিষয় वर्गना वहें जात्र किছ् हे नग्न *।

এক্ষণে এই পর্যান্ত জানা যাইতেছে যে, পুরাণের ঐ পৃথক্ পৃথক্ ছই লক্ষণ
ছারা ভাহার ছই সময়ের অবস্থা প্রকাশ পাইতেছে। স্টি-বিবরণ ও বংশবর্ণনা পূর্বকার পঞ্চ-লক্ষণাক্রান্ত পুরাণের উদ্দেশ্য ছিল, আর এক্ষণকার দশ
লক্ষণাক্রান্ত পুরাণ সমুদার দেবদেবীর মাহাত্ম্য প্রভৃতি ধর্ম-সংক্রান্ত ব্যাপারের
বিবরণে পরিপূর্ণ। প্রচলিত পুরাণ সমুদার যে দেবদেবীর মাহাত্ম্য-প্রচার
উদ্দেশেই বিরচিত,ভদীর বিভাগ-কর্রনাতেও ভাহা স্থপ্ত প্রকাশিত রহিয়াছে।
কতকগুলি বিষ্ণুপ্রধান, কতকগুলি শক্তি-প্রধান ও অপর কতকগুলি শিব-

মরসিংহাদি ছই একথানি উপপুরাণ অনেকাংশে মহাপুরাণের সদৃশ বলিতে পারা
 বার।

প্রধান। এখন না অমর-লিখিত পঞ্চলক্ষণাক্রান্ত পুরাণই বিভ্যমান আছে, না বিষ্ণুপুরাণোক্ত সংহিতাই কুত্রাপি দৃষ্ট হইয়া থাকে। পূর্বেই লিখিত হইয়ছে *, সংহিতা, রাহ্মণ, উপনিষদ, করস্থা, রামারণ, মহুসংহিতা প্রভৃতি যে সমন্ত প্রাচীনতর প্রন্থে প্রাণ শব্দের উল্লেখ আছে, ঠাহার কোন স্থানে পুরাণের সংখ্যা নিরূপিত নাই †। তাহাতে আবার বিষ্ণুপুরাণে স্পষ্টই লিখিত হইয়ছে, বেদব্যাস একখানি মাত্র পুরাণসংহিতা প্রন্ত করেন। অতএব পুনর্বার উল্লেখ করিতে হইতেছে, তিনি অষ্টাদশ পুরাণ ও উপপুরাণ প্রস্তুত করেন এ কথাটি কোনরূপেই সমধিক প্রাচীন নয়। ঐ সমুদায়ের রচনা-সম্পত্তিতে বেদব্যাসের অংশ লক্ষিত হয় না। ঐ অষ্টাদশই যে পুরাণ ও উপপুরাণ সংখ্যার শেষসীমা তাহাও নয়। বর্ত্তমান উপাসক-সম্প্রদারের বৃদ্ধি বা প্রাছর্ভাব সহকারে তদীর সাম্পোরিক গ্রন্থের বৃদ্ধি হইয়া আসিয়ছে। পশ্চাৎ, বিভ্যমান পুরাণ ও উপপুরাণ সমুদায়ের নামোল্লেখ করা যাইতেছে, পাঠ করিলেই জানিতে পারা যাইবে ক্রমণঃ উভরের প্রত্যেকের সংখ্যা অষ্টাদশ অপেক্ষাণ্ড অধিক হইয়া পড়িয়াছে।

পুরাণ।

| ১ বিষ্ণুপুরাণ। | ৬ বার†হ॥ | ১১ ভবিষ্য। | ১৬ অগ্নি। |
|----------------|---------------------|--------------------------|-----------------------|
| ২ ভাগৰত। | ৭ বাকা। | ১২ বামন॥ | ১৭ মৎস্তা। |
| ০ নারদীয়। | ৮ বকাও। | ১৩ শিব বা বা য়ু। | ১৮ কুর্ম্ব॥ |
| ৪ গরুড়। | ৯ ব্ৰহ্মবৈৰ্ব্স্ত । | > 8 निद्या | ১৯ দেবীভাগবভ। |
| ৫ পদ্ম। | ১০ মার্কণ্ডের। | >€ ऋन । | ২০ বহ্নি। |
| | | २५ | পূर्वाजन बन्नदेववर्छ। |

^{*} २४२ श्रे।।

[†] ফলতঃ সে সমন্ত প্রাচীন প্রাণ অক্সরপ; তাহা এখন আর বতত্ত্ব বিদ্যমান নাই।
কত ক্প্রাচীন সংস্কৃত প্রস্থই ল্পু হইয়া গিরাছে! সংহিতা, ব্রাহ্মণ, আরণ্যক, উপনিবদ্ ও
কর্মপ্রে প্রাণ, ইতিহাস, নার।শংসী, আথ্যান, প্রাণ-বেদ, ইতিহাস-বেদ, স্প্-বেদ, পিশাচ-বেদ, অক্র-বেদণ প্রপৃতি যে সমন্ত বিভিন্ন শাস্ত্রের নাম প্রাপ্ত হওরা যার, এখন আর ভাহার পৃথক্ অন্তিম্ব আছে এমন বোধ হয় না। যদি সে সমুদার অপর গ্রন্থের অন্তর্নিবিষ্ট শাকে, তাহাও ক্পেষ্ট পরিজ্ঞাত হওরা ক্ষ্টিন।

এই শেৰোক্ত ভিনটি সংজ্ঞা গোপথ ব্ৰাহ্মণে (১। ১০।) বেধিতে পাওয়া বায়।

এই পুরাণ-নামাবলি অফুসারে, পুরাণের সংখ্যা একবিংশতি হয়। অগ্নি ও বহু এই চুইটি এক প্র্যামের শব্দ: কিন্তু অগ্নিপুরাণ ও বহ্নিপুরাণ চুইথানি খতত্র খতত্র গ্রন্থ। পশ্চাৎ ত্রন্ধবৈবর্ত্তপুরাণ-রচনার সময়-বিবেচনা-স্থলে পূর্ব্ধ-কার ব্লবৈবর্ত্তপুরাণের বিষয় লিখিত হইবে। তান্তির, কতকগুলি ভিন্ন ভিন্ন পুরাণ স্কলপুরাণের থগু-বিলেষ বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে: বেমন কাশীখণ্ড. উৎকলণভ, কুমারিকাথভ, ভীমথভ, রেবাথভ ইত্যাদি। স্বতম্ভ স্বন্পুরাণ বিভ্যান নাই। পুরাণ অষ্টাদশ এই সংখ্যাটি নিরূপিত হইবার উত্তরকালে. चमजाक्यायी धर्म-ल्यानी लात्र हिम्मत्न, जे ममन्त भूताने वर्शार प्रवचा-মাহাত্মা-প্রতিপাদক গ্রন্থ ভিন্ন ভিন্ন সমন্ত্রে ভিন্ন ভিন্ন লোক কর্তৃক বিরচিত ও ক্ষপুরাণের থগু-বিশেষ বলিয়া প্রকাশিত হইয়াছে এইরূপই অমুমান-সিদ্ধ বোধ হয়। কেবল ৭৩ নয়; মাহাত্মা নামে তাপাকার গ্রন্থ বাস-প্রণীত ৰিশেষ বিশেষ পুরাণের অন্তর্গত বলিয়া প্রচারিত হইয়াছে: বেমন ব্হলাও-পুরাণের অন্তর্গত বলিয়া লিখিত অগ্নীশ্বমাহাত্ম্য, অঞ্জনাদ্রিমাহাত্ম্য, অনন্তশয়ন-মাহাত্মা, অদিপুরমাহাত্মা, অর্জুনপুরমাহাত্মানিকঠোরাগিরিমাহাত্মা ও তুঙ্গ-ভদ্রামাহাত্ম্য; অগ্নিপুরাণের অন্তর্ভুত বলিয়া প্রচারিত অর্জ্জুনপুরমাহাত্ম ও কাবেরীমাহাত্ম্য; স্বন্দপুরাণের অংশ-বিশেষ বলিয়া উল্লিখিত ইন্দাবভারক্ষেত্র-মাহাত্ম্য, কদম্বনমাহাত্ম্য, কমলালয়মাহাত্ম্য, কলসক্ষেত্ৰমাহাত্ম্য, কাত্তেশ্ব-মাৰাত্ম্য, কার্ত্তিকমাহাত্ম্য, কুমারক্ষেত্রমাহাত্ম্য, কুঞ্চমাহাত্ম্য, গোকর্ণমাহাত্ম্য, চিদ্বর্মাহাত্মা, ঐরাবতক্ষেত্রমাহাত্মা ও ক্ষীরিণিবন্মাহাত্মা; ব্রহ্মবৈবর্তপুরাণীর বলিরা প্রকাশিত প্রভাচলমাহাত্ম্য, ঘটকাচলমাহাত্ম্য, আদিরত্বেশ্রমাহাত্ম্য, তাপসতীর্থমাহাত্মা ইত্যাদি। এইরূপ শতাতিরিক্ত বছসংখ্যক গ্রন্থ বিদ্যমান चाहि *। किन्दु अहे त्रमुलांत्र कथन (कान श्रुतार्गंत्र चन्नुर्निविष्ठे हिन ना এवर এখনও নাই। দেবীভাগবত ও রেবাখণ্ড প্রত্যেকে অষ্টাদ্দ উপপুরাণের নাম লিখিত আছে। কিন্তু ঐ উভয়ে কিছু কিছু বিভিন্নতা দেখিতে পাঞ্চনা বার। ঐ উভয় ঐক্য করিয়া নিম-লিখিত নামগুলি সংগৃহীত হইল।

^{*} H. H. Wilson's Mackenzie Collection, 1828, vol. I., pp. 61-91,

| উপপুরাণ। | উপপু | রাগ | ١ |
|----------|------|-----|---|
|----------|------|-----|---|

| ১ সনৎকুমার। | ৭ মানব। | ১৫ আদিতা। |
|----------------------|---------------------------|----------------|
| ২ নরসিং ছ বা | ৮ ঔশনস। | ১৬ মাহেশর। |
| नृतिংह । | ৯ বারুণ। | ১৭ ভাৰ্গৰ বা |
| ৩ নারদীয় বা | ১০ কালিকা। | ভাগবত। |
| वृष्ट्यात्रमीत्र । * | ১১ শাস্ব। | ১৮ বাশিষ্ঠ। |
| 8 निव। | >२ निक वा नका । | ১৯ ভবিষ্য। |
| ¢ তুর্বাস্স। | ১৩ সৌর। | ২∙ ব্রহ্মাণ্ড। |
| ७ कांशिन। | ১৪ পারাশর। | ২১ কৌৰ্শ্ব +। |
| | | |

ইহা ভিন্ন, ২২ আদি, ২৩ মূলাল †, ২৪ কজি, ২৫ ভবিব্যোত্তর ও ২৬ বৃহ্দ্বর্ম নামে আর করেকথানি উপপুরাণ দেখিতে পাওয়া যায়। অতএব বেদব্যাস অষ্টাদশ উপপুরাণ করেন এই প্রবাদ প্রচলিত হইবার পরেও অনেকগুলি উপপুরাণ রচিত হইরাছে ভাহার স্লেহ নাই।

দেবদেবীর মাহাত্মা-প্রতিপাদনীই বে প্রচলিত পুরাণ সমুদায়ের প্রধান উদ্দেশ্য, শিবপুরাণ, শৈবপুরাণ, বিষ্ণুপুরাণ, লিঙ্গপুরাণ, ভাগবত, দেবীভাগবত প্রভৃতি নামেতেই তাহার স্পষ্ট পরিচয় দিতেছে। বিশেষ বিশেষ পুরাণ বিশেষ বিশেষ পুরাণ বিশেষ বিশেষ পুরাণ বিশেষ বিশেষ কুর্ম লিঙ্গাদি শিব-প্রধান। মার্কণ্ডেয়াদি কতকগুলি পুরাণে শক্তি-মাহাত্মা সবিশেষ বর্ণিত আছে ‡। পদ্মপুরাণকর্তা অষ্টাদশ পুরাণ তিন ভাগে বিভক্ত করিয়াছেন; সান্ধিক, রাজসিক ও তামসিক। বিষ্ণু-প্রধান পুরাণগুলি সান্ধিক এবং শিবপ্রধানগুলি তামসিক। তিনি এই শেষোক্ত গুলিকে কেবল

বহ্নাপ্ত, ভাগবত, ভবিষা, কৌর্ম এ গুলি মহাপুরাণ, অবচ আবার উপপুরাশের
নামাবলীর মধ্যেও সল্লিবিষ্ট দেখা ব।ইতেছে। অতএব এ বিবরে সাতিশর গোলবোগ ছটিয়া
রহিয়াছে।

⁺ Mackenzie Collection by H. H. Wilson, 1828, vol. I., p. 50.

[া] বাদ্ধ, বন্ধাও, বন্ধবৈৰ্ত্ত, মাৰ্কণ্ডের, ভবিষ্য ও বামন এই প্রাণগুলির নাম রাজস প্রাণ। এই সম্পারে কেবল শক্তি-মাহাম্মা নর, ব্লা, বিষ্ণু, শিব, শক্তি চারি দেবভারই মাহাম্মা বৰ্ণন আছে।

ভাষস বলিয়া নিম্নস্ত হন নাই, সে সমুদায়কে নরক-সাধন বলিয়া ঘুণা করিয়াছেন।

तथैव तामसादेवि निरयप्राप्तिच्चेतवः।

"मक्क ब्रक्तम-धुक भन्नभूबार्गत উत्तर थएथत ८० व्यशास्त्रत वहन।

প্রচলিত পুরাণ ও উপপুরাণ সমুদায় যদি অমরকোষে লিপ্পিত পঞ্চলক্ষণাক্রোস্ত না হইল, তবে উহার উত্তরকালীন গ্রন্থ তাহার সন্দেহ নাই। ঐ
অভিধানকর্তা অমরসিংহের সময় নির্মাণিত হইলেই, ঐ সমস্ত পুরাণ ও উপপুরাণের রচনা-কালের এরপ একটি পূর্বসীমা নির্মারিত হইবে যে, ঐ সমুদায়
তাহার পরে ব্যতিরেকে কোনরূপেই পূর্বে রচিত হওয়া সম্ভব ও সঙ্গত নয়।

বৃদ্ধগরার একটি বিহারে অর্থাৎ বৌদ্ধ দেবালয়ে থোদিত আছে, রাজা বিক্রমাদিত্যের নর জন সভাসদ ছিলেন; তাঁহারা নবরত্ব বলিয়া বিথ্যাত; অমরদেব সেই নবরত্বের এক রত্ব; তিনি একটি অসাধারণ বৃদ্ধিশালী প্রধান পঞ্জিত এবং মহারাজের শ্রেষ্ঠ মন্ত্রী ও প্রিয়্পার্ট, তিনি এই বিহার প্রস্তুত্ত করেন *। যথন তিনি নবরত্বের এক রত্ব বলিয়া লিখিত হইয়াছেন, তথন তিনিই অভিধানকর্তা অমরসিংহ †। উল্লিখিত লিপি-রচয়িতা লিখিয়াছেন অমরদেবই যে এই বৃদ্ধ-নিকেতন প্রতিষ্ঠা করেন এই কথা পঞ্জিতগণকে জানাই-বার উদ্দেশে, আমি প্রস্তুর্বোপরি ১০০৫ দশশত পাঁচ সম্বতের (অর্থাৎ ৯৪৮ নয়শত আটচল্লিশ খৃষ্টাক্বের) চৈত্র মাসের শুক্রপক্ষীয় চতুর্থী শুক্রবারে এই পত্র থোদিত করিলাম ‡। অতএব অমরসিংহ ঐ সময়ের পূর্ব্বতন লোক উহা নিঃসংশয় অবধারিত হইতেছে। শ্রীমান্ কনিংহেম্ বৃদ্ধগন্নার ঐ বিহার পর্য্যবেক্ষণ করিয়া প্রতিপন্ন করিয়াছেন শ্বি, চীন দেশীয় তীর্থ্যাত্তী হিউএন্থ্যক্ব ৬২৮ ছয়শত আটাশ খৃষ্টান্বের পর ও ৬৪০ ছয়শত তেতাল্লিশ খৃষ্টান্বের পূর্বে উক্ত বিহারই

[•] Asiatic Researches, vol. I., p. 286.

[†] অভিধানকর্জা অমরসিংহ বে বৌদ্ধ ছিলেন, অমরকোধের উপক্রমেই তাহার স্থাপার প্রমাণ বিদামান রহিরাছে।

[‡] Asiatic Researches, vol. I., p. 287.

[¶] Colonel A. Cunningham's Archœlogical Survey Report, published in the Supplementary Number of the Asiatic Society of Bengal for 1863, pp. VII—X.

দর্শন করিয়া যান। তিনি দেখেন, ঐ বিহারের বৃদ্ধ-প্রতিমা পূর্বমুখে প্রতিষ্ঠিত।

এখনও ঐ দেবালয় পূর্বেরারীই দেখিতে পাওয়া যায়। তিনি উপ্লিখিত বৃদ্ধপ্রতিমার বেদির ষেরূপ পরিমাণ দৃষ্টি করেন, কর্ণেল্ কনিংহেম্ তাহা বর্ত্তমান
বেদির সহিত্ত বিশেষ বিভিন্ন মনে করেন না। ফা হিয়ন নামে চীন-দেশীয় জন্য
এক তীর্থবাত্রী ৩৯৯ তিন শত নিরনব্বই খুটাকে ভারতবর্ষে আগমন পূর্বক ৪১৪
চারি শত চৌদ্ধ খুটাক পর্যান্ত তীর্থ-ভ্রমণ করেন। তাঁহার সময়ে তথায় ঐ
বিহার বিদ্যমান ছিল না। অতএব অমরসিংহ গ্রীষ্টাক্ষের চতুর্থ শতান্দীর পর
সপ্তম শতান্দীর পূর্বে কোন সময়ে প্রাত্তভূত হন্ এইটি প্রতীয়মান হইতেছে।
এই প্রত্বের প্রথম ভাগে প্রদর্শিত হইয়াছেয়, নবরত্বের অহ্য এক রত্ব বরাহমিহির শকাক্ষের পঞ্চম শতাকীর শেষার্দ্ধে অর্থাৎ খুটাক্ষের ষষ্ঠ শতাকীর মধ্যভাগে জীবিত ছিলেন। অমরসিংহ তাঁহার সমকালবর্ত্তী একথাটি কোন মতে
অসক্ষত বোধ হইতেছে না।

পূর্ব্বোক্ত থোদিত লিপিতে অমরও বিক্রমাদিত্যের নবরত্বের এক রত্ন বলিরা লিখিত আছে। ভারতবর্ষে বিক্রমাদিত্যে নামে অনেক গুলি রাজা রাজ্য ভোগ করিয়া গিরাছেন। এক্ষণে ধে বিক্রমাদিত্যের সম্বতের বিংশ শতাকা চলিতেছে, অমর, কালিদাস, বরাহমিহিরাদি নয় জন স্থবিখ্যাত পণ্ডিত তাঁহারই সভাসদ্ ছিলেন এইরপ প্রবাদ সর্ব্বিত্র প্রচলিত আছে। কিন্তু ঐ বরাহমিহিরের সময় নিঃসংশরে নির্দ্ধারিত হওয়াতেই, এই জন-প্রবাদের মুণ্ডোপরি বজ্লামাত ঘটিয়াছে। তিনি শকাব্দের পঞ্চম ও ষষ্ঠ এবং খুষ্টাব্দের মুগ্ডাপরি বজ্লামাত ঘটিয়াছে। তিনি শকাব্দের পঞ্চম ও ষষ্ঠ এবং খুষ্টাব্দের মুগ্ডাপরি বজ্লামান ছিলেন তাহার সন্দেহ নাই । তবে অমর বরাহমিহিরাদি কোন্ বিক্রমাদিত্যের সভাসদ্ ? শক্রেপ্রয়মাহাত্ম নামে জৈন-সম্প্রদারের একখানি গ্রন্থ আছে। কর্নেল উইল্ফোর্ড্ প্রথমে তাহার প্রসল্প উপস্থিত করেন এবং শ্রীমান্ বেবের্ ১৮৫৮ খুষ্টাব্দে জ্মেন অম্বাদ সম্বলিত তাহার সারাংশ-সংগ্রহ প্রচার করিয়া দেন। তাহাতে লিখিত আছে, অন্য এক বিক্রমাদিত্য ৪৬৬ শকাব্দে অর্থাৎ ৫৪৪ খুষ্টাব্দে রাজ্যাভিষ্কিত হন ‡। অতএব তাঁহার সমরের সহিত্ব অমর প্র

এই পুত্তকের অধম ভাগে অকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৫৮ পৃঠা দেব।

¹**%** & & +

[‡] Asiatic Researches, Vol. IX, p, 156.

বরাহমিহিরের সময়ের কিছুমাত্র অনৈক্য দেখা বার না। যথন অধুনাতন পুরাণ সমৃদার অমরসিংহ-লিখিত পঞ্চ লক্ষণাক্রান্ত নয়,তথন সে সমৃদার অর্থাৎ প্রচলিত অষ্টাদশাধিক পুরাণ ও উপপুরাণ তাঁহার সময়ের অর্থাৎ খৃষ্টান্দের ষষ্ঠ শতাশীর উত্তর কালে লিখিত হয় ইলা অক্রেশেই অলীকার করিতে পারা যায়। রঘুনন্দন ভট্টাচার্ব্য কিঞ্চিদ্ন চারি শত বৎসর পুর্বে * তিথিতত্ত্বের হুর্নোৎসব-প্রকরণে অষ্টাদশ পুরাণের অন্তিত্ব অঙ্গীকার করিয়াছেন ও ভিন্ন ভিন্ন তত্ত্বের মধ্যে আনেকানেক পুরাণের বচনও উদ্ভূত করিয়া গিয়াছেন। তিনি বিশেষ বিশেষ প্রাণ ও উপপুরাণ সংজ্ঞা উল্লেখ করিয়াছেন, তাহা বর্ত্তমান পুরাণ ও উপপুরাণবেরই নাম । স্থতরাং বলিতে হয়, অমরসিংহের উত্তরকালে অর্থাৎ খৃষ্টান্দের ষষ্ঠ শতান্ধীর পর এবং রঘুনন্দনের সময়ের অর্থাৎ খৃষ্টান্দের চতুর্দ্দশ বা ত্রেরোদশ শতান্ধীর পূর্বের ঐ সম্দার গ্রন্থ প্রস্তুত হয় তাহার সন্দেহ নাই। ফলতঃ সে সম্দার যে, অমরের অনেক পরে সম্থলিত ও বিরচিত হেইয়াছে ইহা পশ্চাৎ কিছু কিছু প্রদর্শিত হইতেছে।

রাক্ষপুরাণ।—রাক্ষপুরাণের বিংশ অবি^{নি}ষ্ট্চডারিংশ অধ্যায় পর্যান্ত তীর্থ-বিবরণ এবং উৎকল-মাহাত্মা, শিব, স্থ্য ও বিষ্ণুর মহিমা ও তাহার আম্ধঙ্গিক নানাবিধ পৌরাণিক উপাধ্যানের বর্ণনা আছে। তন্মধ্যে শিব, স্থ্য ও জগনা-থের মন্দিরের বিষয় বর্ণিত রহিয়াছে। ঐ সকল দেবালয়ে খোদিত আছে, শিব-মন্দির খুটান্দের সপ্তম শতালীতে, স্থ্য-মন্দির খুটান্দের এরোদশ শতালীতে ও জগনাথের মন্দির খুটান্দের ঘাদশ শতাকীতে নির্মিত হয় ‡। এই পুরাণাম্নসারে,

[•] চৈতন্ত, বঘুনন্দন, বঘুনাথ শিরোমণি এই তিন জন সহাধ্যারী ছিলেন এইরূপ প্রশ্বাগত প্রবাদ প্রচলিত আছে। তাঁহারা নব্দীপ-সন্নিহিত বিদ্যালগর প্রামে বাহুদেব
সার্কভৌমের চতুপাঠীতে অধ্যয়ন করিয়াছিলেন। চৈতন্ত ১৪০৭ শকে জন্মগ্রহণ করিয়া
১৯৫৫ শকে প্রাণত্যাপ করেন।—এই পুস্তকের প্রথম ভাগ, চৈতন্য-সম্প্রদান ১৫১ পৃষ্ঠা।

[†] বেষন তিখিতছের তুর্গোৎসব-প্রকাবে মার্কণ্ডের, দেবী, কালিকা, লিজ, বিফু, মৎস্য, ভবিষ্য, ব্রহ্ম, বরাহ, কল ও কুর্ম পুরাণ; আজতছের দর্ভপ্রকরণে ব্রহ্ম ও বায়ুপুরাণ; অক্সা-প্রকরণে ব্রহ্ম ও গরুড়পুরাণ; আফিকতছের দ্বিতীর্বামার্ক্রত্য-প্রকরণে নন্দি, মৎস্য ও বিশুপুরাণ; প্রায়ন্ডিভতছে নারদীর, বরাহ, ব্রহ্ম ও ক্ষণপুরাণ ইত্যাদি।

[‡] Account of Orissa Proper, or Cuttack, by A. Stirling: Asiatic Researches, vol. XV., pp. 310, 327 and 315.

ঐ শিবক্ষেত্রের নাম একাশ্রকানন। এক্ষণে উহা ভ্রনেশ্বর বলিয়া প্রশিদ্ধ আছে। উৎকলাধিপতি ললিত ইলু কেশরী ৬৫৭ ছর শত সাতার খুটান্দে ঐ স্থানের বৃহৎ শিবমন্দিরটি প্রতিষ্ঠা করেন। স্থাসিদ্ধ অগরাথের মন্দির ১১৯৮ এগারশ আটানব্বই খুটান্দে নির্মিত হয়। উৎকলের অন্তঃপাতী কনার্ক নামক স্থানে একটি স্থামন্দির বিদ্যমান আছে; লঙ্গোর নর্সিংছ দেও ১২৪১ বার শত একচল্লিশ খুটান্দে তাহা নির্মাণ করান। অভএব যথন ব্রাহ্মপুরাণে ঐ সকল দেবালয়ের প্রসঙ্গ ও বৃত্তান্ত রহিয়াছে,তথন এই পুরাণ খুষ্টীর অক্ষের ত্রয়োদশ বা চতুর্দ্দে শতাকীর পূর্বে প্রস্তুত হয় নাই ইহা সহক্ষেই আনিতে পারা যাইতেছে।

পদ্মপুরাণ।—পদ্মপুরাণের উত্তরধণ্ডে দক্ষিণাপথের অন্তর্গত শ্রীরক্ষ ও বেছটাদ্রি-নামক ছই স্থানের বিষ্ণু-মন্দির* ও তুঙ্গভদ্রা নদী-তীরস্থ হরিপুর নগরের
প্রদক্ষ আছে। এই পুরাণে বেঙ্গটাদ্রির তিলক-মৃত্তিকা অভিমাত্র প্রশন্ত বিদ্যা
নির্দেশিত হইরাছে।

श्रादाय परया भक्ता विद्वाटाद्री हुदे सदम्। धारयेदूर्वपुण्ड्राणि हिरिसालोक्यसिषये॥ উछत्रथः।

এই পৃত্তকের প্রথম ভাগের অন্তর্গত রামান্তল-সম্প্রদায়ের বিবরণ-মধ্যে দেখিতে পাইবে, ঐ বেকটান্তির মন্দির প্রথমে শিবালর ছিল, রামান্তল খুষ্টাব্দের ঘাদশ শতান্দীতে তাহাতে বিস্তৃ-বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা করেন †। নানাপ্রমাণান্তসারে, হরিপুরের অন্ত একটি নাম বিজয়নগর বলিয়া বিবেচিত হইয়াছে। চিত্রছর্গের পিতলপত্রে এই প্রকার ধোদিত আছে ও এরপ প্রবাদও প্রচলিত রহিয়াছে বে, দক্ষিণাপথের অন্তর্গত রাজ্য-বিশেষের অধীশর হিরহর ও বুকরার খুষ্টাব্দের চতুর্দশ শতান্দীতে এই নগর পত্তন করেন। হরিহরেরই নামান্ত্রসারে হরিপুর নামটি উৎপন হইয়া থাকিবে ‡। অতএব এই পুরাণের অনেক অংশ ঐ

শাক্রাজের প্রার ত্রিশ ক্রোশ পশ্চিমে।তবের বেয়টগিরি এবং শ্রীরক্ষ ত্রিচীনপ্রির অন্তর্গত
তীর্থ-ছান-বিশেষ।

[†] এই পুতকের প্রথম ভাগের অন্তর্গত বৈঞ্ব-সম্প্রদান্ন-বিবরণের ৮ পুঠা।

[‡] Asiatic Researches, Vol. IX. PP. 413-423. H. H. Wilson's Sanskrit and English Dictionary, 1819, Preface, P. XVII.

সময়ের পরে বিরচিত হয় তাহার সন্দেহ নাই। ইহার উত্তরপত্তের মধ্যে রামামুক প্রভৃতি চারিটি প্রধান বৈষ্ণব-সম্প্রদায়ের নামও উল্লিখিত আছে।

सम्प्रदायविहीना ये मन्त्रास्ते निष्मला मताः।
श्रतः कलीः भविष्यन्ति चलारः सम्प्रदायिनः॥
श्रीमाध्वी रुद्र सनका वैष्णवाः चितिपावनाः॥
भक्षकप्रस्वत्र मध्यनात्र भक्षक अन्तर्भागेत्र वहन।

এই চারিটি সম্প্রদায় রামাত্মন্ত বল্লভাচারী, নিমাৎ ও মধ্বাচারী । এই পৃত্তকের প্রথম ভাগে দেখিতে পাইবে, সম্প্রদায়-প্রবর্ত্তক রামাত্মক খৃইান্দের বাদশ শতান্দীতে, মধ্বাচারী উহার এরোদশ শতান্দীতে এবং বল্লভাচারী উহার বোড়শ শতান্দীতে প্রাহ্রভূতি হন । তদমুসারে পদ্মপুরাণের উত্তরপত্ত খুইান্দের বোড়শ শতান্দীর পরে বিরচিত বলিয়া স্বীকার করিতে হয়ঐ। পত্তে শৈব বৈষ্ণবের বিবাদ-স্চক বিস্তর কথা আছে। দক্ষিণাপথে প্রচলিত নানা বুত্তাত্তে দেখিতে পাওয়া যায়, খুইান্দের একাদশ ও বাদশ শতান্দীতে অথবা ভাহার কিছু অগ্র পশ্চাৎ এই বিষমর বিশ্বাদ সংঘটিত হয় ৡ। এই সমস্ত শুক্তি অন্থনারেও, এই পুরাণের অথবা ইহার এই থতের পুর্বোক্তর রচনা-কালই নির্দারিত হইতেছে। শ্রীমান্হ, হ, উইল্সন্ লিখিয়া গিয়াছেন, এই পুরাণের কোন স্থল খুইান্দের বাদশ শতান্দীর অপেক্ষা প্রাচীন নর।

ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণ।—পূর্ব্বে ব্রহ্ম বৈবর্ত্ত নামে একখানি পুরাণ প্রচলিত ছিল; মংশুপুরাণে তাহার নিম্নলিখিত লক্ষণ লিখিত আছে।

> रथन्तरस्य कल्पस्य वृत्तान्तमधिकत्य यत्। सावर्णिना नारदाय कंष्णमाद्वाक्रप्रसंयुतम्।

^{*} শক্তরজনোদ্ত প্রপ্রাণীর বচন-বিশেষে রামানুজের নাম স্পষ্ট বিদ্যমান রহিরাছে। এই পুরুকের প্রথম ভাগের ১৩ পুঠা দেখ।

ተ এই প্রকের প্রথম ভাগ, বৈক্ষ-সম্প্রদার, ৪ পৃঠা।

^{াু} এই পুরুকের প্রথম,ভাগ, বৈক্তব-সম্প্রদার, ৬, ১১৬ ও ১২৭ পুঠা ।

[§] Mackenzie Collection, Introduction, pp. LXII and LXIII. H. H. Wilson's Essays, vol. I., 1864. pp. 80 and 81.

यत्र ब्रह्मवराइस्य चरितं वर्णेत्रते सुद्धः । तदष्टादमसाइस्रं ब्रह्मवैवत्तसुच्यते ॥

যে পুরাণ সাবর্ণি নারদ-সমীপে কীর্ত্তন করেন এবং **বাছাতে শ্রীকৃষ্ণের** মাহাত্ম্যা, রণস্তর কল্লের বৃত্তান্ত ও বারম্বার ব্রহ্মবরাহের উপাধ্যান বর্ণিত হুইয়াছে, সেই অষ্টাদশ সহস্র শ্লোক বিশিষ্ট পুরাণকে ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণ বলে।

किछ এकरण रव अक्षरिवर्खभूतान विश्वमान आहि, छाहारि ना त्रवस्त्र कहारे चाहि, ना बक्षवदारित बृखाखरे मुद्रे रहा, ना छारा मावर्गि श्रीव कर्छकरे ক্ষতি হইয়াছে। এথানি একথানি শ্বতম্ব গ্রন্থ: রাধা-ক্রফের বুন্দাবন-লীলা ও তদীয় যুগলরপের উপাসনা-বুতাত্তেই পরিপূর্ণ। হিন্দুধর্মের এই অঙ্গটি অভ্যস্ত আধুনিক ও স্থভরাং এই পুরাণের বয়:ক্রমও, সেইরূপ। ভাগবতে রাধার নাম গন্ধ কিছুই নাই। এই কুফালীলা-প্রধান বৈক্ষব-পুরাণ রচনার সমরে তাঁহার উপাধ্যান প্রচারিত থাকিলে, ইহাতে তাহা স্প্লিবেশিত না হওয়া কোন মতেই সম্ভব ও হুগত নয়। অতএব রাধা-সংক্রাম্ভ কথা ভাগি এই পুরাণ অপেকা আধুনিক। কিছু পরেই দৃষ্ট হইবে, ভাগবতের বয়:ক্রম এখন ন্যুনাধিক ছব শত বংগর। স্থতরাং ব্রন্ধবৈবর্ত্তপুরাণ তদপেকা चथाठीन । बल्लाठांत्री देवकव-मध्यमात्र बहेराज्ये द्वाधाक्रतकत व्यवक्रम खेलाममा প্রচারিত হয়। বল্লভাচার্ব্য শকাব্দের পঞ্চদশ শতাকীর মধ্যভাগে সবিশেষ যত্ত-সহকারে ঐ মত প্রচার করেন। * অতথ্য ব্রন্ধবৈবর্ত্ত পুরাণ ভদপেক্ষা অপ্রাচীন। এই পুরাণের ক্রফজনাথণ্ডের ১২৭ অধাায়ে ভবিষ্যৎ-ক্থন-জ্ঞাল (अष्ट् बांबाब अधिकांत्र t, लाटकंत्र (अष्ट्राहांत्र-अवश्वन t, त्वका e वर्त-বিচারে অনাতা ও হিন্দুধর্ম-বিকল্প অন্য কতকগুলি বিষয় ব্রণিত হট্মাচে। এখলি মোদল্যানদের ভারতবর্ষাধিকার-প্রবর্ত্তন ও তাহার উত্তরকালীন হিলা-

এই পুস্তকের প্রথম ভাগের অন্তর্গত বল্লভাচারি-সম্প্রদার-বিবরণের ১২৭ পুঠা।

[†] जाति ही ना' जनाः सर्व्ये स्त्रे च्छी भूपी भविष्यति । कृत्यसम्मर्थशः । ১२१। २०॥

[‡] भाषायानं च तुषसीं क्षयं गङ्गीदकं तथा। न स्प्रोन्यानवी धूर्ती स्रेच्छाचाररतः सदा॥ कृक्षनप्रथण । ১२१। २०॥

সমাজের বর্ণনা বই আর কিছু বোধ হয় না। ঐ সময়ে ভারতবর্ষীয় অনেক लाटक सामनमान धर्म थावर्डिण इब ७ थाएम-विरम्पर वर्गविठांत-विक्रम আচার ব্যবহারও প্রচলিত হইয়া যার। ঐ সময়ে প্রবর্ত্তিত অনেকানেক खेभामक-मध्यमारम् ६ वर्गट्छम-वावस्रा भविष्ठाांश करत् । भन्तिसाखत अपारमात्र দিল্লি প্রভৃতি নানাম্বানে অদ্যাপি "পানপানির বিচার নাই" একথা সর্বাত্ত প্রসিদ্ধ আছে। ঐ অঞ্লের হিলুরা নিজ বাটতে তাজিয়া অর্থাৎ গোয়ারা করে, পুর্বাক্ত মানসিক অনুসাত্মে মহরমের সময় ফকির হয় ও মোসলমান ধর্মোচিত অন্য অন্যরূপ অফুষ্ঠানও করিয়া থাকে। ব্রহ্মবৈবর্তপুরাণের উল্লিখিত অধ্যান্তে হিন্দুদের মিখ্যা, প্রবঞ্চনা, পিতা, মাতা ও গুরুর প্রতি অসদ্-ব্যবহার ইত্যাদি কতকগুলি ফুর্নীতির বিবরণ সরিবেশিত আছে। তাদৃশ अधर्याहत्र जात्रज्यार्थं (मानलमान् तांबादमत्र अधिकात-नमस्य नमिषक ध्यहिन्छ हम *। क्वीत शृहास्कृत भक्षम्म भठाकीर् आर्ज् र रन। जिनि निस সময়ে বিদ্যামান কভ লোকের অবিকল এরপ ব্যবহার কীর্তন করিয়া श्रिश्चरह्न ।

त्यक्रदिवर्क ।

কবীর-ক্বত ভঙ্গন।

भृत्यवत्ताडयेत्तातं पुतः

कद्र सतावे माता पिता ग्ररू

शिष्यस्तथा गुरुम्।

त्रिया वलायके।

পুত্র পিডাকে এবং শিষ্য গুরুকে ভত্যের ন্যার তাড়না করিবে।

কেহবা দার পরিগ্রহ করিয়া পিতা মাতা¦ও গুরুকে পীড়ন করে।

কৃষ্ণজ্বাধণ্ডের উল্লিখিত অধ্যার ও ক্বীরের গ্রন্থে । ভারতব্রীয় লোকের এইরপ নানাপ্রকার কুচরিত্র-বর্ণনার অভিমাত্র সাদৃশ্য দৃষ্ট হইয়া থাকে। এই সমস্ত পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে ত্রহ্মবৈবর্ত প্রাণোক্ত মেচ্ছ রাজা মোসলমান ৰাজা বলিয়াই প্ৰতীয়মান হয়। ইহা হইলে, ভারতবর্ষে মোদলমান-অধিকার

[🔹] এই পুস্তকের দশনামি-সম্প্রদার-বিষরণে অধিকতর পূর্বকালীন ভারতবর্বীর লোকের **চরিত্র বিষয় দেখ**।

⁺ এই পুস্তকের প্রথম ভাগের ক্বীরপন্থি-বিবর্ণের ৫৫ ও প্রিণিষ্টের ২০৭ ও ২০৮ नृष्ठी (मथा

ৰিস্ত ও'ৰদ্ধন্ হইবার পর, বর্ত্তমান ব্রন্ধবৈত্তপুরাণ বিরচিত ও স্থালিত হইরাছে বলিতে হইবে।

ফদপুরাণ। —পূর্ব্বেই উলিথিত হইয়াছে, নানাবিধ ভিন্ন ভিন্ন গ্রন্থ ফলপুরাণের থণ্ড-বিশেষ বলিয়া প্রচলিত আছে; ষেমন কালিথণ্ড, উৎকলথণ্ড, রেবাথণ্ড, ব্রহ্মোত্তরথণ্ড ইত্যাদি। উৎকলথণ্ডে পুরুষোত্তম-ক্ষেত্র ও ভূবনেশ্বর শিবের মন্দিরাদির বর্ণন আছে। ঐ ছই মন্দির খুটাক্ষের দাদশ ও সপ্তম শতালীতে প্রস্তুত হয় ইহা ইতিপুর্বেই প্রদর্শিত হইয়াছে *। অতএব ঐ থণ্ড খুটাক্ষের দাদশ শতাকী অপেক্ষাও আধুনিক বলিয়া স্বীকার করিতে হয়।

কৃর্মপুরাণ।—কৃর্মপুরাণে ভৈরব, বাম, যামল প্রভৃতি ভন্ত-শাল্পের উল্লেশ আছে।

> एवं सम्बोधितो रुद्रो माधवेन मुरारिणा। चकार मोइशास्त्राणि केशवोऽपि श्रिवेरित:॥ कापालं नाकुलं वर्मं भैरवं पूर्व्वपिश्वमम्। पञ्चरात्रं पाश्चपतं तथान्यानि सइस्त्रशः॥

> > कृर्षभूत्रांग। ১৪ व्यशांत्र।

শিব বিষ্ণু কর্ত্তক এইরূপ সংখাধিত ও বিষ্ণু শিব কর্তৃক নির্য়োজিত হইয়া কাপাল, নাকুল, বাম, পূর্ব্ব পশ্চিম ভৈরব, পঞ্চরাত্র, পাশুপত এবং অন্য সহস্র সহস্র মোহশাস্ত্র রচনা করেন।

এই পুরাণের বচনাস্তরেও যামল, করাল, ভৈরব প্রভৃতি তল্পের নাম আছে।
তন্ত্র-শাস্ত্র সমধিক প্রাচীন নর। ঐ শাস্ত্রের মধ্যেই উহা যে কলিবৃগের শাস্ত্র বলিয়া লিখিত আছে † এ কথাটিও বিজ্ঞ ব্যক্তিরা উহার আধুনিকত্বের পরি-চায়ক বিবেচনা করিতে পারেন। অমরসিংহ স্বর্গবর্গের মধ্যে যে স্থলে ভিন্ন

^{*} २०० 9회 1

[†] निर्वीर्थाः श्रीतजातीया विषद्दीनीरगा इव । सत्यादी सफला चासन् कली ते स्वतका इव ॥

মহ। নির্ব্বাণতন্ত্র।

ভিন্ন সংস্কৃত শাস্ত্রের নামোল্লেথ করিরাছেন, তথার তারের নাম সনিবেশিত নাই *। ঐ শাস্ত্র সে সমরে প্রচলিত থাকিলে, তাহা না থাকা কোন রূপেই সম্ভব ও সঙ্গত হইত না। তিনি খুষ্টান্দের বঠ শতালীতে বিদ্যান ছিলেন। অতএব উল্লিখিত যামল ভৈরবাদি তন্ত্র-শাস্ত্র তদপেক্ষা অনেক অপ্রাচীন। স্থতরাং কুর্মপুরাণও সেইরূপ নব্য গ্রন্থ বলিতে হয়। খুষ্টান্দের অষ্টম বা নবম শতালীর পর বিরচিত বা সঙ্কলিত বিষ্ণুপুরাণের † তৃতীর অংশের ষঠাধ্যারে ভিন্ন ভিন্ন সংস্কৃত শাস্ত্রের নাম নির্দেশিত আছে, কিন্তু তাহার মধ্যে তন্ত্রের নাম বিভ্যমান নাই। এই সমস্ত যুক্তি অনুসারে, তন্ত্রের বরংক্রম সহস্র বৎসর অপেক্ষা বড় অধিক হওরা সম্ভব নয়। অনেক তন্ত্র যে বালালা দেশেই প্রবর্ত্তিত হয়, উহার মধ্যেই সে বিষয়ের বহুতর নিদর্শন লক্ষিত হইয়া থাকে। কামধ্যে ও বর্ণোদ্ধার তন্ত্রে বর্ণ সমুদারের যেরূপ বর্ণন আছে, তাহা বালালা অক্ষরের বিষয়েই অধিক সঙ্গত হয়। কেবল বর্ণনা কেন? তন্ত্র-বিশেষে বর্ণোচ্চারণের যেরূপ বাবস্থা আছে, তাহা বালালা-দেশীয়। বিশেষতঃ বালালা-দেশীয় অর্থাৎ বালালার পূর্ব্ব-খণ্ডবাসী পণ্ডিব্রেরা যেরূপ উচ্চারণ করেন, উহাতে সেইরূপই ব্যবস্থিত হইয়াছে।

चुत्र्येध्वनितामिति यादिस्थे परमेखरि । पुत्र्येध्वनितामिति वादिस्थे तु विश्रेषतः ॥

বরদাতর। দশম পটল।

হকার যদি যকারের পূর্ব্বে অবস্থিত হয়, তাহা হইলে তাহার উচ্চারণ ঝকারের সদৃশ হইবে, (যেমন উহ্ন, বাহা ইত্যাদি)। আর বকারের পূর্ব্বস্থিত হইলে, ভকারের আয় উচ্চাবিত হইবে; (যেমন আহ্বান)।

অনরকোবের অন্তর্গত নানার্থের মধ্যে তন্ত্র শব্দ বিদ্যামান আছে বটে, কিন্তু তাহার
অর্থ ভন্ত-শান্ত্র নর; প্রধান, সিদ্ধান্ত, পরিচছদ ও স্ত্রবাপ অর্থাৎ তাত।

[&]quot;तन्न' प्रधाने सिद्धान्ते सूतवापे परिच्छदे।"

বদি এফুকারের সমরে তন্ত্রশাস্ত্র প্রচলিত থাকিত, তাহা হইলে তিনি তাহা অবগ্রই অবস্থ লিধিতেন তাহার সন্দেহ নাই। অতত্রব অমর সিংহের সময় পর্যন্ত ঐ শাস্ত্র প্রবর্তিত হর নাই ইহা নিঃসংশরে নিরূপিত হইল।

[†] कि प्र शदबरे विकृश्वान बन्नात्र प्रवत्निक्षण विषयदक श्राप्ता ।

यकारस त्रतीयलं पदादी मर्ळदा व्रजीत्। केयूरादावपि तथा अन्यत्र कार्डमात्रगः॥ বরদাভন্ত, দশম পটল ও প্রপঞ্চনার, তৃতীয় পটল।

পদের প্রথমে যকার থাকিলে, ফকারের ভার উচ্চারিত হয়; (यেमन यनि,

যব ইত্যাদি)। কেয়বাদি শব্দস্থিত যকারেরও ঐরপ উচ্চারণ হয়। অন্ত षाग्र एता हेहा कर्शतम हहेरा छेछात्रिक हहेना थारक ।

যে প্রিন্সেপ সাতের অতি প্রাচীন অপ্রচলিত অক্ষরে খোদিত অশোকরাকার অফুশাসন-পত্তের অর্থোন্ডেদ করিয়া জগিছিখ্যাত হইরা যান, তিনি নানা সময়ের খোদিত লিপির বর্ণাবলী পর্য্যালোচনা করিয়া নির্দ্ধারণ করেন, খুষ্টান্দের দশম শতাদীতে বাঙ্গালা অক্ষর প্রচলিত হয় *। অতএব কামধেলু, বর্ণোদ্ধার, বর্না, প্রপঞ্চনার ও দেই সমুদায়ের সমকালবর্ত্তী ও তাহার উত্তরকালে বিরচিত ব্দক্ত ব্যক্তর তম্নশাস্ত্র ঐ সমন্তের পর প্রস্তুত হয় তাহার সন্দেহ নাই।

বঙ্গদেশীয় পণ্ডিতেরা কেয়ুরকে কেজুর এবং আহ্বানকে আভ্ভান বলিয়া উচ্চারণ করেন। অভএব এইরূপ∳উচ্চারণ-বিধায়ক বরদাতন্ত্র, প্রপঞ্সার ও ভাদৃশ অন্ত অন্ত তাল্প লাল পূর্ব-৭তে বিরচিত হইরাছে ইহাতে আর সন্দেহ রহিল না। ঐ অঞ্লে ভান্তিক ক্রিয়ারও অধিক প্রাহর্ভাব দেখিতে ও ভুনিতে পাওয়া বার। ফলতঃ অনেক অনেক তন্ত্র যে ঐ প্রদেশে বিরচিত হর ইহা সর্বতোভাবে সম্ভব ও সঙ্গত। বাঙ্গালা ভাষার সহিত সংস্কৃত-বিভক্তি সংযোগ করিলে বেরূপ হয়, তন্ত্রের কোন কোন স্থলের ভাষা প্রায় সেইরূপ। পাঁচ শত ৰংসর পুর্বে বাঙ্গালা দেশে সংস্কৃত গ্রন্থ হচিত হইয়াছিল ইহার কোন নিদর্শনই লক্ষিত হয় না। অতএব বাঙ্গালা দেশে প্রস্তুত ঐ সমস্ত ভন্ত্র-গ্রন্থ ঐ সময়ের অপেকা প্রাচীনতর হওয়া কোন মতেই সম্ভব নর। কিন্তু উহার পূর্বে ভারতবর্ষে যে ঐ শাস্ত্র একেবারে প্রচারিত ছিল না এরপও বলিতে পারা যায় না। নবদীপ-নিবাসী রখুনন্দন ভট্টাচার্য্য কিঞ্চিদুন চারিশত বৎসর পুর্বের বিশ্বমান ছিলেন ৷ তিনি তিথিতত্ত্বে অন্তর্গত ছর্গোৎসব-প্রকরণে ও মল্মাস-তত্ত্বের অস্তর্ভু ত দীক্ষা-প্রকরণে মংস্তহক্ত, বারাহীতম্ব, করাল, ভৈরব, যামল ও

Useful tables by James Prinsep or Journal of the Asiatic Society of Bengal, vol VII., part I., pp VIII and XIV.

বীরতম্ব এবং জ্ঞানমালা, তত্ত্বার, সারসংগ্রহ্ প্রয়োগদার, মন্ত্রম্কাবলী প্রভৃতি বিবিধ ভন্ত্র-সংগ্রহের নামোলেথ বা বচন উ্দৃত করিয়াছেন *। অতএব ন্যুন করে পাঁচ ছয় শত বৎসর পূর্ব্বে অনেকগুলি তন্ত্র-প্রস্থ প্রচলিত ছিল তাহার সন্দেহ নাই। গাজিপুরের কীর্ত্তিস্তে ন্যুনাধিক আট শত বৎসর পূর্ব্বে অথবা তাহারও পরে থোদিত লিপি-বিশেষে তন্ত্রের নাম বিনিবেশিত আছে †। ঐ শক্ষটি তন্ত্র-শাস্ত্র-বাচক হইলে, সে প্রদেশে ঐ শাস্ত্র ঐ সময়ে প্রচারিত ছিল বলিতে হয়। কিছ কোন কোন তন্ত্র আবার অতীব আধুনিক; এমন কি, এক শতালী অপেকা অধিক প্রাচীন নয়। একথানি তন্ত্রে ভবিষ্যৎ-কথা কীর্ত্তন-চ্ছলে লগুন নগর ও লগুন-বাসী ইংরেজ্বদের নাম পর্যাস্থ বিনিবেশিত হইয়াছে ‡। পাঠ করিলে অক্লেশেই ব্ঝিতে পারা যায়, ঐ তন্ত্র ইংরেজ্বদের ভারতবর্ষাধিকার-প্রবর্তনের উত্তরকালে বিরচিত হয়।

पूर्वान्ताये नवशतं षड़शीति प्रकीर्त्तिताः ।

फिरिङ्गिभाषया मन्त्रास्तेषां मुंसाधनात् कलौ ॥
श्रिधिपा मण्डलानाञ्च संग्रामी वपराजिताः ।
द'रेजा नवषठ पञ्च लण्डजाञ्चापि भाविनः ॥

শক্ষর দ্রুমের হিন্দু শব্দে গৃত মেরু তদ্বের অমোবিংশ প্রকাশের বচন।
পূর্বানারে ফিরিন্সি-ভাষার বিরচিত নয় শত ছিয়াশীটি মন্ত্র উক্ত হইয়াছে।
শশুন-নগর-কাত পাঁচশত উনদোত্তর জন ইংরেজ সেই সমস্ত মন্ত্র সাধন পূর্বক
যুদ্ধানী হইগা বহু রাজ্যের অধীশর হইবে।

যাহা হউক, যথন অমরকোষ ও বিষ্ণুপুরাণে সংস্কৃত শাল্তের নামাবলির মধ্যে তন্ত্র-শাল্তের নাম সন্নিবিষ্ট নাই, তথন উহার বন্ধ:ক্রম সহস্র অংশক্ষা

^{*} ১৮৩৪ খৃষ্টান্দে শ্ৰীরামপুর মুজাযান্ত মুদ্রিত অষ্টাবিংশতি তক্ষের প্রথম ভাগের ৪৪, ৪৫ ও ৪৫৩ – ৪৫৫ পৃষ্ঠা।

⁺ ঐ लिशित मध्य ज्ञाविष्य उञ्चिष्य विश्वाप विश्वाप विश्व हरेशाहन। "तान्त्रधीदिश्चितीत्ते:।"—The Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. VI, p. 5.

[‡] লণ্ডন নগরের ফরাদী নাম (Londres) লক্র বা লণ্ড। তত্তকার তদমুসারেই পশ্চালিখিত বচনে ঐ নামের বর্ণবিক্তাদ করিয়াছেম দেখা যাইতেছে। উচ্চারণ কানিডেন নাবোধ হয়।

অধিক হওরা বিবেচনা-সিদ্ধ হয় না। স্থতরাং যে কৃশ্পপুরাণে ভিন্ন ভিন্ন তন্ত্রের নাম উল্লিখিত আছে, তাহাও তদপেকা অপ্রাচীন বই প্রাচীন হওরা কোন মতেই সম্ভাবিত নয়।

বিষ্ণুপরাণ।—বিষ্ণুপ্রাণের তৃতীয় অংশের অষ্টাদশ অধ্যায়ে বৌদ্ধ ও অর্হত অর্থাৎ জৈন সম্প্রদার সংক্রান্ত একটি উপাধ্যান আছে। ঐ উপাধ্যানটি বৌদ্ধ ও জৈন ধর্মের নিন্দা ও বিছেষ-স্থাচক। বৌদ্ধ ধর্ম্ম এখানে প্রচলিত না থাকিলে, তাদৃশ বদ্ধ-মূল বিছেষ-প্রকাশক উপাধ্যান-বিশেষ করনা করা সম্ভব বোধ হয় না। বৌদ্ধেরা খুষ্টাব্দের দ্বাদশ শতাকীতেও ভারতবর্ষের কোন কোন স্থলে বিদ্যমান ছিল তাহার স্ন্দেহ নাই। অতএব বিষ্ণুপুরাণ অথবা ভাহার এই সক্ল তুল উক্ত সময়ের পূর্বে বিরচিত হয়।

অন্তান্ত কতকগুলি প্রাণের ন্তায় বিষ্ণুপ্রাণের চতুর্থ অংশের চতুর্বিংশ অধ্যায়ে ভবিষ্যৎ কথন ছলে মৌর্যা, স্থান্ধ, কথ, অধাদি রাজবংশের প্রসাল আছে। এই সমস্ত বংশাবলী যে মনঃকলিত নয়, নানাস্থলে লক্ষ মুদ্রা ও খোদিত লিপিতে ভাহা সঞ্জীনাণ করিয়া দিয়াছে। মৌর্যা-রাজ্য-প্রবর্ত্তক চল্রগুপ্থ খুটাক্ষের ৩১২ তিনশত বার বৎসর পূর্বের্বিদ্যমান ছিলেন ইহা গ্রীক্ গ্রন্থকারদিগের গ্রন্থ-প্রমাণে নিঃসংশয়ে নির্মাপত হইয়াছে। মৌর্যবংশীয় রাজারা ১৩৭ একশত সাইত্রিশ, স্থান্ধবংশীয়েরা ১১২ একশত বার, কথবংশীয়েরা ৪৫ পঁয়তাল্লিশ ও অন্ধ্ বংশীয়েরা ৪৩৬ চাল্লিশত ছত্রিশ বৎসয় মসধ রাজ্যে রাজত্ব করেন ৩। এই লিপি অন্থসারে, ঐ চারি বংশের রাজত্ব-কাল ৭০০ সাত শত ত্রিশ বৎসর হয়। চক্রপ্থপ্রের সময় হইতে গণনা করিয়া দেখিলে, ৪১৮ চারি শত আঠার খুটাক্ষে অন্ধ্ বংশীয় রাজাদের রাজ্যাধিকার নিঃশেষিত হইয়া যায়।

^{*} বায়, ভাগবত ও বিশুপুরাণে অক্সুবংশীর ত্রিশ জন রাজা ৪৫০ চারিশত ছারার বংসর রাজত করেন এইরূপ লিখিত আছে। কিন্তু ঐ প্রত্যেক পুরাণে উরিখিত সম্বত নৃপতির নাম গণিয়া দেখিলে, ত্রিশ অপেক্ষা অনেক ন্যুম হয়। মংত্যপুরাণে উন্ত্রিশ জন রাজার প্রত্যেকের নাম ও রাজত্-কাল বিশেষরূপ নির্দেশিত হইরাছে। সেই সম্বত রাজত্-কালের সম্বি করিলে চারিশত প্রত্রিশ বংসর ছর মাস হয়।

| চারি বংশের রাজত্বকাল | ۰۰۰۹ ۰۰۰۰۰۰۰ |
|----------------------|--------------|
| চক্ত গুপ্তের সমর | খ্, পূ, ৩১২ |
| | थुष्टाय ४১৮ |

আন্ধ্রংশীয় তৃইটি রাজায় নাম যজ্ঞ ও পুলিমান্ *। মংসাপরাণে এই শেবাক্ত নামটি প্লোমান্ বলিয়। লিথিত ,আছে। চীন গ্রন্থকারেরাও এই ছইটি নরপতির নাম লিথিয়া গিয়াছেন; তদন্সারে, যজ্ঞ এ ৪০৮ চারিশত আট ও পুলোমান্ ৬২০ ছয় শত একুশ এটাকে রাজত্ব করেন। যজ্ঞ এর সময় বিষয়ে প্রাণ ও চীন গ্রন্থের সম্পূর্ণ ঐক্য দেখা যাইতেছে। প্লোমার বিষয়ে যে প্রভেদ দৃষ্ট হইতেছে, তাহা প্রাণ-সংগ্রহ-কারদের অমপ্রমাদ জন্য সংঘটিত হওয়াই সম্ব। কিন্তু প্রাণ-শাস্ত্রোক্ত ও চীন-গ্রন্থলিথিত প্লোমা যে এক ব্যক্তি, ইছাতে সন্দেহ করিবার কোন কারণ নাই। চীন গ্রন্থকার প্লোমার রাজধানী কুম্মপুয় ও পাটলিপুল্র বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। উহা যে মসধ রাভেয়ের রাজধানী ছিল, ইহা প্রসান্ধ সলিবেশিত রহিয়াছে। ইএই প্রাণে শক যবনাদি য়েছছ জাতীয়দের ভারতবর্ষীয় রাজত্বেও প্রসঙ্গ আছে। মত্যর প্রাণে শক যবনাদি য়েছছ জাতীয়দের ভারতবর্ষীয় রাজত্বেও প্রসঙ্গ আছে।। শকাদি কতকগুলি অসভ্য আতীয়দের ভারতবর্ষীয় রাজত্বেও প্রসঙ্গ আছে ।। শকাদি কতকগুলি অসভ্য আতীয় লোকে খুটান্সের কিছুকাল পূর্ব্ব হইতে পঞ্চম অথবা ষষ্ঠ শতাকী পর্যান্ত রাজত্ব করে ইছা স্থলান্তরে লিথিত হইয়াছে ‡। পশ্চাৎ গুপ্তনামক রাজবংশের বিষয়ও উল্লিথিত হইয়াছে।

चनुगङ्गाप्रयागं मागधा गुप्तास भोच्छन्ति ।

विकृश्रवान। १। २१। ४৮।

^{*ं} तत्रव गीमतीपुचः, तत्पुचः पुलिमान्, तस्यापि शातकणीं शिवशीः, ततः शिवस्तन्यः, तस्यात् यज्ञश्रीः।

ভাহার (অর্থাৎ শিবস্থাতির) পুত্র গোমতীপুত্র, গোমতীপুত্রের পুত্র পুলিমান্, পুলিমানের পুত্র শিষ্কী শান্তকর্ণী, শিষ্কীর পুত্র শিবস্কর, শিবস্করের পুত্র যক্তনী।

^{† &}quot;ततः वीष्य अकाम्भुजो भवितारः । ततय भर्षौ यवनाः चतुर्धं स्र तुखाराः" ज्वाद्।

[🗜] २१ पृष्टी।

মগধ-দেশীর গুপ্তবংশীরের। গঙ্গা নদীর সমীপে প্রেরাগ পর্যান্ত সমন্ত দেশ অধিকার করিবেন।

তাঁহারা খুঠান্দের সপ্তম শতান্দীর পর পর্যান্ত রাজত্ব করেন । অন্তএব এই পুরাণ অথবা ইহার বে অংশে তাঁহান্দের প্রদক্ষ আছে, তাহা তদপেক্ষা অপ্রাচীন। ইহার কিছু পরেই গিথিত আছে, মেজ্রাণি নিক্লষ্ট জাতীরেরা নিজুতট, দার্জিক-ভূমি, চক্রভাগা ও কাশ্মীর দেশ ভোগ করিবেন।

सिन्धुतट-दार्ळिकोर्बी-चन्द्रभागा-काम्मीरविषयान् व्रात्या को क्का-दयः ग्रुदाः भोच्यन्ति ।

विकृश्रवान । 8 । २8 । ১৮ ।

ব্রাত্য শূদ্র ও শ্লেচ্ছাদি জাতীয়ের। দির্ভট, দার্কিক্ত্মি, চক্রভাগা ও কাশীর দেশ ভোগ করিবেন।

এই ক্লেচ্ছ শব্দ মোদল্মান হওয়াই সম্ভব। মোদল্মানেরা প্রথমে খ্রীটাব্দের অটম শতাকীর প্রারম্ভে পঞ্চাব দেশ আক্রমণ করে এবং ঐ শতাকীর শেষে অথবা নবম শতাকীর প্রথম উল্লে তাহার কিরদংশ অধিকার করিয়া থাকে। চীনদিগের গ্রন্থ-বিশেষে নিথিত আছে, আরবীয়দের কর্তৃক আক্রাম্ভ হইয়া কাশ্মীরের রাজা ৭১০ সাত শত তের খ্রীটাব্দে চীন-দেশীয় নৃপতির সমীপে সাহায়্য প্রার্থনা করিয়া পাঠান। অতএব বিষ্ণুপুরাণ অথবা তাহার উল্লিখিত হল সমুদ্র খ্টাব্দের অষ্টম বা নবম শতাকীর পর বিরচিত হয় বলতে হইবে †। বায়ু, মৎসা ও ভাগবত পুরাণ।—সর্বাপেকা বায়ু ‡ পুরাণে পঞ্চ-লক্ষণাক্রাম্ভ

चतुर्णं वायुना प्रोक्तं वायवीयमिति स्मृतम् । श्रिवभक्तिसमायीगाच्हेवं तत्रापराख्यया ॥ (अवामाहोत्राः)

^{*} Asiatic Researches, vol. XVII. pl. I fig. 5.7,13 and 19; Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. III., pp. 262 and 339; Vol. V., P., 661; Vol. VI., pp. I—17, 454—458 and 970—980; Vol. VII., pp. 37 and 634 &c. Arina Antiqua, by H. H. Wilson. 1841 pp. 419, 422, 425, 427, 410 &c.

⁺ Wilson's Vishnu Purana, 1840, pp, 473-481 (74)

^{়া} ভিন্ন ভিন্ন গ্রন্থে উল্লিখিত পুরাণ-নামাবলীর মধ্যে কোন ছলে বা যুবা বারবীর এবং কোন ছলে বা ভৎপরিবর্ত্তে শিব বা শৈব পুরাণের নাম সন্লিবেশিত আছে। ঐ উভয়ই এক পুরাণের নাম।

পুরাণের সমধিক লক্ষণ লক্ষিত হইরা থাকে। ইহার বিভাগের নাম পাদ।
কেবল প্রাচীন গ্রন্থেই এই বিভাগসংজ্ঞাটি দেখিতে পাওরা বার; অভএব এটিও ঐ পুরাণের প্রাচীনন্ত্রের পরিচারক। এই পুরাণধানি অভান্ত সমুদার পুরাণ অপেক্ষা পূর্বতন বলিয়া অভুমিত হইলেও, ইহাতে এবং মংস্ত ও ভাগবত পুরাণে পূর্বোলিধিত বিষ্ণুপুরাণোক্ত সমস্ত বংশাবলির বিবরণ ও শক যবনাদির রাজত্ব-প্রসঙ্গ বিভ্যান আছে। অভএব এই সমস্ত পুরাণ বা এই সমুদারের ঐ সকল তুল ভাদৃশ অপ্রাচীন বলিয়া ত্বীকার করিতে হয়।

ভাগবতে যথন মেচ্ছগণ কর্ত্ক সিন্ধৃতট, চক্রভাগা ও কাশীরমগুলাধি-কারের প্রসঙ্গ আছে † তথন পূর্বোক্ত যুক্তি অমুসারে ঐ পুরাণ খুষ্টাব্দের অষ্টম বা নবম শতাকীর পরে রচিত বলিতে হইবে। পশ্চাৎ দৃষ্ট হইবে ঐ পুরাণ উহারও অনেক পরে প্রস্তুত হইরাছে বলিয়া প্রতীর্মান হয়। ক্রমশঃ তাহার প্রমাণ প্রদর্শিত হইতেছে।

রচনা-প্রণালী বিষয়ে পূর্ব্বোক্ত বিষ্ণু ও বায়ুপুরাণাদির সহিত ভাগবতের বিশেষ বিভিন্নতা দেখিতে পাওয়া যায়। উহার ভাষা কোন মতেই প্রাচীন নয়। ছিল্পুনমাজে ভাগবত ও মহাভারত এক গ্রন্থকারেরই প্রণীত বলিয়া প্রচলিত আছে। কিন্তু উভয়ের ভাষা পরস্পার বিস্তর বিভিন্ন। একের রচনা অন্তান্ত নব্য; অপরের অপেকারত প্রাচীন। মহাভারত সরল, ওজন্বী ও মধ্যে মধ্যে

भनुगङ्गामाप्रयागं गुप्तां भी च्यति मेदिनीम् ।

ভাগবত। ১২। ১। ২০॥

কিরূপে এরূপ পাঠান্তর ঘটিয়াছে, বলিতে পারা যায় না।

† सिन्धीसट' चन्द्रभागां कौन्ति' काप्सीरमख्खम्। भोच्यन्ति ग्रदा वात्राद्या खेच्छा चन्नच्चर्यसः।

ए जिंच छ । ३२ । ३ । ३२ ॥

বারু কর্তৃক কীর্ত্তিত চতুর্ব পুরাণের নাম বায়বীয় পুরাণ। তাহাতে শিবভক্তির উপদেশ আছে এই নিমিত্ত তাহার অক্ত একটি নাম শৈব।

^{*} ভাগবতে পূর্বেলিক গুপ্ত-কুলোভব রাজগণের প্রদক্ষ-সংক্রান্ত লোকটির বিস্তর বিভিন্নতা দেখিতে পাওয়া যায়। তাহাতে লিখিত আছে, বিশক্রি নামে এক রাজা পদ্মাবতী নগরে অমু-গঙ্গ-প্রদেশে (অর্থাৎ হরিছার হইতে প্রয়াগ পর্যান্ত গঙ্গা-সমীপত্র দেশে) রাজত্ব করেন। সেই লোকে শুপ্ত শব্দটি মেদিনীর বিশেষণ-স্বরূপ প্রয়োগ করা হইয়াছে।

সমধিক গান্তীর্যাশালা। কিন্তু ভাগবত অসরল, কঠিন, অলছ্ত, বিবিধ ছলোবিশিষ্ট ও সমধিক চিস্তা-সমৃত্ত। শেষােক গুণ গুলি নিতাস্ত অপ্রাচীন মচনারই লক্ষণ *। ভাগবতেরই প্রথম ছদ্ধের চতুর্থ অধ্যায়ে স্পষ্ট লিখিত আছে, ব্যাস প্রথমে প্রাণ ও ইতিহাস প্রস্তুত করেন †, তাহাতে পরিতৃপ্ত না হইয়া পশ্চাৎ এই ভাগবত রচনা করিয়া যান। অত্তর্র ভাগবতেরই প্রমাণাম্প্রারে, ভাগবত প্রাণ হইতে পারে না। উহা রচিত হইবার পুর্বে প্রাণ সমৃদার প্রচলিত ছিল বলিয়াই, ভাগবত-রচয়িতাকে একথা লিখিতে হইয়ছে ভাহার সন্দেহ নাই। ভাগবত মন্তাদশ প্রাণের অন্তর্গত নয়। বৈয়াকরণ ব্যোপদেব ইহা রচনা করেন এইরপ একটি প্রবাদও বহুকালাবধি চলিয়া আসিয়ছে। লোকসমাজে এই পুরাণ বিষয়ে যে সংশয় প্রচলিত ছিল, শ্রীধর-স্বামীর টীকাতেও ভাহা বিলক্ষণ লক্ষিত হইতেছে। ভিনি লিখেন,

भागवतं नामान्यदित्यपि नाग्रक्कनीयम्।

প্রথম শ্লোকের টাকা।

ভাগবত নামে অন্ত পুস্তক আে। এরপ সংশয় করা কর্ত্তব্য নয়।

শ্রীধর স্বামী যে পুরাণের টীকা করেন, তাহাই অর্থাৎ বিষ্ণুপ্রধান প্রচলিত ভাগবতই প্রকৃত ভাগবত এ বিষয়ে সংশব্দ না থাকিলে, তিনি কেনই বা এরপ কথা উপস্থিত করিবেন? সেই গ্রন্থের অমুকূল ও প্রতিকৃল পক্ষে ঘোরতর বিবাদ বিস্থাদ ও ঘটিয়া গিয়াছে। সেই বিবাদ কিরূপ বিছেষস্চক ও বদ্দুল হয়, উভয়-পক্ষের বিরচিত হর্জ্জন-মুখ-চপেটকা, হর্জ্জনমুখপদ্ম-পাছকা ভাগবতস্বরূপবিষয়শক্ষানিরাস্ত্রেয়াদশ ইত্যাদি বহুতর গ্রন্থের নামেতেই তাহার

তবে গ্রন্থকার যে যে স্থলে নিজের ভক্তিভাবাদি প্রকাশ করিরাছেন, তথার উদ্ধিতিত
লক্ষণের ব্যক্তিচার দেখিতে পাওরা যায়।
 কার যে যে স্থল প্রাচীনতর গ্রন্থ ইইতে সঙ্কনিত, তথার
র
মধ্যে মধ্যে সেই গ্রন্থের পদ-সমূহও উদ্ধৃত হইরাছে।

⁺ ऋग्यजुःसामाधर्वाखा वेदासतार उद्गाः। इतिहासः पुराषस पश्चमी वेद उच्चते॥

ভাগবভ । ১। ৪। ২ । ॥

⁽ব্যাসদেব) ঝক্, যজুং, সাম, অথবৰ্ষ এই চারি বেদ পৃথক্ করিলেন এবং পঞ্চম বেদ বলিল্লা উলিখিত পুরাণ ও ইতিহাসও সঙ্কলন করিলেন।

শ্লষ্ট পরিচর দিতেছে। কিছু মূণ না থাকিলে, উক্তরণ প্রবাদ কেনই বা প্রচারিত হইবে ? ব্যোপদেব যে সাতিশর বিষ্ণু-ভক্ত ছিলেন ইহা তাঁহার ব্যাকরণেই সুস্পষ্ট প্রকাশিত আছে। অতএব ঐ প্রবাদ কোন রূপেই অসলত নর।

ভাগবত সংক্রাস্ত উল্লিখিত করেক থানি গ্রন্থের হুই থানিতে লিখিত আছে. ব্যোপদেব হেমাদ্রির আশ্রিত ব্যক্তি ছিলেন। ঐ হেমাদ্রি দেবগিরির (অর্থাৎ দৌলতাবাদের) রাজা রামচক্রের মন্ত্রী। অনেক গুলি গ্রন্থ হেমাদির ক্লত বলিয়া প্রচলিত রহিয়াছে। দে সমুদায় তাঁহার অমুরোধে ব্যোপদেব कर्द्धक वित्रिष्ठि এই त्रेश कन श्रेवांग आहि; रायन मानर्श्यासि, रश्यासिमासि, **হেমা**দ্রিতবিধি ইত্যাদি *। ভূবন-বিখ্যাত কোল্ফ্রক ব্যোপদেব কৃত হরলীলাক্রমণী নামক গ্রন্থের প্রসঙ্গ মধ্যে লিখিয়াছেন, এই গ্রন্থ দেবপিরি রাজ্যের রাজা রামচন্দ্রের মন্ত্রী হেমাদ্রির অন্মরোধে ব্যোপদেব কর্তৃক বিরচিত। শ্রীমান ওয়ালটর এলিষ্ট দক্ষিণাপথের অন্তর্গত নানাস্থানের বহুসংখ্যক থোদিত লিপির তাংপর্যার্থ ব্যাখ্যা করেন। তল্মধ্যে দেবগিরির যতবংশীর নুপতিগণের দানপত্র বিবরণে দেখিতে পাওরা যায়, উল্লিখিত রাজা রামচল ১১৯৩ এগার শত তিরনকাই শকে অর্থাৎ ১২৭১ বার শত একান্তর খ্রীষ্টাব্দে দেবগিরির রাজসিংহাসনে অধিরোহণ করেন †। অতএব তিনি তদীয় মন্ত্রী হেমাজি ও হেমাজির পণ্ডিত ব্যোপদেব খুষ্টাব্দের অয়োদশ শতাকীর শেষার্দ্ধে বিদ্যামান ছিলেন। স্থতরাং ব্যোপদেব-প্রণীত ভাগবতও ঐ সময়ে व्यर्थाए नःनाधिक इत्र भक वर्णत शूर्व्स वित्रिक्तिक इत्र विनरक इहेरत । 🕇

ভারতবর্ষে বৌদ্ধর্ম এক সমরে অতীব প্রবল হইর। উঠে। পশ্চাৎ খুষ্টাব্দের পঞ্চম শতাকী হইতে সপ্তম শতাকী পর্যান্ত ক্রমশং ক্ষীণ হইরা আইসে এবং অষ্টম শতাকী হইতে উত্তরোত্তর অতি শীঘ্র হাস পাইরা হাদশ শতাকীর পরে ভারতবর্ষ হইতে একবারে অন্তরিত হইরা যায়। যে সমরে ঐ ধর্ম এথানে সমধিক ক্ষীণ হইরা আসিরাছিল, সেই সমরে ও তাহারও

^{*} H. H. Wilson's Mackenzie collection, Vol. I., pp. 32 and 34.

⁺ Royal Asiatic Society's Journal, vol. IV., pp. 26-28.

[‡] Le Bhágavata Purana, par E. Burnouf, Preface, pp LIX-CIV.

উত্তর কালে পুরাণ সকল রিচত হয় শেথিতে পাওয়া যাইতেছে। অতএব এই ধর্মকে তুর্মল করিয়া হিন্দুধর্মকে সমধিক প্রবল করাই পুরাণকর্তাদের উদ্দেশ হইতে পারে। পুরাণে এ বিষয়ের স্থাপ্ত নিদর্শন স্বরূপ উপাথান-বিশেষও দৃষ্ট হইয়া থাকে *। এ শাস্তে বৌদ্ধর্মের পর হিন্দুধর্মের পুনকদীপন করিয়াছে ইছাতে সন্দেহ নাই। পণ্ডিত প্রবর কুমারিল বৌদ্ধন্মকদীপন করিয়াছে ইছাতে সন্দেহ নাই। পণ্ডিত প্রবর কুমারিল বৌদ্ধন্মকদীপর একটি প্রবল বিপক্ষ এবং শঙ্কর ও রামামুক্ত এই পুনকদীপ্ত হিন্দু-ধর্ম-প্রণালীর প্রধান প্রবর্তক। কুমারিল ভট্ট প্রীষ্টাক্ষের সপ্তম শতাক্ষীতে † বিভামান ছিলেন। তিনি নিক্ষ প্রত্যে পুনঃ পুনঃ বৌদ্ধ-মতের প্রাভবাদ করেন এবং বৌদ্ধনের প্রতি যার পর নাই বিষেষ প্রকাশ করিয়া যান ‡।

^{*} বিষ্পুরাণ। ১ অংশ, ৬ অধ্যায় এবং ৩ অংশ, ১৮ অধ্যায়।

[†] দক্ষিণাপথের অন্তর্গত মলয়বর দেশে কুমারিল ভট্টের বৃত্তান্ত-বিষয়ক অনেক প্রমাণ প্রচলিত আছে এবং তদকুসারে ঐ দেশীয় কেরল-উৎপত্তি নামক গ্রন্থে এইরূপ লিথিত হয় য়ে, তিনি শঙ্করাচায়্যের এক শত বৎসর পূর্বে মলয়বরে প্রাপ্তপূর্ত হল এবং তথা হইতে বৌদ্ধগণকে নিন্ধাশিত করিয়া দেন। দক্ষিণাপথের অন্ত অন্ত অন্ত গ্রন্থেও এবিষয়ের ক্মপন্ত প্রমাণ আছে। তুলবাদেশীর ব্রাহ্মণেরা প্রথমে ঐ কুমারিল ভট্টেরই সম্প্রদায়- টুক্ত ছিলেন; তাহাদের এইরূপ দৃঢ় সংস্কার আছে য়ে, কুমারিল ভট্ট শঙ্করাচার্য্যের কিছু পূর্বের বৌদ্ধগণকে নিগ্রহ ও পরাভব করেন। ব্রহ্মপত্রের শঙ্করভারের কুমারিলের নাম ক্মপন্ত লিখিত না থাকুক, কিন্ত হ, ট, কোল্ ক্রক্ বিচার করিয়া দেখিয়াছেন, ঐ গ্রন্থে তাহার মত-প্রসঙ্গ বিদ্যমান আছে। অতএব তিনি শঙ্করাচার্য্যের প্রকাতন লোক তাহার সন্দেহ নাই। শঙ্কর খ্টান্ধের অন্তম শতান্ধীর শেষ বা নবম শতান্ধীর প্রথম ভাগে বিদ্যমান ছিলেন। অতএব কুমারিলকে ঐ অন্তের সপ্রম শতান্ধীর লোক বলিয়া নির্দ্ধারণ করিতে পারা যায়। এই সিদ্ধান্তের বিকল্প কোন যুক্তি ও কোন প্রমাণই উপস্থিত হয় নাই। প্রত্যুত্ত, উাহার সংক্রান্ত সকল কথাতেই ইহা সপ্রমাণ করিয়া আসিতেছে।*

[‡] হিন্দুরা যে, বৌদ্ধদিগকে নৃশংসভাবে নিগ্রহ করেন, তাহার ভূরি ভূরি প্রমাণ ও বিস্তর বিস্তর নিদর্শন প্রাপ্ত হওয়া যার। কাশীর সমীপস্থ সর্নাথ বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ের একটি প্রধান স্থান ছিল। বৃদ্ধ বর্ত্তমান থাকিতেই সর্নাথের বিহার প্রস্তুত হয়। তথার বৌদ্ধদের অনেক দেবালয় ও দেব-প্রতিমূর্ত্তি এবং একটি অত্যুৎকৃষ্ট বিদ্যালয় ছিল। ঐ সর্নাথ একেবারে নষ্ট হইয়া গিয়াছে। তাহার চারি দিকে এরশ প্রভূত ভন্ম-রাশি বিদ্যমান আছে যে, দেখিয়া বোধ হয়, বৌদ্ধ-দেবী শক্ত-পক্ষীয়ের। সমুদায় ভন্মীভূত করিয়াছে ।

^{*} H. H. Wilson's Sanscrit and English Dictionery, 1819, Preface, pp, xviii and xix and Mackenzie Collection, Vol, I., p. Lxv. H. T. Colebrooke's Miscellaneous Essays, 1873, Vol. I, p, 323. Buchanan's Mysore, Vol. III, p. 91,

⁺ Asiatic Researches, vol. V., p. 131. Miss E. Robert's Views in India, China, and the Red Sea, vol. II. p. 8; Cunningham's Bhilsa Topes,

শক্ষরাচার্য্য বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ের বিষেধী ছিলেন এইরূপ একটি প্রবাদ প্রচলিত আছে। তিনি নেপালবাসী বৌদ্ধগণের বিস্তর গ্রন্থ করিয়া ফেলেন এবং বৌদ্ধরাও তাঁছার প্রতি বিরূপ হইয়া যৎপরোনান্তি ক্রোধ ও ত্বণা প্রকাশ করিয়া থাকে *। শঙ্কর-শিষ্য আনন্দগিরি বৌদ্ধদের সহিত তাঁহার বিচার-প্রস্তাব বর্ণন করিয়াছেন †। বৌদ্ধরা এখানে প্রাহ্নভূতি বা সচরাচর বিশ্বমান না থাকিলে, এরূপ প্রতিবাদিতা ও বিদ্বেষ প্রকাশ সম্ভব হয় না। তাহারা ভারতবর্ধে খ্রীষ্টাব্দের ঘাদশ শতাক্ষী পর্যান্ত উপস্থিত ছিল। অতএব সে সময়ের পূর্ব্ব ভিন্ন উত্তরকালে শঙ্করাচার্য্যের জীবিত থাকা কোনরপেই সম্পত হয় না।

মাধবাচার্য্যের ভ্রাতা সায়নাচার্য্য দক্ষিণাপথের সঙ্গম নামক নৃপতিবিশেষের মন্ত্রী ছিলেন। সায়নাচার্য্য ধাতৃবৃত্তি নামে একথানি গ্রন্থ প্রণয়ন করেন, তাহাতে এইরপ বর্ণিত আছে যে,

दतिपूर्व्व-दिचण-पश्चिमसमुद्राधीष्वरकम्मराजसुतसङ्गमराजमहा— मन्त्रिणा मायणपुच्चेण माधवसहोदृरेण सायनाचार्य्येण विरचिता माधवीया धातुव्रत्ति:।

জগৎসিং, কনিংহেম, কিটো, টমস্ ও হল ্ঐ স্থান খনন ও অনুসন্ধান করিয়া প্রতাক্ষ দেখিয়া-ছেন, অস্থি, লৌহ, অর্দ্ধার লৌহরাশি, পিত্তলপিও, কাঠ, প্রস্তার, প্রস্তান্ত করি, দক্ষ শস্তাও অস্থিত্ব অন্ধ একত্র রাশীকৃত রহিয়াছে। মনুষ্য, দেবালয় ও দেব-প্রতিমূর্ত্তি যে একত্র ধ্বংস করা হয়, ঐ সমুদ্র তাহারই নিদর্শন। দক্ষিণাপথে কুমারিল ভট্ট বৌদ্ধাদিকে অত্যন্ত পীড়ন ও সর্বতোভাবে পরাভব করিয়া স্বদেশ হইতে বহিভূ ত করিয়া দেন। মাধবাচার্যা লিখিয়াছেন, কুমারিলের সহায়-ভূত স্থাবা রাজা বৌদ্ধ-সম্প্রদার সংহার উদ্দেশে এই আদেশ দেন যে,

भारीतीरातुषाराद्रे वींदानां बद्धवालकः।

न इन्ति यः स इन्तव्यी सत्तानितान्वशात्र्यः॥

রাজা স্বকীয় কর্মচারিগণকে আদেশ করিলেন, এক দিকে সেতুবন্ধ রামেশ্র, অপর দিকে হিমালয় পর্বত, ইহার মধ্যে আবাল-বৃদ্ধ যত বৌদ্ধ আছে, সকলকে সংহার কর। বাহারা বধ করে না, তাহাদিগকে বধ কর।

- * Asiatic Researches, Vol., XVI., p. 423.
- + শঙ্করবিজয়। ২৮ প্রকরণ।

chapter XII and also his Arhæological Survey Report published in the Supplementary Number of the Journal of the Asiatic Society of Bengal for 1863, pp-xciv—cxix.

সেই দক্ষম রাজার পূত্র বুক ও হরিহর বিজয় নগর পত্তন করেন। মাধবাচার্য্য অপ্রপ্রীত প্রন্থ সমুদায়ে এই দক্ষম রাজার নাম উল্লেখ করিয়াছেন। ১৮০০
খুষ্টাকে চিত্র হুর্নে তিন খানি পিত্তলপত্র প্রাপ্ত হওয়া যায় * তাহাতে দেবনাগর
অক্ষরে দক্ষম রাজা ও তাঁহার পূত্র হরিহর, বুক প্রভৃতির নাম ও রাজ্য-কাল
লিখিত আছে।

श्रभूदस्य कुले श्रीमान् भूमी गुरुगुणोदयः। श्रपास्तदुरितासङ्गः सङ्गमो नाम भूपतिः॥ श्रासन् इरिचरः कम्यो वृक्षरायो मच्चीपतिः। मारपोसुद्गपञ्चेति कुमारास्तस्य भूपतेः॥

তাঁহার বংশে পাপ-বর্জ্জিত এবং উৎকৃষ্ট-গুণ-যুক্ত শ্রীমান সঙ্গম রাজা উৎপন্ন হন; তাঁহার পাঁচ পুত্র; হরিহর, কম্প, বুকরান্ন, মারপ এবং মুদ্য।

হরিহর রাজা কিছু ভূমি-দান করেন। ঐ পিত্তলপত্তে ভাহার বিবরণ ও সময়-নিরূপণ আছে। সে সময় ীই,

> ऋषिभूबक्किचन्द्रे तु गणिते धातवसारे। माघमारे शुक्तपचे पौर्णमास्यां महातियौ। मच्चत्रे पिढदैवत्ये भानुवारेण संयुते॥

১৩১৭ শকে, (অর্থাৎ ১৩৯৫ খুষ্টাব্দে) ধাতবর্ষে, মাঘ মাসে, শুক্লপক্ষে, পৌর্ণমাসী তিথিতে, পিতৃদৈবত্য অর্থাৎ মঘানক্ষত্রে, রবিবারে †।

বেলিগোল পর্বতের একথানি প্রস্তরে থোদিত আছে, ১২৯০ শকে বুক রাজা জৈন এবং বৈষ্ণবদিগের বিবাদ-ভঞ্জন পূর্বক পরস্পার সন্ধিস্থাপন করিয়া দেন ‡। অতএব যথন হরিহুর রাজা ১৩১৭ শকে রাজসিংহাসনে অধিরুঢ় থাকেন এবং বুক রাজা ১২৯০ শকে বর্তমান ছিলেন, তথন তদীয় পিতা সঙ্গম রাজার মন্ত্রী সায়নাচার্য্যের ভ্রাতা মাধ্বাচার্য্য শকাব্দের ত্রেরোদশ ও থৃষ্টাব্দের চতুর্দিশ শতাকীর মধ্যভাগে জীবিত ছিলেন বলিতে পারা যায়। সেই মাধ্বাচার্য্য

^{*} Asiatic Researches, London 1809, vol, IX., p. 416.

⁺ Asiatic Researches London, 1809. vol. IX., pp. 417-421.

[‡] Asiatic Researches, London, 1809, vol. IX., p. 270.

निख-इ॰ भक्त पिशिष प्र গ্রাম্থের উপক্রমে লিপিয়া যান, "प्राचीनशहरज्ञ सारः संगृद्धाते खाउन्।" প্রাচীন শঙ্কর অয় গ্রাম্থের সার-সংগ্রহ হইল। এবং ''ল্, নী তিন सम्यक् कविभिः पुराये:।" অন্ত অন্ত প্রাচীন কবি শঙ্করাচার্য্যের বর্ণনা করিয়াছেন।

ন্যন সংখ্যা তিন চারি শত বংসর পূর্বকার লোক না হইলে প্রাচীন বলিয়া উরিখিত হইতে পারে না। অতএব শহরাচার্য্যের চরিত-রচিয়তা পণ্ডিতগণ যদি এইরপ প্রাচীন হইলেন, তাহা হইলে, তাঁহাকে ৮।৯ শত বংসর অপেক্ষায় অগ্রাচীন বলিয়া কোনমতে স্থাকার করিতে পারা যায় না যে রামায়জ আচার্য্য শঙ্করাচার্য্যের অবৈভবাদের প্রতিবাদ করিয়া বিশিষ্টাইছত মত সংস্থাপন পূর্বক স্থনাম-প্রাসিদ্ধ বৈষ্ণব-সম্প্রদায় প্রবর্ভিত করিয়া যান, তিনি প্রীষ্টাব্দের ঘাদশ শতাকীতে * প্রাহর্ভ্ ত হন। এ প্রমাণেও শঙ্করাচার্য্য প্রীষ্টাব্দের একাদশ শতাকীর লোক অপেক্ষা অপ্রাচীন হইতে পারেন না। তাঁহার সমকালবভী আননদ গিরি শঙ্করবিজ্বরে ভট্টের অর্থাৎ কুমারিল ভট্টের প্রসঙ্গ উপস্থিত করিয়া-ছেন।

रुषाख्यपुरात् व्राष्ट्राणाः समागमा परमगुरुमिदमूचः खामिन् भद्वाचार्य्याख्योद्दिजवरः किथुद्दग्दे शासमागत्य दुष्टमतावलिक्वनो बीषान् जैनानसङ्क्यातान् राजमुखादनेकविद्याप्रसङ्गभेदैनिर्जित्य तिषां शोषीणि परश्रभिन्छिच्वा वहुषु उल्बूखलेषु निच्चिप्य कट-भ्रमनैसूर्णीक्रत्य चैवं दुष्टमतध्वं समाचरन् निर्भयो वर्त्तते इति ।

শঙ্কর বিজয়। ৫৫ প্রকরণ।

ব্রাহ্মণগণ রুদ্ধ নামক নগর-বিশেষ হইতে আগমন করিয়া পরম গুরু শঙ্করা-চার্য্যকে বলিলেন, ভট্টাচার্য্য নামে কোন ব্রাহ্মণ উত্তর অঞ্চল হইতে সমাগতে হইয়া অকুতোভরে উপস্থিত রহিয়াছেন। ইনি নূপভিবিশেষের আদেশ ক্রমে অনেক রূপ বিছা-প্রসঙ্গ ছারা ছ্ট-মতাবলম্বী বৌদ্ধ ও জৈন সম্প্রদায়ী অসংখ্য ব্যক্তিকে পরাজয় করেন এবং পরশু প্রহার ছারা তাহাদের মস্তক সমুদায় ছেদন ও উদ্ধল সমূহে নিক্ষেপণ পূর্ব্বক চুলীক্বত করিয়া ছুইমত বিনাশ করেন।

উল্লিখিত শহরবিজয় গ্রন্থে ঐ ব্রাহ্মণের নাম কেবল ভট্ট বলিয়া লিখিত

প্রথম ভাগ, রামাসুজ-সম্প্রদার, ৬ পৃঠা ৷

আছে : কুমারিলের নাম স্পষ্ট নাই, কিন্তু ভট্ট-উপাধি-বিশিষ্ট বাবতীয় পণ্ডিতের মধ্য कुमात्रिलहे विषम वोष दिशो ७ नुनश्म छाद वोष्टामत शीष्ट्रनकाती हिलन ইহা প্রসিদ্ধই আছে। তিনি খুষ্টাব্দের সপ্তম শতাব্দীতে প্রাহত্ত হন। শহরের সমকালবত্তী আনন্দগিরি যথন তাঁহার উল্লেখ করিয়াছেন, তথন শঙ্করকে কুমা-রিলের উত্তর-কালীন লোক বলিয়া অনুমান করিতে হয়। কিন্তু আনন্দগিরি ঐ উভয়কে পরম্পর সমকালবন্তী বলিয়া বর্ণন করেন। ভারতবর্ষীয় পণ্ডিতেরা শহরের সহিত ভটের কেন? কল্পনা বলে ব্যাসদেবের ও সাক্ষাৎকার ও বাধ্য-বাধকতা সংঘটন করাইয়া দেন *। সেটি শ্বতন্ত্র কথা, বিচার-সহ নয়। শহরা-চার্যা যেরূপ ধর্মবিপ্লব উপস্থিত করেন, তাহা প্রসিদ্ধই আছে। চীনদেশীয় তীর্থ-যাত্রী হিউএন থ্রঙ্গ গ্রীষ্টাব্দের সপ্তম শতাব্দীর প্রথমার্দ্ধে ভারতবর্ষে অনেক বৎসর অবস্থিতি করিয়া সর্বস্থান পরিভ্রমণ পূর্বক ভারতবর্ষীয় জ্ঞান, ধর্ম ও অন্ত অন্ত नाना विषय्त्रत यक्तर मित्रिक वर्गन करतन, ভाशां के नमस्त्र वा ভाशांत किছ পুৰ্বেষিদি হিন্দু সমাজে ভাদুশ ধৰ্ম-বিপ্লব সংঘটিত বা আন্দোলিভ হইত, ভাহা হইলে তাঁহার অমণবিবরণে দে বিষয়ের প্রদক্ষ না থাকা কোনরপেই সক্ষত নয়। यथन के खमन विवतरन रमक्रम धर्मारनानरनत किছुमाल निम्मन नाहे, ज्थन के সময়ের উত্তরকালে কোন সময়ে শঙ্করাচার্য্যের প্রাহর্ভাব হওয়া দর্বতোভাবে সম্ভব। অত এব তিনি এক দিকে খুষ্ঠান্দের সপ্তম শতান্দী ও অপর দিকে উহার একাদশ শতাব্দী এই উভয় কালের মধান্তলে বিদামান ছিলেন এইটিই প্রতীর্মান হইরা উঠিল।

শহরাচার্য্যের বিশাস্থাত্মি মলয়বর দেশীয় লোকের এইরূপ বিশাস আছে
বে, তিনি সহস্রাধিক বংসর পূর্বের স্থাসিদ্ধ মত প্রচার করেন † এবং
তেলগু ভাষায় বিরচিত কেরল-উৎপত্তি নামক গ্রন্থে লিখিত আছে,
মলয়বর দেশের শাসনকর্তা শিওরাম যে সময়ে রুফরাওকে পরাজয়
করেন, সে সময়ে শকরাচার্য্য বিদ্যামান ছিলেন। এই ব্যাপারটি ন্যনাধিক সহস্র বংসর পূর্বের সংঘটিত হয়। এ প্রমাণামুসারেও, শক্ষরাচার্য্য

^{*} भक्तिविक्ता, ६२ श्रकत्र ।

⁺ Buchanan's Mysore, Vol. II., p. 424.

ন্যনাধিক সহস্র বৎসরের পুর্বের লোক হইরা পড়েন। রামযোহন রায় শঙ্করাচার্য্যের শিষ্য-পরম্পরার সংখ্যা গণনা করিয়া বিবেচনা করেন, তিনি ঐ রূপ সময়েই প্রাহ্ভূতি হন।

কর্ণেল, মেকেন্জি ভারতবর্ষের দক্ষিণ থণ্ড হইতে যে সমস্ত গ্রন্থ সংগ্রহ করেন, ভাহার মধ্যে একথানি গ্রন্থে কেরল-উৎপত্তির অমুবাদ আছে। তাহাতে লিখিত আছে, শঙ্করাচার্য্য মলয়বর রাজ্যের অধিপতি চেরুমন্ ও পেরুমল নামক নৃপতির সময়ে বর্ত্তমান ছিলেন। খুষ্টিয়ধর্ম সম্প্রদারে সেই রাজার অমুরাগ থাকাতে, ইয়ুরোপীয় পণ্ডিতেরা তাঁহার সংক্রাস্ত অনেকানেক বিষরণ লিপিবদ্ধ রাধিয়াছেন। একটি গ্রন্থকার * লেখেন, তিনি মলয়বরের অমুর্গত, কলিকোছ (Calicut) নগর পত্তন করেন। কেহ † বলেন, ১০৭ ও অপর কেহ ‡ বলেন, ৮২৫ খুষ্টাব্দে ঐ নগর নির্ম্মিত হয়। অত এব অপরাপর বৃক্তি ক্রমে শক্ষরাচার্য্যের যে সময়ের বিদ্যমান থাকা বিবেচনা-সিদ্ধ বোধ হয়, ঐ প্রেক্ত সময়ের সহিত ভাহার সম্পূর্ণ ঐক্য দেখা যাইতেছে। গ্

শঙ্করদিথিজ্বরে লিখিত আছে, তিনি কাশ্মীর দেশে গমন পূর্ব্ধক বিপক্ষ দিগকে জন্ম করিয়া সরস্বতীপীঠে অবস্থিতি করেন। রাজতরঙ্গিণীতেও ইহার অফুরূপ একটি বৃত্তান্ত প্রাপ্ত হওয়া যায়। ললিভাদিত্যের রাজত্বের শেষ-কালে কতকগুলি তীর্থযাত্রী কাশ্মারস্থ সরস্বতীপীঠ-সন্দর্শনার্থ আগমন করে এবং তত্ত্ব-প্রশক্ষে ধর্ম-সম্বনীয় কোন কারণ বশতঃ ঘোরতর সংগ্রাম উপস্থিত হয়।

> गौड़ोपजीविनामासीत् सस्वमत्यद्भुतं तदा। जहुर्यं जीवितं धीराः परीचस्य प्रभोः क्षते॥ सारदादम् निमषात् काम्मीरान् संप्रवेम्य ते। मध्यस्यदेवावसयं संहताः समवेष्टयन्॥

রাজতরঙ্গিণী। চতুর্থ তরঙ্গ । ৩২৪ ও ৩২৫ শ্লোক।

ললিভাদিভ্যের সময়ে গৌড়-দেশীয় ব্যক্তিগণের অত্যুদ্ধুত কার্য্য দংঘটিত হয়।

^{*} Assemannus. + Scaliger. ‡ Vischerus,

[¶] H. H. Wilson's Sanscrit and English Dictionary, Preface, xvii., note.

সেই পণ্ডিতগণ অপ্রত্যক্ষ দেবতার জন্ম প্রাণ ত্যাগ করেন। তাঁহারা সরস্বতী-সন্দর্শন উদ্দেশে কাশ্মীর প্রবেশ পূর্বক একত্র হইয়া তন্মধ্যস্থিত দেবালয় পরি-বেষ্টন করেন।

কাশীর দেশ, তন্মধ্য-স্থিত সরস্বতীপাঠ, উভয় পক্ষের অবশ্বিত ধর্ম-মতের অনৈক্য এই বিবাদের কারণ ইত্যাদি অনেক বিষয়ে রাজতরঙ্গিণী এবং শঙ্কর-দিখিজয় উভয় গ্রন্থে সম্পূর্ণ ঐক্য দেখা যাইতেছে। অতএব শঙ্করাচার্য্য ও তদীয় সমভিব্যাহারী শিষ্য-সম্প্রদায় এই বিবাদের একপক্ষ থাকা নিতান্ত সম্ভব। রাজতরঙ্গিণীতে সেই সকল ব্যক্তি গৌড়োপজীবী বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছে এই একটু বিশেষ দেখা যাইতেছে। হয়, শঙ্করাচার্য্যের সহিত অনেক গৌড়দেশস্থ শিষ্য ছিল, না হয়, অস্তু কারণ বশতঃ তাঁহাদের জাতীয় নাম পরিবর্ত্তিত হইয়া গ্রন্থকর্তার শ্রুতিগোচর হইয়াছিল। রাজতরঙ্গিণীয় মতে, ললিতাদিত্য খুষ্টাব্সের অষ্টম শতান্দীয় মধ্যভাগ * পর্যান্ত রাজত করেন। স্থতরাং তদমুসারে শঙ্করাচার্য্য সেই সময় বিদ্যমান ছিলেন বলিতে হয়। অন্যান্ত প্রমাণেও তাঁহাকে যে সময়ের লোক বলিয়া প্রতীতি জনেয়. উল্লিখিত ব্যাপারের সংঘটন-কালের সহিত তাহার অধিক অস্তর দেখা যায় না। যাহা কিছু অস্তর, তাহা ভারতবর্ষীয় পূর্বতন গ্রন্থ-কার বিরচিত ইতিহাস-পুস্তকের পক্ষে কিছু মাত্র অসম্ভব নয়।

মলয়বর দেশে আচার্য্যবাগভেদ্যা নামে একটি শক প্রচলিত আছে। ঐ শক শকরাচার্য্য হইতে প্রতিষ্ঠিত হয়। তিনি ঐ দেশে অভিনব প্রকার আঁচার ব্যবহার প্রণালী সংস্থাপন করেন বলিয়া ঐ শক প্রবর্ত্তিত হয় এইরূপ খ্যাভি আছে। একলে † ঐ শকের ন্যাধিক সাড়ে দেশ শত বংসর অতীত হইয়াছে ‡। ইহা হইলে, তিনি খ্রীষ্টাব্দের নবম শতাক্ষীর প্রথম ভাগে প্রাত্ত্তিত হন এইটিই প্রতিপ্রহা উঠে। এই সিদ্ধান্তটি পূর্ব্বোক্ত অপরাপর সম্পর ব্কিরই অনুমোদিত।

শঙ্করাচার্য্য খ্রীষ্টান্দের নবম শতাব্দীন্তে নির্দিষ্ট নিয়ম-ক্রমে শৈব-ধর্ম প্রচার করেন এবং রামামুকাচার্য্য উহার বাদশ শতাব্দীতে রীভি-বিশেষ অমুসারে বৈষ্ণবধর্ম প্রচলিত করিয়া যান। অতএব ভাদৃশ অভিনব ধর্ম্ম-প্রণালীর উদ্দীপন-

^{*} १) ৫ থ ষ্টাব্দের প্রথম মাস হইতে १৫১ খৃষ্টাব্দের অন্তম মাস পর্যান্ত।— Asiatic Researches. Vol. XV., p. 81.

^{🕇 &}gt;४४२ थ्रीहोत्सः।

[†] The Transactions of the Literary Society of Madras. Part I. p, 59.

কারী বর্ত্তমান পুরাণ গুলি ঐ ঐ সময়ের পরে রচিত ও সঙ্কলিত হওয়াই সর্বভোভাবে সম্ভব। ইতিপুর্বে ঐ সমস্ত পুরাণ রচনার সময় যেরূপ বিবেচিত ও নির্দ্ধারিত হইয়াছে, তাহার সহিত এই অভিপ্রায়ের ফুল্বর সঙ্কৃতি দেখা যাইতেছে।

প্রাণগুলি এরপ অপ্রাচীন হইলেও, তদীর রচরিতারা সর্বাধারণের চির-প্রসিদ্ধ বাস্তবিক অভিপ্রায় অভিক্রম করিয়া সেই সমস্ত স্বরচিত প্রস্থের মহিমা-বর্জন-চেষ্টার পরাকাষ্ঠা প্রদর্শন করিয়াছেন। ক্ষেহ কহেন, প্রাণ স্বতঃসিদ্ধ নিত্য পদার্থ। ক্ষেহ বেলেন, উহা বেদের অপেক্ষাও প্রাচীন; অগ্রে প্রাণ, পশ্চাৎ বেদ প্রবৃত্তিত হয়। কেছ বা নির্ভয়েও নির্গজ্জাবে বলিয়া যান, তাঁহার বিরচিত গ্রন্থণানিতে বেদের দোষ সমুদার সংশোধন করিয়াছে।

पुराणं सर्व्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा सृतम् । १वश्वागः ।

ব্রহ্মা সর্বাত্তে পুরাণ-শাস্ত্র বাক্ত করেন। ह

प्रथमं सर्व्वशास्त्राणां पुराणं ब्रह्मणा स्मृतम् । श्रनन्तरं च वक्ते भ्यो वेदास्तस्य विनिःस्ताः ॥

वायुश्रवान। ১। ८७।

ব্রহ্মা সক্ষপ্রথমে পুরাণ-শাস্ত্র প্রকাশ করেন। পরে বেদ সমুদায় উল্লার মুখ হইভে বিনির্গত হয়।

> पुराणं सर्व्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा सृतम्। नित्यं श्रव्दमयं पुखं शतकोटिप्रविस्तरम्॥ श्रनन्तरं च वक्कोभ्यो वेदास्तस्य विनि:स्ताः। मीमांसा न्यायविद्या च प्रमाणाष्टकसंयुता॥

> > মংস্থপুরাণ। ৩। ৩ ও ৪।

ব্রহ্মা সম্দার শারের মধ্যে প্রথমে শতকোটী শ্লোক-বিশিষ্ট, নিভা, পবিত্র ও শব্দমর পুরাণ-শান্ত্র প্রকটন করেন। পরে সমস্ত বেদ; মীমাংসা ও অষ্ট-প্রকার প্রমাণ-সংযুক্ত ভার-বিভা তাঁহার মুখ হইতে নিঃস্ত হর। भगवन् यस्त्रया प्रष्टं ज्ञातं सर्व्वमभीिषतम् । सारभूतं पुराणिषु ब्रह्मवैवर्त्तमुत्तमम् ॥ पुराणोपपुराणानां वेदानां भ्रमभञ्जनम् ॥

ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণ। ১।৪৮।

ভগবন্! আপনি যাহা জিজ্ঞাসা করিয়াছেন ও যাহা ইচ্ছা করেন, আমি সেই সকল পুরানের সার-স্বরূপ সর্বোত্তম ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণ অবগত আছি। তাহাতে পুরাণ উপপুরাণ ও বেদ সমুদায়ের ভ্রম ভঞ্জন করিয়াছে।

যিনি বেদ-বেদান্তের অভ্রান্তভাবাদী হিন্দু-মণ্ডণীর অন্তর্গত হইয়াও অকু-ভোভয়ে ও অমান বদনে এরপ অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন, তাঁহার অপার সাহস।

পুরাণের বিষয় যাহা কিছু লিখিত হইল, সমস্ত পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে, বেদব্যাসকে প্রচলিত পুরাণ সমুদায়ের রচয়িতা বলিয়া কোন মতে বিশ্বাস করা যায় না; প্রত্যুত, স্বধন্মাত্রক্ত পণ্ডিতগণ কর্ত্ত্ক স্ব স্ব মতাত্র্যায়ী ধর্ম-প্রণালী-প্রচলন উদ্দেশে তাঁহার নামে সেই সমস্ত প্রচার করা হইয়াছে এইটিই প্রতীয়মান হইয়া উঠে। আর এক রপ প্রমাণেও তাহাই প্রতিপন্ন করিয়া দিতেছে। ভিন্ন ভিন্ন পুরাণে পরস্পর এরূপ বিরুদ্ধ মত, খোরতর নিন্দাবাদ ও বিষময় বিদ্বেভাব প্রকাশিত রহিয়াছে যে, সেসমুদায় এক মতাবলম্বী এক ব্যক্তি কর্ত্ত্ক বির্হিত হওয়া কোন রূপেই সম্ভব নয়। শিব-প্রধান সমুদায় পুরাণের প্রতি পদ্মপুরাণপ্রণেতার অভিসম্পাত-প্রস্ক ইতিপুর্বেই উপস্থিত হইয়াছে। পশ্চাৎ উল্লিখিত বিষয়ের আর হুই চারিটি উদাহরণ প্রদর্শন করা যাইতেছে; দেখিলেই জানিতে পারা যাইবে।

मोहाद्यः पूजयेदन्यं स पाषण्डी भविष्यति । इतरेषान्तु देवानां निर्माखं गर्हितं भवेत् ॥ सक्तदेव हि योऽस्नाति ब्राह्मणो ज्ञानदुर्व्वलः । निर्माखं ग्रङ्करादीनां स चाण्डालो भवेत् ध्रुवम् ॥ कल्पकोटीसहस्नाणि पच्यते नरकाग्निना ॥ १ष्रभूत्राग । উত্তর १७७ । १৮ स्रशाह । বে ব্যক্তি মোহবশত: বিষ্ণু ভিন্ন অন্ত দেবতার উপাসনা করে, সে পাষও হইবে। বিষ্ণু ভিন্ন অন্তের নির্মাণ্য গর্হিত। যে অজ্ঞ ব্রাহ্মণ একবার মাত্রও শিবাদির প্রসাদ-সামগ্রী ভোজন করে, সে নিশ্চিত চণ্ডাল। সে নরকাগ্রিতে কোটিসহন্ত কল্প হয়।

> सौरस्य गाणपत्यस्य शैवादेभूरिमानिन: । शाक्तस्य वैषावोवारि इस्तेश्चन्नं परित्यजेत् ॥ सङ्गं विवर्ज्जे येत् शैवशाक्तादीनान्तु वैषाव: ॥ न कार्था प्रार्थना तेभ्यस्तेषां द्रव्यममध्यवत् ।

> > পদ্মপুরাণ। উত্তর খণ্ড। ১০০ অধ্যায়। ু

সৌর, গাণপত্য, শাক্ত, শৈবাদির হত্তে বৈষ্ণবে অন্নন্ধল গ্রহণ করিবে না। বিষ্ণু-ভক্তে শৈব-শাক্তাদির সংসর্গ করিবে না ও তাহাদিগের নিকট প্রার্থনাও করিবে না। তাহাদিগের দ্রব্য প্রীষ-তুল্য।

> ध्यानं होमस्तपस्तप्तं ज्ञानं यज्ञादिकीविधिः। तेषां विनम्यति चिप्रं ये निन्दन्ति पिनाकिनम्॥

> > कूर्यभूत्राम । २० व्यक्षाम ।

যাঁহারা শিব-নিন্দা করেন, তাঁহাদিগের ধ্যান, হোম, তপ, জ্ঞান ও যজ্ঞাদি বিধি সমুদায় শীঘ্ন ই হয়।

> तथान्यदेवताभितात्रीह्मणस्य विगर्हिता। विदूरमितविप्राणां चाण्डालत्वं प्रयक्कृति॥ तस्य सर्व्वाणि नम्यन्ति पितरं नरकं नयेत॥

> > পদ্মপুরাণ। উত্তর থও। ১০০ অধ্যায়।

বিষ্ণু ভিন্ন অন্ত দেবতাকে ভক্তি করা ব্রাহ্মণের পক্ষে অতি গর্হিত। তাহা করিলে, হুবুদ্ধি ব্রাহ্মণ চণ্ডাল হয়, তাহার সমুদার নষ্ট হুইয়া যায় ও তাহার পিতা নরকে গমন করে।

> भगवत्याः कालिकाया माज्ञासंत्र यत्र वर्ष्यंति । नानादैत्यवधोपेतं तद्दे भागवतं विदुः॥

कली केचित् दुरास्नानी घूर्त्ता वैश्ववमानिन:। अन्यक्षागवतं नाम कल्पयिष्यन्ति मानवा:।

कल श्रुवान।

যে গ্রন্থেতে অনেকানেক অহ্বর-বধের সহিত ভগবতী কালিকার মাহাদ্যা-বর্ণন আছে, পণ্ডিতেরা তাহাকেই ভাগবত বলিয়া লানেন। কলিবুপে বৈঞ্চবাভিমানী ধূর্ত্ত ত্রাত্মা লোক সকল ভগবতীর মাহাত্ম্য-যুক্ত গ্রন্থকে ভাগবত না বলিয়া অঞ্জাগবত করনা করিবে।

येऽन्यदेवं परत्वेन वदन्त्यज्ञानमोहिताः ।
नारायणाज्ञगद्दरं ते वै पाषण्डिनस्तथा ॥
क्ट्राचेन्द्राचभद्राचस्माटिकाचादिधारिणः ।
जटिला भस्मलिप्ताङ्गास्ते वै पाषण्डिनः प्रिये ॥
१४१९३११ । উত্তর १७ । ३२ वशाम ।

বে সকল সজানী বাক্তি বিষ্ণু ভিন্ন অন্ত দেবতাকে শ্রেষ্ঠ ও কাং-পূজ্য বলিয়া ব্যক্ত করে এবং ক্ষদ্রাক্ষ, ইক্সাক্ষ, ভদ্রাক্ষ, ক্ষাটিকাক্ষ, কটা, ভদ্মাদি ধারণ করে, তাহারা নিশ্চিত পাষ্ঠ ।

ভন্তকারেরাও এই ধর্ম (বা অধর্ম)— বুদ্ধে শৈব ও শাক্ত পক্ষ অবলয়ন করিয়া বচন-বাণ নিক্ষেপ করিতে ক্রটি করেন নাই।

> गोलोकाधिपतिर्देवीसुतिभक्तिपरायन: । कालीपदप्रसादेन सोऽभवक्षोकपालक:॥ निर्वागण्डा

কালিকার শুভি-ভক্তি পরায়ণ গোলোকাধিপতি ঐক্ত্যু, কালী পদপ্রসাদে লোকের পালনকর্ত্তা হন।

> वेदाविनिन्दिता यस्मात् विश्वाना वुषक्षिणा । इरेनीम न ग्टब्बीयात् न स्मृग्मेत् तुलसीदलम् ॥ न स्प्रीत् तुलसीपत्नं शालग्रामस्य नार्चयेत् । कृगांवजीण्यः ।

বিষ্ণু বৃদ্ধরূপ ধারণ করিয়া বেদের নিন্দা করিয়াছেন, অভ এব হরিনাম গ্রহণ করিবে না, তুলসী-পত্র স্পর্শ করিবে না ও শালগ্রামশিলা পূজা করিবে না।

ষিনি উল্লিখিতরূপ পরস্পর-বিরুদ্ধ পুরাণ-বচন ও বিধেষ-হচক অভিপ্রায় এক লেখনীর মুথ হইতে বিনির্গত বলিয়া প্রত্যয় যান, এমন অবাস্তব বিষয় কিছুই নাই বে, তিনি তাহা বিখাস করিতে না পাহেন।

সামবিধান প্রাহ্মণে ও তৈতিরীর আরণ্যকে ব্যাসের নাম স্থাপট লিখিত আছে এবং পরাশর-পুত্র বলিয়াও তাঁহার পরিচয় দেওয়া হইয়ছে *। বেদশাল্লের মধ্যে সেই ছই গ্রন্থ সমধিক প্রাচীন না হউক, সেই উভয়ের প্রমাণাক্ষারে বোধ হয়, ব্যাস তদীয় রচয়িতাদের বহু পূর্বের লোক। ইহা হইলে, তাঁহার সময়ের ভাষায় ও অধুনাতন প্রচলিত প্রাণের সংস্কৃতে বিস্তর বিভিন্নতা মানিতে হয়। বেদাস্থর্গত প্রাহ্মণ-বিশেষ-প্রণয়নের সমধিক পূর্বেকালীন মুনি-বিশেষ প্রচলিত প্রাণ, উপপ্রাণ ও পৌরাণিক ধর্ম প্রচার করেন, হিন্দু ধর্মের ইতিহ্ত্ব-পটু বিচক্ষণ ব্যক্তিদের মতে এটি একটি অসম্ভব, ক্ষম্ভত ও অলীক বাক্য।

পুরাণ ও উপপুরাণ কেবল মনঃ-ক্ষিত অভিনব বিষয়েই পরিপূর্ণ এমন
নয়। ঐ সমুদায় এবং তাদৃশ পুনক্দীপ্ত ধর্ম প্রণালীর অমুষায়ী অন্য অন্য
গ্রন্থ-রচিয়িতারা পুর্বতন ঋষি, মুনি, রাজগণাদি সংক্রান্ত প্রাচীন বিষয় সমুদায়
সঙ্কলন পূর্বক নিজ নিজ গ্রন্থে সিয়বেশ করিয়াছেন এবং শৈব-বৈষ্ণবাদি নুতন
নুতন উপাসক-সম্প্রদায় সংক্রান্ত বহুবিধ বিষয়ের সহিত সংযুক্ত করিয়া
ভাহাদের নানাক্রপ অভিনব বেশ সম্পাদন করিয়া গিয়াছেন।

ব্রহ্মা, বিষ্ণু, শিব এই ত্রিমৃর্ত্তির উপাসনা প্রচার ও বিশেষতঃ শিব, বিষ্ণু ও ভাষীর শক্তিগণের মহিমা-কীর্ত্তন ও আরাধনা-প্রচলন করাই সমস্ত পুরাণ

সামবিধান ত্রাহ্মণের তৃতীয় প্রপাঠকে একরূপ শিষ্য-প্রণালীর মধ্যে পরাশর পুত্র ব্যাসের
নাম বিনিবেশিত আছে।

सीऽय' प्राजापत्री विधिरः सिम' प्रजापतिर्वं इस्रतये प्रीवाणः — वृहस्यतिर्द्राय नारदीविष्वस्पीनाय विष्वस्पीनोध्यासाय पाराधर्याय व्यासः -पाराधर्योजैिमनर्थ जैमिनः पौष्पिख्डाय पौष्पिख्डाः पाराधर्यायनाय पाराधर्यायनीवादरायनाय वादरायनसाख्डि-भाष्ट्रायनिभग्नाख्डिमाद्यायनिनी वहुम्यः ।

ও উপপূরাণের প্রধান উদ্দেশ্য। মহাভারত ও পুরাণ কর্তাদের নিজ নিজ মত-প্রভাব-প্রচার ও সম্প্রদায়-বর্দ্ধন-সাধন উদ্দেশে পুরাণ-বিশেষে ও উপাধ্যান-বিশেষে দেবতা-বিশেষের সমধিক মাহাত্ম্য কীর্ত্তিত হইয়াছে। এই হেতু, স্মাবস্থা ও পোর্ণমাসী পরস্পর যেরপ বিপরীত পদার্থ, ভিন্ন ভিন্ন পুরাণে সেইরপ পরস্পর-বিক্লম মত সমুদার প্রবর্তিত হইয়াছে। শৈব গ্রন্থকার মহাদেবকে ব্রহ্মা ও বিক্রুর স্রন্থী, বৈষ্ণব গ্রন্থকার বিক্রুকে ব্রহ্মা ও মহাদেবের স্ক্রন-কর্তা এবং শাক্ত গ্রন্থকার ভগবতীকে ব্রহ্মা, বিষ্ণু, শিব ভিনেরই উৎপাদন কর্ত্তী বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন। লিজপুরাণের মতে, শিব ব্রহ্মা ও বিষ্ণুর জন্মদাতা।

श्रयोवाच महादेव: प्रोतोऽहं सुरसत्तमी।
पश्चतं मां महादेवं भयं सब्वं विमुन्नतम्॥
युवां प्रस्तौ गात्राभ्यां मम पूर्वं महावलौ।
श्रयं मे दक्षिणे पार्वे ब्रह्मा लोकपितामहः॥
वामे पार्वे च मे विश्वा विश्वात्मा हृदयोद्भवः।

विक्रश्रुतान। **১**৭।১---७॥

পরে মহাদেব বলিলেন, স্করশ্রেষ্ঠ (ব্রহ্মা ও বিষ্ণু)! আমি (নারায়ণেশ্ব ক্রবে) সম্ভট হইয়াছি। আমি মহাদেব; আমাকে নির্ভয়ে দর্শন কর। পূর্বকালে, ভোমরা ছই মহাবল (পুরুষ) আমার শরীর হইতে উৎপন্ন হইয়াছ। এই লোক-পিভামহ ব্রহ্মা আমার দক্ষিণ পার্ষে ও জগতের আজাহ্বরূপ হৃদরোদ্ভব বিষ্ণু আমার বাম পার্ষে প্রস্তুত্ত হন।

এই সেই বিধি প্রজাপতি কর্তৃক প্রকাশিত হয়। প্রজাপতি তাহা বৃহস্পতিকে, বৃহস্পতি
মারদকে, নারদ বিধক্সেনকে, বিধক্সেন পরাশর-পুত্র ব্যাসকে, পরাশর-পুত্র ব্যাসকে, বিধক্সেনকে, বিধক্সেনকে, বিধক্সেনকে, পারাশর্যায়নকে, পারাশর্যায়নকে, বাদরায়নকে, বাদরায়ন তাতি ও
শাট্যায়নীকে এবং তাতী ও শাট্যায়নী অনেক অনেক ব্যক্তিকে উপদেশ দেন।

এই শিষ্য-প্রণালী অমুসারে ঘলিতে পারা যায়, যে সময়ে সামবিধান ব্রাহ্মণ বিরচিত হয়, সে সময়ে ব্যাসের পরও অনেকগুলি পুরুষ গত হইয়া গিয়াছে। তদমুসারে, ব্যাস সামবিধান ব্রাহ্মণের বত পূর্বের লোক। তৈতিরীয় আরণাকেও ব্র্জাযাত মৃত্যুর কটছ-প্রতিপাদন-প্রকরণে লিখিত আছে,

सद्दीवाच व्यासः पाराभव्यः।

ঐ প্রাণে দেখিতে পাওয়া বায়, নিক্নষ্ট সম্পর্কীয়কে বেরূপ সম্বোধন করিতে হয়, মহাদেব বিষ্ণুকে সেইরূপ বাছা! বাছা! বলিয়া সম্বোধন করেন।

वस वस इरे विश्वो पालयैतचराचरम्।

निक्रश्रतान । ১१। ১১॥

ৰংদ! বংদ! হরি! বিষ্ণু! তুমি এই চরচের জগং পালন কর। ভাগৰত কর্ত্তী ইহার বিপরীত কি লিথিয়াছেন দেখ;

स्जामि तिवयुत्तोऽहं हरी हरति तद्दश:।

ভাগবতা ২। ৬। ৩০।

আমি (অর্থাৎ ব্রহ্ম) তাঁহা (অর্থাং বিষ্ণু) কর্ত্তক নিষ্ক্ত হইয়া স্ক্রন করিতেছি এবং মহাদেব তাঁহার নিদেশক্রমে সংহার ক্রিডেছেন।

> भ्नु कुटीकुटिलात् तस्य ललाटात् क्रीधदीपितात्। समुत्यवस्तदा रुद्रो मध्याङ्गाक समप्रभः॥

> > विकृश्वान। > 191>0॥

তাঁছার (অর্থাৎ ব্রহ্মার) ক্রোধানণে প্রদীপ্ত ক্রকুটী-কুটিল ললাট-দেশ ছইতে মধ্যাক্ত কালের স্থ্য-প্রভার স্লায় প্রভা-বিশিষ্ট রুদ্র উৎপত্ন হইলেন।

ब्रह्मा तस्योदरभवस्तयाचार्चं शिरोभव:।

মহাভারত। অফুশাসনপর্ব। ১১৭। ৪॥

ব্রহ্মা ক্লফের উদর হইতে উৎপন্ন হন এবং আমি (অর্থাৎ মহাদেব) তাঁহাল্প শিরোদেশ হইতে জন্ম গ্রহণ করি।

> श्रमतोऽन्हं गुणान् वक्तं महादेवस्य धीमतः। योहि सर्व्वगतो देवो न च सर्व्वत दृखते॥ ब्रह्मविणुसुरेशानां स्नष्टा च प्रभुरेव च। ब्रह्मादयः पिशाचान्ता यं हि देवा उपासते॥ प्रक्ततीनां परत्वेन पुरुषस्य च यः परः। चिन्त्यते यो योगविज्ञिन्दं विभिस्तस्वदर्शिभिः॥ वश्रभागनभवः। ১৪। ৩—६॥

যিনি সর্ব্যত্ত-ব্যাপী অথচ কুত্রাপি দৃষ্টি-গোচর নন, যিনি ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও দেবরাজের স্পষ্টিকর্ত্তা ও প্রভু এবং ব্রহ্মা অবধি পিশাচ পর্য্যস্ত দেবগণ মাহার উপাদনা কংবে, আমি দেই ধীমান মহাদেবের গুণ-বর্ণনে অশক্ত।

> वासुदेवात् परोब्रह्मन् न चान्योऽथौंऽस्ति तस्वतः। नारायणपरावेदा देवा नारायणाङ्गजाः।

* * * * * *

स्टं स्जामि स्टोऽहमीचयैवाभिचोदितः।

ভাগৰত। ২।৫।১৪,১৫ ও ১৭॥

ব্দন্! বাহাদেবের অপেকার কেহই বান্তবিক শ্রেষ্ঠ নাই। নারায়ণ হইতে বেদের উৎপত্তি হয় ও দেবগণ নারায়ণের অঙ্গ হইতে জন্মগ্রহণ করেন। * * * * * কিনি আমার (অর্থাৎ ব্রহ্মার) স্টিক্র্ডা। আম তাহার কটাক্ষপাত মাত্র আদেশ পাইয়া তাহারই স্ট বস্তু সমুদায় পুনরায় স্টি করিতেছি।

ভগবতী শিব-ভার্যা একথা অনেক পুরাণেই ণিথিত আছে, কিন্তু আৰার ব্রহ্মা, বিষ্ণু, শিব তিনেরই জননী বলিয়া বর্ণিত হইরাছেন।

विष्णुः श्रवीरग्रहण मह मीशान एव च।
कारिता स्ते यतोऽतस्वां कः स्तोतुं श्रक्तिमान् भवेत्॥
मार्कत्थत्र भूतांग। (मवीमाराष्ण्य ठखी। मधूरेक्टेडवर्थव्यक्तन्। ৮० ७ ৮৪ (श्लोक।

তুমি আমার (অর্থাৎ একার), বিষ্ণুর ও মহাদেবের শরীর উৎপাদন করিয়াছ। অতএব কে তোমার স্তব করিতে সক্ষম হইতে পারে ?

> सर्विमन्त्रमयी लं हि ब्रह्माचास्वत्समुद्भवाः। चतुर्व्वर्गीत्मका लं वे चतुर्व्वर्गफलोदया॥

> > কাশীৰও।

তুমি সর্ব্ধমন্ত্রমন্ত্রী, ব্রহ্মাদির উদ্ভব-কারিণী, চতুর্ব্বর্গাস্থিক। এবং চতুর্ব্বর্গ-ফলদায়িকা।

এইরপ, ভক্ত বিশেষের ভক্তি-প্রভাবে, কোন উপাধ্যানে শিব, কুত্রাপি বিষ্ণু ও কোণাওৰা ভগবতী দৰ্ম-প্ৰধান দেবতা বলিয়া পরিকীত্তিত হইয়াছেন। অমত-পক্ষপাতী পর-মত-দেষী পণ্ডিতেরা প্রতিকৃল পক্ষীয়দের উপাভ দেবের মহিমা থর্কা করিয়া নিজ নিজ উপাশু দেবতার মহিমা-পরিবর্দ্ধন উদ্দেশে ঐ সমস্ত উপাধ্যান ও পরস্পার-বিরুদ্ধ পূর্ব্বোল্লিখিত মত সমুদার উদ্ভাবন করিয়াছেন তাহার দলেহ নাই। পশ্চাৎ ছেষবৃদ্ধি-শুল অন্যান্য পণ্ডিতেরা দেই সমুদায় আপনাদের কুচি-বিকৃত্ধ দেখিয়া সামঞ্জশু-সাধন উদ্দেশে এইরূপ ভাব প্রকাশ করিয়াছেন যে, যিনিই ব্রহ্মা, তিনিই বিষ্ণু, তিনিই মহেশ্বর। ব্রহ্মা, বিষ্ণু, শিব এই ত্রিসৃত্তির মধ্যে প্রথম দেবতা ব্রহ্মার বিষয় পূর্বের প্রস্তাবিত হইয়াছে। অপর ছইটি দেবতা বিষ্ণু ও শিব। বেদসংহিতায় বিষ্ণু নামে একটি দেবতার প্রাসঙ্গ আছে, কিন্তু তিনি পুরাণোক্ত শঙ্খ-চক্র-গদা-পদ্ম-ধারী চতুত্বি বিষ্ণু নন। তিনি আটু আদিতোর একটি আদিতামাত্র *; না পরমেশ্বর, না গোকুল ও বৈকুণ্ঠ-বাসী। यদি ঐ বেদোক্ত আদিত্য-রূপী বিষ্ণু উত্তর কালে পৌরাণিক বিষ্ণুরূপে পরিণত হইয়া থাকেন, তথাচ দেটি ক্রমশ: ঘটিয়াছে। বেদের ব্রাহ্মণ-ভাগে তাঁহার পদোর্লভির হচনা দেখিতে পাওয়া যায়। শতপথ ব্রাহ্মণে লিখিত আছে. দেবগণ বলিলেন.

योनः श्रमेण तपमा श्रह्या यज्ञेनाइतिभिर्यज्ञस्य उद्दर्वं पूर्व्वाव-गच्छत् स नः श्रेष्ठो सत् तद् उ नः सर्व्वेषां सहिति तथिति। तिह्रणुः प्रथमः प्राप। स देवानां श्रेष्ठोऽभवत्। तस्मादाइविणुर्देवानां श्रेष्ठ इति।

শতপথবাহ্মণ। ১৪। ১। ১। ৪ ও ৫॥

আমাদিগের মধ্যে যিনি শ্রম, তপস্থা, শ্রহ্ধা, যক্ত ও আহতি ধারা প্রথমে যক্ত-ফল জানিতে পারেন, তিনি শ্রেষ্ঠ। ইহাতে আমাদের সকলেরই অধিকার থাকিবে। তাঁহারা তথাস্ত বলিয়া সম্মত : হইলেন। বিষ্ণু সর্ব্ধ-প্রথমে ইহা সাধন করিলেন। তিনি দেবগণের শ্রেষ্ঠ হইলেন। এই হেতু লোকে বলে বিষ্ণু সকল দেবতার প্রধান।

[🔅] পুরাণের মতেও আদিত্য-বিশেষের নাম বিষ্ণু।—বিষ্ণুপুরাণ।১।১৫:১৩১॥

যে সময়ের হিন্দু-শাত্রে পৌরাণিক বিষ্ণুর আবির্ভাব হয় নাই, অথবা যে সময়ের শাত্রে বিষ্ণু-দেবের পুরাণোক্ত প্রকৃতি-কুন্ম বিকশিত হয় নাই, সেই সময়ের রিত আনেক আনেক উপ্যাথ্যান উত্তর কালে ঐ গোলক-বাসী ও বৈকুঠ-বাসী চতুর্ভু বিষ্ণু-দেবের গুণ-কীর্ত্তন অভিপ্রায়ে নিয়োজিত হইয়াছে। এমন কি পুর্বতন দেবতা-বিশেষের নাম পর্যান্ত পরে বিষ্ণু-নামাবলি-মধ্যে সনিবেশিত হইয়াছে। একলে নারায়ণ-শন্টি বিষ্ণু-বাচক বলিয়া প্রচলিত আছে। লক্ষীনারায়ণ পদের অর্থ লক্ষী ও বিষ্ণু। কিন্তু ঐটি প্রথমে ব্রহ্মার নাম ছিলইহা পুর্বে প্রদর্শিত হইয়াছে । শতপথ বাদ্ধণের একস্থলে বেদোক্ত পুরুষ-দেবতা নারায়ণ বলিয়া উক্ত হইয়াছেন।

पुरुषो ह नारायणोऽकामयतातितिष्ठे यम्। सर्व्वाणि भूतान्यहमेवेदं सर्वे स्थामिति।

শতপথবাহ্মণ। ১৩। ৬। ৬। ১॥

পুরুষ-নারায়ণ কামনা করিলোন, আমি যেন যাবভীয় বস্ত অভিক্রম করি ও আমিই যেন এই সমস্ত বস্ত হই ।

নারায়ণ শব্দের ইতিবৃত্ত পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে এইটিই প্রতীয়মান হইয়া উঠে যে,প্রথমে বেদোক্ত পুরুষ, পরে ব্রহ্মা এবং সর্বশেষে বিষ্ণু ঐ আখ্যাটি লাভ করেন। পুরাণের ফতে, বিষ্ণু প্রগম্ম-কালে জলশায়ী থাকেন কিন্তু প্রাচীনতর গ্রন্থ-প্রমাণে দেখিতে পাওয়া যায়, বেদোক্ত পুরুষ (প্রজাপতি) ও ব্রহ্মা জলশায়ী ছিলেন এই মভই পূর্ব্বে প্রচলিত ছিল †।

नाइ तर्हि काचन प्रतिष्ठास। तरेनिमदमेव हिरणसयमाण्डं यावत् सम्बलसरस्य वेला त्रासीत् तावद् विश्वत्पर्यप्रवत।

শতপথবাকাণ। ১১। ১। ৬। ২॥

তথন তাঁহার (অর্থাৎ প্রজাপতি-সংজ্ঞক পুরুষের) অবস্থিতি করিবার স্থান ছিল না। এই হেতু তিনি এই হিরগার অত্তে অবস্থান পূর্বাক সমৎসর কাল সলিলে ইতস্ততঃ প্রবমান হইয়া ছিলেন।

^{*} १० श्रुष्ठी।

বাজসনেয়ীসংহিতার, ঝাথেদসংহিতার দশম মণ্ডলে ও শতপথ প্রাশ্বনে পুরুষ নামক বৈদিক দেবতা বিশেষের যে সমস্ত গুণ ও শক্তি বর্ণিত আছে, পরে মুসংহিতার যাহা প্রস্নার গুণ বলিয়া বর্ণিত হয় দ, অবশেষে ভাগবতে বিষ্ণু ও ক্লম্ভ অরপে দেই সমুদার আরোপিত হইরাছে। পুরাণোক্ত বিষ্ণু সেই বেদোক্ত পুরুষের মত সহস্র-শীর্ষ, সহস্র-পাদ ও সহস্র-লোচন। পুরুষের ভার বিষ্ণু ভূত, ভবিষ্যুৎ ও বর্ত্তমান সমস্ত বস্তু। পুরুষের ভার বিষ্ণু হইতেই বিরাটের স্প্তি এবং ঋক্ সামাদি বেদ ও প্রাহ্মণ, ক্লপ্তির, বৈশ্ব, শৃদ্ধ এই চারি বর্ণের উৎপত্তি হয়। দেবগণাদি যেমন পুরুষকে বা পুরুষের অঙ্গ সমুদারকে যজ্ঞ সামগ্রী করিয়া যজ্ঞের অমুষ্ঠান করেন, সেইরুপ, বিষ্ণুর অঙ্গ হইতে যজ্ঞসামগ্রী সকল আহরণ করিয়া তাহারই যক্ত করা হয়। এই সমস্ত বিষয় বেদে বেদোক্ত পুরুষদেবের, এবং পরে ভাগবতে পুরাণোক্ত বিষ্ণুর, মাহাত্ম্যা-প্রতিপাদক বিদ্যাক্টিত হইয়াছে।

বেদোক্ত পুরুষ।

सहस्रमीर्वा पुरुष:

सहस्राच: सहस्रपात्

ポーポ・10・10・12川

(वरमाक श्रूक्ष ।

पुरुष एवेदं सर्व्व

यदभूतं यत्र भाव्यम्।

वे। के। वे। रा

सभूमिं विश्वतीहत्ताः

ऽतातिष्ठद दशाङ्गुलम्।

वा वा का अ

तबाद विरातिनायत

विराजी अधिपुरुष:।

वा वा वा वा

• ৭২ও ৭৩ পৃষ্ঠা।

ভাগবতোক্ত বিষ্ণু ও বাহ্নদেব।

सहसीर्वङ व्रिवाह्नचः

सहसाननशीष वान् ।

ভাগবত। २ । ৫। ৩৫॥

ভাগৰতোক্ত বিষ্ণু ও বাস্থদেব।

सर्वे पुरुष एवे दं

भूतं भव्यं भवच यत्।

ভাগবত। २।७।১€॥

तैनेदमाइतं विश्वं

वितस्ति । मधितिष्ठति ।

ভাগৰত।২।৬।১৫॥

भग्डकीवेग्ररीरेऽसिम् सप्ताव-

रणश्युत । वैराजः पुरुषी योऽसी

भगवान्धारणात्रयः॥

ভাগবত। ২। ১। ২৫॥

† বিভক্তিমিতি দশাকুলন্ত.। শ্রীধরস্বামী। तबाद यत्रात् सम्बंदतः स्टबः

सामानि निज्ञरे। इन्हांसि निज्ञरे तबाद यजुः तबादनायत ।

॥ दार्छ। छ। छ

बाज्यचीऽसा सखनासीद बाज्य राजयः कृतः । जन्द तदसा यदैग्यः । पदम्यां गुदोऽजायत ॥

> खे। खे। खे। २२॥ सत् पुरुषेष इतिमा देवा यज्ञसतस्यतः।

> > के।के।के।क

तं यश्चं विश्विष प्रीचन् पुरुषः जातमग्रतः । तेन देवा चयजनः साध्याः ऋषयस ये॥. ।

के।के।के। क

ऋषो यजू'षि सामानि चातुर्शीवस सत्तम।

खोगवस्त । २ । ७ । २८ । पुरुषस्य सुद्धं बद्धा चेबसेतस्य वाइदः । जन्वीर्वेग्सो भगवतः पदस्यां गुद्दीव्यकाग्यतः॥

ङागंदछ। २। ६। ७१॥ पुरुषावयवैदेते सभाराः सम्भृतामया। ङागंदछ। २। ७। २७॥ इति सम्भृतसम्भारः पुरुषाव-यवैरहम्। तसेव पुरुषं यश्चं तेन-वायजसीयदम्।

ভাগবত। ২। ৬। ২৭ ॥

উল্লিখিত উভর গ্রন্থের বচন গুলি ঐক্য করিয়া দেখিলে, ঐ সমস্ত বে এক গ্রন্থ হইতে অন্ত গ্রন্থে সংকলিত হইরাছে ইহাতে সন্দেহ থাকেনা। কে বা উত্তর্মণ ও কে বা অধনর্থ তাহা অপরিজ্ঞাত থাকিবার বিষয় নর। বিষ্ণু ও কৃষ্ণকে সৃষ্টি স্থিতি-প্রলয়-কর্ত্তা পরমেশর বিলয়া প্রতিপন্ন করা ভাগবজ-প্রণেতার প্রধান উদ্দেশ্ত, কিন্তু পূর্ব্ব-পূর্ব্ব গ্রন্থে লিখিত আছে, ব্রন্ধা স্থক্তনকর্ত্তা ও মহাবেষ সংহার্কর্তা। ইহাতে ভাগবত-রচির্তাকে অনেক সন্তটে পতিত হইতে ও বিত্তর কোশল প্রকাশ করিতে হইরাছে। তিনি এই বিরোধ-ভন্তন-উদ্দেশে লিখিলেন, বিষ্ণু কর্ত্বক নিরোজিত হইরা ব্রন্ধা ও শিব স্কলন ও সংহার করেন। বিষ্ণু ভূমগুলের ভার-মোচনার্থ মংশু, কুর্ব্ব, বরাহাদিরণে অবতীর্ণ হন, এ বিষ্ণু ব্যামারণ, মহাভারত ও প্রাণে সবিত্তর বর্ণিত হইরাছে। কিন্তু প্রাচীনতর

এই শেবোক্ত ছাই (অর্থাৎ বর্চ ও সপ্তম) বক্তের তাৎপর্ব্যার্থ তাগবতের বিতীয় ক্ষয়ের বর্চ
ক্রয়ায়ের ২২ অবধি ২৯ পর্ব্যক্ত করেক লোকে পরিবর্ষিত ও বহলীকৃত করিয়। বর্ণন করা হইয়াছে ।

শাস্ত্র বা উপাধ্যান-বিশেষে ঐ গুলি ব্রহ্মা বা প্রজাপতির অবতার বলিয়া কীর্ত্তিত হয়।

মংভাবতার ।—শতপথ ব্রাহ্মণে মংভাবতারের একটি অপূর্ক্ক উপাধ্যান আছে *। হিন্দুশাল্রে ঐ বিষয়ের যত বৃত্তান্ত দেখা যার, ঐ উপাধ্যানটি সর্কাপেক্ষা প্রাচীন। মংভ-অবভার কোন্ দেবের অবভার, ঐ উপাধ্যানে তাহা কিছুমাত্র উল্লিখিত নাই। কিছু বেলোক্ত উপাধ্যান বৈদিক দেবতা ভিন্ন অভ দেবতার মাহাত্ম্যা-প্রতিপাদক হওয়া কোন রূপেই সম্ভব ও সক্ষত নর। বিষ্ণু মংভারপে অবভার হন একথা বেদের কোন অংশে দৃষ্ট হয় না। ঐ বৈদিক উপাধ্যান অপেক্ষার অপ্রাচীন মহাভারতীয় উপাধ্যানে শিধিত আছে, মংভা বছার অবভার।

षदं प्रजापतिव ष्ट्रा यत्परं नाधिगम्यते । सत्तप्रकृपेण यूयञ्च सयाऽसान्त्रोचिता भयात् ॥

वनभर्व । ३৮१। ६२॥

(মৎক ঋষিগণকে কহিলেন,) আমি প্রকাপতি ত্রন্ধা; মৎক্তরূপ পরিগ্রহ পূর্বাক ভোমাদিগকে এই ভয় হইতে মৃক্ত করিলাম।

বে সময়ে ব্রহ্মার উপাসনা প্রাহ্নভূতি ছিল, সেই সময়ে বনপর্বের এই কথাটি বিরচিত হয় তাহার সন্দেহ নাই। মহাভারত অপেক্ষায় অপ্রাচীন ভাগবত প্রাণে উল্লিখিত হইয়াছে, ঐ মংশ্ব বিষ্ণুর অবতার। হিন্দুদের জাতীয় ধর্ম কেমন পরিবর্ত্তিত হইয়া আসিয়াছে দেখ। এক উপাধ্যান ভিন্ন ভিন্ন সময়ে ভিন্ন ভিন্ন দেবতার মহিমা প্রকাশ উদ্দেশে নিয়েজিত হইয়াছে। ব্রহ্মার মহিমাকে ধর্ম করিয়া বিষ্ণু-উপাসনার প্রচার বেমন বৃদ্ধি পাইতে লাগিল, তলীয় উপাসকেয়া ব্রহ্মাকি অক্ত অক্ত দেবতার মাহাদ্ম্য-স্চক প্রাচীনতর উপাধ্যান সমুলায় কিছু কিছু পরিবর্ত্তিত ও পরিবর্দ্ধিত করিয়া আপনাদের উপাক্ত দেবের মহিমা-কীর্ত্তনে নিয়োজিত করিতে লাগিলেন! তদমুসারে, মহাভারতের অন্তর্গত ব্রহ্মার মাহাদ্ম্য-বোধক ঐ উপাধ্যান ভাগবত আদি পুরাণে বিষ্ণুর মাহাদ্ম্য প্রতি-

শতপথবান্ধণ । > । ৮ ।

পাদক বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে *। শতপথপ্রাহ্মণের মন্ত এই বে, অলপ্রাল্যের উপক্রম হইলে, মংস্ত মন্ত্র সমীপে উপস্থিত হন। মন্ত তাঁহার সমীপে প্রলন্ধ সংবাদ প্রবণ করিয়া এক থানি অতি বৃহৎ অর্ণবিধানে আরোহণ করেন, কিন্তু তাহাতে পশু, পক্ষী, বীজাদি সঙ্গে লইবার প্রসন্ধ নাই। কিন্তু তাগবতে লিখিত আছে, মংস্তরূপী ভগবান রাজা সত্যপ্রতসন্ধিধানে উপনীত হন। প্রলয়-কাল উপস্থিত হইলে, তিনি ভগবানের আদেশ অনুসারে মুনিগণ সঙ্গে ওবধি ও বীজাদি সমভিব্যাহারে করিয়া একথানি বৃহৎ তরণীতে আরোহণ করেন। প্রলয়-কাল অতীত হইলে, বিশ্বপাতা ভগবান ব্রহ্মার সহিত প্রলয়-সমুদ্র হুইডে উথিত হইয়া হয়গ্রীব অস্তর্গকে বিনাশ প্রবৃক্ত বেদ সমগ্র উদ্বার করেন।

🛊 ভাগবত। ৮ কল। ২৪ অধ্যার।

† এই উপাধ্যান অমুসারে ব্রহ্মার নিশাকাল উপস্থিত হইলে, ভগবান বিষ্ণু বেদ-উদ্ধার জন্ত মংস্ত-রূপ ধারণ করেন, তদনুসারে এই প্রলয় নৈমিত্তিক প্রলয় হইতে পারে *। কিন্তু এই পুরাণের প্রথম ক্ষলে লিখিত আছে,

"रूपं स अग्रहे मात्स्यं चात्तुषीदिषसंप्रवे।" (ভाগবত INION E II)

''চাকুষ মমুর অধিকার-কালে সমুজ-বৃদ্ধি হইরা জলপ্লাবন ঘটিলে পার, বিক্ মংস্ত-রূপ ধারণ করিয়াছিলেন।

ব্ৰহ্মার দিবাকালে চতুর্দশ মমুর অধিকার হয়, তমধ্যে চাকুষ বঠ মমুমাত্র, হুতরাং তৎকাল ব্ৰহ্মার নিশাকাল কি প্রকারে: ইইতে পারে ? এবং তৎকালে নৈমিত্তিক প্রলয়ই বা কি প্রকারে সম্ভবে ? অতএব ভাগবতের ছুই ছানের এই ছুইটি কথা প্রশার-বিরুদ্ধ।

এইরপ একটি পৃথিবী-ব্যাপী জল-প্রলার-বৃত্তান্ত অস্থান্ত নানাদেশের নানাজাতীর শাস্ত্রে সন্ধি-বেশিত হইরাছে। কেল্ডারা দেশের ইতিহাস মধ্যে লিখিত আছে, ঐ দেশীর জিসপুস্ নামে এক নৃপত্তি দেখতা-বিশেবের আদেশক্রমে একখানি বৃহত্তর অর্ণবিপোত নির্মাণ করির। জল-প্রলারের সমরে সপরিবারে ও সবান্ধবে পশু, পক্ষী ও থাদ্যসামগ্রী সম্পার সমভিব্যাহারে ভাহাতে আরোহণ পূর্বক প্রাণ-রক্ষা করেন। ঐ দেশীর ওনিস্ নামক দেবতা-বিশেব ভারতবর্ষীর মংস্ঠাবতারের মত অর্কান্ত মংস্ঠাকৃতি ও অপর অর্কান্ত মন্ত্রাকৃতি।—Maurice's 'Hindustan. 1795, Vol. I. p. 543.

সীরিরা দেশের শারেও ইহার অবিকল অনুরূপ একটি উপাধ্যান আছে। তথাকার বে রাজা জল-প্রলরের সময়ে বজন ও পশুপক্ষ্যাদি সঙ্গে উনিথিতরূপ একথানি অর্থবানে আরোহণ করিয়া রক্ষা পান, তাহার নাম ডিউ কেলিরন্ বলিরা লিখিত আছে।—Lucian quoted in Maurice's Hindustan. Vol. I. p. 548.

* ভাগবডের টাকার বীধরবাসী ইহাকে মারিক প্রলম্ন বলিরা উক্ত করিয়াছেন।

মংস্থ পুরাণের প্রারম্ভেই বিষ্ণুর মংস্থাবতার-বৃত্তান্ত সরিবেশিক হইরাছে। ভাহাতে শিখিত আছে, তিনি মংস্করণ পরিপ্রহ করিরা মহুকে এই পুরাণ উপ-দেশ দেন। ঐ বৃত্তান্ত মহাভারতীর উপাধ্যানের অহুরূপ।

কুর্মাবতার।—প্রাণাদি অপেক্ষা প্রাচীনতর শান্তের মতে, কুর্ম প্রজাপতির অবভার।

খৃষ্টীর সম্প্রদারের বাইবেল (অর্থাৎ 'গ্রন্থ') নামক ধর্মণারে এবিবরের বে অবিকল এইরূপ একটি উপাধানে সবিত্তর বর্ণিত রহিয়াছে, তাহা প্রসিদ্ধই আছে। যিনি ঈশ্বরের প্রত্যাদেশ ক্রমে নপরিবারে পশু পক্ষী ও থান্য-সামগ্রী সঙ্গে সমুস্থপোতে আরোহণ করিরা রক্ষিত হন, তাহার নাম নোরা বলিরা উরিধিত হইরাছে।—Bible Genesis. chap. 6. 7. 8.

আনেরিকাথণ্ডেও এবিবরের বিশেষ বিশেষ বৃত্তান্ত প্রচলিত আছে। ব্রাজীল্-দেশীর লোকের মধ্যে এইরূপ জনশ্রুতি আছে যে, এককালে সমন্ত লোক জলপ্লাবনে বিনষ্ট হর: কেবল একটি পুরুব ও ভাহার গর্ভবতী ভগিনী রক্ষা পার। তাহাদের হইতেই পুনরার মসুব্য-কুলের বৃদ্ধি হর। কুবা-ঘীপে এইরূপ প্রবাদ প্রচলিত আছে বে, কোন সমরে একটি প্রধান-পদস্থ বৃদ্ধা লোক প্রজান বিনার প্রজাভ হইরা একথানি সম্ত্রপোত নির্মাণ পূর্বাক বীর পরিবার ও অক্ত অক্ত বছ প্রাণ্টি সমভিব্যাহারে তাহাতে আরোহণ করেন। টেরাফ্র্মান্দেশীর কতকভালি লোকে করে, প্রলার-কালে সমন্ত নরকুল ধ্বাসে হইরা কেবল একটিমান্ত মসুব্য সপরিবারে রক্ষা পার; পশ্চাৎ ভাহাদের হইতেই পুনরার মসুব্য প্রবাহ বৃদ্ধি হইরা আইসে। এই সমন্ত ব্যতিরেকেও, আমেরিকাধণ্ডের অন্তর্গত মেক্সিকো, পেরুবিরা প্রভৃতি নানাদেশে অসাধারণ বক্তা-ঘটনার নানা উপাধান প্রচলিত আছে।—Encyclopædia Britannica. 7th Edn. Article on Deluge.

এসিরিরা দেশের অন্তর্গত কোর্থ্রাক্ নামক হানে কেল্.ডীরা দেশীয় জল-প্রলয়-বৃদ্ধান্ত থোদিত ছিল। করেক বংসর হইল, শ্রীমান্ বেয়ার্ড এবং স্মিথ্ তাহা জ্বসুসন্ধান করিরা জানেন এবং স্মিথ্ তাহার অর্থোক্তেদ করিরা ১৮৭২ খৃষ্টাব্দের ওরা ডিসেম্বর একটি সভার * তাহা পাঠ করেন। ইহা পূর্কোলিখিত নানা উপাধানের অসুরূপ। বিনি স্বগণ এবং পশু-পক্ষ্যাদি সম্বলিত অর্থবিধান জারোহণ করিয়া প্রাণ-রক্ষা পান, তাহার নাম হসিসন্ত †।

নীস্ দেশীর শারেও এইরূপ একটি অসামান্ত জলপ্লাবনের কথা বিনিবেশিত আছে, কিন্তু উল্লিখিত উপাথ্যান সম্পারের সহিত কোন কোন খংশে তাহার কিছু কিছু অসাদৃশ্য দৃষ্ট হইরা খাকে। তাহাতে এইরূপ লিখিত আছে বে, ডিউ্কেলিরন্ নামক নৃপতি-বিশেবের সমরে মহাবন্তা উপস্থিত হইরা মনুষ্য-কুল বিনষ্ট হইরা যার। জল-এলের নিযুক্ত হইরা ভূমি প্রকাশ পাইলে, দেবন্দ মৃত্তিকা দিরা নর-মৃত্তি সমুদার নির্দাণ করেন এবং বারু-প্রবেশ বারা সেই সমুদারকে সজীব ক্রিরা দেন। ‡

^{*} Society of Biblical Archæology.

⁺ The Year book of Facts of Science and the arts, for 1875, p. 285 and 286.

¹ Encyclopædia Britannica. 7th Edn. Vol. 7.

स यत्कुक्योंनाम एतद्वा रूपं कला प्रजापति: प्रजा चस्रजत यदस्जताकरोत्तस्यदकरोत्तस्मात कुर्मः कथ्यपो वै कुर्मस्तस्मादाद्यः सर्वाः प्रजाः काम्यप्यदति । स यः स क्रुमोंऽसी स पादित्यः ।

শতপথ ব্ৰাহ্মণ। ৭। ৪। ৩। ৫॥

প্রকাপতি কুর্ম-রূপ ধারণ করিয়া সন্তান উৎপাদন করিলেন। বাহা তিনি স্থান করিলেন, ভাহা (অকরোৎ) অর্থাৎ করিলেন এই নিমিন্তই তাঁহাকে কুর্মা বলে। কশ্রুপ শব্দে কুর্মা বুঝায় এই নিমিত্ত লোকে কছে, সকল জীব কশ্রুপের সন্তান। সেই কুর্মাও যিনি, আদিত্যও তিনি।

এই বৈদিক উপাধ্যান অমুসারে, কুর্দ্ম আদিত্য-বরূপ ও প্রজাপতির অব- 🗸 ভার। এটি অপেকাকত প্রাচীন কথা তাহার সন্দেহ নাই। পশ্চাৎ বিষ্ণুর উপাদনার প্রাহর্তাব হইলে, প্রাণে কৃর্ম বিষ্ণুবতার বলিয়া প্রচারিত হয়। দেবাছেরে একত্র হইরা সমুক্ত মন্থ্য করেন, তাহাতে মনদর মন্থন-দণ্ড ও বাস্থাকি রজ্জু হর এবং বিষ্ণু কুর্ম্ম-রূপ পরিগ্রহ পূর্বক পৃষ্ঠোপরি মন্দর ধারণ করেন। এ বিষয়ের পৌরাণিক উপাধ্যান হিন্দু-সমাজে সর্বত্ত প্রসিদ্ধ আছে এবং খনেকানেক বালালা গ্ৰন্থেও তাহা প্ৰচাৱিত হইৱাছে। সভএব এ স্থলে স্বিশুর বিবরণ করিয়া গ্রন্থ বাছলা করিবার প্রয়োজন নাই। রামায়ণের বাল-कारकत वद मार्ग, व्यामिभारकत ১१-১৯ व्यवारिय, मरखभूतार्गत २८४-२४० व्यवारिय विकृश्वार्गत अथम जारामत नवम जागात, नवाश्वारात शृष्टिपरकत हरूर्व जागात ও উত্তরণতের লক্ষ্যৎপত্তি নামক অধ্যানে, ভাগবতের অষ্টমন্বদের সপ্তম অধ্যানে ७ अधिभूबालम जुडीम अधारम अविचरमम जेभाषान मनिरमम वर्निक स्हेमारक। त्नहे ममख खे**लाचात्नत्र लदम्लद विख्य खरेनका ७ वि**ख्यिका *व्यविद*्ध लाख्य বার, অথচ সে সম্বারই একমতাবলবী এক গ্রন্থকারের বিরচিত বলিরা প্রচলিত আছে ইহা সামাগ্ত কৌতুকের বিষয় নর।

বরাহাবভার।- এইরপ, বরাহও বেদ-শাল্লে প্রজাপতির অবভার বলিয়া 🗠 বার্ণত হইরাছে। এ বিষয়ে তৈভিরীয়সংহিতার প্রামাণই সর্ব্বাপেকা প্রাচীন द्याय स्त्र ।

चापोवाद्यमधे चिललमासीत्। तिकान् प्रजापितर्वासुभूँ ला-चरत्। स दमाम् प्रपच्यत्। तां वराहो भूत्वाहरत्।

তৈত্তিরীয়সংহিতা। ৭। ১। ৫॥

এই জগং প্রথমে ধ্রলময় ছিল। প্রধাপতি বায়ু স্বরূপ হইয়া তাহাতে বিচরণ করেন। তিনি এই পৃথিবী দর্শন করিলেন ও বরাহরূপ পরিগ্রহ পূর্বাক উদ্ধার করিলেন।

श्वापोवाद्रदमये सिललमासीत्। तेन प्रजापितरश्वास्यत्। कथ-मिदं स्थादिति। सीऽपश्चत् पुष्करपर्णं तिष्ठत्। सीऽमन्यत। श्रस्ति वै तत्। यिसिबिदमधितिष्ठतीति। स वराहोरूपं कली-पन्यमज्जत्। स पृथिवीमध श्राच्छेत्। तस्या उपहत्योदमज्जत्। तत् पुष्करपर्णे प्रथयत्। यदप्रथयत् तत् पृथिवे पृथिवीत्वम्।

তৈতিরীর ব্রাহ্মণ। প্রথমান্টক। প্রথমাধ্যার্। তৃতীরামুবাক।

• এই জগৎ অপ্রে জনমর ছিল। প্রজাপতি স্টি করিবার ইচ্ছা করিরা
বিবেচনা, করিলেন *, কিরুপে ইহাতে জগৎ নির্দ্ধিত হইবে ? তিনি দেখিলেন,
একটি পল্পত্র রহিয়াছে। মনে করিলেন, অবশ্রুই ইহার আধার-স্বরূপ কোন বস্তু
বিশ্বমান আছে। তিনি বরাহরূপ ধারণ করিয়া সলিলে নিমগ্র হইলেন এবং নিজে
গিয়া পৃথিবী প্রাপ্ত হইলেন। তাহা হইতে দস্ত হারা মৃত্তিকা খনন করিয়া লইয়া
উথিত হইলেন । ঐ মৃত্তিকা পল্পত্রে প্রথিত অর্থাৎ প্রসারিত কবিল।

রাখিলেন। সেই মৃত্তিকা প্রথিত হয় বলিয়া তাহার নাম পৃথিবী হইল ±।

^{* &}quot;मत्रास्यत्" पथ्योत्तीचनकृप' तपीऽतुक्त ।--- मात्रन- ७ । ।

^{† &}quot;उपश्र्योदमञ्जत्" कियतीमधाद्रीं सदं खदंदया पृथक्क्रत्य स्वित्तस्त्रीपर्युक्तस्त्रनं कतवान् ।----नाद्रन-चारा ।

আন্তে এই পৃথিবী এক প্রাদেশমাত্র ছিল। একটি এমূব নামক মরাহ ভাহাকে উদ্ধার করে। এই উপাধ্যানেরও সহিত প্রজাপতির সম্বন্ধ দেখিতে পাঙরা যার, কেন্দা এই কথার পরেই লিখিত আহে,—

তৈ ভিনীয় আক্ষণে ৰবাহ অৰভাবের বিষয় এইরূপ বর্ণিত হইয়াছে। রামায়ণে বরাহ অকার অবতার বলিয়া স্পষ্ট লিখিত আছে।

सब्बं सिल्सिनवासीत् प्रथिवी तत्र निष्मिता । ततः समभवद् ब्रह्मा खयक्त्रूदेवतेः सङ् ॥ स वराङ्खतो भूत्वा प्रोक्जङार वसुन्धराम् । अस्टजञ्च जगत् सब्वं सङ् प्रतेः क्षतात्मिः ॥

त्रामात्रम । २ । ১১ • । ७ 😉 ८ ॥

প্রথমে সমুদর জলমর ছিল; তাহাতেই পৃথিবী নির্ম্মিত হর। পরে স্বর্ম্ব বন্ধা দেবগণ সমভিব্যাহারে উৎপন্ন হন। অনস্তর তিনি বরাহরূপ ধারণ করিয়া পৃথিবীকে উদ্ধার করেন ও আপনার কতাত্মা প্রত্যগণকে সঙ্গে লইয়া সমস্ত জগৎ কৃষ্টি করিয়া কেলেন।

रात्री चैकार्णवे ब्रह्मा नष्टे स्थावरजङ्गमे ।
सुस्वापाक्षसि यक्तसीकारायण इति स्मृतः ॥
प्रवियंक्ते प्रवृक्षो वे दृष्टा ग्रून्यं चराचरम् ।
स्मृष्टुं तदा मितं चक्रो ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ॥
स्वतं त्राप्त तां स्मां तां समादाय सनातनः ।
पूर्ववत् स्थापयामास वाराष्ट्रं रूपमास्थितः ॥
शिक्षश्रुता । ॥ । ॥ ८ — १४ ॥

सीऽस्त्राः पतिः प्रजापतिस्तेनैव एनमेतन् मिथुनेन प्रियेण धाना समझेयति क्रत्यं करोति।

তৈন্তিরীর আরণ।কে মৃত্তিকাভিমন্ত্রণ-প্রকরণে লিখিত আছে,

भूमिर्धेन्धरणी लोकधारिणी। उडुतासि वराहेच * कृणो न सतवाहुना। ভৈজিনীয় আরণ্যক।১০১৮॥

(মৃত্তিকা)! তুমি পৃথিধী-স্বন্ধপা ও ধেমু (অর্থাৎ কামধেমু-সদৃশী) এবং সত্য ও প্রাণি-গণের ধারণকর্মী। একটি কৃষ্ণবর্গ শতবাহ বরাহ তোমাকে উদ্ধার করে।

পৃথী-পতি প্রস্তাপতি এই এম্বকে ইহার এই প্রীতি-নিকেতন মিধুন প্রদান হারা সমৃদ্ধ ও সম্পূর্ণ করিরা দেন।

वदाञ्चावतादेखः ।——সায়नाठाव्यः ।

রাত্রিকালে স্থাবর জঁকম সমুদর বস্ত একার্ণবে নট হইলে পর, বন্ধ। সলিলো-পরি শরন করিয়াছিলেন। এই নিমিন্ত ছিনি নারারণ ক বলিরা উক্ত হইরা-ছেন। রাত্রি-শেবে বন্ধবিত্তম বন্ধা জাগরিত হইলেন এবং চরাচর জপং শৃষ্ট দেখিরা ভাষ্ট করিতে মানস করিলেন। ধরণীমগুল জলে পরিপ্লুত ছিল; সনাতন বন্ধা বরাহ-রূপ ধারণ পূর্বক তাহাকে গ্রহণ করিরা পূর্ববং স্থাপন করিলেন।

তৈভিরীয়সংহিতা, ভৈভিরীয়ত্রাহ্মণ ও রামায়ণোক্ত উল্লিখিত উপাধ্যান **এবিষয়ের নানা পৌরাণিক উপাধ্যান অপেক্ষা প্রাচীন ভাছার সন্দেহ নাই।** ঐ উভবে বরাহ প্রকাপতি ও বন্ধার অবতার বলিয়া নির্দেশিত হইয়াছে। লিকপুরাণ শিব-প্রধান ; বিষ্ণু-মহিমা প্রচার করা তাহার উদ্দেশ্ত নয় ; অতএব ভাছাতে প্রাচীনভর উপাধ্যানামুদারে, বরাহ ত্রন্ধারই অবতার বলিয়া নির্দেশিত হইরাছে। পশ্চাৎ বিষ্ণুপুরাণ, বহ্নিপুরাণ, পদ্মপুরাণ ও ছরিবংশে ঐ উপাধ্যান পরিবর্ত্তিত ও পরিবর্দ্ধিত করিয়া বিষ্ণুর মনিমা-প্রতিপাদন বিষয়ে নিরোজিত कत्रा हरेब्राह् । এই नकन भूतान ও हत्रिवर्णत मरू, बत्राह विकृतरे व्यवणात । মুলোপাধ্যান এত পরিবর্তিত হইয়াছে বে, অবভীর্ণ হইবার মূল উদ্দেশ পর্যাত্ত বিভিন্ন হইরা গিয়াছে। এই সমস্ত উপাধ্যান হুই প্রকারে বিভক্ত হুইতে शारत ; এक श्रकात এই दा, विक्रू त्रमां हरेट प्रथिवीटक छैदात कतिवात উদ্দেশে বরাহ-রূপ ধারণ করেন, আর বিভীয় এই যে, তিনি দৈতাবধ ঘারা ভূমগুলের ভার মোচন করিবার অভিপ্রায়ে ঐরণে অবভীর্ণ হন। বিষ্ণু ও পদ্ম প্রভৃতি পুরাণে রসাভদ হইতে পৃথিবী-উদ্ধারের বিবরণ আছে, আর মহা-ভারতে এবং লিল, বহ্নি প্রভৃতি পুরাণে বরাহ ছারা দৈত্য-বধেরই বিষয় বর্ণিভ ब्हेबाह्य। वृतिवराम अवर मरमाभूतात के उलब श्राकात छेशायान है किन्नमान মিশ্রিত হইরা গিরাছে। ঐ উভরে বরাহ বারা রুসাতল-মন্না পৃথিবীকে উদ্ধান করিবার আখ্যানও আছে এবং তন্মধ্যে পৃথিবী-কৃত বিষ্ণু-তবে এইরপ উল্জিও

^{*} १> गृष्ठीत्र এই भरमत्र सुरशिक्ष (तथ ।

আছে যে, "ভগবন্! আমি দানবগণ কর্তৃক আক্রাস্ত হইয়া তোমার শ্রণাপর হইয়াছি; আমাকে পরিঝাণ কর" *।

বিষ্ণুভাগবতাদি পুরাণে যজ্ঞবরাহ নামক একটি বরাহ-প্রদক্ষ আছে। সেটি যজ্ঞের রূপক বই আর কিছুই নয়। তদীয় বর্ণনায় চারি বেদ তাঁহার চারি পাদ, যুপ তাঁহার দংষ্ট্রা, অগ্নি জিহ্না, কুশ গাত্রলোম, অহোরাত্র নেত্র-যুগল, পরব্রহ্ম মস্তক, বৈদিক স্কে সমুদার জটারাশি, বেদছেন্দ গাত্র-ত্বক্, যজ্ঞ-যুভ নাসিকা, চমস-পাত্র কর্ণ-রন্ধু, সামগান গভীর নাদ, যজ্ঞসমূহ অঙ্গ-সন্ধি ইত্যাদি রূপক বর্ণনাই দৃষ্ট হইয়া থাকে। এবিষয়ে ভাগবত ও বিষ্ণুপুরাণে পরম্পর কিছু কিছু বিভিন্নতা দেখিতে পাওয়া যায় †।

মহাভারতীয় শান্তিপর্কের অন্তর্গত মোক্ষধর্মপর্কের ২০৯ অধ্যায়ে, ভাগ-বতের তৃতীয় ক্ষকের ১৮ ও ১৯ অধ্যায়ে, লিঙ্গপুরাণের ১৭ অধ্যায়ে, অগ্নপুরাণের চতুর্থ অধ্যায়ে, বিফুপুরাণের প্রথম অংশের চতুর্থ অধ্যায়ে, পদ্মপুরাণের স্ষ্টি-থণ্ডের তৃতীয় অধ্যায়ে, হরিবংশের ২২৪ অধ্যায়ে, কালিকা উপপুরাণের ২৮ ও ২৯ অধ্যায়ে, মৎস্থপুরাণের ২৪৬ ও ২৪৭ অধ্যায়ে এবং বহিত ও গরুজপুরাণে বিফুর বরাহ-রূপ-ধারণ বিধ্রের নানাপ্রকার উপাধ্যান বিজ্ঞান আছে।

বামন।—ঝ্থেদের এক স্থলে লিখিত আছে, বিষ্ণু অর্থাৎ আদিত্যবিশেষ এই জগন্মগুলে ত্রিপদ বিক্ষেপ করেন।

द्रदं विष्णुवि चक्रमे त्रेधा निद्धे पदं। समूढ़मस्य पांसुरे।

বিষ্ণু এই জগতে ভিন পদ বিক্ষেপ করিয়াছিলেন; সম্দার জগৎ তাঁহার ধূলি যুক্ত পদ দারা ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছে।

त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गीपा घदाम्य:। घतो धर्माणि धारयन्।

श्र मर । ३ । २२ । ३৮ ॥

रुतिवर्ण। २२८।२७॥

† বিষুপুরাণ, ১, ৪ এবং ভাগবত, ৩, ১৩ দেখ।

दाभवैस्तेजसाक्रान्तां रसातलतलं गताम् ।
 वायस्व मां सुरश्रेष्ठलानिव श्रर्णं गताम् ॥

হৃদ্ধ ও সকল অগতের রক্ষাকারী বিষ্ণু ধর্মের পৃষ্টি-সম্পাদন পূর্বক পৃথিবী প্রভৃতি স্থানে তিন পদ বিক্ষেপ করিয়াছিলেন।

নিক্জকার যাত্ব ঋষি এই ছুই ঋকের যেরূপ ব্যাখ্যা করেন, পশ্চাৎ লিখিত হইতেছে।

यदिदं किञ्च तिहचक्रमे विष्णु:। तिधा निधत्ते पदं तेधा-भावाय पृथिव्यामन्तरिचे दिवीति शाकपूषि:। समारोच्चणे विष्णुपदे गयशिरसीत्यीर्णनाभ:।

निक्रका १२ । १৯॥

বিষ্ণু এই সমগ্র জগৎ পরিক্রম করেন। তিনি তিন প্রকার ভাব গ্রহণার্থ তিনবার পদ-বিক্ষেপ করেন। শাকপুণি বলেন, (বিষ্ণু) ভূলেণিক, ভূবলোক ও স্বর্গলোকে পদ-বিক্ষেপ করেন। উর্ণনাভ কহেন, উদয়স্থানে, মধ্যাকাশে ও অন্ত-গ্রমন-স্থলে পদার্পণ করেন।

ব্দত এব ঔর্ণনাভের মতে, এই বিষ্ণু সূর্য্য ও তাঁহার ত্রিপাদ-বিক্ষেপ উদয়, অন্ত ও মধ্যাহ্নকালের গতি বই আর কিছুই নয়। হুর্গাচার্য্য নিরুক্তভাষ্যে এই কথাট স্কুস্ট নিধিয়াছেন।

विश्वारादित्यः। कथमिति यत श्राह तेथा निद्धे पदम्। निधत्ते पदम्। निधानं पदः। क तत्र तावत्। पृथिव्यामन्तरीचे दिवीति शाकपूर्णः॥ पाथि वोऽग्निभूत्वा पृथिव्यां यत्किश्चिद्दस्ति तिहक्रमते तद्धितिष्ठति श्रन्तरीचे वैदुरतात्मना दिवि सूर्य्यात्मना॥ यदुक्तम् 'तमू शक्कणुन् त्रेधा भुवे कम्"। (॥—गः। २०। ৮৮। २०।)

समारोच्चणे उदयगिरावुद्यन् पदमेकिविघत्ते ॥ विष्णुपदे मध्य-न्दिनेऽन्तरीचे । गयगिरस्यस्तं गिरावित्यीर्णनाभ श्राचार्यो मन्यते । क्रीकार्यः।

বিষ্ণু সূর্যা, কেননা তিনি তিনবার পদ-নিক্ষেপ করেন। কোথার ?—শাক-পুণি বলেন, ভূলোক, হ্যুলোক ও অন্তরীক্ষে। তিনি পার্থিব অগ্নিম্বরূপ হুইয়। পৃথিবীতে যৎকিঞ্চিৎ গমন ও অধিষ্ঠান করেন। অন্তরীক্ষে বিহ্যুৎ-ম্বরূপ ও ভালোকে স্থ্য-শ্বরূপ হইরা গমন ও অধিষ্ঠান করেন। শ্রুতিতে উক্ত হইরাছে, 'দেবগণ সেই (স্থ্য-শ্বরূপ) অগ্নিকে তিন প্রকার ভাবে বিদ্যানান করিয়া দেন।' উর্ণনাভ আচার্য্য বিবেচনা করেন, উদয়কালে উদয়াচলে উদয়-স্থানে এক পাদ বিক্ষেপ করেন, মধ্যাক্ত কালে বিষ্ণুপাদে অর্থাৎ মধ্যাকাশে অপর একপাদ এবং অস্তাচলে গয়শিরে * অর্থাৎ অস্তামন-স্থলে অন্ত একপাদ বিক্ষেপ করেন।

পুরাণে বামনাবভারের উপাথ্যান মধ্যে লিখিত আছে, বিষ্ণু বামনরূপ ধারণ পূর্বাক বলি রাজাকে ছলনা করিতে গিয়া ভূতলে একপাদ, অস্তরীক্ষে একপাদ ও অবশেষে বলির মস্তকোপরি একপাদ অর্পণ করেন। এই নিমিত্ত এই অবতারকে ত্রিবিক্রমাবতারও বলে। সায়নাচার্য্য উলিখিত হুই ঋকের ব্যাখ্যায় পৌরাণিক বিষ্ণুর ঐ অবতারের প্রদক্ষ করিয়াছেন। কিন্তু বেদোক্ত বিষ্ণু বলি-বঞ্চক পৌরাণিক বিষ্ণু নন, মূলেও কোন অবতারের প্রদক্ষ নাই এবং পূর্ব্ব আচার্য্যেরাও তাহার সেরূপ অর্থ করেন নাই। বরং বেদোক্ত বিষ্ণু নামক আদিত্য-বিশেষের উলিখিত ত্রিপাদ-বিক্রমের প্রদক্ষ হইতেই পৌরাণিক বিষ্ণুর বামনাবভারের উপাধ্যান উদ্বোধিত হইয়াছে এই কথাই সর্ব্বভোভাবে সম্ভব।

শতপথব্রাহ্মণে এক যজ্ঞ-বাচক বামন-রূপী বিষ্ণুর উপাধ্যান আছে; তিনি অহ্বরগণের নিকট হইতে কৌশলক্রমে সমস্ত ভূমণ্ডল অধিকার করিয়া লন। সেই উপাথ্যানটি এই স্থলে অবিকল উদ্ধৃত হইতেছে।

देवास वा असुरास उभये प्राजापत्याः पस्पृधिरे। ततो देवा अनुव्यमिवासुरयहासुरा मेनिरेऽस्माकमेवेदं खलु भुवनमिति ॥१॥ ते होचुईन्तेमां पृथिवीं विभजामहै तां विभज्योपजीवामिति। तामीक्षां समीभः पसालास्त्रो विभजमाना सभीयः॥२॥ तद् वे देवाः श्रसुवुविभजन्ते ह वा दमामसुराः पृथिवीं प्रेत तदेखामो यह्ने-

^{*} এই গয়শির শব্দ পাইয়াই কি গয়া-মাহাত্মা ও গয়ায়রের উপাথ্যান বিরচিত হইরাছে?

যথন বিষ্ণু নামক আদিত্য-বিশেষের অর্থাৎ সুর্ধ্যের গয়শিরে (অর্থাৎ অন্তগমন-স্থলে) পদ
বিক্ষেপের প্রদক্ষ আছে এবং যথন পৌরাণিক বিষ্ণুরও গয়শিরে (অর্থাৎ গয়ায়ুরের মন্তকে)
পদার্পণের কথা লিখিত রহিয়াছে, তথন এ অমুমান কোন রূপেই অসম্ভব ও অসক্ষত নয়।

मामसुरा विभजनो । के ततः स्याम यदस्य न भजेमहोति । ते यद्मिव विष्णुं पुरस्कृत्येयुः ॥ ३ ॥ ते होतुः अनुनोऽस्यां पृथिव्या-माभजतास्ते व नोऽप्यस्यां भाग इति । तेऽसुरा अस्यन्त इवोत्तुर्या-वदेवेष विष्णुरिभग्रेते तावहोद्म इति ॥ ४ ॥ वामनो ह विष्णुरास । तहे वा न जिहीडिरे महद्दे नोऽदुर्ये नो यद्मसम्मतमदुरिति ॥ ५ ॥ ते प्राम्चं विष्णुं निपाद्य छन्दोभिरिभतः पर्यययह्मन् गायत्रेण त्वाच्छन्दसा परिग्रह्मामीति दिच्णतस्त्रेष्टुभेन त्वाच्छन्दसा परिग्रह्मामीति पश्चा-क्यागतेन त्वाच्छन्दसा परिग्रह्मामीत्यत्तरतः ॥ ६ ॥ तं छन्दोभिरिभतः परिग्रह्मामीत्यत्तरतः ॥ ६ ॥ तं छन्दोभिरिभतः परिग्रह्मा ग्राम्वं प्रस्तात् समाधाय तेनार्चन्तः श्वाम्यन्तश्चेषस्तेने मां सर्व्यां पृथिवीं समविन्दन्त ।

শতপথব্ৰাক্ষণ। ১। ২। ৫। ১-- १॥

দেবগণ ও অম্বরগণ উভয়ে প্রজাপতির সম্ভান। তাঁহারা পরম্পর বিরোধ করিয়াছিলেন; তাহাতে দেবতারা পরাস্ত হন। অস্তুরেরা বিবেচনা করিল, এই পৃথিবী নিশ্চয় আমাদেরই। তৎপরে তাহারা বলিল, এস আমরা এই পৃথিবী ভাগ করি; করিয়া তদ্বারা জীবিকা নির্বাহ করিতে থাকি। তদমুসারে, তাহারা तूष-क्या निमा शूर्व-शाक्ति विजान कतिएक नानिन। तनवनन अनिमा कहितन, অহরেরা পৃথিবী বিভাগ করিতেছে, অতএব এস আমরা বিভাগ-স্থলে গমন कति। यनि आमता छेरात अःम ना भारे, छारा रहेरन, आमारित कि रहेरत ? তাঁহারা যজ্ঞরপা বিষ্ণুকে পুরোবর্তী করিয়া তথায় চলিলেন এবং বলিলেন, आमां मिगटक श्रीथेरीत अधिकाती कत्र; आमां मिगटक अ हे हात अश्म मान कत्र। অসুরেরা অসুয়া-পরবশ হইয়া প্রাত্যান্তর করিল, বিষ্ণু যে প্রামাণ স্থান ব্যাপিয়া থাকিতে পারেন, তাহাই দিব। বিষ্ণু বামন ছিলেন। দেবপণ তাহাতে অস্থী-कांत्र कतिरामन ना : किन्त जामनारामत्र मर्पा এই कथा विनामन, अञ्चरत्रता जामा-দিগকে যজ্ঞ-পরিমিত স্থান দান করিয়াছে। তাহারা যথেষ্ট দিয়াছে। পরে তাঁহারা (অর্থাৎ দেবগণ) বিষ্ণুকে পূর্ব্বদিকে স্থাপিত করিয়া ছন্দসমূহে পরি-বেষ্টিত করিলেন; বলিলেন, তে।মাকে দক্ষিণ দিকে গায়ত্রীচ্ছন্দে পরিবেষ্টিত করি, পশ্চিম দিকে ত্রিষ্টুভচ্ছকে পরিবেষ্টিত করি এবং উত্তর দিকে জগভীচ্ছকে

পরিবেষ্টিত করি। এইরূপে জাঁহাকে চতুর্দ্ধিকে ছন্দে পরিবেষ্টিত করিয়া, তাঁহারা অগ্নিকে পূর্ব্ব দিকে স্থাপিত করিলেন, এবং অর্চনা ও শ্রম করিতে করিতে বিচরণ করিতে লাগিলেন। তদ্বারা তাঁহারা সমস্ত ভূবন প্রাপ্ত ইইলেন।

এবিষয়ের বৈদিক প্রমাণ যাহা কিছু উদ্বৃত হইল, তাহান্ম ফলিভার্থ এই যে, ঋষেণ্ডলাহ্বদারে, আদিতা বিশেষ বিষ্ণু অর্থাৎ স্থ্য উদয়-কালে উদয় গিরিতে মধ্যাহ্বকালে অস্তরীক্ষে, এবং অস্ত-কালে অস্ত-গমন স্থলে পদ-বিক্ষেপ করেন; আর শতপথ রান্ধাণ অন্থদারে, যজ্ঞ-স্বরূপ বামন-রূপা বিষ্ণু কৌশশক্রমে অস্থর গণকে ছলনা পূর্বক অবনিম গুল অধিকার করিয়া লন। এই সৌর-কার্ত্তি ও ষজ্ঞ মহিমা-প্রতিপাদক বৈদিক উপাথান হইতে স্কষ্টি-স্থিতি প্রলয়মক্তা বৈকুপ্ঠ-বাসী পৌরাণিক বিষ্ণুর বামনাবতার-বিষয়ক কি অন্তৃত উপাথানই উদ্ভাবিত হইয়াছে। হিল্পু সমাজে তাহা স্থপ্রসিদ্ধই আছে, অতএব বাহল্য-ভয়ে এস্থলে আর লিখিত হইল না। ভাগবতের অষ্টমস্কদ্বের সপ্তদশ অবধি অয়োবিংশ অধ্যায় পর্যান্ত, পদ্মপুরাণের উত্তরগত্তের আটচ্বলিশ ও উনপঞ্চাশ অধ্যায় এবং বামনপুরাণের পাঁচান্তর অধ্যায় পাঠ করিলেই সবিশেষ জানিতে পারা ঘাইবে। সেই উপাথ্যাননের মধ্যে বৈদিক ও পৌরাণিক বিষ্ণুর অভেদ-প্রতিপাদন উদ্দেশে একটি কৌশলও প্রকাশ করা হইয়াছে। বৈদিক বিষ্ণু আদিত্য-বিশেষ। বামন-রূপী পৌরাণক বিষ্ণু অদিতির পুজ্র; স্থতরাং তিনিও আদিত্য। ইহা হইলে, উভয় বিষ্ণুতে এ অংশে স্থলর ঐক্য রহিয়া যায়।

এ পর্যান্ত বিষ্ণুর বিষয় যংকিঞ্জিং যাহা লিখিত হইল, সমন্ত পাঠ করিলে নেখিতে পাওয়া যায়, প্রাচীনতর শাস্ত্র-প্রমাণে, পুরুষ ও ব্রহ্মার নামই নারায়ণ, পশ্চাৎ অপ্রাচীনতর গ্রন্থে তাহা বিষ্ণুর নামাবলী মধ্যে সরিবেশিত হইয়াছে; প্রাচীনতর শাস্ত্রের মত এই যে,ব্রহ্মা ও প্রজাপতি-সংজ্ঞক পুরুষ অলশায়ী ছিলেন; তৎপরিবর্ত্তে অপ্রাচীনতর প্রস্তে বিষ্ণুই সমুদ্রশায়ী বলিয়া বর্ণিত হইয়াছেন; প্রাচীনতর শাস্ত্রান্থ্যার, বেদ, বিরাট্ ও বর্ণের স্থাষ্টি প্রভৃতি যে কতকগুলি বিষয় ব্রহ্মা ও পুরুষ দেবের ক্রিয়া বলিয়া হিল্মগুলার সংস্কার ছিল, অপ্রাচীনতর গ্রন্থে তাহাও বিষ্ণুর ক্রিয়া বলিয়া প্রকাশিত হইয়াছে, এবং প্রাচীনতর শাস্ত্র প্রমাণে, পুর্বাতন হিল্মুরা মৎস্থ কুর্মাদি কতকগুলি দেবাবতারকে ব্রহ্মা ও প্রজাপতির ক্ষবতার বলিয়া বিশ্বাস করিতেন, অপ্রাচীনতর শাস্ত্রাহ্মারে, ইদানীস্তন হিল্মুরা

নে সমুদায়কে বিষ্ণুর অবতার বলিয়া প্রত্যায় যাইতেছেন।ফলতঃ পূর্বতন দেবতার বিশেষের অনেকানেক উপাধ্যান পশ্চাৎ রূপান্তরিত ও পরিবর্দ্ধিত করিয়া পৌরানিক বিষ্ণুর মহিমা প্রকাশ উদ্দেশে নিয়োজিত হইয়াছে ইহা হিন্দু শাস্ত্রের বহুতর
স্থলে দেবীপ্যমান দেখিতে পাওয়া যায়। ভক্ত জনেরা অন্যদীয় স্থশোভন অলঙ্কার
অপহরণ করিয়া আপন আপন ইষ্টদেবের মনোমত সজ্জা প্রস্তুত করিয়া দিয়াছেন।
এইরূপে 'উদোর পিও বুধোর ক্ষক্ষে' স্থাপন করিয়া হিন্দু-ধর্মের অভিনব রূপ
উৎপাদন করা হইয়াছে। হিন্দু শাস্ত্র ক্রমশঃ কতই পরিবর্ত্তিত ও কি বিপ্রান্তই
হইয়া গিয়াছে।

রাম-পরশুরামাদি।—বিষ্ণৃবতারের মধ্যে হিন্দুসমাঙ্গে এখন রাম ও ক্লেজের উপাসনাই প্রচলিত ও প্রবল। পূর্ব্ব কালে অসাধারণ বীর-পূরুষদের অর্জনা নানাদেশে প্রচারিত হয়। সেইরূপ ভারতবর্ষেও রাম-পরশুরামাদি বীর-পূরুষ দেবতা বলিয়া কীর্ত্তিত ও পূঞ্জিত হইয়া আসিয়াছেন। রামচক্র দক্ষিণাপথে ও লক্ষায় অর্থাৎ সিংহল দ্বীপে * গমন করিয়া শৌর্য-বীর্য্য প্রকাশ করেন ইহাই কীর্ত্তন করা রামায়ণ-রচনার প্রধান উদ্দেশ্য। পরশুরামও ঐ অঞ্চলে পরিভ্রমণ পূর্বক কেরলরাজ্য সংস্থাপন ও তথায় বারংবার আর্য্য-বংশ ও আর্য্য-ধর্ম প্রতিষ্ঠা করেন এইরূপ বর্ণিত আছে । হয়ত, ইনি ভারতবর্ষের দক্ষিণথণ্ডে আর্য্য বাস ও আর্য্য ধর্ম-সংস্থাপনের প্রপাত করিয়া যান। ফলতঃ রাম পরশুরাম উভয়েরই উল্লিখিত রূপ পরিকীর্ত্তিত বীরত্ব-গুণ-প্রচারেই তাহাদিগকে বিষ্ণৃবতার করিয়া তৃলিয়াছে।

পুর্বেব সিংহল দ্বীপেরই নাম লঙ্কা ছিল একথাটি নিভান্ত আধুনিক অনুমান নয়।
 পালিভাবায় বিরচিত একথানি পুরাতন গ্রন্থে এ বিষয়ের একটি প্রবাদ লিপিবদ্ধ আছে।

सीहवाहु निर्द्योची येन सीह समागही। तेन तस्सचजानचा सीहलातिपतुचरे॥ सीहलेन प्रयंखदा गहिता तेन वासिन्य। तेनेव सीहलन्नाम सिखतं सीहलन्नु ता॥ महोत्रम। मश्रम शतिष्ठिए।

সীহবাহ রাজা সিংহ বধ করেন, এই হেতু তদীর পুত্রগণ সীহল বলিয়া উলিখিত হর। সেই দীহলেরা এই লকা অধিকার করিয়া তাহাতে অধিবাস করেন, এই নিমিত্ত ইহার নাম দীহল। পালিভাষার সীহল শব্দ সংস্কৃতভাষার সিংহল শব্দের রূপান্তর।

† পরশুরাম বারংবার ক্ষত্রিয়-কুলধ্বংস করেন এ প্রবাদ অপর সাধারণ সকলেরই বিদিত আছে। ্যস্তির, তাঁহার দক্ষিণাপথ-সংক্রান্ত কার্ন্তি বিষয়ক অন্ত একটি কথাও লিপিবদ্ধ রহিরাছে। তিনি-য় ঐ অঞ্চলে গিয়া অবস্থিতি করেন, মহাভারতের স্থল-বিশেষে তাহার স্চনা আছে। কৃষ্ণ।—বেদের মধ্যে শ্রীক্তম্বের প্রদক্ষ প্রায়ই নাই; কেবল উহার সর্বাপেক্ষা মপ্রাচীন অংশে অর্থাৎ উপনিষদ্-ভাগে তাঁহার নাম উল্লিখিত আছে *। তত্তির, ঐ শাস্তের কোন স্থানে তিনি স্কটি-স্থিতি-প্রলয়-কর্তা পরমেশ্বর অথবা একটি প্রধান দেবতা বলিয়া বর্ণিত হন নাই। রামায়ণের প্রথম প্রণয়ন-কালে রাম ও

गच्छ तीर समुद्रसा दिचयमा मश्वामुने।
न तं महिषये राम वस्तव्यमिष्ठ कर्षिचित्।।
ततः पूर्णारकं दंशं धागरससा निर्माम ।
सहसा जामदग्न्यस्य सीऽपरान्तमहीतलं।।

শান্তিপর্বা রাজধর্ম। ৪৯-৬৬-৬৮॥

মহামুনি রাম ! আমার অধিকারে বাস করা কদাচ তোমার উচিত নয়। অতএব তুমি দক্ষিণসমুদ্র-তীরে গমন কর। তৎপরেই সাগর তাঁহার নিমিত্তে শৃপারিক দেশ নির্দ্ধাণ করিয়া দিলেন। তিনি পৃথিবীর অপরান্ত দেশে শমন করিলেন।

স্বন্দ পুরাণের সহান্তি খণ্ডে লিখিত আছে,

अब्रह्माक्षेत्र तदा देशं की वर्तान प्रेच्य भागेव:।

·· ·· ... यज्ञसृत्रमकरूपयत्॥

खापियला सकीय स चंत्रे विप्रान् प्रकल्पितान् । जामदिग्रसदीवाच सुप्रीतेनाक्तरात्मना ॥ रेंडापि।

স্বন্দপুরাণীয় সহাদ্রিখণ্ডের উত্তর কাণ্ড

তথন পরশুরাম সেই ব্রাহ্মণ-বর্জ্জিত দেশে কৈবর্ত্তদিগকে দেখিয়া যজ্ঞস্ত্র প্রদান করিলেন এবং সেই কৃত-ব্রাহ্মণদিগকে নিজ ক্ষেত্রে স্থাপন করিয়া স্থুপ্রীত মনে ব'ললেন, (ইত্যাদি)।

ে কেরল-উৎপত্তি নামক গ্রন্থে পরগুরামের ,দক্ষিণাপথ-সংক্রান্ত কীর্ত্তি সমুদ্র সবিশেষ বর্ণিত হই-রাছে। Taylor's Oriental Manusctripts, Vol. 2. ও Wilson's Mackenzie Collection, Vol. 2. এই ছুই পুত্তক পাঠ করিলে এবিষয়ের অনেক কথা প্রাপ্ত হওয়া যাইবে।

तह तद्घीर त्राङ्गिरसः कृषाय दंवकी प्रत्नायी क्षीवाच । त्रिपास एव स बभूव ।
 सीऽन्तवेलायामे तत् त्रयं प्रतिपद्ये ताचितमस्य चुतमसि प्राणसंश्रितमसीति ॥

ছান্দোগ্যোপনিষদ্। ৩ প্রপাঠক। ১৭ খণ্ড॥

অঙ্গিরার বংশোন্তব ঘোর ঋষি দেবকী-পুত্রকুঞ্কে তাহা উপদেশ দিয়া বলিলেন। তিনি (শ্রবণ করিয়া) তৃঞ্চা-রহিত অর্থাৎ কামনা-শৃত্য হইলেন। তাহা এই, অস্ত কালে অর্থাৎ মৃত্যু-সময়ে এই তিন বাক্য অবলম্বন করিবে. অক্ষিতমসি, অচ্যুতমসি ও প্রাণসংশিতমসি।

তৈভিরীয় আরণ্যকে বাহ্দদেবের প্রদক্ষ আছে বটে *, কিন্তু তাহাও কৃষ্ণবিষরের অধিক

মহাভারতের * প্রথম রচনা কালে রুক্ষ বিষণু বতার বলিয়া পরিগণিত ছিলেন না এই অনুমানের বিষয় ইতি পূর্বেলিখিত হইয়াছে †। এক সময়ে যে, রুক্ষ ঈশ্বরাবতার বলিয়া লোকের সংস্কার ছিল না, মহাভারতের মধ্যে তাহার বছতর নিদর্শন লক্ষিত হইয়া থাকে। ত্রোধন, ত্রশাস্ন, কর্ণ ও শকুনি শ্রীকৃষ্ণকে

প্রাচীনত্বের পরিচায়ক নয়! একেতো, বেদের সমস্ত আরণ্যকভাগ অপেকাকৃত অপ্রাচীন *; তাহাতে আবার. যে কাল পর্যান্ত কেবল বৈদিক ধের্মই ভারতবর্ষীয় আর্য্যবংশীয়দের জাতীর ধর্ম ছিল, তৈত্তিরীয় আরণ্যকে তাহার উত্তরকালীন ধর্ম-কথাদি বিনিবেশিত রহিয়াছে †। অতএব ঐ আরণ্যক সমধিক অপ্রাচীন। উহার যে অংশে বাফ্দেবের নাম লিখিত আছে, তাহার নাম যাজ্ঞিকা উপনিষদ্। তাহা পুর্বোক্ত ম্প্রাসিদ্ধ দশোপনিষদের অন্তর্গত ছান্দোগ্যোপনিষদ্ অপেক্ষা আধুনিক তাহার সন্দেহ নাই ‡।

- * অর্থাৎ মহাভারতীয় অষ্টাদশ পর্বের।
- ተ ৯৮ ও ৯৯ পৃষ্ঠা।

মহান্তাতে শ্রীকৃক্ষের ঈশ্বর্থ-প্রতিপাদক অনেক স্থলই যে পশ্চাৎ বিনিবেশিত হয়, ইহা এক-রূপ শপ্ত দেখিতে পাওয়া যায়। মহাভারতীয় মূল উপাখানের সহিত কৃষ্ণ-প্রধান ভগবদ্দীতার কোনরূপ সম্বন্ধ নাই। যারতর যুক্ষবর্ণনার মধ্যে একখানি পরমার্থ-প্রধান সঙ্কলিত দর্শন-শান্ত্র সন্ধ্রেশিত করা ইইয়াছে। প্রকৃত, 'হাটের মারো রক্ষজ্ঞান"। ঐ প্রবন্ধ-রচনার উদ্দেশ্ত কি জান ? জীবায়ার ব্বংস হয় না, অতএব যত ইচ্ছা নর হত্যা কর, তাহাতে কিছুমাত্র পাতক নাই। শান্তিপর্বের ২০৭ অধ্যায়ের উপাখানিট কেবলই বিষ্ণু-মহিমা-কীর্ত্তন , তাহার মধ্যে ক্ষেকটি স্থলে কৃষ্ণবাচক শব্দ বিদ্যমান আছে এবং সর্বশেষের ছইটি শ্লোকে বিষ্ণু ও কৃষ্ণের অভেদ বর্ণন করা হইয়াছে। পাঠ করিলে, ঐ শেষ টুকু পশ্চাৎ সংযোজিত বলিয়া সহজেই অমুমান হয়। এই স্থল শুলি রহিত করিলে, উলিখিত উপাখ্যানের কিছুমাত্র অপচন্ন হয় না। শান্তিপর্বের ২৮০ অধ্যায়ে বিষ্ণুর মহিমা-কীর্ত্তনই চলিতেছে; প্রথমে তাহার মধ্যে কোন স্থলে কৃষ্ণ-প্রসঙ্গ উপস্থিত নাই; সর্বশেষে যুধিন্তির কোন উপলক্ষ বা প্রয়োজন স্থচনা ব্যতিরেকে ভীম্বকে জিজ্ঞানা করিলেন, পিতামহ। এই কৃষ্ণই কি দেই ভগবান্ নারায়ণ ? এই শেষ অংশ টুকু পরিত্যাগ করিলে ঐ উপাখ্যানের কিছুমাত্র হানি হয় না। ঐ উপাখ্যানিট আদ্যোপান্ত পাঠ করিয়া দেখিলে বোধ হয় যেন কৃষকে পূর্বক্ষ ভগবান্ বলিয়া প্রতিপন্ন করিবার উদ্দেশেই এই জংশ টুকু পশ্চাৎ শ্রক্ষিত্ত ইয়াছে।

এই পুত্তকের প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাংশের ৯৭ পৃষ্ঠা দেব।

[†] তৈতিবীয় আরণ্যকের দশম প্রপাঠক পাঠ করিলেই এরূপ আনেক বিষয় দেখিতে পাওয়া যাইবে।

[়] বাজ্ঞিকী উপনিষদের নানাপ্রকার পাঠ আছে; প্রাবিড়, আন্ধু, কার্ণাটক ইত্যাদি। ঐ করেকটি দেশ দক্ষিণাপথের অন্তর্গত। অতএব এ বিষয়টিও ঐ উপনিষদের বা ঐ আরণ্যকের অতিমাত্র আধুনিকত্বের পারচায়ক। বেদের প্রাচীনতর অংশ-সম্পার-রচনার সময়ে দক্ষিণাপথে আর্থাবংশীয়দের বাসবিন্তার হয় নাই। সেই সমন্ত অংশে ঐ দক্ষিণ থণ্ডের অন্তর্গত কোন স্থান ও কোন বন্তর কিছুমাত্র নামগন্ধ নাই।——এই গ্রন্থের প্রথম ভাগে প্রকাশিত উপক্রমণিকাশের ৭৩ পৃঠা।

বন্ধন করিতে ক্লত-সংকল্প হন *। কর্ণ মন্তরাজ্ঞ শল্যকে ক্লফ অপেক্ষা গুণবান্, বলবান ও বীর্যান বলিয়া বর্ণন করেন †। ছর্যোধন শল্যকে ক্লফ অপেক্ষা গুণশালা, বল-বীর্য্য-সম্পন্ন ও অশ্বিভান্ধ নৈপুণ্যশালা বলিয়া প্রশংসা করেন‡। যুধিন্তির রাজস্ব সভার ক্লফকে কর্য্য প্রদান করাতে, শিশুপাল যুধিন্তিরাদিকে বার পর নাই ভর্ৎ দনা করেন এবং সেই সঙ্গে ক্লফকে একটি নিভান্ত নিক্লই সামান্ত লোক বলিয়া অবজ্ঞা ও অপ্রভা প্রকাশ করিতে থাকেন শ। এই সমস্ত বিষয় যে সময় প্রথম কথিত, রচিত বা প্রচারিত হয়, সে সময়ে প্রীক্লফকে দেবাবতার বলিয়া সর্বাধারণের বিশ্বাস থাকা কোনমতেই সঙ্গত নয়। ভাগবত ও ব্রহ্মবৈর্ব্ত পরাণে প্রীক্লফ স্বয়ং বিষ্ণু অর্থাৎ পরাৎপর পরমেশ্বর বলিয়াই বর্ণিত হইয়াছেন। "ক্লফল্ভ তগবান্ স্বয়ং" ৡ। এমন কি, তাঁহারে অবভারের মধ্যে গণ্য করিলে, তাঁহার অবমাননা করা হয়। এজল্ভ বিষ্ণু বতারের চিত্রপটে প্রীক্লফের প্রতিরূপ চিত্রিত হয় না। কিন্ত তিনি একেবারেই এরূপ উন্নত পদ প্রাপ্ত হন নাই। স্বন্ধ বিষ্ণু দূরে থাকুক, প্রথমে তদীয় অংশ বলিয়াও পরিগৃহীত ছিলেন না। বিষ্ণু-প্রধান বিষ্ণুপ্রাণে লিখিত আছে, ক্লফ বিষ্ণুর অংশের একটু অংশমাত্র।

मैत्रेय सूयतामेतद् यत् प्रष्टोऽह्रमिदं लया । विष्णोरंप्रांप्रसम्भूतिचरितं जगतो हितम् ॥

विकृश्रवान। (1)। १॥

নৈত্রের ! বিষ্ণুর অংশের অংশ স্বরূপ (এরিক্ষ) জন্ম গ্রহণ করিয়া জগতের যে সমস্ত হিতকর কার্য্য সাধন করিয়াছেন, তুমি আমার নিকট ভাহা জানিতে ইচ্ছা করিয়াছ; শ্রবণ কর।

মহাভারতের স্থল-বিশেষে দেখিতে পাওয়া যায়, তিনি এক সময়ে বিষ্ণুর অষ্টমাংশ মাত্র বলিয়া গণ্য ছিলেন।

উদ্যোগ পর্ব। ১২৯। ৫ ইত্যাদি। •

^{•†} কর্ণপর্বা ৩১।৬১—৬৬॥

[‡] कर्गभर्ता ७२।७১-७8॥

র সভাপক্ষ। ৩৬॥

[§] ভাগৰত। ১ কন্ধ। ৩ অধ্যায়। ২৮ লোক।

तुरीयार्डेन तस्येमं विद्य केशवमच्युतम् । तुरीयार्डेन लोकांस्त्रीन् भावयत्येव वुद्यमान् ॥

माश्विभवी। २५०। ७८॥

এই অবিনশ্বর কেশব ভাঁহারই অপ্টম অংশ স্বরূপ জানিবে। সেই বুদ্ধিমান পুরুষের অপ্টমাংশ হইতে লোকতায় উৎপন্ন হয়।

শ্রীভাগবতের সমুদায় কথা কিছু তদীয় প্রণেতার স্বকপোল-করিত নয়।
অক্সান্য প্রাণকর্তার ন্যায় তাঁহাকেও পূর্ব্ব পূর্ব্ব উপাথ্যান সঙ্কলন করিয়।
তাহার অভিনবরূপ বেশ-বিন্যাস করিতে হইয়াছে। অতএব, শ্রীকৃষ্ণকে পরাৎ
পর-পূর্বস্বরূপ স্বয়ং ভগবান বলিয়া প্রচার করা তাঁহার প্রধান উদ্দেশ্য হইলেও,
কৃষ্ণ বে বিষ্ণুর অংশ মাত্র এই অপেক্ষাকৃত পূর্ব্বতন কথাও ভাগবতের মধ্যে
রহিয়া গিয়াছে।

संस्थापनाय धर्मस्य प्रश्रमायेतरस्य च। प्रवतीर्णोहि भगवानंग्रेन जगदीस्तरः॥

ভাগবত। ১০। ৩৩। ২৭॥

অধর্ম-দমন ও ধর্ম-সংস্থাপন উদ্দেশে ভগবান্ প্রমেখর অংশাবতার (অর্থাৎ নিজ অংশক্ষপ কৃষ্ণাবতার) হইয়াছেন।

স্থলাস্তরে লিখিত আছে, কৃষ্ণ বিষ্ণুর একগাছি কেশ মাত্র।

বিষ্ণুপুরাণ। ৫। ১। ৫৯, ৬০, ৬৩ ও ৬৪॥

মহামুনি! ভগবান্ পরমেশ্বর (দেবগণ কর্তৃক) এইরূপ স্থুমান হইয়া আপেনার শুক্র ও ক্লফ ছইগাছি কেশ উৎপাটন করিলেন এবং দেবগণকে বলিলেন, আমার এই কেশছয় ভূতলে অবতীর্ণ হইয়া ভূলোকের ভার ও ক্লেশ মোচন করিবে। × × × × × শেবগণ! বহুদেবের দেবকী নামে দেবতা-সদৃশী যে এক ভার্যা আছে, আমার এই কেশ তাহার অষ্টম গর্ভে কর্মগ্রহণ করিবে। এই কেশ তথায় অবতীর্ণ হইয়া কংস্ক্রপে সমুৎপল্ল কালনেমিকে সংহার করিবে। এই কথা বলিয়া বিষ্ণু অস্তর্হিত হইলেন।

এক সময়ে যিনি এইরূপ বিষ্ণুর অংশের অংশমাত্র বলিয়া গণা ছিলেন, পশ্চাৎ ভক্তগণের ভক্তি প্রভাবে উত্তরান্তর তাঁচার অতিমাত্র উরত পদ প্রকল্পিত হইয়া আসিয়াছে। মহাভারতে তিনি সচরাচর রাজা ও বার-পুরুষ, কুত্রাণি উপাস্থ এবং কোথাও বা কঠোর তপস্থার অমুরক্ত উপাসক বণিয়া বর্ণিত হইয়াছেন। উহার কোন স্থানে তাঁহা কর্ত্ক শিব্যোপাসনা-বৃত্তান্ত *, কুত্রাপি শিব-রুষ্ণের বিবাদ-প্রসঙ্গ †, এবং কোথাও বা ঐ উভয়ের অভেদ ভাব‡-বর্ণন সন্নিবেশিত আছে। নরনারায়ণের অবতার-প্রসঙ্গে লিখিত আছে, নারায়ণ মহাদেবের গলা টিপিয়া ধরেন, ইহাতেই তাঁহার কণ্ঠদেশ নীলবর্ণ হইয়া যায়।

तत एनं समुद्भूतं कग्हे जग्राह पाणिना। नारायण: स विम्बात्मा तेनास्य शितिकग्हता॥

माख्रिभर्य। ७८८। ৮७ ७ ৮ १॥

পরে সেই বিখের আত্মাশ্বরূপ নারায়ণ এই অভ্তশ্বরূপ মহাদেবের কণ্ঠদেশ হস্ত ছারা ধারণ করেন, ইহাতে তাঁহার গলদেশ ক্লফবর্ণ হইয়া যায়।

শান্তিপর্বের উক্ত অধ্যারেরই ১০৭ শ্লোকে শিখিত আছে, মহাদেব নারারণের বক্ষঃত্বলে শূল-প্রহার করেন, তাহাতে একটি চিক্ত হয়, সেই চিক্তের নাম শ্রীবৎস চিক্ত। দেবতা-বিশেষের ভক্ত-বিশেষের ভক্তি-ভাব অমুসারে ভিন্ন ভিন্ন সময়ে এই সমস্ত বিরচিত হইরাছে তাহার সন্দেহ নাই।

^{*} त्यां ११वर्षः ४० । ८० ॥ भाष्टिभवर्षः ७८० । २८ - २० ॥

[†] শান্তিপর্ব। ৩৪৪। ৮৫--- ১০৭। হরিবংশ। ১৮৩। ১৭ ইত্যাদি।

[🗜] भोक्षिपर्वतः ७८७।२७ ७ २१। इत्रिवरमः ১৮८। ১১।

ক্ষা বৈদিক দেবতা নন একথা ইতিপূর্ব্বেট উলিখিত হটয়ছে। কোন প্রাণকর্ত্তার গুণের পরিসীমা নাই। ,তাঁহারা ক্ষম দ্রে থাকুক, রাধাকেও বৈদিক দেবতা এবং বেদ-শান্তকে ঐ উভয়ের মহিমা-বর্ণনায় পরিপূর্ণ বলিয়া প্রকাশ করিয়'ছেন। রাধার বিষয় বেদের মধ্যে থাকা দ্রে থাকুক, হরিবংশ, ভাগবভ, বিষ্ণুণরাণ এই সমস্ত বিষ্ণু-প্রধান শ্রেষ্ঠ পুরাণাদিতেও বিদ্যমান নাই, বেদ-শান্ত্রের সর্ব্বাপেকা অপ্রাচীন (উপনিষদ্) ভাগের মীমাংসাকারী শঙ্করাচার্যা রাধার বিষয় জানিতেন না। ন্যুনাধিক সহস্র বৎসর হইল, তদীয় শিষ্য আনন্দর্গির শঙ্কর বজর নামে শঙ্করাচার্য্যের জীবন-বৃত্তান্ত রচনা করেন; ভাহাতে সেসময়ে প্রচলিত বলিয়া উলিখিত শৈব, শাক্ত, বৈষ্ণুবাদি হিন্দু শান্ত্রোক্ত সমুদায় প্রকার উপাদক-সম্প্রদায়ের প্রসঙ্গ আছে *; তল্মধ্যে লক্ষ্মী সরস্বতী প্রভৃতি বিষ্ণু-শক্তি ও বাম্বদেবের কথাও সল্লিবেশিত রহিয়াছে †, কিন্তু রাধার নাম-গন্ধ কিছুই নাই। যদি সে সময় রাধার বিষয় প্রচারিত থাকিত, ভাহা হইলে ঐ গ্রন্থে তাহার প্রসঙ্গ না থাকা কোন মতেই সম্ভব ও সঙ্গত নয়। ফলতঃ রাধার উপাধ্যানটি নিতান্ত আধুনিক। অথচ ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণের রচম্বিতা মহাশয় লজ্জা-ভয় পরিভাগে করিয়া ক্ষমান বদনে বলিয়াছেন,

राधाग्रव्हस्य व्युत्पत्तिः सामवेदे निरूपिता।

× × × × × × ×

रेफोिं कोटिजन्माचं कर्मभोगं ग्रभाग्रभम्।
ग्राकारो गर्भवासञ्च मृत्युञ्च रोगमृत्युजेत्॥
धकारमायुषोज्ञानिमाकारो भववन्धनम्।
ग्रवणस्मरणोक्तिभ्यः प्रणस्थित न संग्रयः॥
रेफोिं निश्वलां भिर्तां दास्यं क्षण्णपदाम्वजे।
सर्वेपितं सदानन्दं × × ×
धकारः सहवासञ्च तत्तुल्यकालमेव च।
ददाति साष्टिं सारूप्यं तत्त्वज्ञानं हरेः स्वयम्॥

^{*} भक्तविकात । 8- ९२ थकत्। † भ, वि, ७, २० ४ २३ थकत्।

श्राकारस्तेजसीराशिं दानशिक्तां हरी यथा। योगशिक्तां योगमितं सर्ब्वकालहरिसृतिम्॥ श्रुत्युक्तिः स्मरणाद्योगान्मोहजालञ्च किल्विषम्। रोगशोकसृत्युमया वेपन्ते नात्र संशयः॥

ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণ। শ্রীক্লফজনাথগু। ১০ অধ্যায়।

সামবেদে রাধা শব্দের বৃংৎপত্তি নির্মাণিত আছে। $\times \times \times \times$ রাধা শব্দ উচ্চারণ, শ্রবণ ও শ্বরণ করিলে, উহার অন্তর্গত রকারে:কোটি-জ্ন্মাজিত পাপ ও শুভাশুভ কর্মজোগ নিবৃত্ত করে, আকারে গর্ভবাস অর্থাৎ পুনর্জন্ম এবং রোগ ও মৃত্যু নিবারণ করে এবং ধকারে আয়ুক্ষয় ও আকারে সংসার-বন্ধন হইতে মুক্ত করে ইহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। রকারে শ্রীক্বঞ্চের পদ-কমলে নিশ্চলা ভক্তি, দাস্যভাব, সমস্ত অভীষ্ট বিষয় ও সদানন্দ $\times \times \times$ প্রদান করে। ধকারে শ্বয়ং হরির সহিত সহবাস সাষ্টি ও সারূপ্য মুক্তি এবং তত্ত্তান প্রদান করে। আকারে হরিসদৃশ তেগ্রোরাশি, দান-শক্তি, যোগ-শক্তি, যোগ-মতি ও নিরস্তর হরি-শ্বরণ সম্পাদন করে। রাধা শব্দ শ্বরণ ও মনন করিলে, মোহ, গাপ. রোগ. শোক ও মৃত্যু কম্পিত হইতে থাকে ইহাতে সংশন্ধ নাই, এই বেদের উক্তি।

যে দেশ হইতে বেদ-বিদ্যা একেবারে অস্তর্গত হইরাছে, তদ্ভির অন্য দেশে এরপ অভিপ্রার প্রচার করা কোন রূপেই সম্ভব নয়। কোন বেদ-বিদ্যা-বিশা-রদ নিরপেক্ষ পণ্ডিত এবিষয়টি পর্য্যালোচনা করিয়া ব্রহ্মবৈবর্ত্ত প্রাণের রচন্নিতাকে কি বিশেষণে বিশেষিত করিবেন বলিতে পারি না।

শঙ্করবিজয় খৃঠাব্দের নবম শতান্দীতে বিরচিত হয়; তাহাতে বাস্থদেব এবং শ্রীক্ষকের নাম ও তদীয় উপাসনা-প্রসঙ্গ সন্নিবিষ্ঠ আছে। তিনি ভক্ত নামক বৈষ্ণব-সম্প্রদায়ের উপাস্থ বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছেন।

भादी भक्ता इदम् चु: । स्वामिन् वासुदेव: परमपुरुष: सर्व्यदा जगदवनपर: सर्व्यद्रः सर्व्यदेवकारण: सर्व्यद्रः सर्व्यदेवकारण: सप्य रामकणाद्यवतारिविभेदेन मूभारं निवर्त्तेयितं शिष्टावनमशिष्टसंहारं च कुर्व्यन् पुराखस्त्रचेत्र निजाविभ्रतमूर्त्तिप्रतिष्ठामाचकार । सूदा वयं किल तदीयपादपर्जनस्वया विगतपापासक्षोकवासं प्राम्याम: ।

বরাহমিহিরের সময়ে অর্থাৎ প্রষ্টাব্দের ষষ্ঠ শতাব্দীতে হিন্দুধর্মের ষেত্রপ অবস্থা ছিল, তিনি সে বিষয়ের একথানি গ্রন্থ লিখিয়া যান এবং একটি আরবী গ্রন্থকার আরবী ভাষার তাহার অনুবাদ করেন। দেই পুগুকে দেখিতে পাওরা যায়, দে সময়ে এক্ষণকার ন্যায় শিব, বিষ্ণু প্রভৃতি শাকার দেবতার আরাধনা প্রচলিত ছিল: কিন্তু তাহাতে রুঞোপাসনার কিছুমাত্র প্রদঙ্গ নাই∗। অতএব এই প্রমাণাকুদারে, দে সময় পর্য্যস্ত কোন ক্লফোপাসক-সম্প্রদায় প্রবর্ত্তিত হয় নাই বলিতে হয়। ফা-হিয়ন নামক চীন-দেশীয় তীর্থবাত্রী খন্তাব্দের পঞ্চম শতাব্দীর প্রারম্ভে ভারতবর্ষে বৌদ্ধ-তীর্থ দর্শন করিতে আদিয়া মথুরায় বৌদ্ধ ধর্ম্মেরই প্রাতর্ভাব দেখিতে পান †। তিনি স্পষ্ট লিখিয়া গিয়াছেন, শাক্য মুনির মৃত্যু-ঘটনার পর বৌদ্ধ ধর্ম বিনা ব্যাঘাতে প্রবল হইয়া আসিয়াছে। ঐ নগরীতে বৌদ্ধদের বির্চিত ক্যেকথানি থোদিত-লিপি পর্যান্তও প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে ‡। অতএব যে মথুরা এখন ক্রফোপাসনার আকর-ভূমি, সে সময়ে তাহাতে বৌদ্ধ ধর্মের প্রাত্রভাব ছিল। হিউএন থ্ সঙ্গু খুষ্টাব্দের সপ্তম শতাব্দীতে তথায় বিংশতিটি বৌদ্ধ-বিহার ও চুই সহস্র বৌদ্ধ উদাদীন দর্শন করেন। এই সমস্ত কথা বরাহমিছিরের উক্ত গ্রন্থের পোষক বলিয়া মনে হইতে পারে। কিন্তু তাঁহার বহু পূর্বের ক্লফ হিন্দুদের দেবমগুলী মধ্যে পরিগণিত হইয়াছিলেন ভাহার সন্দেহ নাই। উক্ত ক্যোতির্বিদের সমকালবর্ত্তী বলিয়া উল্লিখিত কবীক্র কালিদাস চুই এক স্থলে শ্রীক্লফের দেকত্ব-প্রসঙ্গ উপস্থিত ক্রিয়াছেন। এই পুস্তকের ১২১ পৃষ্ঠায় দেখিতে পাইবে, ঐ কবি-কেশরী কথনই খুষ্টাব্দের ষষ্ঠ শতাব্দীর উত্তরকালীন লোক ছিলেন না।

> रतच्छायात्र्यतिकर इव प्रेचामेतत् पुरसाद वल्मीकायात् प्रभवति धनुः खख्डमाख्ब्ख्लस्य । येन ग्रामं वपुरतितरां कान्तिमापत्साते ते वर्ष्टेणेव स्फुरितक्षिना गोपवेशसा विश्णोः॥

> > মেঘদ্ত। পূর্বমেষ। ১৫ শ্লোক॥

^{*} Journal Asiatique, Tom. 8, IV. Serie, p. 305.

[†] Pilgrimage of Fa Hian, 1848, pp. 99 and 102.

[†] Journal of the Asiatic Society of Bengal. for 1878, p. 130.

একত্র-মিলিত বছবিধ রত্ন-প্রভার সদৃশ পরিদৃশ্যমান ইন্দ্রধমুঃ-৭ও ঐ সন্মুখ-স্থিত বল্মাকের শিরোদেশ হইতে প্রকাশ পাইতেছে। গোপ-রূপধারী বিষ্ণু (অর্থাৎ শ্রীক্রম্ভ) যেমন উজ্জ্বল-কাস্তি ময়ুরপুচ্ছ ধারা স্থশোভিত হন, সেইরূপ, ভোমার ক্রম্বর্ব শরীর সেই ইক্রধকু দ্বারা সাতিশয় শোভা প্রাপ্ত হইবে।

খ্রীষ্টাব্দের নানা শতাব্দার খোদিতলিপিতে ক্লফ-প্রসঙ্গ আছে *, তন্মধ্যে চতুর্থ
শতাব্দাতে খোদিত গুর্জার-বংশীয় নূপতি-বিশেষের একথানি দানপত্র অপেক্ষাক্ত
প্রাচীন। তাহাতে উপমান্তলে শ্রীকৃষ্ণ ও তৎসংক্রান্ত লক্ষ্মী ও কৌস্বভ মণির নাম
উল্লিখিত রহিয়াতে †।

শীবছলনা ক্লখন্বয়াছিনান্দব: কীদ্যুধননিবি । লক্ষীসহকারে উৎপন্ন ও রুঞ্চ-হাদরে প্রতিষ্ঠিত কৌস্বভ মণির সদৃশ ।

অতএব লিপিতে যথন লক্ষা ও কৌস্কভ মণির নাম সহকারে ক্ষেরে নাম বিদ্যান রহিয়াছে, তথন তিনি ঐ সময়ের পূর্ব্বে একণকার মত একটি প্রধান দেবতা বলিয়া পরিগণিত ছিলেন বলিতে হইবে। যত সময়ের থোদিতলিপিতে ক্ষ্ণুনাম সন্নিবিষ্ট দেখিতে পাওয়া যায়, তাহার মধ্যে দ্বিতীয় শতাকার প্রথমার্দ্ধের খোদিতলিপি থানিই সর্ব্বাপেক্ষা প্রাচীন। ঐ লিপির তাৎপর্য্যার্থপ্রকাশক উহাতে উল্লিখিত ক্ষণ্ণ শক্ষা । হিন্দু-শাস্ত্রোক্ত ক্ষণ্ণের নাম বলিয়াই
বিবেচনা করিয়াছেন। ইহা হইলে, ঐ সময়ে হিন্দু সমাজে তাঁহার দেবত্ব-প্রবাদ প্রচলিত ছিল তাহাতে কিছুমাত্র সংশয় থাকে না।

বাম্পের নামক একটি নূপতি খ্রীষ্টাব্দের দিতীয় শতাব্দীতে রাজত্ব করেন। তাঁহার কতকগুলি মূড়াও প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে গু। বহুদেবপুত্র বাহুদেব দেবের উপাথান পূর্বে প্রচলিত ছিল, তদমুদারে প্রচলিত রীতি ক্রমে ঐ রাজার নাম রাথা হয় ইহাই সম্ভব।

[•] Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. IV., pp. 376 and 377 Vol. V., p. 725; Vol. VI., p. 88 &ca.

[†] Journal of the Royal Asiatic Society, New Series, 1865, Vol.I., Part 2., p. 273.

^{‡ &}quot;কৃষ্ণবসস আরাম" "কৃষ্ণবসস্য আরাম"---

Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1854, pp. 57 and 58.

[¶] Indian Antiquary, August 1881, pp. 213-217.

রামক্কণ গোপাল ভাণ্ডারকর প্রদর্শন করিয়াছেন, খু, পু, ছিতীয় শতাব্দীতে ক্ষণোপাথান হিন্দু-সমাব্দে প্রচণিত ছিল। বস্তুত: ঐ সময়ে বিরচিত মহাভা-ব্যের মধ্যে উদাহরণ-স্থলে ক্ষণ্ড ও ক্ষণ্ড সংক্রাস্ত অক্তৃর শঙ্কর্ষণাদির নাম এবং ক্ষণ্ড কর্তৃক, কংস-বধের উপাথ্যান যেরূপ প্রস্তাবিত হইরাছে, তাহা পাঠ করিলে উলিখিত অভিপ্রায়ে সংশয় হইবার বিষয় থাকে না।

वांसबधमाचष्टे वांसं घातयति।

পাণিনি।৩।১।২৬ ফুত্রের ভাষ্য।

কংস বধ বর্ণন করিতেছে এই অর্থে 'কংসং ঘাতয়তি' হয়।

जবান ব'বা কিল বামবিব:।

পাণিনি। ৩।২।১১১ স্তের ভাষ্য।

বাস্থদেব কংসকে নিশ্চিত বধ করেন।

বক্তা যে ঘটনা দর্শন করেন নাই, উল্লিখিত বাক্যটি তাহারই উদাহরণ। অভএব পতঞ্জলির সময়ে উটি একটি প্রাচীন,উপাখ্যান বলিয়া প্রচলিত ছিল। অবাধ্যানি লি জ্ঞা:।

পাণিনি। ২।৩। ৩৬ সুত্রের ভাষ্য।

কৃষণ মাতৃলের প্রতি বিরূপ ছিলেন। মত্তর্প অভিনীয়ধ্য বর্ত্ত জত্মধ্য বর্ত্তনান্।

পাণিনি। ২। ২। ২৩ প্রের ভাষ্য।

শহর্ষণ-সহকৃত ক্বফের বল বুদ্ধি হউক।

षक्रूरवर्ग्यः षक्रूरवर्गिणः।

वासुदेववर्यः वासुदेववर्गिषः।

পাণিনি। ৪। ৩। ৬৪ স্থত্রের ভাষ্য।

অক্র-পক্ষীয়। বাস্থদেব-পক্ষীয়।। ললাহিলফালন্দ্রপূর্ণতন।

পাণিনি।৬।৩।৬ স্ব্রের ভাষ্য।

জ্বনার্দন (অর্থাৎ ক্লফ্চ) নিজে চতুর্থ ব্যক্তি। অর্থাৎ তাঁহার আর তিনটি সঙ্গী ছিল। এই সমস্ত উদাহরণের কোনটি অন্তর্গুণ্ ও কোনটি উপেন্দ্রবক্ত ছন্দে,বিরচিত। অতএব বলিতে হয়, পতঞ্জলি বিশেষ বিশেষ বিদেষ বাদ্ধিলে এইটি প্রতীয়মান সংগ্রহ করিয়াছেন। এই সমুদায় পর্য্যালোচনা করিয়া দেখিলে এইটি প্রতীয়মান হইয়া উঠে যে, পতঞ্জলির সময়ে অর্থাং খৄ, পূ, দ্বিতীয় শতান্দীতে হিন্দু-সমাজে রুফোলাখ্যান সচরাচর প্রচলিত ছিল; এমন কি, ঐ সময়ের পূর্ব্বে রুফ্ট বিষয় অবলম্বন করিয়া ভিন্ন ভিন্ন কাব্য গ্রন্থও প্রচারিত হয় তাহার সন্দেহ নাই। কেবল উপাধ্যান ও গ্রন্থ প্রচলিত নয়, তাল্ল সময়ে এবং তাহারও পূর্বেই রুফ্টের উপাসনাও প্রচলিত ছিল বোধ হয়। পূর্বেই প্রদর্শিত হইয়াছে, * পাণিনি-স্ত্রে বাস্থদেবভক্ত-বাচক বাস্থদেবক পদ সিদ্ধ করা হয়, পতঞ্জলি তদীয় ভাষোর মধ্যে মৃত্তি-প্রসঙ্গে বাস্থদেব ভগবানের একটি নাম বলিয়া উল্লেখকরিয়াছেন।

শ্বখনা नेता चिच्याच्या संचौषा तबभगनतः। অথবা ইহা ক্ষজিয়ের নাম নয়: ভগবানের নাম।

গ্রীক্ গ্রন্থকারেরা ভারতব্যীয় দেবতাগণকে গ্রীক্ দেবতার নাম দিয়া বর্ণন করিয়াছেন। তাঁহাদের দেশে হেরাক্লিজ্ নামে একটি দেবতার উপাসনা প্রচলিত ছিল। খু, পু, চতুর্থ শতাব্দীতে মিগেন্থিনিজ্ ভারতবর্ষে আগমন করিয়া যে সমস্ত বিষয় বৃত্তাস্ত লিখিয়া রাখেন. তাহার মধ্যে একটি ভারতবর্ষীয় প্রধান দেবতাকে সেই দেবতার নাম দিয়া তৎসংক্রাস্ত কতকগুলি উপাখ্যান বর্ণন করি-য়াছেন। তিনি বছদারপরিগ্রহ পূর্বক বহুপুত্র উৎপাদন করেন, বলবীর্যা বিষয়ে সকল লোককে অতিক্রম পূর্বকি দৈতা বধ করিয়া পৃথিবীর ভার মোচন করিয়া যান, মথুরা-প্রদেশীয় লোক কর্তৃক বিশেষ রূপ শ্রন্ধা-ভাজন হন, সেই প্রদেশ দিয়া একটি প্রবল নদী প্রবাহিত হয়, মিগেন্থিনিজ কর্তৃক লিখিত এই সমস্ত কথা ‡ কৃষ্ণবিষরে যেমন সন্তব ও সঙ্গত হয়, অতা কোন দেবভার বিষয়ে সেরপ হয় না।

[•] উপক্রমণিকা ১২৪ পৃষ্ঠা।

[†] ১ অ, ৪ পা, ৯২ ও ৪ অ, ১ পা, ১৪৪ স্ত্রের উদাহরণে কৃষ্ণ এবং বৃষ্ণি-বংশীর বাস্থদেবের নাম উল্লিখিত আছে। আর ৫ অ, ৩ পা, ৯৯ স্ত্রের উদাহরণে শিব ও আদিত্যের সহিত বাস্থদেবের নাম উক্ত হইরাছে।

[‡] Ancient India as Described by Megasthenes and Arrian, by J. W. McCrindle, 1877, pp. 39 and 201.

উল্লিখিত প্রীক্ পণ্ডিত ঐ হেরারিজ্ এবং পাণ্ডিয়া ও পাণ্ডিয়া রাজ্য সম্বন্ধীয়
অপর কতকগুলি বিষয়ের বিবরণ করেন । এরিয়ন্ প্রিনি, টলেমি প্রভৃতি
গ্রীক্ গ্রন্থকারদের গ্রন্থে দেই সমুদায় সন্নিবিষ্ট রহিয়াছে। শ্রীমান্ লেসেন্ সেই
সমস্ত পর্যালোচনা পূর্বক মহাভারভোক্ত ক্ষণ-পাণ্ডবের সম্বন্ধ-বিজ্ঞাপক বলিয়া
অমুমান করেন; স্তরাং মিগেন্থিনিজের সময়ে অর্থাৎ খৃ, পৃ, চতুর্থ শতাকীতে ঐ
বিষরের স্থাসিদ্ধ উপাথ্যান প্রচলিত ছিল এইরূপ বিবেচনা করিয়া থাকেন ।

বোদ-শান্ত মধ্যে স্ত্রণীটক সর্কাপেক্ষা প্রাচীন। তাহাতে কৃষ্ণ নামে অন্তর বা দৈত্য-বিশেষের পুনঃ পুনঃ প্রদক্ষ আছে ‡। বেদেতেও অন্তর কৃষ্ণের নাম সিরবিশিত রহিরাছে। শ্রীমান্ বেবের্ বিবেচনা করেন, হরতো ঐ অন্তর কৃষ্ণই ছিন্দু-সমাজের কৃষ্ণ-দেব শ। কিন্তু অনেকে তাঁহার সে মতে অন্তুমোদন করেন না ব্ব। সেই বেদোক্ত অন্তর কৃষ্ণ দশ সহস্র দল বল সঙ্গে লইরা পৃথিবীতে ভরানক উপদ্রব করিতে থাকে, পরে ইন্দ্র তাহাকে পরাভব ও সংহার করেন। অস্তানা স্কে লিখিত আছে, তাহার বংশ লোপ উদ্দেশে তদীয় গর্ভবতী স্ত্রীগণকেও নাই করা হর। অপর এক স্কে পঞ্চাশ সহস্র ক্ষের প্রাণ নাশ করিবার প্রদক্ষ রহিরাছে। ভারতবর্ষের আদিম নিবাসী কৃষ্ণবর্ণ লোকই এই কৃষ্ণ শন্দের প্রতিপাদ্য বোধ হয়। বেদসংহিতার কৃষ্ণ নামে একটি ঋষিরও প্রসঙ্গ আছে। তিনি বাস্থদেব অর্থাৎ বস্থদেব পুত্র নন; আন্তিরস কুলে জন্ম গ্রহণ ম করিয়া ঋথেদসং হিতার অন্তম মগুলের ৮৫—৮৭ ও দশম মগুলের ৪২—৪৪ স্কুক্ত প্রণয়ন করেন। এসমুদার কৃষ্ণের সহিত্ যহুপতি ও রাধাপতি ক্ষম্ণের কিছুমাত্র সম্বন্ধ নাই। ক্ষলতঃ বছু কালাবধি বৌদ্ধ-শাস্তে কৃষ্ণ প্রসঙ্গ না দেখিয়া অনেকে বিবেচনা

^{*} Ancient India as described by Megasthenes and Arrian, by J. W. McCrindle. pp. 158 and 201-203.

⁺ Lassen's Indischen Alterthumskunde i. 647 ff., alluded to and remarked on in Weber's History of Indian Literature, 1878, p. 136.

[🙏] निवादिस्त । २३ व्यथाति (मू. भू. ४०० भृष्ठी)।

Weber's History of Indian Literature, 1878, p, 304.

[§] F. Max Muller in the Indian Antiquary, November 1880, p. 289.

⁽ ঋ-সং. ৮ম. ৮৫ সু, অমুক্রম \

করিয়াছেন, রুফোপাদনাটি আধুনিক ধর্ম। বিওমুক্ত স্পষ্টই লিম্বিরাছেন, বৌদ্ধ-শাস্ত্রে রুফ্ট-নাম না পাইলে, ঐ শাস্ত্র-প্রচারের উত্তর কালে রুফোপাদনা প্রবর্তিত হয় বিবেচনা করিতে হইবে।

বিশেষ বিশেষ।বৌক: গ্রন্থে কণ্ছ, মহাকণ্ছ অর্থাৎ কংস, মহাকংস, কেশব প্রভৃতি নাম সন্নিবিষ্ট আছে *। পূর্বজন্ম-বিশেষে বৃদ্ধের নাম কণ্ছ অর্থাৎ কংস ছিল এইরূপ উল্লিখিত হইরাছে। রথপালস্ত্রনন্ধে নামক এক থানি গ্রন্থে লিখিত আছে, রাজা কোরবা ভিক্ষাশ্রম-প্রবেশোর্থ রথপালকে বলিতেছেন, তৃমি প্রাচীন নও; আজিও তরুণবয়স্ক; ভোষার কেশ ক্ষণ্ডের কেশ-সদৃশ †। কিন্তু শ্রীমান্ বেবের্ এই সমুদার নামের সহিত হিন্দু-শাস্ত্রোক্ত ক্ষণ্ডের কোন সম্বন্ধ আছে এরূপ মনে করেন না ‡। সে বাহা হউক, কিছু দিন হইল, এ বিষ্দের সমস্ত সংশ্রু দ্রীকৃত হইরাছে। স্প্রাচীন বৌদ্ধ-শাস্ত্রে ক্ষণ্ডের নাম স্ক্র্যুপ্ত প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে। ললিতবিশুরে নামক বৃদ্ধ-চিরিতে ইন্ত্রু, চন্দ্র, স্থ্যু, কুবের ক্ষণ্ডাদি দেবগণের সহিত ক্ষণ্ডের নাম উল্লিখিত আছে। সে স্থলে ক্ষণ্ড দেবতা ভিন্ন কদাচ অন্তর্ম-বাচক হওয়া সন্তব নয়। ললিতবিশুরের অন্তর্গত গাথাগুলি সম্বাধিক প্রাচীন। সেই গাথার মধ্যেই ঐ নাম সন্নিবেশিত রহিয়াছে।

क्षं वैयवणातिने कसटणं व्यक्तं कुवेरी द्ययम्, श्राही वज्धरस्य वैष प्रतिमा चन्द्रीऽय मूर्यो हायम्। कामीऽङ्गाधिपतिय वा प्रतिकृती क्रस्पा कणस्य वा श्रीमान् जचणचिदिताङ्ग अनघी वृद्धीऽयवा स्याद्यम्॥

लिक्विखत्र। ১১ व्यशात्र।

ঐ গাথার অব্যহিত পূর্বেই তিনি মহোৎসাহ বলিয়া বর্ণিত হইশ্বাছেন।
স্বল্ল লক্ষ্মন্তীকাছে:।

এ বিশেষণটি রুষ্ণের বৃন্দাবন-লীলা অপেক্ষা মহাভারতোক্ত চরিতবর্ণনার-সহিতই সম্পূর্ণ সঙ্গত হয় । রাধা-ঘটিত উপাখ্যান ও বর্ত্তমান রুষ্ণোপাসক-সম্প্র

^{*} Westergaard's Catalogue of the Copenhagen Indian MSS. 1846, pp. 40 and 41.

⁺ Hardy's Eastern Monachism, 1850, p. 41.

[‡] Weber's History of Indian Literature, 1878, p. 304.

দার সমৃদার ভাদৃশ প্রাচীন নর বটে, কিন্ত ক্লঞ্জের দেবত্ব-কথা অপেক্ষাকৃত প্রাচীন তাহার সন্দেহ নাই। বৌদ্ধ-শাস্ত্রে কৃষ্ণ-প্রসঙ্গ না দেখিরা, অনেকে বিবে-চনা করিতেন, মহাভারতের অন্তর্গত ভগবদ্গীতাদি কৃষ্ণ-বিষয়ক প্রবন্ধ বৌদ্ধ-শাস্ত্র প্রণয়নের অর্থাৎ খৃ, পু, পঞ্চম বা ষষ্ঠ শতান্দীর উত্তর-কাশীন গ্রন্থ *। কিন্তু এখন আর উক্ত কারণে দেরপ নিশ্চয় করিবার সন্তাবনা রহিল না ।

কৃষ্ণ-বিষয় ভারতবর্ষীয়দের নানা অংশে একটি পরম স্থথের বিষয় হইয়া রহিরাছে। বুলাবন-লীলার উপাথ্যানটি ভারতবর্ষীয় কবিত্বরদের একটি অপূর্ব্ব
প্রস্রপ। উহা পুরাণ, সাহিত্য, কীর্ত্তন, কবি, যাত্রাদি নানার্রপ ধারণ
করিয়া সথ্য, বাৎসল্য, মাধুর্য্যাদি ভাবে ভারতভূমি মুগ্ধ করিয়া রাখিয়াছে।
ভূমগুলের অন্য কোন দেশের কোন একটি উপাধ্যানে এরপ বিভিন্ন ভাব-প্রবাহ
ও বিচিত্র রস তরন্ধিনী একত্র প্রবাহিত করিয়াছে এরপ দেখিতে পাওয়া যায়
না। রস-ভাব-পরিপূর্ণ কীর্ত্তন শ্রবণ করিলে যাহার অস্তঃকরণ দ্রবীভূত হইয়া
অশ্রন্ধলে পরিণত না হয়, তাহার চিত্ত পাষাণ অপেক্রায় কঠিনতর পদার্থে বিনির্দ্রিত ভাহার সন্দেহ নাই। ভাব-প্রবীণ পাঠকগণ! একটি স্থাভাবের সন্ধীত শ্রবণ
কর। এইরপ উপাধ্যান আছে যে, প্রীকৃষ্ণ একবার কালীয়দহে ময় হন। ছিদাম
তথায় ক্রতবেগে গমন পূর্ব্বক তাঁহাকে মৃত বা মুম্রু জ্ঞান করিয়া বলিতেছেন,

"একবার আয়, ভাই! নফর ছিদাম ডাকে, দেখা দেরে, রাধালের জীবন কানাই!

নানাবন বুলে বুলে, বনফল এনেছি তুলে, রেখেছি ধড়ার অঞ্চলে, মেঠো বলি থাই নাই।"

কালিদাস-ক্বত স্থমধুর শ্লোকের শেষার্জ-সন্নিবিষ্ট উপমা-ক্রোতিতে বেমন পূর্বার্জ পর্যান্ত জ্যোতিখান্ করিয়া দেয় উল্লিখিত সঙ্গীতটির অন্তর্গত 'মেঠো বলি থাই নাই'' এই সম্ভাব-পরিপূর্ণ স্থমধুর পদ-চতুষ্টয়ে সমগ্র সঙ্গীতটি অভিমাত্র মধুর করিয়া তুলিয়াছে।

কিছু পরেই বুদ্ধাবতারের প্রসক্ষ মধ্যে দেখিতে পাইবে, তাদৃশ সময়ে বৌদ্ধ-শাল্প সন্ধানত হয়।

[†] Indian Antiquary, November 1880, pp, 288-290

বুদ্ধ। এখন হিন্দু-সমাজে বৃদ্ধ ও বৌদ্ধ-ধর্মের বিষয় সবিশেষ প্রচারিত নাই। অতএব হিন্দু-শাস্ত্রোক্ত বৃদ্ধাবভারের প্রস্তাব লিথিতে হইলে, প্রথমে উল্লি-থিত বিষয় কিছু অবগত করা আবশুক

ভারতবর্ষীয় আর্ঘ্য-বংশীয়দের ইতিহাস চুইটি প্রধান ভাগে বিভক্ত ; হিন্দু ও বৌদ্ধ। হিন্দুধর্ম আবহমান কাল প্রচলিত ছিল, ইতিমধ্যে একটি মহার্থকরী মহীয়দী ঘটনা উপস্থিত হুইয়া হিন্দুধর্মের ইতিহাসকে চুই ভাগে বিভক্ত করিয়া দেয়। তাছাতে ধর্ম বিষয়ের একটি বিষম বিপ্লব ঘটিয়া গিয়াছে বলিলে হয়। সেইটি বেদ ও বর্ণাভিমানের মন্তকোপরি পদাঘাতকারী বৌদ্ধর্ম্ম-প্রকাশ বই আর কিছু নয়। অসাধারণ মানসিক বীর্যা কেবল ইয়ুরোপেই উৎপন্ন হয় এমন নয়; এক কালে ভারতভূমিতেও আগ্নের গিরির অধ্যাৎপাতের ন্যায় মানবীয় মনের অন্তর্ভূত প্রজ্ঞালিত অগ্নি-রাশি সভেজে বিনির্গমন পূর্বাক চারি দিকে বিক্ষিপ্ত হইরা ভূমিকম্প উৎপাদন করিয়াছিল। সেই মহাপ্রবল বৌদ্ধধর্ম আবি-ভূতি হইয়া হিন্দুধর্মকে কম্পিত করিয়া দেয়। বৌদ্ধ-বিহার, বৌদ্ধ-চৈত্য, বৌদ্ধ-ন্তুপ, বৌদ্ধ-তার্থ, বুদ্ধাদির প্রতিমূর্ত্তি ইত্যাদি বৌদ্ধধর্ম-সংক্রান্ত বিষমে ভারতভূমি পরিব্যাপ্ত হই রা যায়। হিউএন থ্নঙ্গ প্রভৃতি চান-দেশীয় তীর্থযাত্রীরা যে সময়ে এখানে আগমন ও পরিভ্রমণ করেন, সে সময়ের পূর্ব্বে ঐ ধর্ম্বের অনেক হ্রাস হয়। তথাপি সে দময়েও তাঁহারা ভারতবর্ষের দকল থণ্ডেই বৌদ্ধতীর্থাদি-দর্শন করিয়া যান । অদ্যাপি বৃদ্ধগরাদি বৌদ্ধতীর্থ প্রভৃতির নষ্টাবশেষও দৃষ্ট হইয়া থাকে। थ, পূ, ষষ্ঠ বা পঞ্ম শতাকীতে নেপালের সমীপস্থ কপিলবস্ত-নিবাসী ক্ষাত্রিয়-কুলোম্ভব শাক্য মুনি বৌদ্ধ-মন্ত প্রবর্ত্তিত করেন। তাঁহার অন্য একটি নাম গোতম। তিনি রাজা শুদ্ধোদনের পুত্র, তাঁহার মাতা মায়াদেবী, ভার্য্যা যশোধরা ও পুত্র রাহুণ। তিনি অতিশয় বৃদ্ধিমান ও অমুধ্যানশীল ছিলেন। সংসার হঃধময় ও এই হুঃথ হইতে পরিত্রাণ-দাধন আবশুক বিবেচনা করিয়া এবং উদাদীনদিগের শাস্তভাব ও বিষয়ে-বৈবরাগ্য দৃষ্টি করিয়া গৃহ হইতে বহির্গত হন। তিনি প্রথমে মগধ রাজ্যের রাজধানী রাজগৃতে, পরে বৃদ্ধগয়ায়, তদনস্তর বারাণসীতে গমন ক্রিয়া সাধনা ও উপদেশ প্রদান করেন। তাঁহার জীবন-বৃত্তান্ত পর্যালোচনা করিয়া দেখিতে পাওয়া যায়, তিনি প্রয়াগের পূর্ব্ব, গোউড়ের পশ্চিম হিমালয়ের पिक्रण ७ शत्मात्रानात छेखत এই চারি সীমার মধ্যবর্তী স্থলে অর্থাৎ অংহাধ্যা,

মিথিলা, বারাণদী, মগধ এই সমস্ত রাজ্যে অবস্থিতি পূর্ব্বক স্থমতামুষায়ী ধর্ম প্রচার করিতে :প্রবৃত্ত থাকেন। তিনি প্রমপ্রকার্য সাধনাকাজ্জী একরপ উদাসীন-সম্প্রদায় * প্রবর্ত্তি করেন, তাহাদের ও অপরাপর লোকের ধর্মোপদেশার্থ ভিন্ন ভিন্ন ছই প্রকার ব্যবস্থা সংস্থাপন করেন এবং সত্য, অস্তেয়, অহিংসাদি স্বভাবসিদ্ধ ধর্মনীতির প্রাধান্য ঘোষণা করিয়া দেন। পশ্চাং সংক্ষেপে তাহার বিবরণ করা যাইবে। শাকামুনি বেদ শাস্তের প্রতি অনাস্থা প্রদর্শন ও তিহিক্ক মত প্রকটন করিয়াছিলেন, কিন্তু সমস্প্রদায় মধ্যে বর্ণ-বিচার প্রথা রহিত করেন এরপ কোন নিদর্শন প্রাপ্ত হওয়া যায় না।

বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ী উদাসীনের নাম ভিক্ষ্ । ইহারা দল-বদ্ধ ইইয়া একত্ত অবস্থিতি করে ।
ইহাদের বাসগৃহের নাম বিহার; কিন্তু বৎসরে কয়েক মাস বনবাস করিয়া বৃক্ষ-তলে কাল
যাপন করিতে হয় । ইহারা স্বহন্তে হয়ত চীর-পুঞ্জ পরিধান করিয়া তাহার আবরণস্থারপ একটি
পীতবর্ণ আল্বেলা বাবহার করে । শাশ্রু ও মস্তক মৃত্তন করিয়া রাপে । প্রীসহবাস ও নৃত্য
গীতাদি অক্ত অক্ত যাবতীয় ইন্দ্রিয়-রুখ-বাাপার পরিত্যাগে কৃত্ত-সয়ল্প হয় । ইহারা একাহারী
দারে দ্বারে ভিক্ষা-পর্যাটন পুর্বক আহার-দ্রবা সংগ্রহ করিয়া পূর্ববায় কালেই এক স্থানে একত্র
ভোজন করে ও একরূপ উপস্থিই হইয়াই নিদ্রা যায় । গৃহস্থ লোককে উপদেশ দান এবং মধ্যে মধ্যে
চিকিৎসা করিয়া তাহাদের উপকার সাধন করে । এই সম্প্রদায়ের মতে, অহিংসা পরম ধর্ম ।
কি জানি কোন ক্ষুদ্র কীবের প্রাণ নই হয় এই আশক্ষায় ইহারা উপবেশন-স্থল মার্ভ্জিত করিয়া উপবেশন
করে । কি জানি নিখাস সহকারে কোন কীট পতঙ্গ উদরস্থ হয় এই আশক্ষায় কেহ কেহ মুখে
একরূপ বস্তু বন্ধন করিয়া রাখে । দান, ধ্যান, শীল, ভিতিক্লা, বীর্যা, প্রজ্ঞা এই কয়েকটি পরমোৎকৃষ্ট প্রধান বিষয়ের অনুষ্ঠান করা ইহাদের পক্ষে অবশ্ব করিয় । বৌদ্ধ সয়্যাসীদের অক্ত তুইটি
নাম শ্রমণ ও শ্রাবক । গৃহীদের নাম উপাসক ও উপাসিকা।

বেছি-সম্প্রদায়ী প্রীলে কিরাও ধর্ম-ব্রত পালন-উদ্দেশে ইচ্ছাকুদারে গৃহাশ্রম পরিত্যাগ পূর্বক পুরুষ-সংসর্গে নিরুত্ত হইয়া থাকে। তাহাদিগকে ভিন্দুণা ও শ্রমণা বলে। রোমান্ কেথলিক নামক খৃত্তীর সম্প্রদারের নন্ এবং বৌদ্ধ-সম্প্রদারের কুমার শ্রমণা প্রায় তুলারূপ। বৌদ্ধ-শাস্ত্রে দেখিতে পাওয়া যার, শাক্যমূলির সময়েই ঐ শ্রমণা-সম্প্রদায় এবর্ত্তিত হয়। শ্রমণারা সর্বত্যেভাবেই শ্রমণাদিগের অপেক্ষা নিকৃষ্ট। তাহাদিগকে সম্রম ও ভক্তি শ্রদ্ধা করা ও তাহাদের উপদেশ-গ্রহণ ও আদেশ-পালন করা শ্রমণাদের পক্ষে অতীব কর্ত্তব্য। শ্রমণাদিগকে উপদেশ দান, তাহাদের নিন্দা ও তাহাদিগের প্রতি পক্ষর বাক্য প্রয়োগ এবং স্বেচ্ছাকুদারে কুরোপি গমনাগমন করা শ্রমণাদের পক্ষে বিধের নয়। তাহাদিগকে উপদেশ-গ্রহণ বা ধাানাদি-সাধনার্থ কুরোপি গমন করিতে হইলে নির্দিন্ত সময়ে স্বন্থানে প্রত্যাগমন করিতে হয়।—Transactions of the Royal Asiatic Society, Vol. iii., p. 491 and 495; Vol. iii., p. 273 and 277. Asiatic Researches, Vol. Vii., p. 42, Turner's Tibet. Hardy's Eastern Monachism. pp. 6-165. Chambers's Encyclopædia, Buddhism, পশ্চাৎ প্রসঙ্গক্রমে এই ভিন্দু দলের সাধনাদি অন্ত অন্থ্য বিষয় প্রস্তাবিত হইবে।

তবে বর্ণাভিমান থর্ক করিয়া কি ইতর, কি ভদ্র, কি দ্রেচ্ছ সকলকেই ধর্মোপদ্শে প্রদান করেন। এমন কি, অতীব অস্ত্যক্ত জাতি পর্যান্ত প্রান্ধান করিয়াদি শ্রেষ্ঠ বর্ণের ন্যায় ভিক্ষ্-দলে প্রবেশ করিতে পারে। বৌদ্ধর্মাবলম্বী যে জনসমান্তে পূর্ব্বে বর্ণভেদ প্রচলিত ছিল, অদ্যাপি সেইরূপ আছে। কেবল ব্রাহ্মণবর্ণটি রহিত ইয়া গিয়াছে *। তিনি নিজে প্রথমে কঠোর তপস্যা ও কঠোর ব্যবহার অবল্যন করেন, কিন্তু পশ্চাৎ তাহাতে বিনির্ভ ইয়াছিলেন। এমন কি, তাঁহার পাঁচটি পরম ভক্ত প্রিয় শিষ্য তাঁহাকে উদর-পরায়ণ বিবেচনা পূর্ব্বক পরিত্যাগ করিয়া কাশীবাসী হন †। শাক্যমুনি দীর্ঘজীবী হন; অশীতি বৎসর বয়ঃক্রমের সময়েও উৎসাহ ও ওজ্বিতা-সহকারে অনর্গল উপদেশ প্রদান করিভেন। এইরূপ একটি উপাধ্যান আছে যে, তিনি অপরিমিত বরাহ-মাংস ভোজন করিয়া পাড়িত হন এবং সেই পীড়াতেই তাঁহার প্রাণ-বিয়োগ হয়। ইহার পূর্বেও তিনি শ্করমাংস ভোজন করেন এরূপ লিখিত আছে। তিনি অনশন ত্রত পরিত্যাগ করিলে পর, কতক গুলি গ্রাম্য সীলোক ভক্তিসহকারে তাঁহাকে দর্শন করিতে গিয়া তিল, তও্তুল ও শৃকর-মাংস রন্ধন করিয়া দেয়।

एककोलतिलतण्डुलप्रदानेन च प्रतिपादितोऽभूत्॥ শশিতবিস্তর। অষ্টাদশ অধ্যায়।

প্রামস্থ স্ত্রীলোকেরা একটি শৃকর এবং তিল ও তণ্ডুল প্রদান দ্বারা তাঁহার পূজা করিল।

^{*} Weber's History of Indian Literature, 1878, p. 306.

⁺ श्रथ खलु भिचवः पश्चकानां भद्रवर्गीयाणार्भतदभृत्। तयापि तावच्चयंया तयापि प्रतिपदा यभणेन गौतमेन न शक्तितं * किञ्चिदुत्तिरिमनुष्वधर्मादलमार्य्य ज्ञानदर्शनिवर्श्य साचात् कर्त्तुम्,। किं पुनरेतद्वगौदिरकमाष्टारमुतखनिकायोगकायोगमनुयुक्तोविष्टरक्रव्यक्तो वालीऽयमिति च मन्यमाना वोधिसच्चस्रान्तिकात् प्रक्रामन्तस्ते वाराणसौं गला स्टिष्पतने सगदावे व्यादार्थः॥

ললিতবিস্তর। অষ্টাদশ অধ্যায়। মুদ্রিত পুস্তকের ৩৩১ পৃষ্ঠা।

 [&]quot;न मिक्तितं" न मिक्तिसर्थः

षाभि: कुमारिकाभिवौधिसत्त्वाय सर्व्ये ते यूषिवध्य: क्षत्वीपनामिता अभूवन्। तांश्वास्यवद्वत्य वीधिसत्तः क्षसेण गीचरग्रामे पिख्डानस्याचरन् वर्णक्ष्यवत्तवानस्त्।

ললিতবিস্তর। অষ্টাদশ অধ্যায়।

ভাহারা অর্থাৎ গ্রাম্য স্ত্রীলোকেরা সেই সমস্ত শ্কর, তিল তণ্ডুলাদির যুষ প্রস্তুত করিয়া বোধিসত্ত্বের অর্থান বৌদ্ধর্ম্ম-প্রবর্ত্তক শাক্যমুনির সমীপে উপস্থিত করিল। বোধিসত্ত সেই সমুদায় ভক্ষণ করিলেন এবং ক্রমে গোচর গ্রামে অব-স্থিতি পূর্বাক অল্ল ভোজন করিয়া রূপবান্ ও বলবান্ হইলেন।

কিন্তু একথাগুলি বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ের স্থপ্রসিদ্ধ অহিংসা-ধর্ম্মের বিপরীত কথা। অতএব, তাঁহার সময়ে ঐ অহিংসা-ব্যবস্থা প্রবর্ত্তিত হইয়াছিল কি না সন্দেহ। এখনও জৈনেরা যত অহিংসা পরায়ণ, বৌদ্ধেরা তত নয়। চীন-দেশীয় বৌদ্ধেরা সচরাচর মাংস ভক্ষণ করিয়া থাকেন।

শাক্য কোন লিখিত গ্রন্থ রাখিয়া যান নাই। তাঁহার মৃত্যুর পর বৌদ্ধদের চারিটি মহাদভা হয়। খুষ্টাব্দের ষষ্ঠ বা পঞ্চম শতান্ধীতে মগধরাজ্যাধিপতি অজাতশক্র, উহার এক শতান্ধী পরে কালাশোক, খু পূ, ২৪৬ বা ২৪৭ অবদ অশোক এবং খু, পূ, ১৪৩ অবদ কাশ্মীরের ত্রন্ধ রাজা কনিষ্ক যথাক্রমে এক একটি সভা করেন *। ইহার প্রথম দভাতে ব্দ্ধের উপদেশ ও কথাবার্ত্তা সঙ্কলিত হইয়া বৌদ্ধ-শাক্র প্রস্তুত হয়। ঐ শাক্র তিন প্রকার; স্ত্র-পিটক, বিনয়-পিটক ও অভিধর্ম-পিটক। এই তিনের সমবেত নাম ত্রিপিটক। ইহাতে বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ের মত, নীতি, উপাধ্যান, আধ্যাত্মিকবিদ্যাদি বিনিবেশিত আছে। নেপালে এই সমন্ত পিটকের নানাবিধ ভাষ্য ও অন্যান্য ব্যাখ্যা-পৃত্তক বিদ্যমান রহিয়াছে। বৌদ্ধ-শাক্রের বাদশপ্রকার বিভাগ আছে, তাহার নাম অঙ্ক; যথা স্বত্ত, গেয়, বেয়াকরণ, গাথ, উদান, ইতিবৃত্তক, জাতক, অব্ভূত, বেদল্ল, নিদান, অবদান ও উপদেস। ইহার মধ্যে প্রথমোক্ত নয় অঙ্ক প্রাচীন। বৌদ্ধ-গ্রন্থকার বৃদ্ধঘোষ ৪০০ খুষ্টাকে স্থমঙ্গল-বিলাগিনী নামক গ্রন্থে ঐ নয় অঙ্কের প্রস্ক করিয়া গিয়া-

[•] Turnour's Mohawanso, pp. 11, 19 and 42, Weber's History of Indian Literature, pp. 287—290 and Monier Williams's Indian Wisdom, p. 60 (1911)

ছেন *। এই অঙ্গণ্ডলি বিশেষ বিশেষ বিষয়ের নাম; যেমন ইভিবৃত্তের অর্থাৎ ইভিহাসের নাম ইভিবৃত্তক, গাথার নাম গাথ, ব্যাকরণের নাম বেয়াকরণ ইভ্যাদি। এই সমস্ত অঙ্গ অন্ত এছ নয়; পূর্বোলিখিত ত্রিপিটকের মধ্যেই সন্নিবেশিত আছে †। তন্তির তন্ত্র নামে কতকগুলি শাস্ত্র আছে। হিন্দুদের ভল্পে যেমন হিন্দু-দেবতাগণের উদ্দেশে মন্ত্র সমস্ত বিরচিত হইয়াছে, বৌদ্ধদের ভল্পে সেইরূপ বিভিন্ন বৃদ্ধ, বোধসন্থ তদীয় শক্তি সমৃহ এবং সেই সঙ্গে কোন কোন হিন্দু-দেবতারও উদ্দেশে বহুতর মন্ত্র বিনিবেশিত রহিয়াছে। হিন্দু-ভল্পে যেমন দেবতাগণের মন্ত্র প্রস্তুত করিবার ব্যবস্থা আছে, ঐ সমস্ত বৌদ্ধ-ভল্পে বৃদ্ধাদিরও সেইরূপ আছে।

বৌদ্ধ-শাস্ত্র সমুদার প্রথমে সংস্কৃত ভাষার রচিত ও পশ্চাৎ ভোটভাষার অমুবাদিত হয় ‡। ঐ উভরেই অন্যাপি প্রচলিত আছে। ঐ ভোট-শাস্ত্রের নাম
কহ-গুর ও তন্-গুর । এই উভরই অতি প্রকাণ্ড। কহ্-গুরের মধ্যে ১০৮৩
থানি গ্রন্থ সন্নিবিষ্ট আছে। সে সমুদার কথন ১০০, কথন ১০২ ও কথন ১০৮
বৃহৎ থণ্ডে বিভক্ত করিয়া মুদ্রিত করা হয়। তন্-গুরে বৃহৎ বৃহৎ ২২৫
থণ্ডে বিভক্ত। তাহার এক একথণ্ড /২ ছই সের বা /২॥ আড়াই
সের পরিমিত্ত। তন্তির, বৌদ্ধ-শাস্ত্র চীন, মোগল, কালমুথ প্রভৃতি উত্তরদেশীর
অন্য অন্য ভাষাতেও অমুবাদিত হইয়া প্রচলিত হইয়াছে। দক্ষিণ অঞ্চলের
বৌদ্ধেরা উহা পালি গ ও সিংহলীয় ভাষার অমুবাদ করেন এবং পরে ভাহা

এই নাম গুলি পালি। মহাজান নামক বৌদ্ধ সম্প্রদায়ের গুণকরগুবাহ নামক গ্রন্থে এই
সমন্ত অঙ্গের সংস্কৃত নাম লিখিত আছে; যথা হৃত্ত গেয় ব্যাকরণ, গাখা, উদান, ইতিবৃত্তক,
গাতক, অভুত, বৈপুলা, নিদান, অবদান, উপদেশ।

[†] R. Morris and Max Muller, in the Indian Antiquary, November 1880, pp. 288 and 289.

[‡] খ্রীষ্টান্টের সপ্তম শতালী হইতে ত্রেরোদশ শতালী পর্যন্ত অর্থাৎ প্রার সাত্রণত বৎসরে 🖨 ভোটীর অনুবাদ সম্পন্ন ইয়।

[¶] মহাবংস, জাতক, দশরথজাতক, ধর্মপদ্, অন্তনগল্বংস, পাটিমোকথহন্ত, দহরহন্ত, বুলো-দয়. হতনিপাত ইত্যাদি অনেকগুলি পালিগ্রন্থ মুদ্রিত হইয়াছে। পালিভাষার লিখিত বৌদ্ধ-লাল্লগুলি সমধিক প্রাচীন। শ্রীমান্ম, মূলর সবিশেব অনুসন্ধান পূর্বক বিবেচনা করিয়াছেন, বুদ্ববোবের সময়ে অর্থাৎ ধৃষ্টাব্দের পঞ্চম শতাকীর প্রথমার্কে * ঐ শাল্লের প্রাচীন পাঞ্লিপি

মহাবংদে লিখিত আছে, বৃদ্ধঘোষ বৃদ্ধদেবের নির্ব্বাণের পর ৯৫৩ বংসর হইতে ৯৭৫ বংসর পর্যান্ত অর্থাৎ ৪১০ থ টান্দ হইতে ৪৩২ থ টান্দ পর্যান্ত এই করেক বংসরের মধ্যে সিংহলীর ভাষার

ব্রহ্মদেশাদির ভাষাতে অমুবাদিত হয়। ললিতবিশুর নামক বৃদ্দেবের জীবন বৃত্তাত্তে গাথা নামে কতকগুলি শ্লোক আছে, তাহা সংস্কৃতেরই অমুরূপ, কিন্তু কিছু কিছু ভিন্ন। কথোপকথন ক্রমে সংস্কৃত ক্রমশঃ রূপান্তরিত হইরা আসিরাছে, গাথা ভাহারই একটি প্রাচীনরূপ বোধ হয়।

প্রাচীনতম বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ীরা ঈশ্বরের অন্তিত্ব অঙ্গীকার করেন না। তাঁহাদি-গের মতে, জড় পদার্থ নিত্য ও সেই জড় পদার্থের শক্তিতেই সমুদায় স্পষ্ট হইয়া থাকে। মধ্যে মধ্যে প্রলয় ঘটিলেও, ঐ জড়ের অন্তর্ভুত গুণপ্রভাবেই পুনরায় স্পৃষ্ট হয়।

উত্তরকালে নেপালপ্রদেশে এই ধর্ম্মের সম্প্রদায়-বিশেষ উৎপন্ন হয়; সেই সম্প্রদায়ীরা একটি আদি বুদ্ধের অন্তিম্ব অঙ্গীকার করিয়া আসিয়াছেন *। তিনি নিতা, নিরাকার, জানবান, নাারবান ও দয়াবান। তিনি স্বতন্ত্র-স্বরূপ। স্বেছা-ছুসারে সমুদায় ক্রিয়া সম্পন্ন করিয়া থাকেন। এই শেষোক্ত সম্প্রদায়কে আন্তিক বৌদ্ধ বলিলে অসকত হয় না। ইহারা তুই ভাগে বিভক্ত। এক দলস্থ ব্যক্তিরা বলেন, প্রথমে কেবল একমাত্র তিনিই ছিলেন; অন্য বস্তু কিছুই ছিল না। অপর দলস্থেরা ঐ আদি বুদ্ধের সহিত্ত নিত্য জড় পদার্থের সত্তা স্থীকার করিয়া থাকেন।

বিদ্যমান ছিল এবং রাজা বট্টগামনির * সময়ে অর্থাৎ থ্টান্ধ প্রবর্তনের ৮০ আশী বৎসর পূর্ব্বেও তাহা প্রচলিত ছিল; আর ধন্মপদের বচনগুলি যদিও বৃদ্ধ-বাক্য বলিয়া বিধাস করিবার প্রমাণ না পাওয়া যায়, কিন্ত অশোক রাজার অধিকার-কালে বৌদ্ধদিগের যে সভা হয়, তদীয় সভ্যেয়া ঐ বচনগুলিকে বৃদ্ধ-যাক্য বলিয়া প্রতায় যাইতেন ইহাতে সন্দেহ করিবার কারণ নাই; এবং খৃ, পু
৩৭৭ অব্দে বেসালী নগরীতে বৌদ্ধদের যে সভা হয়, তাহার পূর্ব্বে যেয়প বিনয়পিটক বিদ্যমান ছিল
এখন ভাহার সমগ্র সারাংশই বর্ত্তমান আছে। †

* Asiatic Researches, Vol. XVI. p. 441 and Burnouf, Buddhisme Indien I., p. 119.

ৰির্মিত অথকথ পালিভাষার অমুৰাদ করেন। পিতকত্তর অর্থাৎ পিটকত্ররের ভাষা সংগ্রহ করেন এবং নানোদর, অথশালিনি প্রভৃতি আর করেকথানি গ্রন্থ প্রণয়ন করেন।——মহাবংস, সাইত্রিশ, পরিচেছদ। টকুরকর্তৃক প্রকাশিত গ্রন্থের ২৫০—২৫০ পৃষ্ঠা।

মহাবংস-রচয়িতা মহানাম সিংহল রাজ্যের রাজা ধাতুদেনের পিতৃষ্য। ঐ রাজা ৪৫৯ হইতে ৪৭৭ থটান্দ পর্যান্ত রাজ্য করেন। অতএব বৃদ্ধঘোষের কার্যান্তলি মহানামের সময়েই সম্পন্ন ছওয়া সর্বতোভাবে সম্ভব। যে সমন্ত বিষয় গ্রন্থকর্তার সময়ে সংঘটিত তাহার ইতিবৃত্ত অধিকতর প্রামাণিক বলিয়া বিবেচনা করিতে হয়।—Max Muller's Introduction to Buddhaghosha's Parables translated by Captain T. Rogers, pp. X—XXIV.

- * বট্টগামনি পু ৮৮ হইতে ৭৬ বংসর পর্যান্ত রাজত করেন। —মহাবংস।
- † Indian Antiquary, December, 1181, p. 372.

এই আদি বৃদ্ধ ইচ্ছাত্মসারে আত্ম-শ্বরপ হইতে অন্য পাঁচটি বা সাভটি বৃদ্ধ উৎপাদন করেন, তাঁহাদের নাম ধ্যানীবৃদ্ধ। এই সমস্ত ধ্যানীবৃদ্ধ হইতে আর পাঁচটি বা সাভটি উৎপন্ন হয়, তাঁহাদের নাম বোধিদত্ব। ইহাঁরা প্রভ্যেকে পর্যায়ক্রমে জগৎ স্প্তি করিয়া থাকেন। এখন অবলোকিতেখন নামক চতুর্থ বোধিদত্বের অধিকার যাইতেছে। তিনি অমিতাভ নামক বৃদ্ধ হইতে উৎপন্ন *।

নেপালি বৌদ্ধেরা আন্তিক ও সিংহলস্থ বৌদ্ধেরা সর্বতোভাবে নান্তিক।
নেপাল, ভোট ও চীন-দেশীয় বৌদ্ধেরা আদিবৃদ্ধ, জ্ঞানীবৃদ্ধ, বোধিদন্ত ও অন্য
অন্য বিবিধ সংজ্ঞাবিশিষ্ট দেবদেবীর অন্তিত্বে বিশ্বাস করেন; কেবল দেবদেবী
কেন? তাঁহারা হিন্দু শাস্ত্রোক্ত নাগ, কিন্নর, গদ্ধবাদি উৎকৃষ্ট জীবগণেরও অন্তিত্ব
অঙ্গীকার করিয়া থাকেন। শাক্যমুনির জীবন-বৃত্তান্তে ও অন্য অন্য স্থলে পুন:
পুন: তাহার উল্লেখ আছে। সিংহল ও ব্দ্ধাদেশীয়েরা তাহার কিছুই মানে না।

বৌদ্ধেরাও হিন্দুদের ন্যায় আপন আপন কর্মান্থসারে পুন: পুন: ্যোনি-ভ্রমণ ও বর্গ-নরক-ভোগ বিশ্বাস করেন। হই প্রকার অমুষ্ঠান ক্রমে ইহাদের ছইটি বিভাগ ঘটিয়াছে; হীন্যান ও মহাযান। হীন্যান-সম্প্রদায়ীরা সাংসারিক কর্ত্তব্যাকর্তব্যের অমুশীলন পূর্বক অর্গকামনায় সংযম উপবাসাদির অমুষ্ঠান করে এবং মহাযানস্থ বৌদ্ধসন্থাসীরা নির্বাণ-লাভ প্রত্যাশায় অধ্যাত্মজ্ঞানের অমুশীলন ও ধ্যান্যোগের।

^{*} Asiatic Researches, Vol. XVI., pp 435-445.

[†] ইহাদের ভাবনা নামে একরপ শুভচিন্তা করিবারও ব্যবহা আছে। সিংইল-দেশীর একখানি গ্রন্থে ভিক্লদের পাঁচ প্রকার ভাবনার বিধান দেখিতে পাওরা যার; মৈত্রা, করণা, মুদিত,
অশুভ ও উপেকা। কি মনুষ্য, কি দেবতা সকল জীবই স্থাইউক, সকলেই রোগ, শোক ও
অসং প্রবৃত্তি হইতে মুক্ত হউক, নরকবাসীরা পর্যান্ত ও স্থাইউক এই ভাবনাকে মৈত্রা ভাবনা
বলে। ছংখা লোকের ছংখ-হরণ হউক, তাহাদের যথেপ্ত অর-যন্ত লক্ক হউক এইরপ ভাবনার নাম
কর্মণা ভাবনা। ভাগাবান ব্যক্তির সৌভাগ্য-সম্পান্ন হামী হউক, প্রত্যেকেই আপন আপন শুভকর্মানুষ্যারী ফল প্রাপ্ত হউক এইরপ ভাবনাকে মুদিত ভাবনা কহে। শরীর বিছারতাদির স্থার
অহায়ী, মরীচিকাদির স্থার অসংযরপ এবং মৃত্ত ভাবনা কহে। শরীর বিছারতাদির স্থার
অহায়ী, মরীচিকাদির স্থার অসংযরপ এবং মৃত্ত প্রবিত্ত বন্ধ্যপূর্ণ হৃণিত বন্ধ এইরপ ভাবনাকে
অশুভ ভাবনা বলিয়া থাকে। এই ভাবনা নির্বাণনগরীর দারফরপ। সকল স্থাবইরপ ভাবনা
উপেক্ষা ভাবনা বলিয়া উন্নিখিত হয়। ভিক্ল্রা উবা ও সারং কালে নির্জ্জনে উপবেশন করিয়া
এই পাঁচপ্রকার ভাবনা করিবেন এইরপ ব্যবহা আছে।—Hardy's Eastern Monachism,
1850, pp. 243—252. কেবল ভাবনা দারা লোকের হিতসাধন হয় না সত্য বটে, তথাচ বে
মন হইতে এই করেকটি ভাবনাবিধির অধিকাংশ গরিবর্ত্তিত হইছাছে, সে মনটি নরলোক অপেক্ষা
উৎকৃষ্টতর লোকের উপযুক্ত।

অষ্ঠান করে *। সংসার ষত্রণাময়; সেহ মমতাদি এই যন্ত্রণার মূল; অতএব ঐ হঃখ-মূল ক্ষেত্র-মমতা ধ্বংস করাই নিতান্ত আবশ্যক। ধ্যান হারা ঐ সমস্ত বিনষ্ট হইতে পারে। হইলেই, নির্ম্বাপর্যপ পরম পুরুষার্থ লব্ধ হয়। ইহাই মহাবানত্র সাধুগণের পরমপুরুষার্থ। ইহারাই এ সম্প্রদারের প্রধান লোক। বৌদ্ধ-মতে, ধ্যান-বল সকল বলের প্রধান বল। বৌদ্ধদের বিশ্বাস এই বে, শাকামুনি নিজে এরপ অত্যুৎকট ধ্যান-যোগে সমারাত্ত্রন বে, কি দেবতা কি মমুষা, কেহ কখন সেরপ হোরতর ধ্যান অর্থাৎ তপস্যা করিতে সমর্থ হয় নাই। তিনি সেই ধ্যানহোগে সিদ্ধ হইয়া অপার আনন্দ লাভ করেন।

* জীবান্ধার উত্তরোজর উৎকর্ষ-সাধনের সোপান-পরম্পরার নাম যান। চীন ভাষায় যানের নাম চিক্ন। চীন দেশীর বৌদ্ধসমাজে সচরাচর তিন প্রকার যান গণিত হইরা থাকে। প্রাবকেরা প্রথম যানন্থ, প্রত্যেক বুদ্ধেরা দিতীয় যানস্থ ও বোধিসদ্বেরা তৃতীয় যানস্থ। ই'হারা এক এক যানোচিত সাধনা দারা উত্তরোজর ঐ ঐ পদ প্রাপ্ত হন। মতান্তরে পঞ্চ যানের কথাও দেখিতে গাওরা যার। মনুষ্বেরা প্রথম যানস্থ, দেবতারা দ্বিতীয় যানস্থ, প্রাবকেরা তৃতীয় যানস্থ, প্রত্যেক, বুদ্ধেরা চতুর্থ যানস্থ এবং বোধিসদ্বেরা পঞ্চম যানস্থ। গ্রন্থম কর্যাহি ইইরা থাকে। মনুষ্য ও দেবতারা প্রথম কর্যাহি হান্যানস্থ, প্রাবকেরা দ্বিতীয় যানস্থ, প্রাক্তর বুদ্ধেরা তৃতীয় যানস্থ, বোধিসদ্বেরা চতুর্থ যানস্থ এবং বুদ্ধেরা পঞ্চম অর্থাৎ মহাযানস্থ।

দেবগণ ও মুম্বাগণ উলিখিত হীন্যান-সাধনা দারা নরক-বাস এবং অস্থর, দৈতা ও ইতর জ্বন্ধর যোনি-প্রাপ্তি-সন্ধাবনা হইতে উত্তীর্ণ হন। শ্রাবক, প্রত্যেক বৃদ্ধ ও বোধিসম্বেরা নিজ নিজ গদোচিত বিশেব বিশেব সাধনা দারা ত্রিলোক-যত্রণা হইতে পরিত্রাণ পান। চরম অর্থাৎ মহাযান দারা জীবের আত্মা সর্ব্বোৎকৃষ্ট অবহা প্রাপ্ত হইরা বৃদ্ধ-পদ লাভ করে। * বৃদ্ধাণাকেই এ সম্প্রাণারের প্রধান দেবতা ঘলিতে হয়। হিন্দু-শাস্ত্রের মতে দেবগণ রাম কৃষ্ণাদি মম্বারূপে ভূমণ্ডলে অবতার্ণ হন; ঘৌদ্ধ-মতে মন্থ্যগণ সাধনাপ্রভাবে উত্তরোত্তর দেবজ-পদ প্রাপ্ত হইরা থাকেন।

বীহারা এরপ সাধনা ছারা বৃল্ল-পদ লাভ করিয়াছেন, উহিংদের নাম মামুখি-বৃদ্ধ। সচরাচর দাত জন মামুখি-বৃদ্ধ পরিগণিত হইয়া থাকে; বিপন্থী, শিখী, বিখড়, কর্ৎসন্দ, কনকম্নি, কাশুপ, শাকামুনি। কাশুপ নামটি হিন্দু শাল্ল হইতে গৃহীত স্পষ্টই বোধ হইতেছে। † সপ্তবৃদ্ধস্তোত্ত দামে একথানি সংক্ষত গ্রন্থে এই সপ্ত মানুখি-বৃদ্ধের তাব আছে? বৌদ্ধেরা তাহা আবৃত্তি করিরা খাকে। এক এক বৃদ্ধের এক এক প্রকার মন্ত্র আছে। তাহা উচ্চারণ করিলে, রোগ, শোক, বিসাদাদি থখন হয়। এছলে উদ্লিখিত কাশুপ বৃদ্ধের প্রকাশিত মন্ত্র উদাহরণ করপে প্রদর্শিত হইতেছে।

ननी बुदाय। ननी धर्माय। तनी सङ्गय। ननी काम्यमाय। भौँ। इर, इर। इर। इी, डी, डी। ननी काम्यमाय। फर्टते। सम्यक् सन्दुदाय × × साहा। ↓

^{*} Pilgrimage of Fa Hian, 1848, pp. 9 and 11.

⁺ Asiatic Researches, Vol. XVI., pp. 440 and 447.

Pilgrimage of Fa Hi , 1848, p. 181

দেহ-ভঙ্গ ব্যতিরেকে সম্পূর্ণ নির্বাণ-প্রাপ্তির সন্তাবনা নাই, কিন্তু ইহলাকেও মামুবের একরূপ নির্বাণ-লাভের অধিকার আছে। বৌদ্ধগাস্ত্রকারেরা বলেন, গৌতম নিজেই সেই নির্বাণ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। কেবল
গানই এই অবস্থা-লাভের একমাত্র উপায়। এ অবস্থার রাগ, দ্বেম, স্নেহ,
গারা প্রভৃতি সকলই নত হয়; মনের সকল ভাবই তিরোহিত হইয়া যায়;
নের কোন রূপ ভাব-জ্ঞানও থাকে না, সমস্ত ভাবের অভাব-জ্ঞানও
গাকে না *।

হিন্দুধর্মের মত এ ধর্মে যাগ যজ্ঞাদি ক্রিয়াম্ঠানের ব্যবস্থা নাই।

ার্কেই লিখিত হইরাছে, বৌদ্ধ-মতে দান, দরা, ভার, সত্যাদি স্বভাব-নিদ্ধ হিত

নার্যারই প্রাধান্ত প্রদর্শিত হয়। সেই সমুদায়ের পারিভাষিক নাম ধর্মা।

হিন্দুশাস্তামুদারে যেমন ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশরের নাম ত্রিমূর্ত্তি এবং খৃষ্টীয়

াস্তামুদারে যেমন জনকেশ্বর, তনয়েশ্বর ও কপোতেশ্বরের নাম ত্রিমূর্ত্তি;

আর এক প্রকার বৃদ্ধের নাম ধ্যানী; তাহার বিষয় পূর্বের লিখিত হইরাছে। সমুদারে কত ন্ধ, স্থির করা কটিন। এক এক স্থলে সহস্র বৃদ্ধের সংখ্যা লিখিত আছে। শ্রীমান্ হজসন্ লিতবিস্তর, ক্রিয়াসংগ্রহ ও রক্ষাভগবতী গ্রন্থ হইতে উল্লিখিত সাত মাকুষি-বৃদ্ধ সম্থলিত ১৪৩ এক ত তেতালিশ জন তথাগতের অর্থাৎ বৃদ্ধের নাম সংগ্রহ করেন *।

* বেলান্ত মতানুদারে, পরমান্ত্রাতে জাবান্ত্রা লীন হওয়াকে নির্বাণ মুক্তি বলে। বৌদ্ধেরার রমান্ত্রার অন্তিত্ব অগীকার করেন না। স্বতরাং তাহাদের মতামুযায়ী নির্বাণের অর্থ সেরূপ রমা সম্ভব নয়। সে মতে, আন্থার অন্তিত্ব-ধ্বংসই নির্বাণ। নির্বাণ শব্দের বেরূপ বৃৎপত্তি হার সহিত বৌদ্ধমতামুযায়ী নির্বাণেই সঙ্গত হয়। কাগ্রপের মতোপদেশে ও বিশেষতঃ প্রজ্ঞানমিতা গ্রন্থে নির্বাণ-পদের ঐরূপ তাৎপর্যার্থই প্রদর্শিত হইয়াছে †। কিন্তু কোন ধর্মনিতা গ্রন্থে কির্বাণ-প্রতাশায় একেবারে আপনার ধ্বংস কামনা করিবেন ও জনসমাজে ক্রিকেই পরম পুরুষার্থ বলিয়া উপদেশ প্রদান পূর্বক ধর্ম-প্রচারে কৃতকার্য্য হইবেন টি কোন মতেই সন্তব নয়। ধর্মপদের নানা বচনে নির্বাণ শব্দ-ছলে শান্তম্ পদম্ ‡ অর্থাৎ শান্ত্রদ্ধানমান্ত্র সন্তব্যালি পদের নানা বচনে নির্বাণ শব্দ-ছলে শান্তম্ পদম্ ‡ অর্থাৎ শান্ত্রদ্ধানমান্ত্র প্রত্যালি পদের নির্বাণ আছে। এই সমস্ত পর্যালোচনা করিয়া শ্রীমান্ মক্ষমূলর বিবেচনা করিয়াছেন, জীবান্তার বিশ্বনিকাণের লক্ষণ। সাধারণ লোকে ক্রিণাণকে নিরবাছির স্থেমর অর্থান জান্ত্রাত্র আন্তর্যা বিশ্বাস করে । ।

^{*} Asiatic Researches, Vol. XVI., pp 446-449.

⁺ Max Muller's Chips from a German Workshop, Vol. I., p. 284.

Max Muller's Translation of Dhammapada, Introduction, p. xiv.

সেইরূপ, বৌদ্ধদের ত্রিমূর্ত্তি বৃদ্ধ, ধর্ম ও সঙ্গ । যদিও এই তিনটি আপাততঃ ভিন্ন ভিন্ন পদার্থ-বাচক, কিন্তু বস্তুতঃ তাহারা একই পদার্থ। তাহাদের প্রকৃতি ও এক; পরস্পার কোন অংশে ভিন্ন নয়।

বৌদ্ধ-মতানুষায়ী পশ্চাল্লিখিত চারিটি প্রধান তত্ত্ব বৌদ্ধ-সমাজে ধর্ম চক্রণ বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে। তাহাই বৌদ্ধ-মত-প্রণালীর মূলীভূত। তাহারই বিস্তার ও পর্যালোচনা দ্বারা নির্বাণের উপায় প্রবৃত্তিত হইয়াছে।

- >।—कीवत्नाटक इः ४ ७ यञ्जना मस्तव वाशी।
- ২।—স্নেহ, মমতা, কামনা, রাগ, দ্বোদি হইতে তৃঃধ-দন্ত্রণার উৎপত্তি হয়। মনঃ-কল্লিত বিষয়-বাদনা সেই সমুদায়ের মূল।
- ৩।— তুঃখ-যন্ত্রণার কারণ ধ্বংস হইলেই ছুঃখ-যন্ত্রণার ধ্বংস হয়, অর্থাৎ স্থে, মমতাদির বন্ধন হইতে আছাকে মুক্ত করিলেই, ছুঃখ-যন্ত্রণার অবসান হইয়া যায়।
- ৪।—নির্বাণ-লাভের যে চারিটি পথ আছে, 'ভাহাতে প্রবেশ করিলে আত্মার মুক্তি-সাধন সম্পন্ন হইতে পারে। সে চারিটি এই; পূর্ণ শ্রদ্ধা, পূর্ণ চিম্তা, পূর্ণ বাক্য ও পূর্ণ ক্রিয়া।
 - ্গোতম বৌধ-সম্প্রদায়ের ধর্ম.কর্ম অরপ তায় সত্যাদি স্বভাব সিদ্ধ ধর্মনীতির
- সচরাচর সমাজ-বদ্ধ ভিক্দু-দলকে:সঙ্গ বলে। গ্রন্থ-বিশেষে চারি প্রকার সঙ্গ-শ্রেণীর প্রসঙ্গ
 আছে, ঐ ভিক্দু-দল তাহার এক প্রকার। বৃদ্ধ, বোধিসন্ধ, প্রত্যেক বৃদ্ধ ও প্রাবক প্রথম শ্রেণীভূক্ত। উল্লি:খত ভিক্দু দল দিতীর প্রেণী। যে সমন্ত মৃঢ় ব্যক্তি ধর্মাধর্ম *-জ্ঞানবিবর্জিক, তাহারা
 তৃতীর প্রেণী। যে সম্পার নির্লক্ষ লোক ভিক্ষ্ শ্রম অবলয়ন পূর্বক তছ্চিত বিধি নিষেধ পালন
 করিয়া চলে না এবং লজ্জা ভর পরিত্যাগ পূর্বক অধর্মের চিরদিন-ব্যাপী পরিণাম-ফলের প্রস্তি
 ক্রেক্ষেপও করে না, তাহারাই চতুর্ব শ্রেণী।
- † চক্র শক্ষতি বৌদ্ধ-সমাজের বড় প্রিয়। ইহার একটি অর্থ ধর্ম-প্রচার বিজ্ঞাপক। বৃশ্ধ কর্ত্ত্বক ধর্ম-প্রচারের বিষয় বিজ্ঞাপন করিতে হইলে, তদীয় শিবেরা কহিত, তিনি ধর্মচক্র মূর্ণিত করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছেন। উহার অপর একটি অর্থ, জীবের বোনি অমন-বিজ্ঞাপক; কেন্দ্রা তারার আনি অন্ত নাই। বৌদ্ধেরা জপ-মত্র লিখিয়া চক্র-বিশেষের সহিত সংযুক্ত করিয়া দের এবং তাহা অত্যন্ত বেগে বৃশীয়মান করিতে থাকে। জপ-মত্র উচ্চারণ করিলে বেরূপ কলা ভাত হয়, উহার এক এক বার ঘূর্ণন হারা সেইরূপ কলের উৎপত্তি হইয়া থাকে। বে সমত বৃশ্তি সক্ত আপনাদের আধিপত্য বিতার করেন বলিয়া প্রবাদ আছে, তাহাদের সেই সর্ব্ধ-প্রধান রাজ্ঞ-শক্তির নাম চক্র। প্রনিমিন্ত তাহাদের উপাধি চক্রবর্তী।

^{*} মিথাা, চৌর্ধা, বাভিচার, নরহত্যা এই চারিটি মূল অধর্ম।

গাঁচটি মাত্র নীতি পাঠ করিয়া বৌদ্ধ-ধর্মের সম্পূর্ণ

এরপ মনে করিও না। পশ্চাৎ অশোক রাজার অর্থাসনপত্তের বিষয়ৰে মণেকারত বিশেষ বৃত্তাক্ত জানিতে পারিবে। ছিলুখান্তের মতে, প্রার্থিত বাগা যজ্ঞের অর্থান ছারা পাপের বিমোচন হয়। কিন্তু শাক্য বৃদ্ধভাছা অহীকার করিয়া উপদেশ দেন, কায়মনোবাক্যে সর্ব্বকীবে দয়া-প্রকাশ ও ভদীয় হিভাগ্রাকীবে বাতিরেকে অন্ত কিছুতেই স্পাতি-লাভ হয় না।

ভারতবর্ষীয় ভূপভিগণের মধ্যে প্রথমে মগধাধিপতি অশোক রাজা খু
পু, তৃতীয় শতাকীতে বৌদ্ধ-ধর্ম অবলম্বন করেন। ভূমগুলে যে সমস্ত ব্যক্তি
উত্তর কালে অসামান্ত ক্ষমতাপর হইয়া বা জগতের অসাধারণ হিত-সাধন:করিয়া
য়শবী ও চিরত্মরণীয় হন, তাঁহাদের মধ্যে কোন কোন ব্যক্তি প্রথম বয়সে
সাতিশয় হংশীল ও নিতান্ত নির্কোধ ছিলেন শুনিতে পাওয়া বায়। বৌদ্ধ-কুল
তিলক অশোকও তাঁহাদের মধ্যে পরিগণিত। তিনি প্রথম বয়সে না স্লদৃষ্ট
না স্থশীল ছিলেন। প্রিয়-দর্শন ছিলেন না ধলিয়াই পিতার স্লেহ-ভাজন হন
সাই এইরূপ প্রবাদ আছে। এমন হরস্ত ও অবাধ্য ছিলেন যে, লোকে
তাঁহাকে চণ্ড বলিয়া উল্লেখ করিত। এইরূপ লিখিত আছে যে, একটি
পর্বত-বাসী লোক সমুদ্ধ নামক বৌদ্ধ ভিক্ষর প্রাণ-বধার্থ নানাবিধ চেষ্টা পায়:
কিন্ত কিছুতেই কুতকার্য্য হইতে পারে নাই। ইহাতে সে অত্যন্ত বিত্ময়াপর হইয়া এবিবয়টি জাশোক রাজার কর্ণগোচর করে। তিনি ভিক্ষর নিকট
আল্যোপান্ত সমন্ত বৃত্তান্ত অবগত হইয়া ঐ পর্বত-বাসী ব্যক্তি
করেন এবং ঐ ভিক্ষকে অসাধারণ দৈবশক্তি-:

এই পাঁচটি সাধারণ ধর্মনীতি অপর সাধারণ সকলে
নিমিত অপর পাঁচটি নিয়ম নিয়পিত আছে;
নাটকে প্রবৃত্ত হইও না, প্রথকি গ্রহণ ও অলভার ব
এবং উৎকৃত্ত শব্যার পরন করিও না ।

বৌদ্ধর্মাবলম্বনে প্রবৃত্ত হন : * তাঁহার উৎসাহ-প্রভাবে ঐ বৌদ্ধ-ধর্মা এত প্রাহ্নভূতি হয় ও তিনি এত চৈত্য, এত স্তৃপ ও অন্য অন্য এত প্রকার কীর্ত্তি-নিকেতন প্রস্তুত করেন যে, লোকে তাঁহাকে পূর্ব্বোক্ত চণ্ড নামের পরিবর্ত্তে ধর্মাশোক বলিয়া বিখ্যাত করিল † তিনি কতকগুলি অনু-শাসনপত্র খোদিত করিয়া 'ধর্ম' প্রচার করিয়া দেন ‡ । এই ধর্মের অর্থ

- * Dr. Rajendra Lal Mitra in the Proceedings, Asiatic Society of Bengal for January 1878.
- † অশোক রাজার এত কীর্ত্তি ও এত নিদশন এত স্থানে বিদামান আছে যে, বছকালাবিধি সবিশেষ অমুসন্ধান করিরাও তাহার সমস্ত জানিতে পারা গিয়াছে কি না সন্দেহ। সম্প্রতি কিছু দিন হইল বুদ্ধগরাতে অশোক রাজার সিংহাসন, ওাঁহা কর্তৃক প্রতিষ্টিত কতকগুলি স্তুপ ও চৈতা, বোধিবক্ষের বৃতি প্রভৃতি অশোক সংক্রাস্ত বিবিধ প্রকার সামগ্রী প্রাপ্ত হওয়া যায়। যে স্থানে আশোক রাজার সিংহাসন সংস্থাপিত ছিল বলিয়া প্রবাদ আছে, সেই স্থান খননা করিয়া ঐ সিংহাসনের ভগ্নাবশেষ স্বরূপ স্বর্গ, রতু মুক্রাদি বছমুল্য দ্রবা সংযুক্ত নানাঅংশ শ্রীমান্ ব্যবর কর্তৃক আরিক্ত হয় এবং ১৮৮১ খৃষ্টাব্দের ৪ঠা মে এদেশীয় এশিয়াটিক সোসাইটির একটি বিশেষ সভার শ্রীমান্ স্ব, র, হর্নলি কর্তৃক প্রদর্শিত হয়। তদনস্তর আরও অক্ত অক্ত অন্ত অনেক বিষয় প্রকাশ পাইয়াছে। ঐ সমরে অশোক ও অক্ত অন্ত বিবিধ বাজি কর্তৃক সম্পাদিত বৌদ্ধ ধর্ম সংক্রান্ত সহস্র সহস্র প্রাতন বস্তু ঐ স্থানে একত্র আবিক্ত হওয়াতে, ঐ ধর্মের পুরাবৃত্ত-জিজাফ পণ্ডিতগশের উৎসাহ নবীভূতও কৌতুহল-শিখা প্রজ্বিত হইয়া উঠে। চীন-দেশীয় তীর্থযাত্রীরা বৃদ্ধগরার যে স্থানে যে ব্যবর অবস্থিতি প্রসঙ্গ করিয়া গিয়াছেন অবিকল সেই স্থানেই তাহা প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে।—The Indian Daily News—May II & 26, 1881.

় কিন্তু সেই সমন্ত অনুশাসনপত্রের কোন স্থানে অশোকের নাম বিদ্যমান নাই, সেই সম্পার পাত্র রাজা পিরদসি অর্থাৎ প্রিয়দর্শী কর্তৃক একাশিত বলিয়া লিখিত আছে। বৌদ্ধ সমাজে অশোক রাজার যেরপ অসাধারণ খ্যাতি ও অপূর্ব্ধ ইতিবৃত্ত প্রচলিত আছে, তাহার সহিত ঐ পোদিত পত্র সম্পারের ভাবার্থ যেরপ সঞ্চত হয়. অক্স কোন রাজার বৃত্তান্তের সহিত সেরপ সঙ্গত হয় না। অতএব সেগুলি ঐ বৌদ্ধ কুল-তিলক অশোকের অনুশাসন পত্র বলিয়া বিবেচিত হয়। বিশেষতঃ দীপবংস নামক বৌদ্ধ প্রস্থে পিরদসন নামে একটি রাজার অভিষেক বৃত্তান্ত লিখিত আছে, ঐ পিয়দসন বিন্দুমরের পুত্র ও চক্রভপ্তের পৌত্র। তিনি বৃদ্ধের নির্ব্বাণের ২১৮ অবন্ধ রাজ্যাভিষ্কিত হল। হিন্দু ও বৌদ্ধশাস্ত্রে অশোকের বিষয় যেরপ বর্ণিত আছে, তাহার সহিত দীপবংসের উল্লিখিত কথাগুলির কিছুমাত্র প্রভাগে করেই পরিচায়ক বলিয়া অবধারণ করিতে পারা যাইত। ঐ উভয় শান্তান্ত্র সিক্তান্তর পুত্র বিন্দুসর ও বিন্দুসরের পুত্র অশোক। দীপবংসে পিয়দসনের রাজ্যাভিষেকের সময় যেরপ লিখিত আছে হিন্দু ও বৌদ্ধশাস্ত্রে অশোকেরও সেইরপ। কিন্তু ঐ সমস্ত থোদিতপত্রে অশোকের নাম একবারমাত্র ও লিখিত নাই বলিয়া, হ, হ, উইল্মন্ এ বিষয়ের ক্রেড ভারতবর্ষীয় পুরারুত্বিদ পণ্ডিতেরা প্রায় সকলেই একবাধ্য করিয়া আনেত্ব ও প্রয়দর্শী এক ব্যক্তির নাম বলিয়া খীকার করিয়া আনিতেহেন।

^{*} Journal of the Royal Asiatic Society, Vol, VIII, p. 309.

বুদ্ধদেবের অর্চনাও নয় । এত, নিম্নম, উপবাসাদি নিত্য নৈমিত্তিক ক্রিয়াও नम् । इंटा स्त्रह, वारमणा, छक्ति, प्रमा, पाक्तिगा, खहिरमापि धर्मनीकिमाव। কেবল এই ধর্মের অমুষ্ঠানেই ঐহিক ও পারত্রিক মুখ-মর্গ প্রাপ্ত হওয়া যায়। याहा कि हिन्दू कि त्यानन्यान, कि बिछिन कि शृष्टीन, कि देखन कि भात्रती. সকল ধর্ম-সম্মত এবং সকল জাতির অভিমত ও সমাদৃত, তাহাই এই 'ধর্ম'। এবিষয়ে নান্তিকতাবাদী বৌদ্ধেরা আন্তিকতাবাদী হিন্দুদের অপেকা মহত্তর মত প্রকাশ করিয়া জগতের শ্রদ্ধাম্পদ ও পূজাম্পদ ছইয়া রহিয়াছেন। অশোক রাজা পূর্ব্বোল্লিখিত অনুশাসনপত্রে পিতৃ-ভক্তি, মাতৃ-ভক্তি, গুল্ল-ভক্তি, জ্ঞাতি, প্রতিবাসী ও আত্মীয়গণকে দয়া ও আশ্রম্ন প্রদানকরা, ভক্তি-শ্রদ্ধা সহকারে ব্রাহ্মণ ও প্রমণদিগকে দান করা, ভূত্য ও অধীনস্থ লোকদিগের প্রতি অমুকলতা-প্রকাশ প্রভর আজ্ঞাবহ ও তাঁহার প্রতি ভক্তিমান থাকা, মিতবায় ও হিতাচরণ, নিন্দা ও অসং কথা পরিবর্জন ইত্যাদি অবশ্য কর্ত্তব্য কর্ম্ম সমুদায়ের ব্যবস্থা প্রচার করেন। মানুষ ও ইতর জন্ত উভয়ের প্রতি সদয় ও সামুকুল ভাব প্রদর্শন করেন। তাঁহার মতে, এ সমস্তই পরম পরিশুদ্ধ পারমার্থিক ক্রিয়া। ভিনি কেবল মত প্রচার করিয়া নিরস্ত হন নাই, নিজে তদমুরূপ কার্য্য সাধন করিয়া প্রজাগণের কুশলোয়তি চেষ্টা পান। তিনি পশুহিংসা নিবারণ করেন, পশু ও মহুষোর শ্বতন্ত্র বিভিৎসা-ব্যবস্থা সংস্থাপন করেন এবং রাজ্য মধ্যে ধর্ম্মোপদেশ-প্রণালী প্রতিষ্ঠিত করেন। সর্ববলীব বিষয়েই অব্যক্তিচরিত অবারিত, অহিংসা ধর্ম প্রচার করিয়া কি হিন্দু, কি মোসল্মান কি খুষ্টান, সকলকেই এবিষয়ে অতিক্রম করিয়া গিয়াছেন। খৃষ্টাব্দের প্রায় তিন শত বৎসর পূর্ব্বে গ্রীক দত মিগেছিনিজ লিখিয়া যান, কতকগুলি শ্রমণ অর্থাৎ বৌদ্ধ উদাসীন কেবল দয়া-ধর্মের অমুষ্ঠান উদ্দেশে লোকের চিকিৎসা করিয়া বেড়ান : কাহার নিকট কিছু গ্রহণ করেন না। অপর কতকগুলি ধর্ম-প্রচারক শ্রমণ লোকদিগকে নরক-ভয় প্রদর্শন পূর্বক কর্ম্মোপদেশ প্রদান করেন *।

ভূমগুলে স্থমত-পক্ষপাতী ভিন্ন ভিন্ন ধর্মাবলম্বী লোকের বিদ্বেষ প্রভাবে অতীব ভয়কর নৃশংস কাণ্ড সম্লায়, এমন কি সহস্র সহস্র ও লক্ষ লক্ষ নরবধ পর্যাস্থ

[•] অদ্যাপি এই ছুই রীতি প্রচলিত আছে।—Hardy, p. 368.

ঘটিয়া গিয়াছে। অশোক রাজা এবিষয়েও অপার ওদার্য্য ও অপরিসীম মহত্ত প্রদর্শন করিয়া যান।

পূর্ব্বাক্ত অমুশাসনপত্তে তিনি কি গৃহী কি উদাসীন যে ব্যক্তি বৈ ধর্ম পাসন করুক না কেন, তাহাদের সকলের প্রতি শ্রদ্ধা-প্রকাশ ও তাহাদের সকলেরই ধর্ম-রক্ষার বন্ধ প্রদর্শন করিয়াছেন। তিনি দান ও অন্থ অন্থ সংক্রিয়া সহকারে তাহাদের প্রতি ভক্তি প্রদর্শন করিয়া বলেন, ঐ সকল ক্রিয়া অপেক্ষায় তদীয় সার স্বন্ধপ ধর্মনীতির প্রাহ্রভাব-দৃষ্টির অভিলায় অধিক গৌরবের বিষয়। তিনি স্মুম্পষ্ট প্রচার করিয়া দেন, মন্থুয়ের নিজ ধর্মে শ্রদ্ধা করা উচিত, কিন্তু কদাচ পর-ধর্মের নিজা ও অনিষ্টাচরণ কর্ত্তব্য নয়। সকল স্থলেই পরধর্ম-সম্প্রদায়ে উচিত্তমত শ্রদ্ধা করা কর্ত্তব্য। যে ধর্মের যে রূপ নিয়ম, তাহার প্রতি তদমুষায়ী শ্রদ্ধা করা বিধেয়। এরপ আচরণ করিলে, নিজ ধর্মের উন্ধৃতি ও পর-ধর্মের হিত সাধন করা হয়। যে ইহার অন্যথাচরণ করে, সে আপন ও পর উভয় ধর্ম্মেরই অনিষ্ট উৎপাদন করিয়া থাকে। যে ব্যক্তি স্বধর্ম সম্প্রদায়ে অনুরাগ বশতঃ পর ধর্ম্ম সম্প্রদায়ের নিজা করিয়া নিজ সম্প্রদায়ের গৌরব প্রকাশ করে, তাহার এরূপ আচরণ দারা নিজ ধর্ম্ম সম্প্রদায়ের ত্রারব প্রত্নাত করা হয়। * আনোক রাজার এক থানি অন্ধুশাসনপত্রে এইরূপ লিখিত আছে যে, যাহাদের বৌদ্ধ ধর্ম্মে বিশ্বাস নাই, তাহারাও আমার রাজ্য মধ্যে নির্ম্ময়ে বাস কর্মক।

देवानम् पियो पियदसि राजा सवत इकति सर्वे पाषस्य बंसेयु सर्वे ते स्यम् भाव-स्टिन्च इकति ।

দেবগণ-প্রিয় প্রিয়দর্শী রাজা ইচ্ছা করিতেছেন, সমস্ত পাষও (অর্থাৎ বৌদ্ধধর্মে আন্থাশূন্য ব্যক্তি সমুদায়) সর্বাত্ত (নির্বিছে) বাস করুক, কেন না ভাহারাও ভাবভৃদ্ধি ও ধর্মাশাসন ইচ্ছা করে †।

অবনিমপ্তলের অপরাপর ধর্ম-সম্প্রদায়ীরা এ অংশে যদি অশোকের পদ-রেণু-

^{*} Journal of the Asiatic Society of Bengal Vol. VII. pp.240-241 and pp. 259-260. The Journal of the Royal Asiatic Society, Vol. XII. pp. 215-222. The Indian Antiquary, 1876, p. 267 and 1881, p. 211.

⁺ H. H. Wilson in the Journal of the Royal Asiatiy Society, Vol. VIII. pp, 306 and 314.

কণামাত্র গ্রহণ করিতে পারিতেন, তবে অসংখ্য লোকের ধর্ম থেষ নিবন্ধন অকালে কালগ্রাস প্রবেশ নিবারিত হইত। বৌদ্ধগণ-সংহারক * আতিকপ্রবর ব্রাহ্মণকুল! এই নান্তিক নরপতির স্থপবিত্র গুণগ্রাম শ্রবণ কর, আর লজ্জার অধ্যেমুখ হইয়া ধরণী-গর্ভে প্রবিষ্ট হইতে থাক! উত্তা-মূর্ত্তি শৈব ও বৈষ্ণব জমাতের জয়াবহ তীর্থমানে ধিক্! ধিক্ ধিক্। গ্রীষ্টানদিগের শোণিতাক্ত মুণ্ড-মালা-বিভূষিত ভয়ত্বর কুনেত্ যুদ্ধের কুল্-চিন্তেও ধিক্! স্বসম্প্রদারের পক্ষপাত্মদে উন্মত্ত হন্দান্ত মোনলমান্ সম্প্রদারের কর-নঞ্চালিত চাক্চিক্যশালী স্থতীক্ষ তরবারেও । ধিক্!

অশোক প্রচারিত ধর্মপ্রণালীর যংকিঞ্চিং স্থুল তাৎপর্যামাত্র লিখিত হইল।
ইহা মনুষ্য কুলের স্বভাব-দিন্ধ সাধারণ ধর্ম; মনঃকল্পিত নয়। জাতি-ভেদ ও
বর্গ-প্রভেদও ইহার বৈরী ও বিদ্বেষী নয়। কি হিন্দু, কি খুষ্টান, কি মোনল-মান্ কেইই এ ধর্মের বিরোধী নয়। বেদ, কোরান্ ও বাইবল্ এই ধর্মকে যত্তদ্র লালন-পালন ও পরিপোষণ করিয়া আসিয়াছে, প্রধানতম বিজ্ঞ সম্প্রণায়ের নিকট
তত্তদ্র আদরণীয় ও প্রনীয়। ঋষি, মৃনি, পীর, পয়্গয়য়, দেণ্ট, সেবিয়য় ইইয়ার
বে পরিমাণে এই ধর্ম্মের অন্প্রচান ও মহিমা প্রচার করিয়াছেন, সেই পরিমাণে
প্রক্ত-প্ণ্য-কীর্ত্তি লাভে অধিকারী হইয়া রহিয়াছেন। অধুনাতন মানব কুলের
বৃদ্ধি বিভার পথপ্রদর্শক কোন্ত ও হিউম্, ডাকইন্ ও হক্স্লি, মিল ও স্পোন্সর্
ইইাদেরও এই ধর্মকে ‡ আপনাদের সাম্প্রদায়িক ধর্ম বিলয়া পরিচয়-দান এবং
তাহাতে উৎসাহ ও আহ্লাদ প্রকাশ না করিবার বিষয় নয়।

বৌদ্ধর্মাবদ্দী ভূপতিগণ অকাতরে দান ধর্মের অমুষ্ঠান করিয়া যান।
গশ্চাৎ তাহার একটি উদাহরণ প্রদর্শন করা যাইতেছে। উত্তর কালে খুষ্টীর
সম্প্রদায়ে দেরপ গুরু-সন্নিধানে আত্ম-দোষ স্বীকারের ব্যবস্থা প্রবর্ত্তিত হয়,
পূর্ব্বকালে বৌদ্ধ সমাজে সেই প্রথাটি অবিকল প্রচলিত ছিল। প্রত্যেক
ভিক্ষ্কে অর্থাৎ বৌদ্ধ উদাসীনকে প্রতি মাসে হইবার অর্থাৎ পূর্ণিমা ও অমাবস্তার দিবসে আত্ম-পাণ অস্পীকার করিতে হইত। ক্রমশঃ গৃহী লোকের মধ্যেও
এই প্রথা প্রচলিত হয়, কিন্তু তাহার অম্ববিধা সংঘটন প্রযুক্ত, অলোক রাজা

উপক্রমণিকা ২২২ ও ২২৩ পৃঠা।

[🕇] এক হল্তে কোরান অপর হল্তে তরবার।

[🚶] অতিমাত্র অহিংসাটি পরিবর্জন পূর্বেক।

विके सर्वादम अविकेड स्टब्न, ठाराट अव्याद्य स्टब्स्स अविकेड स्टब्न, ठाराट अव्याद्य स्टब्स्स अविकेड स्टब्स अविकेड स्टब्

ঐ স্থবিস্থ চ উৎসৰ-ক্ষেত্ৰ একটি আনন্দ-ক্ষেত্ৰ ছিল; চারি দিকে সংশ্র দ্বল পোলাৰ পাছের হুরমা বুতি, তাহাতে অপর্য্যাপ্ত মনোহর পুষ্পশ্রেণী অহরহ প্রক্টিত এবং মধ্যছলে স্বর্ণ, রজত, পট্রস্ত্র ও অপরাপর বছমূল্য দান-দ্রব্যতে পরিপূর্ণ স্থমজ্জ গৃহশ্রেণী। ভাহার সমীপে সারি সারি একশত এরূপ বিভৃত ভোগন-গৃহ ছিল বে, ভাহার প্রত্যেকে একশত ব্যক্তি একত্র ভোজন করিতে পারিত। মহারাজ শিলাদিত্যের আহ্বানক্রমে ব্রাহ্মণ, শ্রমণ, দরিদ্র, পিতৃ-হীন, মাত-হীন, বান্ধৰ-হীন প্রভৃতি পঞ্চাশ সহস্র গোক তথার আগমন করে। সার্দ্ধ ছই মাস ব্যাপিয়া দান-ভোজনাদি সহকারে ঐ উৎসব-ব্যাপার সম্পন্ন হয়। উহাতে হিন্দু বৌদ্ধের বিধেষ ভাব দুরে থাকুক, সমধিক সন্তাবই প্রদর্শিত দেখা বার। তথার বৃদ্ধ, বিষ্ণু, শিব তিনেরই প্রতিমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত হয় এবং হিন্দু ও বৌদ্ধ সমস্ত সমাগত ব্যক্তিদিগকে বছমূল্য সামগ্রী দান করা এবং চর্ব্য, চোষ্য, লেছ, পের নানাবিধ স্থাদ সামগ্রী ভোজন করান হয়। উক্ত রাজা ঐ উৎসবে হন্তী. অৰ ও অপরাপর যুদ্ধ-দামগ্রী ব্যতিরেকে রাজকোবের সমস্ত ধন্ই বিভরণ করিভেন। এমন কি, তাঁহার নিজের পরিচ্ছদ, কর্ণকুগুল, রত্নমালা প্রভৃতি বেশস্ক্রা সম্পারও শরীর হইতে উল্মোচন কারয়া দিতেন। অবশেষে পুরাতন ছিন্ন বস্ত্র পশ্বিধান পূর্ব্বক ক্বজাঞ্জলিপুটে উটচ্চঃস্বরে দানধর্ম বিষয়ে ভক্তিশ্রদ্ধা প্রকাশ করিতেন।

বৌদ্ধের ও হিন্দুদের স্থায় মৃত্যুর পর নানারপ যোনি-ভ্রমণ স্বীকার করে। যিনি ইংকালে বেরূপ গুভাগুত কর্ম করেন, পরকালে তিনি তদ্মুরূপ যোমি-প্রাপ্ত হন। কেবল পশু পক্ষী কীটাদি নিরুষ্ট জন্ত দয়, পাতকের পরিমাণাল্লারে মুৎপিশুদি জড়বন্ত হইয়াও জন্ম গ্রহণ করিতে হয়। যদি কেই এরূপ খোরতর মুক্দা করে যে, উক্তর্মণ নিরুষ্ট জন্ম গ্রহণ করিলেও ভাহার উচিত্মত শান্তি ř

র না, তাহা হইলে তাহাকে নরকত্ব হইতে হয়। বৌদ্ধ-মতে, ১০৬ একশত বিশিটি নরক বিদ্যমান আছে। যে বেরপ পাপ-কর্ম্ম করে, তাহাকে তদমুরপ গঠিন নরকে তাদৃশ পরিমিত কাল বাস করিতে হয়। কাহার নরক-ভোগের ময় কোটি বংসরের অপেক্ষা ন্যুন নয়। পুণ্য কর্ম্মেরও এইরপ পুরস্কার আছে। গ্যবান্ ব্যক্তি, হয় মর্ত্তালোকে উত্তম জন্ম গ্রহণ পূর্বিক স্থ্য ভোগ করে, নয়, বিধপ্রকার অর্গলোকের কোন স্বর্গে দেবাদি-যোনি প্রাপ্ত হইয়া স্থ্য-সজ্যোগ রিতে থাকে। কাহারও অর্গ-ভোগের সময় শত কোটি বংসর অপেক্ষার অয়য়য়। বৌদ্ধেরা বলেন, শাক্যমুনি নিজে উল্লিখিত শুভাশুত সমুদায়,জন্মেরই স্থ্য ভোগ করিয়া আসিয়াছেন। তিনি পশুপক্ষ্যাদি কোন্ যোনিতে কিরপে বিধ্যাকেন, বৌদ্ধ-শাস্তে তাহার স্বিশেষ বৃত্তাপ্ত সন্ধানেত কিরপে

শ্রমান্ত ধর্ম সম্প্রাণারের জ্ঞার বৌদ্ধদিগেরও মতান্তর ঘটরা ক্রমে ক্রমে চারিটির্গন উৎপন্ন হইয়াছে; মাধ্যমিক, যোগাচার, সৌক্রান্তিক ও বৈভাষিক।
খ্যমিক-মতে, কোন পদার্থই বাস্তবিক বিদ্যমান নাই; সকলই শৃন্তমর।
গাগাচার-মতও ইহার অমুরূপ; এই মতত্ব বাজিরা অভ্যন্তরন্থ বিজ্ঞান ব্যতিকে অপরাপর সমুদার পদার্থেরই অন্তিত্ব অস্থাকার করেন। ইঁহাদের মতে
বল বিজ্ঞানই আছে; জল, বায়ু, পৃথিব্যাদি বাহ্ বস্তু কিছুই নাই। ইইারা
বিজ্ঞানকে হই ভাগে বিভক্ত করেন; প্রকৃতি-বিজ্ঞান ও আলয়-বিজ্ঞান।
গ্রেৎ ও স্থপ্রাবস্থার যে জ্ঞান জন্মে, তাহাকে প্রকৃতি-বিজ্ঞান বলে ও মুমুপ্তি দশার
ক্রান জন্মে তাহার নাম আলয়-বিজ্ঞান। অপর হই সম্প্রদারীরা বাহ্ম পদার্থ
অভ্যন্তরন্থ পদার্থ উভরেরই অন্তিত্ব অলীকার করেন। বাহ্ম পদার্থ ক্রতন্ত্রন্থ পদার্থ উভরেরই অন্তিত্ব অলীকার করেন। বাহ্ম পদার্থ হন্ত ভাগে
ভক্ত; ভূত ও ভৌতিক। ক্লিভি, জল, অগ্নি, বায়ু এই চারিটির নাম ভূত
াং চক্ষু শ্রোত্রাদি পাঁচ জ্ঞানেক্রির ও তাহার জ্ঞের নদী, পর্বতাদি বিষর সমুদারের
ম ভৌতিক। সেই সমুদারই পরমাণ্-সমন্তি। এই জগৎন্ত জ্ব লগতের সমুদার

শেষোক্ত তুই সম্প্রদারের মতে পরশ্পর কিছু বিশেষ আছে। এক সম্প্রদান া কহেন, বাহ্য বস্তু সমুদার কেবল প্রত্যক্ত-সিদ্ধ, তাঁহাদের নামনুবৈভাবিক।
ার সম্প্রদার্যারা বলেন, বাহ্য বস্তু সন্ত্য বটে, কিন্তু অনুসান-সিদ্ধ; একেবারেই প্রত্যক্ষ-সিদ্ধ হর না। চিত্তমধ্যে বাহ্য বস্তু সমুদারের প্রতিরূপ উৎপন্ন হর, এবং সেই প্রতিরূপ-জ্ঞান দারাই তাহাদের জ্ঞান জন্মে। এই সম্প্রদারের নাম সৌঞাজিক। উভয় মতেই, যে সময়ে বস্তুর প্রভাক হয়, সেই সময়েই তাহার অভিত্য থাকে। প্রত্যক্ষ না হইলেই বিহাল্লতার স্থায় ধ্বংস হইয়া যায়। এই নিমিন্ত হিদ্দু পণ্ডিতের। তাহাদিগকে, পূর্ণ বৈনাশিক অথবা সর্ব্ব বৈনাশিক বিদয়া উল্লেখ করিয়াছেন।

বৌদ্ধেরা হিন্দুবৈদান্তিকের স্থায় আকাশকে একটি ভূত বলিয়া খীকার করেন না এবং চিত্ত ও জীবাত্মা পরম্পার ভিন্ন বলিয়া অসীকার করেন না ।*

অন্ত অন্ত সমুদার উপাসক-সম্প্রদারের ন্তার বৌদ্ধেরাও ক্রমে ক্রমে নানা সম্প্রদারে বিভক্ত হইরা যার। বস্থনিত্র একধানি গ্রন্থে সে সমুদারের বিবরণ করেন এবং চীন-দেশীর তিন ক্রন পণ্ডিত তাহা চাঁন ভাষার অন্থবাদ করিয়া রাখেন। সেই সমুদার সম্প্রদারের নাম মহাসাজ্যিক, স্থবির, একবাবহারিকা, ক্র্লিকা, বাহ্ম্রুতির, তৈতিরবাদা, প্র্রিশেলা, উত্তরশৈলা, সর্বান্তিবাদ, হৈমবতা, বাৎসিপ্রীর, ধর্ম্মোন্তরীর, তন্তারনার, নার সম্প্রান্তনার, বাহাসিকিল। প্রথমোক্ত মহাসাজ্যিক সম্প্রদার স্থবিরাদি সাত সম্প্রদারে এবং ক্রির সম্প্রদার সর্বান্তিবাদ প্রভৃতি একাদশ সম্প্রদারে বিভক্ত হয়। সমুদারে অন্তান্তনার দ্বান্তনার । †

বৌদ্ধের। ঈশবের অন্তিম্ব অসীকারই করুন, আর অন্য অন্য নানা বিষয়ে অসাধারণ বৃদ্ধি-প্রাথম্বাই প্রকাশ করুন, কিন্তু অনেকানেক নিরুষ্ট ধর্মসম্প্রালয়ের ন্যায় পৌত্তলিক হইয়া রহিয়াছেন বলিতে হইবে। প্রতিমা-পূজা, বৃদ্ধাপ্রতির অন্থি দন্তানির অর্চনা এবং লানাবিধ বাতা মহোৎসব অবাধে চলিয়া আসিতেছে ‡। ফাহিয়ন্ খুটান্দের পঞ্চম শতাকীর প্রথমে অনেকানেক বৃদ্ধা

^{*} Colebrooke's Miscellaneous Essays Vol, I., 1873, pp. 413—426 দেখিলে দৰিশেষ জানিতে পারা যাইবে।

[†] Indian Antiquary, December 1880, pp. 299-301.

[্]ব দেবার্চনা সংক্রান্ত পশ্চাদিখিত বিবর্টিতে হিন্দু ও বৌদ্ধের পরশার বিশেষ বিভিন্নত। দেখিতে পাওরা বার। হিন্দু প্রভৃতির জ্ঞার বৌদ্ধাদের কৃত্তিক ক্রাণ্ড পুরোহিত নাই। প্রভ্যেক বৌদ্ধাদান ক্রাণনার পুরোহিত ও আপনিই আপনার বজ্ঞমান।

প্রতিস্থি দেখিরা যান। কেবল শাক্যবৃদ্ধ নয়, এক এক দেবালয়ে অন্য অন্য বৌদ্ধ দেবতার প্রতিমৃতিও প্রতিষ্ঠিত ও অচিত হইয়া থাকে। ভারতবর্ধের মধ্যে বৃদ্ধগরার তারা দেবী ও বাগীয়রী দেবী, বৈসালীতে অর্থাৎ বেসারু প্রামে ধ্যানী বৃদ্ধ অমিতাত ও বোধিসন্ধ অবলোকিতেখর, নলন্দবিহারে অবলোকিতেখর, তারা বোধিসন্ধ, ত্রিশিরা বজ্রবরাহী, বাগীয়রী, কপত্যদেবী ইত্যাদি অনেক স্থানে অনেকানেক বৌদ্ধ দেব দেবীর প্রতিমৃত্তি ও মন্দির অদ্যাপি দেখিতে পাওয়া যায়। ৬ সিংহল দ্বীপের মহারাজবিহার নামক বিহারে পঞ্চাশৎ অপেকার অধিক বৃদ্ধ বিগ্রাহ্ব এবং দেই সঙ্গে নাথ, বিষ্ণু ও সামন্দেব, পত্তিনে দেবী এবং বলগম্বান্থ ও কীর্তিনিস্সঙ্গ নামক গুইটি নৃপতির প্রতিমৃত্তি সংস্থাপিত আইছে। ঐ বলগম্বান্থ খু, পূ. ৮৬ অন্ধে ঐ বিহার প্রস্তুত করেন। †

অশিক্ষিত বৌদ্ধদের মধ্যে সাকার উপাসনা প্রচলিত হইয়া আসিরাছে তাহার সন্দেহ নাই; কিন্তু চীন-দেশীর জ্ঞানাপর বৌদ্ধেরা প্রতিমা-পূজা ও শান্তি অন্তায়ন বারা বৌদ্ধ দেবগণের প্রসাদ লাভ প্রভৃতি চলিত ধর্মামুঠান সমুদার স্বীকার করেন না। চুহি নামে একটি বৌদ্ধমত-প্রবর্ত্তক স্পষ্ট লিখিয়া সিয়াছেন, বৌদ্ধেরা স্বর্গ মর্জ্যাদি বাহ্ব বন্ধ ও প্রত্যক্ষ ব্যাপার সমন্ত গ্রাহ্ম করেন না; আপনাপন আত্মাতেই অভিনিবেশ করেন; পারলোকৈ স্থণছংশ মনংক্রিত ও দোষাবহ। ‡

বৌদ্ধেরা বৃদ্ধদেবাদির অস্থি, কেশ, দস্ত, বস্ত্র, যৃষ্টি প্রস্তৃতি মৃত্তিকায় প্রোথিত করিয়া তাহার উপর একটি পূর্ণ-গর্জ ঘণ্টাকার বস্তু নির্মাণ করে ও ভক্তি-শ্রদ্ধান সহকারে বিহিত-বিধানে তাহার অর্চনা করিয়া থাকে এবং তীর্থমাত্রীরা সেই সমস্তকে পবিত্র তীর্থ-ভূমি জ্ঞান করিয়া দর্শনাদি করিতে বায়। নানাধিক হই শত খুষ্টান্দে এলেগ্লেপ্তিরা-নিবাসী ক্লেমেন্স, নামক প্রীক্ পণ্ডিত গ বৌদ্ধদের অসি দ্বাদি-পূলার প্রসন্ধ করিয়া গিয়াছেন। কাহিয়ন্ যে সময়ে ভারতবর্ষ

^{*} Cunningham's Archæological Survey of India, Vol. 1. pp. 11, 31-36, 58 &c.

⁺ Forbes' Ceylon Almanac, 1834, extracted in R, Spence Hardy's Eastern Monachism, p. 203.

[‡] Indian Antiquary, December 1880, pp. 316 and 317.

ৰ তিনি ২০৬ বৃষ্টাব্দে প্ৰান্ন্সূত হন।

পরিজ্ञমণ করেন, সে সময়ে অর্থাং খুটান্দের পঞ্চম শতাব্দীতে পঞ্চাবের আনেকানেক বৌদ্ধ-দেবালয়ে বৃদ্ধদেবের ঐরপ শ্বরণ-চিহ্ন বিশ্বমান ছিল, লোকে প্রতিদিন তাহার অর্চনা ও দর্শনাদি করিতে যাইত * । হিউএন্থ্সল্ খ্রীষ্টাব্দের
সপ্তম শতাব্দীর প্রথমাংশে উত্তরে হিন্দুকুশ ও দক্ষিণে মলয়বর এই উভয় সীমার
মধাস্থলে অর্থাং সমগ্র ভারতবর্ষে ধর্মাশোক-প্রতিষ্ঠিত বলিয়া প্রসিদ্ধ ভূরি ভূরি
স্কুপ সন্দর্শন করিয়া যান। • কেবল বৃদ্ধ নর; ভদীর প্রধান প্রধান শিষ্য ও
প্রধান প্রধান বৌদ্ধ রাজারও অস্থ্যাদি-পূজা ক্রমশঃ প্রবর্তিত হইয়া আসিয়াছে।

আন্য অন্য ধর্ম-সম্প্রদায়ের ন্যায় ইহাদেরও অনেকানেক উৎসব আছে।
প্রাথানের মহোৎসবের বিষয় ইতিপূর্বেল লিখিত হইরাছে। -সিংহল ছীপে
বর্ষাকালে একটি উৎসব হঠয়া থাকে, তাহাতে পালিভাষার বিরচিত্ত
গ্রন্থ-বিশেষ পঠিত হয়। তাহাকে বনপাঠ বলে। ভিক্রা একটি বাসন্থান
নির্মাণ করিয়া বর্ষা ভিন মাস তাহাতে অবস্থিতি করে এবং সেই সময়ে
পূর্ণিমা, অমাবস্যা এবং রুষ্ণ ও শুক্রপঙ্গীয় অষ্টমী তিথিতে বনপাঠ করিয়া
থাকে। ঐ পাঠ শ্রবণোদ্দেশে মহা-সমারোহ হয়; মধ্যে মধ্যে বাদ্যোদ্যম
হইতে থাকে, রাত্রিকালে দীপ-জ্যোতিতে সেইস্থান জ্যোতিয়ান্ হইয়া যায়
এবং বন্দুকের ধ্বনি ও অগ্নি-ক্রীড়া পর্যান্ত হইয়া থাকে। ঐ বনপাঠের মধ্যে
যথন বুদ্ধের নাম উচ্চাররিত হয়, তথন শ্রোভ্গণ সাধু সাধু বলিয়া চীৎকার
করিয়া উঠে †।

অপর একটি উৎসবের নাম পারিত্ত। এটি পালি শব্দ। দেশ-ভাষার ইহাকে পিরিত বলে। সিংহলীদের এইরূপ বিশ্বাস অছে যে, মানব জাতির যাবতীর হুঃথ দৈত্য-বিশেষের কোপ হইতে উৎপর হয় এবং সেই জোধ-শান্তির উদ্দেশে এই উৎসবের অফুষ্ঠান হইয়া থাকে। ইহাতেও উল্লিখিতরূপ বনপাঠ হয়। বালালা দেশের বৈষ্ণবদের অইপ্রহরী, চব্বিশগ্রহরী প্রভৃতির ন্যায় সাত দিন অবিচ্ছেদে ঐ বনপাঠ চলিতে থাকে। হুই হুইটি ভিক্সু পর্যায়ক্তমে হুই ঘণ্টাকাল পাঠ করে। এই ক্রিয়াটি রাত্রিকালে অফুষ্ঠিত হয়। প্রদোষ কালে শ্রোভৃগণ সেই স্থানে আগমন করে; ভাহার মধ্যে স্ত্রীলোকই অধিক। ভাহারা প্রভোকে

[•] The pilgrimage of Fa Hian, 1848, pp. 44-95.

[†] Hardy's Eastern Monachism, pp. 232-234.

এক একটি তৈল-পূর্ণ নারিকেল মালা লইয়া আইলে এবং বিহারের চতুর্দিকের প্রাচীরে সেই সমস্ত মালা সংস্থাপিত করিয়া দীপ জালাইয়া দেয়। *

ভোট দেশে তিনটি উৎসব প্রচলিত আছে। একটি গ্রীমারন্তে, অপর একটি শরতের প্রারন্তে এবং ভৃতীয়টি শীতান্তে সম্পন্ন হয়। প্রথমটি শাক্য মূনির জন্ম-গ্রহণের স্মরণ স্চক। তিনি ছয়টি পাষপ্তকে পরাভব করেন ইহারই স্মরণার্থ ভৃতীয়টি অমুষ্ঠিত হইয়া থাকে। এক পক্ষ ব্যাপিরা ইহার অমুষ্ঠান হয় এবং সেসময়ে নৃত্য, গীত, ভোজন, দীপদানাদি নানাবিধ অমোদ-আফ্রাদ-ব্যাপার চলিতে থাকে।

হিন্দুমতামুযায়ী সিদ্ধ যোগীরা যেমন অণিমা, লঘিমা, ব্যাপ্তি প্রভৃতি আট প্রকার ঐশ্বর্যা লাভ করেন লিখিত আছে † , সেইরূপ, বৌদ্ধণিরেরও এই প্রকার বিশ্বাস আছে যে, ঐ সম্প্রদার সিদ্ধ ব্যক্তিরা অশেষ রূপ অলৌকিক শক্তি প্রাপ্ত হইরা অতীব অভ্ত কার্য্য সম্পার সম্পাদন করিতে সমর্থ হন; যেমন বায়্-মধ্যে সঞ্চরণ, জলের উপর গমনাগমন, ইচ্ছামুসারে জল-বর্ষণ, নদী ওসমুদ্র স্ক্রন, গৃহস্থিলিত পর্বতে ও পৃথিবী প্রকম্পন, যথন ইচ্ছা বায়্-প্রবাহ উৎপাদন, বায়ুর ন্যার ক্রতবেগে গমন, প্রাচীর ও অন্য অন্য কঠিন দ্রব্যের মধ্য দিরা সঞ্চরণ, পর্বত ও পৃথিবীর গর্ভ-দর্শন, নষ্ট বা গুপ্ত বিষয় উদ্ধার করণ, শ্বর্গ হইতে অগ্নিধারা আনয়নইত্যাদি। বৌদ্ধদিগের এইরূপ সংস্কার আছে যে, সাধন সিদ্ধ প্রত্যেক ভিক্ষ্ আপনার এক শরীরকে অনেক করিতে পারেন, নিজ দেহের সর্বস্থান হইতেই জল ও ধুম-রাশি নির্গত করিতে পারেন, কান্ঠ কার্পাস ও অন্য আন্য দাহাপদার্থ সংগ্রহ করিয়া ইচ্ছাবলে দগ্ধ করিতে পারেন, এমন একরূপ জ্যোভিঃপদার্থ উৎপাদন করিতে সমর্থ হন যে, তদ্ধারা দিব্য চক্ষুর ন্যায় সকল স্থানই অবলোকন করিতে পারেন এবং মুমূর্য্ কালে অগ্নি-সংযোগ ব্যভিরেকে নিজ শরীর দ্ব্য করিতে পারেন। ‡

^{*} Hardy's Eastern Monachism. pp. 240-242.

⁺ देनवानि मञ्जनात्र "वागी"।

¹ Hardy's Eastern Monachism, pp. 260-261.

বে অধুনাতন পাশ্চাত্য যোগি-সম্প্রদায়ীরা এখন থিয়দোফিস্ট (Theosophist) বলিয়া বিধ্যাত হইরাত্নে, তাহারা বৌদ্ধমতের অনুগামী শুনিতে পাই। তাঁহাদের সম্প্রদায়-বামীর নাম

বে সাধনা ধারা এই সমন্ত সম্পন্ন হয় লিখিত আছে, ভাহার নাম কসিন। কসিন-সাধনার এক এক করিরা জল, বায়ু, মৃত্তিকা প্রভৃতির গুণাগুণ বিচার পূর্বক বাহ্য ও শরীরস্থ জল, বায়ু প্রভৃতিকে অনিত্য ও পরিবর্তনীয় বলিয়া দ্বির করা হয় *। একাগ্রচিত্ত হইয়া সেই সমন্ত অনিত্যত্ব-ভাবাদি পুন: পুন: চিন্তা করিবে। করিতে করিতে, ভাহা মনোমধ্যে নিভান্ত পরিক্ষুট হইয়া প্রকাশ পাইবে। পাইলে, মনের বেরপ অবস্থা উৎপন্ন হয়, ভাহাকে নিমিন্ত বলে। নিমিন্ত মানসিক জ্যোভিঃশ্বরূপ। ইহা অভি ছল ভ পদার্থ। নিমিন্ত সম্পূর্ণ হইলে ভাহাকে প্রভিভাগ নিমিন্ত বলে। সমাধি ইহার উত্তরীয় অবস্থা। সমাধি সম্পূর্ণ হইলে ভাহাকে অর্পা-সমাধি বলে। সে অবস্থায় চিত্তবৃত্তি সম্দায় নিক্ষপ দীপ-শিধার ন্যায় নিশ্চল থাকে। ইহার সহিত ধ্যানের নৈকট্য-সম্বন্ধ। গোতম বৃদ্ধ বে সমগ্র চারি প্রকার ধ্যানের অমুষ্ঠান করেন, ভাহার বিতীয় ধ্যানটি সমাধি-জাত বলিয়া লিখিত আছে।

एकोतिभावादवितर्कमविचार' ममाधिज' प्रौतिसुख' दितौयं ध्यानसुपसम्पद्र विदर्शतिसा ।

ननि उविखत्र। २२ व्यथात्र।

বৌদ্ধ মতে, ধ্যান পরম পদার্থ; ধ্যান দারাই নির্ব্ধাণ লাভ হয় একথা পূর্ব্বেই লিখিত হইরাছে। বৌদ্ধেরা হিন্দুদের ন্যায় দেবলোক ব্রহ্মলোকাদির অন্তিত্ব অঙ্গীকার করেন। ধ্যানস্থ ভিক্ষুরা ধ্যান-বলে ব্রহ্মলোক গমন করিতে সমর্থ হন এইরূপ লিখিত আছে। †

কুথুমিলাল্। তিনি কথন কাশ্মীরে ও কথন ভোট দেশে অবস্থিতি করেন। শাক্য ও শাক্য-সম্প্রদারী অপ্তান্ত মত-প্রবর্তকেরা কি পরমাঙ্ক পারমার্থিক অগ্নি-ক্রীড়াই প্রদর্শন করিরা গিরা-ছেন! পৃথীচ্ডামণি ইমুরোপ ও আমেরিকা বাদীরাও অনেকে তাহার আকর্ষণী শক্তি ও শুরুতর প্রভাব অতিক্রেম করিতে সমর্থ হইতেছেন না।

⁺ Hardy's Eastern Monachism নামক পুস্তকের এক বিংশ অধ্যায়ে এবিবরের সবিশেষ বৃদ্ধান্ত দেখিতে পাইবে।

বৌদ্ধ ও খুষ্ঠীর সম্প্রদার ভূমওলের অপরাপর সমুদার ধর্মসম্প্রদার অপেকা প্রবদ ও বিস্তৃত। ঐ উভরের প্রত্যেকে যত সংখ্যক লোক বিনিবিষ্ট আছে, জন্য কোন সম্প্রদায়েই তত নাই। এই উভয়ের ইতিবৃত্ত পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে, অনেক বিষয়েই সৌসাদৃশ্য দেখিতে পাওয়া বায়। বৌদ্ধমতে ও ঈশুর উপদেশে দান, দয়া, ক্ষমা, সভ্যাদি স্বাভাবিক ধর্ম্মের প্রাধান্য, এক এক প্রকার ত্রিমূর্ত্তি স্বীকার গুরুসন্নিধানে আত্ম-পাপ অঙ্গীকার, কি ব্রাহ্মণ, কি শুদ্র কি মেচ্ছ সকলকেই ধর্মোপদেশ প্রদান, ধর্মামুষ্ঠান ও তদীয় ফল-ভোগে স্ত্রী প্রক্রম উভয়েরই সমান অধিকার, সন্নাসী ও সন্নাসিনী সম্প্রদায় প্রবর্ত্তন, ঘণ্টা ও অপ-माला वावहात. निक निक (प्रवालस्त्र मीशमान, लावानामि पाहा शक्तकवा अमान, ধর্ম-সঙ্গীত গান, কি খদেশ, কি বিদেশ সর্বতি ধর্ম-প্রচারক প্রেরণ ইত্যাদি অনেকগুলি বিষয়ে বৌদ্ধ ও খুষ্টার ধর্ম * উভয়ের সাতিশর সাদৃশ্র দৃষ্ট হইতেছে। বৌদ্ধর্ম্ম প্রাচীন: খৃষ্ঠীয় ধর্ম তদপেক্ষা অনেক অপ্রাচীন। যদি গুরুশিষ্য সম্বন্ধাধীন ঐক্লপ সৌসাদৃশ্য সংঘটিত হইয়া থাকে † তবে বৌদ্ধকৈ শুক্ ও খুষ্টীরধর্মকে শিষ্য বলিয়া স্বীকার করিতে হর। বিশেষতঃ যথন বৌদ্ধর্ম প্রচারকেরা বছ পুর্বে, এমন কি,বোধ হয় খুঙান্ধ-প্রবর্তনের হুই শতান্দীর পুর্বেও আসিয়া থণ্ডের পশ্চিম প্রান্ত পর্য্যন্ত গমন করেন এরূপ অবধারিত হইয়াছে, তথন উল্লিখিত অভিপ্রায়ই সম্ভব ও সঙ্গত বোধ হয়।

"So numerous and surprising are the analogies and coincidences, that Mrs. Speir, in her book on Life in Ancient India, 'could almost imagine that before God planted Christianity upon earth, he took a branch form the luxuriant tree, and threw it down to India."—Chambers's Encyclopædia, 1880, Vol., 11., p. 409.

একটি খুষ্টান বিশপ লিখিয়া গিয়াছেন,---

"The Christian system and the Buddhistic one, though dif-

এস্থলে খৃতীর সম্প্রদারের যে সম্প্র ধর্ম-কর্ম ও আচার-বাবহারের বিষয় লিখিত হইল,
 তাহার অধিকাংশ রোমেন্ কেথলিক সম্প্রদারেই প্রচলিত।

[†] অর্থাৎ এক সম্প্রদায়ের কার্য্যানুষ্ঠান দেখিরা যদি অস্ত সম্প্রদারীরা ভাহার অনুকরণ করিরা থাকে।

fering from each other in their respective objects and ends as much as truth from error, have, it must be confessed, many striking features of an astonishing resemblance. There are many moral precepts equally commanded and enforced in common by both creeds. It will not be considered rash to assert that most of the moral truths prescribed by the gospel are to be met with in Buddhistic scriptures." "In reading the particulars of the life of the last Budha Gautamma, it is impossible not to feel reminded of many circumstances relating to our Saviour's life, such as it has been sketched by the Evangelists." "It may be said in favour of Buddhism," he writes (p. viii), "that no philosophico-religious system has ever upheld, to an equal degree, the notions of a saviour and deliverer, and the necessity of his mission for procuring the salvation, in a Buddhist sense, of man."*

লাবুলে ও লি এব্রেথ ট্ নামে ছইটি ফরাশী ও সংর্দ্ধন্ পণ্ডিতের অন্তুসন্ধানক্রমে একটি বড় অপূর্ব্ব গুপ্ত কথা বাক্ত হইয়া পড়িয়াছে। রোমেন কেথলিক্ নামক খৃষ্টীয় সম্প্রদায়ীরা একটি সাধু জনকে স্বসম্প্রদায়ী সিদ্ধ পুরুষ (অথবা নরদেবতা) জ্ঞান পূর্ব্বক ভক্তি শ্রদ্ধা করিয়া আসিতেছেন। অবশেষে নির্দ্ধাত হইল, তিনি বৌদ্ধানির বোধিসব অর্থাৎ স্বন্ধং বৃদ্ধদেব বই আর কেহই নয়। এই খৃষ্টানেরা তাঁহাকে স্বসম্প্রদায়ী স্বর্গ-ভোগী সিদ্ধগণের মধ্যে পরিগণিত করিয়া লইয়াছেন। এই সম্প্রদায়ের মতে, ঐ সিদ্ধ পুরুষের নাম জোসকট্। প্রথমে ফরাসী লাবুলে, পরে জর্মেন্ লিএবরেপ ট্ ভদনস্কর ইংলগু-বাসী বীল্ নিজ নিজ ভাষায় এবিষয়ট প্রতিপাদন করেন। ম, মূলর ইহার সবিশেষ বিবরণ সংগ্রহ করিয়া প্রচার করিয়া-ছেন †। এই কৌজুকাবহ বিষয়ট পাঠকগণের হৃদয়ক্রম করিয়া দিবার উদ্দেশে, এস্থলে ইহার ভাৎপর্যার্থ সংক্ষেপে সংক্রিত হইতেছে।

^{*} Bishop Bigandet's Life and Legend of Gaudama, the Buddha of the Burmese' quoted in Max Muller's Introduction to Buddhaghosha's parables translated by Captain T. Rogers, pp XXV and XXVI.

⁺ Chips from a German workshop by Max Muller, Vol, IV.pp. 176-189.

দমস্ক নিবাসী জোঅরস্ নামে একটি গ্রাক্ গ্রন্থকার বার্গাম ও জোঅসম্ নামে ছই ব্যক্তির বিষয়ক এক খানি উপাধ্যান-গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। সে উপা-খানটি বৃদ্ধ-চরিতের অমুদ্ধপ। বৃদ্ধ একটি রাজপুত্র। তিনি ভূমিষ্ঠ হইলে পর, অসিত নামে এক জ্যোতির্বিদ গণনা করিয়া বলেন, রাজপুত্র মহামহিমান্তিত হইবেন। হয়, ভূমগুলের চক্রবন্তী রাজা, নয়, সম্যাস-ধর্ম অবলম্বন পূর্ব্বক লোক শ্রেষ্ঠ বৃদ্ধ হইবেন। রাজা শ্রবণ করিয়া উদ্বিগ্ন হইলেন এবং রাজকুমারের কিছু বয়োবৃদ্ধি হইলে, তাঁহার সন্ন্যাস-গ্রহণ নিবারণ-উদ্দেশে, নানাবিধ হৃৎ-সজ্ঞোগ-সামগ্রীতে পরিপূর্ণ একটি প্রাসাদ মধ্যে তাঁহাকে রুদ্ধ করিয়া রাখিলেন। কিছু দিন পরে রাজকুমার বহির্গমনের অনুমতি পান এবং বার্থার রথারোহণ পূর্ব্বক এক দিন একটি পীড়িত, অপর এক দিবদ একটি বরাগ্রস্ত এবং তৃতীয় দিনে শোকার্স্ত বন্ধু বান্ধবগণে পরিবেষ্টিত একটি মৃত ব্যক্তিকে দর্শন করেন ও তদ্বারা সংসারে রোগ শোক-জরা-মৃত্যুর প্রাহর্ভাব এবং পশ্চাৎ ভিক্সুগণের শাস্ত ও স্বচ্ছন্দ ভাব অবলোকন করিয়া ভিক্ষাপ্রম-অবলম্বনে অমুরক্ত হন 🛊 । জোসফটের বৃত্তান্তও অৰিকল এইরূপ। বৃদ্ধের ন্যায় তিনিও রাজপুত্র। তাঁহার জন্ম গ্রহণ হইলে, একটি জ্যোতির্বিদ গণনা করিয়া বলেন জোদফট মহত্তর মহিমা লাভ করিবেন। সে মহিমা নিজ রাজ্যে নয়, ভাহাউচ্চতর ও উৎকৃষ্টতর সাম্রাক্ষ্য মধ্যে পরিব্যাপ্ত হটবে। বস্তুত: তিনি এষ্টীয় সম্প্রদায়ের অভিনব নিগৃহীত ধর্ম অবলম্বন করিবেন। এই বিষয়ের প্রতিবিধানার্থ অশেষরূপ উপারাবলম্বন করা হয়। তাঁহাকে সকল প্রকার স্থদ সামগ্রী-পরিপূর্ণ একটি প্রাসাদ মধ্যে রক্ষা করা হইল এবং তিনি যাহাতে রোগ-শোক-জরা-মৃত্যুর বিষয় কিছুমাত্র অবগত হইতে না পারেন, তদর্থ যথোচিত যত্ন করা হইল। কিছুকাল পরে, তাঁহার পিতা তাঁহাকে গৃহ-বহিভুতি হইতে আদেশ দেন। তিনি রথারোহণ পূর্বক এক দিবস একটি আদ্ধ ও অপর দিবস একটি ধঞ্জকে দুর্শন করেন। অপর এক দিন ঐ রূপে বছির্গত হট্মা একটি জরাজীর্ণ বৃদ্ধ ব্যক্তিকে দেখিতে পান; তাহার অঙ্গ গলিত, কেশ পলিত দস্ত স্থালিত এবং পদবুগল কম্পিত। তিনি এই সমস্ত দর্শন পূর্ব্বক বিষণ্ণ মনে গুহে প্রত্যাগমন করিয়া মৃত্যুর বিষয় চিস্তা করিভেছেন এমন সময়ে একটি সয়াাসী

^{*} ननिखिविद्यतः। १ कशोद्रः। (১२७ ७ ১२१ शृक्षे हेलापि)।

তাঁহার সমীপে উপস্থিত হইয়া ঈশু-প্রচারিত উচ্চতম কৃপ সম্পত্তির আশার বিষয় উপদেশ দেন। এই সমস্ত ব্যতিরেকেও, অন্তমদ্ধান করিয়া দেখিলে, বৃদ্ধ ও জোসফটের অন্য অন্ত বিষয়েরও স্থল্লর সাদৃশ্য দৃষ্ট হইয়া থাকে। উভরেই পরিশেষে নিম্বা নিম্বা পিতাকে অধর্মে প্রবর্তিত করেন এবং উভরেই মৃত্যুর পূর্কে বৃদ্ধ বা সেন্ট বলিয়া পরিগণিত হন।

বুদ্ধদেব কপিলবস্তুর মধ্যে যে যে স্থানে রথারোহণ করিয়া প্রমন করেন, তথার এক একটি স্তম্ভ নিশ্মত হয়। ফাহিয়ন খুষ্টাব্দের পঞ্চম শতাব্দীর প্রারম্ভে ও হিউ এন থ্রক্ষ সপ্তম শতাকীর প্রথমার্দ্ধে সেই স্তম্ভগুলি দৃষ্টি করিয়া যান। কিন্ত উল্লিখিত গ্রীক্ গ্রন্থকার জোঅরণ্ আরবদ্রাট্ অল্মন্মরের একটি প্রধান অমাত্য ছিলেন, আৰু ন্যুনাধিক ৭২৬ খ্রীষ্টাব্দে লিও ইস্বিক্স + নামক রুম 🕆 সমাটের স্থির-প্রতিজ্ঞ প্রতিপক্ষ বলিয়া বিখ্যাত হন। স্থতরাং ফাহিয়নের ন্যুনা-ধিক ৩০০ তিন শত ৠৎসর পরে বিদ্যমান ছিলেন বলিতে হয়। ললিতবিস্তর নামক যে সংস্কৃত গ্রন্থে বুদ্ধদেবের উল্লিখিত চ্রিত-বুত্তাস্ত বর্ণিত আছে, তাহাতো জোজন্মদের গ্রন্থ অপেক্ষার বিশুর প্রাচীন। অতএব তিনিই যে ভারতবর্ষীর বুদ্ধ-চরিতের অমুকরণ বা অমুবাদ করিয়া উক্ত উপাখ্যান রচনা করেন, ইহাতে সন্দেহ নাই। গ্রন্থকার নিজেই স্বীকার করিয়াছেন, আমি ভারতবর্ষ হইতে প্রত্যাগত লোকদিগের মুধে এই উপাধ্যান শ্রবণ করিয়াছি। শ্রীমান, ম, মুলর বিবেচনা করেন, লশিভবিশুর হইতেও উহার অনেক স্থল রচিত হওয়া সম্ভব। বৃদ্ধ ও **জোসফ**ট যে প্রাচীন ব্যক্তিকে দর্শন করেন, গ্রাক ও সংস্কৃত উভয় গ্রন্থে তা**হাকে** ক্ষুক গুলি বিশেষণে বিশেষত করা হইয়াছে। সেই বিশেষণ গুলির সাতিশর সাদৃশ্য দেখিতে পাওয়া যায়।

তিনি আদিয়ার অন্তর্গত তুর্কী রাজ্যের মধ্যে টরল্ পর্বতের নিকটবর্জী ইসরিয়া দেশে জন্ম গ্রহণ করেন। এই নিমিত্ত তাহার উপাধি ইসরিকস্ হয়। ইসরিয়াটি সেই দেশের প্রাচীন নাম।
 উহা সিলিশিয়ার পশ্চিমাংশে অবস্থিত ছিল।

[†] কনশ্টেন্টিনোপল্ (Constantinople) ইহার বর্ত্তমান নাম শুম্বোল্। ইহা রোমক রাজ্যের পূর্ব্ব ভাগের রাজধানী ছিল। পূর্ব্বে নবরোম বলিরাও উল্লিখিত হইত।

[‡] কেল, ডিয়া প্রভৃতি পূর্বদেশ-প্রচলিত চন্দ্র, সূর্য্য নক্ষত্র এই সমস্ত জ্যোভিক্ষের উপাসনা। পান্দাৎ মিশর্ ও গ্রীদেও এই ধর্ম প্রচারিত হয় i—The faith of the world, Vol II. 1881, Sabians.

নামক আরবীর গ্রন্থের রচরিতা বৌদ্ধর্ম-প্রবর্তকের নাম যুজসক্ বলিরা উল্লেখ করিরাছেন। রিনো নামক স্থবিধ্যাত করাসী পণ্ডিত প্রদর্শন করিরাছেন, ঐ ছইটি নাম পাসী বৃদ্সংক্ অর্থাৎ সংস্কৃত বোধিসন্থ শন্ত্বের অপভংশ *। শাক্যান্মনি ললিতবিস্তরের মধ্যে বারম্বার বোধিসন্থ বলিরা উল্লিখিত হইরাছেন। শ্রীমান্ম, মূলর্ রিনোর এই কথার অন্থমোদন করিরাছেন এবং শ্রীমান্ বেবের্ বিবেচনা করেন, ঐ করাসী পণ্ডিতের এই স্থকৌশল-সম্পন্ন অভিপ্রারই উপস্থিত বিষয় অর্থাৎ ক্লোকট্ ও বৃদ্ধ দেবের অভেদ- প্রতিপাদনের মূল স্ত্র। †

রোমেন্ কেথলিক্ সম্প্রদায়ীয় ঐ জোসফট্কে অর্থাৎ ভারতবর্ষীয় বৃদ্ধ দেবকে আপনাদের একটি সেন্ট বলিয়। পরিগণিত করিয়া লন। তাঁহাদের প্রাচ্য সম্প্রদায়ে ২৬এ আগষ্ট ও পাশ্চাত্য সম্প্রদায়ে ২৭এ নবেম্বর তাঁহার মৃত্যু-দিন বলিয়া পালিত হইয়া থাকে। তাঁহার এই উপাখান এক সময়ে ইয়য়েপ, আসিয়া এবং আফ্রিকারও মধ্যে মহাসমাদর সহকারে পরিগৃহীত হয়। ইহা আরবী, আমানী হিক্রে, ইথিয়োলিক্, লাটিন্, ফরাসী, ইটালীয়, জয়ের্মন্, ইংরেজী, স্পেনিশ পোলিশ্ ও আইস্লাগুক্ ভাষায় এবং ফিলিপাইন্ নামক শ্বীপ সম্হের প্রাচীন ভাষায় অমুবাদিত হয়। অতএব অবনিমগুলে বুদ্ধের মহিমা যেমন ব্যক্ত ভাবে, সেইরপ অবক্ত ভাবেও পরিবাধ্য হইয়া যায়।

ইন্দ্র, চন্দ্র, বরুণাদি হিন্দু-শাস্ত্রোক্ত দেবতাগণের অন্তিছে বিখাস, শুভাশুভ কর্মাত্রদারে অশেষ প্রকার যোনি ত্রমণ, ভিন্ন ভিন্ন স্বর্গ নরকের সন্তা-স্বীকার ও পাপ-পুণার পরিমাণামুসারে তাহাতে অধিবাস করিয়া স্থুপ হঃখ-ভোগ, বুদ্ধ-বিশে-বের কাশুপ,খেতকেতু প্রভৃতি বেদোক্ত সংজ্ঞাধারণ ইত্যাদি বৌদ্ধ-মত ও বৌদ্ধ-কথা সমুদার পর্য্যালোচনা করিয়া দেখিলে, এই ধর্মটি হিন্দু-সমাজ হইতে বিনিঃস্ত হইন্যাছে বিনিয়া স্বতই প্রতীয়মান হইয়া উঠে। কপিল ও বুদ্ধ উভরেই নান্তিকভাবাদী। বৌদ্ধ ও সাঙ্খ্য উভয় মতেই, সংসার নিরবচ্ছির হঃখময়। সেই হঃখ হইতে জীবের পরিত্রাণ-সাধন চেষ্টা ঐ উভয় মত-প্রবর্ত্তনেরই মূল স্ব্র। এই ছইটি বিবরে উভর মতের সম্পূর্ণ ঐক্য দেখিরা, অনেকে বৌদ্ধ-ধর্ম সাঙ্খ্য-মত হইতে উৎপন্ন বিবেচনা

^{*} Memoire Sur I' Inde, par Reinaud p. 91.

⁺ Weber's History of Indian Literature. p. 307.

করেন। বুদ্ধের জন্ম-স্থানের নাম কপিলবন্ত। বুদ্ধের মাতার নাম মারা। * এ ছইটিও সাজ্যা-মতের পরিচায়ক। একটি সাজ্যা-গুরুর নাম পঞ্চশিথ; বৌদ্ধ-প্রস্থে তাঁহাকে গন্ধর্ম বিলিয়া বর্ণন করা হইরাছে। বৌদ্ধদের এইরূপ একটি উপাধ্যান আছে যে, বুদ্ধ পূর্ব্ম জন্মে কপিল ছিলেন। শাক্ষ্য-বংশীয় নূপতিরা আপনাদের নগর-নির্দ্মাণের স্থান নিরূপণ করিছে গিয়া কপিল ঋষির কুটীর দর্শন ও তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করেন। করিলে পর, তিনি তাঁহাদিগকে একটি স্থান নির্দ্দেশ করিয়া দিলেন। সেই স্থানে নগর নির্দ্মিত হইলে, কপিলের নামামুসারে তাহার নাম কপিলবল্প হইল †। এই উপাধ্যানে সাজ্যা-মত-প্রবর্ত্তকের সহিত বৌদ্ধ-মত-প্রবর্ত্তকের বিশেষ রূপ সম্বন্ধ লক্ষিত হইতেছে। সে যাহা হউক, ভিন্ন ভিন্ন ধর্মাবলন্ধী লোকে এক স্থানে অবস্থিত হইলে, এক ধর্মাবলন্ধী ব্যক্তিরা অন্যধর্মের অস্থান করে ইহার কিছু কিছু উদাহরণ প্রস্কাধীন পূর্ব্বে প্রদর্শিত হইয়াছে ‡। এদেশে সে বিষয়ের প্রমাণের অসন্তাব নাই। হিন্দুরা যে মোসল্মান্ পীরের নিকট মান্সিক করে এবং শীনি ও উপহার প্রদান করিয়া থাকে ইহা কাহারও অবিদিত নাই। মোসল্মানেরাও সেইরূপ সভ্র চিত্তে হিন্দুদ্বের শীতলাদি দেবতার পূজা দিয়া থাকে গা । পূর্ব্ম কালে হিন্দু ও বৌদ্ধ-

মারা ও প্রকৃতি এক পর্যায়ের শব্দ, কিন্তু মারাটি বৈদান্তিকদিগের মধ্যেই অধিক প্রচলিত।

[†] Buddhaghosha's Parables translated by Captain T. Rogers, 1870 p. 176 and Chips from a German Workshop by Max Muller, vol, I., p. 227 † উপক্রমণিকা। ২১১ ও ২২১ পৃষ্ঠা।

শ্ব পশ্চিমোন্তর অঞ্চলে মোদল্মানের মহরমের সময়ে হিন্দুরা পূর্ব-কৃত মানসিক অমুসারে ফকির হয়, ভিন্তি হয় ও মোদল্মান-ধর্মোচিত অস্ত অক্ত প্রকার অমুষ্ঠান করে এ কথা পূর্বের এক বার উদ্লিখিত ইইয়াছে। ঐ প্রদেশের কোন কোন হানে এক এক জাগ্রং পীরের আন্তানা আছে; হিন্দুরা তথায় আপনাদের ধর্মক্ষেত্রের স্থায় বাবহার করিয়া থাকে। অযোধ্যা প্রদেশের অন্তাত বেরাইচ্ নগরে সৈদ্ দেলার্ নামে একটি পীরের হান আছে; তথায় প্রতি বংসর প্রীম্মকালে বহু দিন ব্যাপিয়া একটি মেলা হয়। হিন্দু মোদলমান্ উভর জাতীয় লোকে স্থণীর্ঘ রঞ্জিত ধ্বজা লইয়া সৈদ্ দেলারের সমাধিক্ষেত্রে আগমন করে। দ্র দুরান্তর ইইতে লোক-সমাগম হায়া ঐ সময়ে তথায় লোকারণা হয় এবং ঐ উভয় ধর্মাবলখীদিগেরই প্রদন্ত বাতাসা, কল্মা, রেউড়ি, মিছরির বাতাসা প্রভৃতি মিষ্টায় ও আতর, গোলাব, বয়্ব প্রভৃতি স্থাছুর মানসিক সামগ্রীতে সেই পীর সাহেবের বহুবিত্ত আন্তানা-ভূমি পরিপূর্ণ ইইয়া বায়। বাজালা, দেশেও এবিবরের দৃষ্টাজ্যের অসভাব নাই। মুরশিদাবাদ অঞ্চলের কি ব্রাহ্মণ কি শুল সকল প্রকার জাতীয় হিন্দুদের মধ্যেই এইয়প একটি প্রথা প্রচলিত আছে যে, কাহায় পুত্র বা পুত্র সম প্রিয় পাত্র পীতিত হইলে, মহরমের

সম্প্রদারেরও পরস্পর এইরূপ অন্ধকরণ ও উপদেশ গ্রহণ সংঘটিত হর। হিন্দু দিপের বে ধর্ম-প্রণালী সর্বাপেকা আধুনিক, নেপালীর বৌদ্ধেরা সেই তান্ত্রিক-পদ্ধতিকে নিজ ধর্মধ্যে পরিগৃহীত করিয়াছেন। ইহারা শিব, শক্তি, গণেশ,কুমার, ভৈরব, হনুমান, কন্ত্র, মহাকল, মহাকাল, মহাকালী, অঞ্জিতা, অপরাজিতা

সমরে ''বধি'' ধারণ করাইবার মানসিক করে এবং সেই সময়ে তাহার গলদেশে যথানিয়মে ''বধি'' পরাইরা দের । আরোগা লাভ হইলে পর, তদর্থ পূজা দের এবং পূজা দিবার সময়ে অনেকে মানসিক-করা কুজুটেরও মূল্য দিরা থাকে। পূর্ব্বে ঐ অঞ্চলের কানীমবাজার প্রভৃতির ভূষামীরা নিজে স্থান দিরা পীরের আন্তানা প্রস্তুত করিয়া দেন এবং মহরমের সময়ে যথোচিত আমুকুলাও করিয়া আইসেন। কেবল আমুকুলা নয়; পূরুষামুক্রমে ঐ সময়ে গলদেশে ''বধি'' ধারণ পূর্ব্বেক মূদলমান-ধর্মের নিয়মামুদারে মৎদা-ভোজন ও গাত্তে তৈল-মর্দ্দন পরিবর্জ্জন করিয়া আদিরাছেন। মেদিনীপুর অঞ্চলের হিন্দু ভূষামীরাও যক্ষপূর্ব্বেক গোঁয়ারার বায় নির্বাহ করিয়া থাকেন। ঐ জেলার অন্তর্গত মৈনান গ্রামে একটি পীরের আন্তানা আছে; হিন্দু মোদল্মান্ উভন্ন জাতীর বিত্তর লোক আরোগ্য-কামনায় তথায় উপস্থিত হয়। হইলে ঐ পীরের ফকির পীড়িত ব্যাক্তির অক্তা-বিশেষ অগ্নি ঘারা দেয় করিয়া দাগ দেয়, পশ্চাৎ তাহার হস্তে পীরের প্রদানী কিঞ্চিৎ শুড় অর্পণ করে এবং অবশেবে ''তুমি আরোগী হইলে'' এই কথা উচ্চারণ পূর্ব্বক গৃহমার্ক্তনী বারা তাহাকে প্রহার করিয়া বিদার করে। ঐ জেলার গোপালপুর গ্রামে হাউড়া পীর নামে আর একটি পীরের স্থান আছে; হিন্দুরা আপনাদিগের প্রতিপর্ব্বাহে নানাপ্রকার উপকরণ-দ্রব্য সম্বলিত জাতপ তঞ্ল দিয়া তাহার প্রসা দিয়া থাকে।

হিন্দু সমাজে প্রচলিত সত্যনারায়ণের শীর্নি এবিষয়ের একটি প্রধান উদাহরণ হল। ইহাকে
সত্যপীরের শীর্নিও বলে। সত্যটি সংস্কৃত এবং পীর ও শীর্নি পার্সী-শন্ধ। ঐ ফ্রেয়াতে তরবার
বাঘহার এবং শীর্নি, পীর, মোকাম প্রভৃতি পার্সী-শন্ধ-প্রয়োগে উহা পার্সী ও উর্দ্দু ভাষী মোসল্মান্দের ধর্ম্ম-নুলক বলিয়া পরিচয় দিতেছে। বস্তুতঃ হিন্দুদের এই ধর্ম কর্মান্ট ভারতবর্ষীয় মোসল্মান্রাজত্ব ও মোসল্মান্-ধর্ম-প্রতাপের অনপনের পরিচারক চিহ্নু বই আর কিছুই নয়

এই অঞ্চলে হিন্দু সমাজে শাফরিদের মালার বেরূপ মহিমা তাহা প্রসিদ্ধই আছে। অনেকহিন্দুতে রোগ-নিবারণ উদ্দেশে বেলুড় ও স্থচরের শাফরিদের মালা-ধারণ ও কুরুট পর্যান্ত মানসিক
করিরা থাকে। আমার পরিচিত একটি হিন্দু গৃহত্বের ক্যা শিরোদেশে কুরুট বহন পূর্বক ঐ
গীরের নিকট দিরা আসিরাছে। থোদার নৃর্ ও গীরের নৃর্ ও সেইরূপ †। একটি শিশুর শিরোদেশে এরূপ কেশ-শুদ্ধ দেখিরা, কোন পরিহাস-প্রির স্ববন্তা পুরুষ তাহার পিতাকে জিজ্ঞানা
করেন, উটি কি ? তানীর পিতা বলেন, উটি পীরের নৃর্। ইহা শ্রবণ করিরা সেই শুদ্ধ লোকটি
বলিলেন তেত্রিশ কোটিতেও ই তোমার তৃত্তি-লাভ হইল না ? তাহার উপর আবার পীরের নৃর্ ?
বাসালা দেশের মধ্যে হগলির সৈণ্টাদ, কলিকাতার শা স্কুর্ম, ত্রিবেশীর দফ্রা গান্ধি হাবড়া জেলার
অন্তঃপাতী কতে আলি গ্রামের কতে আলি, বারাশত জেলার অন্তর্গত বালেণ্ডা গ্রামের গোরাটাদ

[•] বধি একপ্রকার হত্ত্র; মহরমের সমর মোসল্মানেরা ধারণ করে।

[†] রোগ শান্তির উদ্দেশে কোন পীরের নিকট মানসিক করিরা মন্তকে যে কেশ-শুচ্ছ রাধা হর, ভাহাকেই নূর্বলো।

[‡] অধীৎ হিন্দুশান্ত্ৰোক্ত তেত্ৰিশ কোটি দেবভাতে।

উমা, জরা, চণ্ডা, পজাহন্তা, ত্রিদশেশরী, বপালিনী, ইন্দ্রী, কামোজিনী, ঘোরী, ঘোররপা, মহারপা, কপালমালা, মালিনী, ঘটালা, পরশুহন্তা, বজ্রহন্তা, যোগিনী, মাতৃকা, পঞ্চাকিনী, যক্ষ, গন্ধর্ম, গ্রহদেবতা, ভূত, গিশাচ, দৈত্য প্রভৃতি ভল্লোক্ত দেবদেবীকে অসম্প্রদায়ে গ্রহণ করিয়াছেন। কেবল ভল্লোক্ত দেবাদি গ্রহণ করিয়ানিরস্ত হন নাই, ভাস্ত্রিক মতামুর্কপ মন্ত্র সমুদায়ও রচনা করিয়াছেন এবং ভন্মধ্যে

ইত্যাদি অনেক স্থানে অনেক জাগ্রৎ পীরের আন্তানা আছে; হিন্দু-মন্ডলীর প্রণন্ত উপহারে তাহাদের (অর্থাৎ ভাগীর ফকিরণের) দেহ-পৃষ্টি চইরা থাকে। উদ্ধিবিত ফতে আলি গ্রামে পৌষ মাসের
সংক্রান্তির সমন্ন বর্ধে বর্ধে সপ্তান্ত ঐ পীরের একটি মেলা ইর। ফতে আলির নিকটে একটি বড়
পুক্রিণী আছে। হিন্দু ও মোসল মান উভর জাতীর গ্রীলোকই পুক্র-কামনায় ঐ মেলার সমরে ও
অন্য অনা সময়েও বৃক্ষ-পত্তে শীনি-অব্য বাঁধিয়া ঐ পুক্রিণীতে ভাসাইয়া দের। পেঁড়ো ও গরেশপুরের ক পীর-পুক্রিণীতেও এরূপ অমুষ্ঠান হইয়া থাকে। প্রথমোক্ত স্থানে শীনি ক্রব্য কলের উপর
ছড়াইয়া দেওয়া হয়। উদ্লিবিত গোরাচাদের মেলার মহিমা সর্বাপেক্যা অধিক। ১২ইও ১৩ই ফাল্
খলে ঐ মেলা হয়। তাহাতে হিন্দু ও মোসল্মান্-প্রণম্ভ বাভাসা, পাটালি, সন্দেশ, কদ্মা
প্রভৃতি বর্ষণ হইতে থাকে। হিন্দুদের মানসিক-করা কুকুট-বাঞ্জনও তথার উপস্থিত করা হয়।
তাহার। তাহা মোসলমানের দ্বারা রক্ষন ও ভক্তিভাবে পরমপুক্রা গোরাটাদের আন্তানার নিবেদন
করাইয়া দেয়। শেব দিবসে সেই অঞ্চলের হিন্দু গোপদিগের প্রদন্ত হ্র্মরাশিতে ঐ পীরের আন্তানা
প্রাবিত হইয়া যায়।

আমি এখন যে স্থানে অবস্থিতি করিতেছি, তথার এ বিষয়ের বিশেষরূপ অনুষ্ঠান অহরহই দৃষ্টপথে পতিত হইয়া থাকে। বালিগ্রামে দেওয়ান গান্ধি নামে একটি পীরের আন্তানা আছে: মোসলমান অপেক্ষ। হিন্দুদের দানাদির দারাই তাঁহার অর্থাৎ ত্দীর সেবাতের অধিক্তর আফুক্ল্য হয়। হিন্দু ভূষামীর বাজারে দেওরান গাজির ফকির চির্দিন তোলা প্রাপ্ত হইয়া থাকে। এ বাজারের অত্যাধিকারী ভূষামীর পরিবর্তন হইতেছে, কিন্তু দেওয়ান গাঞ্জির তোলার পরিবর্ত্তন হয় না। সমগ্র বৈশাথ মাস ব্যাপিয়া এই গ্রামে একটি উৎসব হয়। বালি ও তদীয় পার্থবতী অন্য অন্য গ্রাম-নিবাসী শত সহত্র স্ত্রীলোকে ঐ মানে প্রতিদিন প্রাতে গঙ্গাজল-পরিপূর্ণ পাত্র লইয়া ও তন্মধ্যে অনেকে দক্ষিণ হত্তে ঘটিও বাম কক্ষে পিত্তল-কলস গ্রহণ ও কেহবা মুৎকলসের উপর ভদীর শিরোভূষণ স্বরূপ পিত্তল-ঘটি সংস্থাপন করিয়া ধর্ম্ম-সাধন ও পূণ্য-সঞ্চয় উদ্দেশে কল্যাণেশ্বর মহাদেবকে জলদান করিতে আইসে। কিন্তু উক্ত প্রভাপান্বিত পারকে সেই জলের কিয়দংশ অর্পণ না করিলে, সে ক্রিয়াট সম্পন্ন হয় না। তাহারা মহাদেবকে কিয়ৎপরিমাণে জল প্রদান করিছা অবশিষ্ট জল পীরের নিমিত্ত রাথিয়া দেয়। দেওরান্ গাজির চত্তরের উপর তাহা দেচন ও সেলামের উপর সেলাম্ বা গললগ্রীকৃত বল্লে ললাট-দেশে কর-ম্পর্ণ করিয়া, অথবা অবনত সন্তকে ভূমিষ্ঠ ৰ্ইরা, ভক্তি-শ্রদ্ধ। সম্বলিত প্রণিপাত সহকারে পরসা কড়ি অর্পণ পূর্বক নিজ নিজ গুহে প্রতিগমন করে। অন্য লোক দূরে থাকুক ঐ শিবের গাজনের সন্ন্যাসীরাও সেই উৎস্বের সম্বে ঐ আন্তানার সম্মধে দখামমান ও উভয় জাতীয় দেবতার প্রতি ভক্তি-মদে মুউত্ত হইয়া, উৎকট ঢকা-রব সহ-

হাবড়া জেলার অন্তর্গত বল্টির নিকটে গয়েশপুর। তথার গয়েশ নাবে এক পীরের আন্তানা আছে।

ওঁ, অঁ,হিং, হঁ, ফট্, স্বাহা প্রভৃতি ভান্তিক পদ ও তান্ত্রিক বীৰ সমিবেশিত করিয়া লইয়াছেন। ক্রিয়াস্থলে তন্ত্রোক্ত যন্ত্রমণ্ডলও অন্ধিত করিবার বিধান করিয়া লইয়াছেন। হিন্দুক্রিয়াতে হিন্দু-দেবতারই মণ্ডল করা হয়। বৌদ্ধ-ক্রিয়াতে বৃদ্ধ-

কারে, চীৎকার পূর্বেক থবা বা লম্বিত কেশ সম্বলিত মন্তক দোলারমান ও ঘূর্ণায়মান করিতে ক্রটি করে না। এ স্থানের রামনবমীর উৎসব একটি লোক-প্রসিদ্ধ বিষয়। ঐ দিবসে হিন্দু-মণ্ডলী কর্ত্তক পর-ধর্ম-যাজন বিষয়ক একটি কৌতৃকাবহ ব্যাপার সম্পন্ন হয়। সে দিবস তাহাদের কর্ত্তক দেওয়ান গাজির সম্ভবাতীত আমুকলা হইয়া থাকে। ঐ দিন পীর সাহেবের সমধিক শোভা ও অঙ্গরাগ সম্পন্ন হয় আন্তানা পরিমার্জিত, বস্তাবরণে আবৃত, তাহাতে বিহুত আসন প্রমারিত এবং সম্মুখে চল্রাতপ লম্বিত হইরা থাকে। উল্লিখিত হিন্দু-পর্ব্বাহে ঐ আন্তানার বেরূপ অঙ্গরাগ इत कि देए, कि भइतम कान स्थानन भान,-भर्तारह राजाश दत्र ना। भनगर्छ क कि क्षीछ-বস্ত্র-পরিবৃত হইয়া গন্ধীর ভাবে উপবেশন করেন। মুঞ্জার পয়সা কড়ি তণ্ড লাদি হিন্দু-মণ্ডলীর ভক্তি নীরে অভিষিক্ত হইরা উপযুগপরি বর্ষণ হইতে থাকে। হিন্দু-দেবতাগণ মর্জ্যলোকে পূজা-গ্রহণ পূর্বেক স্বস্থান প্রস্থান করিবার সময়ে * দেওয়ান গাজির সমকে দণ্ডারমান হইয়া তাঁছাকে সন্মান করিয়া যান। বালিগ্রামের যে অংশে এই পীরের আন্তানা বিদ্যমান রহিয়াছে, ভাহা নানা মতের পরিচায়ক একটি চিহ্নিত স্থানংহইয়া উঠিয়াছে। এক দিকে কল্যাণেশ্বর, অপর দিকে দেওয়ান গালি এবং আমিও তাহার সন্মধ ভাগে কৌতুকনশী স্বরূপে অবস্থিতি পূর্বক হিন্দু ধর্মের জীর্ণ-নিকেতনে মোদল্মান-ধর্ম্মের পাণিগ্রহণ ব্যাপার দর্শন করিয়া কথন কোতৃকাবিষ্ট মনে মুদ্র মুদ্র ছাক্ত করিতে থাকি ও কথন হা বৃদ্ধি। তুমি কোণায় গেলে বলিরা অঞ্জ-সম্বরণে অসমর্থ হইয়া পড়ি।

বাউল, নেড়া ও দর্বেশ নামক বৈঞ্বের। মোদল্মান্ ফকিরদের দৃষ্টে তদ্বি-মালা-বাবহার অবলম্বন করিরাছে। তাহাদের এরপে বচনই আছে যে,

"কেয়া হিন্দু কেয়া মুসল্মান্। মিল্জুণ্কে কর সাঁইজীকা কাম॥"

অনেক ষোদল্মানে হিন্দু-দেবতার নামাদি-বিশিষ্ট ময়ের শক্তি স্বীকার করে এবং নিজে তাহা শিক্ষা করিয়৷ প্রয়োজন-বিশেষে প্রয়োগ করিয়৷ থাকে। কোন কোন মোদলমানের নিকট নিম্ন-লিখিত মন্ত্র কয়েকটি প্রাপ্ত হওয়৷ গিয়াছে। তাহার মন্ত্র-বিশেষে হিন্দু ও মোদলমান উভন্ন দেবতারই নাম ও অমুগ্রহ-প্রার্থনার কথা সন্ধিবিষ্ট আছে।

চোর-বন্ধনের মন্ত্র।

১। মুরগির ডিম কটাদের ডিম, কাজির হাঁড়িয়ে জিওলের ডিম।
দাঁড়িয়ে কোই প্রাম রাখি, বোদে কোই বাড়ি রাখি, ওরে কোই
বর রাখি, কালিকে লাগিল বজের তাল্লা। কার আজা না কালীর
আজা শীভ লাগপে।

বিসর্জ্বন অর্থাৎ প্রতিমা বিসর্জ্জনের দিবসে।

মণ্ডলও অন্ধিত হইরা থাকে। নেপালীর বৌর্গেরা শুক্ল কৃষ্ণ উত্তর পক্ষীর অন্তমী তিথিতে অন্তমী ব্রভ নামে একটি ব্রতের অনুষ্ঠান করেন। তাহাতে প্রথমে বৃদ্ধ,

স্থপ-ভঙ্গের মন্ত্র বা আত্ম-রক্ষার মন্ত্র।

। কোথা গো মা কালি! ওমা চণ্ডি! বালগত রাথ মোরে। আঁচল
দিয়া ছাপাইয়া বদি না রাথ মোরে, আলা মহম্মদের দিবিব লাগে
গো তোমারে।

ভূত-ছাড়াবার মন্ত্র।

ওরেরে থবিশ! তোরে ডাকে ব্রন্ধ-দৃত।
 ও তোর মাতারি, তুই উহারি পুত॥
 কুপি তোরে গিলাইব হারামের হাড়।
 ফংমা বিবির আজা ছাড়, ছাড়, ছাড়॥

পরিশিষ্টে দেখিতে পাইবে, সিক্কু প্রভৃতি পশ্চিম প্রদেশীর খোলারা হিন্দু মোসলমান উভর ধর্ম-প্রণালী অবলম্বন করিয়া চলে।

রোগ ও বিপদ-ভয়ে সকল সম্প্রদারকেই অপরাপর সম্প্রদারের উপাস্ত দেবতার পরাক্রম যীকার করিরা তদীর পদে অবনত হইতে হয়। হিন্দুরা যে অবিচলিত ভক্তি-ভাবে মোসল্মান্দিগের প্রতিষ্ঠিত ওলাবিবির পূজা দেয়, ইহা কাহারও অবিদিত নাই। মোসল্মানেরাও সেই রূপ হিন্দুদিগের শীতলা, মন্সা এবং তারকেখরকেও ব্যক্ত বা গুপ্ত ভাবে পূজা দিয়া থাকে। হগলি-জেলার অন্তর্গত মহানাদ-গ্রামে ঘটেশর নামে একটি শিবের মন্দির আছে; তাহারা রোগ-নিবারণাদি উদ্দেশে মানসিক করিয়া তদীয় পূজারী বারা তাহার পূজা দেয়। মেদিনীপুর জেলার অন্তর্গত তালাও গ্রামে তালাওবাসিনী নামে এক শীতলা-মুর্জি আছে। হিন্দুদিগের জ্ঞার মোসল্মানেরাও আপংকালে ভক্তি-শ্রদ্ধা পূর্বক তাহার স্কুম্পন্ত পূজা দিতে ক্রটি করে না। ছাপরা অঞ্চলের মোসল্মানেরা বিশেষতঃ তদীর জ্ঞীলোকেরা, হট্বরত * নামক স্বাত্রত পালন করে। দরাফ ধার বিরচিত গঙ্গান্তব এ বিষয়ের একটি প্রধান স্তোত্র বলিয়া পরিগণিত আছে। তাহাতে শেখ সাদির প্রশীত একটি ভক্তিভাব-পরিপূর্ণ বচনের স্বসনৃশ অভিপ্রায় দেখিতে পাওয়া যায়।

सुरधृनि मुनिकन्ये तारये: पुष्यवन्तम् स्र तरित निजपुष्ये सत्र किन्ते महत्त्वम् । यदि च गतिनिहीनं तारये: पापिनं मां तदिह तव महत्त्वं तन्महत्त्वं महत्त्वम् ॥

ঐহিক স্বার্থের এমনই প্রভাব যে, স্বধর্ম-পক্ষপাতী আরঙ্গ্ প্রেড বে হিন্দু ধর্মের

দৌর সম্প্রদায়-বিবরণের শেষ পৃষ্ঠায় হিন্দুদেয় এই ব্রতের বিবয় দেখ।

বোধিসন্ত, দিক্পাল প্রান্তর পূজা ক্রীরা পরে উলিখিত দেব দেবীর আহ্বান ও অর্চনা করা হইরা থাকে। *

বৌদ্ধ-সমাজে নরেক্স নামক ছইটি ভূপতির উপাখ্যান প্রচলিত আছে। একটি খুষ্টান্দের সপ্তম শতাব্দাতে ও বিভীরটি উহার বাদশ শতাব্দীতে বিদ্যমান ছিলেন। হ, হ, উইল্সন্ তাঁহাদের সংক্রান্ত উপাখ্যান-বিশেষ অবলঘন করিরা অনুমান করেন, প্রথম নরেক্সের সমরে পাশুপত মত ও বিভীয় নরেক্সের সমরে ভাত্ত্রিক-ধর্ম-প্রণালী নেপালস্থ বৌদ্ধগণের মধ্যে প্রবর্ত্তিত হর †। বৃদ্ধগরার তারা দেবীর মন্দির নামে একটি মন্দির আছে। তারাটি তন্ত্রোক্ত দেবতা-বিশেষ; পরে বেলিক্স নামে একটি মন্দির আছে। তারাটি তন্ত্রোক্ত দেবতা-বিশেষ; পরে বেলিক্স নেক্তাগণের মধ্যে পরিগৃহীত হন। ঐ দেবালরে একটি পুরুষ-মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত আছে; তাহার দক্ষিণ ক্ষমে নানাধিক সহত্র খুষ্টাব্দে প্রচলিত অক্ষর-বিশেষে বিরচিত শ্রীবৃদ্ধ দাসস্য এই করেকটি পদ খোদিত রহিরাছে ‡।

উপর নৃশংস ভাবে অত্যাচার করিরা যান, স্থল-বিশেষে ও বিষয়-বিশেষে ওঁাহাদের স্থান্থারী লোকে তাহার শরণাপন্ন না হইরা থাকিতে পারিল না। কেবল হিন্দুধর্মের জীর্ণ নিকেতনে মোসল্মান ধর্ম-পুরুষের পাণিগ্রহণ ব্যাপার দর্শন করিরা কৌতৃকাবিষ্ট হইভেছি এমন নর। খ্রীরামপুর-সন্ধিহিত গ্রাম-বিশেষ-বাসী একটি খ্টানের গৃহিণী আমার কোন আত্মীর ব্যক্তিকে মনসা-পূজা করিরা দিবার নিমিত্ত বিস্তর জিদ্ করিরাছিল। টুরার্ট সাহেবের শালগ্রাম-পূজা ও হিন্দুধর্মের প্রতি ভক্তি-শ্রদ্ধা প্রকাশ বিষয়ক প্রবাদও একটি মন্দ কথা নর (১)। বাঙ্গালা দেশীর কোন কোন হুঃখী খ্টান্ থ্রাক্ষণদিগকে করপুটে প্রণিপাত করে দেখা গিরাছে। হুগলী জেলার অন্তর্গত খ্রীরামপুর-সন্ধিহিত জান্ নগর নিবাসী রামধন নামে একটি খ্টান্ রক্ষাকালীর পূজার যত্ন শ্রদ্ধা ও উৎসাহ পূর্বক আমুক্ল্য করিয়া আমোদ প্রমোদ করিত এবং হিন্দু-দেবতার নাম বিশিষ্ট ভূত প্রেক্ত ও ডাইনের মন্ত্র ছারা চিকিৎসা করিয়া জীবনযাত্রা নির্বাহ করিত। আণ্টনি নামে একটি কিরিক্সার ক্ষির দল ছিল। তাহার কৃত সঙ্গীত-ছিশেষে সমধিক মুর্গা-ভক্তি প্রকাশ রহিয়াছে।

''কুপা করি তারে। মাপো ও শিবে মাতঙ্গী॥ ভব্দন সাধন জানিনে মা জাতিতে ফিরিক্সী॥'' আক্টনি।

- * Asiatic Researches, Vol. XVI., pp. 450-478.
- † Asiatic Researches, VoI, XVI., pp. 470-472.
- ‡ Archœological Survey of India, Vol. I., p. 11.
- (>) শীযুক্ত রাজনারায়ণ বয় বাবু প্রণীত ''সেকাল আর একাল"। ৪ পৃঠা।

ভোট-দেশীর বৌদ্ধেরাও নিজ ধর্মের রু সহিত হিন্দু-ধর্ম মিশ্রিত করিয়া লইরাছেন। এমন কি, তাঁহারা ইন্দ্র, যম, যমান্তক অর্থাৎ শিন, বৈশ্রবণ অর্থাৎ
কুবের প্রভৃতি হিন্দু-দেবগণকে আপনাদের দেব-মণ্ডলী মধ্যে সরিবেশিত করিয়াছেন। মন্ত্র-পাঠ গারা প্রভিদিন তিনবার তাঁহাদের অর্চনা হয়। সে
সময়ে ঢোল, ঢাক, শিলা, তুরীয় প্রভৃতি বাদ্যবাদন হয় এবং বিশেষ বিশেষ
পর্বাহে আটা, ছগ্ম, চা, নবনীত প্রভৃতি বিবিধ উপচার গারা সমধিক আড়ম্বর
সহকারে পূজা হইরা থাকে।

বৌদ্ধেরা এইরূপ মিশ্রিত ও মবিমিশ্রিত ধর্ম্ম-প্রণালী অবলম্বন করিয়া বছকাল ভারতবর্ব ভোগ করিরা যান। তাঁহারা কোন সময় হইতে কোন সময় পর্যান্ত এখানে বিদামান ছিলেন ও কোন সময়েই বা এখান হইতে অস্তহিতি হন, এ দেশীয় লোকের মধ্যে অনেকেরই সে বিষয়ে কৌতৃহল হইতে পরে। খু, পু, পঞ্চম বা ষষ্ঠ শতাব্দীতে শাকামূনি এই ধর্ম প্রবর্তিত করেন এবং খু. পু, তৃতীয় ও চতুর্থ শতাক্ষীতে মগধ-রাক্যাধিপতি অশোক রাজা ইহার সমধিক শ্রীরন্ধি-সাধন করেন ইহা পূর্ব্বে সুম্পষ্ট লিখিত হইয়াছে। রাজগৃহ-নিবাসী শাণকবাস বা শাঙ্গনবাস্থ অথবা শাণবাসিক নামে একটি উৎসাহী বৌদ্ধ গ্রীক সম্রাট্ এলেগজেওরের দিখি-करत्रत ৮ • जामी तरमत शृत्स ज्यार थु. शृ, शक्य मंजासीत आतरह कान्तारात्र প্রাদেশে গমন করিয়া বৌদ্ধর্মা প্রচার করেন এইরূপ লিখিত আছে 🕆। কনিছ নামে স্থবিখ্যাত শক সম্রাট খু,পু, প্রথম শতাকীতে আফ গানিস্থান, পঞ্জাব, রাজ-পুতানা, এবং গলা ও যমুনা নদীর তীর-স্থিত কতকগুলি গ্রাম অধিকার করিয়া একটি বছ-বিস্তৃত রাজ্যপদ সংস্থাপন করেন। তিনি বৌদ্ধর্মা অবলম্বন পূর্ব্ধক উত্তরোত্তর তাহার প্রীবৃদ্ধি দাখন করিয়া যান। এলেগ্লেণ্ডি রা নগর নিবাসী ক্লেমেন্স্ নামক গ্রীক্ পণ্ডিত ন্যুনাধিক হুই শত খুষ্টান্ধে ভারতব্যীয় ব্রাহ্মণ ও শ্রমণ (অর্থাৎ বৌদ্ধ উদাসীন) উভয়েরই কিছু কিছু প্রসঙ্গ করিয়া যান । তিনি শ্রমণ ও শ্রমণার উল্লেখ করিয়া কছেন, ইহারা একরপ পিরামিডের উপাসনা করে

ভোট-দেশীর ভাষার দীক্ষা-শুরুদের নাম লামা। তদমুসারে ভোট ও মোক্রোল দেশীর বৌদ্ধ ধর্মকে লামা-ধর্ম বলে

[†] Chinese Buddhism, by Revd, Joseph Edkins, noticed in the Indian Antiquary, 1880, page 315.

ও তাহার মধ্যে দেবতা-বিশেবে 🗓 সান্ধি প্রোধিত আছে এইরূপ বিশাস করিয়। থাকে। এই পিরামিড্ বৌদ্ধ সম্প্রদায়ের স্তৃপ ব্যতিরেকে আর কিছুই নয়, ইহাতে সন্দেহ নাই। পিফ রি নামে অন্য একটি গ্রীক্ পণ্ডিত ন্যুনাধিক ভিন শত খুষ্টাব্দে প্রাহুর্ভ হন। ভিনি লিখেন, বাহ্মণেরা একটি জাতি-বিশেষ এবং শ্রমণেরা একতা বিমন্ত্রিত নান। জাতীয় লোক। শ্রমণেরা মন্তক মুগুন এবং বহির্বসনের অভ্যন্তরে একরূপ আল্থেলা ব্যবহার করে; গৃহ-সম্পত্তি সমুদায় পরিভাাগ করিয়া নগরের বহির্ভাগে একত্ত অবস্থিতি করে: ধর্ম সম্বন্ধীয় শাস্তালাপ করিয়া কালক্ষেপ করে এবং নিত্য নিত্য রাজসন্নিধানে তণ্ডল-দান প্রাপ্ত হইয়া व्यापनारम् त को यन-याजा निर्व्याह कतिया शास्त्र । এই अमन रय. द्योक पत्र-ব্ৰাজক * অৰ্থাৎ ভিক্ষু ইহা স্পষ্টই প্ৰতীয়মান হইতেছে †। বে শকান্দের এখন উনবিংশ শতাব্দী চলিতেছে, শালিৰাহন তাহা প্ৰতিষ্ঠিত করেন। কেহ কেহ তাঁহাকে বৌদ বিঘেষী বলিয়া বিবেচনা করিয়াছেন। শ্রীমান জ, এড কিন্স কতক গুলি প্রধান প্রধান বৌদ্ধ-গুরুর মৃত্য-কালাদি নিরূপণ করিয়া স্বপ্রণীত চান দেশীয় বৌদ্ধ-ধর্ম-বিষয়ক প্রস্তুকের মধ্যে ± ভাহার একটি তালিকা প্রকাশ করিয়াছেন। সম্বাবেত বাগরশাক থু, পু, প্রথম শতাব্দীতে, কুমারদ ২৩ খুষ্টান্দে, ভারতবর্ষের উত্তরখণ্ড-জাত জয়ত ৭৪ পুর্ন্নালে, বমুভণ্ড ১৭৫ খুর্ন্নালে, ভারতবর্ষের পশ্চিম ও দক্ষিণ থণ্ডে বৌদ্ধ-ধর্ম-প্রচারকারী মমুর বা মনোরত খুটান্দের দ্বিতীয় শতাক্ষীতে. পদারত্ব ২০৯ পৃষ্টাব্দে, ভারতবর্ধের মধ্যথ গু-নিবাসী সিংহল-পুত্র খৃষ্টাব্দের তৃতীয় শতাকীতে, নাশশত নামে কালাহার-নিবাসী একটি ব্রাহ্মণ ভারতবর্ষের ছক্ষিণ ও মধ্য ভাগে ভ্ৰমণ পূর্ব্বক ৩২৮ খুষ্টাব্দে, দক্ষিণাপথ নিবাসী পুণ্যমিত্র নামে একটি ক্ষত্রির ভারতবর্ষের পূর্বাঞ্চলে পরিভ্রমণ পূর্বক ৩৮৮ খৃষ্টাব্দে এবং ভারতবর্ষের মধ্যপণ্ড-নিবাসী প্রজ্ঞাতর চিতারোহণ ছারা ৪৫৭ খুটান্সে প্রাণভ্যাপ করেন। বোধিধর্ম ৫२७ খুষ্টাবেদ চীন দেশ সমনোদেশে ভারতবর্ষ পরিত্যাগ করিয়া যান।

^{*} ভিন্দু ও শ্রমণেরই অক্ট একটি নাম পরিব্রাজক। বৌদ্ধ সম্প্রদারে বর্ম ও গুণামুসারে অক্সান্ত উপাধিও প্রচলিত হর। প্রবীণদিগের একটি উপাধি স্থবির। শ্রদ্ধাভাজন ও গুণবাম্ ব্যক্তি বিশেষের উপাধি অর্হন্ত। বেদের ব্রাহ্মণভাগেও করস্ত্রে দেখিতে পাওরা বার, হিন্দু সমাজেও এই শেষোক এইটি উপাধি প্রচলিত ছিল।

[†] Wheeler's History of India, Vol, III, p. 240.

[‡] Chinese Buddhism, Ch. V., pp. 60-86.

ফলতঃ বন্ধ দিন চীনদেশীর তীর্থবাতীরা /বিশেষতঃ কাহিরন্ ও হিউ এন্থ্সক ভারতবর্ধে আগমন না করিরাছিলেন, ভার চবর্বীর বৌদ্ধ-সম্প্রদারের তত দিনের সবিশেষ বৃত্তান্ত কিছু প্রাপ্ত হওরা যার না। ফাহিরন্ ৩৯৯ খৃষ্টান্দে খদেশ হইতে যাত্রা করিরা ৪১৪ খৃষ্টান্দ পর্যান্ত তীর্থ-ভ্রমণাদি করেন এবং হিউ এন্থ্ সক্ত ৬২৯ খৃষ্টান্দ হইতে ৬৪৫ খৃষ্টান্দ পর্যান্ত পরিভ্রমণ পূর্বাক ভারতবর্ষীর হিন্দু ও বৌদ্ধ উভর ধর্ম সংক্রান্ত নানা বিষয়ের বিষরণ করিরা যান। তাঁহারা উভরেই গান্ধার, উদ্যান বা উজ্জান, তক্ষশিলা ১,মথুরা, কান্যকুল্ক, প্রাবন্তি ২,কপিলবন্ত ৩, বৈশালী ৪, মগধ, পাটলিপুত্র, নালন্দ ৫, রাজগৃহ ৬, গঙ্গা, বারাণসী,কৌশাদ্দি ৭, ভাত্রলিপ্ত অর্থাৎ তমলুক, কোশল ৮, দান্ধাশ্য ৯,গৃধকুট ১০,প্রভৃতি বিবিধ স্থান-স্থিত বিহার ও বিহার-বাদী শত শত ও কুরাপি সহস্র সহস্ত ভিকু দর্শন করেন। কাহিয়ন বাদ্যালা দেশের অন্তর্গত ভাত্রলিপ্ত অর্থাৎ তমলুকে অর্ণবিধান আরোহণ করিরা স্বদেশ প্রভ্যাবর্তন করেন। হিউ এন্থ্ সন্ধ তদ্ভিরিক্ত প্রয়াগ, সার্নাণ্ড ২১, চম্পা

দিজু নদের পূর্ব্ধ তিন দিনের পথ।
অবোধার প্রার ২৫ পঁচিশ ক্রোশ উৎরে রাপ্তি নদীর দক্ষিণ কৃলে অবস্থিত।
অবোধার প্রার ২৫ পঁচিশ ক্রোশ উত্তরে।
আবোধা প্রদেশের অন্তর্গত। রাপ্তি নদীর কোহান নামক উপনদীর নিকটয়।
পাটনার প্রার ৯ নয় ক্রোশ উত্তরে।
রাজগৃহের প্রার তিন ক্রোশ উত্তরে বরগাও নামক গ্রামে ইহার ভগ্নাবশেষ আছে।
মগধের প্রাচীন রাজধানী। ইহার আধুনিক নাম রাজগির
প্রার্গের প্রার ১৫ পোনর ক্রোশ পশ্চিমে অবস্থিত।

অবোধ্যা প্রদেশ; সরয় নদীর উভর পার্যবর্তী। হিউএন্ থ্সঙ্গ্রাঞ্চালা উৎকল ও কলিজ অমণ করিয়া কোশল প্রবেশ করেন। সে কোশল দক্ষিণাপথের অন্তর্গত বিদর্ভ অর্থাৎ বেরার বলিয়া বিবেচিত হইয়াছে।—Cunningham's Ancient Geography of India p. 520.

- । পিলোবণ ও কান্তক্জের অন্তর্বর্জী। গঙ্গা বমুনার অন্তর্বর্জী দোয়াবের মধ্যে কালী
 নদীর পশ্চিম পার্যে পিলোবণ প্রদেশ। কালী নদী গঙ্গার একটি উপন্দী।
 - ১•। রাজগৃহের নিকটবর্ত্তী একটি বিখ্যাত পর্মত। ইহার ইদানীস্তন দাম শৈলগিরি।
 - ১১। কাশীর সমীপন্ত।
- ১২ । ভাগলপুর প্রদেশের গ্রাচীন নাম। উহার রাজধানীর নামও চম্পা। তাহা ভাগলপুরের প্রায় ১১ এগার ফোশ পুর্বেষ অবস্থিত ছিল।
- ১৩। হিউএন্ ধ্নঙ্কলের পূর্ব দক্ষিণ প্রান্তে অবস্থিত চরিত্রপুর অর্থাৎ পুরী হইরা কোন্ডোধ কলিজাদি গমন করেন।
 - ১৪। ভারতবর্ধের দক্ষিণ বণ্ডের অন্তর্গত তেলিঙ্গন্।
 - >०। शिष्ठ अन् थ्मक् अन् इहेर्ड महान् इहेन्ना (हान न्नार्का नमन करतन ।

মালোয়া, উজ্জিমিনী, চোলিয় ৮, দ্রাবিড়, কাঞ্চীপুর, কোম্বন>, মলয়, গুরুর অর্থাৎ গুলরাটু, অট্লি ও কচ, বিচবপুর ১৩, মূলতান, জ্বোতি ১১, রামগ্রাম ১২, মতি-পুর, স্থানেশ্বর ১৩, অহিচ্ছত্র ১৪, ত্রহ্মপুর ১৫ প্রভৃতি বিবিধ স্থান পরিভ্রমণ পুর্বাক প্রায় সমগ্র ভারত-ভূমিতেই বৌদ্ধ ধর্ম প্রচলিত দেখেন। কিন্তু ফাহিয়নের সময় অপেকা তাঁহার সময়ে ঐ ধর্মের কিয়ৎপরিমাণে হাস হইয়াছিল দেখা ষাইতেছে। ফাহিয়ন যে সমস্ত বৌদ্ধতীর্থ ও বৌদ্ধদেবালয়ের কার্য্য স্থলরব্ধপ প্রচলিত দেখেন, হিউএন থ্নঙ্ তাহার মধ্যে অনেকানেক স্থান ও তদভিরিক্ত অন্য অন্য বছতর বৌদ্ধ-ক্ষেত্র ভগ্ন, ভগ্নপ্রায় বা একেবারে শুন্য দেখিতে পান এবং কোন কোন স্থান ক্রমশঃ বৌদ্ধ ধর্মের বন্ধন হইতে নিমুক্তি হইয়া প্রবল্ভর হিন্দু ধর্মের अधीन इटें(তছে पृष्टि कविश्रा यान; यमन श्रीकांत, উদ্যান বা উজ्জान∗, কৌশাধী, প্রাবস্তি, কপিলবস্ত, পাটলিপুত্র, চোল, মলয়, উজ্জ্বিনী, মুলতান, বরণ, রামগ্রাম, অটলি, কচ ও জ্বোতি। ভাদৃশ সমরে যে এই ধর্ম থকা হইতে আরম্ভ হয়, তাহার অনা অন্য প্রমাণ্ড অবিলয়ে প্রদর্শিত হইবে। উল্লিখিত চুই স্থবিখ্যাত বৌদ্ধ যাত্রীর পরেও, চীন-দেশীয় অন্যান্য অনেক তীর্থাত্রী তীর্ণভ্রমণ-উদ্দেশে খুষ্ঠানের একাদশ শতাকী পর্যান্ত ভারতবর্ষে আগমন করেন। বৃদ্ধগয়াতে তাঁহাদের থাদিতলিপিও বিদ্যু-মান আছে এবং তাহার মধ্যে অনেকের নামও দলিবিষ্ট রহিয়াছে †। ই ৎসিঞ্চ

৮। জ∤বিড়ের উত্তর।

৯। তাবিড়ের উত্তর মহারাট্রের দক্ষিণ। ধনককটের অর্থাৎ মহাজ্বের পশ্চিম ও সমুদ্রের পূর্বে কোন্ধন দেশ।

১০। সিন্ধুরাজ্যের রাজধানী।

⁻ ১১। বুন্দেলখণ্ডের প্রাচীন নাম জন্মোতি। উহা উজ্জিমনীর প্রান্ত ৭৪ চুয়ান্তর ক্রোশ পুর্বোতর অংশে অবস্থিত।

১২। কপিলবস্ত ও কৃশি নগরের মধ্যস্থলে অবস্থিত। কৃশি নগর গোরক্ষপুরের প্রায় ১৬ বোল ক্রোশ পূর্বের।

১৩। শতক্রত গঙ্গা নদীর মধ্যবর্তী প্রদেশ। হিউএন্থ্সঙ্গের সময়ে অর্থাৎ থৃষ্টাজ্যের সপ্তম শতাকীতে উহা এতই বিস্তৃত ছিল।

১৪। রোহিলথণ্ডের রাজধানী।

২৫। রোহিলথণের অন্তর্গত মড়াবর নগরের প্রায় ২২ বাইশ ক্রোশ উদ্ভর।

^{*} উদ্যান কাশ্মীরের সমীপস্থ স্থবস্তু নদীর তীরস্থিত। ঐ নদীর বর্ত্তমান নাম সুয়াৎ।

⁺ The Indian Antiquary, 1881, pp. 193 and 339.

নামে একট চীন দেশীয় গ্রন্থকার একথানি চীন গ্রন্থে ৫৬ ছাপ্লাল্লজন বৌদ্ধ তীর্থ ষাত্রীর বিবরণ লিখিয়া রাখেন। তাঁহারা খুষ্টান্দৈর ৬১৮ হইতে ৯০৭ খুষ্টান্দ পর্যান্ত বৌদ্ধতীর্থ-দর্শন-উদ্দেশে ভারতবর্ষে আগমন করেন। তাঁহাদের সময়ে এথানে বৌদ্ধ ধর্ম একরপ প্রচলিত ছিল তাহার সন্দেহ নাই। কেহ কেহ বিহার-বিশেষে কিছু কাল অবস্থিতি করিয়া যান। হুইলুন নামে একটি চীন ভিকু অমরাবৎ (অমরাবাদ) দেশের একটি বিছারে দশ বংসর কাল অধিবাস করেন *। এ.প. ততীয় ও চতর্থ শতাকী হইতে খ্রীষ্টাবের দশম ও একাদশ শতাকী পর্যান্ত নানা সময়ে ভারতবর্ষীয় ভাষায় ও ভারতবর্ষীয় অক্ষরে বিরচিত বছ-সংখ্যক থোদিত-লিপিতে সপ্রমাণ করিয়া দিতেছে, ভারতব্দীয় বৌদ্ধেরা ঐ সমস্ত সময়ে ভারত ভমিতে বিদ্যমান ছিলেন †। বিশেষতঃ হামিরপুরের:প্রায় চব্বিশ ক্রোশ দক্ষিণে মূলোর ± নগরের একখানি খোদিতলিপিতে একটি স্থপ্রসিদ্ধ বৌদ্ধ মন্ত্র অভিত আছে : তাহা খুষ্টান্দের একাদশ বা ধাদশ শতান্দীতে প্রচলিত ভারতবর্ষীয় অক্ষর বিশেষে লিপিত হয়। ইহাতে নিঃসংশয়ে সপ্রমার করিয়া দিতেছে, ভাদুশ সময়েও ঠ অঞ্চলে বৌদ্ধ ধর্ম বিদ্যমান ছিল্ম। এইমাত্র উল্লিখিত হইয়াছে, চীন-দেশীয় ভীর্থাত্রীরা খুষ্টাব্দের সপ্তম শতাব্দীতে অনেক বৌদ্ধ ক্ষেত্র ভগ্নপ্রায় দেখিয়া যান। অত্তএব সে সময়ে ঐ ধর্মের প্রাতৃতাব হ্রাস হইয়া আসিতেছিল বলিতে হয়। ঐ শভান্ধীতে হিন্দুরা বৌদ্ধদিগকে যৎপরোনান্তি নিগ্রহ করিয়া দুরীক্বত করিবার চেষ্টা পান ইছাও একবার প্রদর্শিত হইয়াছে। ঐ শতাব্দীতে বিদ্যুমান কান্যকুজা-

^{*} The Indian Antiquary, 1881, pp. 109 and 110.

[†] Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. III., pp. 482, 488; 498 and 499; Vol. IV., pp. 125 and 135; Vol. V.,p, 348; Vol, VI., pp. 218, 454, 459, 566-609, 790-797, 1038, 1072 and 1085; Vol. VII.. pp. 219-262, 339, 442 and 565 Vol. IX., p. 617. A. Cunningham's Archæological Survey of India, Vol. I., pp. I, 6, 7, 11, 25, 37, 39, 45, 46, 47, 48, 298 and 238; Vol, II., p. 67; Vol. V., pp. 54, 57 58, and 177; Vol. VI., pp. 98, and 99; Vol. X., pp. 38, 56 and 82.

[🖠] যমুনা ও বেডোরা নদীর সঙ্গম-স্থলে একটি কুদ্র পর্বেতের নিকট মহোব নগর।

[¶] Cunningham's Archæological Survey of India Vol. II., p., 445,

ধিপতি ত্রীহর্ষ পূর্বাবলম্বিত বৌদ্ধ ধর্ম পরিত্যাগ করিয়া জৈন ধর্ম গ্রহণ করেন। ঐ সময়ের পর যে, জৈনসম্প্রদায়ের প্রাতৃভাব হয়, মাইদোর, বিজয়নগর, আরু প্রভৃতি অনেক স্থানের খোদিতলিপিতে তাহা স্কম্পই প্রদর্শন করিয়া দিয়াছে। ভাহাদের যেমন উন্নতি হইতে লাগিল. বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ের সেইরূপ অবনতি হইয়া আলের। দক্ষিণাপথের প্রচলিত অনেক কথাতেই ইহার নিদর্শন রহিয়াছে। খন্তাব্দের অন্তম শতাক্ষাতে অকলম্ব নামে একটি কৈন যতি হেমশীতল নামক বৌদ্ধ রাজার সমক্ষে কাঞ্চী প্রদেশস্থ বৌদ্ধগণকে বিচারে পরাস্ত করিয়া দেন। ঐ রাজা বৌদ্ধ ধর্ম পরিত্যাগ করেন এবং বৌদ্ধেরা তথা হইতে নির্বাদিত হইয়া যায় †। মত্রাধিপতি বরপাশ্তা জৈন ধর্ম অবলম্বন পূর্বাক বৌদ্ধদিগকে যার পর নাই নিগ্রহ করিয়া দেশত্যাগ করাইয়া দেন !। পাণ্ডা রাজ্যে বৌদ্ধ সম্প্রদায়ের পতন হইয়া কৈন সম্প্রদায়ের প্রাত্তাব হয় এবং ঐ রাজ্যের রাজা কুন পাণ্ডোর সময়ে লৈনেরা অবদন্ন হইয়া যায়। এই ঘটনা খুপ্টাব্দের দশম শতাব্দীতে বা তাহার কিছু অগ্র-প-চাৎ সংঘটিত হয়। অতএব তাহারও পূর্ব্বে তথায় বৌদ্ধদের অবনতি হইয়াছিল বলিতে হটবে। দেবগোল এবং বেল্লপলম্ এই ছই স্থানে পূর্বের বৌদ্ধদেবালয় বিদামান ছিল; পুষ্টাব্দের একাদশ শতাব্দীতে কৈন রাজারা ভাষা নষ্ট করিখা ফেলে ¶। পূর্ব্বে গুজরাটে বৌদ্ধ রাজাদের অধিকার ছিল; খৃষ্টাব্দের দ্বাদশ শতা-ক্ষাতে তথায় জৈন-সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত হয়। এদ্রিসি নামক মোসগমান্ ভূগোল-বিদ্যাবিং পশুত লিখিয়াছেন, গুলুরাটের রাজা বুদ্ধের উপাসনা করিতেন: হেমচক্র জৈন-ধর্ম্ম-প্রচারে প্রবৃত হইনা ঐ রাজ্যের রাজা কুমার পালকে নিজ ধর্ম্মে দীক্ষিত করেন। এই ঘটনাটি নানাধিক ১১৭৪ খৃষ্টাব্দে সংঘটিত হয়। जनविध खब्दबांहै, मनद्भवत व पिक्नांभरवत शान्त्रमञ्जातत अनामा शान

^{*} Asiatic Researches, Vol. XVII, pp. 280-286,

[†] ত্বতুরের সমীপন্থ পোনভগ নগরে তাহাদের বিদ্যালয় ও দেবালয়াদি ছিল ; তথা হইডে তাহারা-নির্বাদিত হইর। কাণ্ডি অঞ্চলে গমন করে।—II. H. Wilson's Mackenzie Collection, Vol. I., p. LXV.

[‡] Asiatic Researches. Vol. XVII., p. 285.

[¶] Mackenzie Collection, vol, I., p. LXVII.

[§] Asiatic Researches, Vol. XVII., pp. 282 and 283.

জৈন ধর্ম সমধিক প্রবল হইতে গাকে§। ভারতবর্ষের উত্তরথণ্ডেও তাদৃশ সময়ে ঐরপ ধর্মপরিবর্ত্তন ঘটিয়া আসিয়াছিল। কাশীর রাজারা খুষ্টাব্দের একাদশ শতাব্দী পর্যান্ত বৌদ্ধ ছিলেন। চন্দ্র কবির এন্থেও অনেকানেক খোদিতলিপিতে দেখিতে পাওয়া যায়, ঐ সময়ে দিল্লিও কান্যকুজের নুপতিরা হিন্দ-ধর্ম অবলম্বন ক্রিয়া চলিতেন *। খুষ্টান্দের পঞ্চম ও সপ্তম শভাকীতে যে মথুরায় বৌদ্ধ ধর্ম প্রবল ছিল 🕂, খুষ্টান্দের একাদশ শতাকীতে মামুদ শা তাতা আক্রমণ করিতে গিয়া তথায় হিল-ধর্মের অতিমাত্র প্রাতর্ভাব দেখিতে পান। তিনি গন্দ্রির শাসনকর্তাকে লিপিয়া পাঠান, এই নগরীতে প্রস্তরাদি-নির্দ্থিত সহস্র অট্রালিকা ও অগণনীয় দেবমন্দির বিদ্যান আছে। কোটি কোটি টাকা ব্যয় ৰাভিরেকে ইহা প্রস্তুত হয় নাই এবং চুই শত বৎসর ব্যাপিয়া নিশ্মাণ না করিলে, এরপ একটি নগর নির্মিত হইতে পারে না 🙏। তিনি অন্য অন্য স্থানেও হিন্দু-ধর্মাই প্রচলিত ও হিল্প-দেবালয়ই বিদ্যুদান দেখেন। এই শুমন্ত পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে এইটি প্রতীয়মান হইয়া উঠেংযে, বেছৈয়রা খুগ্লাব্দের দাদশ শতা-শীর শেষে ও তাহার পরেও কিছু দিন যদিও ভারতবর্ষে বিদামান ছিলেন, কিন্ত নিতাম্ব অব্দন্ন হইয়া যান, তাহার দলেই নাই। চতুদ্দিশ শতাকীতে একেবারেই অন্তর্ভিত বেংধ হয়।

ভিন্ন উপাদক-সম্প্রদায়ীরা পরস্পর প্রতিবেশী হইলে, পরস্পর পরস্পরের অবলম্বিত ধর্মের অফুঠান ও অফুকরণ করে এবং তদফুসারে নেপালী বৌদ্ধেরা নিজ্ঞ ধর্মের সহিত হিন্দুদের তান্ত্রিক প্রণালী মিশ্রিত করিয়া লয়, একথা কিছু পূর্ব্বেই লিখিত হইয়াছে। হিন্দুরাও বৌদ্ধদের নিকট নানা বিষয়ের উপদেশ গ্রহণ পূর্বেক অধিকতার ঋণে ঋণী রহিয়াছেন: বৌদ্ধেরাই প্রথমে মায়াবাদ প্রচার করেন, বৌদ্ধেরাই নির্ব্বাণ-মুক্তি প্রবর্ত্তিত করেন এবং বৌদ্ধেরাই ভারতভূমিতে অহিংসা ধর্ম প্রকাশ করিয়া দেন। হিন্দুদিগের অখ্য বৃক্ষের পুণাছ-স্বীকার ও বৌদ্ধ মতের অফুকরণ বিলয়া বিবেচিত হইয়াছে শ। হিন্দুরা তাঁহাদের নিকট

^{*} Asiatic Researches p. 282.

[†] The Pilgrimage of Fa Hian, Calcutta, pp. 99 and 102.

[‡] Briggs's Ferishta, Vol. I., p. 58.

[¶] R. L. Mittra's Antiquities of Orissa, Vol. II., p 107, and Buddha Gaya, p. 18.

ঐ সমন্ত বিষয় ঋণ-গ্রহণ করিয়া চিরদিনের মত ঋণ-বদ্ধ রহিয়াছেন। কেবল এইরূপ ধর্ম-ঋণ গ্রহণ করিয়া নিরস্ত হন নাই; তাঁহাদের প্রধান দেবতাটিকেও অর্থাৎ ঐ ধর্ম-প্রবর্ত্তক শাক্য সিংহকেও আপনাদের দেব-মগুলী মধ্যে সন্নিবেশিত করিয়া লইয়াছেন। হিন্দুরা কত কত বৌদ্ধতীর্থ ও বৌদ্ধ-ক্ষেত্র আপনাদের তার্থ ও ধর্ম-ক্ষেত্রে পরিণত করিয়াছেন এবং তাঁহাদের যাত্রা মঞোৎসবাদিরও অনুকরণ করিয়া হিন্দুধ্র্মের মহিমা বৃদ্ধি করিয়াছেন।

হিল্বা দেখিলেন, ভারতবর্ষের এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্যান্ত বৌদ্ধর্ম এরূপ প্রবল হইরা উঠিগ যে, বুদ্ধের অসাধারণ প্রভাব আর অস্বীকার ও অপ্তব করিতে পারা যায় না। এাদকে, স্থানে স্থানে শত শত ও সহত্র সহত্র সমস্প্রদায়ী লোকে, স্বধর্ম পরিত্যাগ করিয়া ঐ অভ্যাদয়বান্ অভিনব ধর্মের শরণাপন্ন হইতে লাগিল ইহাও আর সহু হয় না। তাঁহারা বৌদ্ধলিগকে ধর্ম করিবার উদ্দেশে, এক দিকে বিষম বিদ্বেষ প্রকাশ পূর্ম্বক তাহাদিগকে যংশ্বরোনান্তি নিগ্রহ করেন, লপর দিকে লোকদিগকে বৌদ্ধ ধর্মে পরাল্মুখ করিবার অভিপ্রায়ে এইরূপ প্রচার করিয়া দেন যে, ভগবান্ বিষ্ণু বুদ্ধরূপে অবত্তীর্ণ হইয়া অন্তরগণকে বিমুগ্ধ ও বিপথসামী করিবার জন্ম বৌদ্ধ ধর্ম প্রবর্তন করেন*।

ततः कलौ संप्रवत्ते संमीद्वाय सुरदिषाम् । बुद्धी नामाञ्जनसुतः कीकटिषु भविष्यति ॥

ভাগবভ। ১। ৩। ২৫॥

পরে কলিযুগ প্রবৃত্ত ছইলে অমুরদিগকে মোহনার্থ বিষ্ণু গয়। প্রদেশে অঞ্জন-পুত্র বৃদ্ধরূপে জন্ম গ্রহণ করিবেন।

এই নিমিত্তই, বৃদ্ধ বেদাদি হিল্দু-শাস্ত্রের বিরুদ্ধ ধর্ম-প্রবর্তক হইয়াও বিষ্ঠুবতারের মধ্যে পরিগণিত হন। ইদানী বাঁহারা মোদল্মান পীরকে

^{*} বিষ্ণুপ্রাণের তৃতীয় অংশের অস্টাদশ অধ্যারে এই উপাথ্যান সবিশেষ বর্ণিত হইয়াছে।
ক্রিপুরাণের ১৭ অধ্যার, কাশীপতের ৫৮ অধ্যায়, লিক্সপুরাণের ৭০ অধ্যায় এবং ভাগবতের প্রথম
ক্ষেত্রে তৃতীয় অধ্যায় ও বিতীয় ক্ষেত্রের সপ্তম অধ্যায়ে বিষ্ণুর বৃদ্ধরূপ-গ্রহণের ভিন্ন ভিন্ন রূপ
প্রসক্ষ আছে।

নারায়ণ বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন, পূর্ব্বে তাঁহারা বৃদ্ধকে বিষণুবতার বলিয়া অঙ্গীকার করিবেন ইহাতে অসম্ভাবনা কি ?

দক্ষিণাপথস্থ বিখলভক্ত-সম্প্রদায়ের ধর্ম হিন্দু ও বৌদ্ধ উভয় ধর্ম মিশ্রিত তাহার সন্দেহ নাই। তাহাদের বেদ ও ব্রাহ্মণে শ্রদ্ধাও নাই এবং বর্ণ-বিচারেও আস্থা নাই। এই পুস্তকের প্রথম ভাগের ২৪৩--২৪৬ পৃষ্ঠায় ইহাদের কিছু কিছু বুতাস্ত দেখিতে পাইবে। উত্তর কালে মোসলমানেরা যেমন অনেকানেক हिन्तु- (मवागत्र अधिकात कतित्रा निक (मवानात्र পतिगठ करत, (महेक्कण, श्रार्क्त বৌদ্ধ ধর্ম্মের অবনতি সমধ্যে হিলুরা কোন কোন বৌদ্ধ-স্থানাদি অধিকার পূর্ব্বক আপনাদের দেবস্থান করিয়া লয় এবং দেই দক্ষে বৌদ্ধদিগের কত কত ধর্ম-ক্রিয়া ও আচার বাবহারেরও অনুকরণ করিতে প্রবৃত্ত হয়। বুদ্ধগয়ার একটি দেবালন্ত্রে একখানি গোলাক্তি প্রস্তরে ছইটি পদ-চিহ্ন আছে। ঐ দেবালয়ের নাম বৃদ্ধ-পদ। কনিংহেম্ দেখিয়াছেন, অমর দেবের খোদিতলিপিতে উহা বিষ্ণু-পদ বলিয়া লিখিত হয়। অতএব তিনি অনুমান করেন, :প্রথমে উহা वृष-भए हिल, भरत हिल्तूता छाश विकु-भए विलया आठात करतः। श्रांध পূর্বে বৌদ্ধ ক্ষেত্র ছিল; পরে একটি প্রধান হিন্দ্তীর্থ হইয়া উঠিয়াছে ।। এমন কি, তথাকার কত কত হিন্দু-দেবালয়ে বুদ্ধদেবের খোদিত-লিপি বিশ্বমান রহিগাছে। গ্রামাছাত্মো স্বস্পষ্ট লিখিত আছে, ভীর্থ-যাঞ্জীরা বিষ্ণুপদে পিগুদান করিবার পূর্বের বুঙ্কায়া গমন পূর্বক বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ের বোধি বৃক্ষকে ‡ প্রণাম করিবেন।

धर्मी धर्मी श्ररं नत्वा महावोधितकः नमित्।

জগন্নাথের ব্যাপারটিও বৌদ্ধর্ম-মূলক বা বৌদ্ধর্ম-মিশ্রিত বলিয়া প্রান্তীয়-মান হয়। জগন্নাথ বুদ্ধাবভার এইরূপ একটি জনশ্রুতি সর্ব্বত প্রচলিত আছে।

^{*} Cunningham's Archæological Survey of india Reports Vol. I I. pp. 9-10.

[†] পশ্চাং একটি টিপ্লী করিয়া এবিষয়ের। সম্চিত যুক্তি সমূহের বিবরণ করিবার অভিলাষ রহিল।

^{়ু}বুদ্ধ যে অখথ-মূলে উপবিষ্ট হইরা সাধনা করেন, তাহার নাম বোধি বৃক্ষ। তিনি তথার, "সমাক সমোধি" অর্থাৎ সম্পূর্ণ বোধ প্রাপ্ত হন এই নিমিত্ত তাহার নাম বোধি।

চীন-দেশীর তীর্থধাত্রী ফাহিমন ভারতবর্ষে বৌদ্ধতীর্থ-পর্যাটনার্থ যাত্রা করিয়া প্থিমধ্যে তাতার দেশের অন্তর্গত খোটান নগরে একটি বৌদ্ধ-মহোৎসব সন্দর্শন ভাহাতে জগন্নাথের রথযাত্রার ভাার অবিকল এক রথে তিনটি প্রতি-মূর্ত্তি দৃষ্টি করিয়া আইদেন। মধাত্বলে বৃদ্ধ-মূর্ত্তি ও তাহার ছই পার্যে ছুইটি বোধিদত্ত্বে প্রতিমূর্ত্তি সংস্থাপিত ছিল * ধোটানের উৎসব যে সময়ে ও যতদিন ব্যাপিয়া সম্পন্ন হইত, জগন্নাথের রথযাত্রাও প্রায় সেই সমরে ও তত দিন ব্যাপিয়া অনুষ্ঠিত হইয়া থাকে। মেজর জেনেরেল্ কনিংহেম্ বিবেচনা করেন, ঐ তিনটি মূর্ত্তি পূর্ব্বোক্ত বৌদ্ধ তিমূর্তির অমুকরণ বই আর কিছুই নয়। দেই তিনটি মূর্ত্তি বৃদ্ধ, ধর্ম ও দঙ্গ । বৌদ্ধেরা দচরাচর ঐ ধর্মকে স্ত্রীরূপ বলিয়া বর্ণন করিয়া পাকে। তিনি জগন্নাথের স্বভদা া শ্রীক্ষেত্রে বর্ণ-বিচার-পরিত্যাগ-প্রথা প এবং জগন্নাথের বিগ্রহ মধ্যে বিষ্ণু-পঞ্চরের অবস্থিতি-প্রবাদ, এছটি বিষয় হিন্দুধর্মের অমুগত নয়; প্রত্যুত নিতান্ত বিক্লম। কিন্তু এই উভরেই সাক্ষাৎ বৌদ্ধ মত বলিলে বল। যায়। দশাবতারের চিত্রপটে বুদ্ধাব-তার স্থলে জগলাথের প্রতিরূপ চিত্রিত হয়। কাশী এবং মথুরার পঞ্জিকাতেও বুদ্ধাবভার-স্থলে জগলাথের রূপ আলেথিত হইয়া থাকে। এই সমস্ত পর্যালো-চনা করিতে করিতে, জগন্নাথের ব্যাপারটি বৌদ্ধ ধর্মমূলক বলিয়া স্বতই বিখাস হইয়া উঠে। অপেরাথ-ক্ষেত্রটি পূর্বে একটি বৌদ্ধ-ক্ষেত্রই ছিল এই অসুমানটি জগনাথ-বিগ্রহ-স্থিত উলিধিত বিষ্ণুপঞ্জর 🖇 বিষয়ক প্রবাদে একরূপ সপ্রমাণ করিয়া তুলিতেছে। যে সময়ে বৌদ্ধেরা অভ্যন্ত অবসম হইয়া ভারতবর্ষ হইতে অন্তৰ্হিত হইতেছিল, দেই সময়ে অৰ্থাৎ ৰ্ষ্টান্দের দ্বাদণ শতাকীতে জগ-মাধের মন্দির প্রস্তুত হয় ইহা পুর্বে স্থম্পষ্ট প্রদর্শিত হইয়াছে॥। এই ঘটনা-

^{*} Pilgrimage of Fa Hian, 1848, p 18,

⁺ २१४ शृष्टी।

[‡] Cuningham's Ancient Geography of India 1871, pp. 510 and 511.

[¶] বৈক্ষবাদি কোন কোন প্রকার ভারতবর্ষীর উপাসক.সম্প্রদায়ীরা বে স্বসম্প্রদার মধ্যে বর্ণান্তি-মান পরিত্যাগ করিয়া চলেন, বৌদ্ধদিগের ব্যবহারই তাহার প্রথম আদর্শ।

[§] २४७-२४१ श्रेश (१४)

[🏿] २०४ शृष्ठी (मथ ।

টিতেও উল্লিখিত অমুমানের স্থালররূপ পোষকতা করিতেছে। চীন-দেশীয় তীর্থাত্রী হিউ এন্থ সঙ্গু উৎকলের পূর্ব্বিক্ষিণ প্রান্তে সমুদ্র-তটে (অর্থাৎ উড়িয়ার যে অংশে পুরী সেই অংশে) চরিত্রপুর নামে একটি স্থপ্রান্ধ বন্দর দেখিয়া যান। ঐ চরিত্রপুরই এক্ষণকার পুরী বোধ হয়। উহার নিকটে পাঁচটি অত্যানত জগুপ ছিল। শ্রীমান্ এ, কনিংহেন্ অমুমান করেন, তাহারই একটি মধুনাতন জগন্নাথের মন্দির *। স্তুপের মধ্যে বুর্নাদির অস্থি কেশাদি সমাহিত থাকে । এইনিমিত্তই, জগন্নাথের বিগ্রাহ মধ্যে বিষ্কৃ-পঞ্জরের অবস্থিতি বিষয়ক উল্লিখিত প্রাদ্পিতি চ্টিয়াছে।

ত্রবার এই পর্যান্ত। আর চলিয়া উঠিতেছে না। এখন হিন্দু নামে বিখ্যাত ও তত্তির দ্র-দ্রান্তর-বাদা স্লেক্ড ‡ বলিয়া পরিগণিত বিভিন্ন জাতীয় লোকের যে অপরিজ্ঞের কল্ল আর্ঘা-বংশীর আদিম প্রুষেরা পরস্পাব একত্ত সংস্কৃত্ত থাকিয়া, ত্যৌ, বরুণ, উষা প্রভৃত্তি নৈসর্গিক বস্ত ও কাল-বিভাগ-বিশেষকে সচেতন দেবতা জ্ঞান পূর্ব্বক, তদীর উপাসনায় প্রব্ত ছিলেন, ১০, বাহারা প পূর্ব নিবাস পরিত্যাগ ও ভারতবর্ষ প্রবেশ পূর্ব্বক অত্রতা জ্ঞল, বায়ু, স্থ্য, নক্ষত্ত-পরিপূর্ণ নজ্ঞোন মণ্ডলাদির অসামান্ত প্রভাব-শালিছ ও রঞ্জাবাত, শিলার্টি, বজ্ঞধ্বনি, পর্ববিভান মণ্ডলাদির অসামান্ত প্রভাব-শালিছ ও রঞ্জাবাত, শিলার্টি, বজ্ঞধ্বনি, পর্ববিভান সমুদ্র-তরঙ্গ, প্রধর-রশ্ম-প্রদীপ্ত নিদাঘ-মধ্যাক্ত ইত্যাদি অত্যুৎকট নৈস্বর্গিক ব্যাপার সমুদায়-দর্শনে ভাত, চমৎক্রত ও অভিভূত হইয়া ঐ সমন্ত প্রভাবশালী অচেতন প্রাকৃতিক পদার্থকে সচেতন জ্ঞান করিয়া তাঁহাদেরই উপাসনায় প্রবৃত্ত হন এবং তলীয় স্বরূপে স্বকীয় অর্থাৎ মানব-জাতীয় শারীরিক ও মানসিক গুণ আরোপণ করিয়া তাঁহাদিগকেই আপনাদের হন্তা কন্তা বিধাতা ও দণ্ড পুরস্কারের বিধান-কন্তা বিলিয়া বিশ্বাদ করেন ; বাঁহারা ৸ পূর্বকালীন আর্য্য-বংশীয় ভারত-

[.] Cunningham's Ancient Geography of India, p. 510.

⁺ ২৮৬ পৃষ্ঠা দেখ।

[🛊] গ্রীক্, ইটালীর, পারদীক প্রভৃতি।

১ প্রথম ভাগের ৭৫ ও ৭৬ পৃষ্ঠা দেখ।

শ স্থ প্রাচীন বেদমন্ত্র-রচরিতা ঋষিগণ।

[্]রাহ্মণ ও কলস্ত্র-রচরিতারা।

বর্ষীয়দিগকে জটিল কর্ম * জালে অড়িত ও হুম্ছেন্য কুসংস্থারণাশে বন্ধ করিয়া তদীয় জ্ঞান-পদবীতে তুল জ্বা কণ্টকাবলি রোপণ পুর্বাক উত্তরকালীন পঞ্জিত-গণের 🕆 তিরস্কার-ভাজন এবং বিশেষতঃ গোমেধ, নরমেধ, অখনেধাদি প্রচলিত করিয়া স্ব সম্প্রদায়ীদিগকে চার্স্কাকগণের বিষাক্ত বাণ ও কঠিন ক্যাছাত সভ করিবার ভার অর্পণ করিয়া যান !; যাঁহারা & সমাজ-বিরুদ্ধ নান্তিকভাদি ¶ প্রবর্ত্তন বা প্রচার করিয়াও দেই সমাজের পুঞ্চাম্পদ ও শ্রদ্ধাম্পদ হইয়াছেন,ঈশবের অধীনত্ব অক্লেশে পরিত্যাগ করিয়াও কুটকময় বেদনিচয়ের চরণ-পাতুকার দাসামু-দাস বলিয়া আপনাদের পরিচয় দান করিয়াছেন এবং মানব-কুলের চিরাকা-জ্জিত অণচ মানব-বৃদ্ধির নিতান্ত অগম্য বিষয়ের 🖟 তত্তামুসদ্ধান অর্থাৎ স্থধ-অর্থের প্রকৃত পথ অরেষণ করিতে গিয়া নানাপ্রকার কুটিল ও জ্বটিল মার্গ অব-লঘন পূর্বাক আপনাদের কল্পনা-শক্তি প্রসারণ করিয়া স্বভাব-লব্ধ বৃদ্ধি-প্রভাবকে অনেকাংশে স্বপ্ন-ক্লিড বা মন্নীচিকা-দৃষ্ট পদার্থ-গ্রহণ-চেষ্টার স্থায় বিফল ক্রিরা গিয়াছেন ও বিচার-বলে পরম্পার পরম্পারের মত অনে কাংশে অসিদ্ধ বা মিথ্যাভূত कविया जुलियार्ह्म : याहावा * * घनाथात्व कविष्-भक्ति अवर्मनश्रक्त मनगर ও বাস্তবাৰান্তৰ অশেষবিধ উপাথ্যান সঙ্কলন এবং কাৰ্য্য, ইতিহাস ও ধর্ম-শাস্ত্র একত্র সন্মিলন করিয়া বহুবিধ বিজাতীয় বিষয়ের এক একটি সূচাক স্থবুহুৎ বাক্য-ন্ত,প প্রস্তুত করিয়া যান ; যে সমস্ত কপট বাাগ 🕇 🕇 পুরাতন পুরাণ শব্দ অবলম্বন দ্বারা নৃতন বিষয় কল্পনা বা পুরাতন বিষয়ের নৃতন বেশ-বিভাস পূর্বক উল্লিখিত কবিগণের ভায় একটি মবেন-পরিচিত লোক-রম্বন ধর্ম-প্রণালীর প্রচা-রণ-উদ্দেশে পূর্ব্বপুরুষদের পূঞ্জিত প্রাচীন দেবগণকে তদীয় উচ্চ পদ হইতে

^{*} यान यळानि कर्म ।

[†] উপনিষৎ:**প্রণেতা পণ্ডিত**গণের।

[‡] ৫০ ও ৫৪ পৃষ্ঠ' দেখ।

[§] সাংখ্য মীমাংসাদি কতকগুলি দর্শন প্রব গ্রক।

१), २), २६, २७, 8) ७ ७ १ हो।

[🛚] ই খরের স্বন্ধপ-জ্ঞান ও জীবের মৃক্তি-দাধন প্রভৃতি।

^{🌞 🛊} রামারণ ও মহাভারত-কর্তারা।

^{† †} প্রচলিত পুরাণ ও উপপুরাণরচয়িভারা।

অবনত করিয়া তৎপরিবর্ধে আপনাদের অভিমত অভিনব দেবগণকে প্রতিষ্ঠিত করেন ও বাঁহাদের সম্প্রদায়-ভূক শাস্ত্র-বাবসায়ীয়া * ব্যাসাসনে উপবেশন ও বাক্পট্ডা, স্থর-মাধুর্য্য ও সঙ্গীত-গুণ-প্রভাবে শ্রোতৃগণের অন্তঃকরণ হরণ করিয়া আবাল বৃদ্ধ বনিতা সকলেরই শ্রদ্ধান্সদ ও প্রণয়ান্সদ এবং কেহ কথনও বা ব্যবহারদায়ে অভিমাত্র অশ্রদ্ধার আন্দাদ হইয়া থাকেন; যে, সমস্ত চির্দ্ধিত অপবিত্র আন্দাদ-ব্যাপার জন-সমাজে ঘূণিত ও নিন্দিত হইয়া আসিয়াছে, বাঁহারা † ধর্মছলে সেই সমস্ত অধর্মায় আমোদ-তরঙ্গে শরীর ও মন স্থাধে সম্ভারিত বা একেবারে নিমজ্জিত করিয়া দিয়াছেন ও বিশেষতঃ এদেশে বিলাতীয় পান-দোষ প্রাহৃত্তি হইবার পূর্ব্বে, বাঁহারা বাঙ্গালা কবিগণের উপমা-সামগ্রী কল্পনার মত অন্তঃসলিল স্থরাসরিৎ প্রবাহিত করিয়া গিয়াছেন; যে সমস্ত লোক-পূজ্য ভূদেব শিক্ষাগুরু ‡ বিচারস্থলে শিন্তীচার-লঙ্গন বিষয়ে অশিক্ষিত ছর্নীত সম্প্রদায়কে পরান্তর করেন, এমন কি, শিথিল বা স্থালত-কছে ছইয়া নিতম্বদেশ পরিঘর্ষণ বা কথন কথন হঠাৎ উল্লন্্যন, এক টু কাটব্য উচ্চারণ ও হট-কোলাভ্ল অতিক্রম পূর্ব্বক অগ্রসর হইয়া মহাব্যাপকতা সহকারে মল্লবুদ্ধের ভাব প্রদান করিতে থাকেন, গানেই সমুদায়েরই সাম্প্রদায়িক ধর্ম ও মত-প্রণালী

- * বাঙ্গালা-দেশীর ৰুণকেরা।
- 🕇 কুলাচার-পরারণ শাক্তাদি-সম্প্রদারীরা।
- ‡ বাঙ্গালা.দেশীর স্মৃতি-স্থারশাস্ত্র-ব্যবসারী পণ্ডিতগণ।
- শ বাঁহারা বিচার-ছলে এইরূপ উচ্চৈঃছরে আফালন ও সদর্প ৰাক্য বিস্তার করেন, তাঁহাদের উপাধি কি জান ?—দাপাং। উটি কি জয়রর শব্দ। সিংহের নাদ ও ব্যাদ্রের পর্কান বুবি তত জয়নক নয়। এদেশে অধ্যাপকের দাপাতি ও ওতাদি কবিদলের গলাবাজি অতি প্রশাসনীয়। একবার একটি বড় কোতুককর কথা গুনিরাছিলাম। এক ব্যক্তি বিচার-ছলে আপনার উত্তরীয় বত্রে কিঞিং ছর্কা বন্ধন করিয়া লইয়া ধান। উজ্রূপ আফালন সহকারে অনেক কটু কাটব্য-প্রয়োগের পর বিচার করিছে করিছে সেই ছুর্কামুট্ট হল্তে করিয়া প্রতিপক্ষকে বলিতে লাগিলেন, 'থা, খা, তুই গোরু, খা এই ঘাস থা, এই ঘাস থা।' যাহা হউক পূর্ককালে দাপাতের ছাত্র না হয় দাপাংই হইত; কিন্তু এখন যে কত শত ইংরেজের শিষ্য আকালি হইতেছে ইহার উপায় কি ?

এবং তৎকর্ত্ক রচিত, সঙ্কলিত । বা অবলম্বিত শাস্ত্রের সংক্ষেপে কিছু হি প্রসঙ্গ করা হইরাছে। উপক্রমণিকাংশের আরও কিছু অবশিষ্ট রহিল সম্প্রদায় বিবরণের মধ্যে প্রসিদ্ধ পঞ্চোপাসকের বৃত্তান্ত একরপ নিহি হইরাছে। তদ্ভির, নানকপন্থী, শিবনারায়ণী, জৈন প্রভৃতি যে সমস্ত উপাস সম্প্রদায় ঐ পঞ্চোপাসকের মধ্যে পরিগণিত নর, সেই সমুদায়ের বিবং এবং যে প্রাক্ষধর্মের সম্পূর্ণ ও বিশুদ্ধ ইতিহাস এ পর্যান্ত বিরচিত হয় নাই তাহারও প্রসঙ্গ অবশিষ্ট রহিল। যদি কথন এই উপাসক-সম্প্রদায়ের তৃতী ভাগ প্রকাশিত হয়, তাহাতে সেই সমুদায়ের কিছু কিছু ইতিবৃত্ত বিনিবেশি হইবে। এখন শরীরের যেরপ অবস্থা, তাহাতে এটি একটি ত্রাশামাত্র কিন্তু আশা ক্রগতের জীবন। আশা ইহলোক ও আকাশ-পথ অতিক্রম করিঃ উড্ডীয়মান হয়।

শরীরের বে প্রকার শোচনীয় অবস্থায় এত দ্র চলিল তাহা কি বলিব
না লিখন, না পঠন, না চিন্তন, না গ্রন্থ শ্রবণ কোনরূপ মানসিক ও শারীরিছ
কার্য্যেই আমি সমর্থ নই। ইহার কোন কার্য্যে প্রস্তুত মাত্রেই মানসিক ক
হইতে থাকে। এরূপ অবস্থায় এভাগের কি রচনা, কি শোধন, কি মুদ্রাক্ষ
যে কিছু কার্য্য অমুষ্ঠিত হইরাছে, তাহার প্রতি একটি বারও নেত্রপাত করিছে
পারি নাই *। অনেক সময়ে অনেকানেক প্রগাঢ় ভাব-সম্বলিত চিন্তা-প্রবাহ
উপস্থিত হইয়া মন্তিক্ষের স্বাস্থা-ক্ষর করিতেছে ক্ষণ্ঠ অমুভব করিভেছি, তথাদি
ভাহা,নিবারণ করিবার সামর্থ্য থাকে না। কন্ত হয় বলিয়া, অভ্যমনয় হইবার
উদ্দেশে নানা চেন্তা ও বিবিধ উপার অবলম্বন করি, কিছুতেই সে চিন্তা-স্থোত
মন্দীভূত হয় না। যতক্ষণ সে সমুদার এবং যাহা কিছু অভ্যরূপে জানিতে
পারি, ভাহাও লিপি-বন্ধ করা না হয়, ভতক্ষণ মন্তক্ষ মধ্যে হঃসহ যন্ত্রণা হইতে
থাকে। আমার কর্ম্মচারীকে অথবা অন্ত কোন ব্যক্তি নিকটে থাকিলে

^{*} যথন কোন সময়ে একবার দৃষ্টিপাত করিতে পারি নাই, তথন তরিবন্ধন দোবোৎপণ্ডি
না হইবে কেন ? স্থানে স্থাকন-দোব সংঘটিত ইওরাতে, আমাকে অতিমাত্র ছুংখিত
হইতে হইতেছে। পাঠকগণ! আমার সাতিশর শারীরিক ছরবস্থার বিষয় বিবেচনা করিয়া শে
বিষয়ে উপেক্ষা করেন এই প্রার্থনা।

তাঁহাকে লিখিয়া রাখিতে বলি। কেহ নিকটে না থাকিলে, যান-বাহন ঘারা দ্র-স্থিত বন্ধ-বিশেষের সমীপে গমন পূর্বক লিখিতে অনুরোধ করি। যাহার ষত্ব পত্ম জ্ঞান কিছুমাত্র নাই, অপার্যানাণে কখনা কখন এরপ অশিক্ষিত ও অযোগ্য লোকের ঘারাও লিখাইতে হইয়াছে। অর্ধরাত্রেও নিদ্রা-কাতর কর্মচারীকে আহ্বান করিয়া কতবার কত বিষয়ই লিখাইতে হইয়াছে। নত্বা উপস্থিত বিষয়ের পূনঃ প্রান্ধালন হইয়া সে রজনীতে নিজার সম্ভাবনা থাকিত না। মনোমধ্যে এরপ কোন বিষয়ের উদয়েও কট, হাহার চিন্তন ও আন্দোলনেও কট, নিজে দ্রে থাকুক, অন্ত ঘারা ভাহা লিপি-বন্ধ করাইতেও কট, এবং যে পর্যান্ত লিপি-বন্ধ না করা হয়, সে পর্যান্ত ভদপেক্ষা অধিক কট অনুভূত হইতে থাকে। সেই যন্ত্রণা নিবারণ-উদ্দেশেই লিপি-বন্ধ করাইতেও হইয়াছে এবং ইহাতেই ক্ষতীব অল্লে অল্লে প্রত্ব খানি একরপ প্রস্তুত হইয়াত্ত এবং ইহাতেই ক্ষতীব অল্লে অল্লে প্রত্ব খানি একরপ প্রস্তুত হইয়া

কোন বিষয়ের প্রমাণ-প্রয়োগ-উদ্দেশে কোন প্রস্থার্থ অবগত হট্বার প্রাহ্ম হইলে. ব্যক্তি-বিশেষের ছারা তাহা পাঠ করাইয়া শ্রবণ করিতে হর। তাহাই কি যে সে দিনে ও?যে সে সময়ে গুনিতে পারি ? না সমুচিত মন:সংযোগ করিতেই সমর্থ হই ? শরীরের অবস্থামুসারে দিন-বিশেষে ও সময়-বিশেষে ঔষধাদি ব্যবহার করিয়া তাহা শ্রবণ করিতে হইয়াছে। এই ক্লপ করিয়া কথন পাঁচ দাত গজি, কংন চুই চারি পাঁজি, কখন চুই চারিটি বা হুই একটি শব্দমাত্র এবং ক্লাচিৎ কিছু অধিকও বিরচিত হয়। সেই সমস্ত একত্র সংগ্রাহ করিয়া, উপাসক-সম্প্রদায়ের দ্বিতীয় ভাগের অধিকাংশ প্রস্তুত . হইয়াছে। সেই সমুদ্র বাক্য বে প্রথমে যথাস্থানে পর পর লিখিত হয়, পাঠক-গণ এরপ মনে করিবেন না। কোন বাকাটি কোন স্থানে বা কোন বাকোর পর বিনিবেশিত হইবে, উক্ত রূপে লিপি-বদ্ধ করাইবার সময় তাহা কিছুই ছিল পাকে না। সে সমুদায় যে দিবস একতা সকলন করা হয়, সেই দিনই বিলাট !! পুর্ব্বোক্তরূপে, শরীরের অবস্থামুসারে দিন-বিশেষে ও সময় বিশেষে তদর্থ ঔষধ বিশেষ সেবন ও অন্ত আতা নানাক্রপ প্রাক্তিয়া করিয়া বছ কটে সেটি কথঞিৎ সম্পন্ন করিয়াছি। এইরূপ বছ-কষ্ট-সাধ্য সম্বন্ধেও আবার কতবার কত প্রতিবৃদ্ধকট্ चित्राह्म। वनिव कि ? ध्यत्रभ विभएतत्र निवरम विभन्न किन्न का का कोन विवन्न

মনে স্থান পান্ন না, দেইরূপ দিবসে অক্সমনস্ক হইবার উদ্দেশে এই পৃস্তকের উপক্রমণিকাংশের অন্তর্গত রামমোহন রায় সংক্রান্ত প্রবন্ধের পাও লিপি শ্রবণ করি * এবং সেইরূপ বিপদের সময়েই ভারতবর্ষের পূর্বতন ও অধুনাতন অবস্থাবিষয়ক সন্দর্ভের † পূর্ব-লিখিত বাক্যগুলি যথাস্থানে একতা বিক্তন্ত করিয়া দিই।

এ অবস্থায় গ্রন্থ প্রণয়নের অভিলাষ করা অমুচিত ও অসঙ্গত কার্যা। ওদিকে চির জীবন নিশেষ্ট মনে কাল হরণ করাও অসহ। তাহা স্থির ভাবে মনে করাও তঃসহ বন্ত্রণার বিষয় ৷ এইরূপ সভটাপন্ন ছইয়া এই গ্রন্থপালের অভিলাষ করি এবং পূর্ব্ব-লিখিত কিয়দংশ বিভামান ছিল বলিয়াই, তাহাতে প্রবৃত্ত হইতে সমর্থ হই। যে শুভকর বিষয়ে একবার কৃত-সঙ্কল হইয়াছি, পার্য্যমানে দুরে থাকুক, অপার্য্যমানেও তাহা পরিত্যাগ করা আমার পক্ষে অতীব কটের বিষয়। এই নিমিত্তই এরপ করিয়া কার্য্যসাধন করিতে হই-मृ। हि । यथन श्वक्रकत कार्या मनः मःयांश कतिवात १४ अकरातिहे क्य हहेग. মনোহর পূর্ব্য-বাসনা সমুদর স্বপ্ন-কল্লিভ ব্যাপার হইয়া গেল, এবং অনেক বংসর একাদিক্রমে নানাপ্রকার চেষ্টা পাইয়াও যথন রোগের শান্তি না হইল, তথন কেবল ঔষধ-দেবন ও পথা গ্রহণ ছারা রোগের সেবার জীবনকেপ করা অপেক্ষায় এরূপ কট্ট স্বীকারও তৃপ্তির বিষয়। আমার পূর্ব অধ্যবদায়-বৃদ্ধির नष्टीवर्णं श्वत्रभ यदकि किर यांश अविभिष्टे हिल, छांश यति এहेकर कि क् कार्या-কর হইয়া থাকে, ভবে গুরুতর কল্যাণকর কার্য্য-সাধনের নিভান্ত অমুপযুক্ত এই বিষম শারীক্সিক জন্তবস্থান্ন তাহাও আমাকে সৌভাগ্যের বিষয় বলিয়া স্বীকার করিছে হয়।

এই ভাগের অন্তর্গত শৈবাদি-সম্প্রদায়-বিবরণের বছতর আংশ নৃত্র সংগৃহীত। ঐ সমুদার সম্প্রদায়ের অনেকগুলির একরপ বৃত্তান্ত পূর্বে তছ-বোধিনী পত্রিকায় প্রকাশিত হয়, কিন্তু তাহার পরে এত পরিবর্ত্তিত ও পরিবর্তিত হইয়াছে যে, এখানি একথানি স্বতন্ত্র পুস্তক বলিয়া উল্লেখ করিলে অক্সার বলা হয় না

[•] ७०--- १ श्री।

বাঙ্গালা দেশের অধিক লোকই শাক্ত। এথানে তন্ত্র শান্তেরও অপ্রত্তুল নাই। অভএব শাক্ত-ধর্মের বিবরণ সংগ্রহ করা অপেকার্কত সহজ্ব। শৈব-সম্প্রদারের ইতিবৃত্ত-সংগ্রহ-উদ্দেশে ন্যুনসংখ্যা ১৪০০ চৌদ্দশত শৈব উদাসীনের ব্যবহার অচক্ষে প্রত্যক্ষ করিয়াছি, বহু শতের সহিত ব্যাপক কাল একত্র সহবাস করিয়া তাহাদের ধর্মামুঠান সংক্রান্ত নানা বিষয়ের কথোপকথন করিয়াছি এবং সজ্জন সরল-অভাব উদাসীন পাইলে নিজ গৃহে আনয়ম পূর্বকে তদীয় মতামত শিক্ষা ও ক্রিয়ামুঠান দর্শন করিয়াছি। ঐ উদ্দেশে তাদৃশ সংখ্যক বৈষ্ণব উদাসীনেরও আচার ব্যবহার অবলোকন ও তাহাদের সহিত সংসর্গ ও সদালাপ করিতেও ক্রটি করি নাই। এইরপে, এই পৃত্তকের প্রথম ভাগে প্রকাশিত বৈষ্ণব-সম্প্রদায়-বিবরণের অতিরিক্ত যাহা কিছু অবগত হইতে পারিয়াছি, তাহা দ্বিতীয় ভাগে প্রকাশিত পরিশিষ্টাংশে বিনিবেশিত হইল। *

সন্নাসী, সংনামী, বীজমার্গী, পণ্ট্,দাসী, আপাপন্থী প্রভৃতির গুঢ় মন্ত্র ও শুন্থ ব্যাপার যেরপে সংগৃহীত হইরাছে, তাহা কি বলিব ? এরপ কার্য্য সাধন করিতে হইলে, সকলকেই বিশেষ যত্ন, সমধিক পরিশ্রম ও যথেষ্ঠ অর্থ বায় করিতে হয়। আমাকে তদভিরিক্ত এই জীবন্যুত শরীরেরও স্বাস্থ্য-ক্ষম শ্বীকার করিয়া আত্ম-সন্নিধানে অপরাধী হইতে হইরাছে। এই সমস্ত অঙ্গীকার করিয়াও, বিদ্ধানসমাজ-বিশেষের কোন অন্তর্ভূত মানসিক রোগের বিষয় কিছু নৃত্তন জানিতে পারিয়া থাকি, ;তবে সেটি, আমার সৌভাগ্যের বিষয় বলিতে হইবে।

এরপ অবস্থার কি কতদ্র হইল কি বলিব? আমার আর বলিবার কথা নাই। সকলই শোচনার বিষয়। অস্তঃকরণ বার্দ্ধক্য-দশায়ও নানাপ্রকার শুভকর বিষয়ে যৌবনোচিত প্রবল অমুরাগ-প্রভাবে সঞ্চরণ করিতে লাগিল, কিন্তু শরীর যৌবনাবধিই বার্দ্ধক্যকাল অপেক্ষা নিস্তেজ হইরা চিরদিন মৃতকর হইরা রহিল! আমার জরাজীর্ণ কম্পানন লেখনীকে নিজ হস্তে আর একটিবারও ধারণ করিয়া মনের ক্ষোভ নিবারণ করিতে পারিলাম না! আমার একটি পরম বন্ধু একবার আক্ষেপ করিয়া বলেন, যাহার হস্ত পুস্তকালভারে অলম্বৃত্ত না হইরা এক দণ্ড কাল অতীত হইত না, এখন বৎসর বৎসর ও মুগ যুগান্তর তদ্যতি-

ষতীয় সংকরণে ঐ সমন্ত যথাস্থানে সন্নিবেশিত হইয়াছে।

রেকে অতিবাহিত হইয়া বাইতেছে ৷ বোড়শ বা সপ্তদশ বংসর বয়:ক্রমের সময়ে রীতিমত শিক্ষারত * করিয়া, প্টতিশ বংসর বয়:ক্রম অতীত না হুট্ডেই, চুর্ব্বয় রোগপ্রভাবে চির দিনের মত অসমর্থ ও অকর্মণ্য হইয়। পড়িলাম। যে সময়ে মনোমত কার্য্য-সাধনের কেবল উল্ফোগ পাইতেছিলাম, সেই সময়ে চিরঞীবনের মত গুরু লঘু সকল কর্মেই অক্ষম হইলাম। তদবধি আমার বাসনারপ বৃক্ষ-বাটিকায় আর না পুশা না ফল কিছুই উৎপন্ন হইবার সম্ভাবনা রহিল না: শাখা পলবাদি সমস্ত শুদ্ধ হইয়া গেল। কোণায় বা প্রকৃত প্রস্তাবে বিজ্ঞান-বিশেষের বিশেষরূপ অনুশীলন পূর্বক তল্পিয়ক অভিনব তল্পানুসন্ধান-চেষ্টা †, কোথায় বা ভূমণ্ডল অথবা ভদীয় ভূরি ভাগ সন্দর্শন-বাসনায় এক এক বারে বছবিধ বর্ষার-নিবাস, স্থপাচীন মানব-কীর্ত্তি এবং অপুর্ব্ধ নৈদর্গিক সামগ্রী ও অন্তত নৈদর্গিক ব্যাপারাদি-বিশিষ্ট বিস্তৃত ভূথগু পরিভ্রমণ, কোথায় বা আপনাদের শারীরিক ও মানসিক উভন্ন প্রকৃতির যুগপৎ সমোন্নতি-সাধন-ত্রতে ব্রতী স্বদেশীয় সম্প্রদারবিশেষ-প্রবর্তনের অভিনাষ এবং কোথায় বা বিজ্ঞান, দর্শন, ও ভারতবর্ষীয় পুরাবৃত্ত বিষয়ক বিবিধ গ্রন্থ প্রণয়ন ও খনেশ-সম্বনীয় নানাপ্রকার হিভামুষ্ঠান-কামনা রহিল ৷ সকলই বাম্পীভূত হইয়া গেল ৷ সকল বাসনাই নিৰ্দ্য হইল ৷ অঙ্কুরেই আঘাত ঘটিল ৷ আমার হ্রদয়ত্ব পুলোভানটি একবারেই শুক হইয়া পেল।

जों सक्ष कंदे उग्तेहि पैरों के तले हम्। इस् गर्दिश अफ़लाक् से फूले न फले हम्॥

একটি তৃণাস্কুর উব্ধিত হইতে হইতে পদতলে পতিত হইলে যেরূপ হর, আমি সেইরূপ হইয়ছি। এই হুক্রিববশতঃ না পুজোদয় না ফলোদয় কিছুই হইল না।

দে সময়ে নিজ নিজ শ্রেণীর উচ্চস্থানে উপবেশন ও বৎসরাস্তে পারিতোষিক লাভ মাত্র যে
রীতির উদ্দেশ্য ছিল, সেই রীতির অনুযারী শিক্ষারস্তা।

[†] ভূতত্ব বা উদ্ভিদ্-বিদ্যা অবলম্বন করিবার অভিলাষ ছিল। তাহার স্ব্রেপাত করিতে প্রবৃত্ত হইরাছিলাম মাত্র। একবারেই অপরাপর সকল বাসনার সহিত সে বাসনাও নির্দ্ধ ল হইরা গেল।

चरमान् बहुत् रख्ते ये हम् दिल् के चमन् में। बैठे न खुशी से कसु साये के तले हम्॥

আমার ক্ষম্ম রূপ উন্থানে অনেকরপ স্থা-বাসনা ছিল। কিন্ত আমি কথনও মনের আহলাদে বৃক্ষছোরায় উপবেশন করি নাই।

भाषांस् के इस् दिल्का कंवल् खिल्ने न पाया। कोयि दिनको चले जातेष्ठें माटीके तले इम्॥

আমার এই হৃদয়-কমল প্রক্ষাতি হইতে পাইল না এইটি আক্ষেপের বিষয় ় আমি কিছু দিনের মধো ধ্লিগার হইতে চলিয়াছি।

श्रव पैन्नलेन्टि श्रागाज्मे पामाल् इये हम्। फरयाद करें किस्मेति किस्मत्के जले हम्॥

আমি প্রথমেই বিনষ্ট হইলাম। কাহার নিকট আবেদন করিব ৈ ভাগ্য-দোষেই দগ্ধ হইতেছি।

ভারতবর্ষীয় উপাসক সম্প্রদায়ের দ্বিতীয় ভাগ প্রচারিত না হইতে ইইতেই ইহার একটি হর্ষ-বিষাদের ব্যাপার উপস্থিত হইয়া গিয়াছে। ১৮০০ আঠারশ শকে ব্রাক্ষেরা রামমোহন রায়ের শ্বরণ-উদ্দেশে একটি সভা কবিবার বিষয় বিজ্ঞাণন করিয়া দেন। তাহার এক বংসর পূর্ব্বে এই পৃস্তকের মধ্যে প্রসঙ্গ ক্রমে, তাঁহার সংক্রান্ত ক্ষেক পৃষ্ঠা, লিখিত ও মুদ্রিত হয়। তাহাতে তাঁহার গুণ-কীর্ত্তন সহকারে তাঁহার প্রতি ভক্তি শ্রদ্ধা ও ক্বতজ্ঞতা প্রকাশ-উদ্দেশে তদীয় প্রতিভ্রিপ্তি-প্রতিষ্ঠা ও সবিশেষ জীবনব্তান্ত-রচনার্থ অন্থ্রেয়ধ করা হয় *। মুদ্রিত হইবার সম্বে, আমার প্রমান্ত্রীয় শ্রীযুত বাবু কৈলাসচক্র বোষাল ও গিরিশচক্র বোষাল মহাশ্রেরা তাহা পাঠ করেন। † করিবার সম্বের তাঁহাদের অন্তঃক্ষরণ

^{*} अम् अ अ अधि।

⁺ গিরিশ বাবু এই প্তকের প্রক-শোধনের সময় তাহা দৃষ্টি করেন। রামমোহন রামের প্রতি কৈলাস বাবুর সাতিশর ভক্তি-শ্রদ্ধা আছে জানিরা, আমি তাহাকে সেই প্রবন্ধটি পাঠ ক্রিতে দিই।

এরপ আর্ত্রি হয় বে, তাঁহারা অঞ্জল সম্বরণ করিছে সমর্থ হন নাই। উক্ত ममात्र वह श्रवकृषि मर्क माधात्रामत शांठत इहेटन विरम्भ उपकात प्रमिवान সম্ভাবনা বিবেচনা করিয়া, তাঁহারা ঐ শকের ১৬ই পৌষের সোমপ্রকাশে ভাহা প্রকাশার্থ প্রেরণ করেন। সেই প্রবন্ধটি প্রকাশিত হইল; পাঠ করিয়া জন-সমাজে তাঁহার গুণ-প্রাম ও পুণ্য-কীর্ত্তির বিষয় সাতিশয় ঔংস্কা সহকারে আন্দোলিত হইতে লাগিল, উল্লিখিত বিষয়ে সমধিক উৎসাহ-বৃদ্ধি ও উক্ত সভায় অসাধারণ লোক-সমাগম হইল, রামমোহন রায়ের গুণ-কীর্ত্তন-উপলক্ষে ঐ প্রব-ষটি অভিশয় আগ্রহ ও যথোচিত অমুরাগ প্রকাশ পূর্বাক পঠিত হইল, প্রবণ করিয়া শ্রোতগণের ভক্তি শ্রদ্ধা উচ্ছ সিত ও অশ্রুক্ত অনিবার্য্য হইয়া পড়িল * এবং উক্ত প্রবন্ধে লিখিত অভিপ্রায়ামুদারে সভাত্ব ভদ্রলোক সকলে রামমোহন রাম্বের প্রতিমূর্ত্তি-সংস্থাপন ও সবিশেষ জীবন বুত্তান্ত-প্রকাশার্থ উৎসাহিত ও কৃত-সম্বন্ধ হুইলেন। হর্ষের বিষয় এই যে. কোন সদাশয় ব্যক্তি অনজি-বিলম্বে বাঙ্গালা ভাষায় উক্ত মহাত্মার চরিত বিষয়ক একথানি গ্রন্থ রচনা করিয়া প্রকাশ করিয়াছেন এবং অপর কোন তাদৃশ হিতৈষী ব্যক্তি সবিশেষ অমুসন্ধান পূর্বক ঐ মহামুভব ভারত-বন্ধুর সবিশুর জীবন-বুতান্ত সংগ্রন্থ করিয়া প্রচার করিতে সমধিক যত্নবান রহিয়াছেন। বিষাদের বিষয় এই যে, প্রতিমৃত্তি-প্রতিষ্ঠার কোন সম্ভাবনাই দেখিতেছি না। বছদিন ব্যাপিয়া সে বিষয়ের অফুশীলন ও কল্পনা হয়। আমার পরমাত্মীর কোন কোন ব্যক্তি আমাকে লিখিয়া পাঠান, "এ বিষয়ের নিমিত্ত সর্কাসাধারণের একটি সভা হইরা রামমোহন রারের পাষাশময় প্রতিমৃত্তি নিশ্বাণের প্রস্তাব হইবে।" † অনেকানেক উৎসাহী ব্যক্তি উৎসাহ সহকারে আমারে বলিয়া বান, রামমোহন রায়ের প্রতিমৃত্তি আপনার অভিপ্রায়ামুসারে বেন্টিছ -মহোদরের দকিণ হত্তের দিকেই প্রতিষ্ঠিত করা আমাদের সঙ্কা। কিছু দিন পরে ব্রহ্মণমাঞ্জ হইতে मःवान शाहे, व्यविनास्ट o विषयात्र व्यक्ष्मान ७ উन्यां कहेरत । oकवात oह বিষয় সম্পাদনার্থ একটি সভা হয়, তাহার কার্যা-প্রণালীর নিয়ম নির্দ্ধারিত হয়, ভিন্ন ভিন্ন কর্মচারী নিযুক্ত হইয়া এক এক জন তৎসংক্রাস্ত এক এক বিষয়ের ভার গ্রহণ করেন এবং সভার বৃত্তান্ত সর্ক্রসাধারণের গোচর-করণার্থ সংবাদ-

^{*} नर्मालांहक। ১২৮९ नाल ১२ है बार ।

[🕇] ত্রীবৃক্ত রাজনারারণ বহু বাবুর পত্রাদি।

পত্তে প্রকৃতিত হইরা অনেশান্ত্রাগী ক্তন্ত লোকের অন্তঃকরণে আশা-প্রবাহের সঞ্চরণ হইতে থাকে। কিন্তু আরু যত্ত্ব নাই, চেষ্টাও নাই, বুঝি ইচ্ছাও নাই। সকলই অপ্ত-করিত ব্যাপার হইল।—সকলই অপুস্প হইয়া গেল।

এটি যদি একটি খাত্যাপন্ন ইংরেকের প্রতিমূর্ত্তি নির্দ্ধাণের সঙ্কল হইত, তাহা হইলে কত নানাপদস্থ ভূম্যধিকারীর বিস্তৃত ভূমম্পত্তির উপস্থ, কত রাজ্য-শুক্ত রাজোপাধিকের রাজস্ব-ভাগ, কত কর্মচারিত্ব-পদের বেতন-মুদ্রা, কত বাণিজ্ঞা-ৰাবসাৰের লাভাংশ ও কত কত অভ্যমত স্বাধীন বৃত্তির আয়-টক মুহূর্তমাত্রে দান-পুত্তকে অন্ধিত ও অবিশয়ে একতা রাশীকৃত হটরা কার্য্য সাধন করিয়া দিত। অথবা রামমোহন রায়েরই স্বরণচিক্ত-সংস্থাপনার্থ যদি একটি সম্ভ্রাস্ত ইংরেজ **উদ্যোগী इटेंट** जन, তाहा हटेंटन ও কোন কালে टेहा मन्नान हटेश याहे छ। जमीन অমুরাগ ও প্রসাদ-লাভ-প্রার্থনাতেই অক্লেশে সমুদায় স্থসিদ্ধ করিয়া তুলিত। আমাদিগকে ধিক !--শত ধিক !---সহত্রবার ধিক ! এমন ফুদিশাপল হইরাও হিন্দু জাতির চিরস্থায়ী হইবার ইচ্ছা আছে ! সধন আমার বাবে বাবে ভিকা করিবার সামর্থ্য নাই, তথন এরূপ ধিকার-উচ্চারণ ও আর্ত্তনাদ-প্রকাশ করা শোভা পায় না। কিন্তু আগ্নেয়গিরির অগ্নংপাত ও জলস্ত দাবানলের স্থণীর্য শিখা-সমূলাম কে নিবারণ করিতে পারে ? প্রচুর বারি-বর্ষণ না হইলে, দাবানল জ্ঞাপন আধারকে ভত্মীভূত না করিয়া নিরন্ত হয় না। ভিক্ষা দূরে থাকুক, চেষ্টা দুরে থাকুক, বাক্যক্ষুরণেরও শক্তি নাই! পূর্ব্বোক্ত পঁক্তি গুলি আমার চিতা-ভক্ষের অন্তর্গত অগ্নি-ফ ুলিঞ্চ বই আর কিছুই নয়। তাহাতে কুত্রাপি किছু উৎসাহানল উদ্দীপন করিলে, সৌভাগ্যের বিষয় হইত। উৎসাহ প্রদীপ্ত হইল; ইতন্তত: ভাহার উদ্ভাপও অমুভূত হইল; কিছু তাল পত্তের অগ্নি; श्रीश हरेबारे निर्साण हरेबा श्रीण । जकलरे चारकरणत विषय । मनखाल । মনন্তাপ ! মনন্তাপ ! অনেকে শৃগাল-প্রতিমা নির্মাণ করিয়া পূজা করিবেল, তথাচ সিংহ-প্রতিমৃত্তি-দর্শনে অমুরাগী ও উদ্যোগী হইবেন না। এদেশে মানব-প্রকৃতির কি বিকৃতি ও বিপর্যায়ই ঘটিয়াছে !—ও ইয়ুরোপ ! ও আমে-রিকা! একবার এদিকে নেত্রপাত কর! যদি রামমোহন রারের খদেশীয়-বর্গের কতদুর অধঃপাত ঘটিতে পারে দেখিতে চাও, তবে আমাদের প্রতি এক-বার দৃষ্টিপাত কর! উত্তম পদার্থ কিরুপে অধম হয়, উচ্চাশর কিরুপে নীচাশর

হয় ও মনুষ্য-দেহ কির্নপে অমামুখের আধার হয়, তাহা একবার আমাদের গুভি নেত্রপাত করিয়া দৃষ্টি কর! পর্মত কির্নপে গহরে হয়, হীরক কিরপে অঙ্গার হয় ও লম্ভ কান্ত কির্নপে ভঙ্গ-রাশিতে পরিণত হয়, তাহা একবার এই বর্তুমান অরুভক্ত নরাধ্য জাতির প্রতি নেত্রপাত করিয়া দৃষ্টি কর!!!

বালিগ্রামের শোভনোত্মান। } ১৮•৪ শকাক: ৮ই চৈত্র।

শ্রীঅক্ষয় কুমার দত্ত।

ভারতবর্ষীয় উপাসক-সম্প্রদায়

শৈব-সম্প্রদায়।

এই পুস্তকের প্রথমভাগে বৈষ্ণব-সম্প্রদায়ের বৃত্তান্ত সংক্ষেপে বর্ণিত হইয়াছে। ভারতবর্ষে ঐ সম্প্রদায় অভাব প্রবল; কিন্তু শৈব-সম্প্রদায়ও সামাগ্য প্রবল ও তদপেক্ষায় অল্প প্রাচীনও নয়।

ৈ শৈব-ধর্ম-প্রচারের যেরপে প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া বায়, ভাষাতে বোধ হয়, শিবের উপাসনা বিফুর উপাসনার অপেক্ষায় কোন মতেই অপ্রাচীন হইবার বিষয় নয়। পৌরাণিক ধর্মের সূত্রপাতেই শিব উপাসনার আরম্ভ হয়। বেল ও বৈদিক-ধর্মাত্র-প্রভিপাদক শাল্র ব্যতিরেকে রামায়ণ মহাভারভাদি অপরাপর সমুদায় শাল্রেই শিব-প্রসঙ্গ
এবং শিব ও শক্তির মাহাত্ম্যু বর্ণন আছে। শূল্রকের রুভ মুচ্ছকটিক
এবং কবি কালিদাসের রুভ অভিজ্ঞানশকুন্তল প্রভৃতি গ্রন্থ প্রায়
প্রচলিভ অক্ত অক্ত সমুদায় সাহিত্যের অপেক্ষা প্রাচীন। এ সকল
প্রান্থের মধ্যে তাঁহাদের সময়ে শৈব-ধর্ম-প্রচার থাকিবার বহুতর
নিদর্শন লক্ষিভ হইয়া থাকে। এমন কি, প্রথমেই শিব-সংক্রান্থ
বিষয়ের প্রসঙ্গ সহকারে এ সকল নাটকের আরম্ভ হয়, এবং এ
সমুদায়ের কোন কোন গ্রন্থে শিবের অফুমূর্ত্তি ও তাঁহার বিশেষ
বিশেষ সংজ্ঞা প্রভৃতি অনেক বিষয়ের সবিস্তর্ব বর্ণনা আছে *।

^{*} पातु वी नीलकण्डस कणः स्थामान्तु दीपमः ।
गौरीभुजलता यव विद्यान्नेखेव राजते ॥
स्वाहिकं नास्टी।

কালিদাস-প্রণীত কুমারসম্ভব কেবল শিব-তুর্গারই লীলা-ক্**থ**ন ও গুণ-কীর্ত্তন মাত্র।

প্রামাণিক ইতিহাস ও অস্থা অস্থা সম্ভবপর কথা-প্রমাণেও শিবপ্রার প্রাচীনত্ব স্থালররপ প্রতিপন্ন হইতেছে। মুসলমানের। যে
সময়ে ভারতবর্ষ অধিকার করেন, সে সময়ের হিন্দুধর্ম অনেকাংশে
প্রায় এক্ষণকার মতই ছিল। ১০২৪ দশ শত চবিবল খৃফীব্দে স্থলতান মামুদ সোমনাথ নামক শিব ও তদীয় মন্দিরের বেরূপ বিষম
ত্রবস্থা উপস্থিত করেন, তাহা স্থাশিক্ষিত লোকের মধ্যে কাহারও

গৌৰীর বিহ্যাল্লেখা সদৃশ ভূজ-লতার শোভিত যে, মহাদেবের খ্যামবর্ণ জলদ ভূল্য কঠদেশ, ভাহা ভোমাদিগকে রক্ষা করুক।

एशाशि वाश् शिलिशि ग्गहीदा
केशेश वालेश शिलोलुहेश ।
भक्कोश विकोश लवाहिचण्डं
गन्भं शिवं शङ्कलमीश्रलं वा (१) ॥
मृच्छकटिकं प्रथमाङ्कः ।

এই বে বালা! তোমাকে কেশাকর্ষণপূর্বক ধৃত করা হইল। এখন রোদন কর, চীৎকার কর, এবং উঠিচস্থরে শস্তু, শিব, শহর, বা ঈশ্বরকে আহ্বান কর।

^{(&}gt;) धरे ध्वाङ्गण स्नाटकत्र मश्त्रुष्ठ असूराष वथी--
एवासि वाला श्रिरसि यसीता

केशेषु वालेषु श्रिरोबस्य ।

श्राक्रीश विक्रीश लपाधिचन्छ'

श्रभु' श्रिवं श्रक्षरमीत्रियं वा ॥

অবিদিত নাই। উহারও কত শতাব্দী পূর্বেব যে শিবের উপাসনা বহুলরপ প্রচলিত ছিল, সেই সেই সময়ের শিল্প-লিপি * ও প্রচলিত মুদ্রায় শিবনাম ও শিবরূপের সন্ধিবেশে তাহা অসংশরিতরূপে সপ্রমাণ করিয়া রাখিয়াছে গ। খৃষ্টাব্দের অপ্তম শতাব্দীর শেষে অথবা নবম শতাব্দীর প্রথম ভাগে শ্রীমান্ শক্ষরাচার্য্য স্বীয় মত-প্রচারে প্রবৃত্ত থাকেন। তাঁহার শিষ্য আনন্দগিরি স্বকৃত শক্ষরদিয়িজয়ে সে সম্বর্ষর প্রচলিত শিবাদি প্রায় সমুদার পৌরাণিক দেবতার উপাসনার বিবয় স্কুম্পেষ্ট বর্ণন করেন।

মেওয়ারের পশ্চিম ভাগে শিরোহি প্রদেশের অর্ব্রুদ-পর্ব্বত শিব-মন্দিরে খচিত রহিয়াছে। তাহাতে কতকগুলি শিল্প-লিপি খোদিত আছে। তন্মধ্যে সম্বৎ ৭২৭ সাত শত সাতাইশ অবধি ১৮৭৭ আঠার

या स्रष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिद्वतं या हविर्या च होत्री

ये हे कालं विधन्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विष्यम् ।

यामाद्यः सर्व्ववीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः

प्रत्यचाभिः प्रसन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीयः ॥

प्रभिद्यानयकुन्तसम् ।

জন, অগ্নি, বল্পমান, ক্র্যা, চক্র, জাকাশ, পৃথিবী, এবং বায়ু এই প্রত্যক্ষ অষ্ট-মূর্জি-বিশিষ্ট মহাদেব প্রসন্ন হইরা ভোমাদিগকে রক্ষা করুন।

- * অর্থাৎ খোদিত লিপি।
- † H. H. Wilson's Ariana Antiqua, Asiatic Researches, Journals of the Asiatic Society of Bengal, Journals of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland ইত্যাদি প্রস্থ দেখিলে এই বিবনের বহুতর প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া বাইবে।

শত সাভাত্তর পর্যাস্ত অর্থাৎ ৬৭১ খৃফীব্দ অবধি ১৮২১ খৃষ্টাব্দ পর্যাস্ত ১১৫০ এগার শত পঞ্চাল বৎসরের অনেক লিপিতে শৈবধর্ম্মাবলন্দ্রী অনেকানেক নৃপত্তি প্রভৃতির বিবরণ আছে *।

ধে বে বংসরে বে ধে রাজাদির সময়ে ঐ শিল্পলিপি সম্লায় প্রস্তত

হয়, তাহার বিবরণ।

| সম্বৎ | খৃষ্টাব্দ | (व (व त्रांकांनित नगरत (नवां हम्। | |
|---------------------|-------------------------|--|--|
| 121 | 4 95 | | |
| >२७ ६ | 74.7 | ভীম | |
| 2 a 8 5 | > > | ভেন্ধ সিংহ | |
| ५७ ८२ | ১ २৮७ | সমর সিংহ | |
| 309 9 | 2052 | লু শ্বগর | |
| 200 g | ১৩ ৩১ | তেজ্বসিংছ | |
| ኃቃ ል8 | ১৩৩৮ | करूत्र (म व | |
| >8 \8 | >8∘₽ | র ্বেল | |
| 78 @À | >8> 2 | | |
| >650 | >8 ७ 9 | | |
| >& ₹8 | >864 | | |
| 7400 | >699 | মানসিংহ | |
| >68 | 2690 | স্থৰতন | |
| 2985 | ১৭৩৬ | | |
| とという | ३१ ৫७ | कटलह निरह | |
|)P.p. | 2P.8 | | |
| >>90 | P64 ,c | | |
| >>14 | 4146 | দেওনিং হ | |
| > | >><> | | |
| | | | |

চীন-দেশীয় ভীর্থ যাত্রীরাও এবিষয়ে সাক্ষা দান করিয়া গিয়াছেন। প্রফাব্দের ৭ম শতাব্দীর প্রথম ভাগে * হিউএনথ সঙ্গ নামে একজ্ঞন স্থপণ্ডিত চীন, তীর্থভ্রমণ উদ্দেশে ভারতবর্ষে আগমন করেন। তাহার সবিশেষ বৃত্তান্ত চীন ভাষায় লিখিত আছে, এবং কিছদিন হইল. ইয়ুরোপে নীত হইয়া স্তানিস্লা জ্লিএঁ নামক ফরাসী পণ্ডিত কর্ত্তক ফরাসী ভাষায় অমুবাদিত হয়। ঐ চানদেশীয় যাত্রী কাশী, কান্সকুজ, করাচী, মালোয়ার গান্ধার অর্থাৎ কান্দাহার প্রভৃতি বিবিধ স্থানে শিব ও শিব-মন্দির দর্শন করেন এবং তাহার মধ্যে কয়েক স্থানে পাশুপত নামক বিভৃতি-সংযুক্ত শৈব-সম্প্রদায়ী লোক দেখিতে পান। তিনি কাশীধামে গিয়া স্থল্পর স্থল্পর কুড়িটি মন্দির ও একটি সর্ববা-বয়ব-সম্পন্ন শিব-মূর্ত্তি দর্শন করেন। ঐ মূর্ত্তিটি পিত্তলময় ও ন্যুনাধিক ছন্নষট্ট ছাত দীর্ঘ। চীন পুণ্ডিত লেখেন, ঐ শিব-মুর্ত্তি দেখিতে অতীব গান্তীৰ্ঘ্য-শালী এবং দেখিলে. অদ্যাপি জীবিত বোধ হইয়া যুগপৎ ভয় ও ভক্তি উপস্থিত হয়। তিনি তথায় ভস্মাবৃত-কলেবর পাশুপত, বিবন্ধ জটাধারী নিপ্রস্থি ও অস্থ অস্থ শৈব-সম্প্রদায় দৃষ্টি করেন। তিনি স্থান-বিশেষে শিব-শক্তির উপাসনাও প্রচলিত দেখিয়া যান। অযোধ্যা হইতে গঙ্গা দিয়া পূৰ্ব্বমুখে আসিতে আসিতে তুর্গাভক্ত-দম্মাগণ কর্তৃক আক্রান্ত হন। তাহারা প্রতিবৎসর একটি কৰিয়া নরবলি দিত এবং সেবার ঐ চীন-দেশীয় বৌদ্ধ ভীর্থযাত্রীকে বলি দিবে স্থির করিয়াছিল: কিন্তু সহসা একটি ঝড় উপস্থিত হও-য়াতে, ভাহারা ভীত হইয়া দে সকল্প পরিত্যাগ করে।

উল্লিখিত চীন-দেশীয় ভার্থ-যাত্রীর ভারতবর্ধ-ভ্রমণের কিঞ্চিদধিক

ভিনি ভীর্থ ভ্রমণ করিয়া ৬৪৫ ছরশত পরতায়িশ ঐাষ্টাব্দে বাদেশে
 ফিরিয়া বাম।

অর্দ্ধ শতাব্দী পূর্বেব ক্যোতির্বিদ বরাহমিছির প্রাত্নভূত হন *।
তিনি একখানি গ্রন্থে সে সময়ের হিন্দু ধর্ম্মের অবস্থা বর্ণন করিয়া
যান এবং এক জন আরবায় গ্রন্থকার সেই বিষয়টি অমুবাদ করিয়া
রাখেন। তাহাতে কেবল শ্রীক্ষণ্ডের উপাসনার কিছু উল্লেখ নাই,
তন্তির শিবাদি ও অস্থা অস্থা পৌরাণিক দেবতার আরাখনা সে সময়ে
প্রায় এক্ষণকার মতই প্রচলিত ছিল বলিয়া বর্ণিত আছে পি।

মৃচ্ছকটিক নাটকে যেরপ প্রাচীন আচার ব্যবহার ও বৌদ্ধর্ম্মের যেরপ প্রাত্মভাব বর্ণিত রহিয়াছে, তাহাতে ও খানি সাহিত্য-শাল্পের মধ্যে একখানি অতি প্রাচীন পুস্তক না হইয়া যায় না। উহার রচনা-কাল নিশ্চিত নিরূপণ করা স্ফুক্টিন, তবে উহা থুফাব্দের প্রথম দুই তিন শতাবদীর অপেক্ষায় যে ইদানীস্তন নয়, একথা অক্লেশেই বলিতে পারা যায় ‡। ঐ প্রন্থে নানক নামে একরূপ স্থল-মুক্তার উল্লেখ

- ভারতবর্ষীর উপাদক-সম্প্রদায়ের প্রথম ভাগের উপক্রমণিকার ৫২
 পঠা দেব।
- † Journal Asiatique, Tome VIII, IVe Serie, October 1846, p. 305.
- ‡ মৃচ্ছকটিক নাটক শুদ্রক রাজার প্রণীত বলিয়া লিখিত আছে; কিন্ত উহা তাঁহার নিজের ক্বত কি তাঁহার অনুমত্যন্ত্সারে কোন পণ্ডিত কর্ভ্ক বিরচিত তাহা বলা যায় না (১)। যাহা হউক, উহার সমর-নিরূপণ-বিষয়ে উভরেই তুল্য।

স্বন্পুরাণের কুমারিকাধণ্ডে লিখিত আছে, শুদ্রক রাজা কলিপতা-

⁽১) রাজা বা ধনাত্য লোকের সহায়তা ক্রমে পণ্ডিত বিশেষ কর্তৃক লিখিত পুরুকের ঐ রাজাদির প্রণীত বলিরা প্রকাশিত হওরা অত্যন্ত অসতব ও নিতান্ত বিরল নয়। সম্প্রতি ও মৃত কালীপ্রসন্ন সিংহের ব্যয়ে ও বড়ে পণ্ডিতগণ কর্তৃক অমুবাদিত মহাভারত ঐ সিংহ্বাবুর অমুবাদিত বলিয়া প্রচারিত হইরাছে।

আছে; উহার টীকাকার ঐ মুজাকে শিবরূপান্ধিত মুজা বলিয়া ব্যাখ্যা করিয়াছেন।

नानकसूशिकामकशिका।

प्रथमाङ:।

टीका-प्रिवाङ्गटङ्गानामोषिकामस्य ताड्नी।

শিবরূপাঞ্চিত মুদ্রাপহারী কামের ভাতৃনী।

কাশ্বকুজের গুপ্ত উপাধিধারী নৃপতি-বংশীয়েরা খৃষ্টাব্দের বিতীয়
শতাব্দীতে রাজত্ব করিতে আরম্ভ করেন। তাঁহারা শিব ভক্ত
ছিলেন। তাঁহাদের কর্তৃক প্রচলিত মুদ্রাসমূহে শিবের হৃষ, ত্রিশূল,
শিব-শক্তি সিংহবাহিনী প্রভৃতির প্রতিরূপ অভিত আছে এবং খৃষ্টা-ব্দের চতুর্থ শতাব্দী ও তাহ্বার উত্তর কালে সৌরাষ্ট্রীয় রাজাদের
মুদ্রাতেও বৃষাদি শিব-সংক্রোন্ত বস্তর আকার বিদ্যমান রহিয়াছে *।

ক্ষের ৩২৯০ তিন হাজার ছই শত নক্ষই অব্দে রাজ্য শাসন করেন। তাহা হইলে তাঁহার সময়ের মৃচ্ছকটিক ১৯০ এক শত নক্ষই খ্রীষ্টাদে রচিত বলিয়া উল্লেখ করিতে হয়। দক্ষিণাপথে এরপ আখ্যান বিদ্যমান আছে বে, তিনি চক্রপ্রথের পর ও বিক্রমাদিত্যের পূর্ব্বে রাজত্ব লাভ করেন। কিন্তু খুষ্টাব্দের বিতীয় শতাকীতে কেনরকী নামে একটি অসভ্য রাজা সিন্ধু নদের পশ্চিম প্রদেশের রাজা হন; তাঁহার প্রচলিত মুদ্রার উপর 'নানা' এই শক্ষটি অন্ধিত আছে। যদি ঐ প্রতকে উল্লিখিত নানক ঐ নানাশক হইছে নিম্পন্ন হইয়া থাকে, তাহা হইলে উহাকে খুষ্টাব্দের বিতীয় শতাকীর পূর্বতন গ্রন্থ বলিয়া বিবেচনা করিতে পারা বার না।—H. H. Wilson's Theatre of the Hindus, vol I. The Mrichhakatika, Introduction, pp. 5 & 6; and Ariana Antiqua, p. 364.

* Ariana Antiqua, by H. H. Wilson. 1841, pp. 419, 422, 425, 427, 407, 410, 412, and 413.

খৃষ্ঠান্দের বিভীয় শতাব্দীতে এরিয়ান নামক এক জন এটক প্রান্থকার ভারতবর্ষ সম্বন্ধীয় অনেকানেক বিষয়ের বিবরণ করেন। তিনি কন্সাকুমারীর নাম কুমার লিখিয়া কহিয়াছেন. এক দেবীর নামে এই স্থানের নাম-করণ হইয়াছে। ঐ প্রস্থকারের সময়ে সে স্থানে ঐ দেবীর এক খানি প্রতিমূর্ত্তি ছিল। তুর্গার একটি নাম কুমারী; তাঁহার মূর্ত্তিবিশেষ অদ্যাপি তথায় বিদ্যমান আছে *।

এক্ষণে যে বিক্রমাদিত্যের সম্বতের বিংশ শতাব্দী চলিতেছে, অর্থাৎ যিনি খৃষ্টাব্দের ন্যুনাধিক ৫৬ বৎসর পূর্বের নিজ্ঞ সম্বৎ প্রচ-লিভ করেন, তাঁহার সংক্রাস্ত সমৃদয় আখ্যান মধ্যেই শিব ও শিব-শক্তির ভূরি ভূরি প্রসঙ্গ সন্নিবেশিত আছে গ।

^{*} কিন্তু ঐ দেবী শিব-শক্তি কি বিষ্ণু-শক্তি, এরিয়ানের পুস্তকে তাহার কিছু নির্দেশ নাই। তবে উহার বহুকাল পূর্বাবিধি বে ঐ অঞ্চলে শিবের উপাসনা প্রচলিত ছিল তাহার অন্যান্য অনেক প্রমাণ প্রাপ্ত হওরা যার।

[†] উজ্জিরনীতে বিক্রমাদিত্য নামে অনেকগুলি রাজা হইরা বার। এক বিক্রমাদিত্যের গুণাগুণ ও কার্য্যাকার্য্য অপর বিক্রমাদিত্যে আরোপণ করা ভারতবর্ষীরদের পক্ষে কোনরূপেই অসম্ভব নর। অতএব উক্ত পৃষ্ঠার লিখিত ঐ নামধারী নৃপতি সংক্রাস্ত কথাগুলির পরিবর্ত্তে নিম্ন-লিখিত করেক পঙ্কি বিনিবেশিত করিতে হইবে।

পতঞ্জলি পাণিনি-ভাব্যের মধ্যে শিব ও কার্ত্তিক-প্রতিমৃর্ত্তির প্রসঙ্গ করি-রাজেন।

जीविकार्धे चापखे।

শক, জাট, হূণ প্রভৃতি অসভ্য জাতীয়ের। খৃকীব্দের কিছু কাল
পূর্বে হইতে ৫ পঞ্চম অথবা ৬ ষষ্ঠ শতান্দী পর্যান্ত সিন্ধু নদের পশ্চিম
ভাগ অধিকার করিয়া থাকে। তাহাদের মধ্যে প্রথমকার কতকগুলি
নৃপতি অগ্রি-উপাসনার সহিত হিন্দু-দেবতাদের উপাসনা প্রবর্তিত
করেন। তাঁহাদের মুদ্রা-সমূহে শিবের বৃষ ও ত্রিশূল এবং অর্ধনারীশব প্রভৃতির আকার অন্ধিত আছে। *

খৃষ্টাব্দ আরন্তের পূর্বব চতুর্থ শতাব্দীতে গ্রীক সম্রাট্ আলেক-জণ্ডার দিখিজ্বয়ে যাত্রা করিয়া ভারতবর্ষ আক্রমণ করেন ও মিগান্থি-নাস শ নামে একজন গ্রীক, মহারাজ চন্দ্রগুপ্তের সভায় দূত-স্বরূপে উপস্থিত হন। ঐ সময়ে তাঁহাদের সমভিব্যাহারী বিচক্ষণ ব্যক্তিরা হিন্দুদের আচার ব্যবহার ধর্মাদি যেক্সপ দর্শন করেন, গ্রীসদেশীয়

> भपखा इतुरचित तब दंग सिध्यति । धिवः स्कन्दे विशाखा इति । किं कारचम्। मीर्थे हिरखार्थि भिरर्याः प्रकल्पिताः। भनेत्। तासु न स्थात्। यास्त्रेताः संप्रति पूजार्थाः तासु भविष्यति ।

शख्यां ।

পডঞ্জলি খু, পু, দিতীয় শতান্ধীতে মহাভাষ্য প্রস্তুত করেন (১) । অতএব ঐ সময়ে শিব ও কার্ত্তিকের উপাসনা প্রচলিত ছিল ইহাতে সন্দেহ রহিল না।

- * Ariana Antiqua by H. H. Wilson, 1841, pp. 350, 351 352, 353, 354, 355, 356, 359, 361, 363, 365, 366, 371, 373, 377, 378, 379, 380, 439 and 440.
- † আলেকজণ্ডার খৃটাক্ষের ৩২৭ তিন শত সাতাশ বংসর পূর্ব্বে ভারতবর্ব আক্রমণ করেন। মিগাছিনীস সিলিউকস নাইকেটার নামক গ্রীক নর-পাজর দৃত। ঐ রাজা খৃটাব্দের ৩১২ তিন শত বার বংসর পূর্বে রাজ-পদে অধিরঢ় হইরা খৃটাব্দের হুই শত আশী বংসর পূর্বে প্রাণ ভ্যাস করেন।

⁽२) डेशक्यिनिका, >>--> शृष्ठी (वर्ष !

বহুতর প্রন্থকারদিপের পুস্তকে তাহার সবিস্তর বৃত্তান্ত বিনিবেশিত আছে। তাঁহারা লিখেন, হিন্দুরা বেকস্ও হর্কিউলিস্ নামক ছুই দেবতার বহুপ্রকার উপাসনা করিয়া থাকেন। কিন্তু এই ছুইটি দেবতা প্রীকদের, উপাস্থা, হিন্দুদের নয়। বোধ হয়, তাঁহারা হিন্দুদিগের যে ছুইটি দেবতাকে আপনাদের বেকস্ও হর্কিউলিস্দেবতার সদৃশ জ্ঞান করিয়াছিলেন, তাঁহাদিগকেই ঐ ছুই নাম দিয়া গিয়াছেন *। ভারতবর্ষা য় মহাদেবের স্থায় প্রীসদেশীয় বেকস্দেবেরও লিঙ্গ-পূজা বিস্তৃতরূপে প্রচলিত ছিল। অতএব গ্রীকেরা মহাদেবকেই বেকস্দেব বলিয়া উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন এ কথা সর্বতোভাবে অনুমান-সিদ্ধ বা নিতান্ত সম্ভাবিত বলিতে পারা যায়।

ভারতবর্ষের দক্ষিণ খণ্ডে পাণ্ড; ও চোল নামে ছুইটি সমৃদ্ধিসম্পন্ন রাজ্য ছিল। স্ট্রেবো নামক গ্রীক গ্রন্থকার লিখিয়া গিয়াছেন, পাণ্ড-রাজ্যের এক জন নৃপতি অগসটস নামক ভুবন-বিখ্যাত রোমক সমাটের সমীপে দৃত প্রেরণ করেন। এইরূপ বিবেচিত হইরাছে যে, ঐ পাণ্ডা রাজ্য খ্রী, পূ, ষষ্ঠ অথবা পঞ্চম শতাব্দীতে পাণ্ডা নামক এক জন অযোধ্যানিবাসী কৃষি জীবী কর্তৃক সংস্থাপিত হয় এবং খ্রী, পূ, ৩৫০ তিন শত পঞ্চাশ বৎসরের পরে ও ২১৪ ছুইশত চৌদ্দ খ্র্ফীব্দের পূর্বেব চোল রাজ্যের সহিত সংযুক্ত হইয়া যায়। ঐ উভয় রাজ্যের প্রথমকার ভূপতিরা শিব-ছাপক ও অত্যন্ত শিব-ভক্ত বলিয়া কীর্তিত হইয়াছেন শা।

^{*} Transactions of the Royal Asiatic Society Vol, III. Article VI and Tod's Rajasthan Vol I, chap. II and V ()

[†] W. Taylor's Examination and Analysis of the mackenzie

আলেক্জগুনের ভারতবর্ষ আক্রমণের ছুইশত বৎসর পূর্বেব * भाका मृति दोष-धर्मा श्रकांभ करत्रत। दोष्क्रितिशत मृत्व नामक প্রাচীন শাস্ত্রে ও অক্স অক্স বিবিধ গ্রন্থে বৃদ্ধদেবের চরিত বর্ণনার মধ্যে শিব, ত্রহ্মা, নারায়ণ প্রভৃতি পৌরাণিক দেবগণের নানাবিধ স্থুস্পষ্ট প্রসঙ্গ আছে। বৃদ্ধ দেবের সময়ে হিন্দু সমাজে ঐ সমস্ত দেবতার উপাসনা প্রচলিত ছিল, উক্ত গ্রন্থকারেরা ইহা বিশাস করিতেন ও বাক্ত করিয়া লিখিয়াও গিয়াছেন। শাকাসিংছের মৃত্যুর পরে বৌদ্ধার্থাবলম্বী প্রধান প্রধান ব্যক্তির পর পর তিনটি সভা হয় এবং ডাহাতে তিন প্রকার শাস্ত্র নিরূপিত হয়: সত্র, বিনয় ও অভিধর্ম। তাঁহার প্রাণ-ত্যাগের অভাল্ল দিন পরেই প্রথম সভার অধিবেশন হইয়া সূত্র নামক বৌদ্ধ শাস্ত্র সঙ্কলিত হয়। অতএব বৌদ্ধদিগের ঐ শাস্ত্র সর্ববাপেক্সা প্রাচীন। এমন কি তাঁহারা বিশাস করেন, বুদ্ধ-দেবের নিজের কথাই তাহাতে সন্নিবেশিত আছে। ঐ শাল্পের রচনা যেকপ সরল ও তাৎপর্যার্থ যে প্রকার সহজ, তাহা কোন অংশেই ঐ অভিপ্রায়ের বিরোধী নহে। ইহা হইলে খ্রীফ্রাব্দের প্রায় চয শত বৎসর পূর্বেব শিবের উপাসনা প্রকাশিত ও প্রচলিত ছিল বলিতে হয় গ।

Manuscripts, pp 19 131 &c. H. H. Wilson's Mackenzie collection, pp LXI and LXXVI-XCII and Royal Asiatic Society's Journal Vol. 3, pp. 202-213.

^{*} শাক্য মূনি এটাবের ৫৪০ বংসর পূর্ব্বে প্রাণ ভ্যাগ করেন এইরূপ প্রাসিদ্ধ আছে কিন্তু শ্রীমান্ম, মূলারের মতে খু, পূ, ৪৭৭ বংসরে ঐ ঘটনা হয়।——Ancient Sanskrit Literature, 1859, page 298.

[†] Introduction a l' Histoire du Buddhisme par E. Burnouf, pp. 131-132.

অশোক ও জ্বলোক নামে কাশ্মীর-রাজ্যের গুইটি রাজা ছিলেন।
শ্রীমান্ হ. হ. উইলসনের অবলম্বিত বিচারপত্বতি অসুসারে
স্থল রূপ গণনা করিয়া দেখিলে, তাঁহারা খ্রী, পু, ষষ্ঠ বা
সপ্তম শভাক্ষীতে বিদ্যমান ছিলেন বলিতে হর। তাঁহারা উভয়েই
অভ্যন্ত শিব-ভক্ত বলিয়া কীর্তিত ইইয়াছেন।

विजयेखरनन्दीशचेत्रज्ये हे शपूजने । तस्य सत्यगिरो राज्ञ: प्रतिज्ञा सर्व्वदाभवत् ॥

রাজভরজিণী ১ ভরজ।

ৰিজ্ঞেখন, নন্দীশ ও ক্ষেত্ৰ জ্যেষ্ঠেশ শিবের অর্চনায় সেই সভ্যবাদী (জ্লোক) রাজা সভত প্রতিজ্ঞারত ছিলেন।

কেবল রাজতরঙ্গিণীর এই বচন এ বিষয়ের একমাত্র প্রমাণ। কিন্তু এ কথা বলিতে পারা ষায় যে যদি ভারতবর্ষের দক্ষিণ খণ্ডে থ্রী, পূ, পঞ্চম ও ষষ্ঠ শতাব্দীতে শিবের আরাধনা প্রচারিত হইয়া থাকে, তাহা হইলে উহার উত্তর খণ্ডে ঐ সময়ে ঐ ধর্ম্ম প্রচলিত থাকা সর্বভোভাবেই সঙ্গত, তাহার সন্দেহ নাই। উল্লিখিত গ্রন্থে উহারও পূর্বেক কাশ্মীর-প্রদেশে শৈব-ধর্ম্ম বিদ্যমান ছিল বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে। কিন্তু তাহা প্রমাণান্তর ঘারা সিদ্ধ না হইলে নিশ্চিত বলিয়া পরিগৃহীত হইতে পারে না। ঐ ধর্ম্মের বয়ঃক্রেমের বিষয় বিচার করিতে করিতে এত দূরে উপনীত হইব প্রথমে মনে করি নাই।

শৈব ধর্ম যেমন ছিন্দুদের প্রতিমৃত্তি-পূজার প্রারম্ভকালেই প্রকাশিত হয় তেমনি আবার ভারতবর্ষের সীমা অতিক্রম করিয়া বহু দূর পর্যান্ত নানা দেশে ব্যাপ্ত হইয়াও বায়। বেলুটাস্থানের অন্তর্গত হিঙ্গলাজ ছিন্দুদের একটি ভীর্থ-স্থান; শৈব ও শাক্ত-সম্প্রদায়ী তীর্থবাত্রীরা জাদ্যাণি তথায় গমন করিয়া থাকেন। পূর্বব- কালে হিন্দুদের যে দেশ দেশাস্তর গমনাগমনের প্রথা প্রচলিত ছিল, বেদ, স্মৃতি, পুরাণ, ইতিহাস, সাহিত্য প্রভৃতি প্রায় সমুদায় সংস্কৃত শাস্তেই ইহার ভূরি ভূরি প্রমাণ বিদ্যমান আছে। তাঁহারা ভারত সমুদ্র অতিক্রম পূর্বক বালি ও যবদীপে গিয়া হিন্দু-শাস্ত্র, হিন্দুধর্ম ও বিশেষতঃ শিবের উপাসনা প্রচার করেন।

ঐ ববদীপে ইদানীং মুসলমান ধর্ম প্রচলিত আছে বটে, কিন্তু পূর্বে যে তথায় হিন্দু-ধর্ম প্রচারিত ছিল, তাহার ভূরি ভূরি অথগু নিদর্শন অদ্যাপি দেখিতে পাওয়া যায়। তথায় প্রন্থনন নামে একটি স্থান আছে, তাহার কোন কোন স্থলে তুই শত অপেকা অধিক সংখ্যক দেব-মন্দির এবং শিব, তুর্গা, গণেশ, সূর্য্য প্রভৃতির পাষাণময় ও পিতুলময় প্রতিমূর্ত্তি অদ্যাপি বিদ্যমান রহিয়াছে। মুসলমান হইয়াও অনেকে সেই সকল দেব-প্রতিমূর্ত্তিকে অত্যন্ত প্রদ্ধা ভক্তিকরিত শুনা গিয়াছে *। ঐ যবদীপে যে সময়ে বৌদ্ধ-ধর্ম প্রবল হইয়া উঠে, তথন তথাকার কতকগুলি হিন্দু বালি নামক একটি নিকটক্ত ক্ষুদ্র দ্বীপে গিয়া আশ্রয় লয়। তাহারা আদ্ধ পর্যান্ত সেই স্থানে অবস্থিত থাকিয়া হিন্দু-ধর্মের যথাবিধি অনুষ্ঠান করিয়া আদিতেছে। তাহারা প্রাচীন হিন্দুদের স্থায় চারি বর্ণে বিভক্ত; আন্ধাণ, ক্ষেক্রিয়, বৈশ্য, শুদ্রে। ত্রন্ধার মুখ হইতে ত্রান্ধাণ, বক্ষ হইতে ক্ষত্রিয়, নাভির অধোভাগ হইতে বৈশ্য এবং পদ হইতে শুদ্র বর্ণ

^{*} এক গর্মকে আশ্রয় কবিয়া অন্য ধর্মে বিশাস করা অজ্ঞানীর পক্ষে আশুর্যা নয় এ দেশস্থ অনেক ব্যক্তি শাক্ত বা বৈষ্ণব হইয়া মুসলমানের দেবতাকে সর্বশক্তিমান্ বলিয়া মানেন ও রোগ-শান্তি, ধন-প্রাপ্তি বা অন্য প্রকার শুভ লাভের উদ্দেশে মান্সিক করেন এবং মুসলমান.ধর্মোচিত অন্ত অন্ত ব্যবহারও করিয়া থাকেন।

উৎপন্ন হইয়াছে এ কথাটিও তথার প্রচলিত আছে। সেখানে চাণ্ডালবর্ণও * দৃষ্ট হইয়া থাকে; তাহারা গ্রামের প্রান্ত ভাগে বাস করে এবং চর্দ্ম ও মদিরা ব্যবসায় প্রভৃতি হীনর্ত্তি-ভারা সংসার নির্বাহ করিয়া থাকে।

ঐ বালি দ্বীপে অন্তাপি হিন্দু রাজারা রাজত্ব করেন এবং হিন্দুদিণের পূর্বকালীন রাজনীতি অনুসারে আক্ষণেরা বিচারকের কার্য্য করিয়া থাকেন। তবে আক্ষণ প্রাড়্বিবাকের সম্খ্যা অধিক নয়; অস্তু অস্তু অনেক বর্ণকেও বিচারকের পদ দেওয়া হইয়া থাকে শ।

ভথাকার ব্রাহ্মণের। নিরামিষ-ভোজী; মৎস্থ মাংস পরিভ্যাগ পূর্ববিক কেবল যব, ভণ্ডুল ও ফল-মূলাদি ভক্ষণ করিয়া শরীর রক্ষা করেন। তথায় শব-দাহ ও সহমরণের রীভিও প্রচলিত আছে। ভার্যাযদি সামীর চিভারোহণ করে, তবে সে দেশের ভাষায় ভাহাকে 'সভ্য' বলে। আর উপপত্নী বাদাসী অথবা পরিবারত্থ অন্থ কোন স্ত্রীলোক সহমূভা হইলে ভাহাকে 'বেল' বলিয়াথাকে। ভথায় উদ্বাহ বিষয়ে এদেশীয় স্মৃতি-শাস্ত্রের ব্যবস্থানুগত অন্ধুলোম ও বিলোমের বিষয় বিবেচনা করা প্রচলিত আছে। উৎকৃষ্ট বর্ণের লোকে নিকৃষ্ট বর্ণের স্ত্রীলোককে বিবাহ করিতে পারে, কিস্তু নিকৃষ্ট বর্ণের লোকে উৎকৃষ্ট বর্ণের কন্যা-গ্রহণে অধিকারী নয়।

এ দেশের সংস্কৃত ভাষার স্থায় তথাকার কবি নামক ভাষা অতিশয় এন্দেয় ও আদরণীয়; তাহাতেই তথাকার অধিকাংশ গ্রন্থ লিখিত হয়। দক্ষিণাপথের আদিম নিবাসীদিগের ভাষায় সংস্কৃত

^{*} তাহারা সেথানে চাণ্ডাল নামেই থ্যাত আছে।

[†] বালির স্থায় লয়ক দীপও হিন্দু রাজার স্থান এবং সেধানেও প্রাড়-বিবাকাদির ঐকপ ব্যবসাধ্যচিতি আছে।

শব্দ মিলিত হইয়া যেমন দ্রাবিড়াদি ভাষা উৎপন্ন হইয়াছে, সেইরূপ, যবদীপের ভাষায় বিভক্তি-শৃন্য সংস্কৃত শব্দ মিশ্রিত হইয়া
কবি ভাষার স্থান্ট হইয়াছে। তথাকার বর্ণাবলীও ভারতবর্ষীয়
দেবনাগর অথবা বৌদ্ধদিগের প্রাচীন পালি অক্ষর হইতে উৎপন্ন।
ফলতঃ কেবল বালিদ্বীপে কেন, ঐ অঞ্চলের অক্ষান্য দ্বীপশ্ব লোকেরও
শিক্ষা ও সভ্যতা-সাধন বিষয়ে যে হিন্দুদিগের বিশেষরূপ কার্য্যকারিত্ব
ছিল, তাহার সমূহ নিদর্শন নানা বিষয়েই লক্ষিত হইয়া থাকে।
এমন কি, ভারতবর্ষীয় দ্বীপ-পুঞ্জের অন্তর্গত স্থমাত্রা, লেম্বা প্রভৃতি
দ্বীপের বর্ণাবলীও দেবনাগরাদি ভারতবর্ষীয় অক্ষরের কবর্গ চবর্গাদি
বর্গ-বিভাগের নিয়মানুসারে বিভক্ত দেখা যায়।

ঐ বালিদ্বীপে বেদ পুরাণাদি অনেকানেক হিন্দুশাস্ত্রও বিভ্যমান আছে। ব্রত্যুধ নামক এক প্রস্তু মহাভারতের যুদ্ধ সকল বর্ণিত আছে। তদ্যতীত রামায়ণ, ব্রহ্মাপ্ত-পুরাণ, কামন্দকীয় নীতি-শাস্ত্র, অর্জ্জুন-বিজয় এবং আগম, দেবগম, তত্ত্ব প্রভৃতি নামে অনেক প্রস্তু প্রচলিত আছে। ইহার মধ্যে বেদ ব্রহ্মাপ্ত-পুরাণাদি কতক-গুলি সংস্কৃত শাস্ত্রের সহিত বালির দেশ-ভাষায় ক্রত ব্যাখ্যা বিভ্যমান আছে। আর রামায়ণ, অফাদশপর্বব, ব্রত্যুধ প্রভৃতি অপর কতক-গুলি গ্রন্থ কবি-ভাষায় বির্বৃচিত। যখন তথায় হিন্দু-ধর্ম্ম-প্রতিপাদক উল্লিখিত গ্রন্থ সমুদ্য বিদ্যমান রহিয়াছে, তখন সত্যা, ব্রেভা, দ্বাপর, কলিযুগের বিষয় এবং হিন্দুদের শিবত্রগাদি দেবভার উপাধ্যান ও হিন্দু-শাস্ত্রোক্ত অন্থান্থ অনেক প্রকার মত ও অভিপ্রায়ও যে প্রচলিত আছে এ কথা বলা বাহুল্য।

এই বালি-দ্বীপ ও ধব-দ্বীপস্থ হিন্দুদের মধ্যে এইরূপ একটি জন-শ্রুতি আছে এবং তাঁহাদিগের প্রস্তুত এইরূপ লিখিত আছে যে তাঁহারা ভারতবর্ষের অন্তর্গত কলিঙ্গ দেশ হইতে তথায় গমন করেন। শিবোপাসনাই ্ঐ বালি-দ্বীপের প্রচলিত ধর্মা, কিন্তু ব্রাহ্মণেরা প্রতিমূর্তির পূজা করেন না। #

উত্তরে হিমালয়, দক্ষিণে সেতৃবন্ধ, পশ্চিমে হিল্পাজ ও পূর্ব্বদিকে ভারতীয় দ্বীপপুঞ্জ পর্য্যন্ত বিভূতি ও রুদ্রাক্ষবিভূষিত বিশাল শৈব-ধর্মা অদ্যাপি বিরাজ করিতেছে।

শিবারাধনা।

শৈবেরাও অন্তান্থ উপাসকের ন্যায় বিশেষ বিশেষ বীজ-মন্ত্রে উপদিষ্ট হন। একাক্ষর মন্ত্র 'হোঁ'। ত্র্যক্ষর মন্ত্র 'ওঁ জুঁ সঃ'; ইহার নাম মৃত্যুপ্তরাত্মক মন্ত্র। চতুরক্ষর মন্ত্র 'উর্জিষ্ট্'; ইহার নাম চণ্ড মন্ত্র। পঞ্চাক্ষর মন্ত্র 'নমঃ শিবায়'। বড়ক্ষর মন্ত্র 'ওঁ নমঃ শিবায়'! অন্টাক্ষর মন্ত্র 'গ্রুটা ও নমঃ শিবায় গ্রুটা! এইরূপ বিংশত্যক্ষর পর্যান্ত মন্ত্র আছে এবং মন্ত্র-বিশেষে বিশেষ বিশেষ ধ্যান ও পদ্ধতি উক্ত হইয়াছে। কৃষ্ণানন্দ-কৃত তন্ত্রসারে ও অপরাপর উপাসনাতন্ত্র-সংগ্রহে সে সমুদারের বিস্তারিত বৃত্তাস্ত্র বিনিবেশিত আছে। শিবারাধনায় শরীরে বিভৃতি-লেপন শ ও

^{*} I. Crawford's History of the Indian archipelago, 1820, Vol. II. pp. 236-258 and Journal of the Indian archipelago, Vol. II. No. III. pp. 155-165, No. IV pp. 195-220 and No. XII. pp. 767-775 and Vol. III. No. II. pp. 123-137 and No. IV. pp. 244-250.

[†] ভারতবর্ষের দক্ষিণ ভাগে মাইশোর দেশের মধ্যে মলৈখরবেট্ট নামক পর্বতে একরূপ খেত বর্ণ মৃত্তিকা পাওয়া যায়। সে প্রদেশের শৈবেরা বিভূতির পরিবর্তে দেই মৃত্তিকা ব্যবহার করিয়া থাকেন। Buchanan's Mysore, Vol. II. p. 4.

রুদ্রাক্ষ-ধারণ * নিতাস্ত আবশ্যক। বিশ্বশোদভরঙ্গিণীতে শৈবের বেশ-ভ্যা স্থান্দররূপ বর্ণিত হইয়াছে।

श्रीमानसावेति जटालमीलिर्व्याघ्रलगालिस्त्रतमध्यभागः। विभूतिसंभूषितभास्त्रदङ्गोत्रद्राचमालाकलितोष्ट्वदेष्टः॥

বিশ্বন্যোদভর্গিণী।

জটা-যুক্ত, ব্যাত্র-চর্দ্ম-পরিধান, বিভূতি-বিভূষিত উজ্জল আকবিশিষ্ট এবং শরীরের উর্জভাগে রুদ্রাক্ষ-মালায় শোভিত এই শ্রীনান্পুরুষ আগমন করি-তেছেন।

বীরাচারী শাক্ত-সম্প্রদায়ের স্থরা-সেবনের স্থায় শৈবদিগের সন্মিদা-সেবন ইফ্ট-সাধনার একটি অঙ্গ-বিশেষ। সাধকদের ভাহা মন্ত্র-পৃত করিয়া ধ্যান ও স্তুতিপূর্বক পুলকিত চিত্তে পান করিতে হয়।

कलयति कवितां महतीं कुरुते स्तार्थं दर्भनं पुंसां।
श्रपहरति दुरितनिलयं किं किं न करोति सम्बिद्धासः॥
थानः

সন্ধিত্লাস দারা মহতী কবিতার রচনা হয়, পুরুষদিপের পার্থ দর্শন হয়, ও পাপ-সমূহ নষ্ট হয়, অত এব ওদ্ধারা কি না হইয়া থাকে ?

শৈবের। জল-মিশ্রিত বিজয়া অর্থাৎ দিদ্ধি-পানের তায় বিজয়াণ ধ্ম-পানও করিয়া থাকেন।

> * शिखायां इस्तयोः कग्हे कर्णयोसापि यो नरः। बद्राच्चं धारयेङ्गक्या शिवलोकमवाप्रुयात्॥

> > যোগদার

শিথাতে, হস্ত-ঘয়ে, কঠে এবং কর্ণ-বৃগলে যে মনুষ্য ভক্তিপূর্বাক ক্রডাক্ষ ধারণ করেন, তিনি শিব-লোক প্রাপ্ত হন।

† व्यर्थीए शीका।

भनेन मनुनानेन विजयाधूमशोधनं। शोधियत्वा पिनेडूमंन दोषोविद्यते हर॥ मन्त्रसु चुौं चुौं।

প্রাণতোষিণী।

ক্ষ্মে ক্ষ্ম ক্ষ্ম এই মন্ত্র হারা বিজয়া-ধূম শোধন করিয়া পান করিবে, মহাদেব। তাহাতে দোষ নাই।

এদেশীর লোকের মধ্যে, বিশেষতঃ গৃহত্যেতে, শিবোপাসক প্রায় দৃষ্ট হর না। দক্ষিণে দ্রাবিড় ও পশ্চিমে রাজস্থান প্রভৃতি অনেক দেশের গৃহস্থেরা শিবের উপাসক। রাজস্থানের অন্তর্গত মেওয়ার প্রদেশের ইতিহাসমধ্যে দেখিতে পাওয়া ষায়, বহুকাল পূর্ববাবধি তদীয় রাজবংশীয়ের। শিবের আরাধনায় প্রবৃত্ত ছিলেন। ঐ প্রদেশের মধ্যে স্থানে স্থানে উৎকৃষ্ট শেব-মন্দির ও শিবলিঙ্গ সকল বিদ্যমান আছে। তথাকার একলিঙ্গ নামক শিবের মন্দিরটি অভিরহণ। ভাহা খেত প্রস্তারে নির্মিত ও নানারূপ চিত্র-কার্য্যে এরূপ পরিপূর্ণ যে, তাহার সবিশেষ বর্ণনা করা স্কুক্টিন্। বহুশত বৎসর পূর্ববাবধি মেওয়ার অঞ্চলে যে শৈব-ধর্মা প্রবলরূপ প্রচলিত হইয়া আসিয়াছে, পূর্বেব এ বিষয়ের বিবরণ করা গিয়াছে। ঐ প্রদেশীয় অনেকানেক নৃপতি ও অন্যান্ত ধনী ব্যক্তিরা বহুতর শিব-মন্দির নির্মাণ ও সংস্কার করাইয়া যান #।

ভারতবর্ষের দক্ষিণ থণ্ডেও যে অনেক কাল পূর্বের শিবোপাসনার প্রচার ছিল, ইহা একবার উল্লিখিত হইয়াছে। এখনও তথায় সৃহস্থ ও উদাসীন বহুসংখ্যক শৈবের অবস্থিতি আছে। বাঙ্গলা-দেশীয় গৃহস্থ-দিগের মধ্যে পৃথক্ শিবোপাসক প্রায় নাই বটে, কিন্তু শাক্তেরা

^{* 8} शृं (प्रथ।

শক্তি-পতি শিবের অর্চনা ও শিব-ত্রত সকল পালন করিয়া থাকেন। ইহা তাঁহাদের কর্ত্তব্য কর্ম্ম।

श्रादी शिवं पूजियत्वा शिक्तपूजा ततः परं।
नतुवा मूत्रवत् सर्व्वं गङ्गातीयं भवेद् यदि।
श्रतप्व महेशानि श्रादी लिङ्गं प्रपूजियेत्॥
श्रीगटाविगै-४७ ट्याफन्डश्रत्वन।

্ অত্যে শিব-পূজা করিয়া পরে শক্তি পূজা করিবে, নতুবা সমুদায় পূজা-দ্রব্য গঙ্গা-জল হইলেও মূত্র-সদৃশ হয়। অতএব মহেশানি! অত্যে শিব-পূজা করিবে।

শৈবদের মধ্যে উদাসীন-সম্প্রদায়ীই অধিক। তাহারা সচরাচর
প্রায় সন্ন্যাসী ও গোসাঁই বলিয়া উক্ত হইয়া থাকে। বাঙ্গালা-দেশীয়
বৈষ্ণবদের প্রধান গুরুদের নাম গোসাঁই, কিন্তু পশ্চিমোত্তর অঞ্চলে
শৈব সন্ন্যাসীদিগকেই গোসাঁই বলিয়া থাকে। তথায় সাধু-লোক
বলিলে যেমন বৈষ্ণব উদাসীন বুঝায়, সেইরূপ, গোসাঁই-লোক
বলিলে শৈব উদাসীন বুঝিতে হয়।

কোন উদাসীন শৈব কি বৈষ্ণব, তিলক দেখিলেই অক্লেশে জানিতে পারা যায়। বৈরাগীরা নাসা-মূল হইতে কেশ পর্যস্ত উদ্ধরেখা করেন, আর শৈবেরা ললাটের বাম পার্ম হইতে দক্ষিণ পার্ম পর্যান্ত বিভৃতি দিয়া তিনটি রেখা করিয়া থাকেন। প্রথমোক্ত ভিলককে উদ্ধি পুঞ্ ও শেষোক্ত ভিলককে ত্রিপুঞ্ বলে।

শৈব ও কয়েক প্রকার নিশুণোপাদক উদাদীন পরস্পর এরপ বিমিশ্রিত ও স্থদমন্ধ এবং কোন কোন অংশে ঐ উভয়ের ব্যবহার

^{*} বৈরাগীদিগকে সাধু লোক বলিয়। নির্দেশ করা হিন্দৃস্থানা বৈঞ্চবদলের মধ্যেই অধিক প্রচলিত।

এরূপ স্থসদৃশ ধে, উভয় দলেরই একত্র বিবরণ করা আবশ্যক হইতেছে।

দশনামী।

এইরূপ প্রবাদ আছে যে, পূর্বের সন্ধ্যাস-ধর্ম বছকাল প্রচলিভ ছিল, মধ্যে রহিত বা তুর্বেল হইয়া যায়, পরে শ্রীমান্ শক্ষরাচার্য্য ভাহা পুনরায় প্রবর্ত্তিত বা প্রবল করেন। অতএব এম্বলে তাঁহার বিষয় কিছু বলা অপ্রাসক্ষিক ও অমুপযুক্ত নয়। শক্ষর-জয়, শক্ষর-দিখিজার, শক্ষরবিজ্ঞায়বিলাস, কেরল-উৎপত্তি প্রভৃতি বহুতর গ্রম্থে তাঁহার চরিত্ত-বর্ণনা আছে। শেষোক্ত পুস্তকখানি তেলুগু ভাষায় বিরচিত।

খৃষ্টান্দের অষ্টম শতাব্দীর শেষ অথবা নবম শতাব্দীর প্রথম ভাগে তিনি প্রাতৃত্ত হন। মলয়বর দেশের নমুরি নামক ত্রাহ্মণ কুলে তিনি জ্বন্ম গ্রহণ করেন । প্রচলিত প্রথামুসারে অষ্টম বর্ষে উপনয়ন-কার্য্য সম্পন্ন হইলে, তিনি বেদাধ্যয়নে প্রবৃত্ত হন। অল্পনিনের মধ্যেই তাঁহার এরূপ শিক্ষা ও বৃদ্ধিমত্তা প্রকাশ হয় যে, তাহা দেখিরা সকলেই বিস্ময়াপন্ন হইয়াছিল। ঘাদশ বর্ষ বয়ঃক্রমের সময়ে তাঁহার পিতৃবিয়োগ হয়, কিন্তু তাহাতেও তিনি অধ্যয়ন বিষয়ে কিছুমাত্র বিমুখ হন নাই; বরং উত্তরোক্তর অধিকতর যতুই প্রদর্শন করেন। অনধিককালের মধ্যেই তিনি একটি তেজীয়ান্ ক্ষমতাপন্ন লোক হইয়া উঠিয়াছিলেন। এরূপ আধ্যান আছে যে, পূর্বের মলয়বরে চারি বর্ণ ছিল, তিনি তাহা বিভাগ করিয়া বাহাতরটি

^{*} অন্ত একটি এরপ আখ্যান আছে বে, তিনি চিনম্বরে জন্ম গ্রহণ করেন, পরে তথা হইতে মলয়বরে উঠিয়া যান।

বর্ণ প্রবর্ত্তিত করেন। অল্ল বয়সেই তাঁহার সন্ন্যাসাশ্রম অবলম্বনের ইচ্ছা হয়, কিন্তু তাঁহার মাতা তাঁহাকে সে বিষয়ে কিছ্কাল নিবারিত করিয়া রাখেন। এ বিষয়ের পশ্চাল্লিখিত আখ্যানটি লিপি-বন্ধ আছে। একদিন তিনি আপন মাতার সহিত একটি আত্মীয় লোকের বাটীতে গমন করিয়াছিলেন। প্রত্যাগমনকালে প্রের মধ্যে বেদখেন, যাইবার সময়ে যে নদী অক্লেশে পদ-ব্রজ পার হইয়া গিয়াছিলেন, তাহা বৃষ্টির জলে একেবারে পরিপূর্ণ হইয়া উঠিয়াছে। কিঞ্চিৎকাল বিলম্ব করিয়া, জলের কিছু হ্রাস হইলে, তাঁহার। নদীতে অবতরণ করিলেন। চলিতে চলিতে ক্রেমশঃ কর্গ-**(मण পर्याख जल-मश इटेटल, मक्कताठाया छर्यात পारेया जननीटक** কহিলেন, জননি ! যদি আমাকে সন্ন্যাস-গ্রহণে অমুমতি প্রদান না কর. তাহা হইলে জল-মগ্ন হাইয়া উভয়েরই প্রাণ নদ্ট হইবে : আর যদি কুপা করিয়া আমাকে সন্ন্যাসী হইতে দাও, তবে জগদীশবের আরাধনা করিয়া উভয়েরই জীবন-রক্ষার উপায় সাধন করি। শঙ্করা-চার্য্যের মাতা বিষম সঙ্কট দেখিয়া অগত্যা তাঁহার প্রস্তাবে সম্মত হইলেন ও তখন শকরাচার্য্য তাঁহাকে পুষ্ঠ-দেশে গ্রহণ করিয়া সম্ভরণ দ্বারা নদী-পারে উত্তীর্ণ হইলেন এবং জননীকে যথাবিধি প্রণাম প্রদক্ষিণাদি করিয়া প্রস্থান করিলেন #।

^{*} কিন্তু অন্ত একটি আধ্যানে উল্লিখিত আছে, তিনি স্বকীয় মাতার মৃত্যুসময়ে গৃহাশ্রমেই অবস্থিত ছিলেন। মলমবরে লোকে তাঁহার এরূপ বিদ্বেষ্টা
ছিল বে, ঐ সময়ে তদীয় জননীর অন্তেটি ক্রিয়ার অফুঠানার্থ অগ্নিদান করে
নাই ও অক্স কোন ব্রাহ্মণেও সে বিষয়ে সাহায্য করিতে প্রবৃত্ত হয় নাই।
এইরূপ বিদ্বেষর কারণ কি স্থির বলা কঠিন। শঙ্করাচার্য্যের জন্ম-বৃত্তান্তের
বিষয়ে কিছু সংশয় আছে। কেরল-উৎপত্তির রচমিতা লিখেন, ঐ বিষয়ের
কুখ্যাতি-প্রচার হওয়াতেই, তাঁহার মাতা শ্রীমহাদেবী জ্বাতি-চ্যুত হন।

তদনস্তর শকরাচার্যা ভারত-ভূমির অন্তর্গত নানা দেশ দ্রমণ ও সে সময়ের প্রচলিত নানা মত খণ্ডন করিয়া সীয় মত সংস্থাপন করেন এইরূপ অনেক কথা তাঁহার চরিত-বিষয়ক সকল গ্রন্থে ও সকল জনশ্রুতিতেই সন্নিবেশিত আছে। বেদাস্কর্শাস্ত্রের প্রচার ও তত্ত্ব-জ্ঞান-প্রচলন-উদ্দেশে তিনি চারি স্থানে চারিটি মঠ প্রতিষ্ঠিত করেন; শৃঙ্গগিরিতে শৃঙ্গগিরি মঠ, দ্বারকায় সারদা মঠ, শ্রীক্ষেত্রে গোবর্দ্ধন মঠ ও বদ্বিকাশ্রমগুলে জ্যোসী মঠ। *

নিপ্ত গ-উপাদনা প্রকাশ করা ঐ সমস্ত মঠ-স্থাপনের প্রধান প্রয়োজন তাহার সন্দেহ নাই; কিন্তু একটি বিশেষ দেখিতেছি, সগুণ অর্থাৎ সাকার দেব গার উপাদনায় তাঁহার কিছুমাত্র বিষেষ ছিল না। ঐ সমস্ত মঠ সাকার বাদীদের তার্থ-স্থানেই প্রস্তুত ও মঠ বিশেষে সাকার দেবতা-বিশেষের প্রতিমৃত্তিও প্রতিষ্ঠিত করা হয়।

मृङ्गपुरसमीपे तुङ्गभद्रानदीतीरे चक्रं निर्माय तद्ये सरखतीं

* শঙ্করাচার্য্য যে চারিটি স্থানে মঠ-প্রতিষ্ঠা করেন, তাহার তিনটির নাম ধাম।
শাস্ত্রান্ত্র্যারে, ঘারকা, প্রীক্ষেত্র, বদরিনারারণ, সেতুবন্ধরামেশ্বর এই চারিটি ধাম
এবং অবোধ্যা, মথুরা, মায়া (১) (অর্থাৎ হরিষার), কাশী, কাঞ্চী, ঘারকা, অবস্তী
এই সপ্তপুরী পরম পবিত্র পুণাভূমি। কি শৈব, কি শাক্ত, কি বৈষ্ণব হিন্দুমাত্রেই এই কয়েক স্থান বিশেষরূপ পুণাপ্রাদ বলিয়া বিশ্বাস করে।

⁽১) চীন-দেশীর তীর্থবাতী হিউএন থ্ সল্মদাবরের পশ্চিষোত্তর অংশে গঙ্গানদীর পূর্ব্ব তটে মায়ুর নামে একটি নগরের বর্ণন করিরাছেন। ঐ নগর হইতে অনতিদুরে গঙ্গাদার নামে একটি দেব-মন্দির ছিল। ছরিঘারের প্রাচীন নাম গঙ্গাদার; হরিঘার ও কনখলের মধ্যবর্ত্তী একটি ভগ্গ নগরী অদ্যাপি মায়াপুর বলিরা প্রসিদ্ধ আছে। তথার মারাদেবী নামে একটি দেবীর প্রতিমূর্ত্তি আছে। লোকে বলে, তদকুসারেই ঐ নগরের নাম মায়াপুর হইরাছে।—Cunningham's Ancient Geography of India, pp. 351—355.

निधाय एवमाकल्पं स्थिरा भव मदाश्रमे द्रत्याज्ञाप्य निजमठं क्रत्वा तत्र देव्याः पीठनिक्षाणं क्रत्वा भारतीसम्प्रदायं निजिश्वप्रञ्जकार । भक्दविश्विष

তৃক্ষভন্তা-নদী-তীরে শৃঙ্গপুরের নিকটে চক্র নির্দ্ধাণ করিয়া তাহার সমুখে সরস্বতী-দেবীকে প্রতিষ্ঠিত করিলেন, এবং বলিলেন, 'কেলান্ত পর্যান্ত আমার আশ্রমে অবস্থিতি কর।" পরে নিজ মঠ নির্দ্ধাণ ও তাহাতে দেবীর পীঠ প্রস্তুত করিয়া ভারতী নামক শিয্য-সম্প্রদায় প্রবর্ত্তিত করিলেন।

বিদেষ করা দূরে থাকুক, এইরূপ লিখিত আছে যে, তিনি আত্ম-জ্ঞানে অসমর্থ ব্যক্তিদিগের নিমিত্তে শিবাদির উপাসনা-প্রচারেও উদ্যুত ছিলেন।

नानापापध्वस्तज्ञानाङ्क्रिष् मर्त्तेष्ठ श्रुडाहैतविद्यायामनिधकारिषु तेषां द्वत्तिः पुनरिप यथिपाता भवतीति विचार्य्य लोकरज्ञार्थं वर्णा- स्वमपालनार्येष्ठ परमतत्त्वकल्पनां जीविग्रभेदास्पदाष्ट्व रचितुमुपक्रम्य निजिश्वितं परमतकालानलं दृष्टे दमाङ्ग।

ञाननाशिति-क्ष मक्षत्रिष्ठि ।

নানাপাপ দার। জ্ঞানাস্কুর বিনষ্ট হওয়াতে, যাথার। নির্মাণ অবৈও ব্রহ্ম-জ্ঞানে অন্ধিকারী হইয়াছে, তাহারা যথেগাচারী হইবে এই বিবেচনার তিনি লোকযাত্রা-রক্ষা ও বর্ণাশ্রম-পালন উদ্দেশে জীবেখরের প্রভেদ-বোধ কর্নার প্রবৃত্ত
হইয়া পরমতকালানল নামক নিজ শিষ্যের প্রতি দৃষ্টি করিয়। এই কথা
কহিলেন।

লিখিত আছে, শক্ষরাচার্য্যের শিষ্যেরা তদীয় আদেশামুসারে নানা দেশে ভ্রমণ ও তত্রস্থ পণ্ডিতগণের সহিত বিচার করিয়া শিব, বিষ্ণু প্রভৃতি সাকার দেখভার উপাসনা প্রচার করেন।

एवमग्रेषदिग्वजयं कला तत्तद्दे ग्रस्थान् कांसित् पञ्चाचरिमहा-

मन्त्रराजोपदेशादिना तस्रतावलस्विनः करोति परमतकालानलः शङ्कराचार्याश्रवाः।

ম।নন্গিরি-কুত শঙ্করদিগিকর।

শঙরাচার্গ্যের শিষ্য পর্মতকাশানগ অশেষ রূপে দিগ্রিজ্ঞয় করিয়া সেই সেই দেশের অনেক লোককে পঞ্চাক্ষর মন্ত্রের উপদেশ দ্বারা শৈব্মভাবলম্বী করিতে থাকেন।

पूर्वभागे लक्ष्मणाचार्यः किल दिग्विजयं किला कांश्विद्बाह्मणा-दीन् किद्रोर्ष्वं पुण्डुधारणप्रक्षचक्राङ्गरभास्ररभुजयुगलान् किला बहु-प्रिष्मसमितः पुनराष्ट्रत्य परमगुरुचरणं नत्वा तदनुष्मावप्रात् मत-विजृश्वणहेतुकं भाष्मादिग्रन्यचयमकरोत्। हस्तामलकस्तु भूम-ध्यात् पश्चिमखण्डदिग्विजयं किला भगवदष्टाचरमन्त्रजपासक्तान् कला स्त्रयं विद्वापयितुं परमगुरुं प्राप।

আনন্দগিরি-ক্লত শঙ্করদিথিজয়।

লক্ষণাচার্য্য পূর্বভাগে দিখিজয় করিয়। ব্রাহ্মণ সমুদায়কে ছিদ্র-যুক্ত-উর্জ-পুঞ্-ধারী ও শঙ্ম-চক্রাদি-চিহ্ন-যুক্ত-ভূক্ক-বিশিষ্ট বৈষ্ণব করিলেন এবং বহু শিষ্য সহিত প্রত্যাগমন পূর্বক পরম গুরু শঙ্করাচার্য্যকে প্রণাম করিয়। তাঁহার আজাহুদারে মত প্রকাশ জন্ম ভাষ্যাদি গ্রন্থসমূহ রচনা করিলেন। হক্ষামলক পশ্চিম থণ্ডে দিগ্রিজয় পূর্বক লোক সকলকে বিষ্ণুর অষ্টাক্ষর মন্ত্রে উপদিষ্ট করিয়। পরম গুরুকে অবগত করিবার উদ্দেশে তাঁহার সমীপে আগমন করিলেন।

এইরপে দিবাকর আচার্য্য ঘারা স্থোর-মত, ত্রিপুর-কুমার ঘারা শাক্ত-মত, গিরিজাপুত্র ঘারা গাণপত্য-মত ও বটুকনাথ ঘারা ভৈরব-উপাসনা প্রচারিত হয় বিলিয়া লিখিত আছে। ইঁছারা সকলেই পরম গুরু শঙ্করাচার্য্যের শিষ্য।

শঙ্করাচার্য্য কাঞ্চী, কর্ণাট, কাশী, কামরূপ প্রভৃতি ভারতবর্ষের নানা স্থানে, ব্রমণ করিয়াছিলেন। জাবনের শেষ-ভাগে কাশ্মীর- রাজ্যে গমন করেন, এবং তথায় প্রতিপক্ষদিগকে বিচারে পরাস্ত করিয়া সরস্বতা-পীঠে অধিষ্ঠিত হন। তথা গইতে বদ্যিকাশ্রমে চলিয়া যান ও অবশেষে কেদারনাথে গিয়া ৩২ ব্রিশ বৎসর বয়ঃক্রমের সময়ে প্রাণ্ড্যাগ করেন।

> एवम्प्रकारै: किल कलापन्नै: भिवावतारस्य ग्रुभैश्वरितै:। दातिंगदस्योज्ज्ञलकोर्त्तिराग्नै: समा व्यतीयु: किल ग्रङ्गरस्य॥

> > মাধ্বাচার্য্য কুত শক্ষরভয়।

উজ্জ্ল-কার্ত্তি-রাশি-বিশিষ্ট শিবাবতার স্থাপ শঙ্করাচার্য্যের এইরূপ পাপ-নাশক শুভ চল্লিত্র দ্বারা ৩২ বল্লিশ বংগর গত হইগ্রাছিল।

জন-প্রবাদে লোকের গুণাগুণ উত্রোত্তর বর্দ্ধন করিতে থাকে এবং
শিষ্ট্রো নিজ গুরুর দোষ পরিবর্জন ও গুণ পরিবর্দ্ধন করিয়া চরিত
বর্ণন করিতে সহজেই প্রস্তুত্ত হয়। বিশেষতঃ ভারতবর্ষে এ বিষয়ের
উদাহরণস্থলের অপ্রতুল নাই। অত এব শক্ষর স্বামীর যাবতীয়
জীবন-বৃত্তান্তের ঐ উভয় দোষে দূষিত হওয়া কোনরূপেই অসম্ভব
নয়; প্রাহুতে ভাহাতে অনেকানেক কল্লিত কথা সন্নিবেশিত হইয়াছে ভাহার সন্দেহ নাই। তথাচ হিন্দুধর্মের পরিবর্ত্তন ও সংস্কারসাধন বিষয়ে তাঁহার যে বিশেষরূপ কার্য্যকারিত্ব ছিল ইহা ভক্লেশেই
উল্লেখ করিতে পারা যায়। তাঁহার বির্চিত বহুত্বর পুস্তুক ও তাঁহার
প্রবর্ত্তিত শিষ্য-সম্প্রদায় সমুদায়ই ইহার স্থাপ্স্পট প্রত্যক্ষ প্রমাণ।
দুই একটি প্রত্যক্ষ-গোচর বিষয়েও তাঁহার জীবন-বৃত্তান্তের কোন
কোন বিষয়ের পোষকতা করিতেছে। তাঁহার প্রতিষ্ঠিত জ্যোমী

মঠে মলয়বর দেশীয় এক এক জন নম্বরী ত্রাহ্মণ বরাবর পৃজারী হইয়া মাসিতেছে। শক্ষরাচার্য্য কাশ্মীরে গমন ও প্রতিপক্ষদিগকে পরাজয় করিয়া যে সরস্বতী-পীঠে উপবেশন করেন, তাহা অদ্যাপি বিদ্যমান বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে ও যাত্রি-গণও তথায় গিয়া ঐ নাম্বের একটি পীঠ-স্থান দেখিতে পায়। তিনি শারীরক ভাষ্যৣয়, দশোপনিষদ-ভাষ্য, শেতাশতরোপনিষদ্-ভাষ্য ও ভগবদগীতা ভাষ্য প্রস্তুত করেন। ভক্তমালে মোহমুদগরও তাঁহারই রচিত বলিয়া লিখিত আছে।

পূর্বে এক বার লিখিত হইয়াছে, মধ্যে দণ্ড-গ্রহণ রহিত হইয়া
যায়, পরে শঙ্করাচার্য্য ভাহা পুনরায় প্রবর্ত্তি করেন। তাঁহার
প্রধান চারি শিষ্য; পদ্মপাদ, হস্তামলক, মণ্ডন ও ভোটক। পদ্মপাদের তুই শিষ্য; তীর্থ ও আশ্রম। হস্তামলকের তুই শিষ্য;
বন ও অরণ্য। মণ্ডনের তিন শিষ্য; গিরি, পর্বতে ও সাগর।
ভোটকের তিন শিষ্য; সরস্বতী, ভারতী ও পুরি। এই শক্তালি
শুনিলেই অক্রেশে বোধ হইতে পারে, এ সমস্ত তাঁহাদের প্রকৃত নাম
নয়, কল্লিত উপাধি-বিশেষ। লিখিত আছে, বিশেষ বিশেষ লক্ষণামুসারে এই দশ শিষ্যের তীর্থাদি দশটি নাম ও এই দশ জন
হইতেই দশনামী সন্ন্যাসীদের তীর্থাদি দশ সংজ্ঞা উৎপন্ন
হইয়াছে।

শঙ্করাচার্য্য বেদব্যাস-কৃত বেদাস্তস্থ্রের যে ভাষ্য রচনা করেন; ভাষার
নানাবিধ নাম প্রচলিত আছে, বধা স্থাতভাষ্য, শারীরকভাষ্য, শারীরকমীমাংসা, উত্তরমীমাংসা ও বেদাস্ত-দর্শন।

तिवेणीसङ्गमे तीर्थं तत्त्वमस्यादिलचणे। म्हायात्तस्वार्धभावेन तीर्धनासा स उचाते ॥ श्रात्रमयहणे प्रौढ़ श्रामापामविविज्ति:। यातायातविनिस्ति एतदाश्रमलचणम्॥ सुरम्ये निर्भरे देशे वने वासं करोति य:। श्राशापाशविनिस्रतीवननामा स उच्यते ॥ चारखे संस्थितीनित्यमानन्दनन्दने वने। त्यक्का मर्व्विमिटं विख्यमर्ण्यल्चणं किल्॥ वासोगिरिवरे नित्यं गीताभ्यासे हि तत्पर:। गभीराचलवृद्धिश्च गिरिनामा स उच्यते॥ वसेत् पर्व्वतमूलेषु प्रौढ़ो यो ध्यानधारणात्। सारात्सारं विजानाति पर्व्वतः परिकोर्त्तितः॥ वसेत् सागरगस्थीरो वनरत्वपरिग्रहः। मर्थाटाश्च न लङ्क्षेत्रत सागरः परिकोत्तितः॥ खरज्ञानवशोनित्यं खरवाटी कवीखरः। संसारसागरे साराभिज्ञोयोहि सरस्रती॥ विद्याभारेण सम्पूर्णः सर्व्वभारं परित्यजेत्। दु:खभारं न जानाति भारती परिकीर्त्तित:॥ ज्ञानतस्वेन सम्पूर्णः पूर्णतस्वपदे स्थितः। परब्रह्मरतोनित्यं पुरिनामा स उच्यते ॥

প্রাণতোষিণী। অবধৃত-প্রকরণ।

তত্ত্মসি প্রভৃতি লক্ষণ-যুক্ত ত্রিবেণী-সঙ্গম-তীর্থে বিনি তত্ত্ব-ভাবে স্নান করেন, তাঁহার নাম তীর্থ। যিনি আশ্রম-গ্রহণে পারদর্শী এবং কামনা-বর্জিড হইয়া জন্ম-মৃত্যু হইতে বিমুক্ত হন, তাঁহাকে আশ্রম বলা যায়। যিনি কাম্না শৃত্য-ইইরা স্থবমা নিঝরি-সরিহিত বন-স্লে বাদ করেন, তাঁহাকে বন বলে।

যিনি আরণ্য-ত্রত অবলম্বন পূর্বকৈ সমুদায় সংদার পরিত্যাগ করিয়া আনন্দদায়ক অবণ্য মধ্যে চিরদিন অবস্থিত করেন, তিনিই অরণ্য। যিনি নিত্য

গিরি-নিবাসা, গাতাভ্যাসে তৎপর, এবং গন্তীর ও আবচলিত বুদ্ধ-বিশিষ্ট,
তাঁহাকে গিরি কহা যায়। ফিনি পলত-মূলে বাদ করেন, ধ্যান ধারণা ছারা
উরতি প্রাপ্ত হন, এবং সারাৎসার ব্রহ্মকে জানেন, তিনি পদ্ধত নামে খ্যাত

হন। বিনি সাগরের ভায়ে গন্তার হইখা ভিতি করেন, ফল-মূল রূপ বন-রত্ম
পরিগ্রহ করেন ও আপন মর্যাদা-উল্লেখনে বিবত থাকেন তাঁহাকে সাগর

বলে। যিনি সর জ্ঞান-বিশিষ্ট, স্বর-বাদী, কবীশ্বর ও সংসার-সাগর মধ্যে
সার-জ্ঞানী, তিনি সরস্বতী। যিনি বিজ্ঞা-ভারপরিপূর্ণ হইয়া সকল ভার পরিত্যাগ

করেন, ত্র্থ-ভার জানেন না, তিনিই ভারতা। যিনি জ্ঞান-ভত্ত্বে পরিপূর্ণ
ও পূর্ণ-তত্ত্ব-পদে অবস্থিত, এবং সত্ত পরব্রেক্স অনুরক্ত, তাঁহার নাম পুরি।

শঙ্কর সামার প্রতিষ্ঠিত পূর্বেরাক্ত চারি মঠের মধ্যে শৃঙ্গগিরির মঠে পুরি, ভারতা ও সরস্বতার, সারদা মঠে তার্থ ও আশ্রামের, গোগর্ধন মঠে বন ও অরণ্যের এবং জ্যোসী মঠে গিরি, পর্ববত ও সাগরের শিষ্য-প্রণালী প্রচলিত হইয়া আসিয়াছে। এখন অরণ্য, একরূপ বিলুপ্ত হইয়াছে বলিলেই হয়; সাগর ও পর্ববতও অতি বিরল। প্রত্যেক দশনামা ইহার কোন না কোন মঠের ও কোন না কোন প্রত্যেক দশনামা ইহার কোন না কোন মঠের ও কোন না কোন প্রণালীর অন্তর্গত। এই দশ প্রকার সন্ম্যাসীর শ্রেণীর মধ্যে যিনি যে শ্রেণীতে প্রবেশ করেন, তিনি সেই শ্রেণীর নাম প্রাপ্ত হন। দণ্ডা ও সন্ম্যাসীদের বিবরণ মধ্যে সেবিয়র স্বিংশ্যর বৃত্তান্ত লিথিত হইবে।

ঐ াবিটি প্রধান মঠ ভিন্ন স্থানে স্থানে স্বস্থা লোকের প্রভিষ্ঠিত সনেকগুল মঠ বিদ্যমান আছে। প্রত্যেক মঠের এক এক জন অধ্যক্ষ থাকে, ভাহার নাম মহন্ত। তথায় শিবাদি দেবভার প্রতি- মূর্ত্তি স্থাপিত দেখা যায়ও লোকে তথায় আসিয়াই সন্ন্যাস প্রহণ করিয়া থাকে। প্রত্যেক মঠের ব্যয় নির্বাহ জন্ম কিছু ভিচ্নত্পত্তির উপর তদায় মহন্তের সম্পূর্ণ ক্ষমতা ও সর্বাদ্দীন প্রভূত্ব দেখিতে পাওয়া যায়। এ প্রদেশে তারকেশর ও ভোট-বাগানের দেবালয় এক একটি মঠ। তন্তিন্ন, ইহাদের আখাড়া নামে কতকগুলি স্থান আছে, যথাস্থানে তাহার বিষয় লিখিত হইবে *।

জিজ্ঞানা করিলে, দশনামীরা অনেকে আপনাদিগকে নিগুণ-উপাদক বলিয়া পরিচয় দেন; কিন্তু তাঁহাদের বিভূতি প্রভৃতি শৈব-চিহ্ন-ধারণ, শিবালয়ে অবস্থান, নিজ গুরু শঙ্কর যামীকে শিবাবতার বলিয়া বিশাদ প, অধিকাংশেরই প্রথমে শিব-মন্ত্র-গ্রহণ, মহিল্পঃ স্তব নামে প্রদিদ্ধ শিব-স্তোত্র-পাঠ মাত্রে অনেকানেক অশিক্ষিত সন্ন্যামীর

* मन्त्राभीत्मत्र विवत्र मधा

† तस्याहि दृ:खग्रान्यथं शिवविण्यू च स्रतने।
श्राचार्य्योपाधिगोष्ठाान्त कुवाप्यगति प्यतः॥
विणीराचार्यकपस्य सा च भार्य्या भविष्यति।
श्राचार्यः ग्रङ्कराखग्रेऽपि क्रत्वा सन्न्यासमायमम्॥
उभयी वीद्वसङ्गस्य नैयायिकमतेन हि।
निवारियष्यतीवलात् ते मरिष्यन्ति दाहिताः॥

বুহদ্ধর্মপুরাণ উত্তর খণ্ড।

সরস্থতীর হ: থ নিবারণ উদ্দেশে শিব ও বিষ্ণু কোন আচার্য্য-কুলে অবতীর্ণ হইবেন। সরস্থতী আচার্য্য-রূপ বিষ্ণুর ভার্য্যা হইবেন। শঙ্কর নামক আচার্য্য সন্মাস আশ্রম গ্রহণ পূর্বক উভয়ে নৈয়ায়িক মত দ্বারা বৌদ্ধানগকে নিবারণ ক্রিবেন ও তাহাদিগের বল-প্রভাবে ভাহারা দগ্ধ হইয়া মহিবে। উপাসনা-কার্য্যের পর্য্যাপ্তি ইত্যাকার বিবিধ বিষয় তাঁহাদের শিবামু-রাগ ও শিব-পক্ষীয়তা বিষয়ে সাক্ষ্য দান করিতেছে। শান্ত্রেও সুস্পষ্ট লিখিত আছে, মহাদেবই সন্ন্যাসীদের দেবতা।

> यतीनाञ्च महेम्बर: । श्वरुमःहिछा।

মহাদেব সন্ন্যামীদের দেবতা।

তাঁহাদের প্রতিপক্ষীয় বৈষ্ণবউদাসীনেরাও তাঁহাদিগকে শৈবমতক্ষ বলিয়া জানেন। শৈব-বৈষ্ণবের যে বন্ধমূল বিরোধ ও যুদ্ধাদির
বিষয় শুনিতে পাওয়া যায়, তাহা বৈরাগীদের সহিত এই দশনামী
সন্নাাসীদের বিরোধ বই আর কিছুই নয়। ইহাদের অন্তর্গত কতকগুলি
লোক নিরবচ্ছিন্ন নিগুণ-উপাসক অথবা আত্মজ্ঞানী ভাহার সন্দেহ
নাই। এই পুস্তকের উত্রোত্তর অংশ পাঠ করিলে ভাহা জানিভে
পারা যাইবে। শক্ষরাচার্যার ভাষ্যামুঘায়ী বেদান্ত-চর্চা ও বেদান্তপ্রতিপাদ্য আত্মজ্ঞান সাধনই তাঁহাদের মুখ্য ধর্ম। ফলতঃ দশনামীদের বিশ্বাস এই যে, ষিনি ব্রহ্ম তিনিই শিব। শিবগীতাতে শিবের
নিরাকার সাকার উভয় স্বরূপের একত্র বর্ণনা দ্বার। সে বিষয়টি
স্কুম্পন্ট প্রতীয়মান হইতেছে।

श्रविन्यरूपमय्यक्तमनन्तमसृतं शिवम् । श्रादिमध्यान्तरहितं प्रशान्तं ब्रह्म कारणम् ॥ एकं विभुं चिदानन्दमरूपमजमङ्गतम् । शुडस्फटिकसङ्गाश्रमुमादेहाङ्ग्रीधारिणम् ॥ व्याघ्रचस्माम्बरधरं नीलकण्ढं त्रिलीचनम् ॥ जटाधरं चन्द्रमौक्षं नागयज्ञोपवीतिनम् ॥

व्याघ्रचमा सरीयञ्च वर्ष्यमभयप्रदम । पराभ्यामद्व इस्ताभगं विभ्नाणं परश्चं सृगम्॥ चन्द्रसूर्याग्निनयनं स्रोरवन्नसरोरुइम। भूतिभूषितसञ्जाङ्गं सञ्जाभरणभूषितम् ॥ एवमात्मारणिं क्रत्वा प्रणवञ्चीत्तरारणिम। ज्ञाननिक्षेयनाभ्यासात् साचात् पर्यात मां जन: ॥ শিবগীতা।

षठिक्षा, ष्यवाक, ष्रमञ्ज, ष्रमव, निव-त्रक्रभ, ष्रामान्तः मधा-त्रहिक, श्रामान्त ক্ষারণ-স্বরূপ ব্রহ্ম, একমাত্র, সর্বব্যাপী, জ্ঞানানল-স্বরূপ, রূপ-বর্জ্জিত, জ্বন্ম त्रिक्त, अषुक, अक-कृष्टिक-প्रक, उभात अर्क-(तर-धात्री, वााध-धर्म-भविधान, नीनकर्श, विलाहन, क्रोधित, हक्तरभीन, नाग-यद्धापवीज-धाती, वााध-हर्भ-রচিত-উত্তরীয়-ধারী, বরণীয়, অভয়-প্রদাতা, হুই উৎকুষ্ট উর্জ্বন্ত খারা পর্তু এবং মুগ ধারী, মধ্যাক্ত কালীন কোটি সুর্যোর জার আভা-যুক্ত, কোট-চন্দ্র-তুলা স্থাতিল, চক্র স্থা অগ্নি এই ত্রিনয়ন-বিশিষ্ট, ঈষৎ-হাস্ত-মুখ-পদ্ম-বিশিষ্ঠ, সর্বাঙ্গে বিভৃতি ভৃষিত, এবং সর্বাভরণ-মক্ত এইরূপ আত্মা যে আমি, আমাকে অরণি করিরা ও প্রণথকে উত্তর অরণি করিয়া জ্ঞান-মন্থন পূর্ব্বক লোকে আমারে সাক্ষাৎ দেখিতে পার।

উল্লিখিত দশ প্রকার সন্ম্যাসীর মধ্যে অনেকেই কেবল আপন আপন শ্রেণীর নামমাত্র ধারণ করে: স্বধর্মোচিত সাধন ও নিয়মা-মুষ্ঠান কিছুই করে না। তাহারা নিতান্ত মূর্থ, কেবল ভীর্থভ্রমণ ও বিজয়া-ধূম পান করিয়া জীবন-ক্ষেপ করে। বেদাস্তাতুমত তত্ত্ব-জ্ঞানের অমুশীলন ইহাদের আদি ধর্ম হইলেও হইতে পারে, কিন্তু পরে ইহারা তন্ত্র ও যোগ-শান্ত্র অবলম্বন করিয়া তদসুযায়ী অমুষ্ঠানে প্রবৃত্ত ছইয়াছে। তদমুদারে অনেকে যোগ সাধন ও অলোকিক

ক্রিয়ামুষ্ঠান দারা দৈব শক্তি প্রকাশ করিতেও চেফা পায়। দাবি-স্তানে লিখিত আছে, একটি দণ্ডী তিন ঘণ্টা কাল নিশাস রোধ, শিরা ইইতে চুগ্ধ নিঃসারণ, কেশ দারা অন্থি-চেছদন ও বোতলের মধ্যে অখণ্ড গণ্ড প্রবেশিত করিতে পারে।

যদিও ইহারা ভিক্ষোপজীবি, কিন্তু পশ্চাৎ দৃদ্ট হইবে, ইহাদের অন্তর্গত সম্প্রদায়-বিশেষে স্থবিস্তৃত বাণিজ্য ব্যবসায়ে প্রবৃত্ত হইয়াছে।

ইহারা বৈরাগীদের ন্যায় ডোর কোপীন ধারণ করে ও মৃত্যু ঘটিলে শব দাহ না করিয়া মৃতিকার মধ্যে স্থাপন অথবা জলে নিক্ষেপ করিয়া থাকে। ইহাকেই মুং-সমাধি ও জল-সমাধি বলে।

सत्र्यासिनां स्रतं कायं दाइयेत्र कदाचन। सम्पूज्य गन्धपुषाद्यै निखनेदास् मज्जयेत्॥

মহানিকাণি তন্ত্র সইমোলাদ।

সন্ন্যাসীদের মৃত দেছ কলাচ দগ্ধ করিবে না: গন্ধ প্রপ্যাদ দারা অর্জনা করিয়া মৃত্তিকার মধ্যে প্রোথিত করিবে অথবা জলে মগ্র কার্য়া দিবে।

কাশী, মৃজাপুর প্রভৃতি পশ্চিমোত্তর প্রদেশে কেই কেই একটি প্রস্তরাধারে শব সংস্থাপন করিয়া সমাধি দেয়।

দশনামীদের মধ্যে উত্তম উত্তম পণ্ডিত ও প্রধান প্রধান গ্রন্থকার হৃত্যা গিয়াছেন। শঙ্করাচার্য্য যে সমস্ত আত্মজ্ঞান-বিষয়ক পুত্তক করেন, তাহা পূর্বেই লিখিত হৃত্যাছে। আনন্দলহরী ও অমরুশতকও তাহার প্রণীত বলিয়া প্রদিদ্ধ আছে। ওদায় শিষ্য আনন্দগিরিও শঙ্কর দিখিজয় নামে তাহার চরিত-গর্ভ একখানি গ্রন্থ রচনা করেন ও তাহার কৃত সূত্র-ভাষ্য :উপনিষ্ট্যাষ্য প্রভৃতি সমুদ্য় ভাষ্যের টাকা প্রস্তুত করিয়া যান। অমরকোষের একজন সিকাকারের নাম

রামাশ্রম। পঞ্চালী গ্রন্থ ভারতীতীর্থবিদ্যারণ্যমূনীশ্বরের প্রণীত বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে। বেদ-ভাষ্যকার মাধবাচার্য্য সম্যাসধর্ম অব-লম্বন করিলে বিদ্যারণ্য স্বামী নামে খ্যাত হন।

ইহাঁদের মধ্যে অনেকানেক ব্যক্তি অধ্যবসায়শালী ও উৎসাহবান্ দেশ-পর্যাটকও হইয়া গিয়াছেন। শঙ্করাচার্য্য নিজে শিষ্য-গণ
সমজিব্যাহারে লইয়া ভারতভূমির দক্ষিণ সীমা হইতে উত্তরাভিমুখে
নানা দেশ পরিজ্ঞমণ পূর্বক উহার উত্তর সীমাবস্থ হিমালয় পর্বত
আরোহণ করিয়া কেদারনাথ পর্যাস্ত গমন করেন। এখনও অনেকে
দক্ষিণে সেতৃবন্ধ, উত্তরে বদরিকাশ্রম, কেদারনাথ, কৈলাস-পর্বত
ও মানসসরোবর এবং পশ্চিমে বেলুচিস্থানের অন্তর্গত হিঙ্গলাক *
পর্যান্ত পর্যাটন করেন ও কেছ বা ভ্রমণোৎসাহে সমধিক উৎসাহিত
হইয়া তদপেক্ষায়ও দূর দূরান্তর যাত্রা করিয়া থাকেন।

১৮৭৪ খ্রীফাব্দের প্রথম ভাগে ভাগীরথভারতী নামে একটি পরমহংসের সহিত আমার আলাপ ও আত্মীয়তা ঘটে। তিনি ফল-পথে দক্ষিণে সেতৃবন্ধরামেশ্বর, পূর্বাদিকে অনেকানেক বন পর্বত অতিক্রম পূর্ববিক বিবন্ধ কুকিদের দেশ, পশ্চিমে ভিন্ন ভিন্ন সময়ে কাবুল, কান্দাহার, হিঙ্গলাঞ্জ ও খোরাশান এবং উত্তরে হিমালয়

তন্ত্ৰচূড়ামণি।

সতীর ব্রহ্মরন্থ হিঙ্গলাতে পতিত হয়। দেখানে ভীমলোচন ভৈরব এবং কোট্রীনামী দিগধরী তিখাণা মহামায়া বিদ্যমান আছেন।

^{*} এই স্থানের সংস্কৃত নাম হিল্লা। ইহা হিন্দুদের একটি প্রধান তীর্থ-ভূমি।

जन्नरभुं हिङ्गलायां भैरवी भीमलीचन:।

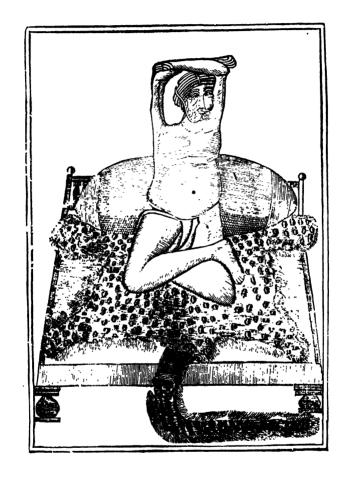
कीहरी सा महामाया विगुणा या दिगन्वरी॥

উত্তরণ পূর্ব্বক ভোট-দেশের মধ্য দিয়া পশ্চিমাভিমুখে চীনতাতারের অন্তর্গত ইয়ার্কন্দও পর্যান্ত পরিভ্রমণ করেন। তিনি কয়েকবার সমুদ্র-পথেও বাত্রা করেন। আমার সহিত সাক্ষাৎকার ঘটিবার ন্যুনাধিক তিন বৎসর পূর্বের এক বার করাচী বন্দরে একটি দঙ্গলী গোসাইয়ের অর্ণবপোতে আরোহণ করিয়া পশ্চিমাভিমুখে গমন পূর্ব্বক আরবের অন্তরপাতী মক্ষট নগরে উপনীত হন এবং তথা হইতে ঐ জ্ঞাহাজেই দক্ষিণ মুখে বাত্রা করিয়া মরীচ অর্থাৎ মরিশস্ দ্বীপে অবভরণ করেন। তথায় কয়েক দিবস অবস্থান করিয়া উত্তরাভিমুখে প্রস্থান করেন ও আদেন নগর অতিক্রম ও লোহিত সাগর প্রবেশ পূর্ব্বক মন্ধা নগর দক্ষিণ হস্তে রাখিয়া ক্রমশঃ উত্তর মুখে চলিয়া বান। কিছু দূর গিয়া তদপেক্ষা একটি বৃহৎ সমুদ্রে পড়েন ও পশ্চিমোত্তর মুখে গমন করিয়া মন্ধার পশ্চিমাংশ হইতে যাত্রা করিবার ১৭।১৮ দিবস পরে সমুদ্রভীরস্থ একটি পর্বত্বের উপর জালামুখী দেখিতে পান *।

খৃষ্টাব্দের অফীদেশ শতাব্দীর শেষার্দ্ধে পুরাণপুরি নামে একটি উর্দ্ধবাহু সন্ন্যাসী বিভামান ছিলেন। দেশপর্যাটনে তাঁহার এরূপ উৎসাহ ছিল যে, তদীয় ভ্রমণ-বৃত্তাস্ত পাঠ করিয়া দেখিলে বিস্ময়াপন্ন ইতে হয়। তিনি কাম্যকুজ-নিবাসী একটি রাজপুত-জাতীয় ক্ষত্রি-

^{*} ঐ আলা-মুখী লিপারি-ঘীপত্ন ট্রম্বলি নামক আগ্নেয়-গিরি বলিয়া সহসা বোধ হইতে পারে। পরমহংস বলেন, ঐ পর্কত রুমশাম দেশের অন্তর্গত বা অতি নিকটত্ব। ইটালীর রাজধানী জগদিখাত রোমনগরও উল্লিখিত দ্বীপের সমীপত্ব বটে, অতএব এ অংশে ঐ অমুমানের সহিত তাঁহার কথার অসক্ষতি হয় না। কিন্তু সে অঞ্চলে শাম নামে কোন দেশ বিদ্যমান নাই। পারসীক ভূগোলে তুর্কিদেশের এক প্রদেশের নাম ক্রম এবং সীরিয়া ও দমিস্ক নগরের নাম শাম বলিয়া লিখিত আছে।

য়ের কুলে জন্ম গ্রাহণ করেন। নয় বৎসর বয়ঃক্রেমের সময়ে অর্থাৎ ১৭৫২ অথবা ৫৩ খৃফীকে পরিজনের অজ্ঞাতসারে গৃহ পরিভ্যাস



পুরাণপুরি।

পূর্ববিক বিঠুরে আসিয়া সন্ধ্যাসাঞ্জম অবলম্বন কারেন। ঐ সময়ের 🖫 পর ও ১৭৫৬ খৃষ্টাব্দের মধ্যে কোন সময়ে প্রবাশে আগমন করিয়া

উৰ্দ্ধবাহ্য হন। তিনি উত্তরে ভোট * অর্থাৎ তিব্বৎ, দক্ষিণে সিংহল দ্বীপ ও পূর্ববিদিকে ব্রহ্ম-দেশ পর্য্যস্ত গমন করেন এবং পশ্চিমে সিন্ধ-নদাদি অতিক্রম করিয়া আফগানিস্থান, খোরাসান, কাস্পীয়ন সাগ-রের সমীপস্থ নানা স্থান ও রুশিয়ার অন্তর্গত আস্ত্রাকান প্রভৃতি বিবিধ দেশ, প্রদেশ, নগরাদি পরিজ্ঞমণ পূর্ববক আসিয়া-খণ্ডের পশ্চিম সীমায় উপস্থিত হন। তাহাতেও পরিতৃপ্ত ও প্রতিনিবৃত্ত না হইয়া ইউরোপীয় ক্রশিয়ায় প্রবেশ পূর্বক মক্ষ-নগর পর্য্যন্ত পর্যাটন করেন। তিনি তথা হইতে স্বদেশ প্রত্যাগমনের সময়েও তাহার পরে তুর্কি इतान, थत्रक-घोপ, वाहितन्-घोপ, मका, त्याथाता, ममत्रकन्म, ट्यांग প্রভৃতি নানাবিধ দেশ, প্রদেশ, নগর ও গ্রাম ভ্রমণ করিয়া নেত্র-যুগলের তৃপ্তি সাধন করেন। তিনি বলিয়া গিয়াছেন, আমি তৃর্কি-দেশীয় বসুরা নগরে গোবিন্দরাও ও কল্যাণরাও নামে ছুইটি বিষ্ণু-মূর্ত্তি দেখিয়াছি ও আরবদেশীয় মস্ফট্ নগরে, তাতার-দেশীয় বাখ্নগরে ও খরকদ্বীপে অনেক হিন্দুর সহিত সাক্ষাৎ করিয়াছি। আর তিনি ইহাও কহিয়াছেন, আসিয়ার অন্তর্গত কৃষ-দেশের আস্তাকান-নগরে অনেকগুলি হিন্দুর অবস্থিতি আছে: তাঁহারা আমাকে যথেষ্ট আদর অবেক্ষা করিয়াছিলেন। কত কত বন পর্ববত অতিক্রেম করিয়া ও নানা প্রকার অসভ্য ও বর্বর কাতির মধ্য দিয়া পদ-ব্রকে এত দুর জ্ঞমণ করা সাধারণ বীর্য্য ও সাধারণ উৎসাহের কর্ম্ম নয়।

আমাদের ঐ উর্জবান্থ ঠাকুরটি অসুগ্রহ করিয়া ছুই এক বার রাজ-কার্যাণ্ড করিয়া দিয়াছেন। তিনি যে সময়ে ভোটদেশের

^{*} বাঙ্গালা ভূগোলে যে দেশের নাম তিকাং বলিয়া লিখিত হয়, তাহার প্রকৃত নাম ভোট।

রাজধানীতে অবস্থিতি করিতেছিলেন, সে সময়ে তথাকার রাজ্বপুরুষেরা তাঁহার দ্বারা গবর্ণর জেনেরল হেস্টিংসের সমাপে রাজকার্য্য-সংক্রান্ত কতকগুলি কাগজপত্র প্রেরণ করেন এবং তিনি সেই
সমস্ত লইয়া বারএল্ ও এলিয়ট্ সাহেবের সমক্ষে অর্পণ করিয়া
যান। আর এক বার তাঁহাকে কাশী-নগরীতে রাজা চেত সিংহ ও
তথাকার রেসিডেণ্ট গ্রেহাম সাহেবের নিকট পাঠাইয়া দেওয়া হয়।
ক্রেক বৎসর পরে গবর্ণর জেনারল তাঁহাকে আশাপুর নামক এক
খানি গ্রাম জায়গীর দেন, এবং তিনি তাহা বরাবর নিজর ভোগ
করিয়া আইসেন।

তাঁহার বুদ্ধি, বার্য্য, সাহস ও অধ্যবসায়ের বিষয় পর্য্যালোচনা করিয়া দেখিলে বোধ হয়, তিনি ইউরোপীয় বিভায় স্থানিক্ষিত হইলে, হয় ত, দ্বিতীয় রামমোহন রায় হইয়া উঠিতেন *।—এদেশীয় সভ্যতর নব্য সম্প্রদায়! তোমরা কমলা-দেবার প্রসাদ-লাভ উদ্দেশে ধূম-ধ্বজ স্থাক সমুস্র-যানে স্থাথ শয়ান ও স্বচ্ছন্দে দোলায়মান হইয়া, চর্ব্যা চোষ্য লেছ পেয় চতুর্বিধ ভোগ উপভোগ পূর্ববিক, অক্রেশে কমলা-তার্থ বিলাৎ-ক্ষেত্র দর্শন করিতে পার, ও তথাকার অসহ্য চাক্চক্যা দর্শনে চমৎকৃত ও বিমোহিত হইয়া, বিলাতীয় বেশ ভূষাদি ভৌতিক বিষয় মাত্রের অনুকরণ পুরঃসর, আপনাদের অসারবন্তাও প্রকাশ করিতে সমর্থ হও; কিন্তু নিশ্চয় জানিও, এ অংশে অশিক্ষিত পুরাণ-

^{*} পুরাণপ্রির যে ভ্রমণ-বৃত্তাস্ত (১) হইতে এ বিষয়টি সংক্ষেপে সংগৃহীত হইল তাহা ১৭৯২ খুষ্টান্দের মে মাসে সঙ্কলিত হয়; তথনও তিনি দেশ-পর্যাটনে একবারে নিবৃত্ত হন নাই।

⁽³⁾ Asiatic Researches, vol. v, pp 37-46.

পুরির উৎসাহ, অধ্যবসায়, কোতৃহল ও প্রতিবিধিৎসা অদ্যাপি তোমাদের আদর্শ-ভূমি হইয়া রহিয়াছে। তোমাদের শরীর গুলিই কেবল
বামনরপ ধারণ করিয়াছে এরূপ নহে, মনও তাহার অমুপযুক্ত হয়
নাই। "আকারসদৃশী প্রজ্ঞা" কেবল দিলীপেরই হইতে হয় এমন নয়;
তাদৃশ কবি উপস্থিত থাকিলে, ভাবাস্তরে তোমাদেরও সেইরূপ বর্ণনা
করিতে পারিতেন। শরীর খর্বব*, মন খর্বব, আয়ু য়য়, ইহাতে আর
শুভ প্রত্যাশার সন্তাবনা কি' ? ভারত-ভূমির প্রকৃতি-সিদ্ধ বল-বার্য়্য
দিন দিন ক্ষাণ ও বিলীন হইতেছে তাহার সন্দেহ নাই। শিক্ষায়
স্বভাবের ক্ষয় কত পূরণ করিতে পারে ? ধর্ম্মনীতির অমুশীলন ও
অমুষ্ঠান-শিক্ষা এদেশীয় শিক্ষা-প্রণালীতে সন্ধিবেশিত করা রাজপুরুষদের প্রোয়ঃ বোধ হয় নাই। অতএব সে বিষয়ের ত কথাই নাই।
একবারেই মরু-ভূমি! অতর্পণীয় ধনংলাভ ও শৃত্য-গর্ভ অভিমান
'বিভারণ্য' অধিকার করিয়াছে। অশেষ দোষাকর পানীয়-দোষে ঐ
পূণ্য-ধামের সকল গুণ সংহার ও সকল অকল্যাণ বর্দ্ধন করিতেছে।
উচ্চতর ও মহত্তর গুণ সমুদায় তথায় স্থান পাইতেছে না ণা। অশি-

^{*} পূর্বকালীন এটকের৷ যে হিন্দুদিপকে দীর্ঘ-কার, সাহসী ও আসিরা-ধণ্ডের অন্য অন্য সকল জাতি অপেক্ষা রগ-পণ্ডিত বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন, তাহারা এখন কুদ্র-কার হইয়া কুদ্র হইয়া পেল! হায়! দুড়িষ্ঠ বলিষ্ঠা, দীর্ঘাকার বীরপুক্ষদের কুলে কতক গুলি পিপীলিকা জন্মিলাম! এ হঃধ রাখিবার স্থান নাই! আমাদের সে দিন কি আর ফিরে আস্বেন।?

[†] সাধারণ বিষয় সম্বন্ধীয় সকল কথারই প্রায় ব্যক্তিচার-স্থল থাকে; অতএব এ সকল কথারও নাই এমন নয়। এখন প্রত্যেকে আপনাকে ব্যক্তি-চার-স্থল মনে করিলেই মার প্রতীকার-চেষ্টার সম্ভাবনা থাকে না।

ক্ষিত লোকের কথাই বা কি কহিব ? "———ভতোহধিকঃ **?**।" উভয় দলের মধ্যেই বাক্য-নিষ্ঠার অসম্ভাবে পরস্পারের মন পেষণ করিতেছে। মিথ্যা, শঠতা, প্রভারণা ও ভল্লিবন্ধন মোকদ্দমায় দেশ-মধ্যে যে কিরূপ অনল জ্বালিয়া দিয়াছে, তা বলিবার নয়। পূর্বকালে যে হিন্দুজাতির স্থায়পরতা, সত্যবাদিতা, শাস্তশীলতা, পান-দোষ-বিহীনতা, ব্যবহার-বিমুখতা * ও সর্ববাংশে বিশুদ্ধ-চরিত্রতা দেখিয়া বিদেশীয় লোকে বিস্ময়াপন্ন হইত, যাহাদের মধ্যে ঋণ-দান ও তাদৃশ অশু অশু অনেক বৈষ্য়িক ব্যবহার বিষয়ে খত পত্রাদি লিখন এক সময়ে অপ্রচলিত ছিল, যাহারা ধনাদি রক্ষার্থ কুলুপ দিয়া ঘার রুদ্ধ করা অনাবশ্যক জানিত ণ ও শত বৎসর অপেক্ষাও অল্লকাল পূর্বের যাহার৷ সূর্য্য-সাক্ষা ও ধর্ম্ম-সাক্ষা করিয়া অকুষ্ঠিত হৃদয়ে ঋণ প্রদান করিত, এই সেই হিন্দুদের এখন এইরূপ তুর্দ্দশা উপস্থিত হইল! হায়! কি ভারতভূমিই এ বংশে কি হইয়া গেল! অশিক্ষিত লোকের ষতই তুৰ্গতি হউক না কেন, প্ৰীতি-নিকেতন শিক্ষিত-সম্প্ৰদায়! লোকে ভোমাদেরই বিস্তর আশা ভরসা করিতে পারে এজন্য ভোমাদিগকেই ত্ব কথা বলিতে মন যায়। কিন্তু তোমাদেরই ভাই অপরাধ কি ? অকারণে কোন কার্য্যের উৎপত্তি হয় না। কারণসকর

^{*} মোকদমান্ত্র বিমুধতা।

[†] ন্যুনাধিক বাবিংশতি শতাক পুর্বে আলেকজাণ্ডার ও মিগান্থিনীস এবং তাঁহাদের সহচর গ্রীকেরা ঐরপ দেখিয়া চমৎক্রত হন্। তাঁহারা ভারতবর্ষের একটি লোককেও মিথ্যা কথা কহিতে শুনেন নাই। এবং কখন যে কেহ কহিয়াছে এমনও জানিতে পারেন নাই। কিঞ্চিদ্ধিক বাদশ শতাক পূর্বে চীনদেশীয় তীর্থ যাত্রী হিউএনথসঙ্গও হিন্দুদের ঐরপ স্থপবিত্র চরিত্র বর্ণন করিয়া যান।

উপস্থিত হইয়াই আমাদের এই ফুর্দ্দশা ঘটাইয়াছে।—ভাই হে। আমি মুক্ত-কণ্ঠে বলিতে ও স্পাফীক্ষরে লিখিতে পারি, এদেশ সম্বন্ধীয় विविध विषएयत * वर्खमान अवन्त्रा विषामान शाकिए. वान्नालाय পুনরায় আশানন্দের ণ অসম্ভাবিত উদ্ভব হওয়াও যদি কথঞ্চিৎ সম্ভব হয়, তথাচ একটি রামমোহন রায় আর এখানে জন্মগ্রহণ করি-বেন না!! বিশুদ্ধ-বৃদ্ধি রাজপুরুষেরা আমাদের প্রকৃত রূপ ব্যাথার वाशी इहेटल यमिटे किं अञीकांत्र कतिए भारतन, उथांठ व्यनिवांश নৈদর্গিক দোষ কে নিবারণ করিবে ? ভারতবর্ষের ইঙ্গরাজ-রাজত্বের নিত্য দহচর-স্বরূপ স্থাস্থ্যক্ষয়, পাপ-বৃদ্ধি ও তুমুল্যতা দোষই বা কি প্রকারে দুরীকৃত হইবে ? আবার সর্ববাংশে অতি-প্রবলের সহিত অভি ভুর্বলের শাস্তৃ-শাসিত সম্বন্ধের বিষময় চরম ফল মনে হইলে হৃৎকম্প সমস্ত কারণ-প্রভাবে আমাদের উল্লিখিত যে অকল্যাণ-রাশির সজ্ঘটন হইয়াছে, সেই সমুদায়ের কার্য্য-প্রবাহ নিরন্তর চলিলে, আমাদের বিপৎ-প্রবাহ কোথায় গিয়া শেষ হইবে, কে বলিতে পারে ? একবার ভাবিয়া দেখ দেখি কি সর্ববনাশ উপ-স্থিত! ভাল এক অপ্রাসঙ্গিক শোচনীয় ব্যাপার উত্থাপিত করিয়া অন্তঃকরণ ছিন্ন ভিন্ন করিয়া ফেলিলাম। উপায় যে কিছুই দেখিনে। ভেবেও কুল পাই নে। এদেশের উত্তর কালীন অবস্থা পর পর কেবল ধুমাকীর্ণ দেখিতেছি। বিষাদ ও অবসাদ আসিয়া জীবন জড়ী-ভূত করিল। যেন কুত্মটিকায় হৃদয়-ভূমি আচ্ছন্ন করিয়া ফেলিল।—

^{*} জলবায় বাল্য-ব্যবহার, শিক্ষা-প্রণালী, অসমন্ত্রে ও অতিরিক্ত পরিমাণে পরিশ্রম, স্বাস্থ্যরক্ষা ও বল-বৃদ্ধির চেষ্টা বিরহ, ধর্মনীতির অনুশীলন ও অনুষ্ঠানে যত্নাভাব, সামাজিক ব্যবস্থা-প্রণালীর দোষসমূহ ইত্যাদি বিষ্যের।

[†] স্প্রসিদ্ধ বলবান্ আশানন্দ ঢেঁকির।

— খোর তুর্দিন ! — অমাবস্থার নিশীপসময় ! — বিত্রাৎ-শৃত্য মেঘ:চহন্ন ভামসী বিভাবরী !!

প্রকৃত প্রস্তাব আর ভূলিয়া থাক। উচিত নয়। দশনামীরা ভিন্ন ভিন্ন বৃত্তি ও সাধন অবলম্বন করিয়া দণ্ডী, পরমহংস, সন্ন্যাসী প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন উপাধি প্রাপ্ত হন। পশ্চাং ষ্থাক্রমে সে সমস্ত লিখিত হইতেছে।

मछी।

যাঁহারা দণ্ড * কমণ্ডলু সজে লইয়া ভ্রমণ করেন, তাঁহাদের নাম দণ্ডী। মাতা, পিতা, পুত্র, কন্মা ও ভার্য্যা-বিহীন ব্রাহ্মণ ভিন্ন অন্ত কাহার দণ্ডী হইবার অধিকান নাই গে। এই রূপ ব্যক্তি সন্ন্যাদাশ্রেম

खितायां यीवनयुत्तकान्तायां परमेश्वरि।
सन्तें हि विफलं तस्य यः कुर्य्याद्द्वाधारणम् ॥
विद्येते पितरी देवि ! यः कुर्य्याद्द्वाधारणम् ॥
सन्नासं विफलं तस्य रीरवाच्यं गिमाधाति ॥
विद्यते बालभावेन यस्य कान्ता सुतस्यथा।
सन्नासधारणं तस्य द्या हि परमेश्वरि ॥
स गुक्शापि शिष्य्व रीरवाद्यं प्रपद्यते ॥

निर्दा उन्न दर्शावन भटेन।

এটি বংশদণ্ড। সেই বংশের গ্রন্থি সম্পায় হইতে বে সকল শাখা নির্গত
হয় ভাহা কর্ত্তন করিয়। কৈছু কিছু অবশিষ্ট রাখা হইয়া থাকে।

[†] পি চা, মাতা, শিশু-পূত্র ও যুবতী ভার্যা বিজ্ঞমান থাকিতে দওগ্রহণ করিলে, তাহা বিফল হয় ও বিষম প্রতাবার জন্মে।

অবলম্বনে কৃত-সঙ্কল্প হইলে, কোন ভক্তি-ভাজন দণ্ডি সন্নিধানে উপস্থিত হইয়া আত্ম-বাসনা অবগত করেন। করিলে, সেই দণ্ডী গুরু প্রশ্নাদি ঘারা তাঁহাকে সে বিষয়ে নিভাস্ত দৃঢ়প্রভিজ্ঞ ও ব্ধার্থই পিতা, মাতা, ভার্যাা, পুল্রাদি-বিবর্জ্জিত জানিতে পারিলে *, ব্ধাবিহিভ উপদেশদান ও তদর্থ ক্তকগুলি ক্রিয়া সম্পাদন করিতে প্রবৃত্ত হন।

দশু গ্রহণ ব্যাপারটি শিষ্মের পুনর্জ্জন্ম বলিয়া পরিসণিত হয়। গুরু তাঁহার শরীরে ফুৎকার দিয়া প্রাণপ্রতিষ্ঠা করেন, অয়প্রাশন ও পুনঃ সংস্কার করিয়া দেন এবং দশাক্ষর মন্ত্র নামে একটি মন্ত্র উপদেশ করিয়া থাকেন। এইটি ইহাঁদের মূলমন্ত্র। ইহাঁরা এইটি দ্বপ করিয়া অনেক কার্য্য সাধন করেন। দশু-গ্রহণের সময়ে শিখা ও সূত্র অর্থাৎ যজ্যোপবীত পরিত্যাগ করিতে হয়। একটি গুবাকের সহিত সেই শিখা ও যজ্যোপবীত সংযোজিত এবং স্থৃত ও মৃত্তিকা দারা বিলেপিত করিয়া যথাবিধানে অগ্রিকুণ্ডে নিঃক্ষেপ করা হয়। তাহা ভস্মীভূত হইলা, শিষ্য ভক্ষণ করেন। করিলে, তৎক্ষণাৎ নরনারায়ণ হইয়া উঠেন এই রূপ লিখিত আছে। এই নিমিতই লোকে বলে 'পৈতা পুড়াইয়া ভগবান হয়'।

গুরু যথাবিধি মন্ত্রে চেনরণ ও ক্রিয়া অমুষ্ঠান করিয়া শিব্যকে দণ্ড কমগুলু ও গেরুয়া বস্ত্রের কৌপীন প্রদান করেন। ঐ দণ্ডের এক স্থান যজ্ঞোপবীত-ফড়িত ও একটু গেরুয়া বস্ত্রে আরত থাকে। ঐ দণ্ড মাছটি দণ্ডাদের পরম পদার্থ। তাঁহারা উহার উপরিভাগে মহাকালীর

পূজা করেন ও তথায় মহামায়া বিদ্যমান আছেন এইরূপ ভাবনা করিয়া থাকেন।

> श्रद्याविध महामायां दण्डोपिर विभावय । कुरु पूजां महाकाल्या दण्डोपिर हृदा ततः ॥ साचानारायण्ड्वं हि धर्माधर्मपरोऽभवः । तव माता पिता खामी सर्वे दण्डान्तिके स्थितम् ॥ निर्वाण छ्व ।

জ্ঞাবধি দণ্ডের উপরে মহামায়া বিদ্যমান বলিয়া ভাবনা কর ও ঐ দণ্ডের উপরি মহাকালীর মানদী পূজা করিতে থাক। তুমি সাক্ষাৎ নারায়ণ শ্বরূপ ও ধর্মাধর্মের অভীত। ভোমার মাতা, পিতা, শ্বামী সকলই দণ্ড-সলিধানে অবস্থিত।

দণ্ডী ও পরমহংদেরা করেন, দশনামীর মধ্যে তীর্থ, আশ্রাম, সরস্থান্ত ভারতীর কিয়দংশ এই সাড়ে তিন শ্রেণী শক্ষরাচার্য্যের প্রকৃত
শিষ্য সম্প্রনায়। তাঁহারা শক্ষরাচার্য্যের প্রবর্ত্তিত মতের অসুবর্ত্তী
থাকিয়া যথাবিধি ধর্মামুষ্ঠান করিয়া আসিতেছেন। অবশিষ্ট সাড়ে
ছয় শ্রেণী অধর্ম হইতে স্থালিত হইয়া অনেক প্রকার অমুচিত আচরণে অসুরক্ত হইয়াছে। দণ্ডীরা দণ্ডগ্রহণের সময়ে পূর্বনাম পরিভ্যাগ করিয়া একটি নূতন নাম ও উল্লিখিত তীর্থাদি চারি উপাধির একটি উপাধি গ্রহণ করিয়া ধাকেন।

ইহাঁরা নিগুণোপাসনাই মুখ্য ধর্ম বলিয়া জানেন ও অনেকে ভদর্থ প্রণব জপ ও ভতুপযুক্ত অন্থ অন্থ অনুষ্ঠান করিয়া থাকেন। যাঁহারা ভাহাতে অসমর্থ বা অনধিকারী, তাঁহারা শিবাদি কোন সপ্তণ দেবতার মন্ত্র লইয়া ভদীয় উপাসনায় প্রহৃত হন।

ইহাঁদের মহাবাক্যগ্রহণ নামে এবটি ক্রিয়া আছে। উপনিষদের মধ্যে পরমাত্মার স্বরূপ-প্রতিপাদক ও জীবব্রক্ষের অভেদ-বোধক কয়েকটি মহাবাক্য * আছে; ঐ ক্রিয়ায় তাহারই একটি অবলম্বন করিতে হয়।

ইহাঁরা মন্তক মুন্তন, শাশ্রু পরিত্যাগ ও গেরুয়া বন্ত্র পরিধান এবং বিভূতি ও রুদ্রাক্ষ মালা ধারণ করেন, ও পূর্বেই লিখিত হইয়াছে, দণ্ড কমণ্ডলু সঙ্গে লইয়া শ্রমণ করিয়া থাকেন। ইহারা অপরাপর সমুদয় দশনামীর অপেক্ষা শুদ্ধাচারী। প্রতিদিন কমগুলু ও পরিধেয় বন্ত্র ধৌত করেন, সন্ধ্যাবন্দনাদি কভকগুলি ক্রিয়ার অমুষ্ঠান করেন এবং প্রতি অমাবস্যাতে অথবা তুই মাস অন্তরে ক্লোরী হইয়া থাকেন। ধাতুও অন্মিম্পর্শ করেন না, স্তরাং স্বয়ং পাক করিয়া খান না। কোন ত্রাক্ষণের গৃহে ভিক্ষা-গ্রহণ অর্থাৎ প্রস্তুত অন্ন ভক্ষণ করেন, অথবা সঙ্গে ত্রহ্মচারী থাকে ভাঁহারই হত্তে ভোজন করিয়া থাকেন। দ্বি-ভোজন, আক্ষণ ভিন্ন অন্য জাতির অন্ন-গ্রহণ ও আক্ষরাধা খেলকা প্রস্তৃতি সূত্রবস্ত্র পরিধান ইহাঁদের পক্ষে বিধেয় নয়। নগরে বসতি করাও নিষিদ্ধ , উহার সমীপস্থ কোন স্থানে নির্ভ্তনে একাকী অবস্থিতি করাই উচিত। কিন্তু ইহাঁদিগকে এই শেষোক্ত নিয়মটি সর্ববে ভাতাবে পালন করিতে দেখা যায় না। পশ্চাল্লিখিত পরমহংস অবধৃত প্রভৃতিকে উক্তরূপ শুদ্ধাচার অবলম্বন করিয়া চলিতে इयं ना का

^{*} भवगहरत्मत श्रकात्व मशावात्कात विवत्र निविष इहेत्व।

[🕈] बर्नाञ्न मिछ-मध्यमाद्वत चाहात, वावहात ७ समाञ्जीन चारमकारम

দণ্ডীরা শুক্ষাচারী হইলেও, ভল্লের মধ্যে ইহাদের গুপু ভাবে মদ্যমাংগাদি ব্যবহার করিবার ব্যবস্থা দেখিতে পাওয়া যায়।

पञ्चतत्त्वं सदा सेव्यं गुप्तभावे जितेन्द्रिय।

প্রাণতোবিণী দণ্ডি-প্রকরণ।

তুমি জিভেজির; পোপনে মদ্যমাংসাদি পঞ্চত গ্রহণ করিবে।

পূর্বকাণীন চতুর্থ আশ্রমেরই অন্তর্মণ। তাঁহাদের ধেরপ নিয়মাদি লিখিত হইল, পশ্চালিখিত মন্থ-বচন গুলিতে প্রায় সেই রুপই ব্যবস্থিত রহিয়াছে।

> भागार।दिभिनिष्कृातः पविवीपिषतीसुनिः । ससुपीदेषु कामेषु निरपेषः परिव्रजेत ॥

> > ম্মু ৬। 8>

কমগুলু প্রভৃতি গ্রহণ পূর্বক গৃহ হইতে বহির্গত হইয়া ও মৌনাবলম্বন পুরঃসর সমীপ-প্রাপ্ত স্থবৰ সামগ্রীতে নিস্পৃহ হইয়া পরিভ্রমণ করিবে।

> षनिप्रिनिकेतः स्थाद्याममझार्थमात्र्येत् । एपेषकोऽसङ्गसुकोसुनिर्भावसमाहितः॥ मञ्जू ७ । ६७

অধি-ম্পর্ল-পরিত্যাগী, গৃহ-শৃত্ত, শারীরিক কটাদিতে উপেক্ষাকারী; স্থির-চিত্ত ও পরত্রন্ধে একাগ্রমনা হইরা অংহারাত্র অরণ্যে অবস্থিতি করিবে; কেবল ভিকার্থ এক একবার গ্রামে বাইবে।

> क्रृप्तकैथनखरम्युः पाती दखी क्रमुभवान् । विचरित्रयतीनित्यं सर्वमूतान्यपीषयन् ॥ मसू ७ । ६२

ফলতঃ শাক্তদের যেমন পশাচারী ও বীরাচারী নামে ছুই সম্প্রদায় আছে, ইহাদেরও সেইরূপ ছুই দল আছে শুনিতে পাই। কোন কোন দণ্ডী অভি সংগোপনে মদ্য মাংসাদি ব্যবহার করেন, অপর কেহ কেহ করেন না।

দশুতৈ ভাদশ বংসর পর্যান্ত উল্লিখিত নিয়ম সমুদায় পরিপালন
় পূর্ববিক দণ্ড ত্যাগ করিয়া পরমহংস আশ্রম অবলম্বন করিবে এই রূপ বিধান আছে।

কেশ, নথ ও শাশ পরিচিছর অর্থাৎ কর্তিত করিয়া রাখিবে এবং দণ্ড-কমগুলু ও ভিকাশাত সঙ্গে লইয়া ও কোন প্রাণীকে পীড়া না দিয়া নিয়ত ভ্রমণ করিবে।

> एककाल चरेडेचं न प्रसंज्ञेत विसरे। भैने प्रसंतोडिं यतिर्विषयेष्यपि संज्ञति॥ संसू ७। ८८

প্রাণ-ধারণার্থ দিনে একবার মাত্র ভিক্ষা করিবে, কিন্তু প্রচুর ভিক্ষার প্রবৃত্ত হইবে না। ষতি ভিক্ষাসক্ত হইলে পরে বিষয়াগক্ত হইয়া পড়ে।

> विधूमे सम्रमुषले व्यङ्गारे सुक्तवच्चने । इसे भरावसम्पाते भिचां नित्यं यतियरेत्॥

মহু ৬। ৫৬

রন্ধনের ধ্ম রহিত হইলে, ম্বলাঘাত (অর্থাং ধান ভানা) নির্ত্ত হইলে, চুলীর অগ্নি নির্বাণ হইলে, লোকের ভোজন-ক্রিয়া সম্পন্ন হইলে, এবং শরাব (অর্থাৎ ভোজন-পাত্র) পরিত্যক্ত হইলে, যতিতে প্রতিদিন ভিক্ষাকরিবে।

हादश्राब्दसर मध्ये तु यदि सृत्यु न जायते। दण्डं तोये विनि:चिप्य भवेत् परमहंसकः॥

শাদশ বংসরের মধ্যে যদি মৃত্যু-খটনা না হয়, তাহা হইলে জলের মধ্যে দণ্ড নিংক্ষেপ করিয়া পরমধ্যে হইবে।

কিন্তু অনেককে ঐ সময়ের বহু পূর্বের দণ্ড ত্যাগ ও অব্য অব্য অনেককে উহার বহু দিন পরেও দণ্ডাশ্রমে অবস্থিতি করিতে দেখা যায়।

দণ্ডীদিগের অগ্নি-স্পর্শ নিধিক, অতএব তাঁহারা শবদাহ করিতে পারেন না। হয় মৃত্তিকাতে খনন করেন, নয় কোন দেব-নদীতে নিক্ষেপ করিয়া থাকেন।

কাশী ইংলের প্রধান স্থান। তাহার অন্তর্গত কোন কোন স্থানে শত শত দণ্ডী ও পরমহংস একত্র দেখিতে পাওয়া যায়।

> चलाभे न विवादी स्थालाभे चैव न इर्षयेत्। प्राचयाचिकमाच: स्थान्त्राचासङ्गादिनिर्गतः॥

म्यू ७। ८१

ভিক্লাদি না পাইলে বিষয় হইবে না, লাভ হইলেও হাই হইবে না। প্রাণধারণ মাত্রের উপযুক্ত অন্ন ভোজন করিবে। দণ্ড কমণ্ডলু-রূপ সম্পত্তিতেও আসজি-শৃক্ত হইবে, অর্থাৎ ভাহার মধ্যেও এই কুৎসিত বস্তুটি ত্যাগ করি মধ্বা এই মনোহর বস্তুটি গ্রহণ করি ইত্যাদি প্রাগস্ত করিবে না।

ঘরবারী দতী।

ইহারা দণ্ডী নামে প্রসিদ্ধ থাকিলেও, স্ত্রী পুজাদি লইয়া সংসার করে ও কৃষি-কর্মাদি বিষয়-কর্মাও করিয়া থাকে। ইহারা পূর্ববিলিখিত দশনামের অন্তর্গত তীর্থ আশ্রমাদি উপাধি ধারণ করে ও মধ্যে মধ্যে দণ্ড, কমগুলু, গেরুয়া বস্ত্র প্রভৃতি ধারণ করিয়া তীর্থ জ্রমণ ও ভিক্ষা পর্য্যটন করিয়া বেড়ায়।

পশ্চিমোতর প্রদেশে ও বিশেষতঃ কাশী জেলার মধ্যে ছানে ছানে এই সম্প্রদায়ী অনেক লোকের বসতি আছে। নিজ সম্প্রদায়ের মধ্যে ইহাদের বিবাহাদি চলিয়া থাকে। অপরাপর গৃহস্থ লোকের যেমন স্বগোত্রে বিবাহ করিতে নাই, ইহাদেরও সেইরূপ নিজ মঠের দণ্ডি-গৃহে পাণি গ্রহণ করা বিধেয় ময়। সারদা মঠের অন্তর্গত তীর্ধ ও আশ্রমে শৃঙ্গগিরি মঠের ভারতী ও সরস্বতীর গৃহে বিবাহ করিতে পারে, কিন্তু আপন মঠের কোন দণ্ডি-কন্যার পাণি গ্রহণ করিতে পারে না।

দণ্ডী অথচ গৃহস্থ এ কথাটি আপাততঃ স্থবর্ণময় পাষাণ-পাত্রের মত্ত অসকত ও কোতৃকাবহ বলিয়া প্রতীয়মান হয়। বোধ হয়, কোন কোন স্থানিক দণ্ডী জ্রীলোকবিশেষের মধুর ভাবে বিমৃথা হইয়া এই কোতৃক ঘটাইয়াছেন। সন্ধ্যাসীদের মুখেও এ বিষয়ের এইরূপ কথাই শুনিতে পাওয়া যায়।

क्षीठक, वर्षक, रश्म अ श्रमश्म।

সূতসংহিতার জ্ঞানযোগ-খণ্ডে চারি প্রকার সন্ধাসীর বিবরণ, সন্ধি-বেশিত আছে; কুটীচক, বহুদক, হংস ও পরমহংস। যদিও পরমহংসেরা তত্ত্ব-জ্ঞানাবলম্বী, কিন্তু সূতসংহিতাতে মহাদেব পরমহংসাদি সমুদ্য় শৈব-সন্ম্যাসীর আশ্রম-দেবতা বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছেন, এই নিমিত্ত শৈব-সম্প্রদায়ের বিবরণ মধ্যে তাঁহাদেরও বৃত্তান্ত লিখিত হইল।

> ब्रह्मचर्यात्रमस्थानां ब्रह्मा देव: प्रकीर्त्तित: । ग्रहस्थानाञ्च सर्वे स्युर्य्यतीनाञ्च महेम्बर: ॥ वानप्रस्थात्रमस्थानामादित्थोदेवता मता । तस्मात् सर्वेषु कांत्रेषु पूच्यः सन्नामिनां हर: ॥ श्वारहित्र छान्यां भन्यां सन्नामिनां श्र

ব্রন্ধচারীদিগের দেবতা ব্রন্ধা, গৃহস্থদিগের সকল দেবতাই পূজা, সন্ধাদী-দিগের দেবতা মহাদেব, এবং বান প্রস্থদিগের দেবতা স্থা। অভএব সন্ধাদীরা সর্বাকালে শিবের পূজা ক্রিবেন।

কুটীচক ও হংসেরা শিব-লিঙ্গ অর্চনা করেন, বহুদকেরা দেব-পূজায় প্রবৃত্ত হন, পরমহংসেরা কেবল প্রণব-জপ ও জ্ঞানামুশীলন করিয়া থাকেন। সূত্সংহিতার জ্ঞান-যোগ-খণ্ড হইতে ইহাঁদের ক্রিয়ামুষ্ঠানের বৃত্তান্ত পশ্চাৎ উদ্ধৃত হইতেছে।

कुटीचक्य सम्रास्य खे खे वेग्सनि नित्यगः।
भिचामादाय भुद्धीत खबस्थूनां रम्हेऽयवा॥
ग्रिखी यद्गीपवीती स्थात् तिदग्ही सकमण्डलुः।
स पवित्रस काषायी गायत्रीस जपेत् सदा॥

सर्वाङ्गोद्दूननं कुर्यात् तिपुण्डुच्च तिसन्धिषु । प्रिवलिङ्गार्च नं कुर्यात् ऋषयैव दिने दिने ॥

কুটীচকে সন্ন্যাস গ্রহণ পূর্ব্বক স্থীয় গৃহে বা স্ববন্ধ-গৃহে অবস্থিতি করিবে, এবং ভিক্লা করিয়া ভোজন করিতে থাকিবে। শিথাবিশিষ্ঠ, বজ্ঞোপবীত-যুক্ত, ত্রিমণ্ড-কমণ্ডলুধারী, কাষায়-বস্ত্র-পরিধান ও শুভাচারী থাকিয়া সর্ব্বদা পায়ত্রী অপ করিবে। ত্রিসন্ধ্যা সর্ব্বাক্তে ভস্ম লেপন ও ললাটে ত্রিপ্তু ধারণ করিবে এবং প্রান্তি দিবস শ্রদ্ধা-সহকারে শিব-লিক্ত অর্চনা করিতে থাকিবে।

बह्रदक्ष सन्नास्य बन्धुपुतादिवर्ज्जितः।
सप्तागारं चरेत् भेच्यं एकान्नं परिवर्ज्जियेत्॥
गोवालरज्ज सम्बद्धं तिदग्छं शिक्यमद्भ तम्।
पात्रं जलपविनच्च कीपोनच्च कमग्छलुम्॥
गाच्छादनं तथा कत्यां पादुकां छन्मद्भुतम्।
पविनमजिनं सूचीं पचिणोमचसूत्रकम्॥
योगपट्टं विष्ठवेद्धां सत्वनित्रीं कपाणिकाम्।
सर्वाङ्गोष्ट्रननं तद्दत् तिपुग्छुच्चैव धारयेत्॥
गिस्ती यद्योपवीती च देवताराधने रतः।
स्वाध्यायी सर्व्वदा वाचमुत्स्रजेत् ध्यानतत्परः॥
सन्ध्याकालेषु साविनीं जपन् कन्धं समाचरेत्॥

বহুদকে সন্ন্যাসাশ্রম অবলম্বন ও বলুপুত্রাদি পরিত্যাগ করিয়া সাভ গৃত্তে ভিক্লা করিবে; এক গৃত্তের অন-গ্রহণ করিবে না। গো-পুচ্ছ-লোমের রজ্জু ছারা বন্ধ ত্রিদণ্ড, শিক্য, জল-পুত পাত্র, কৌপীন, কমগুলু, গাত্রাজ্ঞাদন, ক্ষা, পাছকা, ছত্র, পবিত্র চর্ম্ম, স্টী, পক্ষিণী, ক্লাক্ষমালা, যোগপন্ত, বহির্বাস, ধনিত্রী ও ক্লপাণ গ্রহণ করিবে। সর্কাক্ষে ভন্ম লেপন এবং ত্রিপুণ্ডু, শিখা ও যজ্ঞোপবীত ধারণ করিবে। বেদাধ্যমন ও দেবতারাধনায় রত হইরা ও সর্কালা বাক্য

পরিত্যাগ করিয়া ইষ্টদেবতার চিস্তনে তৎপর হটবে এবং সন্ধ্যাকালে গায়ত্রী-জ্বপ সহকারে স্বধর্মোচিত ক্রিয়ামুগ্রানে প্রবৃত্ত থাকিবে।

> हंस: कमण्डलुं शिकां भिक्तापात्रं तथैव च। कन्यां कीपीनमाच्छाखमङ्गवस्तं विहःपटम् ॥ एकन्तु वैणवं दण्डं धारयेकित्यमादरात्। तिपुण्ड्रोष्ट्रननं कुर्य्यात् शिवलिङ्गं समर्चयेत्॥ श्रष्टयासं सक्तित्यमश्रीयात् सशिखं वपेत्। सन्ध्याकालेषु सावित्रीजपमध्याकित्तनम्॥ तीर्थसेवां तथा कच्छं तथा चान्द्रायणादिकम्। कुर्वन् यामैकरात्रेण न्यायेनैव समाचरेत्॥

হংসে কমগুলু, শিকা, ভিক্ষা-পাত্র, কন্থা, কোপীন, আছাদন, আল-বন্ধ, বহিবাস, এবং বংশ-দণ্ড সতত যত্ন পূর্বকি ধারণ করিবে; অন্দেতে ভত্ম লেপন, ত্রিপুণ্ডু ধারণ ও শিব-লিঙ্গ অর্চনা করিবে; প্রতি দিবস একবার মাত্র আট গ্রাস ভোকন করিবে; শিখা সহিত সমুদ্য কেশ মুণ্ডন করিবে; সন্ধ্যাকালে গায়ত্রী-লপ ও অধ্যাত্ম-চিস্তন করিবে; এবং তীর্থ সেবা ক্লছু ও চান্ধায়ণাদি ব্রতামুদ্ধান সহকারে এক রাত্রি মাত্র গ্রামে অবস্থিতি করিবে ও স্থায়-যুক্ত আচরণ করিতে থাকিবে।

परमहंसिस्तदण्डश्व रक्कं गोवालिमिश्वतम् । शिकां जलपवित्रश्च पवित्रश्च कमण्डलुम् ॥ पिक्तणोमिजिनं सूचीं सृत्खिनित्रीं क्षपाणिकाम् । शिखां यन्नोपवीतश्च नित्यकर्मं परित्यजित् ॥ कौपीनं कादनं वस्तं कन्यां शोतिनवारिकाम् । योगपट्टं विहर्वस्तं पादकां क्षत्रमङ्गुतम् ॥ श्रचमालाञ्च ग्रङ्गीयात् वैणवं दग्डमत्रगम् । श्राग्निरित्यादिभिर्मान्ते : कुर्यादुडू ननं मुदा ॥ श्रोमिति च विभि: प्रोच्य परमसंसस्त्रिपुग्डू कम् ॥

পরমহংদে ত্রিদণ্ড, গো-বাল-মিশ্রিত রজ্জু, জল-পবিত্র শিক্য, পবিত্র কমগুলু, পদ্দিণী, অজিন, স্থান মুংখনিত্রী, কুপাণ, শিখা, যজ্ঞোপবীত ও নিত্য-কর্ম পরিত্যাগ করিবে। কৌপীন, আচ্ছাদন-বস্ত্র, শীত-নিবারিকা কন্থা, যোগপট্ট, বহিব সি, পাহকা, ছত্র, অক্ষমালা ও বংশ-দণ্ড গ্রহণ করিবে, "অগ্নি" ইত্যাদি মন্ত্র দ্বারা অঙ্গে ভন্ম শেপন করিবে ও তিন বার "উ'' উচ্চারণ করিয়া ত্রিপুণ্ডু করিবে *।

অতিভোজন করিলে ও রিপু-পরতন্ত্র হইলে, যোগাভ্যাসে মনঃসংযোগ হয় না, এজন্য পরমহংসদের অপরিমিত আহার এবং কাম, ক্রোধ, শোক, মোহ, হর্ষ, বিষাদ প্রভৃতি পরিত্যাগ করিবার ব্যবস্থা আছে।

> माधुकरमय काव परमहंसः समाचरेत्। नात्यश्रतस्तु योगोऽस्ति नचैकान्तमनश्रतः॥ तस्माद्योगानुगुखं न सुद्धीत परमहंसकः। श्रभिशस्तं समुत्दृज्य सार्व्ववर्णिकमाचरेत्॥

किन्छ निर्गत्रिक्ट विश्व विष्ठ व्याद्यः ।
 परमदंसस्य विद्या एव सीऽप्यविद्याः ।
 विद्यान्त सीऽपि नास्ति ।
 न दण्डं न शिखां नास्कादनं चरति परमदंस इति ।

निर्वप्रशिक्षा

পরমহংদে একটি দণ্ড ধারণ করিবে, কিন্তু জ্ঞানবান্ পরমহংদদের পক্ষে ভাষাও বিধেয় নয়। পরমহংদে দণ্ড, শিথা ও আচ্ছাদন ধারণ করিবে না।

পরমহংসেরা নানা স্থান হইতে অল্ল অল্ল ভৈক্ষ্য সংগ্রহ পূর্বক একবারমাত্র আহার করিবে। অনাহারী এবং অত্যাহারী উভয়েরই যোগ দম্ভবে না, অতএব পরমহংসেরা যোগাত্মরপ ভোজন করিবে এবং নিন্দিত আচরণ পরিত্যাগ করিয়া সর্ব-বর্ণোচিত ব্যবহার করিতে থাকিবে।

स्नानं शीचमभिध्यानं सत्यातृतविवज्नं नम्। कामक्रीधपरित्यागं हर्षरीषविवज्जं नम्॥ लोभमोद्यपरित्यागं दश्मदर्पादिवर्ज्जं नम्। चातुक्मीस्यञ्च सर्वेषां वदन्ति ब्रह्मवादिनः॥

ব্রহ্মবাদীরা বলেন, কুটাচক, বহুদক, হংস ও প্রমহংসে স্নান, শৌচাচার ও অভিধান করিবে এবং বাণিজ্য, কাম, ক্রোধ, হর্ষ, রোষ, লোভ, মোহ, দপ্ত, দর্প প্রভৃতি পরিত্যাগ ও চাতুর্মাস্যের অমুষ্ঠান করিবে।

এই চারি প্রকার সন্ন্যাসীই মোক্ষাভিলাষী। কুটীচক, বহুদক ও হংসেরা ব্রাহ্মণের ন্যায় গায়ত্রী জপ করেন; পরমহংসেরা কেবল প্রণব-জপে প্রবৃত্ত থাকেন।

> कुटीचकाश्व इंसाश्व तथै व च वह्नदका: । सावित्रीमात्रसम्पद्माः भवेशुम्योचिकारणात् ॥ प्रणवाद्यास्त्रयोविदाः प्रणवे पर्य्यवस्थिताः । तस्मात् प्रणवमेवैकं परमहंसः सदा जपेत् ॥ विविक्तदेशमाश्वित्य सुखासीनः समाहितः । यथाशित्त समाधिस्थोभवेत् सद्मासिनां वरः ॥

কুটাচক, হংস এবং বহুদক ইহাঁরা মোক্ষ-লাভ উদ্দেশে গায়ত্রীমাত্র উপাসনা করিবেন। বেদ-ত্রয় প্রণব-মূলক, এবং প্রণবেতেই ভার্চাদের পর্যাবসান, অভএব পরমহংসে সর্বাদা প্রণবমাত্র জ্বপ করিবে। সয়্যাসি-প্রধান পরমহংসে নির্জ্জন দেশে সমাহিত ও মনের স্থাথে উপবিষ্ট থাকিয়া যথাশক্তি সমাধিস্থ হইবে।

উপনিষদের মধ্যে পরমাত্মার স্বরূপ-বোধক ও জীব-ত্রক্ষের অভেদ-প্রতিপাদক কয়েকটি নির্দিষ্ট বাক্য আছে; তাহাকে মহাবাক্য বলে; যেমন

श्रयमाला ब्रह्म।

এই জীবাত্মা ব্ৰহ্ম।

अहं ब्रह्मासि।

আমি ব্ৰহ্ম।

तत्त्वमसि।

তুমি সেই বন্ধ।

জ্ঞানাপন্ন পরমহংসেরা ইহার কোন না কোন মহা-বাক্য অবলম্বন ও তদর্থ-চিন্তন করিয়া আত্ম-জ্ঞানের অনুশীলনে প্রবৃত্ত থাকেন। দৈত-বাদীরা যেমন হরি হরি, রাধে রাধে বা তুর্গা তারা প্রভৃতি ইন্টদেবতার নাম উচ্চারণ করেন, ইহাঁদের মধ্যেও অনেকে সেইরূপ মধ্যে মধ্যে জীবে-খরের অভেদ প্রতিপাদক সোহহং শিবোহহং ইত্যাদি বাক্য উল্লেখ করিয়া আপনাদের তত্ত্বজ্ঞানাবলম্বনের পরিচয় প্রদান করিতে থাকেন।

পরমহংসদের এক একটি দল আছে, তাহাকে মণ্ডলী কহে। যেমন
মঠের অধ্যক্ষকে মহস্ত বলে, সেইরূপ পরমহংস মণ্ডলীরও এক জন
অধ্যক্ষ বা কর্ত্তা থাকেন, তাঁহার নাম স্বামী। ঐরূপ মণ্ডলী বন্ধ পরমহংসেরা কখন গৃহ-বিশেষে অবস্থিতি করেন, কখন বা তীর্থ-ভ্রমণে প্রবৃত্ত
হইয়া নানা স্থান পর্যাটন করিয়া থাকেন।

উক্ত চারি প্রকার উপাসকের অস্ত্যেষ্টি-ক্রিয়াও একরূপ নয়। নির্ণয়সিম্বতে কুটাচককে দাহ, বহুদককে জল-তারণ ও হংসকে জলে নিক্ষেপ, এবং পরমহংসকে খনন করিবার ব্যবস্থা আছে*, কিন্তু বায়ুসংহিভাতে লিখিত আছে, পরমহংস ভিন্ন অন্য তিন প্রকার সন্ন্যাসীকে খনন করিয়া পরে দাহ করিবে।

> स्ते न दहनं कार्यं परमहंसस्य सर्वदा । कर्त्तव्यं खननं तस्य नाग्रीचं नोदकक्रिया ॥ ग्रम्बस्यस्थापनं कार्यं तहेग्रेऽध्वर्युना सुने । ग्रम्बस्ये स्थापिते तेन स्थापितो हि महेम्बर: ॥ ग्रन्येषामपि भिच्चूणां खननं पूर्व्वमाचरेत् । पश्चादग्रही यथाशास्त्रं कुर्याह्हनसुत्तमम् ॥

পরমহংসের মৃত্যু হইলে, দাহ না করিয়া খনন করিবে। তাঁহার অংশীচ নাই, জল-ক্রিয়াও নাই। হে মুনি! অধ্বর্যু সেই স্থানে অখপ রোপণ করিবেন। অখথ স্থাপন করিলে তাঁহার শিব-স্থাপন করা হয়। অভ্য অভ্য সন্ন্যানীকে প্রথমে খনন করিবে, পশ্চাৎ শব গ্রহণ করিয়া যথাশান্ত দাহন করিবে।

এই চারি প্রকার সন্মাসীর মধ্যে পরমহংসকেই সচরাচর দৃষ্টি করা যায়। অপর তিন প্রকারকে সেরূপ দেখিতে পাওয়া যায় না।

পরমহংস তুই প্রকার; দণ্ডি-পরমহংস ও অবধূত-পরমহংস। যাঁহারা দণ্ড ত্যাগ করিয়া পরমহংসাশ্রম অবলম্বন করেন, তাঁহারা দণ্ডি-পরম-

^{*} कुटीचर्क च प्रदर्शे स् तरये च बद्रदक्षम् । इंसं जले तु निःचिष्य परमद्वं सं प्रपूर्यत् ॥ मिर्गन्निम् ।

কুটীচককে দাহ, বহুদককে জ্বল-ভারণ, হংসকে জ্বলে নিক্ষেপ, এবং পর্ম-হংসকে খনন করিবে।

হংস। আর যাঁহারা অবধূতী বৃত্তির অমুষ্ঠান করিয়া পরে পরমহংস হন, তাঁহাদের নাম অবধূত-পরমহংস। অবধূতী বৃত্তির বিষয় পশ্চাৎ লিখিত হইবে।

যদিও ইহারা ওঁকার-উপাসক ও তত্ত্ত্তানাবলম্বী, তথাচ প্রয়োজন হইলে, কেহ কেহ দেব-প্রতিমূর্ত্তির অর্চ্চনা করেন, কিন্তু তাঁহাকে নমস্কার করেন না। ইহাঁদের মধ্যেও কোন কোন ব্যক্তি বীরাচার অবলম্বন অর্থাৎ স্থরা পান করিয়া থাকেন।

কুলাচার-পরায়ণ দণ্ডা ও পরমহংদেরা যেরূপ চক্র করিয়া স্থরা-পানাদি করেন, তাহার নাম মহাবিছা। কিন্তু সকল দণ্ডী ও পরমহংসে এরূপ আচরণ করেন না। সত্যানন্দ সরস্বতী নামে একটি পরমহংস আমার সমুখে ঐ মহাবিদ্যার যৎপরোনাস্তি নিন্দা করিতে লাগিলেন। দণ্ডী পরমহংস ব্যতিরেকে অন্য অন্য ব্যক্তি তাদৃশ মতাবলম্বী হইলে, ঐ চক্রে উপবেশন করিতে পায়।

কাশী ইহাঁদের প্রধান স্থান। তাহার অন্তর্গত কোন কোন স্থানে শত শত দণ্ডী ও পরমহংস একত্র দেখিতে পাওয়া যায়।

मन्गमौ।

(অবধৃত)

যে সমস্ত জটা ও শাশ্র-ধারী শৈব উদাসীন সচরাচর সন্ন্যাসী বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে, তাহারা আপনাদিগকে অবধৃত ও আপনাদের বৃত্তিকে অবধৃতী বৃত্তি বলিয়া পরিচয় দেয় *।

তন্ত্রকারেরা কহেন, কলিযুগে বেদোক্ত সন্ন্যাসাশ্রম নিষিদ্ধ। তন্ত্রোক্ত অবধৃতাশ্রমই সন্ন্যাসাশ্রম।

> भिच्चकेऽप्यात्रमे देवि वेदोक्तदग्रुधारणम् । कलौ नास्तेत्रव तस्वज्ञे यतस्तत्त्रीतसंस्कृति:॥

* যে সকল শৈব উদাসীন দণ্ডীদের ভায় অমাবভায় মন্তকাদি মুণ্ডন না করিয়া সচরাচর জটা ও শাশ্রু ধারণ করেন এবং এই প্রস্তাবের মধ্যে লিখিত নিয়মামুসারে বাঁহাদের সন্ন্যাস-গ্রহণ, ষট্কর্ম-সাধন ও নানাবিধ বৃত্তি অবলম্বন করা হয়, তাঁহাদিগকেই অবধৃত ও তাঁহাদের বৃত্তিকেই অবধৃতী বৃত্তি বলে।

> ध्या देवि प्रवच्यामि चवधूती यथा भवेत्। वीरस्य मूर्त्तं जानीयात् सदा तत्त्वपराययः॥ यद्रूपं कथितं सब्वं सत्त्यासधारणं परम्। तद्रूपं सर्व्वकद्याणि प्रकृष्णीत् वीरवक्षमम्॥ दिष्डिनी सुद्धनं चामावस्थायामाचरेद यथा। तथा नैव प्रकृष्णीत् वीरस्य सुद्धनं प्रिये॥ चारंकृतं केशजालं सुक्तालिककची चयम्। चिस्तमालाविस्त्वा वा कद्राचानपि धारयेत्॥

शैवसंस्कारविधिनावधूतात्रमधारणम्। तदेव कथितं भद्रे सन्त्रासग्रहणं कली॥

মহানিকাণতন্ত্র অষ্টমোল্লাস।

दिगम्बरी वा वीरेन्द्रशाय वा कौपिनी भवेत्। रत्तचन्दनसिताङ्गं कुर्याक्षमाङ्गभूषणम्॥ নিৰ্বাণ ভন্ত চতুৰ্দ্দ পটল।

দেবি ! যে রূপে অবধৃত হয়, বলিতেছি শুন। তিনি সতত পঞ্চতত্ব-সেবায় তৎপর থাকিয়া বীর * স্বরূপের জ্ঞান লাভ করিবেন। সন্ন্যাস সংক্রান্ত সমস্ত উৎক্ট বিষয়ের বেরূপ বিবরণ করিয়াছি, তিনি সেই রূপ বীর-প্রিয় ভাবে সমুদায় কার্য্যের অনুষ্ঠান করিবেন। দণ্ডী সকলে অমাবস্থার দিনে যেরূপ মন্তক মুগুন করেন, প্রিয়ে ! বীরাবধূতে সেরূপ করিবে না। অসংস্কৃত কৃতত্তল-রাশি ও লম্বমান মুক্ত-কেশ সমূহ ধারণ করিবে। অন্তি:মালায় শোভিত হইবে বা রুদ্রাক্ষ ব্যবহার করিবে। বীর-শ্রেষ্ঠ অবধৃতে বিবস্ত্র থাকিবে বা কৌপীন ধারণ করিবে এবং শরীরে রক্তচন্দন ও ভত্ম লেপন করিতে থাকিবে।

देनव-मध्यनादत्र क्रष्ठांक भागात्र वि । जात्रव । जात्रक मछक् कर्ण यूनात, भन-दिन्त, वाङ्क्रा ও প্রকোষ্ঠে করাক মালা ব্যবহার করে। কেই কেই ক্ষুদ্রাক্ষের মুকুট প্রস্তুত করিয়া মন্তকে ধারণ করিয়া থাকে।

তত্ত্বে চারি প্রকার অবধৃতের বৃত্তান্ত আছে; ব্রহ্মাবধৃত, শৈবাবধৃত, ভজা বধৃত ও হংসাবধৃত।

> ब्रह्ममन्त्रीपासका ये ब्राह्मणचित्रयादय:। ग्टहाश्रमे वसन्तीऽपि ज्ञेयास्ते यतयः प्रिये॥ মহানির্বাণতন্ত্র চতুর্দশোল্লাস।

अञ्चल चीत्र गत्मत्र व्यर्थ नीत्राठात्र-विभिष्ठे। गांख्य मच्छानारत्रत्र विवत्रण मत्था तम चिवरत्रत्र সবিশেষ বৃত্তান্ত দেখিতে পাইবে।

তত্তক্তে ! কলিকালে সন্ন্যাসাশ্রমে বেদোক্ত দণ্ড ধারণের বিধান

ব্রাহ্মণ ক্ষতিয়াদি যে সমস্ত ব্যক্তি ব্রহ্ম-মন্ত্র গ্রহণ করে, ভাহারা গৃহস্থ হইলেও যতি বলিয়া পরিগণিত হয়।

> पूर्णीभिषेकविधिना संस्कृता ये च मानवाः । श्रेवावपूर्तास्ते ज्ञेयाः पूजनीयाः कुलार्चिते ॥ महानिर्वागण्डस চতুর্দশোলাস ।

যে সকল লোকে পূর্ণাভিষেকের নিয়মামুসারে সন্ন্যাস গ্রহণ করে, সেই সমগু শ্রদ্ধাম্পদ ব্যক্তির নাম শৈবাবধৃত।

> भक्तावधूती दिविधः पूर्णापूर्णविभेदतः । पूर्णः परमद्रंसाव्यः परित्राङ्परः खृतः ॥ প্রাণতোধিণী-ধৃত মহানির্বাণতন্ত্র-বচন ।

ভক্তাবধৃত হই প্রকার; পূর্ণ ও অপূর্ণ। পূর্ণ ভক্তাবধৃতকে পরমহংস ও অপূর্ণকে পরিব্রাক্তক বলে।

चतुर्णामवधूतानां तुरीयो इंस उच्यते।
वयोऽन्ये योगभोगाका सुक्ताः सर्व्वे धिवीपमाः॥
इंसी न कुर्य्यात् स्त्रीसङ्गं न विधत्ते परियइम्।
प्रारक्षमञ्जन् विहरेत् निषेचविधिवर्ज्ञितः॥
व्यज्ञित् स्वजातिचिह्नानि सन्धाणि ग्रहमिधिनाम्।
तुरीयो विचरेत् चौणौं निःसंकल्यो निक्यमः॥
सदास्मभावसन्तृष्टः श्रीकमीइविवर्ज्जितः।
निर्निकेतिस्तितिचः स्याद्विःसङ्गो निक्पद्रवः॥
नार्पणं भच्यपेयानां न तस्य ध्यानधारणा।
सुक्तीविसुक्तीनिर्वन्दो इंसाचारपरो यतिः॥

প্রাণতোষিণী-ধৃত মহানির্বাণভন্ত-বচন।

চারি প্রকার অবধ্তের মধ্যে চতুর্থকে তুরীয় বলে। অক্সভিন প্রকার অবধৃত বোগ ভোগ উভয়েজেই রত। তাঁহারা মুক্ত ও শিবতুল্য। হংসাবধৃতে নাই • ; কেন না তাহা শ্রোভ সংস্কার। শৈব সংস্কার দারা যে অবধূতাশ্রমগ্রহণ, তাহাই কলিতে সন্ধ্যাসগ্রহণ শ।

ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য, শূদ্র, সামান্ত বর্ণ সকলেরই অবধৃতাশ্রম অবলম্বনে অধিকার আছে।

> व्राह्मणः चित्रियो वैश्यः शूद्रः सामान्य एव च । कुलावधूतसंस्कारे पञ्चानामधिकारिता॥

> > প্রাণতোষিণী-ধৃত মহানির্ব্বাণভন্ত্র বচন।

ত্ত্বীসক ও দান গ্রহণ করিবে না; বদ্চ্ছা-ক্রমে যাহা কিছু পার তাহাই ভক্ষণ করিবে; নিষেধ বিধি কিছুই মানিবে না। ঐ তুরীয়াবধৃতে অফাতির চিহ্ন ও গৃহাশ্রমের ক্রিয়া সমস্ত পরিত্যাগ করিবে এবং সহল বর্জিত ও নিশ্চেট হইয়া সর্বা প্রমণ করিতে থাকিবে। সর্বাদ্য আত্ম-ভাবেতে সন্তুট, শোক-মোহ-রহিত, গৃংশূন্য, তিতিক্যা-যুক্ত, লোক-সংসর্গ-বর্জিত ও নিরুপদ্রব হইবে। তাঁহার ধ্যান-ধারণাও নাই, ভক্ষ্য-পানীয় নিবেদন করাও নাই। তিনি মুক্ত, বিমুক্ত, নির্বাদ হংসাচার-পরায়ণ ও যতি।

- কিন্তু রঘুনন্দন ভট্টাচার্য্য মলমাসতবের মধ্যে লিথিয়াছেন, কলিতে যে

 সন্মাস-গ্রহণের নিষেধ আছে তাহা ক্ষজিয় ও বৈশ্যের প্রতি, ব্রাহ্মণের প্রতি নয়।
- † এ দিকে আবার গৃহাশ্রমী সাধক-বিশেষকেও অবধৃত সংজ্ঞা দেওয়া হইরাছে।

षवधूतय दिविधो ग्रहस्थय चितानुगः।
सर्वेषयापि दिग्वासाविधियोनिविहारवान्।।
सदारः सम्बदारस्थी षदृहासो दिगम्बरः।
ग्रहावधूतो देवेशि दितीयसु सदाशिवः॥

প্রাণতোষিণী-ধৃত মুগুমালাতম্ব-বচন।

দেবেশি! অবধ্ত ছই প্রকার; গৃহস্থ ও উদাসীন। বস্ত্র-ধারী বা বিবস্ত্র, দার-পরিগ্রাহী, যথাবিধি সর্ক্র-ত্রীপামী ও অট্টহাস-যুক্ত, গৃহস্থ অবধ্ত বিতীয় সদাশিব-অর্ক্র্পা।

ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য, শৃদ্র, সামান্য এই পঞ্চ প্রকার বর্ণেরই কুলাবধ্ত ইবার অধিকার আছে।

বৃদ্ধ পিতা মাতা, পতিব্ৰতা ভাৰ্য্যা ও শিশু পুত্ৰ বিভ্নমান থাকিতে স্বধূতাশ্ৰম গ্ৰহণ করিতে নাই।

मातरं पितरं वृद्धं भार्थ्याञ्चैव पतिव्रताम् । प्रिग्रञ्च तनयं हित्वा नावधूतात्रमं व्रजेत् ॥ মহানির্বাণ্ডম্ব অষ্টম উল্লাস ।

বৃদ্ধ পিতা মাতা, পতিব্ৰতা ভাৰ্য্যা ও শিশু পুত্ৰ পরিত্যাগ করিয়া অবধৃতাশ্রম মবলম্বন করিবেনা।

নামসন্ত্রাস।

যিনি গৃহাশ্রম পরিত্যাগপূর্বক সন্ন্যাসাবলম্বনে কৃতসক্ষম হন *
ব্রথমে তিনি গুরু-সন্নিধানে আগমন-পূর্বক শিখা-সূত্র পরিত্যাগ করিয়া
ামঃ শিবায় বা ওঁ নমঃ শিবায় এই মন্ত্র গ্রহণ করেন, এবং আপনার
বুর্বব নাম বিসর্জ্জন দিয়া একটি নূতন নাম ও গিরি, পুরি, ভারতী, বন,

^{*} লোকে তিন প্রকারে সন্ন্যাসী হয়।

১—কেহবা কোন কারণে সংসারের উপন্ন বিরক্ত ও গৃহ হইতে স্বেচ্ছা ক্রিক বহির্গত হইনা সন্ন্যাস-ধর্মাবলম্বন করে।

২—কোন গৃহী বাক্তি নিঃসন্তান হইলে ভক্তি-ভাজন সন্ন্যাসিবিশেষের নিধানে উপস্থিত হইন্না এইরূপে মানসিক করে যে, ংযদি আমার পুত্রসন্তান ্ন, তাহা হইলে আপনার নিকট তাহাকে সমর্পণ করিব। সন্ন্যাসী এইরূপে যে ালকটি প্রাপ্ত হন, তাহাকে প্রতিপালন করিন্না সন্ন্যাসংখ্য উপদেশ দেন।

৩—কোন কোন সন্ন্যাসী কোন নির্দ্ধন গৃহস্থের নিকট হইতে বালক ক্রন্থ বিদ্বা নিজ ধর্মে দীক্ষিত করেন। এই তিন প্রকারের মধ্যে প্রথমোক্ত বিদার সন্ন্যাসীই অধিক।

অরণ্য, পর্ববত, সাগর এই সাত উপাধির অন্তর্গত একটি উপাধি প্রাপ্ত হইয়া থাকেন *। ইহাকেই নামসন্ন্যাস কহে।

নামসন্ধ্যাসী গুরু উপদেশ অনুসারে উপাসনাও তীর্থ-ভ্রমণাদি করিতে প্রবৃত্ত হন ও কিছু দিন পরে পশ্চাল্লিখিত ছয় প্রকার াক্রয়ার অনুষ্ঠান করিয়া পূর্ব্বাপেক্ষা শ্রোষ্ঠ অন্য একটি মন্ত্র গ্রহণ করেন। ইহাকে কশ্মসন্ম্যাস বলে।

কর্ম্মসন্ন্যাস বা ষট্কর্ম।

উহা প্রাহণ করিবার সময়ে দেব, ঋষি ও পিতৃ-লোকের স্মর্চনা, আত্ম-শ্রাদ্ধ ও বীজহোম নামে একটি হোমের সমুষ্ঠান করিয়া শিখা ও যজ্ঞসূত্র পরিত্যাগ করিতে হয় শ । শূদ্রের যজ্ঞোপবীত নাই, স্বতএব ভাঁহার শিখা-ত্যাগ করিলেই কার্য্য সিদ্ধ হয় ।

> ततः सन्तर्प्यं ताः सर्व्वा देवर्षिपित्रदेवताः । पिखासूत्रपरित्यागाईही ब्रह्ममयो भवेत्॥

^{*} ইহাদের এই সাত প্রকার নাম গ্রহণ করিবার অধিকার আছে বটে, কিন্তু এখন গিরি, পুরি ও ভারতী ভিন্ন অন্য অন্ত নামধারী সন্ন্যাসী সচরাচর দেখিতে পাওয়া যান্ত্র না

[†] সন্ন্যাসীয়া নামসন্ন্যাস-গ্রহণের সময়ে শিথা ও স্ত্র পরিত্যাগ করেন।
অত্তর কর্মসন্ন্যাসের সময়ে প্রথমে একবার যজ্ঞস্ত্র গ্রহণ করিয়া পশ্চাৎ ত্যাগ
করিয়া থাকেন। ইহাঁরাও দণ্ডীদিগের স্থায় ঐ স্ত্র একটি শুপারিতে জড়াইয়া
ও অগ্নিতে দগ্ধ করিয়া ভক্ষণ করেন। ষটকর্ম-সাধনের সময়ে যদি মস্তকে জাটা
থাকে, তাহা হইলে সেই জাটা কর্ত্তন করেন, নতুবা কুশের শিথা প্রশ্বত করিয়া
ছেদন করিতে হয়।

यज्ञस्त्रशिखात्यागात् सन्नासः स्याद्विजन्मनाम् । भूद्राणामितरेषाञ्च भिखां द्वत्वेव संस्क्रिया ॥

महानिर्वागण्ड अक्षेम উन्नाम।

ভদনস্তর দেব, ঋষি ও পিতৃ-লোকের তৃপ্তি সাধন এবং শিখা ও যজোপৰীত রিত্যাগ করিয়া মন্ত্যা ত্রহ্মময় হইবে। ত্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশ্যে শিখা স্ত্র ভিন্ন পরিত্যাগ করিয়া সন্থাসী হইবে। শৃত্র ও অতা অন্ত বর্ণের কেবল শিখা দগ্ধ ইলেই সন্থাস সংস্কার সিদ্ধ হয়।

উল্লিখিত ছয় প্রকার কর্ম্মকে ষট্ কর্ম্ম কহে। যাবৎ ঐ সমুদয় সম্পন্ন র নিম্ন-লিখিত মহামন্ত্র গৃহীত না হয়, তাবৎ সন্ন্যাসী পূর্ণ সন্ন্যাসী হন । ঐ ছয় প্রকার কর্ম্ম সম্পন্ন হইলে, গুরু শৈষ্যের দক্ষিণ কর্ণে গীব-ত্রক্ষের অভেদবোধক নিম্ন-লিখিত মন্ত্র উপদেশ দেন। ইহার নাম ।চিচদানন্দ মন্ত্র।

तत्त्वमिस महाप्राज्ञ हंस: सोऽहं विभावय। निर्मामो निरहङ्कार: खभावेन सुखं चर॥

মহানির্ব্বাণতন্ত্র অষ্টম উল্লাস।

মহাপ্রাক্ত ! তুমি সেই ব্রহ্ম। আমি সেই ব্রহ্ম † এইরপ ভাবনা কর। মতাও অহঙ্কার পরিত্যাগ করিয়া আত্মতাবে স্থেও বিচয়ণ কর।

শিষ্য এইরূপ মহামন্ত্র গ্রহণপূর্ববক আপনাকে আত্মস্বরূপ বিবেচনা করিয়া নিম্ন-লিখিত মন্ত্রোচ্চারণ পূর্ববক গুরুকে প্রণাম করেন।

^{*} ইইারাও ঐ ষটকর্দ্মানুষ্ঠানের সময়ে দণ্ড গ্রহণ করিয়া থাকেন, কিন্তু দণ্ডীদের স্থায় তাহা ধারণ ও সঙ্গে কইয়া ভ্রমণ করেন না; ঐ সময়েই প্ন-য়ায় গুরুকে অর্পণ করেন ৷

^{· †} হংস শব্দের নানা অর্থ; শিব, তুর্ঘ্য, বিষ্ণু পরমাত্মা ইত্যাদি এই মন্ত্রে ও ইহার পশ্চালিধিত ক্রেক মন্ত্রে উহা পরমাত্মা অর্থাৎ ব্রন্ধ-প্রতিপাদক বোধ হয়।

नमसुभ्यं नमोमद्यं तुभ्यं मद्यं नमोनमः। लमेव तदह्रमेव विखरूप नमोऽसु ते॥

মহানিকাণত স্থ অষ্টম উল্লাস।

তোমাকে নমস্কার। আমাকে নমস্কার। ভোমাকে ও আমাকে বার বার নমস্কার। তুমিই হুতরাং তুমি ও আমিই বিশ্বরূপ, অতএব তোমাকে নমস্কার করি।

তন্ত্রের মধ্যে উল্লিখিত ব্রহ্ম-মন্ত্র উপদেশ দিবার ব্যবস্থা আছে, কিন্তু সন্ম্যাসীরা সচরাচর ঐরপ অর্থ-প্রতিপাদক নিম্ন-লিখিত সচ্চিদানন্দ মন্ত্রটি * গ্রহণ করিয়া থাকেন।

श्रोम् सोऽइं इंस: परमइंस: परमात्मा देवता । चिन्मयं सिदानन्दस्तरूपं सोऽइं ब्रह्म॥

ওঁ। আমি সেই হংস, পরমহংস পরমাত্মাদেবতা। আমি সেই জ্ঞানময়,্র সচিচেদানন্দ-ত্বরূপ পরব্রন্ধ।

এই মন্ত্রের একটি গায়ত্রীও আছে, তাহা অভ্যাস করিয়া জ্বপ করিতে হয়। সেটি এই,—-

भों इंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि तदी इंस: प्रचीदयात्।

ওঁ। হংসকে জ্ঞাত হই, পরমহংসকে চিন্তা করি, হংস স্থামাদিগকে তাহা প্রেরণ করুন।

এ দেশীয় ব্রাহ্মণেরা যেমন উপনয়নকালে গায়ত্রী-উপদেশ গ্রহণ করেন, কিন্তু প্রায় সকলেই তাহার অর্থ-বোধ ও তাৎপর্য্যামূশীলনে অসমর্থ হইয়া তন্ত্রোক্ত একটি সাকার দেবতার আরাধনায় অমুরক্ত হন, সেইরূপ, সন্ন্যাসীরা শেষে সচ্চিদানন্দ মন্ত্র গ্রহণ করেন বটে, কিন্তু অধিকাংশে তাহার ভাব-গ্রহ ও অর্থবোধে অসমর্থ হইয়া শিবের উপাসনাতেই .

^{*} ইংার অন্ত একটি নাম প্রমহংস মন্ত্র। এই প্রমহংস মন্ত্র বাদশ প্রকার।

প্রবৃত্ত থাকেন। তাঁহার। সচরাচর এই নিম্নলিখিত শ্লোকটি আর্ত্তি করেন,—

महेशाव परो देवो महिन्द्रो न परा सुति:। अघोराव परो मन्द्रो नास्ति तस्व' गुरो: परम्॥

মহাদেবের পর আর দেবতা নাই, মহিয়ঃস্তবের পর আর স্তব নাই, আশোর-মস্ত্রের পর আর মন্ত্র নাই, গুরু-তত্ত্বের পর আর তত্ত্ব নাই।

উল্লিখিত কর্ম্মসন্ন্যাসের অন্তর্গত উপ্নয়ন ক্রিয়াটি দিবাভাগে ও অপরাপর সমুদার কর্ম রাত্রিযোগে সম্পন্ন হয়। যেখানে ভারি ভারি জমাৎ * উপস্থিত হয়, তথায় একেবারে বহুসংখ্যক সন্ন্যাসীর ষট্কর্ম হইয়া যায়।

যে গুরু ষট্কর্ম্ম সম্পাদন করিয়া দেন, তাঁহাকে আচার্য্য বলে।
দণ্ডী আচার্য্যই প্রশস্ত ; দণ্ডী উপস্থিত না থাকিলে কোন সন্মাসীকে ঐ
পদে অভিষিক্ত করা হয়।

সন্ধ্যাসীদের অনেক প্রকার গুরু থাকে। নাম-সন্ধ্যাস-গ্রহণের সময়ে যিনি শিষ্যকে মন্ত্রোপদেশ দেন, তিনি মূল গুরু। যিনি শিষ্যর শিখাচ্ছেদন করেন, তাঁহার রাম শাখা-গুরু অর্থাৎ শিখা-গুরু। যিনি শিষ্যের শরীরে বিভূতি লেপন করেন, তাঁহার নাম বভূত্গুরু। যিনি লেঙ্গুটি অর্থাৎ কোপীন পরিধান করান, তাঁহার নাম লেঙ্গুট্-গুরু। ইচ্ছা করিলে, এক ব্যক্তি লেঙ্গট্-গুরু ও বভূৎ-গুরু উভয়ই হইতে পারেন। ষট্কর্শের সময়ে যে ব্যক্তি আচার্য্য হন, তিনি আচার্য্য-গুরু। সন্ম্যা-সীদের এইরূপ সাত প্রকার গুরু হইয়া থাকে।

সন্ন্যাসীদের মধ্যে দীক্ষা-গুরু ও মন্ত্র-শিষ্য ব্যতিরেকে অন্য একরূপ গুরু-শিষ্যের সম্বন্ধ বিদ্যমান আছে। কোন কোন সন্ন্যাসী আপন অপেক্ষা

^{*} কিছু পরেই জমাতের বিষয় দেখিতে পাইবে।

শ্রেষ্ঠ বা বয়োজ্যেষ্ঠ অন্য কোন সম্যাসীকে গুরু-স্বরূপ বিবেচনা করিয়া তাঁহার নিকট ধর্ম্ম-বিষয়ের উপদেশ গ্রহণ করেন ও তাঁহার অমুগত হইয়া সেবা শুশ্রাষা করিতে থাকেন। এইরূপ গুরুকে সিদ্ধ ও শিষ্যকে সাধক বলে।

প্রাত্যহিক ক্রিয়া।

সন্ধ্যাসীদের প্রাত্যহিক ক্রিয়াতে শিব-পূজারই আধিক্য দেখিতে পাওয়া যায়। তাঁহারা প্রতিদিন স্নানোত্তর কোপীন পরিবর্ত্তন ও বিভূতি ধারণ করিয়া শিব-পূজা করেন। যদি সঙ্গে কোন শিব-মূর্ত্তি থাকে, তবে তাঁহারই আরাধনা করেন, নতুবা নিকটে শিবালয় থাকিলে, সেই স্থানে অর্চনা করিতে যান। ঐ উভয়ের অসন্তাব হইলে, বাম হস্তের অঙ্গুলি গুলির বিন্যাস-বিশেষ দ্বারা পঞ্চমুখী অথবা যোনি-বিশিষ্ট লিঙ্গরূপী, মহাদেব করিয়া তাঁহারই পূজা করিয়া থাকেন। পরে সন্ধ্যাস-গ্রহণের সময়ে গৃহীত নমঃ শিবায় বা ওঁ নমঃ শিবায় এই মন্ত্র জপ করেন। অব-শেষে মহিস্কঃস্তব ও তাদৃশ অন্য স্তোত্র ও কোন দেব নামাবলি অথবা ইহার মধ্যে কোন তুই একটি বিষয় পাঠ করেন এবং কেহ কেহ ভগ্নবদ্গীতাদি তত্ত্ব-শান্ত্রও আর্ত্তি করিয়া থাকেন *।

অন্য অন্য অনেক সম্প্রদায়ের ন্যায় ইহাঁদেরও গুরু-ভক্তি একটি প্রধান ধর্ম। সায়ংকালে ই হারা মানসী পূজা করেন; চক্ষু মুদিত করিয়া গুরু-মূর্ত্তি ধ্যান করেন, মনে মনে তাঁহাকে আসন দিয়া উপবেশন করান, পাদপ্রকালন ও স্নানাদি করাইয়া তাঁহার শরীরে বিভূতি লেপন করেন, পুষ্প-চন্দনাদির দ্বারা অর্চ্চনা করেন, নানাবিধ স্থরস সামগ্রী সংগ্রহ

^{*} অনেকে ভগবদগীতা, নারারণোপনিষদ্, রুদ্রকালারি, বিষ্ণুপঞ্জর, গুরুগীতা, জ্বনমন্তার ও তাদৃশ অন্য অন্য গ্রন্থ সঙ্গে রাথেন ও অবসর ক্রমে মধ্যে সধ্যে করিরা থাকেন।

করিয়া ভোজন করিতে দেন ও অন্যান্য নানাপ্রকারে শ্রন্ধা ভক্তি প্রদর্শন করিতে থাকেন।

ইহাঁদের যেরূপ নিত্য-ক্রিয়া প্রশস্ত, তাহাই লিখিত হইল। ব্যক্তি-বিশেষের জ্ঞান ও স্বভাবের তারতম্য অনুসারে ইহার অনেক ইতর বিশেষ হইয়া থাকে। গৃহীদের ন্যায় ইহাঁদের মধ্যেও অনেকেই যথাবিধানে কার্য্য করেন না; কেবল ভিক্ষা ও বিজয়া-ধ্ম-পান করিয়াই কাল ক্ষেপ করিয়া থাকেন।

বেশভূষা।

ইহাঁরা ডোর, কোপীন *, বিভৃতি ণ ও রুদ্রাক্ষ-মালাঞ ধারণ করেন-গেরুয়া বস্ত্র শা ও অন্য অন্য প্রকার বস্ত্রও ব্যবহার করিয়া থাকেন, ও

* প্রতিদিন নিম্নলিখিত মন্ত্রে'চ্চারণ করিয়া ধৌত কৌপীন পরিধান করিতে হয়। ঐ মন্ত্র পাঠ করিয়া দেখিলে, ইন্দ্রিয়-সংযমই কৌপীন ধারণের উদ্দেশ্ত বলিয়া প্রতীয়মান হইতে থাকে

षीम् गुरुजी वन्धकर वन्धकर, वज्रकर वज्रकर, ना मरे योगी ना पड़े फन्ट्, चौषट् योगिनी खेलैं छन्ट्। सत्का धागा सन्तोषिक कौपीन, नागा पहरे नागपायी, हनूमान् वाँधि लेक्कोट्। बालगीपाल कौपीन वाँधि, श्रमन्त कीट् सिद्धािक श्रीट्। वाँधि चौर मनमे धीर, सी प्रायो जगत्का पौर।

† বিভূতি-ধারণের মন্ত্র।

षादका योगी धनादकी विभूत। सत्का नाति धरम्का पुत। ध्यवर वर्षे, धरती फरे। सी फुल माता गायती चरे। सूर्य-मुख सुखै घिमुस ज्वले, चन्द्र-मुख श्रीतले, सी भक्षानी मायी धनन कीट सिडीके इसकले मसक चढ़ें। घढ़ाइ खाक इया देलपाक, धलख् निरञ्जन धापइ घाप। भक्षावनी मायी यांचा पाइ तांचा रमाइ।

‡ क्रांक-शत्रात्र मञ्ज।

भीं गुरुजी। रुद्र यदिन विश्व जपन्ति काया रखन्ति, मूले ब्रह्मा मध्ये विश्व, लिङ्ग लिङ्ग सर्व्यदेव लिङ्ग, रुद्रदेव नमस्कार।

¶ সন্ন্যাদীরা পরিধেয় বস্ত্র সমূলায়কেও দেবতা-স্বরূপ বলিয়া বিশ্বাস করেন ও

নানা তীর্থে গমন করিয়া নানা প্রকার তীর্থ-সামগ্রী সংগ্রহপূর্বক শরীরে मःयुक्त कतिया तात्थन । देशाँतनत मत्था व्यत्नत्क वाह त्रत्भ शिखनमय, তাম্রময় ও লোহময় এক এক প্রকার বলয়াকার দ্রব্য ধারণ করেন। ঐ সমুদায়কে নেপাল, বদরিকা ও কেদারনাথের কঙ্কণ কছে। ঐ সকলের উপরে বিবিধ প্রকার দেব-মূর্ত্তি অঙ্কিত থাকে। নেপালে অঙ্গুরীয়ের মত অথবা তদপেক্ষা কিছ বড় পিত্তলময় একরূপ দ্রব্য পাওয়া যায়. তাহাকে নেপালের পবিত্রী বলে। তাহাতে শিব, বুষ ও ত্রিশুলের প্রতি-মূর্ত্তি থাকে। সন্ন্যাসীরা কেহ কেহ তাহা রুদ্রাক্ষমালার সহিত গ্রাথিত করিয়া গল-দেশে ধারণ করেন। তাঁহারা নেপালে পশুপতিনাথ, বদরিকা-শেমে বদরিনারায়ণ ও কেদারনাথে কেদারনাথ দর্শন করিতে গিয়া ঐ সম স্ত্র ক্রেয় করিয়া আনেন। কোন কোন সন্মাসী নেপাল হইতে ঐরূপ লি স্কটি সামগ্রী আনিয়া ব্যবহার করেন, ভাহাকে ঐ স্থানের গুঞ্জে-

বিশেষ বিত্র দ্রশেষ মন্ত্রোচ্চারণ পূর্বক পরিধান করিয়া থাকেন। ঐ সমুদায়ের ভির ভিন্ন ন্দ্রাক্ত বেষন সাকা, বক্ষঞ্চলা ইন্ড্যাদি। শিরোবত্তের নাম সাকা। व्यत्नरक नाई जिन रख श्रमान अकथानि वज्ज शृष्ठे ७ वकःश्रत वाँ विद्रा द्वारथन, ভাহার নাম ব্রহ্মঞ্চলা।

সন্ধ্যাদীদের ব্যবহার্য্য করেকটি জ্রব্যের সাক্ষেত্তিক নাম ফুল। সমুদারে সাড়ে তিন সুল। গেরুরা, বিভৃতি, কম ওলু এই তিনটি মূল। আর ধর্পর অদ্ধ ফুল।

 হিল্লাফ তার্থ বেলোচিতানের দক্ষিণ থণ্ডের অন্তর্গত। ঐ থণ্ডের নাম মেক্রান। উহা সমুদ্র ভীরবর্ত্তী।

হিন্দু জাতির অস্থা মোদল্মান্দিগের দেশে হিন্দু-তীর্ধ প্রতিষ্ঠিত শুনিরা, অনেকে এখন আশ্চর্য্য বোধ করিতে পারেন। কিন্তু বছকালাবধি সিদ্ধ নদের পশ্চিম ও উত্তরাংশে কিছুদূর পর্যাস্ত হিন্দুদিগের অধিবাস ছিল।

প্রস্তরময় খেতবর্ণ ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র মালা পরিয়া আইসেন, তাহার নাম ঠুম্রা।
কেহ বা তাহার সহিত প্রবালখণ্ড মিশ্রিত করিয়া গল-দেশ স্থানোভিত
করিয়া রাখেন। কেহ কেহ আবার হিঙ্গলাজেশরীর প্রদানী শুপারী ও

কালাহার দেশের নামটি সংস্কৃত গাদ্ধার শব্দেরই অপপ্রংশ। অধিক পুর্বের কথা দ্রে থাকুক, ইদানীও ঐ অঞ্চলে বিস্তর হিন্দুর আবাস দৃষ্ট হইয়ছে। কিছু কাল হইল, বোধায়ায় নানাধিক তিন শত হিন্দু এবং কাব্লেও নানাধিক তিন শত ঘর হিন্দুর বাস ও তদতিরিক্ত অনেক গুলি হিন্দু-বণিক্ দৃষ্ট হইয়াছিল *। মোসল্মান্দিগের ভারতবর্ষাধিকারের অব্যবহিত পূর্বেও কাব্লে হিন্দু রাদ্ধার অধিকার ছিল †। অল্ বীরূণী কর্তৃক লিখিত কাব্ল-রাদ্ধ্যাধিপতি সাল-পতিদেব, সমস্তদেব, ভীমদেব প্রভৃতির অনেকানেক মুদ্রাতেও সে বিষয়ে সাক্ষ্য প্রতিষ্ঠিত ছিল ‡। যদিও মধ্যে তাহার ব্যতিক্রম ঘটে, গৃষ্টাব্দের তৃতীয় শতাকীতে তাহা পুনরায় আবার সংস্থাপিত হয় ব। চীন-দেশীয় তীর্থবাত্রী হিউএন্ থ্সার্ক্ খ্রীব্দের সপ্তম শতাকীর প্রথমার্দ্ধে অদেশ হইতে ভারতবর্ষে আগমন করিবার সময়ে হিন্দুকুশ পর্বান্ত উত্তীর্ণ হইয়াই ক্ষত্রিয় রাদ্ধার রাদ্ধ্য ও নানাবিধ হিন্দু উদাসীন সম্প্রদার দৃষ্টি করেন ৪। মোসল্মান্-দ্বাতীয় ইতিহাসবেতায়া স্ক্রপষ্ট বলিয়া গিয়াছেন, খ্রীব্দের অন্তম শতাকীতে কাব্ল ও তাহায় সমীপন্থ অনেক স্থানে হিন্দু নৃপতিগণের অধিকার ছিল। পঞ্জাবে, সিন্ধুতটে ও আফ্ গানস্থানে যে সম্পায় ভারতবর্ষীয় মুদ্রা পাওয়া গিয়াছে, তাহাতেই সে কথা সপ্রমাণ

^{*} Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. II., p. 233 and Burnes's Travels into Bokhara in Edinburgh Review, Vol. 60.

[†] Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1848, p. 488.

[‡] Journal of the Royal Asiatic Society, Vol. IX., pp. 177—198.

[¶] Ariana Antiqua by H. H. Wilson, concluding Remarks,

[§] Cowell's Elphinstone, 1866, p. 289.

ষর্গ-মক্ষী নামে এক প্রকার ধাতু-দ্রব্য জটায় বা অন্য কোন স্থানে ধারণ করেন। হিঙ্গলাজ-যাত্রীদের মুখে শুনিতে পাওয়া যায়, তথায় পর্ববতের নিম্ন ভাগে একটি স্থরঙ্গ আছে, তাহা ঐ দেবীর যোনি-স্বরূপ। তাহার মধ্য দিয়া ঐ সমস্ত বস্তু লইয়া গেলেই প্রসাদ হইয়া যায়। কোন সন্মাসী বা প্রকোষ্ঠ-দেশে গণ্ডার-চর্ম্মের বলয় পরিধান করেন। কেহ কেহ সেতু-বন্ধরামেশ্বরে একরূপ মালা ও শন্ধ-বলয় গ্রহণ করিয়া শরীরে ধারণ করেন। ঐ শন্ধ-বলয়কে রামনাথের পবিত্রী বলে। কোন কোন ব্যক্তি আবার মণিকর্ণিকা বা মণিকরণ কুণ্ডের মণি বলিয়া একরূপ উপলখণ্ড গলদেশে ধারণ করেন। তাঁহারা বলেন, হিমালয়ের মধ্যে এক স্থানে ঐ নামে এমন একটি উষ্ণ-প্রস্রুবণ আছে যে, অগ্নি-সংযোগ ব্যতিরেকে

করিয়া দিয়াছে *। এখনও স্লেচ্ছ দেশ বলিয়াঁ পরিগণিত অনেক অনেক স্থানে হিন্দুদের দেবালয় আছে †। রুশ্ দেশের মধ্যে কাম্পীয় সাগর হইতে অনতিদ্রে অভাপি হিন্দু-দেবালয় বিভ্যমান রহিয়াছে। ভাহাতে গণপতির প্রতিরূপ এবং কতকগুলি অভ অভ গৃহ-দেবভার রৌপায়য় প্রতিমৃত্তি আছে এবং হিন্দু পুজারী তথায় অবস্থিতি করিয়া পরিচারণা করে। প্রায় দেড় শত বৎসর হইল, লোন্দ্রহেনোয়ে নামে এক ব্যক্তি কাম্পীয় সাগরের তীর-স্থিত বাকু নামক স্থানে ৪০।৫০ জন হিন্দু উদাসীন দৃষ্টি করেন ‡। কথন কথন হিন্দু গৃহত্তেও ভীর্থ-দর্শনার্থ, বিশেষতঃ ঐ সাগরের ভীরস্থিত আলামুখী সমন্ত সন্দর্শন উদ্দেশে, ঐ অঞ্চলে গমনাগমন করে জানা গিয়াছে মি। এই সমন্ত কথার সহিত ভুলনা করিয়া দেখিলে, বেলোচিন্তানে হিন্দুদের দেবালয় থাকাতে কিছুই আশ্বর্যা বোধ হয় না।

^{*} Ariana Antiqua, C. Remarks.

[†] रेमवानि मध्यनारात ७८ भृष्ठीत्र भूतीन भूतीत तुर्खास (नथ ।

[†] Indian Antiquary, April 1880, pp. 109-111.

[¶] Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. II., p. 233.

তাহার জলে ভাত, ডাল প্রভৃতি রন্ধন করিয়া ভোজন করা যায়। সেই প্রস্রবণ একটি প্রধান তীর্থ; তাঁহারা তাহা দর্শন করিতে গিয়া ঐ উপল-খণ্ড আহরণ করিয়া থাকেন। সন্ধ্যাসীদের অন্তর্গত ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র সম্প্রদায়ে অন্য অন্য অপূর্বব অলঙ্কারেও শরীর অলঙ্কত করিয়া রাখে; যথা স্থানে সে সমস্ত লিখিত হইবে।

পরস্পর সাক্ষাৎ হইলে, সন্ন্যাসীরা ''ওঁ নমো নারায়ণায়'' বলিয়া অভিবাদন করেন। গৃহী লোকে তাঁহাদিগকে "নমো নারায়ণায়'' বলিয়া নমস্কার করে এবং তাঁহারা ''নারায়ণ'' বলিয়া প্রত্যুত্তর দিয়া থাকেন।

মঠ আখাড়াদি পরিচায়ক বিষয়।

মঠ ও আখাড়ায় প্রভেদ এই যে, মঠের উপর তদীয় মহন্তের সম্পূর্ণ আধিপত্য থাকে; আখাড়ার ভাব সেরূপ নয়। অনেক দশনামী সন্ন্যাসী একত্র মিলিত হইয়া আখাড়া প্রস্তুত করে ও তাহাতে তাহাদের সম্পূর্ণ কর্ত্ত্ব থাকে। আখাড়ার মহন্ত তাহাদের মত-গ্রহণ ব্যতিরেকে কিছুই করিতে পারেন না।

দণ্ডীরা কেবল মঠের অন্তর্গত, কিন্তু সন্ধ্যাসীরা মঠ ও আখাড়া উক্ত-রেরই অন্তর্ভূতি। হিন্দুস্থানী বৈষ্ণবদের ন্যায় ইহাঁদেরও সাতটি মূল আখাড়া আছে; নিরবাণী, নিরঞ্জনী, অটল, আহ্বান, যুনা, আনন্দ ও বড় আথাড়া *। প্রত্যেক সন্ধ্যাসীই ইহার কোন না কোন:আখাড়ার লোক।

<sup>ক্রমণ ও বড় আবাড়া ছইটি ভিন্ন ভিন্ন আবাড়া বলিয়া লিখিত হইয়াছে।
কিন্ত অনেকেরই মতে, ঐ উভয়ই এক আবাড়ারই নাম। তাহা ছইলে সম্নামে ছয়টি আবাড়া হয়। অপর একটি আবাড়ার নাম অপন্। এই সাতটি আবাড়াই প্রসিদ্ধ। কিন্ত দশনামী ভাঁটদিগের গ্রন্থে আট আবাড়ার প্রসক্ষ দেবিতে পাওয়া যায়।</sup>

ভারতবর্ষের নানা স্থানে মঠ ও আখাড়া বিদ্যমান আছে। কোন কোন অংশে এই উভয়বিধ দেবালয়ের বিশেষ বিভিন্নতা দেখিতে পাওয়া যায়। মঠের মহস্তেরা মঠ-সংক্রাস্ত সকল বিষয়েই একাধিপত্য করেন; ইচ্ছা হয়, সন্ন্যাসীদিগকে তথায় স্থান দেন, না ইচ্ছা হইলে, না দিতে পারেন। আখাড়ার মহস্তেরা সেরপ নয়; তথায় সন্ন্যাসীদেরই প্রভুষ। লোকে মঠে আসিয়া সন্ন্যাস গ্রহণ করিতে পারে, কিস্তু আখাড়ায় সেবিষয়ের ব্যবস্থা নাই।

মঠ ও আখাড়া ব্যতিরেকে ইহাঁদের পরিচায়ক আরও কতকগুলি বিষয় আছে; যেমন জাতি, বর্ণ, গোত্র, দেব, দেবী, মড়ী, পরিবার, চূলা, চকী ইত্যাদি। ইহাঁদের পরিচয় জানিতে হইলে, সেই সমুদয় জিজ্ঞাসা করিতে হয়। সেই সমস্ত যত দূর জানিতে পারিয়াছি, পশ্চাৎ তাহার বিবরণ করিতেছি।

ইহাঁদের সকলেরই এক জাতি, এক বর্ণ ও এক পরিবার। জাতির নাম বিহঙ্গম, বর্ণের নাম রুদ্র ও পরিবারের নাম অনস্ত। সম্প্রদায় গোত্রাদি অন্য অন্য বিষয় ভিন্ন ভিন্ন। চারি মঠে চারি সম্প্রদায় ও চারি গোত্র চলিয়া আসিতেছে; প্রত্যেক সন্ন্যাসী তাহার কোন না কোন সম্প্রদায়ের ও কোন না কোন গোত্রের অস্তর্ভূত। যথাক্রমে সেসমুদায়ের নাম নির্দ্দেশ করা ঘাইতেছে।

दग्र नामका वंग्र सबसे सीवाधा। चाट चाखाड़ा प्रगट वताया॥

অষ্টম আথাড়ার নাম ভূতনাথ আথাড়া। রূথড় অ্থড় প্রভৃতি ইহার অন্তর্গত। সন্ন্যাসীদের এইরূপ বিখাস আছে যে, সওরা লক্ষ অর্থাৎ এক লক্ষ পঁচিশ সহস্র ভূত ইহাদের সঙ্গে অবস্থিতি করে।

| मर्ठ | সম্প্রদায় | গোত্র |
|----------------|------------|--|
| শৃঙ্গগিরি মঠ * | ভূর্বার ণ | ভবেশ্বর |
| জ্যোসী মঠ | আনন্দবার | লাতেশ্বর |
| সারদা মঠ | কীটবার | Special Specia |
| গোবৰ্দ্ধন মঠ | ভোগবার | (mg//com/mg |

প্রত্যেক মঠের স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র ক্ষেত্র, দেব, দেবী, তীর্থ, বেদ ও মহাবাক্য নির্দ্দিষ্ট আছে; প্রত্যেক সন্ন্যাসীকে আপন আপন মঠানুসারে তাহার এক একটি অবলম্বন করিতে হয়।

| মঠ 🕟 | (ক্ষত্ৰ [*] | দেব | দেবী | তীর্থ | বেদ | মহাৰাক্য |
|-----------|----------------------|-------------------|----------------|------------|----------|-------------------------|
| শৃঙ্গগিরি | রামেশ্বর | আদিবরাহ | কামাখ্যা | তুক্ভর্জী | যজুর্বেদ | অ হস্ত্রক্ষান্মি |
| জ্যোসী | বদরিকাশ্রম | নারায়ণ | পুন্নাগরী | অলকনন্দ | অধৰ্ববেদ | জ্ য়মাঝারকা |
| সারদা | দারকা | সি দ্ধেশ র | ख दकानी | গঙ্গাগোমতী | সামধ্দে | তত্ত্বমসি |
| গোৰদ্ধন | পুরুষোত্তম | জগন্নাথ | বিমলা | মহোদধি | ঋক্বেদ | প্ৰজ্ঞান- |
| | | | | | | সানন্দং ব্ৰহ্ম |

এইরন, ঐ চারি মঠের # প্রত্যেকের এক একটি আচার্য্য ও

দুশনামীরা সচরাচর এই মঠের নাম সিঙ্গ্রি বা সিঙ্গেরি বলিয়া উল্লেখ করে। উহা শৃস্পিরি শব্দেরই অপল্রংশ বোধ হয়। এই মঠটে দক্ষিণা-প্রথের অন্তর্গত তুম্বভন্তা নদীর ভীরস্থ।

[†] সন্ন্যাসীদের পরিচায়ক এই সমস্ত বিষয়ের নাম তাঁহাদের মুখে বেরূপ শুনিমাছি ও তাঁহাদের আমান্ধ-শ্রবণ দারা যেরূপ অবগত হইগাছি, সেইরূপ লিখি-লাম। উত্তর, দক্ষিণ, পূর্ব্ব, পশ্চিম এই চারি মঠের স্বভন্ত স্বতন্ত্র বিবরণ আছে, তাহার নাম আমান্ব, যথা উত্তরামান্ত, দক্ষিণামান্ত, পূর্ব্বামান্ত ও পশ্চিমানান্ত।

[‡] সন্ম্যাসীরা শহরাচার্যা-প্রতিষ্ঠিত উল্লিখিত চারি মঠ ব্যতিরেকে আর তিনটি মনঃ-কলিত গুপু মঠ স্বীকার করেন। তাহার বিষয় বেরূপ জানিতে পারিয়াছি, পশ্চাৎ লিখিত হইতেছে। পাঠ করিয়া দেখিলে, ঐ তিনটির কল্পনা তাঁহাদের ইষ্ট-সাধনার বিজ্ঞাপক ভিন্ন অন্ত কিছু বোধ হয় না।

ব্রক্ষানারী নির্দ্দিষ্ট আছেন। আচার্য্য-গণের নাম গুলিতে কিছু সংশয় বোধ হওয়াতে, বিশেষ করিয়া লিখিলাম না। ব্রক্ষানারীদের বিষয় তদীয় প্রকরণ মধ্যে প্রস্তাবিত হইবে।

মধ্যে মধ্যে এক একটি সন্ন্যাসী বিশেষরূপ ক্ষমতাপন্ন হইয়া এক একটি সন্ন্যাসি-দল প্রবর্ত্তিত করেন, তাহারই নাম মড়ী; যেমন কেশব-পুরি মূলতানী, বৈকুণ্ঠা, ভগবান্ পুরি, ওঁকারী, বড় কেবল পুরি, ছোট কেবল পুরি, সৈজনাথী, গঙ্গাদরিয়া, অপারনাথী, মেঘনাথী, তুর্গানাথী, সৈজ-পুরি, পরমানন্দী, ব্রহ্মনাথী, বোধলা ইত্যাদি। এইরূপে সমুদায়ে ৫২ বায়ান্নটি মড়ী উৎপন্ন হইয়াছে।

দশনামী ভাঁটদের গ্রন্থ হইতে মড়ীর বৃত্তাস্ত যেরূপ প্রাপ্ত হইয়াছি, পশ্চাৎ লিখিত হইতেছে।

গিরি সম্যাসীর আটাশ মড়ী, তশ্মধ্যে ছাবিবশটির নাম পাওয়া গিয়াছে; পরমানন্দী, বোধলা, ওঁকারী, যতি, কুমস্তানাণী, সহজনাথী, রুদ্রনাথী, রতননাথী, নাগেন্দ্রনাথী, বোধনাথী, বিশ্বস্তরনাথী, মান্নাথী, সাগরনাথী, ত্রশ্বনাথী, মেঘনাথী, ভিক্ষারীনাথী, জ্ঞাননাথী, বৈকুণ্ঠনাথী,

প্রথম মঠ।—কৈশাস ক্ষেত্র। কাশী সম্প্রদায়। নিরঞ্জন দেবতা। মানস-সরোবর তীর্থ। ঈশ্বর আচার্যা। সনক স্থনন্দন ও সনতকুমার ব্রহ্মচারা। সতাং জ্ঞানমনস্তং ব্রশ্ব বাকা।

ষষ্ঠ মঠ।—নাভিকুগুলিনী ক্ষেত্র। সত্য সম্প্রদায়। পরমহংস দেবতা।
হংস দেবী। ত্রিকুটি তীর্থ। ব্রহ্মা, বিষ্ণু, মহেশাদি ব্রহ্মচারী।
অজ্ঞপা মন্ত্র।

সপ্তম মঠ।—এই মঠের আয়ায়ে শুদ্ধাত্মা তীর্থ এবং অহমেব হংসঃ, নিত্যোহহম্, নিম লোহহম্, শুদ্ধোহহম্, নির্বিকরোহহম্ ইত্যাদি তত্মজান-সম্পন্ন বিমুক্ত ব্যক্তির কক্ষণ-প্রতিপাদক কতকগুলি বাক্য সন্নিবেশিত আছে।

শীতলনাথী, মহেশনাথ টাটম্বরী, সাউলী সন্ধ্যানাথী, নীলাবিলাসনাথী, তুর্ভাষানাথী, তুর্গানাথী, অটলনাথী ও ব্রহ্মাগুনাথী। ভারতীর চারি মড়ী; বিশ্বনাথ ভারতী, নৃসিংহ ভারতী, মান্মুকুন্দ ভারতী ও পল্মনাথ ভারতী। বনের চারি মড়ী; গঙ্গাবন সিংহাসনী, প্রভাতবন শহ্মধারী, আতম্ বন ফরারী ও শ্যামস্থান্দর বন। বৈকৃষ্ঠপুরীর চারি মড়ী। কেবল পুরী, মথুরা পুরী, অচন্ত পুরী ও মগুন পুরী। কেশব পুরী মূল্ তানীর চারি মড়ী; রামচন্দ্র পুরী, মাধব পুরী, সওয়া সহদেব পুরী ও ত্রিমুখত্রিয়া পুরী। গঙ্গাদরিয়ার চারি মড়ী, সমুদ্র দরিয়াও, শ্বসত দরিয়াও, লহর দরিয়াও ও কহর দরিয়াও। দশনাম তিলক পুরীর চারি মড়ী; ভগবান পুরী ভজনী, ভগবস্তপুরী নাগা, সহজ্ব পুরী ভাণ্ডারী ও হনুমস্ত হোরদঙ্গা।

গিবি সম্যাসীদের চ্লা ও চকী প্রভৃতি নামে আর কতকগুলি বিভাগ আছে; বেমন রামচ্লা, জগন্নাথী চ্লা, গঙ্গা চকী, পবন চকী, নিরঞ্জন চৌকা, যমুনা কড়াই ইত্যাদি। এ সমুদায় বিভাগও এক একটি তেজীয়ান্ ব্যক্তি কর্ত্বক প্রতিষ্ঠিত হয়। দশনামীর মধ্যে পুরী, ভারতী প্রভৃতি অহ্য অহ্য নামধারী সন্ন্যাসীর সহিত মঠ ও মড়ীর হায় ইহার কোন সম্বন্ধ নাই।

গিরি সন্ন্যাসীদের পূর্বেবালিখিত ঋদ্ধিনাথী মড়ীর ছুইটি বিভাগ আছে; গাদি ও থাল্সা। ঋদ্ধিনাথের প্রধান শিষ্য তুলসীনাথ তেজীবান্ হইয়া যে আসন প্রাপ্ত হন, তাহার নাম গাদি ও পর্বতনাথ নামে তাঁহার অন্য একটি শিষ্য যে আসনের অধিকারী হন, তাহার নাম খাল্সা। এই নিমিত্ত ঋদ্ধিনাথী মড়ীর সন্ধ্যাসীরা কেহবা আপনাকে গাদির অন্তর্গত ও কেহবা খাল্সার অন্তর্গত বলিয়া পরিচয় দেয়।

জ্যোৎমার্গ।

সন্ন্যাসীরা অনেকেই কুলাচারী অর্থাৎ মৃদ্য মাংসাদি ব্যবহার করেন। নির্ববাণ তন্ত্রে স্পায়টই লিখিত আছে।

सम्बिदासेवन' कुर्यात् सदा कारणसेवनम् ।

প্রাণতোষিণী-ধৃত নির্বাণভন্তবচন।

मिष्ना গ্রহণ ও সর্বাদা হারা সেবন করিবে।

गुप्तभावेन देवेशि ऋणु मत्प्राणवल्लभे । सन्त्रासिनां सदा सेव्यं पञ्चतस्वं वरानने ॥

নির্বাণতন্ত্র।

প্রাণ-প্রিয়ে ! বরাননে ! দেবেশ্বরি ! শ্রবণ কর । সন্মাসীতে ক্ষপ্তভাবে পঞ্চতত্ত্ব গ্রহণ করিবে ।

জ্যোৎমার্গপ্রবেশ নামে ইহাঁদের এক প্রকার সাধনা আছে, তাহা তন্ত্রোক্ত চক্র-সাধনা-বিশেষ বলিলে বলা যায়। তাহাতে যথেষ্ট মদ্য মাংস চলিয়া থাকে।

যে দেবীর উদ্দেশে এই ব্যাপারের অনুষ্ঠান হয়, তাঁহার নাম বালা-স্থন্দরী। সন্ন্যাসীরা নিশা-যোগে কোন নিভৃত স্থানে * একত্র সমাগত হইয়া নিম্ন-লিখিত প্রকারে একরূপ জ্যোতি অর্থাৎ দীপ প্রস্থলিত করেন

^{*}নিভৃত স্থানের প্রয়োজন বলিয়া, পশ্চিমোন্তর প্রদেশে কথন কণ্ম ত-খানার * মধ্যেও এই বাাপারের অনুষ্ঠান হইয়া থাকে।

[🛊] মৃত্তিকার নিমন্থ গৃহ-বিশেষের নাম ত-খানা।

এবং সেই জোভিতে ঐ দেবার আবির্ভাব হয় বলিয়া বিশাস করেন। এই নিমিত্তই ইহার নাম জ্যোৎমার্গ। তাঁহারা তথায় দৈর্ঘ্যে প্রস্থে এক হাত ছয় অঙ্গুলি প্রমাণ একটি মৃত্তিকাময় বেদি নির্মাণ করিয়া তাহার উপরে ঐ পরিমাণের এক খণ্ড রক্তবর্ণ বস্ত্র অর্থাৎ খেরো পাতিয়া থাকেন এবং ঐ রক্তবর্ণ বস্ত্রের মধ্যস্থলে একটি গ্রাস রাখিয়া তাহার চতুর্দিকে তণ্ডুল দিয়া কালী, ব্রহ্মা, বিষ্ণু, হমুমান্ ও ভৈরব প্রভৃতির প্রতিমৃত্তি প্রস্তুত্ত করেন। ঐ গ্রাস ঘৃত-পূর্ণ করিয়া তাহার মধ্যে একটি কার্পাদের বাতি দেন ও সেই বাতির অগ্র-ভাগে একটু কপূর্ব দিয়া রাখেন। সাধনার সময়ে সেই বাতি প্রস্তুলিত করিয়া তাহাতেই উল্লিখিত বালাস্থলরী দেবীর অর্চনা করেন এবং মৃদ্য, মাংস, লুচি প্রভৃতি ভোগ দিয়া প্রসাদ পাইতে থাকেন। ইহাঁরা ঐ দীপ-শিখাকে প্রকৃত জ্বালামুখীর শিখা বলিয়ী বিশাস যান এবং অনেকে ঐ জ্যোতবর্ত্তিকার ভস্ম একটি মাছুলির মধ্যে রাখিয়া গল-দেশে ধারণ করেন।

জ্যোৎমার্গে স্থরাপানাদি গুছ ব্যাপারের অনুষ্ঠান হয় বলিয়া, সন্ধ্যা-দীরা দেই সমস্ত গোপন রাখিবার উদ্দেশে কতকগুলি সাঙ্কেতিক শব্দ ব্যবহার করিয়া থাকেন। জ্যোৎমার্গাসুসারী সন্ধ্যাসী ব্যতিরেকে অস্থে ভাহা জানিতে পায় না। পশ্চাৎ ভাহার কতকগুলি লিখিত হইতেছে।

| দ্ৰ ব্য | | | সাঙ্কেতিক শব্দ |
|----------------|-------|-------|-----------------------------------|
| ম্দ্য | •••• | •••• | তীর্থ, প্রথমা, বিন্দু ও পদ্মাবতী। |
| মাং স | ••••• | ••••• | সিদ্ধি ও বিতীয়া। |
| জীবিত ছাগ | ••••• | ••••• | ঝাড়ি। |
| মং ভ | ••••• | | তৃতীয়া। |
| ভামাক | •••• | | ষষ্ঠা ও তমালপত্রী। |
| গাঞ্চা | | ••••• | मथमी । |

ভারতবর্ষীয় **উপাসক-সম্প্রদা**য়।

| শুক্র | ••••• | ••••• | ধাতু। |
|------------|-------|-------|--------------|
| छ न | ••••• | •••• | অ লিল |
| বোতল | ••••• | ••••• | কুগু। |
| ভাত | ••••• | ••••• | মতি। |
| লুচি | •••• | ••• | চক্ৰী। |

96

জ্যোৎমার্গ-প্রবিষ্ট সন্ন্যাসীরা চৈত্র ও আশ্বিন মাসে নবরাত্র নামে একটি ব্রত্বের অমুষ্ঠান করেন। একটি সন্ন্যাসী কোন গৃহের মধ্যে ছই পার্শ্বে ছইটি প্রদীপ জালিয়া উপবিষ্ট থাকেন। একটি প্রদীপ স্থাত-পূর্ণ আর একটি তৈল-পূর্ণ। স্থাতের প্রদীপটি মহাদেবের উদ্দেশে ও তৈলের প্রদীপটি কালীর উদ্দেশে প্রজ্বলিত হয়। সন্ধ্যার পরে জ্যোৎমার্গামুসারী অপরাপর সন্ম্যাসী আসিয়া শিব, শক্তিও ভৈরবের অর্চনা করেন ও ভোগ দিয়া প্রসাদি-সামগ্রী ভক্ষণ করিতে থাকেন। নবম দিবসে পূর্বেবাক্তরূপে জ্যোৎমার্গামুসারী সন্ম্যাসীদিগকে কোতোয়াল দারা নিমন্ত্রণ করিয়া পাঠান।

1

লোকের গুপ্ত আমোদ বিষয়ে সঙ্গি-লাভের ইচ্ছা এত প্রবল ষে, সন্ম্যাসীরা গৃহীদিগকে ষট্কর্মাদির অমুষ্ঠান দেখিতে দেন না, কিন্তু অক্লেশেই তাঁহাদিগকে প্রমোদময় জ্যোৎমার্গে প্রবেশিত করিয়া লন।

পশ্চিমোত্তর প্রদেশে অনেক সন্ধ্যাসীতে এবং কখন কখন সন্ধ্যাসী ও গৃহস্থ উভয়ে মিলিত হইয়া উল্লিখিতরূপ নানাপ্রকার চক্র করিয়া থাকে। তাহার সকল প্রকারেই স্ত্রী পুরুষ উভয়েই প্রবেশপূর্বক মদ্য মাংসাদি ব্যবহার করে। শুনিয়াছি, চক্র-বিশেষে একটি পুরুষ একটি স্ত্রীলোককে সঙ্গে লইয়া আবরণ-বিশেষের অস্তরালে একরূপ ক্রিয়ার অমুষ্ঠান করেন এবং সেই চক্রম্ম্ব সমস্ত ব্যক্তি ঐ ক্রিয়া-লব্ধ পরম পদার্থটি, অর্থাৎ এই পুস্তকের প্রথম ভাগে বাউল-সম্প্রদায়ের বিবরণ

মধ্যে লিখিত চারি চন্দ্রের দিতীয় চন্দ্রটি *, জল-মিশ্রিত করিয়া উদরম্থ করিয়া থাকেন। ঐ ক্রিয়ার সবিশেষ বৃত্তাস্ত লিখিতে হইলে অভ্যস্ত বিশ্বীল হইয়া উঠে।

আহার ব্যবহার।

সন্ন্যাসীদিগকে সচরাচর আক্ষাণ ও স্বসম্প্রদায়ী লোকের অন্নই গ্রহণ করিতে দেখা যায়, কিন্তু তাঁহারা মুখে বলেন আমাদের সকল জাতির অন্ন ভোজনেই অধিকার আছে; চুরী, নারী, মিথ্যা এই তিনটি ব্যতি-রেকে আর কিছুই আমাদের পরিত্যাজ্য নয়। শাস্ত্রেও ইহাদের প্রতি এইরূপ ব্যবস্থা আছে।

बिप्रान्नं खपचान्नं वा यस्मात्तस्मात् समागतम् । देशं कालं तथा चान्नमश्रीयादविचारयन् ॥ প্রাণতোধিণী-ধৃত মহানির্কাণ তন্ত্র-বচন ।

সন্ন্যাসীরা যে স্থান সে স্থান হইতে কি ব্রাহ্মণ কি চণ্ডাল যে কোন জ্বাতির অন্ন প্রাপ্ত হউক না কেন, দেশ কালের বিচার না করিয়া তাহা ভোজন করি-বেন।

धातुप्रतियष्टं निन्दामन्तरं क्रीड्नं स्त्रिया। रेतस्त्रागमस्याञ्च सन्त्रासी परिवज्जे येत्॥ गशनिर्वान ७४।

ধাতৃ-প্রতিগ্রহ, নিন্দা, মিথ্যা কথন, স্ত্রীলোকের সহিত ক্রীড়া, রেডস্ত্যাগ এবং অস্যা এই সমস্ত কার্য্য সন্ত্র্যাগীতে পরিত্যাগ করিবে।

এইরূপ ব্যবস্থা আছে বটে, কিন্তু কয় ব্যক্তি ব্যবস্থাসুরূপ কার্য্য করিতে পারে ?

ভারতবর্ষীর উপাসক-সম্প্রদায়ের প্রথম ভাগের ১৭৪ পৃষ্ঠা দেখ।

क्रमां ।

স্থানে স্থানে অনেক সন্ন্যাসী একত্র দল-বদ্ধ হইয়া অবস্থিতি করেন, অথবা তীর্থ-পর্যাটন করিয়া থাকেন। ঐ দলকে জমাৎ বলে। ঐ জমাতের কার্য্য-নির্ব্বাহের বন্দোবস্ত নিতান্ত সামাশ্র নয়। তদ**র্থ অ**নেক গুলি কর্ম্মচারী নিযুক্ত হইয়া থাকে; মহন্ত, পূজারী, কুঠারী, ভাগুারী, কারবারী, হিসাবী, কোতোয়াল, পাহারাদার ও তুরহীওয়ালা। মহস্ত প্রধান অধ্যক্ষ: তিনি জমাতের সকল বিষয়ের অধ্যক্ষতা ও সমস্ত কার্য্য সম্পাদন করেন। পূজারী ষথানিয়মে ও যথাসময়ে চরণপাত্নকা পূ**জা** করেন। কুঠারী প্রকৃত ভাগুারী: তিনি আহার-দ্রব্যাদি সমস্ত বস্তু রক্ষা করিয়া থাকেন। পাচকের নাম ভাগুরী; তিনি রন্ধন করিয়া সন্নাসীদিগকে ভোজন করান। বড বড জমাতে বহুসংখ্যক ভাগুারী থাকে। কারবারী প্রকৃত ধনরক্ষক; তিনি ধন রক্ষা ক্রাক্রের ও প্রয়োজন মতে ব্যয়ার্থ অর্থ দিয়া থাকেন। মুক্তরিকে হিসাবী বলে; তিনি আয় বায় লিখিয়া রাখেন। কোতোয়াল মহস্তের আদেশামুসারে অস্তা অস্তা কর্ম্মচারীকে স্বাস্থ্য কর্ম্মে নিয়োজিত করেন ও তাহাদের কার্য্যের তত্ত্বাবধান করিয়া থাকেন। দেব-স্থান এবং ডক্ষা, নিশান, ঝাঁজ, ঘণ্টা প্রভৃতি পূজার দ্রব্য রক্ষার্থ চৌকী দেওয়া পাহারাদারের কার্য্য। সন্ন্যাসীদের মধ্যে অনেকে পর্য্যায়ক্রমে দিবারাত্র ঐ কর্ম্ম নির্ববাহ করেন। তুরহীওয়ালা তুরীবাদন করিয়া জমাতের গোরব বৃদ্ধি করেন। কেবল তূরী নয়, ডঙ্কা ও পতাকাতেও জমাতের শোভা ও মহিমা বর্দ্ধন করিয়া থাকে। সন্ন্যাসীরাই ঐ সমুদয় কর্ম্মচারীর পদে অভিষিক্ত হন। কেবল সন্ন্যাসী নয়, যোগী. পরমহংস প্রভৃতি অন্ত অশ্ব শৈব উদাসীনেও জমাতে প্রবেশ করিয়া থাকেন।

হরিম্বারাদি তীর্থ-স্থানে এক এক সময়ে ভারী ভারী জমাৎ উপস্থিত

হয়। এ প্রদেশের মধ্যে ভোটবাগানে # ও কার্ত্তিক মাসে ও কোন কোন বৎসর কার্ত্তিক ও পৌষ উভয় মাসে গলাসাগর-গমন উদ্দেশে মন্দ জমাৎ হয় না। সেই সেই সময়ে দোখতে পাওয়া যায়, পভাকা উড়িভেছে, ভূরী ও ডক্ষা বাজিভেছে, চন্দ্রাভপের নিম্ন দেশে দন্তাত্রেয়ের চরণপাছকা ছাপিত হইয়াছে, প্রতিদিন ঐ চরণপাত্রকার পূজা ও ভোগ ণ দেওয়া যাইভেছে, পঞ্চাইভের ঘারা কাজ কর্ম্মের বন্দোবস্ত হইভেছে, দিন দিন নূতন নূতন সন্ন্যাসী উপস্থিত হইয়া দল-পুষ্টি করিভেছে, ন্যুনাধিক শভ সংখ্যক সন্ন্যাসী একত্র ভোজনে বসিয়া গিয়াছে, প্রায়্ম সর্বক্ষণই গাঞ্জা ও সুখার ধূম চতুর্দ্দিক ব্যাপিতেছে; ধূমের আর সীমা নাই।

হরিদার, প্রয়াগ, উচ্চায়িনী, গোদাবরী এই চারি স্থানের মেলায় তীর্থ-স্নান উপলক্ষে যে সমস্ত ভারী ভারী জমাৎ উপস্থিত হয়, তাহার নিকট ভোটবাগানের জমাৎ কিছুই নয় বলিলে বলা যায়। ঐ চারি স্থানে বিশ্বসহস্র সন্ন্যাসী এক এক জমাভের অন্তভূতি থাকে ও শত শত

^{*} বংসর বংসর দেখিতেছি, এ অঞ্চলে সন্ন্যাসীদের সমাগম উত্তরোত্তর অন্নই হইরা আসিতেছে। তাছাদের সংখ্যা ক্রমশং হ্রাস হইতেছে, কি এদেশে সমাদ্রের ক্রাট দেখিরা তাছাদের আসিতে প্রবৃত্তি হর না নিশ্চর বলিতে পারা যান্ত্র । পাঁচ ছয় বংসর পূর্বে ভোট বাগানের জমাতের বিষয় অচক্ষে দেখিরা ক্রমণ বর্ণন করিয়াছি, এখন তাছার অনেক ধর্বতা হইয়া গিয়াছে। প্রতিষ্ঠিংসরই পূর্বে বংসর অপেকা হ্রাস দেখিতে পাই। পার্যবর্তী লোকে বলে, ঐ মঠের হয়বস্থা তাছার একটি প্রধান কারণ। ফলতঃ আমরা বাল্যকালে বেরূপ পরমার্থ-পরামণ জ্ঞানাপন্ন ব্রহ্মচারী পরমহংস প্রভৃতির সমাগম সচরাচর দর্শন করিতাম, এখন তাছা অতীব বিরল।

[†] খ্বত, আটা ও চিনি মিশ্রিত করিয়া এক রূপ চূর্ণ পদার্থ প্রস্তুত করা হর, তাহাকে রোঠ বলে। এক এক দিন অপরাহে ঐ রোঠ ভোগ দেওয়া হর; হইনে, প্রত্যেক সন্ন্যাসী প্রসাদ গ্রহণ করিয়া থাকে।

ভাগুারী রন্ধন-কার্য্যে নিরস্তর নিযুক্ত রহে। তথায় সহস্রে সহস্র টাকা মূল্যের এক এক পতাকা উড্ডীয়মান হয়।

বারদা, নাগর প্রভৃতি কয়েক স্থানে কয়েকটি প্রধান জমাৎ বিভ্যান আছে। ঐ ঐ স্থানের হিন্দু রাজারা তাহাদের সম্পূর্ণ আমুকূল্য করিয়া থাকেন।

মরণোত্তর ক্রিয়া।

কোন সন্ন্যাসীর মৃত্যু ঘটিলে, পূর্বেবাক্তরূপে মুৎসমাধি বা জল সমাধি দেওয়া হয়, এবং তিন দিনের দিন রোঠ ভোগ ও তের দিনের দিন পদত্ ও শ্বাটাল নামে একটি ক্রিয়া হইয়া থাকে। শ্বাটালটি কিছু গুরুতর ক্রিয়া; অধিক বায় হয় বলিয়া, অনেকেরই তাহা সম্পন্ন হয় নাণ। দিবাভাগে পঙ্গত্ ও রোঠ ভোগ হয়, কিন্তু শ্বাটালটি রাত্রি যোগে নির্বাহিত হইয়া থাকে। মৃত্যু স্থানে অহ্য অহ্য সন্ন্যাসী উপত্তিত থাকিলে ও ব্যয়োপযুক্ত অর্থ সংগৃহীত হইলে, সেই স্থানেই ঐ সমস্ত কর্ম্ম সম্পন্ন হয় নতুবা তাহার গুরুর গাদিতে সংবাদ পঁছছিলে, তথায় অমুঠিত হইয়া থাকে। স্থ্যোগ ও স্থপ্রতুল না থাকাতে, উল্লিখিত ম্থ-সমাধি বা জল-সমাধি মাত্রেই কত ব্যক্তির মরণোত্তর ক্রিয়ার পর্যবাদান হয়।

^{*} ७२ गुर्छ। (१४।

[†] জ্যোৎমার্গান্ধনারী সন্ত্যাসীদেরই শৃষ্টাল হয়, অন্যের হয় না। মৃত ব্যক্তির শিষ্য বা শিষ্যান্থশিষ্যাদি কোন সন্থাসী কুশপুত্তল প্রস্তুত করিয়া এই ক্রিয়ার অনুষ্ঠান করেন এবং সেই ক্রিয়াকারক ও ক্রিয়া-ভূমিস্থ অক্ত সমস্ত সন্মানী মন্ত্রোচ্চারণ পূর্বক সেই পুত্তলের উপরে জল ঢালিতে থাকেন।

নাগা।

যে সমস্ত সন্ন্যাসী মস্তকের জটাগুলি রজ্জ্ব ন্যায় পাক দিয়া উফ্টাষের মত বন্ধ করিয়া রাখে *, তাহারাই নাগা। নঙ্গা শব্দের অর্থ উলঙ্গ। ইহারা সচরাচর বিবস্ত্র থাকে বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে, এই নিমিত্ত ইহাদিগকে নাগা বলে। এক্ষণে রাজ-শাসনের ভয়ে সর্বত্র উলঙ্গ থাকিতে পায় না; একরূপ কৌপীন ধারণ ও অন্য অন্য প্রকার বন্ত্র পরিধান করে, ঐ কৌপীনের নাম নাগফণী।

नागा पच्रे नागफणी।

্রপুরাপুর সম্যাসীদের ডোর ও কোপীন স্বতম্ব স্বতম্ব; ইহাদের ঐ এক নাগফণীতেই উভয়ের কার্য্য সম্পন্ন হয়।

ইহারা বিভৃতির উপাদক। বিভৃতি-রাশিকে একত্রীভৃত করিয়া জমাইয়া রাখে, এবং গিরি-মৃত্তিকায় চিত্রিত ও চন্দনাদি দারা বিলেপিত করিয়া থাকে। এইরূপ প্রস্তুত করা বিভৃতি-পুঞ্জকে গোলা বলে। ভিন্ন ভিন্ন আখাড়ার ভিন্ন ভিন্ন রূপ গোলা; নিরঞ্জনী আখাড়ায় গোল অর্থাৎ চক্রাকার ও নির্বাণী আখাড়ার চতুদ্বোণ। ইহারা প্রতিদিন পুশ্প চন্দনাদি দারা উহার অর্চনা করে ও উহাই হস্তে লইয়া মঠ-ধারী প্রভৃ

জটা তিন প্রকার। নাগজটা, শভুকটা ও বাব্রান্ জটা। নাগারা বেরপ
রজ্জ্ব মত পাকান জটা ধারণ করে, তাহার নাম নাগজটা। বে. জটা ঐরপ
পাকান নয়, তাহাকে শভুকটা বলে। শভুকটা ছোট হইলে বাবরান্ বলিয়া
উল্লিখিত হয়।

তির নিকটে ভিক্ষা করিয়া থাকে। যিনি যে কিছু মুদ্রা ভিক্ষা দেন, তাহা ঐ বিভূতি-গোলার উপরেই গ্রহণ করে •।

নাগারা নিজে শিষ্য করে না ; ষাহারা অন্যত্র সন্ধাস গ্রহণ করে, ভাহাদের মধ্যে অনেকে আসিয়া ইহাদের দল-ভুক্ত হয়। এই রূপেই ইহাদের প্রবাহ চলিয়া আসিতেছে। ইহাদিগকে দীক্ষা-গুরুর আশ্রয় পরিভাগ করিয়া নাগা-দল প্রবেশ করিছে হয়, এই নিমিত্ত এই ব্যাপারটিকে গুরু-পক্ষ পরিভাগে পূর্বক দেব-পক্ষ অবলম্বন বলিয়া থাকে। ঐ সময়ে ইহারা কতকগুলি ক্রিয়ার অনুষ্ঠান পূর্বক নানাবিধ কঠোর ব্যবহার করিছে প্রবৃত্ত হয়। পূর্বকার গুরু-দত্ত কৌপীন পরিভাগে করিয়া একবারে বিবন্ত্র হইয়া থাকে; এমন কি, এক খাই সূভা পর্যান্ত শরীরে ধারণ করিছে পায় না। এই অবস্থায় প্রান্তরে অথবা ভাদৃশ আশ্রয়শূন্য শ্বানে একমাস পর্যান্ত অবস্থিতি করে; গৃহ-মধ্যে কদাচ অধিবাস করিছে পারে না। প্রগাঢ় শীতের সময় হইলেও, ইহার ভান্যখিচরণ করিবার সম্ভাবনা নাই।

সন্ন্যাসীদিগকে নাগা-দল-ভুক্ত করিবার সময়ে নাগা মহস্তের বিস্তর্ম ব্যয় হয়, এই নিমিত্ত তিনি একেবারে বহু-সংখ্যক ব্যক্তিকে ঐ দলে গ্রহণ করিয়া থাকেন।

ইহারা অত্যন্ত উপ্র-শীল ও কলহ-প্রিয়। পূর্বের ইহাদের উপদ্রবে লোকে অন্থির হইত; এক্ষণে রাজশাসন দারা তাহার অনেক নিবারণ হইয়াছে। কবীর নিজ প্রস্থে নাগাদির প্রতি যে সমস্ত পশ্চালিখিত ভৎসনাবাক্য প্রয়োগ করিয়াছেন, তাহাতেই ইহাদের তুঃশীলতা স্পষ্ট প্রতীয়মান হইতেছে।

ইহার। ঐ বিভৃতি-গোলার উপর রক্ত-মুদ্রা ভির অপর নিরুষ্টতর মুদ্রা
 এহণ করে না, এইরূপ ব্যক্ত করিয়া থাকে।

"ভাই হে! আমি এরপ যোগী কোন কালে দেখি নাই যে,
নিজের ধর্ম বিম্মৃত হইয়া র্থা পর্যাটন করিয়া বেড়ায়। মুখে বলেন,
আমি শিব-ভক্ত ও প্রধান গুরু, কিন্তু হট্ট-ভূমি তাঁহার যোগ-সাধনের
স্থান। মায়া ভগু তপস্থীর দেবতা। কোন্ কালে দন্তাত্তেয় গৃহ নষ্ট
করিয়াছিলেন ? কোন্ কালে শুকদেব সশস্ত্র সৈন্য সংগ্রহ করিয়াছিলেন ? কোন্ কালে নারদ মুনি বন্দুক ব্যবহার করিয়াছিলেন ? কোন্
কালেই বা ব্যাসদেব তূরী-যন্ত্র বাদন করিয়াছিলেন ? যুদ্ধেতে ধর্ম্ম-ভ্রম্ট
হয়। যিনি ধনুকধারী, তিনি কি প্রকারে অতীৎ * ? যাঁহার লোভ
আছে, তিনি কি প্রকারে বিরক্ত ? কি লজ্জার বিষয়! তিনি স্বর্ণালক্ষার
ধারণ করেন। তিনি অশ্ব সকল সংগ্রহ করিয়াছেন, গ্রাম সমুদায়
অধিকার করিয়াছেন ও ধনী বলিয়া বিখ্যাত হইয়াছেন। স্থান্দরী স্ত্রী
কদাচ সনক ও তাঁহার ভ্রাতাদিগের ভূষণ ছিল না। সম্প্রেত মসীপাত্র
খার্কিলে সন্স্ক স্বর্গতে সহজেই বস্ত্র মলিন হয় শ।"

নাগাদের উদ্ধন্ত স্থভাব ও বিশেষতঃ বৈষ্ণবদিগের সহিত ইহাদের বিষম বিসংবাদিতা স্থপ্রসিদ্ধ আছে। হরিষারে মধ্যে মধ্যে কুস্তমেলা নামে একটি মেলা হয়, তাহাতে গঙ্গা-সান উদ্দেশে বহু লোকের সমাগম হইয়া থাকে। এই উপলক্ষে শৈব নাগাদিগের সহিত বৈরাগীদিগের বিবাদ উপস্থিত হইয়া এক এক বারে সহস্র সহস্র মৃত্যু-মুধে পত্তিত হইয়াছে। পারসীক ভাষায় প্রণাত দাবিস্তান নামক গ্রন্থের দিতীয় ভাগের অইটম অধ্যায়ে লিখিত আছে, ১০৫০ এক হাজার পঞ্চাশ হিজরা শকে হরিষারে মৃণ্ডিদের ্য সহিত সন্যাসীদিগের তুমুল সংগ্রাম

সয়্যাসীয়া সচরাচয় আপনালিগকে অতীৎ বিশয়া উয়েশ করে। ইহার
 অর্থ অতিথি বোধ হয়। † ৬৯ রেইমনি।

[🛨] व्यर्थां ८ देवतात्रीत्वतः

উপস্থিত হয়, তাহাতে সন্ধ্যাসীরা জন্মনাভ করিয়া বহু সংখ্যক মুণ্ডির প্রাণ বধ করে। মুণ্ডিরা প্রাণ-ভয়ে তুলসী মালা পরিত্যাগ পূর্বক কণ্ ফট্ যোগীদিগের ন্যায় কর্ণ-যুগলে কুণ্ডল ধারণ করে। ঐ দাবিস্তানের বিতীয় ভাগের বাদশ অধ্যায় জলালি ও মদারি নামক ছই মুসলমান সম্প্রদায়ের সহিত সন্ধ্যাসীদিগের যুদ্ধ-ঘটনার বিষয় বর্ণিত হইয়াছে। তাহাতেও সন্ধ্যাসীরা জয় প্রাপ্ত হইয়া জলালি ও মদারিদিগের * মধ্যে সাত শত ব্যক্তির প্রাণ নষ্ট করে ও তাহাদের পুত্রদিগকে শৈব-ধর্ম্ম শিক্ষা দেয়। ১৭২৯ সতর শ উনত্রিশ বা ৩০ ত্রিশ শকে হরিবারে ঐরপ একটি যুদ্ধ হইয়া যায়, তাহাতেও যুদ্ধজয়ী শৈব সন্ধ্যাসীরা ১৮০০০ মন্টাদশ সহস্র বৈরাগীকে রণ-ভূমিতে নিপাত করে শ। ১৭১৭ সতের শ সতের শকে ঐ হরিবারে তীর্থ-মান উপলক্ষে শাক, সন্ধ্যাসী. বৈরাগী এই তিন সম্প্রদায়ে একটি ভ্য়ানক সংগ্রাম উপস্থিত হয়, তাহাতে অখা-রু দীক-সম্প্রদায়ীরা অপর তুই দলম্ব সমস্ত শক্রকে পরাস্ত ক্রির্যী বহু-ব্যক্তিকে রণ-ক্ষেত্রে বিনাশ করে, এবং অবশিষ্ট সকলকে বন, পর্বত ও নদীতে তাডিত করিয়া দেয় গ্রঃ।

^{*} দাবিস্তানে মদারি ও জলালিদিগের ধর্দ্মান্তান অনেক অংশে শৈব সয়াসীদিগের তুল্য-রূপ বলিয়া লিখিত ছইয়াছে। মদারি-সম্প্রদায়ী লোকে জটাধারণ, ভশ্ম-লেপন, অয়ি-সেবন ও প্রচুর পরিমাণে সিদা পান করিত এবং
তশ্মধ্যে প্রধান সাধকেরা একেবারে বিবস্ত্র থাকিত। জলালিরাও সেইরূপ অফুভান করিত; কেবল জটা ধারণ করিত না। কিন্তু এই উভর সম্প্রদায়েই পোবধে নিবৃত্ত হয় নাই। জলালি-সম্প্রদায়ী গুরুদিগের এই একটি কুৎসিত ব্যবহার
ছিল যে, তাহারা শিষ্যদিগের গৃহে উপস্থিত হইয়া স্বেচ্ছাম্লারে কোন কুলল্লীর
সহিত সহবাস করিত এবং সমরে সমরে নিজ গৃহে আনর্বন করিয়া রাধিত।

[†] Asiatic Researches. Vol. 11. P. 455.

[‡] A. R. Vol. VI. P. 317.

হিন্দু রাজার। ইহাদিগকে এইরপ উত্তা-শীল ও কলছপ্রিয়া দেখিয়া অনেক দিন অবধি সেনা-পদে নিযুক্ত করিয়া আসিয়াছেন। জয়পুরে অদ্যাপি নাগা-সৈন্য বিদ্যমান আছে #।

নির্বাণী ও নিরপ্পনী আখাড়ার নাগাই সচরাচর দেখিতে পাওয়া যায়। শুনিয়াছি, পশ্চিমোত্তর প্রদেশের কোন কোন স্থানে অটল আখাড়ার নাগা বিদ্যমান আছে,কিন্তু তাহাদের সহিত আমার সাক্ষাৎকার ঘটে নাই পা।

সন্ন্যাসীদের মধ্যে অনেকে যেমন উল্লিখিত রূপ বৃত্তি-বিশেষ অব-লম্বন করিয়া নাগা নামে খ্যাত হয়, সেই রূপ অন্যে আবার অন্য অন্য বৃত্তি গ্রহণ করিয়া আলেখিয়া, দঙ্গলী, উদ্ধিবাহু প্রভৃতি বিবিধ উপাধি প্রাপ্ত হইয়া থাকে। পশ্চাৎ ক্রমে ক্রমে তাহাদের বিবরণ লিখিত হইতেছে।

[•] কিন্তু ভাহারা শৈব নাগা নয় :দাত পন্থী।

[†] অটন প্রভৃতি করেক আধাড়ার সন্নাসীরা রাজস্থানের রাজাদিগের নিকট বেতন গ্রন্থ করিয়া কর্ম করে; সচরাচর কুআপি সমনাগমন করে না। কিন্তু সকলেই যে, একেবারে নিশ্চল তাও নর , মধ্যে মধ্যে বালালা দেশেও ভাহাদিগকে দেখিতে পাওয়া যার। ১৭৯৭ শকের ২৩ কার্ত্তিকে যোধপুরস্থিত করেকজন অটল আধাড়ার সন্নাসীর সহিত আমার সাক্ষাৎ হয় ও কর দিবস সহবাসও ঘটে।

আলেখিয়া।

ইহারা অলখ্নাম উচ্চারণপূর্বক ভিক্ষা করিয়া অভাভ সন্ধ্যাসীকে ভোজন করায়, এই নিমিত্তই ইহাদের নাম আলেখিয়া। এইরূপ বারস্বার অলখ্শব্দ উচ্চারণ করাকে অলখ্ জাগান কহে। ইহাই ইহাদের প্রধান বৃত্তি।

ইহার। ভক্ষ্য-সংগ্রহার্থ সঙ্গে ঝুলী রাখে ও সেই ঝুলী পরম পবিত্র মহিমান্থিত বলিয়া বিশাস করে। কেহ কেহ চাল, ডাল, লবণ, আটা প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন বস্তু রাখিবার নিমিত্ত ভিন্ন ভিন্ন ঝুলী গ্রহণ করে ও বাম কন্ধ হইতে প্রকোষ্ঠ পর্য্যন্ত সমস্ত বাম ভূজে সেই সমুদায় সঙ্জীভূত করিয়া রাখে। অপর অনেকে এক ঝুলীর সংখ্য পৃথক্ পৃথক্ কোষ্ঠ প্রস্তুত করিয়া পৃথক্ পৃথক্ ভক্ষ্য বস্তু গ্রহণ করে।

ইহাদের ঐ ঝুলী ভৈরব, গণেশ বা কালীদেবীর উদ্দেশে প্রতিষ্ঠিত ও তদমুসারে আলেখিয়েরা তিন শ্রেণীতে বিজ্ঞ; ভৈরব-ঝুলী-ধারী গণেশ-ঝুলী-ধারী ও কালী-ঝুলী-ধারী । গণেশ-ঝুলী-ধারীরা পূর্ববাহে, ভৈরব-ঝুলী-ধারীরা বৈকালে ও সায়ংকালে এবং কালী-ঝুলী-ধারীরা অধিক রাত্রে জিক্ষাচরণ করিতে যায়। ভৈরব-ঝুলী-ধারী ও কালী-ঝুলী-ধারীদের মধ্যে কেহ কেহ নিজ দেবতার সাক্ষাৎকার লাভের উদ্দেশে সঙ্গে মদ্য, মাংস * ও ছুরিকা রাখিয়া দেয়। কুকুর ভৈরবের বাহন, এই নিমিন্ত ভৈরব-ঝুলী-ধারীরা ঝুলীর মধ্যে রুটী লইয়া যায় ও কুকুর দেখিলেই তাহার এক এক খণ্ড অর্পণ করিয়া থাকে।

^{*} ছাগলের মেটে ভালা।

এই ত্রিবিধ আলেখিয়ার মধ্যে গণেশ-ঝুলী-ধারীর। ভিক্লার্থ গৃহে গৃহে গমন করে ও ইচ্ছা হইলে, তথায় কিয়ৎক্ষণ বিশ্রাম করিতেও পারে। কিন্তু কালী-ঝুলী-ধারীরা ও ভৈরব-ঝুলী-ধারীরা কাহারও দারস্থ হয় না; পথ দিয়া অলথ অলথ শব্দ উচ্চারণ করিতে করিতে যায়, যাঁহার ইচ্ছা হয় তিনি ইহাদিগকে আহ্বান করিয়া ভিক্ষা দান করেন।

আলেখিয়ারা কেবল ভক্ষা সংগ্রহ করিয়া নিবৃত্ত হয় না; নিজে রন্ধন করিয়া ভোজন করায়। এই নিমিত্ত কোন কোন ব্যক্তিকে বৃহৎ তামার হাঁড়ী, ঘড়া প্রভৃতি ধাতু-পাত্র সঙ্গে রাখিতে দেখা যায়। সয়াসীরা যে সময়ে একত্র তীর্থ-যাত্রা করে অথবা কুত্রাপি অবস্থিতি করিয়া থাকে, তখন তাহার অন্তর্গত আলেখিয়ারাই, ন্যক্ত জয়কে, পারে, ভোজন করায় দেখিতে পাই। সয়াসীদের মধ্যে ইহাদের বৃত্তি সর্বব-শ্রেষ্ঠ বোধ হয়। এ বৃত্তিটি ভূলোকের অপেক্ষার উৎকৃষ্টতর লোকের উপযুক্ত।

ইহারা গাত্রে একরূপ থেল্ক। ও কতকগুলি অলঙ্কার ব্যবহার করে। অনেকে রোপা, পিত্তল অথবা তামনির্মিত চারি পাঁচ হারা জিজিরের মৃত একরূপ অলঙ্কার পায়ে পরে, তাহার নাম গির্নার হাল। তাহার মধ্য-স্থলে একরূপ সামুদ্রিক বস্তু সন্ধিবেশিত হয়, তাহাকে ইহারা সাধন-যন্ত্র-বিশেষ বলিয়া থাকে। ইহারা জিজিরের সদৃশ কিন্তু তদপেক্ষা স্থল আর এক প্রকার অলঙ্কার ধারণ করে তাহার নাম তোড়া। তন্তিন্ন কেহ কেহ হস্তে ও বাহ্ত-দেশে ছল্লা, অঙ্গুরী প্রভৃতি স্বর্ণ ও রোপা রচিত অন্য অন্য প্রকার ভূষণও ব্যবহার করিয়া থাকে। এইরূপ বিবিধ ভূষণে ভূষিত হইয়া, উদ্বেধ্ন ও বক্ষঃস্থল

মতক্স। * নামক ঔর্ণ রশ্মিতে পরিবেষ্টিত করিয়া, বাম হত্তে ঝুলী ও খর্পর ও দক্ষিণ হত্তে চিমটা লইয়া এবং সন্ধ্যাসী মাত্রের ব্যবহার্য্য বিষ্ঠৃতি রুদ্রাক্ষাদি অপরাপর উপকরণ গ্রাহণ করিয়া, ঘুকুরের শব্দ করিতে করিতে, যখন ভিক্ষার্থ পর্য্যটন করে, তখন বড় মন্দ দেখায় না।

আলেখিয়ারা গিন রি, পুনা প্রভৃতি অনেক স্থানে অবস্থিতি করে ও মধ্যে মধ্যে তীর্থ-পর্য্যটন করিতে যায়।

मक्नी।

সংসারে অর্থের বল অত্যন্ত অধিক। সন্ত্যাসীদেরও এক সম্প্রাদায়ে ভিক্ষা-বৃত্তি পরিত্যাগ করিয়া বাণিজ্যব্যবসায়ে প্রবৃত্ত হইয়াছে। ইহাদের নাম দক্ষলী। হায়দারাবাদ, পুনা, সেতারা প্রভৃতি তানেকানৈক
প্রসিদ্ধ নগরে ইহাদের মঠ ও কুঠি বিদ্যমান আছে। পূর্বের কলিকাতার
মধ্যেও ইহাদের কুঠি ছিল শুনিয়াছি; এক্ষণে উহার পূর্বে দিকে
বেলেঘাটায় একটি চূর্থ-ব্যবসায়ী দক্ষলী সন্ত্যাসী অবস্থিতি করিয়া থাকে।

এই সম্প্রদায়ী এক এক মঠাধাক্ষ মর্থাৎ মহস্ত বহু-বিস্তৃত বাণিজ্য অবলম্বন করিয়া বিপুল সম্পত্তির অধিকারী হইয়াছেন। এমন কি, কোন কোন মহস্তের কোটি কোটি টাকার বিষয় ও নিজের জাহাজ্বও আছে; সেই জাহাজে দেশ বিদেশে পণ্য সামগ্রী প্রেরিত হয়। তিনি স্বয়ং মঠে অবস্থিতি করিয়া মঠের কার্য্য সম্পাদন ক্রেন: শিস্তোরা

ইংরা ৪ • । ৫ • হস্ত পরিমিত একগাছি তীর্ণ রজ্জু কৌপীনের উপর

হইতে কক দেশ পর্যান্ত বেষ্টন করে ও দেই রজ্জুব হই প্রান্তে যুকুর বাদ্ধিয়া রাথে;

ইহাকেই মতক্ষা বলে।

ও অন্য অন্য কর্ম্মচারীরা দেশদেশাস্তর গমনাগমন পূর্বক বাণিজ্ঞা-ব্যাপার নির্বাহ করিতে থাকে। উহার দ্বারা যে অর্থ সংগ্রহ হয়, তাহা সম্যাসীদের ভোজন, দেব-মন্দির নির্মাণ ও প্রতিষ্ঠা এবং তাদৃশ অন্যান্য ক্রিয়াতে ব্যয় হইয়া থাকে।

দঙ্গলী মহন্তেরা বালক ক্রয় করিয়া শিষ্য অর্থাৎ চেলা করেন ও যত্ন পূর্ববিক তাহাকে প্রতিপালন ও শিক্ষা-দান করিয়া থাকেন। কিছু দিন এইরূপ পরিপালন করিয়া যদি মঠাধ্যক্ষ হইবার উপযুক্ত বোধ হয়, তাহা হইলে বরাবর রাখিয়া দেন, নতুবা অন্য কোন দশনামী সন্ন্যাসীকে সমর্পণ করেন।

অঘোরী।

তত্তত্তানাবলম্বী পরমহংসেরা সমৃদয় ব্রহ্মময় বোধ করিয়া মনে মনেই সর্বব্র সমদৃষ্টি অভ্যাস করেন; অধুনাতন অবোরীরা সেই বোধ ও সেই দৃষ্টিটি কার্য্যে পরিণত করিয়া বিষ্ঠা চন্দন সমান জ্ঞান করে এইরূপ দেখাইয়া থাকে। তদমুসারে তাহারা নানারূপ বীভৎস ব্যবহার সহকারে ভিক্ষা করিয়া বেড়ায়। তাহারা সকল বস্তুতে সমভাব, ও সমদর্শিতা জানাইবার উদ্দেশে শরীরে বিষ্ঠা মুত্রাদি লেপন করে, এবং করোটি বা কাষ্ঠপাত্রে রাথিয়া সঙ্গে লইয়া যায়। ঐ সমস্ত স্থাণিত বস্তু ভক্ষণ করে, অথবা গৃহস্থের নিকট ভিক্ষা না পাইলে, তাহার গৃহে ক্ষেপণ করিয়া থাকে। গৃহস্থকে ভয় প্রদর্শন করিবার উদ্দেশে আপনার অঙ্গ-বিশেষে আঘাত করিয়াও শোণিত নিঃসারণ করে, অপরাপর বহু প্রকার কুৎসিত্ত আচরণ ভারা গৃহস্থকে উত্তাক্ত করিয়া থাকে।

অঘোরী হইতে হইলে, প্রথমে যথানিয়মে সন্ন্যাস লইয়া পশ্চাৎ অঘোর-মন্ত্র গ্রহণ করিতে হয়। সন্ন্যাসীরা ঐ মন্ত্রকে অভীব প্রভাববান্ এবং অঘোরীদিগকে দৈব-শক্তি-সম্পন্ন বলিয়া বিশাস করেন।

ग्रघोराद परी मन्त्रः

অংথার-মন্তের পর আরে মন্ত্র নাই।

হিন্দুমাত্রেই যেমন সচরাচর প্রত্যয় যান, পূর্ববতন ঋষি মুনিরা গো-বধ করিয়া পুনজ্জীবিত করিয়া দিতেন, দেইরূপ; শৈব উদাসীনেরা বলেন, অঘোরীরা এখনও নর-বধ ও নর-মাংস ভোজন পূর্ববিক মন্ত্র-বলে পুনর্বার জীবিত করিয়া দেয়।

পূর্ববিকালীন অঘোরীরা উৎকট নিয়মানুসারে ঘোররূপা শৈব-শক্তি-বিশেষের অর্চনা করিত। তাহারা অন্থিসহকৃত ও নর-কপাল-যুক্ত এক গাছি যপ্তি দণ্ড-কমণ্ডলু স্বরূপ ব্যবহার করিত এবং মদ্য মাংস ভক্ষণ ও নর-বলি দান প্রভৃতি ঘোরতর কর্ম্মে প্রবৃত্ত হইত ৮ ক

পূর্বের ভারতবর্ষে নর-বলি দান প্রচলিত ছিল ইহা একরূপ প্রাসিদ্ধই আছে। বেদাদি প্রাচীন গ্রন্থে, বৃহৎকথাদি উপাখ্যান-পুস্তকে ও অপ-রাপর কাব্য ও নাটকে এ বিষয়ের বিস্তর বর্ণন আছে। ভবভূতি-প্রশীত মালভীমাধব নাটকে লিখিত আছে, অঘোরঘণ্টা চামুগুার উদ্দেশে মালভীকে বলিদান দিতে উদ্যত হয় এমন সময়ে মাধব আসিয়া তাহাকে রক্ষা করেন। ঐ অঘোরঘণ্টা পূর্বেকালীন অঘোরীই বোধ হয়।

যাহা হউক, ভাহা হউক, আমি ছেদন করি। ভগবতি চামুণ্ডে! তুমি এই মন্ত্র-সাধনাদি বিষয়ে উদ্দিষ্ট পূলা গ্রহণ কর।

^{*} यदन्तु तदन्तु व्यापादयामि । चासुर्छे भगवति मन्त्रसाधनादाबुद्दिष्टापिन् हितां भजस्त पूजाम् ।

মালতীমাধব পঞ্মান্ত।

অঘোরীদের সংখ্যা এখন অল্প হইয়া গিয়াছে, এই নিমিত্ত এ অঞ্চলে সচরাচর দেখিতে পাওয়া যায় না।

উৰ্দ্ধবাহ্,আকাশমুখী, নখী, ঠাড়েশ্বরী, উদ্ধ্যমুখী, পঞ্চধুনী, মোন-ব্রতী, জলশ্য্যী ও জলধারা-তপস্বী।

শারীরিক কফ স্থাকার দ্বারা দেবতা বিশেষের তুপ্তি সাধন করা হিন্দু-ধর্ণের একটি প্রধান অঙ্গ। সম্যাসীদের মধ্যে, অনেকে ঐরপ কঠোর তপস্থা অবলম্বন করিয়া উদ্ধ বাহু, আকাশমুখী, পঞ্চধূনী প্রভৃতি বিবিধ উপাধি গ্রহণ করেন। ঘাঁহারা এক বা উভয় বাহুকে উদ্ধিকে উন্নত কিল্লা ব্রাথেন, তাঁহাদের নাম উদ্ধ বাহু। যে সকল সম্যাসী সতত উদ্ধমুখে থাকেন, তাঁহাদের নাম আকাশমুখী। নখরক্ষা করা যে সকল সম্যাসীর বিশেষ ব্রত, তাঁহাদের নাম নখী।

ঠাড়েশ্বরী সন্ন্যাদীরা দিবা-রাত্র দগুায়মান থাকেন। এইরূপ অব-স্থাতেই ভোজনাদি সকল কর্ম্ম সমাধা করেন ও সম্মুথে একটা কিছু অবলম্বন করিয়া ঐরূপ অবস্থাতেই নিদ্রা যান।

কোন কোন সন্ন্যাসী উর্জ-পাদ ও নিম্ন-মন্তক হইয়া তপস্যা করেন।
ইহাঁরা উর্জিদিকে রক্ষ-শাথাদি কোন বস্তুতে পা ছটি বন্ধন পূর্ববক অধোমস্তক হইয়া ঝুলিতে থাকেন ও মস্তকের নিম্নদেশে অগ্নি স্থাপন করিয়া
রাখেন। এরপ অবস্থায় মস্তকের উর্জদেশে মুখ থাকে বলিয়া ইহাঁদিগকে উন্ধ্নি অথবা উদ্ধ্নি তপদ্বী বলে #।

রামাৎ নিমাৎ প্রভৃতি বৈরাগীদের মধ্যেও ঠাড়েখরী ও উর্দ্বৃথী আছে।

পঞ্চুনী সন্ধাসীরা আপনার চারি দিকে চারি স্থানে ও সমুথে অশ্য এক স্থানে অগ্নি স্থাপন করিয়া তপস্থা করেন এবং সেই সমুখস্থ স্থানিতে হোম ও ভোগ দিয়া থাকেন। উহাঁরা এইরূপ পাঁচ স্থানে ধূনী সর্থাৎ অগ্নি প্রজ্লিভ করিয়া তপস্থা করেন, এই নিমিত্ত ইহাঁদের নাম পঞ্চধূনী ইইয়াছে।

যাঁহারা পরমার্থ-সাধনোদ্দেশে লোকের সহিত বাক্যালাপ পরিত্যাগ করিয়া যথাবিধানে মোন-ত্রত অবলম্বন করেন, তাঁহাদিগকে মোনী বা মোন-ত্রতী বলে। তাঁহারা অশেষ রূপ অঙ্গ-ভঙ্গী ঘারা, এবং কেহ কেহ সেই সঙ্গে 'উঁ অঁ।' প্রভৃতি অব্যক্ত শব্দ উচ্চারণ পূর্ববক, মনের অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়া থাকেন।

কোন কোন সন্ন্যাসী সায়ংকাল অবধি, সূর্য্যোদয় পর্যান্ত জল-মধ্যে শরীর মগ্ন রাখিয়া তপস্থা করেন। এই রূপ তপস্থাকে জলশ্য্যা বলে একং ঐ সমস্ত তপস্বীকে জলশ্য্যা বলিয়া উল্লেখ করা যায় প

আর একরপ জল-তপস্থা আছে, তাহার নাম জল ধারা। নির্দিষ্ট স্থানে, বসিবার উপযুক্ত একটি খাত খনন করিয়া, তাহার উপরে মঞ্চ প্রস্তুত করিতে হয়; সেই মঞ্চের উপর একটি বহু-ছিদ্র-যুক্ত জল-পাত্র খাকে। তপস্থা ঐ খাইতের মধ্যে উপবেশন করেন এবং তাঁহার কোন শিষ্যে উল্লিখিত জল-পাত্রে নিরস্তর জল সেচন করিতে থাকে। এ তপস্থাটিও রাত্রিকালে অসুষ্ঠিত হয়।

প্রগাঢ় শীতের সময়ে জলধারা ও জলশয়ার অনুষ্ঠান প্রথম গ্রীম্ম-কালীন পঞ্চ্নীর তপস্থা অপেক্ষাও ভয়ানক। ঐ চুই জলতপস্থীরা যথন তপস্যা ভক্ষ করিয়া উঠেন, তথন তাহাদের শরীরে আর কিছু থাকেনা। এই শেষোক্ত চুইপ্রকার তপস্থী উর্দ্ধবাহ্ প্রভৃতির স্থায় লোক-প্রসিদ্ধ নয়। ইহাঁদের সংখ্যা অভি অল।

क्ड़ानिङ्गी।

অশু এক রূপ সন্ন্যাসীর নাম কড়ালিঙ্গী। তাঁহারা উলঙ্গ থাকেন, এবং আপনাদিগকে জিতেন্দ্রিয় বলিয়া প্রকাশ করিবার উদ্দেশে নিরন্তর শিশ্ব দেশে একটি লোহ-কুগুল দিয়া রাখেন। নানকপন্থীদের মধ্যেও এই তপস্যা বিদ্যমান আছে।

ফরারী, হুধাধারী ও অলুনা।

আহার-সংযমও হিন্দু-ধর্ম্মের একটি প্রধান অক্ত । সন্ন্যাসীদের মধ্যে অনেকে আপন আপন ভোজন-ক্রিয়ার নিয়মানুসারে এক একটি উপাধি প্রাপ্ত হন; ষেমন ফরারী, তুধাধারী ও অলুনা। যাঁহারা, যব, গম, তপুল, বিদল প্রভৃতি অন্ধ ভোজনে বিরত থাকেন ও কেবল ফল মূলাদি ভিক্ষণ করিয়া দিন-পাত করেন, তাঁহাদের নাম ফরারী বা ফলহারী। যাঁহারা ত্র্মমাত্র পান করিয়া শরীর রক্ষা করেন, তাঁহাদিগকে তুধাধারী বলে। যাঁহারা লবণবর্জ্জিত ভোজন করেন, তাঁহাদিগকে সচরাচর অলুনা বলিয়া থাকে।

রামাৎ নিমাৎ প্রভৃতি হিন্দুস্থানী বৈষ্ণবদের মধ্যেও ফরারী ছুধাধারী এই ছুইটি শ্রেণী বিভ্যমান আছে।

অওঘড়, গুদড়, স্থখড়, রুখড়, ভূখড়, কুকড় ও উখড়।

এইরূপ প্রবাদ আছে যে, ব্রহ্মগিরি নামে একটি দশনামী সন্ন্যাসী যোগি-গুরু গোরক্ষনাথের প্রসাদ লাভ করিয়া অওঘড় নামে একটি মত প্রবর্ত্তিত করেন। সম্যাসীরা বলেন, গুজরাট অঞ্চলে তাঁহার গাদি আছে, কিন্তু শিশ্য-প্রণালী নাই। ঐ গাদির মহস্তের মৃত্যু ঘটিলে, তত্রেস্থ সম্যাসীদের মধ্যে একজনকে প্রকরণ-বিশেষ দ্বারা ঐ অওঘড় গাদির অধিকারী করা হয়।

ঐ অওঘড়-মত-প্রবর্ত্তক ব্রঙ্গগিরির সহিত রুখড় প্রখড় প্রভৃতি নিম্নলিখিত কয়েকটি মতের সবিশেষ সম্বন্ধ বর্ণিত হইয়া থাকে। জনশ্রুতি
আছে, গোরক্ষনাথ তাঁহাকে মন্ত্রদান না করিয়া কর্ণকুগুলাদি কয়েকটি
নিজ চিহ্ন প্রদান করেন; ব্রক্ষগিরি তাহা ঐ রুখড় প্রখড় প্রভৃতিকে
অর্পণ করিয়া যান।

কোন সন্ধাসীর মৃত্যু ঘটিলে, স্থও, রুখড়, গুদড় এই তিন সম্প্রদায়ীরা তাহার অস্ত্যেষ্টি-ক্রিয়া-সংক্রাস্ত সমস্ত কার্য্য নির্বাহ করে;
তাহাকে স্নান করায়, বিভূতি মাখায়, বস্ত্র পরিধান করায় ও সমাধি দিয়া
তাহার সমৃদ্য সামগ্রী অধিকার করিয়া লয়। ইহাই ইথার্দের প্রধান
ব্রিত্ত।

গুদড়, রুখড়, সুখড় এই তিনেই এক একটি ক্ষায়-বর্ণ খেল্ক। পরিধান করে। রুখড় ও সুখড়েরা ছুই কর্ণে তাম বা পিত্তল-নির্দ্মিত কুগুল ধারণ করে, আর গুদড়েরা এক কর্ণে কুগুল আর এক কর্ণে অওঘড়ের পদ চিহ্ন যুক্ত তামার তক্তি রাখে। ঐ কুগুলাদিকে খেচরী মুদ্রা বলে।

উল্লিখিত তিন সম্প্রদায়ে পাত্র বিশেষে ধূপ জালাইয়া ভিক্ষা করে।
গুদড়েরা ধুনচীতে এবং রুখড় ও স্থুখড়েরা খর্পরে অর্থাৎ নারিকেলের
মালাতে ঐ ধূপাগ্নি রাখে এবং যে যাহা কিছু ভিক্ষা দেয় তাহাও উহাতেই গ্রহণ করিয়া থাকে। এদিকে ভূখড় ও কুকড়দিগকে প্রায়
দেখিতে পাওয়া যায় না। শুনিয়াছি, ভূখড়েরা ঐরূপ খর্পর লইয়া

ভিক্ষা করে কিন্তু ধৃপ জ্বালায় না। কুকড়েরা একটি নৃতন হাঁড়ীতে ভিক্ষা করে ও তাহাতেই পাক করিয়া খায়। সেই হাঁড়ীকে কালী হাঁড়ী কহে।

রুখড় ও সুখড়েরা গুদড়কে আপনাদের অপেক্ষা প্রধান পদস্থ বলিয়া স্থীকার করে। গুদড় নিকটে না থাকিলে, তাহারা খর্পরে ধূপ জালাইয়া ভিক্ষা করে, নতুবা থর্পরে দ্রব্য-বিশেষ রক্ষা করিয়া সন্ধ্যাসী ও মহস্তের নিকট অর্থ প্রার্থনা করিয়া থাকে। এই তিন প্রকার সন্ধ্যাসী ইচ্ছামুসারে আলেখিয়াদের মত আলেখ্ জাগাইয়া ভিক্ষা করিতেও যায়। ভূখড় ও কুকড় অতি বিরল। এ প্রদেশে তাহাদিগকে প্রায় দেখিতে পাওয়া যায় না। কুকড়দের রুত্তির বিষয় যেরূপ লিখিত হইয়াছে, তাহা আমি নিজে প্রভাক্ষ দেখি নাই এবং পূর্বের অন্য অন্য রূপে সে বিষয় যেরূপ অবগত হইয়াছিলাম, তাহাও স্থনিশ্চিত প্রমাণ-

দশনামী ভাঁটদিগের একখানি গ্রন্থে দেখিলাম, ধূখড় নামে আর এক রূপ সন্ন্যাসি-দল বিভামান আছে।

कि कुकड़ भूखड़ याप यापे। किह सुखड़ धुखड़ द्याय मिलाये॥

যে তুই প্রবন্ধ অবলম্বন করিয়া এই পুস্তক লিখিতে প্রবৃত্ত হই, তাহাতে উখড় নামে একরূপ সন্ধ্যাসীর প্রসন্ধ আছে। কিন্তু আমি অনেক অনুসন্ধান করিয়াও তাহাদের অস্তিম্ব নিরূপণ করিতে পারি নাই। তাহাতে লিখিত আছে, স্থুড়, রুখড়, গুদড় এই তিন সম্প্রদায়ের মধ্যে যাহারা মছ, মাংস ব্যবহার করে, তাহাদের নাম উখড়।

অবধূতানী।

(অবধৃতী)

এদেশীয় স্ত্রীলোক-বিশেষে যেমন ভেক লইয়া বৈষ্ণবী হয়, সেই-রূপ, পশ্চিমোত্তর-প্রদেশীয় কোন কোন স্ত্রীলোকে সন্ধ্যাস গ্রহণ করিয়া অবধূতানী নাম প্রাপ্ত হয়। সংস্কৃত ভাষায় ইহাকে অবধূতী বলে।

> भवधूतः शिवः साचादवधूतः सदाशिवः । भवधूती शिवा देवि भवधूतात्रमं खणु ॥ प्रथमानाच्य २व गठेन ।

অবধৃত সাক্ষাৎ সদাশিব-স্বরূপ ও অবধৃতী শিবা-রূপিণী। অতএব দেবি ! অবধৃতাশ্রমের বিষয় শ্রুণ কর।

় ইহারা সন্ন্যাদীদের স্থায় বিভূতি রুদ্রাক্ষাদি শৈব-চিহ্ন ধারণ করে, মধ্যে মধ্যে তীর্থ পর্যাটন করিতে যায় ও ভিক্ষা করিয়া জীবন-যাত্রা নির্ববাহ করিতে থাকে, কিন্তু তাহাদের পঙ্গতে উপবেশন করিতে পায় না।

গলাগিরি নামে একটি স্ত্রীলোক প্রথম অবধৃতানী হয় এইরূপ প্রবাদ আছে। সন্ন্যাসীই বেমন সন্ন্যাসীর গুরু, সেইরূপ, অবধৃতানীর গুরু অবধৃতানী; সন্ন্যাসীরা স্ত্রীলোককে সন্ন্যাস-মন্ত্র উপদেশ দেন না।

ইহাদের মধ্যেও সান্ধিক ভাবের লোক অতি অল্প; তবে কদাচিৎ
তুই একটিকে দেখিয়া বুদ্ধিমতী ও ধর্ম্ম-পরায়ণা বোধ হয়। যতগুলি
অবধূতীর সহিত আমার সাক্ষাৎকার ঘটে, তাহার মধ্যে হিমালয়ের
অন্তর্গত ও কাশ্মীরের পূর্বদক্ষিণস্থ কোন নগরের একটি অবধৃতানীকে

তেজবিনী ও বুদ্ধিমতী দেখিয়াছিলাম। তিনি কথায় কথায় হিন্দী শ্লোক পাঠ করেন ও অনেক প্রমাণ-প্রয়োগ সহকারে আপন ধর্ম্মের পরিচয় দিয়া থাকেন।

ঘরবারী সন্ন্যাসী।

যে সমস্ত সন্ধ্যাসী স্ত্রী পুক্রাদি লইয়া সংসার করে, তাহাদের নাম ঘরবারী সন্ধ্যাসী। মুগুমালা তত্ত্বে যে গৃহাবধূতের বৃত্তান্ত আছে *, তাহা সেই ঘরবারীদেরই বিবরণ বোধ হয়। অপরাপর সন্ধ্যাসীরা তাহাদিগকে অত্যন্ত নিকৃষ্ট বলিয়া জানেন; তাহাদের সহিত আহার ব্যবহার করা দূরে ধাকুক, তাহাদের স্পৃষ্ট অন্নও ভক্ষণ করেন না।

নিজ সম্প্রদায়ের মধ্যেই তাহাদের বিবাহাদি হইয়া থাকে। ঘর-বারী দণ্ডীদের স্থায় তাহাদেরও স্বমঠে বিবাহ করা নিষিদ্ধ। শৃঙ্গগিরি মঠের অন্তর্গত পুরি গোসাঁইয়ে জ্যোসী মঠের গিরি গোসাঁইয়ের গৃহে বিবাহ করিতে পারে, নিজ মঠের পুরি বা ভারতী কন্যার পাণি-গ্রহণ করিতে পারে না।

ঠিকরনাথ।

ইহারা ভৈরবের উপাসক। বহু-ছিন্ত-যুক্ত একরূপ মুৎপাত্রের নাম ঠিকরা; ইহারা সেই ঠিকরা হস্তে করিয়া ভিক্সা করে এই নিমিন্ত ঠিকরনাথ বলিয়া খ্যাভ হইয়াছে। ইহারা ললাটে মসী ও সিন্দূর লেপন পূর্বক ভীষণ মূর্ত্তি ধারণ করিয়া ভিক্ষায় যায়। হস্তে একপ্রকার বৃক্ষ-

^{*} ७० शृंधी (सथ ।

পত্র রাধিয়া তাহার উপরে ঠিকরা স্থাপন করে ও তাহাতে অগ্নি প্রন্ধলিত করিয়া ঘৃত ও তৈল অর্পণ করিতে থাকে। শিকল, চিম্টা ও লোহ-শলাকা সঙ্গে রাখে, ও সেই সমৃদয় ঐ অগ্নিতে উত্তপ্ত করে। যদি কেহ ভিক্ষা দিতে বিলম্ব বা অস্বীকার করে, তাহা হইলে ঐ সমস্ত নিজ শরীরে আঘাত করিয়া রক্ত্য-পাত করিতে থাকে।

ইহারা মন্ত মাংস ব্যবহার করে ও ইতর ভদ্র সমুদ্র জাতিরই অন্ন ভক্ষণ করিয়া থাকে। অপরাপর দশনামীরা ইহাদের সহিত কোনরূপ ভোক্যান্নতা-সম্বন্ধ রাখেন না।

এইরূপ একটি প্রবাদ আছে যে, গঙ্গাগিরি অবধৃতানী হইতেই ঠিকরনাথ-সম্প্রদায়ের উৎপত্তি হইয়াছে। ইহারা এদেশে অতি বিরল। আবু, গিনার, কচ ও গুজরাট অঞ্চলে অনেক দেখিতে পাওয়া যায়।

স্বৰ্ভঙ্গী।

ইহারা বর্গ-বিচার একবারেই পরিত্যাগ করিয়াছে; নীচ ও উচ্চ সকল জাতির গৃহেই অর ভিক্ষা করিয়া ভোজন করে। কোন দেশের ধর্ম্ম-সম্প্রদায়ের মধ্যে অন্তুত ও অলোকিক উপাখ্যানের অসম্ভাব নাই। দশনামীদেরও মধ্যে এইরূপ একটি কথা প্রচলিত আছে যে, যিনি এই সম্প্রদায়টি প্রবর্ত্তিত করেন, তিনি ত্রাহ্মণ অবধি অস্তাজ্য পর্যান্ত সকল জাতির অর একত্র ভিক্ষা করিয়া ভত্নপরি মন্ত্র-পৃত জল নিক্ষেপ করিতেন। করিলে, সকল জাতির অর পৃথক্ পৃথক্ হইয়া যাইত ও তাহা হইতে তিনি ত্রাহ্মণের অর-মাত্র গ্রহণ করিয়া ভক্ষণ করিতেন।

ইহারাও পূর্ব্বোক্ত অঘোরীদের ভায়ে অন্থি, নর-কপাল ও মল-মৃত্র

ব্যবহার করে এবং শুনিতে পাই, অনেকে আপনাদিগকে ঐ অঘোরী বলিয়াই পরিচয় দেয়।

অস্ত অস্ত দশনামীরা ইহাদিগকে অত্যন্ত স্থা। করে; এমন কি, ইহাদের সহিত সহবাস ও আহার ব্যবহার করিতেও অসম্যত হয়।

ত্যাগদন্ব্যাদী।

ত্যাগসন্নাদী সর্বন-ত্যাগী ও নিতান্ত অধাচক; আহার-দ্রবা দাও
আহার করিবেন, না দাও উপবাসী থাকিবেন: পরিধেয় দাও পরিধান
করিবেন, না দাও বিবন্ধ রহিবেন। এরূপ মহাপুরুষ বলিয়া যাঁহাদের
সন্ত্রম জন্মিয়াছে, ভাঁহাদের স্পার ভিক্ষা করিবার প্রয়োজন থাকে না
এবং জীবন্যাত্রা-নির্ববাহেরও কোন অংশে অপ্রতুল হইবার বিষয় নাই।
লোকে তাঁহাদিগকে সাক্ষাৎ পরমেশ্বর জ্ঞান করিয়া তদীয় পদ-যুগলে
অপর্যাপ্তি পূজা-দ্রব্য অর্পণ করিতে থাকে।

যে সকল সন্ন্যাসী ও পরমহংস আপনাদিগকে তত্ত্বজ্ঞানের উচ্চতর
সোপানে সমার্ক্ত বোধ করেন, তাঁহাদেরই মধ্যে কেহ কেহ এই বৃত্তি
অবলম্বন করিয়া থাকেন। কাশীর স্থাপিদ্ধ তৈলক্ষমানী এই অবস্থার
লোক ছিলেন বলিয়া প্রবাদ আছে।

আতুর-সন্ন্যাসী, মানস-সন্ন্যাসী ও অন্ত-সন্ন্যাসী।

এপর্য্যন্ত যত প্রকার সন্মাসীর বিবরণ লিখিত হইল, তাহার।
দশনামীর অন্তর্গত। তদ্ভিন্ন আরও কতকঞ্চলি উদাসীন সন্মাসী

বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে; যেমন আতুর-সন্ন্যাসী, মানস-সন্ন্যাসী ও অন্ত-সন্ন্যাসী।

দাক্ষিণাত্য লোকের মধ্যে মুমূর্য্ ব্যক্তি-বিশেষকে সন্ধ্যাস গ্রহণ ও নিগুণি মদ্রোপদেশ করাইবার প্রথা প্রচলিত আছে। এইরূপ সন্ধ্যাসকে আতুর-সন্ধ্যাস বলে। পরকালে সদগতি-লাভই এইরূপ সন্ধ্যাস-গ্রহণের উদ্দেশ্য।

আত্র-সন্ধ্যাস প্রহণ করিয়। যাঁহার মৃত্যু না ঘটে, তিনি পুনরায়
গৃহ-প্রবেশ করিতে পান না; যাবজ্জীবন উদাসীন-ভাবেই কাল-হরণ
করেন। তৃলসীদাস নামে একটি দাক্ষিণাত্য ব্রাহ্মণ ঐরপ সন্ধ্যাস-মন্ত্র
প্রহণ করিবার পর রোগ হইতে মুক্ত হন, ও কাশী-বাস করিয়া বেদান্তমতামুসারে তত্বজ্ঞানের বিশেষরূপ অমুশীলন করেন। তিনি একটি
প্রধান বৈদান্তিক ও তেজীয়ান্ লোক ছিলেন। তাঁহাকে একবার
চর্ম্মপাত্রকা পায়ে পঞ্চ-ক্রোশী কাশী পরিক্রম করিতে দৈখিয়া, কোন
কোন সন্ধ্যাসী জিজ্ঞাসিল, স্বামী! আপনি কোন্ শাস্ত্রের বিধানক্রমে
চর্ম্মপাত্রকা পায়ে কাশী পরিক্রম করিতেছেন ? তিনি উত্তর দিলেন, আমি
চর্ম্মপাত্রকা কোথায় পাইব ? আমার একখানি পাত্রকা কর্ম্মীদের
মস্তকে ও অপর খানি উপাসকদিগের শিরোদেশে নিক্ষিপ্ত রহিয়াছে।

যিনি মনে মনে সন্ন্যাস অবলম্বন করিয়া গৃহাশ্রম পরিত্যাগ করেন ও তত্ত্বচিত অনুষ্ঠান করিতে প্রস্তুত্ত থাকেন, অথচ গেরুয়া-বস্ত্রাদি সন্ন্যাস-চিহ্ন ধারণ করেন না, তাঁহার নাম মানস-সন্ন্যাসী।

যিনি এক স্থানে উপবেশন ও অনশন পূর্ববিক পরমত্রক্ষে মনঃসমা-ধান করিয়া প্রাণ-ত্যাগ করিতে কৃত-সকল্প হন,তাঁহার নাম অন্ত সন্ন্যাসী। এখন এরূপ সন্ন্যাসী অতি বিরল, কিন্তু একজন পরমহংস আমাকে বলেন, আমি হরিবারে এইরূপ একজন সন্ন্যাসী দেখিয়াছি।

ব্রন্মচারী।

ব্রহ্মচারীরা গিরি পুরি প্রভৃতি দশনামের কোন উপাধি প্রাপ্ত হন
না, স্থতরাং তাহার অস্তভূতি বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন না।
শঙ্করাচার্য্যের প্রতিষ্ঠিত উত্তর, দক্ষিণ, পূর্বন, পশ্চিম চারি মঠের চারি
প্রকার ব্রহ্মচারী নির্দ্দিষ্ট আছে; উত্তর মঠের আনন্দ, দক্ষিণ মঠের
চৈতন্য, পূর্বব মঠের প্রকাশ ও পশ্চিম মঠের স্বরূপ ব্রহ্মচারী।
তদমুসারে ব্রহ্মচারীরা ইহারই কোন না কোন উপাধি ধারণ করেন।

ব্রাহ্মণের প্রথম আশ্রম যে স্মৃত্যুক্ত ব্রহ্মচর্য্য, তাহা এ ব্রহ্মচর্য্য নয়, বরং একালে সেই দীর্ঘ-কাল-ব্যাপী ব্রহ্মচর্য্যের অনুষ্ঠান করিতে নিষেধ দেখিতে পাওয়া যায় *।

অধুনাতন ব্রক্ষচারীতে গেরুয়া বস্ত্র পরিধান ও ফল-মূলাদি আহার ক্রিবে, নথ-লোমাদি রক্ষা করিবে, এবং হস্তে ত্রিশূল ও কর্ণ যুগলে ভাত্র-যুক্ত রুদ্রাক্ষ-মালা ধারণ করিবে এইরূপ ব্যবস্থা আছে।

> * दीर्घकाल ब्रह्मचयं धारण च कमखलीः । देवरेण सुतीत्पत्ति क्तं नक्या प्रदीयते ॥ कन्यानामस्वर्णानां विवाह य दिजातिभिः । भाततायि दिजायग्राणां धर्मयुत्ते निष्ठिंसनम् ॥ वानप्रस्थायनस्थापि प्रवेगो विधिदेशितः । इत्तसाध्यायसापि चनस्यो चनं तथा ॥ प्रायि क्तियानस्य विप्राणां मरणान्तिकम् । संसर्गदीषः पापेषु मध्यक्ते पश्चीर्ष्यः ॥ दत्तीरसेतरेषान्तु पुत्रलेन परियहः । ग्रद्धेषु दासगीपालकुलिनवार्षसीरिणाम् ॥ भोज्यान्नता गरहस्थस्य तीर्थसेवातिङ्रतः । बाह्मणादिषु ग्रदस्य पक्ततादिक्रियापि च ॥ .

गैरिक' वसन' कुर्याद्देवताध्यानतत्पर: । फलमूलाहाररतो दुख' गव्यं समाहरेत्॥

নিৰ্ম্বাণ-তন্ত্ৰ।

ব্রহ্মচারীতে গৈরিক বস্ত্র পরিধান করিবে, দেবভা-ধ্যানে অন্থরক্ত হইবে, এবং ফল মূল ভক্ষণ ও গো-হৃগ্ধ পান করিতে থাকিবে।

> नखसोमादिकं देवि न त्याच्यं ब्रह्मचारिणा। सदैव तु सदाभावं सदैव ध्यानतत्परः॥

> > भग्विष्मस्यश्चेत वजादिमस्यं तथा ।
> >
> > एतानि जीकगुप्तार्थे कलेरादी महास्मभः ।
> >
> > निवर्त्तितानि कसीयि व्यवस्थापूर्व्वतं वृष्टेः ।।
> >
> > উदारुख्य-४७ भानिकाश्चर्तानीम वहम ।

দীর্ঘকাল ব্রহ্মচর্য্য, কমগুলু-ধারণ, দেবরের ঘারা পুত্র উৎুপাদন, বালান্তা কন্যার সম্প্রদান, বাহ্মগাদ তিন বর্ণের অসবর্ণা কন্যা-গ্রহণ, ধর্ম-যুদ্ধে আততারী ব্রাহ্মণের হিংসা, যথাবিধি বান প্রস্থ আত্রম অবলম্বন, বৃত্ত এবং স্বাধ্যার ঘারা আনোচ-সঙ্কোচ, ব্রাহ্মণের মরণাস্ত প্রায়শ্চিত্ত, সংসর্গ-জন্য পাপ, মধুপর্ক-প্রদানে পশু-বধ, দত্তক-পূত্র ও ওরস পূত্র তির অপর পূত্র স্বীকার, শৃত্তের মধ্যে দাস, গোপাল, কুলমিত্র ও অর্জনীরী * ব্যক্তির সহিত গৃহস্থের ভোজ্যারতা, স্বত্তি বৃরে তীর্থ-সেবা, শৃত্ত কর্ত্ক ব্যাহ্মণের অন্তল্পতি, স্বির্গা বির্গা করিয়া নিষ্ধে করিয়াছেন।

এই করেকটি বচনে পূর্ব্ব-কালের অনেক প্রকার আচার ব্যবহার অবগ্রত হওয়া বাইতেছে। এই নিমিত্ত সমুদার বচনগুণি উদ্ধৃত করিয়া রাখিলাম।

ব কৃষকের সহিত ক্ষেত্র উৎপর শন্যের অদ্ধাংশ ভাগ করির। লইবার বন্দোবস্ত থাকে,
 ভাহাকে অদ্দীরী বলে।

तिग्र्लं धारयेचे कं तिग्रिखां वापि धारयेत्। ताम्बयुत्तच बद्राचं कर्णयुग्मे निवेशयेत्॥

নিৰ্বাণ-তন্ত্ৰ।

ব্রহ্মচারীতে নথ-লোমাদি রক্ষা করিবে, দর্মদা ভাব-যুক্ত হইরা ইষ্ট-চিস্তার তৎপর থাকিবে, ত্রিশূল বা ত্রিশিথা ধারণ করিবে এবং কর্ণ-যুগলে ভাম্র-যুক্ত ক্ষাক্ষ-বীজ বিনিবেশিত করিয়া রাখিবে।

তদ্রের মতে গৃহস্থ ও উদাসীন উভয়েই ব্রহ্মচারী হইতে পারে, তন্মধ্যে গৃহস্থ ব্রহ্মচারীর প্রতি কাল-বিশেষে দ্রী-সঙ্গ করিবারও আদেশ শাছে *।

কোন কোন ব্রহ্মচারীও সন্ন্যাসীদের মত কঠোর তপস্থা অবলম্বন করেন। আসিয়াটিক্ রিসর্চ্চ নামক পুস্তকাবলির পঞ্চম খণ্ডে প্রমম্বভদ্ধ প্রকাশানন্দ ব্রহ্মচারী নামে একটি ব্রহ্মচারীর বৃত্তান্ত ও চিত্রময় প্রভিরূপ প্রকৃতিত আছে; তিনি কন্ধরময় ও কণ্টকাকীর্ণ শ্যায় শয়ন করিয়া থাকিতেন।



পরম-স্বতম্ভ প্রকাশানন্দ ত্রন্মচারী।

* सर्वकालं विना नैव खकानागमनं चरेत्।

श्रीगण्डियिमे युक निर्वाप-छज्ञ-वहन।
शृद्द बक्रहांत्रीएक सङ्-कांतु वाजितारक चज्जो-मःमर्ग कविद्य ना।
>8

ইনি পাঞ্চাব-দেশীয় একটি ব্রাক্ষণ-কুলে জন্ম গ্রহণ করেন। ইহাঁর পিতামাতা জগন্ধাও দর্শন করিতে গিয়া ঐ অঞ্চলে গুপিগা নামক গ্রামে বাস করিয়া থাকেন; সেইস্থানে ইহাঁর জন্ম হয়। ইনি দশ বৎসর বয়সেই কঠোর তপস্যা আরম্ভ করেন এবং বিংশতি বৎসর বয়ংক্রমের সময়ে গৃহ পরিত্যাগ করিয়া ত্রীর্থ-পর্য্যটনে প্রবৃত্ত হন। নেপাল, ভোট, কাশ্মীর, জালামুখী, পেশোয়ার, হিজলাজ, প্রয়াগ, কাশী, জগন্ধাও-ক্ষেত্র, রামেশ্বর, সৌরাষ্ট্র ও মন্ষট প্রভৃতি অনেক দেশ, প্রদেশ ও নগর পরিভ্রমণ করেন। যে সময়ে ইনি কাশীতে অবস্থিতি করেন, সেই সময়ে একটি ইংরেজ ইহাঁর চিত্রময় প্রতিরূপ গ্রহণ করিয়াছিলেন।

বেশাচারীদের মধ্যেও কুলাচারী ও পশাচারী ছই দল আছে, অর্থাৎ কেহ কেহ তন্ত্র-মতামুসারে স্থরাপান করেন, অপর কেহ উহা স্পর্শও করেন না। কিছু কাল হইল, কালীঘাটে আত্মারাম ব্রহ্মচারী নামে একটি কুলাচার-পরায়ণ ব্রহ্মচারী অবস্থিতি করিতেন। নোকে তাঁহাকে সিদ্ধ পুরুষ বলিয়া বিশ্বাস যাইত। তাঁহার সহিত আমাদের অতিশয় আত্মীয়তা ও বিশেষরূপ বাধ্যবাধকতা ছিল। তিনি সময় ক্রেমে কখন কখন আমাদের আলয়ে আসিয়া অধিষ্ঠিত হইতেন ও এক এক দিন ইন্ট্যাধন উদ্দেশে রাত্রি-কালে স্থরাপান করিয়া শক্তি-বিষয় ও শিব-বিষয়াদি পরমার্থ বিষয় যখন বংশীতে গান করিতেন, শুনিয়া লোকের অন্তঃকরণ একেবারে উদাস হইয়া যাইত। আমি সে সময়ে বালক ছিলাম; তিনি আমাকে অত্যক্ত ভাল বাসিতেন ও কথা-প্রসঙ্গে নানাবিধ হিত-গর্ভ সংস্কৃত বচন শিক্ষা দিতেন।

যোগী।

অধুনাতন যোগীরাও শৈব-সম্প্রদায়ের মধ্যে পরিগণিত। যোগ-প্রতিপাদক পাভঞ্জল একটি প্রাচীন দর্শন। পুরাণ ও মহাভারতে এবং মালতীমাধব প্রভৃতি সাহিত্যে যোগের প্রসঙ্গ আছে। অভএব যোগধর্ম্ম নিভাস্ত অপ্রাচীন বলা যায় না। তবে কিছু পরেই কণ্ফট্ প্রভৃতি বে সমস্ত ইদানীস্তন যোগি-সম্প্রদায়ের প্রস্তাব উপস্থিত হইবে, সে সমুদায় তাদৃশ প্রাচীন নয় বটে।

হঠপ্রদীপিকা, দত্তাত্তেয়সংহিতা, গোরক্ষসংহিতা এই তিন গ্রন্থে के नमस्य रवांगि-नष्टामारत्रत व्यवस्थित रवांग्राभानीत व्यानन आंगांत्रामानि সমুদায় অঙ্গের সবিশেষ রুভান্ত বর্ণিত হইয়াছে। হঠপ্রদীপিকা প্রন্থ, সহজানন্দ চিন্তামণি স্বাত্মারাম যোগীন্দ্রের কৃত, তাহাতে চারি উপদেশ আছে। প্রথম উপদেশে প্রধান প্রধান হঠবোগীর নাম. যোগ-সাধনের অতুকুল ও ঐতিকুল ক্রিয়াসমূহের বিবরণ, যম, নিয়ম, আসন, প্রাণায়াম, এই চারি প্রকার যোগান্ধ এবং যোগাধিকারের লক্ষণ ও যোগীদিগের ভোজনের নিয়ম লিখিত আছে। বিতীয় উপদেশে ধৌতী, বস্তী প্রভৃতি ষট্কর্ম্ম ও কয়েক প্রকার কুস্তকের লক্ষণ নির্দেশিত হইয়াছে। তৃতীয় উপদেশে দশ প্রকার মুদ্রা-সাধনের বিবরণ এবং চতুর্প উপদেশে সমাধির বিষয় ও নানারূপ সিদ্ধাবস্থার বুতান্ত প্রভৃতি সন্নিবেশিত রহিয়াছে। দত্তাত্রেয়সংহিতা দত্তাত্তেয়-কথিত বলিয়া লিখিত আছে। ভাগবভ ও মার্কণ্ডেয় পুরাণ অমুসারে, দত্তাত্তেয় অত্রি ও অনসূয়ার পুত্র এবং বিষ্ণুর অবতার-বিশেষ। লিখিত আছে, তিনি নিজে পরম যোগী ছিলেন ও यোগ-धर्म প্রকাশ করিয়া প্রহলাদাদিকে উপদেশ দেন #।

^{*} वष्ठमवेरपत्यलं इतः प्राप्तोऽनस्यया । प्रान्तिचिकौमलकाय प्रज्ञादादिभ्य जिवान ॥

ভাগবত। ১ম কন্ধ। এর অখ্যার।

সংহিতাখানি তাঁহার প্রণীত বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে, তাহাতে মন্ত্রবোণের লক্ষণাদি নির্দেশ পূর্বক তাহার নিক্বইন্থ প্রতিপাদন করা হইয়াছে শং, লয়যোগের সূচনা পূর্বক নাসাগ্রভাগে দৃষ্টি, ভূমিতে শয়ন, মৃত্যুপ্তয় ধ্যান প্রভৃতি তাহার অঙ্গ সমৃদায় বর্ণন করা হইয়াছে ও প্রণালীক্রমে অফাজ হঠযোগের সবিস্তর বিবরণ করা হইয়াছে। গোরক্ষসংহিতায় গুরু গোরক্ষের উপদিই্ট যোগ-প্রকরণ বর্ণিত আছে। তাহাতে হঠপ্রদীপিকাও দত্তাত্রেয়সংহিতার প্রণালীক্রমে আসন, প্রাণায়াম, প্রত্যাহার প্রভৃতি যোগাজের বিবরণ ও ষ্ট্চক্র-সাধনের সবিশেষ বৃত্তান্ত লিখিত হইয়াছে। কিন্তু তাহাতে যোগের ছয় অঙ্গ মাত্র নির্দ্দেশিত আছে ‡; যম ও নিয়ম এই ফুইটি অজের প্রসঙ্গ নাই। দত্তাত্রেয়সংহিতায় সমৃদ্য় আট অঙ্গই ক্ষিত হইয়াছে।

পাত্রি ও অনস্থার পূত্র দত্তাত্রের ভগবানের ষষ্ঠ অবভার। তিনি অলক'ও প্রহলাদাদিকে আত্মবিদ্যা দিয়াছিলেন।

> सुनिपुबबती योगी दत्तावेयोऽप्यसङ्गताम् । षभीसमानः सरसि निममच्च चिरं विसः ॥ मार्करश्चन शूजांग ।

মুনি-পুত্র ছারা পরিবেটিত বিভূ দভাতের লোক-সংসর্গ পরিত্যাগ ইচ্ছা করিয়া বছকাল সরোবরে মথ হইয়া ছিলেন।

মাতৃকা ভাগাদি পূর্বক কেবল মন্ত্র-জপ বারা যে বোগ রুত হয় ভাহাকে
মন্ত্রযোগ বলে।

† मन्त्रयोगीचि घः प्रोक्तीयोगानामधमः च्यृतः । प्रखाद्यप्रशःहिखाः ।

এই যে মন্ত্রোগের বিষয় বলিলাম, ভাহা দকল বোগের অধম।

‡ श्रीसनं प्राणसंरीयः प्रत्याष्ट्रारयः भारत्या ।
भ्यानं समाधिरेतानि योगाज्ञानि वहन्ति षट् ॥

সাসন, প্রাণারাম, প্রত্যাহার, ধারণা, ধ্যান এবং সমাধি এই ছয়ট বিষয় বোগের অল বলিয়া উলিখিত হয়। यमस नियमसैव भासनस्य ततः परम् । प्राणायामसतुर्धः स्थात् प्रत्याद्वारस पद्ममः ॥ षष्ठो तु धारणा प्रोत्ता ध्यानं सत्तममुख्यते । समाधिरष्टमः प्रोत्तः सर्व्वपुख्यमसप्रदः ॥

ষম প্রথম, নিয়ম বিতীয়, তৎপরে আসন তৃতীয়, প্রাণায়াম চতুর্ব, প্রত্যাহার পঞ্চম, ধারণা বর্চ, ধ্যান সপ্তম, এবং সমস্ত পুণ্য-ফল-দারক সমাধি অন্তম অন্ত।

অহিংসা, সভ্য, অস্তেয়, ব্রহ্মচর্য্য, কুপা, ক্ষমা, ধৃতি,সারল্য, পরিমিত আহার, শোচাচার এই দশের নাম যম। তপস্যা, সস্তোষ, আস্তিকভা, দান, দেব-পূজা, সিদ্ধাস্ত শ্রেবণ, লজ্জা, মতি, জপ, হোম এই দশের নাম নিয়ম #।

কেবল পরিমিত আহার নয়, ভোজন বিষয়ে যোগীদের অন্য অন্য কঠোর নিরম পালন করিবারও ব্যবস্থা আছে। অম, লবণ, কটু, তিক্ত এই চারি প্রকার রস ও মৎস্য, মাংস মদ্য প্রভৃতি ইহাঁদের অভক্ষ্য শ।

> श्वास्ति सलमसीयं ब्रह्मचयं क्रपार्जनम् । चना धितिकितादारः श्रीचं चिति यमा दश्र ॥ तपः सनीय चासिकां दानं देवस्य पूजनम् । सिद्यान्तत्रवणसैव क्री मतिस जपीवृतम् । दश्रेते नियमाः प्रीका योगशास्त्रविशारदैः ॥

> > হঠপ্ৰদীপিকা প্ৰথম উপদেশ।

† कद्वतिक्रलवणीणहरीतमान-सीवीरतैलतिलसर्वपनत्स्यमसम्। समादिमांस दिधतककुलत्यकील-पिन्याकडिकुलसुनायमपय्यमाष्ट्रः॥ हर्ठश्रेमीिका।

কটু, অম. তিজ্ঞ, লবণ, উষ্ণ জ্বা, হরীত শাক, বিদরী ফল, তৈল, তিল, সর্বপ, মংস্য, মদ্য, ছাগলাদির মাংস, দ্ধি, তক্রে, কুল্থ কলায়, বরাহ্মাংস, শিক্তাক, হিন্দু, শস্ক্লাদি জ্বা বোণীদিগের এপথ্য। ষব, গোধ্ম, ধান্য, দুগ্ধ ও মধু প্রভৃতি ইহাঁদিগের স্থপথ্য *। জ্ঞী-সংসর্গ কোনরূপেই কর্ত্তব্য নয়।

> यदि सङ्गं करोत्येव विन्दुस्तस्य विनम्यति । भायु:चयोविन्दुष्ठीनादसामध्येष जायते ॥ तस्मात् स्त्रीणां सङ्गवर्च्यं कुर्य्यादभ्यासमादरात् । योगिनीऽङ्गस्य सिष्ठि:स्यात् सततं विन्दुधारणात् ॥

> > দত্তাত্রের সংহিতা ১

স্ত্রী-সঙ্গ করিলে বিন্দু-ক্ষর হর এবং বিন্দু-ক্ষর হইলে আয়ু-নাশ ও বল-বিনাশ হয়, অভএব যত্ন পূর্ব্বকি স্ত্রীলোকের সঙ্গ ত্যাগ অভ্যাস করিবে। বিন্দু-ধারণ ছারা যোগীদের যোগান্দ সমুদায় সতত সিদ্ধ হইয়া থাকে।

এইরূপ বিধান আছে যে, হঠযোগীরা, উপদ্রব-শূন্য নির্চ্জন স্থানে অবস্থিতি পূর্ববক যোগ-মঠে উপবিষ্ট হইয়া যোগাভ্যাস করিবেন। এই মঠ যে স্থানে যেরূপ নির্দ্মাণ করিতে হইবে ও যে প্রকার করিয়া পরি-ক্ষৃত রাখিতে হইবে তাহাও সবিশেষ লিখিত আইে।

> सुराज्ये धार्मिके देशे सुभिन्ने निरुपद्रवे। एकान्तमाठकामध्ये स्थातव्यं इठयोगिनाम्॥

> > হঠ প্রদীপিকা।

* गोधूनशालियवविष्टिकशोभनात्रं चौराद्यखण्डनवनीतसितामधूनि । इण्डोकपोचकप्पलादिकपचशाकं सुद्वादिदिव्यमुदक्षच यमीन्द्रपय्यम् ॥ हर्रेश्रकीिनका ।

গোধ্ম, শালিধান্ত, যব, বৃষ্টিক ধান্তরূপ স্কুচাক অর, কীর, অথও নবনীত, চিনি, মধু, গুন্তী, কপোলক ফল, পঞ্চশাক, মূলা প্রভৃতি এবং উত্তম অল এই সকল সামগ্রী যোগীর পথা।

বেখানে বহু সংখ্যক ধার্ম্মিক লোকের বাস আছে ও স্থানররূপ ভিক্ষা পাওয়া যার এইরূপ উপদ্রব-শৃত্ত উত্তম রাজ্য-স্থিত বোগ-মঠে হঠযোগীরা নির্জ্জনে বাস করিবেন।

> खल्पद्वारमरन्त्रुगर्र्भियटकं नातुम्बनीचायतं सम्यगोमयसान्द्रेलिप्तममलं निः श्रेषवाधीन्मितम् । वाद्यो मण्डपक्पविदिरचितं प्राकारसम्बे ष्टितं प्रोत्तं योगमठस्य लच्चणितदं सिर्वे र्इठाभ्यासिभिः॥

> > হঠপ্রদীপিকা।

যোগ-মঠ কুজ বার বিশিষ্ট, রন্ধু-হীন, না অতি উচ্চ না নিয়, সম্যক্রপে গোময়-শিপ্ত, পরিদ্ধৃত ও নিংশেষরূপে যোগ-বাধক জব্য-বিহীন হইবে, বাছিরে মশুপ, কুপ ও বেদি প্রস্তুত হইবে, এবং সমগ্র মঠ প্রাচীর হারা পরিবেটিড থাকিবে। হঠবোদীরা যোগমঠের এইরূপ কক্ষণ বিশ্বা গিয়াছেন।

এই প্রকার যোগ-মঠ সর্বদা পরিক্ষত রাখিয়া এবং স্থান্ধ ধারা স্থ্যাসিত করিয়া তাহার মধ্যে উপবেশন পূর্বক যোগাভ্যাস করিবে। উপবেশনের নানা প্রকার কৌশল আছে, তাহাকে আসন বলে। এই আসন চৌরাশি প্রকার, তন্মধ্যে পত্মাসনই সচরাচর প্রচলিত। দন্তাত্তেয়-সংহিতাতে ঐ আসনই শ্রেষ্ঠ আসন বলিয়া উক্ত হইয়াছে শ। কিরূপে এই আসনের অনুষ্ঠান করিতে হয়, পশ্চাৎ লিখিত হইতেছে।

वामोरूपरि दिचणं हि चरणं संख्याप्य वामं तथा-प्यन्योरूपरि तस्य बन्धनविधी धृत्वा कराभ्यां दृत्म्।

> दिने दिने सुबंदष्टं सधार्जन्यायतिहतः। बासितस्य सुगर्भे न भूपितं गुग्गुसादिभिः॥ मखाटजत्र गःहिछ।।

আলস্য পরিত্যাগ পূর্বক প্রতিদিন সমার্জনী হারা মঠ পরিষ্কৃত করিবে, এবং ধূপ, গুপ্সূল ও অন্ত অন্ত স্থান্ধ দ্রব্য দিয়া স্থ্যাসিত করিছে থাকিবে। † কিন্তু হঠপ্রদীপিকার সিদ্ধানন স্বা-প্রেষ্ঠ বিলিয়া লিখিত আছে।

मङ्गष्टं द्वदये निधाय चितुकं नासाग्रमालोकये-देतद्वराधिविनाग्रकारि यमिनां पद्मासनं प्रोच्चते ॥

গোরক্ষদংহিতা।

ৰাম উরপরি দক্ষিণ পদ ও দক্ষিণ উরপরি বাম পদ সংস্থাপন করিবে, ও যেরপ করিয়া কোন বস্ত বন্ধন করিতে হয় সেইরপে পশ্চাৎ ভাগ দিয়া হুই হস্ত ঘারা অসুষ্ঠ ধারণ করিবে এবং চিবুক বক্ষংস্থলে স্থাপন করিয়া নাসিকার অগ্রভাগ দৃষ্টি করিতে থাকিবে। যতিদিগের এই আসনকে প্রাাসন বলে। ইহা ব্যাধি-নাশক।

এইরপ আসন-বদ্ধ হইয়া প্রাণায়াম করিবে অর্থাৎ নাসিকা ছারা শরীর-মধ্যে বায়ু পূরণ ও ধারণ করিয়া পশ্চাৎ রেচন করিবে। ইহার বিশেষ বিশেষ কাল, সংখ্যা এবং প্রকার উল্লিখিত যোগ শান্ত্র-সমুদায়ে সবিস্তর বর্ণিত আছে। ইহার প্রথম অভ্যাস-কালে কেবল চুগ্ধ ও জল পান করিয়া থাকিতে হয়।

यभ्यासकाले प्रथमे यस्तं चीराम्बुभोजनम् । ततोऽभगासे ह्रदीभूते न ताहक्तियमग्रहः॥

र्ठा अमी शिका - विजी में जेशान ।

প্রথম অভ্যাস-কালে হগ্ধ ও জল পান প্রশন্ত। উত্তমরূপ অভ্যাস হইলে আর এ নিয়ম পালন করিছে হয় না।

যোগ-শান্তের বিধান ক্রেমে শরীর-মধ্যে বায়্-স্তম্ভন অর্থাৎ নিশাস অবরোধ করাকে কুম্ভক বলে *। উহা প্রাণায়ামেরই অঙ্গ-বিশেষ। উহা নানাপ্রকার। যে কুম্ভকের ঘারা বিজ্ম্ভণ এবং মুখ ও নাসিকার শীৎকার হয়, তাহার নাম শীৎকার-কুম্ভক। যে কুম্ভক ঘারা বায়্-পূরণ-কালে ভ্র্জা-নাদ হয়, তাহার নাম অমরী-

दिचचच्चेन नासापुठदर्ग प्रसा प्राचामाक्यं वाग्रसकानसित सम्बन्।

কুস্তক। হঠপ্রদীপিকা রচয়িতা এই রূপ নানা কুস্তকের বিবরণ করিয়া পরে লিখিয়াছেন, যোগীরা অভ্যাস-বলে রেচন ও পূরণ না করিয়াও কুস্তকসাধন করিতে সমর্থ হন। এ অবস্থায় তাঁহাদের কিছুই তুর্লভি খাকে না। এইরূপ লিখিত আছে যে, ক্রমাগত অভ্যাস ঘারা সাধকের। আসন হইতে শূন্যে উথিত হইয়া অবস্থিতি করিতে পারেন।

> ततोऽधिकतराभग्रासाङ्ग्रीमत्यागश्च जायते । पद्मासनस्य एवासी भुवमुत्द्यच्य वर्त्तते ॥ निराधारोविचित्रं हि तदा सामध्यमुद्दहेत् । ऋष्यं वा वहु वा भुक्का योगी न व्ययते क्वचित्॥

> > দন্তাত্রেয়-সংহিতা।

ভদপেক্ষা অধিকতর অভ্যাস করিলে ভূমি ত্যাগ হয়। বোণীরা পদ্মাসন করিয়া ভূমি পরিত্যাগ পূর্বাক শৃত্যে অবস্থিতি করেন। তথন নিরাধার হইয়া বিচিত্র শক্তি লাভ করিতে থাকেন; অল্ল বা বহু ভোজন করিলেও পীড়িভ হন না।

কুন্তক দারা আসন-সমুখান-বিষয়ের অনেক কথা শুনিতে পাওয়া যায়। একবার মান্দ্রাজে শিশাল নামক এক জন দক্ষিণ-দেশীয় যোগীকে হিন্দু ও ইংরেজ অনেকেই দৃষ্টি করিয়াছিলেন। পর পৃষ্ঠায় তাঁহার চিত্রময় প্রতিরূপ প্রকাশ করা যাইতেছে, তাহাতেই তাঁহার আসনাদি দৃষ্ট হইবে।

তিনি সমৃদায় শরীর শুন্যে তুলিতেন, কিন্তু তাঁহার একটি অক্স দ্রব্য-বিশেষ অবলম্বন করিয়া থাকিত। একখানি কার্চ্চের চৌকিতে একটি শিস্তল-দণ্ড নিবন্ধ ছিল, দণ্ডের ন্যায় জড়ান এক খণ্ড মৃগ-চর্ম্ম তাহান্ন স্থিত সংযুক্ত থাকিত; যোগিবর সেই অজিন-দণ্ডের উপর দক্ষিণ হস্ত রাখিয়া দিতেন। তিনি এইরূপে স্নাসনার্ক্ত হইয়া ও উভয় নেত্রকে অর্দ্ধ-মুদিত করিয়া জ্বপ করিতেন। আসন আরোহণ ও পরিত্যাগ কালে তাঁহার শিয়োরা তাঁহাকে কম্মল দিয়া আবরণ করিত। *



মাক্রাজ-স্থিত বোগী। যখন কাষ্ঠাসন ও চর্ম্মাদি উপকরণ আবশ্যক হইত, তখন ইহাতে

^{*} The Saturday Magazine, Vol. I. P. 28.

কিছু কৃত্রিমতা ছিল তাহার সন্দেহ নাই। কোন কোন বাজিকরকেও এরূপ করিতে দেখা গিয়াছে।

· যোগীদের এইরূপ বিশাস আছে যে, প্রাণায়াম সিদ্ধ হইলে, দেহের লঘুতা, দীপ্তি ও অগ্নি-রৃদ্ধি হইয়া থাকে।

ग्ररीरलघुता दीप्तिर्जंठराम्निविवर्षनम् । क्रग्रलच्च ग्ररीरस्य तस्य जायेत निस्तिन् ॥

पर्वाद्वयमःहिखा।

তাঁহার শরীরের:লঘুতা ও দীপ্তি এবং জঠরাগ্নি-বৃদ্ধি ও দেহের রুশতা অবশ্রই হয়।

এরূপে শরীর শুদ্ধ না হইয়া শ্লেমাদি-ঘটিত পীড়া জন্মিলে, ধোঁতী নতী প্রভৃতি কতকগুলি ব্যাপারের অনুষ্ঠান করিবার ব্যবস্থা লিখিত আছে।

चैतुरङ्ग्लिवस्तारं इस्तपञ्चदयेन तु।
गुरूपदिष्टमार्गेण सिक्तवस्तं यनैर्यं सेत्।
ततः प्रत्यादर्भे तत् चालनं वस्तिकमं तत्॥
कासम्बासप्रीहकुष्टकचरीगास वियतिः।
धीतीकर्मप्रसादेन ग्रुध्यक्ते न च संग्रयः॥

হঠপ্রদীপিকা।

দৈর্ঘ্যে ১৫ পোনের হাত ও প্রস্থে ৪ চারি অঙ্গুলি প্রমাণ এক থণ্ড জল-সিক্ত বস্ত্র শুরুপদিষ্ট পথ হারা ক্রমশঃ গ্রাস করিবে এবং পরে তাহা নির্গত করিয়া ফোলিবে। ইহাকে বস্তি-কর্ম কহে। এই ধৌতী-কর্ম হারা কাস, খাস, প্রীহা, কুঠ, কক্ষ-রোগ প্রশৃতি বিংশতি প্রকার রোগের শাস্তি হয়।

এইরূপ, নাসিকা ঘারা সূত্র প্রবেশ করাইয়া মুখ ঘারা নির্গত করণের নাম নতী কর্ম। নেত্র-যুগল ছির করিয়া, যে পর্য্যন্ত অঞ্চ পাত না হয়, সে পর্যান্ত কোন সূক্ষ্ম লক্ষ্যের প্রতি দৃষ্টি রাখিবার নাম ত্রাটক কর্মা। এইরূপ, শরীর-মধ্যে জল-পূরণ, বায়ু-পূরণ ও ঐ উভয়ের নির্গমন প্রভৃতি নানাবিধ অনুষ্ঠানের আদেশ আছে। এই সকল কর্মানুষ্ঠান ব্যতিরেকে যোগীরা কয়েক প্রকার অঙ্গ-ভঙ্গী প্রভৃতি অভ্যাস করিয়া থাকেন, ভাহার নাম মুদ্রা।

> षनः कपालविवरे जिल्लां व्याद्वत्य बन्धयेत्। भूमध्ये दृष्टिरपेग्रषा मुद्रा भवति खेचरी॥

> > দক্তাত্তেরসংহিতা ।

কপাল-বিবরের অভ্যন্তরে জিহ্বাকে ব্যাবৃত্ত ও বন্ধ করিয়া জ্রা-মধ্যে দৃষ্টি রাখিবে। ইহার নাম থেচরী মুদ্রা।

> षधःशिरसोह पादः चर्णं स्यात् प्रथमे दिने । चर्णाच किच्चिद्धिकमभ्यसेषि दिने दिने ॥ वित्रं पित्रं चैव षर्मासाषि विनागयेत् । याममात्रन्तु यो नित्यमभासेत् स तु कालजित् ॥

> > र्श्व अमी शिका जुजी म जिल्ला ।

অধোতাগে মন্তক, এবং উর্জ দিকে পদ রাখিবে। প্রথম দিনে এইরূপ কণকাল সাধন করিবে এবং পরে দিন দিন অধিককাল ব্যাপিয়া অভ্যাস করিতে থাকিবে। এই প্রকার অমুষ্ঠান দারা শুক্ল কেশ ও মাংস-কুঞ্চন রূপ বার্দ্ধকোর চিহ্ন ছয় মাস মধ্যে নষ্ট হইয়া যায়। প্রতিদিন এক প্রহর ব্যাপিয়া যিনি এইরূপ অভ্যান করেন, তিনি মৃত্যু-করী হন।

কুন্তক করিবার সময়ে ইন্দ্রিয় সকলকে স্ব স্ব বিষয় হইতে নিরস্ত করার নাম প্রত্যাহার।

> एकवारं प्रतिदिनं कुर्य्यात् केवलकुश्वकम् । प्रत्याद्वारोद्धि एवं स्थात् एवं कुर्य्युद्धि योगिनः ॥ इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यो यत् प्रत्याद्वरते स्मुटम् । योगी कुश्वकमास्थाय प्रत्याद्वारः स उच्चते ॥

দভাতেমুসংহিতা।

প্রতিদিন একবার করিয়া কেবল কুম্বক করিবে। এইরূপেই প্রতাাহার ইইবে। যোগীরা এই রূপই অফুষ্ঠান করিবেন। যোগীতে কুম্বকের অফুষ্ঠান পূর্ব্বক.ইন্দ্রিয় বিষয় হইতে ইন্দ্রিয় সকলকে সম্যক্রূপ প্রত্যাহার করে, এই নিমিত্ত ইহা প্রত্যাহার বলিয়া উল্লিখিত হয়।

ষ্ট্চক্রভেদ যোগীদিগের একটি প্রধান সাধন* এবং হংস মন্ত্র জ্বপ অতি অলৌকিক ব্যাপার। হংস মন্ত্র জ্বপ কি প্রকার, তাহা লিখিত ইউতেছে।

> हंकारेण विहर्याति सकारेण विशेत् पुनः । हंसहंसेत्यमं मन्त्रं जीवो जपित सर्व्वदा ॥ षट्शतानि दिवारात्री सहस्त्राणेग्रकविंशितः । एतत् संख्यान्वितं मृन्त्रं जीवो जपित सर्वदा ॥ श्रजपा नाम गायत्री योगिनां मोच्चदायिनी । तस्त्रः स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुखते ॥

> > গোরক্ষ সংহিতা

নিখাস প্রখাসের সময়ে 'হং' শব্দ করিয়া বায়ু বহির্গত হয়, এবং 'স' শব্দ করিয়া শরীর-মধ্যে পুনঃ প্রবেশ করে। জীবে এই হংস মন্ত্র নিরস্তর জ্বপ করে। দিবা রাত্রে ২১৬০০ বার এই মন্ত্র জ্বপ হয়। এই অ্রপা নামক গায়ত্রী ধোগী-দিগের মোক-দায়িনী; ইহার শ্বরণ মাত্রে সমস্ত পাপের মোচন হয়।

শরীর-মধ্যে স্থান-বিশেষে বায়্-ধারণের নাম ধারণা। এই ধারণা পঞ্চ প্রকার; পৃথিবী ধারণা, আন্তসী ধারণা, আগ্রেয়ী ধারণা, বায়বী ধারণা এবং নভোধারণা। পায়্-দেশের উর্দ্ধে এবং নাভির অধোভাগে পাঁচ দগুকাল বায়্-ধারণের নাম পৃথিবী ধারণা। নাভি-স্থলে বায়্-ধারণকে আন্তসী, নাভির উর্দ্ধ মগুলে বায়্-ধারণকে আগ্রেয়ী, হৃদয়ে বায়্-ধারণকে বায়বী এবং জ্রা-মধ্য হইতে ব্রহ্মরক্ষ্ক পর্যন্ত মস্তকের সমুদায়

^{*} भाक मध्येनारम् विवत्र निम्मारम् यहेहरत्कत विषम् प्रविद् शहिर ।

স্থানে বায়্-ধারণ করাকে নভো-ধারণা কছে। যোগীদের বিশাস এই যে, পৃথিবী ধারণা করিলে পৃথিবীতে মৃত্যু হয় না, আন্তসী ধারণা করিলে জলে মৃত্যু হয় না, আগ্রেমী ধারণা করিলে অগ্নিতে শরীর দগ্ধ হয় না, বায়বী ধারণা করিলে কোন ভয় থাকে না এবং নভোধারণা করিলে কোন রূপে মৃত্যু হয় না। শরীরের মধ্যে বায়্-সঞ্চালন এবং বায়্-ধারণাই হঠযোগের প্রধান অনুষ্ঠান। গোরক্ষনাথ বলেন, বায়ু ছির না হইলে কিছুই শ্বির হয় না, স্বতরাং সিদ্ধি লাভও হয় না।

मन्योरिते पवन्योर पवन्योरिते विन्दुयोर। विन्दुयोरिते कन्द्योर बले गोरखदेव सकलयोर॥

र्ह्य भी भिका-धुङ (शांत्रक्र-वांका।

পোরক্ষদেব ৰলেন মন স্থির হইলে বায়ু স্থির হয়, বায়ু স্থির হইলে বিন্দু স্থির হয়, বিন্দু স্থির হইলে কন্দ স্থির হয়, এবং তাহা হইলেই সকল স্থির হয়।

गज वाधिया राजा पवन वाधिया योगी। धान्य वाधिया गरुहस्थ विन्दु वाधिया भोगी॥

হঠপ্ৰদীপিকা-ধৃত নাথ-ব্যক্য।

রাজা গজের বাধ্য, যোগী বায়ুর বাধ্য, গৃহস্থ ধাজের বাধ্য, ভোগী বিন্দুর বাধ্য।

যোগ-শান্তের মতে ধ্যান ছুই প্রকার; সগুণ অর্থাৎ সাকার দেবতার ধ্যান, এবং নিগুণ অর্থাৎ নিরাকার ত্রক্ষের ধ্যান। যোগীরা সগুণ ধ্যান ঘারা অনিমাদি ঐশ্বর্য্য লাভ করেন আর নিগুণ ধ্যান ঘারা সমাধি-যুক্ত ছইয়া ইচ্ছাসুরূপ সকল শক্তি প্রাপ্ত হইতে পারেন।

> समभ्यसेत्तदा ध्यानं घटिकाषष्टिमेवच । वायुं निरुध्य तां ध्यायेत् देवतामिष्टदायिनीम् ॥ सगुणध्यानमेतत् स्यादणिमादिसुखप्रदम् । निर्गुणं खमिव ध्यायसोचमार्गे प्रवर्त्तते॥

निर्गुणध्यानसम्पद्मः समाधिच समस्यसेत्। दिनद्वादशकेनैव समाधिं समवाप्नुयात्॥

দক্তাত্রেয়সংহিত।।

তথন যাট দণ্ড কালই ধ্যান অভ্যাস করিবে, বায়ু নিরোধ করিয়া ইষ্টদায়িনী দেবতার ধ্যান করিবে। এই সপ্তণ ধ্যানে অণিমাদি হৃথ লাভ হয়।
আর আকাশের ভার ব্যাপন-শীল নিশুণ দেবতার ধ্যান করিলে, মোক্ষ-পথে
প্রবৃত্ত হওরা যায়। নিশুণ-ধ্যান-সম্পন্ন হইয়া সমাধি অভ্যাস করিবে। করিলে,
দাদশ দিনে সমাধি প্রাপ্ত হইবে।

যোগীরা বিশ্বাস করেন, সমাধি সিদ্ধ হইলে, ইচ্ছানুসারে দেহ ত্যাগ বা দেহ রক্ষা করিয়া স্থখ সম্ভোগ করিতে সক্ষম হন। যদি দেহ-ত্যাগের ইচ্ছা হয়, তবে তৎক্ষণাৎ পরত্রক্ষো লীন হইতে পারেন, নতুবা অণিমাদি ঐশ্বর্যা লাভ করিয়া স্বেচ্ছানুসারে সকল লোকে অশেষবিধ স্থখ সম্ভোগ পূর্ববক বিচরণ করিতে পারেন।

> सर्वेलोकेषु विचरेदणिमादिगुणान्वतः । कदाचित् खेच्छ्या देवोभूत्वा खर्गेऽपि सम्बरेत् ॥ मनुष्योवापि यच्चोवा खेष्क्र्यापि चणाङ्गवेत् । सिंडीव्याम्रोगजोवापि खादिच्छातोऽन्यजन्मतः ॥

> > দন্তাত্রেয়সংহিতা।

ष्मिनापिक्र अर्था विभिन्ने हरेत्रा मर्ख लांदक विष्ठत्र करतन, कवाष्टिर रेष्ट्राधीन

चिषमा चिषमा स्थाप्तिः प्राकास्यं महिमिशिता । विश्वकामावसायिले ऐत्रय्येमस्था स्मृतम्॥

भक्तकार्क्यम-धुक भक्तमाना-वहन ।

কৃন্মতা অর্থাৎ ইচ্ছাত্মর প স্বীর শরীর ক্ষ্ম করিবার ক্ষমতা, লঘুড়া অর্থাৎ ইচ্ছাত্মসারে নিজ দেহ লঘু করিবার ক্ষমতা, ব্যাপ্তি অর্থাৎ সর্বত্তি গমন করিবার

ধানীদের বিখাস এই বে মহাদেব খীয় সাধক্কে পশ্চালিখিত জাই ক্রেখায় দান করেন।

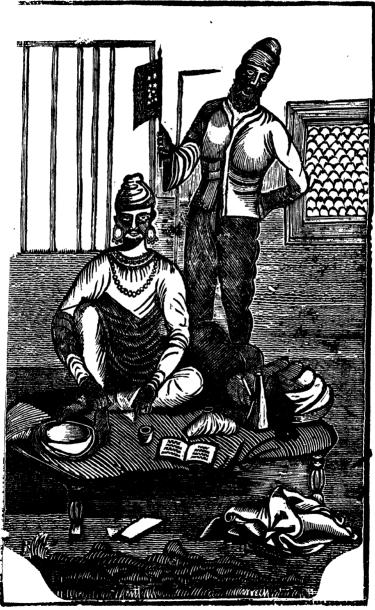
দেব-রূপ ধারণ করিয়া অ্র্গ-লোকে ভ্রমণ করেন এবং জন্মান্তরে ইচ্ছামত ক্ষণমাত্তে মতুষ্য, যক্ষ, সিংহ, ব্যাত্র বা হন্তী হইয়া থাকেন।

যোগীদিগের অলোকিক ক্রিয়া সাধনের অনেকানেক বৃত্তান্ত শুনিতে পাওয়া যায়। পঞ্জাবের অধীশ্বর রণজিৎ সিংহের রাজ্যে একবার এক-জন যোগী উপস্থিত হন। তিনি বলিতেন, আমি যত দিন ইচ্ছা মৃত্তি-কার মধ্যে অবস্থিতি করিতে পারি। জেনেরল্ বেঞ্বা নামে একজন ফরাশি তাঁহার কথায় সন্দেহ করিয়া পরীক্ষা করিবার উদ্দেশে তাঁহাকে মৃত্তিকার মধ্যে স্থাপিত করেন। যে সময়ে তাঁহাকে মৃত্তিকা হইতে উঠান যায়, তখন ঐ জেনেরল্ বেঞ্বা ও কাপ্তেন্ ওয়েড্ সাহেব উভয়ে তথায় উপস্থিত থাকিয়া সমুদায় ব্যাপার অবলোকন করেন। অস্বোরন্ সাহেবের পুস্তকে ঐ বিষয় যেরূপ বর্ণিত আছে, পশ্চাৎ তাহা সংক্ষেপে সংগৃহীত হইতেছে।

. ঐ যোগিবর মহারাজ রণজিৎ সিংহের আদেশ ক্রমে. তাঁহার সমীপশ্ব হইয়া যোগ-সাধনে প্রবৃত্ত হন। কর্ণ ও নাসিকা-রক্ষে এবং মুখ
ভিন্ন অস্ত অস্ত সমস্ত শরীর-দারে মধ্চ্ছিইট দিয়া এবং জিহ্বা ব্যাবর্ত্তন ও
নয়ন-যুগল নিমীলন করিয়া একটি 'থলে'র মধ্যে প্রবেশ করেন। তদমন্তর সেই থলের মুখ বন্ধ করিয়া তাহাতে রণজিৎ সিংহের নাম মুদ্রিত
করা হয় এবং তাহা একটি সিন্দুকের মধ্যে বন্ধ করিয়া রাখা হয়। সেই
সিন্দুক মৃত্তিকার মধ্যে স্থাপন পূর্বকে, ততুপরি যব বপন করিয়া, তাহার
রক্ষণাবেক্ষণার্থ কয়ের জন প্রহরী নিযুক্ত করা হয়। দশ মাসকাল সেই

ক্ষমতা, প্রাকাম্য অর্থাৎ ভোগেছা পূর্ণ করিবার ক্ষমতা, মহিমা অর্থাৎ শরীরকে ইছোমত স্থল করিবার ক্ষমতা, ঈশিষ অর্থাৎ সকলকে শাসন করিবার ক্ষমতা, বশিষ অর্থাৎ সকলকে বল করিবার ক্ষমতা, এবং কামাবসায়িতা অর্থাৎ আপনার সর্ব্ধ কামনা পূর্ণ করিবার ক্ষমতা। এই আট প্রকার ক্ষমতার নাম অন্ধ ঐশ্বর্য।

বোগী।



বোগী ঐ অবস্থায় মৃত্তিকা মধ্যে নিহিত ছিলেন। ঐ সময়ের মধ্যে রণজিৎ সিংহ এ বিষয়ে সম্পূর্ণ সংশয়চেছদ উদ্দেশে ছুইবার সেই স্থান ধনন
করিতে অমুমতি করেন, এবং ছুইবারই তাঁহাকে সমানরূপ অচেতন
অথচ জীবিত দেখিয়া চমৎকৃত হন। দশ মাস পূর্ণ হইলে, তাঁহাকে
মৃত্তিকার মধ্য হইতে উত্তোলন করিয়া দেখা গেল, তিনি মৃত প্রায় হইয়াছেন। তাঁহার সমৃদয় শরীর শীতল, কেবল ব্রহ্মরন্ধু অতিশয় উত্তপ্ত
ছিল। তাঁহার জিহ্বাকে আকৃষ্ট করিয়া সহজ অবস্থাতে আনয়ন করিলে
এবং তাঁহাকে উষ্ণ জলে স্থান করাইলে, তিনি ছুই ঘণ্টার মধ্যে পূর্বেরর
মত স্থান্থ ইইলেন। যে সময়ে তিনি মৃত্তিকার মধ্যে অধিবাস করেন,
তথন তাঁহার নখ, কেশ প্রভৃতির বৃদ্ধি হয় না। তিনি নিজ মুখে ব্যক্ত
করিয়াছেন, আমি যদবধি মৃত্তিকার মধ্যে অবস্থিতি করি, তদবধি অনিব্রহনীয় আননদ্ধ-রস অমুভব করিতে থাকি। *

কিছুকাল পূর্বের কলিকাতার দক্ষিণে খিদিরপুরের অন্তর্গত ভূকৈলাস নামক স্থানে একটি মহাপুরুষ আনীত হন; তাঁহার অসাধারণ যোগ সাধ নের বিষয় অস্থাপি অনেকের স্মরণ থাকিতে পারে। ১৭৫৪ সতরশ চুরার শকের আঘাঢ় মাসে শিবপুর-স্থিত শ্রীমান্ জুন্ সাহেবের ধারবান্ হরি সিংহের নিকট হইতে তাঁহাকে ভূকৈলাসে আনয়ন করা হয়। তথায় তিনি প্রথমে একেবারে বাছ্ম-জ্ঞান-শৃশু ছিলেন। কয়েক দিবস নেত্রযুগল মুদিত করিয়া ও পান-ভোজন-বর্জ্জিত হইয়া থাকেন; পরে অনেক আয়াসে ও বছ চেম্টায় কিছু ত্র্মমাত্র গলাধঃকরণ করান হয়। তিনি
অন্ত লোকের উভোগ ব্যতিরেকে কদাচ স্বেচ্ছাধীন কোন দ্বব্য ভোজন করিতেন মা। তাঁহার যোগ-ভঙ্গ করিবার অভিপ্রায়ে ভাক্তার গ্রেহাম্ তাঁহার মাসিকা-রশ্বের নিকট এমোনিয়া নামক অত্যুৎকট ইংরেজী

^{*} W. G. Osborne's Court and Camp of Runjeet Sing p.124.

ঔষধ ধারণ করেন, কিন্তু ভাহাতেও তাঁহার যোগ-ভঙ্গ হয় নাই; শরীরের স্পন্দনমাত্র হইয়াছিল। প্রথমে তিনি কথা কহিতেন না, পরে তিন
চারি দিবস নানাবিধ চেফা করাতে, তুই একটি বাক্য বলিতে আরম্ভ
করেন। তিনি বলিয়াছিলেন, আমার নাম তুল্লানবাব। বিরক্ত হইলে,
'হাঁড়েদী হাঁড়েদী" বলিয়া উঠিতেন। এই কণা শুনিয়া কেহ কেহ
তাঁহাকে পাঞ্জাবী লোক বলিয়া অনুমান করেন। তিনি একবার বাজরোগে আক্রান্ত হন; উল্লিখিত গ্রেহাম সাহেব তাঁহার চিকিৎসা করেন।
তিনি খাত্য পেয় কোনরূপ ঔষধ-সেবনে স্বীকার পান নাই, তথাপি
কেবল লেপন মর্দ্দনাদি ঘারা সে বার উক্ত পীড়া হইতে মৃক্ত হন। পরে
১৭৫৫ সতরশ পঞ্চার শকের চৈত্রমাসে উদর-ভঙ্গ হইয়া প্রাণ-ত্যাগ
করেন। *

হঠ-যোগের বৃত্তান্ত অভি সংক্ষেপে লিখিত হইল। হঠপ্রদীপিকা প্রভৃতি উল্লিপ্তিত গ্রন্থ সমুদয়ে ইহার সবিশেষ বিবরণ সন্ধিবেশিত আছে। অধুনাতন যোগীরা নানা সম্প্রদায়ে বিভক্ত; যেমন কণ্ফট্-যোগী, অও-

^{*} মহাপুরুষের এই যংকিঞ্চিৎ বৃত্তান্ত যাহা লিখিত হইল, তাহা ভূবিকলাসখামী মৃত রাজা সভাচরণ ঘোষাল বাহাছরের নিকট হইতে প্রাপ্ত হই। আমিও
এ মহাপুরুষকে দৃষ্টি করিয়াছি ও তাঁহার উক্তরণ যোগ-ব্যাপার সমুদায়ও কিছু
কিছু খচক্ষে দেখিয়াছি। যে সময়ে তিনি যোগারা ছিলেন, তথন তাঁহাকে
ছইবার দেখিতে যাই। সে সময়ে তাঁহার শরীর তপ্ত কাঞ্চনের স্তাম ছিল:
দেখিলে অন্তঃকরণ প্রাফুর হইত। যোগ-ভঙ্গ হইবার করেক মাস পরে গিরা
দেখি, সে রূপ নাই, লাবণ্য নাই, মুখঞী নাই, শার্ণ জীর্ণ ও মলিন হইয়া একটি
অপরিক্ত অধান্তাকর গৃহে পতিত রহিয়াছেন্। বল-প্রেরোগ পূর্বাক বিবিধ
চেষ্টা হারা তাঁহার যোগ-ভঙ্গ করা শারীরবিধান-বিৎ পণ্ডিত-গণের ভহিষরের
তত্তামুদদান-পক্ষে ও মুত্রাং সাধারণ লোকের জ্ঞানোরতি অংশে একটি জ্ঞান্
মান্ত ক্ষতির বিষয় হইয়াছে বলিতে হইবে।

ষড়্-যোগী, মচ্ছেন্দ্রি-যোগী, ভর্তৃহরি-যোগী, শারক্ষীহার-যোগী ইত্যাদি। যথাক্রমে তাহাদের বিষয় প্রস্তাবিত হইতেছে।

कन् कर्-त्यांशी।

কণ্ ফট্-যোগীরা শিবের উপাসক। গুরু গোরক্ষনাথ ইহাঁদের প্রবর্ত্তক। ইহাঁরা তাঁহাকে শিবাবতার বলিয়া বিশাস করেন এবং তাঁহাকে গুরু স্বীকার করিয়া তাঁহার প্রবর্ত্তিত হঠযোগ অভ্যাস করিয়া থাকেন। হিন্দী-ভাষায় কবীরও গোরক্ষনাথের কথোপকথনাত্মক একটি প্রবন্ধে লিখিত আছে, গোরক্ষনাথ কহিতেছেন;

श्रादिनायके नाती मच्छन्द्रनायके पूत। मैं योगी गोरख् श्रवधूत॥

আমি গোরক নামক অবধৃত যোগী। আমি মছেক্তনাথের পুত্র ও আদিনাথের পৌত্র।

আবুল্ফজল কত আইন আকবরি প্রস্থে অযোধ্যার বিবরণ মধ্যে লিখিত আছে, দিল্লীর বাদসাহ স্থল তান্ সেকেন্দর লোদির রাজত্ব-কালে কবীর বর্ত্তমান ছিলেন। ভক্তমালেও স্থল তান্ সেকেন্দরের সহিত কবীরের সাক্ষাৎকার ঘটনার বৃত্তান্ত আছে। ঐ বাদসাহ ১৪৮৮ চৌদ্দশত অফাশী প্রীফাব্দ অবধি ১৫১৭। ১৮ পনর শত সতের বা আঠার প্রীফাব্দ পর্যান্ত রাজ্য-ভোগ করেন। অতএব কবীর ও তাঁহার সমকালবর্ত্তী গুরু গোরক্ষনাথও ঐ সময়ে অথবা উহার কিছু অগ্র পশ্চাৎ প্রাত্তত্ত হইয়া উঠেন। কবীর-কৃত বীজেক নামক পুস্তকের নানাম্বানে এইরূপ কোন কোন কথার প্রসঙ্গ আছে, পড়িলে বোধ হয়, যেন অব্যব-হিত কাল পূর্বেব গোরক্ষনাথের মৃত্যু ঘটিয়াছে।

পূর্ব-কথিত হিন্দীবচনে দৃষ্ট হইতেছে, গোরক্ষনাথের পিতার নাম মংস্যেন্দ্রনাথ। শ্রীমান্ হ হ্ উইল্ সন্ লিখিয়া গিয়াছেন, হঠপ্রদীপিকায় লিখিত মংস্থেন্দ্রনাথের শিষ্য-পরম্পরার মধ্যে গোরক্ষনাথ পঞ্চম ছিলেন। কিন্তু তিনি যে বচনগুলি অনুসারে একথা লিখিয়াছেন, তাহার তাৎপর্য্য এরূপ নয়; তাহাতে কেবল কয়েক জন প্রধান যোগীর নামমাত্র উক্ত ইইয়াছে। তাঁহারা পরম্পরাক্রমে শিষ্য ছিলেন কিনা, তাহার বাস্পন্যত্ত তাহাতে নাই। পশ্চাৎ সেই সমস্ত বচন উদ্ধৃত হইতেছে, পাঠ করিলেই জানিতে পারা যাইবে।

श्री श्रादिनाय मत्ते ग्रन्द सारदानन्द भैरवा:।
चौरङ्गी मीन गोरच विरुपाच विलेशया:॥
मत्यानभैरवीयोगी सिंदवीधय कत्यड़ी।
कोरण्डक: सरानन्द: सिंद्रपादय चर्पटी॥
कर्णेरि: पूज्यपादय निल्यनाथी निरुच्चनः।
कापालि विन्दुनाथय काकचण्डीखरोमय:॥
श्रच्यः प्रभुदेवय घोड़ाचूली च टिण्टिनी।
भद्गटिनीगवीध्य खण्डकापालिकस्तथा॥
दल्यादयो महासिद्धा हठयोगप्रभावत:।
खण्डियत्वा कालदण्डं ब्रह्माण्डे विचरन्ति ये॥

र्ठ अमी निका अथम উপদেশ।

আদিনাপ, মৎসোক্ত, সারদানন্দ, ভৈরব, চৌরঙ্গী, মীন, গোরক্ষ, থিরপাক্ষ, বিলেশর, মন্থানভৈরব, সিদ্ধবোধ, কন্থড়ী, কোরগুক, স্থরানন্দ, সিদ্ধপাদ, চপটী, কণেরি, পূজাপাদ, নিতানাপ, নিরঞ্জন, কাপালি, বিন্দুনাথ, কাকচণ্ডীখর, মন্ধ, অক্ষয়, প্রভূদেব, ঘোড়াচুলী, টিন্টিনী, ভল্লটি, নাগবোধ, থণ্ডকাপালিক ইত্যাদি মহাসিদ্ধ ব্যক্তি সকল হঠবোগ-প্রভাবে যম-দণ্ডকে থণ্ডন করিয়া ব্রহ্মাপ্তমধ্যে বিচরণ করিতেছেন।

এই সম্প্রদায়ের অনেক গ্রন্থে লিখিত আছে, গোরক্ষনাথ নয় নাথের এক নাথ, অর্থাৎ নয়জন প্রধান গুরুর একটি গুরু। ইনি একটি স্থপণ্ডিত লোক ছিলেন। গোরক্ষসংহিতা ব্যতিরেকে গোরক্ষশতক ও গোরক্ষকল্প নামে তাঁহার তুইখানি সংস্কৃত গ্রন্থ আছে। গোরক্ষসহস্র নামক গ্রন্থে তাঁহারই কৃত বোধ হয়।

পূর্বেই লিখিত হইয়াছে, গুরু গোরক্ষনাথ ইহাঁদের প্রবর্ত্তক। পশ্চিমোত্তর প্রদেশে তাঁহার নামে নানাস্থানের নাম শুনিতে পাওয়া যায়। পেসোয়ারে গোরককেত্রনামে একটি স্থান আছে; আবুল ফ**জল নিজের গ্রন্থে তাহা উল্লেখ করি**য়া যান। **দারকা-সন্নিধানে অ**গ্য একটি গোরক্ষ ক্ষেত্র ও হরিদ্বারে ইহাঁদের একটি অতিশ্রদ্ধেয় স্তৃত্ব বিভামান আছে: এই উভয়ই এই সম্প্রদায়ের তীর্থ-স্থানবিশেষ। নেপালের পশুপতিনাথ প্রভৃতির মন্দিরসমূদায়ও এই সম্প্রদায়-সংক্রাস্ত। কলিকাতার এদিকে দমদমার সন্নিকট গোরখ বাস্লী নামে একটি স্থান মাছে, তথায় তিনটি মাকুষের মূর্ত্তি ও শিব কালী, হনুমান্ প্রভৃতি কতকগুলি দেবতার প্রতিমূর্ত্তি বিছ্যমান রহিয়াছে। প্রথমোক্ত তিনটি নর-মূর্ত্তি দন্তাত্রেয়, গোরক্ষনাথ ও মৎস্থেন্দ্রনাথের প্রতিমূর্ত্তি বলিয়া উল্লিখিত হইয়া থাকে। গোরক্ষপুর ইহাঁদের প্রধান স্থান। ঐ স্থানে পূর্বের এই সম্প্রদায়ীদিগের একটি মন্দির ছিল, আলাউদ্দীন ভাহা ভ্রষ্ট করিয়া মদিদ্ করেন। কিছু কাল পরে উহার নিকটবর্ত্তী অশ্য এক স্থানে অপর একটি মন্দির নির্শ্মিত হয়; আরক্ষজেব বাদশাহ ভাহাও নষ্ট করিয়া মুসলমান্দের ভজনালয় করিয়া ফেলেন। অনস্তর বুদ্ধনাথ নামে একটি যোগী পুনরায় অন্য একটি মন্দির প্রতিষ্ঠা করেন, তাহার দক্ষিণ ভাগে হন্মান ও পশুপতি নাথ নামক মহাদেবের মন্দির বিভামান আছে।

ইহাঁদের ছই কর্ণে ছুইটি বুহৎ ছিদ্র থাকে। হিন্দী ভাষাতে কাণ্

ক্ষে কর্ণ এবং ফট্ শব্দে ছিন্ত বুঝায় এই নিমিত্ত ইহাঁদের নাম কণ্

াট্-যোগী। ঐ ছিন্ত-যুগলের মধ্যে এক একটি কুণ্ডল সন্নিবেশিত

য়, তাহা প্রস্তর, বেলোয়ার, বা গণ্ডারের শৃল্পে প্রস্তত। ইহাঁরা

ক্ষার সময়ে উহা গ্রহণ করেন এবং উহাকে শিবের কুণ্ডল বলিয়া

বৈখাস যান। উহাকে মুদ্রা বলে। উহার অন্য একটি নাম দর্শন,

এই নিমিত্তে কণ্ফট্-যোগীদের অপর এক নাম দর্শনী-যোগী।

ঐ কুগুল বাতিরেকে ইহাঁরা তুই তিন অঙ্গুলি-প্রমাণ একটি চ্ফাবর্ণ সামগ্রী একরূপ ওর্ণসূত্রের মালায় বন্ধন করিয়া গল-দেশে ধারণ করেন। ঐ বস্তুটিকে নাদ বলে ও যে সূত্র-মালায় উহা প্রথিত থাকে, গাহা সেলি বলিয়া উল্লিখিত হয়। কোন উদাসীনের গল-দেশে ঐ উভয় বিশ্বত দেখিলেই তাঁহাকে যোগী বলিয়া জানিতে পারা যায়। তন্তিম, ইহাঁরা শৈব ধর্ম্মের নিয়মানুসারে গেরুয়া-বস্তু পরিধান, মস্তকে জটা ধারণ, শরীরে ভস্ম-লেপন ও ললাটে বিভৃতি দিয়া ত্রিপুণ্ডু করিয়া থাকেন।

সন্ন্যাসীদের ন্যায় ইহাঁদিগকেও নানা গুরু স্বীকার করিতে হয়।
কেহ শিষ্যের মন্তক মুগুন করেন, কেহবা তাহার কর্ণ-যুগলে ছিল্র করিয়া
মুদ্রা পরাইয়া দেন, অপর কেছ তাহাকে জ্যোৎমার্গে প্রবেশিত করিয়া
থাকেন। এইরূপে ভিন্ন ভিন্ন গুরু শিষ্যের দীক্ষা ও সাধনসংক্রান্ত
ভিন্ন ভিন্ন ক্রিয়া সম্পাদন করিয়া দেন। দশনামীদের ন্যায় ইহাঁদেরও
জ্যোৎমার্গ প্রবেশ পূর্বক মদ্যমাংস ব্যবহার করিবার রীতি আছে।
ভারতবর্ষের পশ্চিমোত্তর খণ্ডে নানা ছানে বহু সংখ্যক ক্রিবার

ভারতবর্ষের পশ্চিমোত্তর খণ্ডে নানা খানে বছ সংখ্যক বিশ্ব বোগী সচরাচর দেখিতে পাওয়া যায়। ইহাঁরা শিব-মন্দির-বিশেষে শিব-পূজার কার্য্যে নিযুক্ত থাকেন, বা স্থান-বিশেষে একত্র অবস্থিতি পূর্ববিক ভিক্ষাদি করিয়া কাল-ক্ষেপ করেন, অথবা তীর্থ-পর্য্যটন উদ্দেশে দেশ দেশান্তর ভ্রমণ করিয়া বেড়ান। উদাসীন-যোগী সমুদায় দার পরিপ্রাহ করিয়া গৃহাশ্রমে প্রবিষ্ট হন না বটে, কিন্তু অনেকেই বিস্তৃত বিষয়-ব্যাপারে ব্যাপৃত হইয়া থাকেন। ব্রিবেণীর প্রায় চারি ক্রোশ পশ্চিমে মহানাদ নামক প্রামে এই সম্প্রদায়ী একটি যোগি রাজার নিবাস আছে। তিনি বিস্তর ভূমি ও অন্য অন্য নানা সম্পত্তির অধিকারী। তাঁহার অনেক গুলি শিষ্য থাকে, মৃত্যু কালে তাহার মধ্যে এক জনকে বিষয়ের উত্তরাধিকারী করিয়া যান। এইরূপে ঐ যোগি রাজার প্রণালী চলিয়া আসিতেছে। তাঁহারা সেই স্থলের জটেশর নামক শিবের পূজা করেন, এবং বশিষ্ঠগঙ্গা নামে একটি জলাশয় আছে, তাহাকেও প্রকৃত গঙ্গার ন্যায় মান্য করিয়া থাকেন *। রাজস্থানের অস্তঃপাতী মেওয়ার দেশস্থ একলিঙ্গ নামক শিবের গোসামীরা দার পরিগ্রহ করেন না, অথুচ বাণিজ্যাদি বিষয়-ব্যাপারে লিপ্ত হইতেও বিমুখ হন না। তাঁহাদের অধীনস্থ শত শত কণ্ ফট্-যোগী কখন কখন একত্র দলবন্ধ হইয়া যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হন পা।

গিরি, পুরী প্রভৃতি যেমন দশনামী সন্ন্যাসীদের উপাধি, সেই রূপ কণ্ফট্ প্রভৃতি যোগীদের উপাধি নাথ; যেমন আদিনাথ, মচ্ছেন্দ্রনাথ, গোরক্ষনাথ ইত্যাদি।

যাঁহারা সর্বতোভাবে যোগ-সিদ্ধ হন, তোঁহাদিগকে সিদ্ধ যোগী বলে। সমুদায়ে চৌরাশি জন সিদ্ধ যোগীর নাম পরিগণিত হয়, কিন্তু

^{*} এই বশিষ্ঠগঙ্গা ও শিব-স্থাপনাদি বিষয়ের একটি অন্তুত উপাধ্যান প্রচলিত আছে। মহানাদ গ্রামে একটি দক্ষিণাবর্ত্ত শব্ধ পতিত ছিল, বায়ু লাগিয়া তাহা হইতে মহানাদ অর্থাৎ প্রচণ্ড শব্দ উৎপন্ন হয়। সেই নাদ প্রবণ করিয়া দেবতা-গণ তথায় উপস্থিত হন ও জটেশ্বর শিব এবং বশিষ্ঠগঙ্গা প্রতিষ্ঠিত করেন এবং মহানাদ হইয়াছে বলিয়া সে স্থানের নাম মহানাদ রাখেন।

[†] Tod's Rajasthan Vol. I.

যোগীরা বলেন, ভদতিরিক্ত আরও বহু ব্যক্তি ঐ রূপ যোগ-সিদ্ধ হইয়া-ছেন। তদ্মধ্যে অনেকে অভাপি অবনী-মণ্ডলে বিচরণ করিতেছেন।

অওঘড়-যোগী।

ইতি পূর্বের রুখড় সুখড়াদির প্রসঙ্গে যে ব্রহ্মগিরির কথা লিখিত হইয়াছে, তিনিই ইহাদের প্রবর্ত্তক বলিয়া প্রবাদ আছে।

ইহারাও কণ্ ফট্-যোগীদের স্থায় শিবারাধনা করে ও গল-দেশে নাদ ও সেলিও লম্বিত করিয়া রাখে, কিন্তু তাহাদের মত কর্ণ-যুগলে ছিদ্র করিয়া মুদ্রা ব্যবহার করে না।

মচ্ছেন্দ্রী, শারঙ্গীহার, ডুরীহার, ভতৃ হরি, ও কাণিপা যোগী।

কণ্ ফট্ ও অওবড় যোগী ভিন্ন অস্থা বহু প্রকার শৈব বোগী আছে। মচ্ছেন্দ্রীযোগীরা গোরক্ষের পিতা মৎস্তেন্দ্রনাথকে গুরু বলিয়া স্থীকার করে। অন্য এক যোগিসম্প্রদায়ের নাম ভত্ ইরি। তাহারা ভত্ হরিকে স্থীয় সম্প্রদায়-প্রবর্ত্তক বলিয়া অঙ্গীকার করে। শারঙ্গীহার-যোগীরা শারঙ্গ লইয়া গান করিতে করিতে অমণ করে; এই হেডু তাহাদের নাম শারঙ্গীহার। তাহাদের পদগুলি দেশ-ভাষায় রচিত এবং অধিকাংশই শিব ও শক্তিবিষয়ক। তাহারা ভৈরবের নাম করিয়া ভিক্লা করে।

অন্য এক সম্প্রদায়ের নাম ডুরীহার। ইহারা ডুরী অর্থাৎ কার্পাস-সূত্রের ও পট্ট-সূত্রের প্রস্তুত বস্ত্র সকল বিক্রয় করে এই ; নিমিত্ত ইহা-দিগকে ডুরীহার বলে।

যাহার। তুব্ড়ী বাজাইয়া ও সর্প ধরিয়া ভিক্ষা করে, ভাহারাও এক প্রকার যোগী। ভাহাদের নাম কাণিপা-যোগী। ভাহারাও গোরক্ষনাথকেই আদি গুরু বলিয়া স্থীকার করে ও কর্ণ-যুগলে ছিন্ত করিয়া পিত্তল, রৌপ্য, দল্জা প্রভৃতি-নির্দ্মিত একরূপ কুণ্ডল পরিয়া থাকে, ভাহার নাম দর্শন। কিন্তু ভাহাদের কর্ণের ছিন্ত কণ্কট্-যোগীদের মত বৃহৎ নয়। ভাহারা শাশ্রু রাখে, গেরুয়া-বন্ত্র পরিধান করে এবং কণ্কট্-যোগী প্রভৃতির মত গল-দেশে সেলি লম্বিত করিয়া রাখে কিন্তু নাদ ব্যবহার করে না।

ইহারা কহে আমরা গোরক্ষপুরে গিয়া গোরক্ষনাথের স্থানে দীক্ষিত হই ও তথা হইতেই কর্ণ-যুগলে কুগুল পরিয়া আসি।

এই কাণিপা-যোগীরা পশ্চিমোত্তর-প্রদেশীয় লোক। বৎসরের মধ্যে কোন সময়ে বিশেষতঃ শীতকালে গৃহের বহিভূতি হইয়া ভিক্ষায় গমন করে ও নানা দেশ পর্য্যটন পূর্বকি যাহা কিছু সংগ্রহ করিতে পারে তদ্ধারা সংসার নির্ব্বাহ করিতে থাকে। দেখিতে পাই, কোন কোন দল স্ত্রী-পূক্রাদি পরিজন ও অখাদি পশু-গণ সঙ্গে লইয়া প্রবাসে যায় এবং যথা তথা তাঁবু খাটাইয়া তাহার মধ্যে অবস্থিতি করে ও দিবা-ভাগে গ্রাম ও নগরের মধ্যে গিয়া উক্তরূপে ভিক্ষা করিয়া বেড়ায়।

অঘোরপন্থী-যোগী।

ইহারা সর্ববিংশে পূর্ব্ব-লিখিত অঘোরীদের * স্থায় আচরণ করে;
মন্ত মাংস ভক্ষণ, সর্পাদির অন্থি ও পশাদির কপাল ধারণ ও অন্থ অন্থ
নানাবিধ ঘ্রণিত ও কুৎসিত ব্যবহার করে। বিশেষ এই যে, ইহারা যোগী
এই জন্ম কণ্ফট্-যোগীদের মত কর্ণ-যুগলে একরূপ দর্শন অর্থাৎ কুগুল
পরিয়া থাকে।

ইহারা শিবের উপাসক, এ নিমিত্ত অন্থি-মালা ও করোটি-মালার সহিত ক্রাক্ষ-মালা ও ঠুম্রা প্রভৃতি ভীর্থ-চিহ্ন ধারণ করে। ক্ষোরী হয় না, কেশ ও শাশ্রু রাখিয়া দেয়।

পূর্বের স্বর্ভঙ্গী নামে এক সম্প্রদায়ের বিষয় লিখিত হইয়াছে। অঘোরপন্থী-যোগীরাও আপনাদের অপর একটি নাম স্বর্ভঙ্গী বলিয়া পরিচয় দেয়। ইহা হইলে, এরূপ স্বর্ভঙ্গীরা সন্ম্যাসী না হইয়া যোগি-সম্প্রদায়ের মধ্যে পরিগণিত হয়।

[•] অংশারী সমাসীদের বিষয় মুদ্রিত হইবার পর তাহাদের সংক্রান্ত একটি অভি অপূর্ব্ব ব্যাপার জানিতে পারিলাম। কোন কোন অংশারী এক একটি অংশারিণী সঙ্গে রাখে ও ভাহাকে লইয়া যার পর নাই অকথ্য ও অপ্রাব্য ব্যবহার করিয়া থাকে। আমার স্থপরিচিত একটি ভদ্র লোক এক বার গয়াধানে গমন করেন। তিনি এক দিবস একটি অংশারী ও অংশারিণীকে দেখিতে পাইয়া ভাহাদিগকে আহ্বান করিলেন। তাহারা মদ্য পান করিতে করিতে তাঁহার সমীপস্থ হইল ও ক্লিণ্ডে জিকার লোভে অনতিবিলম্বেই দিবা-ভাগে সকলের সাক্ষাতেই জ্রী-প্রস্ক্রের ব্যবহার আরম্ভ করিয়া দিল। তিনি দেখিয়া লজ্জায় অংশাবদন হই-লোল ও অতি সম্বরেই ভিক্ষা দিয়া তাহাদিগকে বিদায় করিয়া দিলেন। সর্ব্বাংশে উচ্ছ অল হওয়াই বৃষি তাহাদের ধর্ম।

ইহা ভিন্ন অন্য অন্য নামের অন্য অন্য প্রকার যোগী * দানা বেশ ধারণ করিয়া পর্যাটন করে। এক্ষণে অপরাপর অনেক ধর্ম্মের ন্যায় যোগ-ধর্ম্মও এক রূপ প্রবঞ্চনার উপায় হইয়া উঠিয়াছে। যোগীদের মধ্যে অধিকাংশেই অনেক সন্মাসীর ন্যায় আপন কর্তুব্যের কিছু মাত্র অসুষ্ঠান করে না; কেবল ধর্মাচ্ছলে ভিক্ষা করিয়া পর্যাটন করে। ইহারা লোকের নিকট গিয়া মন্ত্র বা ঔষধ-বিশেষ ধারা রোগ নিবারণ, দৈব-বলে অন্য অন্য মনস্কামনা পূরণ ও ভবিদ্যুৎ ঘটনাদির বিবরণ করিতে আপনাদিগকে সমর্থ জানায়, এবং তদ্ধারা অজ্ঞব্যক্তিদের নিকট হইতে নানাচ্ছলে অর্থ আহরণ করিয়া থাকে। বোধ হয়, ইহাদিগকেই উদ্দেশ করিয়া পশ্চাল্লিখিত বচন সমুদায় বিরচিত হইয়াছে।

मुण्डी च दण्डधारी वा काषायवसनीऽपिवा ।
नारायणवदीवापि जटिलोभस्मलेपनः ॥
नमः शिवायवाच्योवा वक्क्ष्मीपूजकोऽपिवा ।
क्रियाष्टीनोऽयवा क्रूरः कथं सिष्टिमवाप्रुयात् ॥
पढार्वाश्रभःहिछा ।

্ব মৃতিত-ক্ষুমন্তক, দণ্ড-ধারী, ক্ষায়-বর্ণ বস্ত্র, 'নারায়ণ' শব্দ উচ্চারণকারী জটা-যুক্ত, ভশ্ম-লি স্থা, 'নমঃ শিবায়' এই শব্দ উচ্চারণ-কারী, বহু-মূর্তি-পূক্ষক এই সকল

ক পূর্বে বে সাত্ত থ্যাত যোগি-দলের প্রসন্ধ করা হইরাছে, তদতিরিক্ত আরও করেক প্রকার আনার সামেছে; বেমন রামপন্থী বোগী, সিদ্ধি কেরাণি বোগী ইত্যাদি। স্চরাচর বাদশ বা অরোদশ প্রকার যোগী গণিত হইরা থাকে।

ব্যাসকপুর, শে বিশাস বিশাস বেশাস শান্ত হংসা বাংকা বিশাস বিশাস বেশাস বিশাস বিশ

কণ-ৰুক্ত হইয়াও যদি ক্র হয়, অথবা যথাবিহিত ক্রিয়া অনুষ্ঠান না করে, তবে করণে সিদ্ধি লাভ করিবে ?

क्रियेव कारणं सिद्धेः सत्यमितत्तु साङ्काते। शिश्रोदरार्थं योगस्य कथं वा विश्वधारिणः॥ श्रवपानविद्योगस्य वश्चयन्ति जनान् किल। श्रवावचैर्व्विप्रलग्भैर्यतस्ते श्रश्नालवः॥

দত্তাত্তেয়সংহিতা।

সাঙ্কৃতি। বোগ-ক্রিয়াই যোগ-সিদ্ধির কারণ ইহা সভ্য জানিবে। যাহারা াশোনরের ভৃত্তি সাধন উদ্দেশে যোগীর বেশ ধারণ করে, ভাহাদের কিরুপে াগ-সিদ্ধি হইবে? এইরূপ বেশ-ধারী ব্যক্তিরা ভোজনাসক্ত; ভাহারা অন্ন-পান-াহীন লোক সকলকে নানাপ্রকারে প্রবঞ্চনা করে।

কাশীখণ্ডে একালে যোগাঁসুষ্ঠানের স্পাফ নিষেধই দেখা যাইতেছে।
न दिख्यित काली योगो न सिध्यित काली तपः।
कामीथछ ছাত্রিংশ অধ্যায়।

किन्छ राश निष्क रह ना ; कनिष्ठ छ्नमा । च्यलेन्द्रियद्वत्तिः स्थात् कलिकल्मषज् भणात् । यल्यायुः स्थात्त्वा नृणां क्षेष्ठ योगमष्टोदयः ॥ कामीथ्छ षाष्ठ्यादिः म स्थात् ।

কলি-কাল-সন্তব পাপ ঘারা ইন্দ্রিয়-বৃত্তি সকল চঞ্চল হয়, এবং মহযাদিগের ায়ু অল হয়, এখন যোগোৎপত্তি কোথায় ?

যোগিনী ও সংযোগী।

জ্রীলোকে যেমন সন্ন্যাস-মন্ত্রে উপদিষ্ট হইয়া অবধ্তানী হয়, সেই।প আবার যোগ-ধর্ম গ্রহণ করিয়া যোগিনী হইয়া থাকে । ইহাদিগকে
।চরাচর নাথিনী বলে। কণ্ফট্-সম্প্রদায়ী যোগিনী সকলে যোগী-

দের ন্যায় গেরুয়া বস্তাদি শৈব চিহ্ন ধারণ করে ও ছই কর্ণে ছই মুন্তাও ব্যবহার করিয়া থাকে। দেখিতে পাই, অনেকে অনেক প্রকার অলঙ্কার ধারণ করিয়া শরীর অলঙ্কত করিতেও ক্রটি করেন না।

দশনামীদের ঘরবারী সন্ন্যাসীদের মত ইহাদেরও ঘরবারী অর্থাৎ গৃহস্থ যোগী আছে। তাহারাও স্ত্রী-পুক্রাদি লইয়া সংসার করে ও নিজ সম্প্রদায়ের মধ্যেই বিবাহাদি সম্পন্ন করিয়া থাকে। তাহাদিগকে সংযোগী বলে।

লিকোপাসনা ও লিঙ্গায়ৎ।

(জঙ্গম।)[°]

শিবের সহিত অক্স অক্স দেবতার একটি বিষয়ে বিশেষ বিভিন্নতা দেখিতে পাওয়া যায়। তাঁহার সর্ববাবয়বের প্রতিমূর্ত্তি অতীব বিরল; ভারতবর্ষের সকল অংশেই তদীয় লিঙ্গ-মূর্ত্তিতেই তাঁহার পূজা হইয়া থাকে। উহা সর্ববত্র এরূপ প্রচলিত যে, শিবের উপাসনা বলিলে শিবের লিঙ্গ-মূর্ত্তির উপাসনাই বুঝিতে হয়। শিবালয় ও শিব-মন্দির সমুদায় কেবল ঐ মূর্ত্তিরই আলয়। শৈবতীর্থে কেবল ঐ মূর্ত্তিরই মহিমা প্রকাশিত আছে। স্বতম্ব একখানি বৃহৎ পুরাণ ঐ মূর্ত্তিরই গুণ-কীর্ত্তন উদ্দেশে বিরচিত হইয়াছে।

সাধারণ-মতে ব্রহ্মা স্মষ্টিকর্তা, বিষ্ণু পালনকর্তা ও শিব সংহারকর্তা; কিন্তু ঐ সকল দেবতার উপাসকেরা প্রত্যেকেই আপন আপন উপাস্থ দেবতাকে স্কল পালন সংহার এই ত্রিগুণেরই আগ্রায় বলিয়া অঙ্গীকার ও প্রচার করিয়াছেন। তদমুসারে শিবও স্কলকর্তা ও তদীয় লিঙ্গমূর্ত্তি সেই স্কল-শক্তির পরিচায়ক।

লিন্দপুরাণে চুইপ্রকার শিবের বিষয় লিখিত আছে; অলিন্দ ও লিন্দ। অলিন্দ শিব নিজ্ঞিয় ও নিগুণ-স্বরূপ, আর লিন্দ-শিব জগ তের কারণ এ

> जगद्योनि महाभूतं स्यूलं स्त्यमणं विभुम्। विग्रहं जगतां लिङ्गं चलिङ्गादभवत् स्वयम्॥ निक्रभूतान ङ्खीत वशाता

স্থুল, স্ক্ল, জন্ম-রহিত ও সর্জ-ব্যাপী মহাভূত-স্বরূপ লিঙ্গশিব জগতের কারণ ও বিশ্ব-রূপ। তিনি অলিঙ্গ-শিব হুইতে উৎপন্ন হুইরাছেন।

ঐ পুরাণের সপ্তদশ অধ্যায়ে হুস্পফ উল্লেখ আছে, মহাদেবের স্ঞ্জন-শক্তিই লিক্ষ।

प्रधान' लिङ्गमाख्यात' लिङ्गी च परमेश्यर;।

लिक्र भूतांव मध्यम् व्यथांव ।

মংখ্যাকে শিলী ও তাঁহার প্রকৃতি অর্থাৎ স্ঞান-শক্তিকে শিল বশিয়া উল্লেখ করা হইয়াছে।

ঐ লিক্সপুরাণে এ বিষয়ের অনেকগুলি অন্তুত উপাখ্যান বিনিবেশিত আছে। উহার সপ্তদশ অধ্যায়ে লিখিত আছে, ব্রহ্মা ও বিষ্ণুতে এক বার ঘোরতর বিবাদ উপস্থিত হয়। ব্রহ্মা বলেন, "আমি বিশ্বের কর্তা।" বিষ্ণু বলেন, "আমি বিশ্বের কর্তা।" এই বিরোধ-ভঞ্জন অভি-প্রায়ে দেদীপ্যমান লিক্সরূপী মহাদেব আবিভূতি হইলেন।

प्रस्तयार्णवसध्ये तु रजसा वस्त्रवेरयो: ।

एतस्मिनन्तरे सिङ्गमभवस्रावयो: सुरा: ॥

विवादश्मनार्थेश्व प्रवोधार्थश्व भास्तरम् ।

ज्वासामासस्साभं कासानस्रशोपमम् ॥

विन्नश्वान मश्चन असाह ।

প্রলন্ধ নাম্নের মধ্যে:রজোগুণ-প্রভাবে আমাতে * ও বিফুতে বিরোধ ইইতেছিল, এমন সময়ে সেই বিরোধ-ভঞ্জন ও প্রবোধ-প্রদান জন্ম শত-সংখ্যক কালারি অরুপ ও সহস্র অগ্নিশিথা তুল্য দীপ্তিমান্ লিক উৎপন্ন হইল।

ঐ লিঞ্চ-দর্শনে বিস্ময়াপন্ন হইয়া তাহার আদি ও অন্ত অন্থেষণ উদ্দেশে বিষ্ণু বরাহ-রূপ ধারণ করিয়া অধোদিকে গমন করিলেন, এবং একা হংস-রূপ পরিগ্রহ করিয়া উর্দ্ধ দিকে যাত্রা করিলেন। কিন্তু কি অধঃ কি উর্দ্ধ কোন দিকে আদি অন্ত কিছুই না পাওয়াতে তাঁহারা উভয়ে আান্ত, ক্লান্ত ও প্রত্যাগত হইয়া ভয়ে কাঁপিতে লাগিলেন। এমন সময়ে অকস্মাৎ 'ওঁ ওঁ ' এইরূপ আকাশবাণী হইল, এবং সেই লিক্সের পার্শ্ব-দেশে ওঁকারের পৃথক্ পৃথক্ অক্স অকার, উকার, মকার, এই ভিনটি অক্ষর দৃষ্ট হইতে লাগিল। এই ওঁকারের তাৎপর্যার্থ-স্বরূপ এইরূপ লিখিত আছে যে,

श्रस्य लिङ्गादभूहीजमकारं वीजिन: प्रभी:। " जकारयोनी वे चिप्तमवर्दत समन्तत:॥

निक्श्रतांग मश्रम् व्यथात्र।

বীজি-অরপ মহেখরের লিক হইতে অকার-অরপ বীজ উৎপন্ন হইল, এবং ভাহা উকার-অরপ বোনিতে নিক্ষিপ্ত হইরা চতুর্দিকে বৃদ্ধি পাইতে লাগিল।

লিক্স যে মহাদেবের স্কেন-শক্তির পরিচায়ক, ভাহা এই শ্লোকে স্পান্টই বোধ হইভেছে। তদমুসারে শিববোধক লিক্স মূর্ত্তিতে যেমন শিব-পূজার বিধি আছে, সেইরূপ শক্তি-বোধক যোনি-মূর্ত্তিতে শক্তি-পূজার ব্যবস্থা দেখিতে পাওয়া যায়।

लिङ्गवेदी महादेवी लिङ्गं साचासहेखर: । तयी: संपूजनावित्यं देवी देवस पूजिती ॥ श्रीगरणविषी-४७ निक्रपूत्रान बहन ।

[•] অর্থাৎ ব্রহ্মাতে।

লিক-বেদী মহাদেবী ভগবতী-স্বরূপ। আর লিক সাক্ষাৎ মহাদেব-স্বরূপ। এই লিক ও বেদীর পূজাতে শিব ও শক্তি উভয়ের পূজা হয়।

> शिक्तां विना महेशानि प्रेत्वं तस्य निश्चितम्। शिक्तां योगमात्रेण क्षमेक्तां सदाशिव:। श्वतएव महेशानि पूज्येक्किवलिङ्गकम्॥ निकार्कन एक्षः।

মহেশানি ৷ শক্তি-সংযুক্ত না থাকিলে শিব নিশ্চিত শব-স্বরূপ হন, এবং শক্তি-যুক্ত হইলেই কর্ম-ক্ষম হইয়া উঠেন, অতএব শক্তির সহিত শিব-লিলের পূজা করিবে।

যোনি ও লিঙ্গ পূজা-প্রবর্ত্তন বিষয়ের ভিন্ন ভিন্ন আখ্যায়িকা আছে*।

* বামনপ্রাণ শিবপ্রাণ প্রভৃতিতে এ বিষয়ের অনেক অপরূপ উপাধ্যান আছে, তাহা এখনে কীর্ত্তন করিয়া পুতকের অল্লীণতা বৃদ্ধি করিবার প্রয়োজন নাই। ঐ হই প্রাণে এবং লিলপ্রাণ, ত্রন্ধাগুপুরাণ ও ফলপ্রাণের অন্তর্গত কানীথতে শিব-লিলের সবিস্তর মহিমাবর্ণন ও তদীয় পুজার সবিশেষ ব্যবস্থা বিশ্বমান আছে। এ দিকে আবার পদ্মপ্রাণে লিখিত আছে, কোন্ দেবতা ত্রান্ধণের পূল্য ইহা নিরূপণ করিবার অভিপ্রারে, শ্বিগণ ভৃতু মুনিকে মহাদেবের আচরণ জানিতে পাঠাইয়া দেন। তিনি মহাদেবের গৃহহারে উপস্থিত হইয়া শুনিলন, মহাদেবে পার্ম্বতীর সহিত ক্রীড়া করিতেছেন। ভৃত্তমুনি বছদিবস পর্যান্ত তথার অপেক্ষা করিয়া থাকিলেন, তথাচ শিবের সহিত দাক্ষাৎ হইল না। তথন মূনি এই অভিসম্পাত করিলেন,

नारीसङ्गममत्ती इसी यखाम्यामवमन्यते । योगिलिङ स्वरूपं वे दूपं तखाक्षविष्यति ॥ ब्राह्मणं मां न जागासि समसा चापुप्रपागतः । ष्वनाष्ट्रायसमापन्नी न पृत्यीऽसी विजन्यमाम् ॥ ब्रष्टभक्ताय ये खीके भवासिङ्गास्थिषारिषः । ते पाषण्डलमापन्नाविष्वाश्चा भवन्ति वे ॥

পদাপুরাণ উত্তরণও।

জ্ঞী-সংসর্গে মত্ত হইরা মহাদেব আমাকে অবজ্ঞা করিতেছে, অভ এব তাহা-

তন্মধ্যে বামনপুরাণে লিঙ্গোৎপত্তির প্রকরণে লিখিত আছে, একা শিব-লিঙ্গ ধারণ করিয়া তদীয় উপাসনা প্রচার উদ্দেশে চারিপ্রকার শৈবসম্প্রদায় প্রবৃত্তিত করেন।

> ब्रह्मा खयश्च जगान्त लिङ्गं कणकपिङ्गलम्। ततस्रकार भगवांसातुर्वर्षः हराच ने। शास्त्राणि चैषां मुख्यानि नानीतिविदितानि च॥ त्राद्यं प्रैवं परिख्यातमन्यत् पाश्रपतं सुने । **द्धतीयं कालवदनं चतुर्थेञ्च कपालिनं** ॥ भैव श्रासीत् खयं भित्रव्विभिष्ठस्य प्रियः सुतः। तस्य शिष्योवभूवाय गोपायन इति श्रुत:॥ महापाग्रुपतस्वागीत् भारद्वाजस्तपोधनः। तस्य शिष्योऽप्यभृद्राजा ऋषभः सोमकेष्वरः॥ कालास्यो भगवनासीदापस्तम्बस्तपोधनः। तस्य पिष्यो वको वैग्यो नान्ता कार्यखरी सुने॥ महावृती च धनदस्तस्य शिष्यस वीर्यवान् । क्रन्दोदर इति ख्याती जात्या शुद्री महातपा:॥ एवं स भगवान् ब्रह्मा पूजनाय शिवस्य च। कला तु चातुराश्रम्यं खमेव भवनं गत:॥ বামনপুরাণ ষষ্ঠ অধ্যায়।

ব্রহ্মা নিজে অর্থের ফ্রায় পিঙ্গল-বর্ণ শিব-লিঙ্গ গ্রহণ করিলেন, ও তদবধি চারিবর্ণকেই শিবপুজার ব্যবস্থা দিলেন, এবং ইহাদের জক্স বিবিধ কথা-বিজ্ঞাপক
প্রধান প্রধান শাস্ত্র প্রকাশ করিলেন। প্রথম শৈব, দ্বিতীয় পাশুপত, তৃতীয়
কালবদন, চতুর্ব কপালী। বশিষ্ঠের প্রিয় পুত্র শক্তি এবং তাঁহার শিব্য গোপায়ন

দের উভরের শরীর যোনি ও লিকরপ হইবে। আমি ব্রাহ্মণ; শিব পাপাচ্ছর হইরা আমাকে জানিতে পারিলে না। অভএব সে অব্রাহ্মণ হইরা বিজগণের অপুজ্য হইবে। আর বাহারা শিব-ভক্ত হইরা অন্তি, ভন্ম ও লিক-মূর্ত্তি ধারণ করিবে ভাহারা পাষ্পত হইরা বৈদিক ধর্ম হইতে বহিন্ধত হইবে।

শৈব হইরাছিলেন। তপেশী ভারষাজ ও তাঁহার শিষ্য সোমকাধিপতি রাজা খাষ্ড পাশুপত হইরাছিলেন। আপত্তম্ব নামক তপশী এবং বক নামে এক জন বৈশু কালবদন হইরাছিলেন। ঐ বকের অন্ত এক নাম ক্রাথেশর। মহাত্রতী ধনদ এবং কুলোদর নামে তাঁহার একটি শুদ্র-বংশোদ্র মহাতপশী বীর্যাবান্ শিষ্য কপালী হইরাছিলেন। এইরূপে শিব-পূজা প্রচার উদ্দেশে চারি আশ্রমের স্বষ্টি করিয়া ব্রহ্মা গুহে গমন করিলেন।

শঙ্করদিখিজায়ে লিখিত আছে, শক্ষরাচার্য্যের সময়ে ছয় প্রকার শৈব-সম্প্রদায় ছিল, তাহার মধ্যে চারি সম্প্রদায় লিক্স উপাসক। অতএব এ বিষয়ে উল্লিখিত পৌরাণিক উপাখ্যানের সহিত এই শেষ উক্ত গ্রন্থের ঐক্য দেখা যাইতেছে। কিন্তু শক্ষরদিখিজায়ে তুই প্রকার লিজো-পাসকের নাম ভাক্ত ও জক্ষম বলিয়া লিখিত আছে। পুরাণে ভাহার পরিবর্ত্তে কপালী এবং কালখদন এই তুই নাম প্রাপ্ত হওয়া যাইতেছে।

লিঙ্গ সূই প্রকার; অকৃত্রিম ও কৃত্রিম। স্বয়স্তৃ-লিঙ্গ ও বাণ-লিঙ্গ প্রভৃতির নাম অকৃত্রিম। *

শান্তে নির্দেশিত আছে, যে সকল লিঙ্গ কোন ব্যক্তি কর্তৃক স্থাপিত হয় নাই এবং যাহার মূল দেখিতে পাওয়া যায় না, তাহাকে স্বয়স্তৃ-লিঙ্গ বলে শ। ভারতবর্ষের সকল অংশেই অনেকানেক স্বয়স্তৃ-লিঙ্গ বিভামান

^{*} लिङ्गं हि विविधनक्रतिमं क्रतिमच। प्रकृतिमं खयभूतं खयभूवाणलिङ्गादि। প্রাণতোধিণী।

শিল হই প্রকার, অক্তিম ও কৃতিম; স্বয়স্থ ও বাণ-শিল প্রভৃতি যে সকল শিল মমুধ্য হারা নির্মিত হয় নাই, তাহার নাম অকৃতিম শিল।

त नानास्ट्रिस्स्चेयुक्तं नानावर्णसमन्वितम्।
 षहण्मुलं यक्किकं कर्कंग्रं सुवि हस्यते ॥ थ्वांगएक्विति।

বে সকল লিক নানা-ছিত্ৰ-যুক্ত ও নানা-বৰ্ণ-বিশিষ্ট ও বাহার অক কর্মণ এবং যাহার মূল দৃষ্ট হয় না, তাহার নাম অয়স্থ-লিক।

আছে। শিবপুরাণ ও ক্ষন্দপুরাণীয় কাশীখগু-রচনার পূর্বেব ষে সমস্ত লিজ বিভামান ছিল, ঐ তুই প্রস্তে ভাষার নাম নির্দ্দেশিত হইয়াছে, তন্মধ্যে সোমনাথ প্রভৃতি ঘাদশ প্রধান লিজের নাম জ্যোতিলিজি। ভাঁহারা সর্বেবাপরি পূজনীয়ে।

लिङ्गानि च्योतिषाञ्चात विद्यन्ते ऋषिसत्तमाः।
तान्यद्वं व्ययाम्यद्य ञुत्वा पापं व्यपोद्यति ॥
सौराष्ट्रे सोमनायञ्च श्रीशैले मिसकार्ज्जुनम्।
छज्जियन्यां महाकालमोङ्कारममरेखरम्॥
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
वाराणस्थाञ्च विखेशं त्राम्बकं गौतमीतटे॥
वैद्यनायं चिताभूमी नागेशं दाक्कावने।
सेतुबन्धे तु रामेशं घुष्मे शञ्च श्रिवालये॥

শিবপুরাণ অষ্টাত্রিশে অধ্যায়।

সাধুতম ঋষি-সকল! পৃথিবীতে যে সকল জ্যোতির্লিঙ্গ আছে, ভাহার বিবরণ বলি; প্রবণ করিলে পাপ-নাশ হয়। সৌরাষ্ট্র-দেশে সোমনাথ, প্রীনৈলে মিরিকার্জ্ক্রন, উজ্জায়নীতে মহাকাল ও ওকার নামক শিব, হিমালয়ের পৃষ্ঠ-দেশে কেলার, ডাকিনীতে ভীমশক্ষর, বারাণসীতে বিশ্বেষর, গৌতমী-ভীরে ত্রাম্বক, চিতাভূমিতে বৈশ্বনাথ, দাককাবনে নাগেশ, সেতৃবক্রে রামেশ্বর এবং শিবালয়ে বৃশ্বেশ *।

^{*} এই সকল শিব-লিকের মধ্যে কতক অদ্যাপি বিদ্যমান আছে, আর কতক গুলি নষ্ট হইয়া গিরাছে। গিজনি-বাসী মামুদ্ নামক মুসল্মান্ বাদশাহ ১০২৪ দশ শত চকিবশ খৃষ্টাব্দে গুজরাটের গোমনাথ শিবকে ভগ্ন করিয়া তাঁহার মন্দির মুসল্মান্ দেবালর করেন, ইহা প্রসিদ্ধই আছে। পুরাণে যথন ঐ সোমনাথ গৌরাষ্ট্র-দেশ-স্থিত বলিয়া উক্ত হইয়াছে, তথন বোধ হয় পূর্বকালে গুজরাটের কিরদংশ সৌরাষ্ট্রের অন্তর্গত ছিল। দক্ষিণে কৃষ্ণা নদীর দক্ষিণ-তটের নিকটস্থ শ্রীশৈল পর্বতে মল্লিকার্জ্ন শিব প্রতিষ্ঠিত আছেন। ১১৫২ এগারশ বাদার শকে

নর্দ্মন নদীর তীরে যে সমস্ত ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পাষাণ-খণ্ড প্রাপ্ত হওয়া যায়, ভাহার নাম বাণ-লিক্ষ। অনেকে অমুমান করেন, প্রথমে বাণ রাজা কর্তৃক পূজিত হওয়াতে, ঐ সমুদয় প্রস্তর-খণ্ড বাণ-লিক্স বলিয়া খ্যাত হইয়াছে। পুরাণে ইহার অমুকূল অনেকানেক কথা ও উপাখ্যান বিভ্যমান আছে। নানা পুরাণে ও নানা মুনি-প্রণীত গ্রন্থে বাণ রাজা অত্যন্ত শিব-ভক্ত বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়াছেন, এবং তাঁহা কর্তৃক বাণ-লিক্স-স্থাপনার বিষয়ও কথিত হইয়াছে।

> पुरा वाणासुरेणाहं प्रार्थितो नर्भदातटे। षाविरासं गिरौ तत्न लिङ्गक्ष्पी महेम्बर:। वाणलिङ्गमपि ख्यातमतोऽर्थाक्रगतीतस्ति॥

> > **भस्कद्यक्रम-४७ वहन।**

অল্ভম্য্নালে একটি মুসল্মান্ বাদশাহ উজ্জায়নীর মহাকালকে দিল্লীতে লইয়া গিয়া ভয় করিয়া ফেলেন। তাহার তিন শত বৎসর পূর্ব্বে ঐ শিব-মন্দির নির্দ্মিত হয়। অত এব বলিতে হয়, শকান্দের নবম শতালাতে ঐ মহাকালের মন্দির-প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। তীর্থ-যাত্রীরা অল্যাপি হিমালয়ন্থ কেদায়নাথ দর্শন করিতে যায়। দক্ষিণে রাজমহেজির অন্তঃপাতী প্রচরম নামক স্থানে ভীমেশ্বর নামক শিব আছেন; সেই প্রদেশের লোকেরা তাঁহাকে প্রধান ঘাদশ লিক্ষের এক লিক বলিয়া বিশাস করে। অত এব বোধ হয়, এই লিক শিবপুরাণোক্ত ডাকিনী-স্থিত ভীমশকর লিক হইবে। ওকার শিব নর্ম্মান নদীর তীরে ওঁকার-মন্দত্ত নামক স্থানে বিদ্যমান আছেন। কাশীর বিশেশ্বর, বৈদ্যনাথের বৈদ্যনাথ এবং সেতৃবন্ধ রামেশ্বের রামেশ্বর এই তিনটি শিব-লিক প্রসিদ্ধই আছে। ত্রেম্বক ঘুশেশ প্রভৃতি অপর তিনটি লিক এখন বিদ্যমান আছে কি না বলা যায় না।

খ্টাব্দের অটম শতান্দীর অথবা নবম শতান্দীর রচিত বিবিধ প্রায়ে ঐ ছাদশ
- নিঙ্গের অন্তর্গত অনেকটির প্রসঙ্গ পাওয়া যায়। অতএব ঐ সময়ের বছ পূর্ব্বে ভারতবর্ষের সক্ষা স্থানে নিঙ্গ-উপাসনা প্রচণিত ছিল ভাহার সন্দেহ নাই। পূর্বে নশ্বাদা-নদীর তীরে বাণাহ্মরের প্রার্থনাক্রমে তত্তত্ব পর্বতে আমি লিকরণী শিব হইয়া বাস করি এ নিমিত্ত ভূমগুলে বাণ-লিঙ্গ বলিয়া আমার প্যাতি রহিয়াছে।

वाणः सदाभिवो देवो वाणो वाणान्तरोऽपि च । तेन यस्मात् क्षतं तस्माद्दाणलिङ्गमुदाहृतम् ॥

ৰীরমিতোদর।

শ্বরং সদাশিবের নাম বাণ। বাণ শব্দে বাণ রাজাও ব্ঝার। সেই বাণ রাজা কর্তৃক স্থাপিত হওয়াভে, বাণ-লিজ বলিয়া থ্যাতি হইয়াছে।

এই বাণ-লিঙ্গ বিশেষ বিশেষ লক্ষণানুসারে ইন্দ্রলিঙ্গ, আগ্নেয়লিঙ্গ, যাম্যালিঙ্গ, বারুণলিঙ্গ, বায়ুলিঙ্গ, কুবেরলিঙ্গ, বৈষ্ণবলিঙ্গ প্রভৃতি বলিয়া উক্ত হয়।

মনুষ্য কর্তৃক দ্রব্য-বিশেষ ধারা নির্দ্মিত লিঙ্গের নাম ফুত্রিম লিজ। স্বর্গ, রজত, কাংশু, পিত্তল, পারদ, তাত্র, স্ফাটিক, প্রতিষ্ঠা, কুরুম, কস্ত্রি, চন্দন, যব, গোধ্ম, ধাগ্য, তিল, লবণ, স্থত, দধি, গোময়, কেশ, অন্থি প্রভৃতি উত্তম অধম বিবিধ দ্রব্যে গঠিত নানাবিধ লিঙ্গ-পূজার ব্যবস্থা আছে। এ দেশীয় লোকেরা প্রাত্যহিক শিব-পূজা দচরাচর পার্থিব লিঙ্গতেই করেন, ও কেহ কেহ বা বাণ-লিঙ্গের অর্চনা করিয়া থাকেন। যদিও লিঙ্গ-নির্মাণ বিষয়ে মৃত্তিকার পরিমাণ ও শ্বেত-রক্তাদি বর্ণের বিশেষ-বিষয়ক বিধান আছে, কিন্তু এইক্ষণে তদমুযায়ী অনুষ্ঠান হইয়া উঠেনা। এই পূজাতে ব্রাক্ষণ অবধি শুল্প পর্যান্ত সকল

ग्रासन्त नाम्राणी शक्तं चित्रिये नक्तिमध्यते ।
 पीतन्त नैश्याजाती स्थात कच्चं शहरे प्रकी चिंतन् ॥

বর্ণেরই অধিকার আছে, শিবের অর্চনা না করিলে অশেষ অনিষ্টের উৎ-পত্তি হয়।

> शिवार्च नन्तु देविशि यस्मिन् गेसे विवर्जि तम्। विष्ठागर्त्तसमं देवि तद्गृष्टं विद्वि पार्व्यति ॥ शाक्तो वा वैष्णवो वापि श्रेवो वा परमेष्वरि। श्रादौ लिङ्गं प्रपूच्याय विल्वपत्रैर्वरानने ॥ पश्चादन्यं मसेशाणि लिङ्गं प्रार्थे प्रपूज्येत्। श्रन्थया मृत्रवत् सर्वे शिवपूजां विना प्रिये॥

> > প্রাণভোষিণী।

পার্কতি ! দেবেশি ! যে গৃহে শিবের পূজা হয় না, তাহা বিষ্ঠা-পর্ত্তের তুশ্য ।
জানিবে। পরমেখরি ! শাক্ত, বৈষ্ণব বা শৈবই হউক, অত্যে বিল-পত্র হারা
শিব-লিঙ্গের পূজা করিয়া তাঁহার নিকটে প্রার্থনা পূর্ক্তক অন্ত দেবতার পূজা
করিবে *। শিব-পূজা না করিলে, পূজার সামগ্রী সমৃদ্য মৃত্তবং হয়।

পূর্ববিকালে লিঙ্গ-উপাসনা কেবল ভারতবর্ষ মধ্যে বন্ধ ছিল না।
এখানকার প্রায় অফাদশ শত ক্রোশ পশ্চিমে মিশর দেশে অসীরিস্
নামক প্রধান দেবের লিঙ্গপূজা বাহুল্যরূপে প্রচলিত ছিল। এই অসীরিস্ ও তদীয় ভার্য্যা আইসীস্ দেবীর সহিত শিব ও শক্তির বিবিধ বিষয়ে
ঐক্য দেখা যায়। ভগবতী যেমন বিশ্ব-রূপা, আইসীস্ দেবীও সেইরূপ
পৃথিবী-রূপা। তদ্রোক্ত শক্তি-যন্ত্র যেমন ত্রিকোণাকৃতি, সেইরূপ
ত্রিকোণ-যন্ত্র আইসীস্ দেবীরও পরিচায়ক ছিল। শিব যেমন সংহারকর্তা,

ব্রাহ্মণে শুক্লবর্ণ, ক্ষরিয়তে রক্তবর্ণ, বৈশ্রে পীতবর্ণ এবং শুদ্রে ক্লবর্ণ মৃত্তি ' ক্ষরি শিব-লিক নির্মাণ করিবে ইহাই প্রশস্ত বলিয়া উক্ত হইয়াছে।

^{*}এছলে বৈষ্ণব প্রভৃতি অপরাপর উপাসকের প্রতিও শিব-পূজার ব্যবস্থা দেখিতেছি, কিন্তু গৌরাল-সম্প্রদারী ও অভ অন্ত অনেক-সম্প্রদারী বৈষ্ণবেরা শিব-পূজা করেন না, বরং শৈবদের প্রতি বিবেষই প্রকাশ করিয়া থাকেন।

অসীরিস্ সেইরূপ প্রাণ-সংহারক যম-স্বরূপ। শিবের বাহন রুষ যেমন পূজনীয়, অসীরিস্ দেবের এপিস নামক বৃষ ও তাঁহার অংশ-স্বরূপ বলিয়া পূজিত হইত।

এইরূপ একটি উপাখ্যান আছে যে, বেকস্দেব ভারতবর্ষ হইতে তুইটা বুষকে মিশর দেশে লইয়া যান, তাহারই একটির নাম এপিস। শিব ও অসীরিস্ উভয় দেবতারই শিরোভূষণ সর্প। শিবের হস্তে যেমন ত্রিশূল, অসীরিস দেবের হস্তে সেইরূপ একটি দণ্ড দেখা যায়। মিশর দেশের অসীরিস্ দেবের অনেক পাষাণময় প্রতিমৃত্তির সহিত শিব-পরিধান ব্যাম্র-চর্ম্মের প্রতিরূপ দেখিতে পাওয়া যায়। শ্রীযুক্ত উইল্ কিন্স সাহেবের কৃত প্রাচীন মিশর লোকের ইতিহাস-সহকৃত চিত্র-গ্রন্থের ভেত্রিশ সংখ্যক চিত্রফলকে অসীরিস্ দেবের চর্ম্ম-পরিধান-বিশিষ্ট চিত্রময় প্রতিরূপ বিভ্যমান আছে। তাঁহার একটি প্রিয় রুক্ষ ছিল, তাহার পত্র শিব-প্রিয় বিল্ব-পত্রের মত ত্রিভাগে বিভক্ত। ধাম যেমন মহাদেবের প্রধান তীর্থ, মেন্ফিস্নগর সেইরূপ অসীরিস্ দেবের সর্বোপরি মাহাত্ম্য-ভূমি বলিয়া পরিগণিত ছিল। ছগ্ধ দিয়া বেমন শিবের অভিষেক করা হয়, ফিলিছীপে অসীরিস্ দেবের পীঠন্থানে সেইরূপ প্রতিদিন ৩৬০ পাত্র চুগ্ধ অর্পণ করা হইত। মহাদেবের সহিত অসীরিস্ দেবের বিভিন্নতা এই যে, শিব শেতবর্ণ, অসীরিস্ কুষ্ণবর্ণ। ৰিস্তু মহাকাল নামক শিব-মূৰ্ত্তি-বিশেষেরও কৃষ্ণবর্ণ লিখিত আছে।

> महाकालं यजेहेब्यादिचेषे धूम्त्रवर्षकम् । विभ्नतं दण्डखहाङ्गी दंष्ट्राभीममुखं शिश्रम् ॥ ७३गात्र ।

त्वीत मिक्न खारा ध्य-वर्ग, विक्रेंग-मर्मम, श्रीश्न-वस्म, स्थ ও ध्रोत्रशात्री भिक्ष महाकारनत्र भूका कतिरव । ভারতবর্ধের শিব-লিক্ষ-পূজার ন্যায় মিশর দেশে অসীরিস্ দেবের লিক্ষ-পূজা অত্যন্ত প্রবল ছিল। এ বিষয়ের এইরূপ একটি উপাধান প্রচলিত আছে যে, টাইফন্ নামক দেবতা মন্ত্রণা পূর্বক অসীরিস্কে নফ করিয়া তাঁহার দেহকে খণ্ড খণ্ড করেন। এই অশুভ সমাচার প্রাপ্ত হইয়া তাঁহার ভার্ঘ্যা আইসীস্ দেবী সেই সমস্ত দেহ-খণ্ড সংগ্রহ পূর্বক বিশেষ বিশেষ স্থানে খনন করিয়া রাখেন। কিন্তু লিক্ষ-দেশ পাইলেন না এই নিমিত্ত উহার প্রভিমূর্ত্তি নির্ম্মাণ করিয়া তাহার পূজা ও মহোৎসব প্রচলিত করেন। মিশর দেশের স্থানে স্থানে তও নামে

এইরূপ একটি মূর্ত্তি দেখিতে পাওয়া গিয়াছে। ইহা
এ দেশীর্ম যোনি-লিঙ্গের প্রতিরূপ। ভারতবর্ষীয়
শাস্ত্রকারেরা যেমন শিব-লিঙ্গকে শিবের স্ক্রন শক্তির
বিজ্ঞাপক বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন, মিশর-দেশীয়
ইতিহাসবিৎ পৃতিতেরা অসীরিস্ দেবের লিঙ্গ-পূজার
বিষয়েও অবিকল সেইরূপ মীমাংসা করিয়া গিয়াছেন *।

(,26,

শ্রীযুক্ত বান্স্ কেনেডি এ দেশীয় শিব-লিগে উপাসনার সহিত মিশর-দেশীয় লিজ-পূজার তুইটি বিষয়ে বিভিন্নতা লিখিয়াছেন দ । তিনি বলেন, মিশর দেশের স্থায় ভারতবর্ধে লিজ-মূর্ত্তির গ্রাম-যাত্রা বা নগর-যাত্রা প্রচলিত নাই। তাঁহার একথাটি নিভান্ত অমূলক। বাজালা দেশে চৈত্র-উৎসবের সময়ে সন্মানীরা সমারোহ পূর্বক জলাশয় হইতে শিব-লিজকে পূজার স্থলে আনয়ন করে, পরে মন্তকে করিয়া গ্রামস্থ লোকের

^{*} প্লুটার্ক-লিখিত অসীরিস্ও আইসীস্ দেবীর বৃত্তান্ত এবং শ্রীবৃত উইল্ কিন্স্, সাহেব-ক্ত প্রাচীন মিশর লোকের ইতিহাস এই ছই গ্রন্থের এই বিষয়ের প্রতাব দেব।

[†] Vans Kennedey's Researches into the nature and affinity of Ancient and Hindoo Mythology, p. 305.

গৃহে লইয়া যায় ও তথায় স্থাপন পূর্বক তাহার অর্চনাদি করিয়া থাকে।

চৈত্রমাসে নবদীপে শিবের বিবাহ নামে একরূপ মহোৎসব হয়, তাহাতে
মহাদেব বাঘ্যভাগুদি সহকারে মহাসমারোহ পূর্বক ভগবতীর বাটীতে
যাত্রা করেন, এবং বিবাহ-ক্রিয়া সম্পন্ন হইলে, তথা হইতে স্থীয় মন্দিরে
প্রভাগত হইয়া থাকেন। এই উপলক্ষে সাত আট ক্রোশ হইতে অনেক লোক নবদীপে আগমন করে। উক্ত সাহেব আর এই এক কথা কহেন
যে, অসীরিসের লিজ-পূজার ন্যায় শিব-লিজের অর্চনায় মহ্যপানাদি
প্রচলিত নাই। প্রকাশ্য-রূপে এরূপ ব্যবহার প্রচলিত নাই বটে, কিন্তু
বীরাচারীরা অপ্রকাশ্যভাবে কুলাচারের অনুষ্ঠান সহকারে শিব-লিজের
অর্চনা করিয়া থাকেন। যোগসারে এবিষয়ের প্রতিপোষক স্থাপ্রট

> वाणिलक्कं सदाराध्यं योगिनां योगसाधने । कौलिकानां कुलाचारे प्रथनां यत्नियन्ते ॥

> > শব্দকরদ্রুম-ধৃত বচন।

বোগীদিগের যোগ সাধনে, কৌলিকদিগের কুলাচারে এবং পশাচারীদিগের শক্ত-নিগ্রহে অর্থাৎ অভিচার-ক্রিয়ার সর্বাদা বাণলিক্সের আরাধনা করিবে। বাণ-লিক্সের স্তবেতেও এ বিষয়ের প্রসঙ্গ প্রাপ্ত হওয়া যাইতেচে।

> परिव्राणाय योगिनों कौलिकानां प्रियाय च। कुलाष्ट्रनानां भक्ताय कुलाचाररताय च॥ कुलभक्ताय योगाय नमोनारायणाय च। मधुपानप्रमत्ताय योगेशाय नमोनमः॥

> > **শব্द अ**क्त अन्त ।

তুমি যোগীদের ত্রাণক্তা, কুলাচারীদের প্রিয়, কুল-স্ত্রী-রত, কুলাচারে প্রবৃত্ত ও মধু-পানে প্রমন্ত। তুমি যোগেখর নারায়ণ-স্বরূপ; ভোমাকে বার্ম্বার করি। গ্রীশ দেশেও লিঙ্গ-পূজা অতিমাত্র প্রবল ইইয়ছিল। অনেক
নগরেরই প্রত্যেক পথে বহুতর মন্দিরে লিঙ্গমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত ছিল ও প্রসময়ে নানাবিধ ব্যাপার সহকারে লিঙ্গাৎসব সম্পন্ন ইইত।
ফেলিফোরিয়া নামে বেকস্ দেবের একটি মহোৎসব ছিল, তাহাতে প্রবৃত্ত ব্যক্তিরা মেষ-চর্ম্ম পরিধান পূর্ববিক সর্বাঙ্গে মসী লেপন করিয়া নৃত্য করিত্রণ, এবং এক একটি স্থার্ঘ কাষ্ঠ-দণ্ডে চর্মা-লিঙ্গ বন্ধন করিয়া পথে পথে লইয়া যাইত য়। তাহারা এইরূপ স্তব করিত যে, "ছে বেকস্! আমরা তোমার গুণ কীর্ত্তন করি, হে উল্লাসের আজ্মঃ! তোমার গুণ-কীর্ত্তন সতী স্ত্রীলোকের শ্রবণীয় নয় জ্ব।"

এই বেকস্ দেবের পুক্র প্রায়েপস্ নামক দেবতার বিষয়ে এই প্রকরণ-সম্বন্ধীয় যে সমুদায় কুৎসিত বৃত্তান্ত লিখিত আছে, তাহা স্মরণ করিলেও লজ্জা উপস্থিত হয়। তাঁহার প্রধান প্রধান মহোৎসব কেবল স্ত্রালোক কর্তৃকই সম্পাদিত হইত। তাহারা গর্দান্ত বলিদান ও মন্তাদি বিবিধ উপচারে তাঁহার অর্চনা করিয়া গা নৃত্য গীত বাদ্যাদি দারা তাঁহাকে পরিত্প্ত করিত **। এথিনিয়স্ নামক একজন গ্রীক গ্রন্থ কর্ত্তা লিখেন, গ্রীকেরা বেকস্ দেবের মহোৎসব-বিশেষে একশত

^{*} G. A. St. John's History of the Manners and Customs of ancient Greece, Vol. I., p. 411.

[†] এদেশীয় চড়ক-পূজার ধূলি-ক্রীড়ায় সন্ন্যাসী এবং গ্রামত্ব অপরাপর লোকেরা গাত্রে ধূলি, কর্দম, মসী, চূর্ণ প্রভৃতি লেপন করিয়া গ্রামের মধ্যে নানা কুংসিত ব্যবহার করে।

[‡] Cyclopædia Britannica, Vol. 27.

^{\$} J. A. St. John's Ancient Greece, Vol. II. p. 240.

[ি] অভএব তদ্ৰোক্ত বীরাচারের অহুদ্ধণ ব্যবহার ইউরোপে ব্যাপ্ত ছিল।

^{**} Cyclopædia Britannica, Vol. 28. Part 2.

বিংশতি হস্ত দীর্ঘ একটি স্বর্ণময় লিঙ্গ-মূর্ত্তি বহন করিয়া লইয়া যাইত।

কি আশ্চর্য্যের বিষয়! যেরূপ লজ্জাকর অবয়বাদির প্রতিমৃতিনিপ্রকাশ অধুনা রাজ-শাসন বারা বিশেষ রূপে নিষেধিত হইয়াছে, তাহার পূজা-পদ্ধতি এক সময়ে এত দূর ব্যাপ্ত হইয়াছিল! পূর্বতন অথুরা অর্থাৎ এসীরিয়া এবং বাবিরুষ্ অর্থাৎ বেবিলন্ দেশীয় লোকে তিন শত হস্ত দীর্ঘ লিঙ্গ-মূর্ত্তি নির্মাণ করিয়া তাহার পূজা করিত। বেবিলন্ দেশে যে সমস্ত পিত্তল-রচিত পুরাতন লিঙ্গ-মূর্ত্তি দেখিতে পাওয়া গিয়াছে, তাহা ভারতবর্ষীয় শিব-লিঙ্গ-মূর্ত্তির অবিকল প্রতিরূপ *। রোমক জাতীয়দের মধ্যেও এ উপাসনা প্রচলিত ছিল ণা। কোন কোন পুরার্ত্তবিৎ পশ্তিত বহুতর প্রমাণ প্রয়োগ সহকারে লিখিয়া গিয়াছেন, পূর্বের খুফান্দের মধ্যেও একরূপ লিজ-পূজার প্রথা বিভ্যমান ছিল, এবং ইটালি দেশীয় রোমান্ কেথোলিক্ নামক সম্প্রদায়ে অভাপি প্রচলিত থাকিতে পারে।

This last lingering relic of a very ancient rite—Phallic, Lingaic, or Ionian, as one may be differently disposed to view it—in Christendom, has been thought to deserve a separate and somewhat lengthy dissertation. I have compiled such a one, from sources not mentionable, with a running commentary showing its close correspondence with existing Hindu rites.—Moor's Oriental Fragments, p. 147.

এই প্রাচীন ক্রিয়াট ভিন্ন ভিন্ন ব্যক্তি কর্তৃক ফেলিক্, আয়োনিয়ান্ বা লৈক উপাদনা বলিয়। বিবেচিত হইতে পারে। ইহার দুপ্তাবশিষ্ট কিয়দংশ অভাপি

^{*} The Journal of the Royal Asiatic Society of Grea Britain and Ireland, Vol. I., pp. 91 and 92.

t Tod's Rajasthan, Vol. I., p. 599.

খুটান্-সম্প্রদায়ের মধ্যে প্রচলিত আছে। এই বিষয়ের বিচারার্থ একটি স্বতম্র স্থাবি প্রবন্ধ লেখা আবশ্রক। আমি কোন কোন অবক্তব্য স্থল হইতে এই বিষয়ের ঐ রূপ বিবরণ সংগ্রহ করিয়াছি এবং তাহার যে স্থলে যাহা বক্তব্য সমস্ত লিখিয়া গিয়া হিন্দুদিগের প্রচলিত লিজোপাসনার সহিত ইহার সৌগাদৃশ্র প্রদর্শন করিয়াছি।

মিশর দেশীয় প্রথমকার খৃষ্টানের। লিঙ্গ-মূর্ত্তি-সদৃশ পূর্বেবাক্ত তও নামক বস্তুটি ধারণ করিতেন। পূর্ববতন খৃষ্টান্দের অনেকানেক সমাধি-মন্দিরে সেই তও-মূর্ত্তির প্রতিরূপ অদ্যাপি অঙ্কিত আছে *।

ভারতবর্ধের দক্ষিণ খণ্ডে শিবু-লিঙ্গের উপাসনা অত্যন্ত প্রচলিত। তথায় স্বতন্ত্র একটি লিঙ্গোপাসক-সম্প্রদায় বিদ্যামান আছে, তাহার নাম লিঙ্গায়ৎ, লিঙ্গবন্ত ও জঙ্গম। এইরূপ লিখিত আছে যে, কিছুকাল পূর্বেব ও বিশেষতঃ কল্যাণপন্তনের অধিপতি বিজল রাজার সময়ে ঐ অঞ্চলে জৈন ধর্ম্মের সমধিক প্রাত্নভাবে হয়। ১১৬০ খৃষ্টাব্দের পর বাসব নামে একটি ব্রাহ্মণ-পুক্র ঐ ধর্ম্মের নিবারণ ও শিবারাধনা প্রচার উদ্দেশে উল্লিখিত জঙ্গম-সম্প্রদায় প্রবর্ত্তিত করেন। মহারাষ্ট্র দেশের অন্তর্গত বেলগম প্রদেশের মধ্যে ভাগোয়ান-গ্রামনিবাসী একটি শৈব ব্যাহ্মাণের বংশে তিনি জন্ম গ্রহণ করেন এবং ঐ সম্প্রদায় সংস্থাপন ও তৎসংক্রোন্ত নানা কার্য্য সাধন করিয়া ১১৬৮ খৃষ্টাব্দে মৃত্যু মুখে পতিত হন। বাসবপুরাণ নামে এক খানি পুরাণে তাঁহার চরিত্র-বর্ণনা আছে। জঙ্গমেরা সেই পুরাণ ও অন্য জন্য সাম্প্রদায়িক গ্রন্থানুসারে তাঁহাকে শিব-বাহন নন্দীর অবভার বলিয়া বিশ্বাস করেন ণ।

^{*} Wilkinson, Vol. II. p. 283.

[†] पिक्तगांभाष भिव-वाहम द्रावत व्यक्त একটি नाम नन्ती विनिन्ना প্রাসিদ আছে। ভল্ল, कंडमभं देवि नासा गन्दी प्रकीत्तितम्।

निकार्कनण्ड विजीव गरेन।

এইরপ লিখিত আছে যে, উপনয়নের সময়ে সূর্য্যোপাসনা করিতে হয় বলিয়া, বাসব বাল্যকালে যজ্ঞোপবীত গ্রহণ করিতে অশ্বীকার করেন এবং বলেন, আমি শিব ভিন্ন অন্য গুরুর উপদেশ গ্রহণ করিব না। পশ্চাৎ তিনি একটি অভিনব উপাসক-সম্প্রদায় প্রবর্ত্তিত করিতে প্রবৃত্ত হন।

বাসব হিন্দু ধর্ম্মের অন্তর্গত অনেকানেক বিষয় নিতাস্ত ভ্রান্তিমূলক জানিয়া একবারে পরিত্যাগ করেন। সূর্য্য, অগ্নিও অন্য অন্য
দেব দেবীর পূজা, জাতি-ভেদ, মরণোত্তর যোনি-ভ্রমণ, ব্রাহ্মণেরা ব্রহ্মান ও শুদ্ধাত্মা এই চুইটি কথা, অভিসম্পাতের আশকা, প্রায়শ্চিত, তীর্থ-ভ্রমণ, স্থান-বিশেষের মাহাত্ম্য, জ্রীলোকদের অপ্রাধান্য ও অপদস্থতা, নিকট-সম্পর্কীয় কন্যার পাণিগ্রহণ প্রতিষেধ, গঙ্গাদি তীর্থ-জ্ঞল সেবন, ব্রাহ্মণ ভোজন ও উপবাস, শৌচাশোচ, স্থলক্ষণ, কুলক্ষণ, অস্থ্যেষ্টি-ক্রিয়ার অত্যাবশ্যকতা এসমস্তই তিনি ভ্রমাত্মক বলিয়া অগ্রাহ্মকরেন।

বাসব ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র লিঙ্গ-মূর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া স্ত্রী পুরুষ :উভয় জাতীয় শিষ্য-গণের হস্তে ও গল-দেশে ধারণ করিতে উপদেশ দেন। তাঁহার মতে, গুরু, লিঙ্গ, জঙ্গম * এই তিনটি মাত্র পরমেশ্বর-কৃত পবিত্র পদার্থ। ঐ লিঙ্গ ব্যভিরেকে ইহারা বিভৃতি ও রুদ্রাক্ষ এই তুইটি শৈব-চিহ্নও ব্যবহার করিয়া থাকে।

এই সম্প্রদায়ের মধ্যে দ্রী পুরুষ উভয় জাতিরই গুরুত্ব-পদ গ্রহণের অধিকার আছে। দীক্ষা-কালে গুরু শিষ্যের কর্ণ-কুহরে মদ্রোপদেশ করেন এবং তাহার গল-দেশে কিম্বা হল্তে লিক্স-মূর্ত্তি বান্ধিয়া দেন। গুরুর পক্ষে মদ্য মাংস ও তাম্বূল ব্যবহার নিষিদ্ধ।

বাসব নিজ সম্প্রদায়ের মধ্যে বিধবা-বিবাহ প্রচলিত করেন। এ

^{*} अम्छानात्री त्नाक।

বিষয়টি ভাল বটে, কিন্তু ইহাদের মধ্যে অন্য একটি জঘন্য রীতি চলিয়া গিয়াছে। দক্ষিণাপথের দক্ষিণপশ্চিমাঞ্চলের কোন কোন স্থানে উদ্বাহ-বিষয়ে একটি কুপ্রথা প্রচলিত আছে। তথায় বিবাহের পর স্ত্রী নিজ্প পতির সহিত সহবাস না করিরা স্বেচ্ছামুসারে অন্যান্য পুরুষে অমুরক্ত হয়। সেই সেই অঞ্চলের জঙ্গমেরাও হিন্দু ধর্ম্ম অগ্রাহ্ম করিবার উদ্দেশে এই কোতুকাবহ স্থণিত রীতির অমুকরণ করিয়াছে।

বাসব নিজ সম্প্রদায়ের মধ্যে শব-দাহ-প্রথা পরিত্যাগ ক্রিয়া শব-খননের প্রথা প্রচলিত করিয়া দেন। সহমরণের রীতি অনুসারে বিধবা-দিগকে জীবিত দক্ষ করিবার নিয়ম ছিল, তিনি তাহার পরিবর্ত্তে তাহা-দিগকে জীবিত খনন করিবার প্রথা প্রবর্ত্তিত করেন।

এক্ষণে জন্সমেরা সর্বাংশে বাসবের নিয়মানুসারে চলে না। পূর্বেই লিখিত হইয়াছে, তিনি তীর্থ-ভ্রমণ অনাবশ্যক বলিয়া উপদেশ দেন, কিন্তু তাঁহার সম্প্রদায়ী লোকে শিবরাত্রি-ত্রত পালন করে ও সচরাচর শ্রীশৈলে ও কালহস্তী প্রভৃতি শৈব-তীর্থে যাত্রা করিয়া থাকে।

ইহারা দক্ষিণাপথের কোন কোন শিব-মন্দিরের পূজারীর পদে
নিযুক্ত থাকে। অনেকে কেবল ভিক্ষা করিয়া জীবন-যাত্রা নির্বাহ
করে। কতক লোকে হস্তে ও পদে ঘণ্টা বন্ধন করিয়া ভ্রমণ করে;
গৃহস্থ লোকে তাহার ধ্বনি শুনিয়া তাহাদিগকে নিজ গৃহে অহ্বান করে,
অথবা পথের মধ্যে আসিয়াই ভিক্ষা দিয়া যায়। আবার, স্থানে স্থানে
ইহাদের মঠ বিগুমান আছে; অনেকে তথার পরিচারক-স্বরূপ অবস্থিতি
করে। মঠ-স্থামীরা কতকগুলি শিষ্য রাখেন ও মৃত্যু-কালে তাহার
মধ্যে এক ব্যক্তিকে আপনার উত্তরাধিকারী করিয়া যান। *

^{*} দাক্ষিণাত্য লিঙ্গায়ৎ জন্স সম্প্রদায় সংক্রাম্ত অনেক কথাই শ্রীমান্ বকানন্-প্রণীত মাইদোর দেশের বৃত্তাম্ভের প্রথম থণ্ড এবং রয়েল এসিয়াটিক্ সোসাইটির জর্ণেলের পঞ্চম খণ্ডের প্রথম ভাগের ষষ্ঠ প্রথম হইতে সঙ্কলিত হইয়াছে।

ভারতবর্ধের দক্ষিণ-পশ্চিম-স্থিত কর্ণাট প্রাদেশে এই সম্প্রদায় ক্রমশ: প্রাত্নভূতি হইয়া মহারাষ্ট্র, গুজরাট্, তামিল ও তেলিগু দেশে বিস্তৃত হইয়া পড়িয়াছে। ভারতবর্ধের উত্তর খণ্ডে এ সম্প্রদায়ের লোক অভি বিরল। কাশীর কেদারনাথের পাণ্ডারা জঙ্গম। উহার অন্তর্গত একটি স্থানে ভাহাদের বাস আছে বলিয়া সেই স্থানের নাম জঙ্গমবারী হইয়া গিয়াছে।

তেলুগু, কনর প্রভৃতি দাক্ষিণাত্য ভাষায় ইহাদের অনেক গ্রন্থ বিদ্যমান আছে। মেকেঞ্জী সাহেব ঐ অঞ্চল হইতে যে সমস্ত গ্রন্থ সংগ্রহ করেন, তাহার মধ্যে বাসবেশ্বর পুরাণ, পণ্ডিতারাধ্যচরিত্র, বাস্থনা পুরাণ, চের্মবাসব পুরাণ, প্রভূলিঙ্গলীলা, সরমূলীলাম্ভ, বিরক্তরুক কাব্য প্রভৃতি এ সম্পুদারের অনেক পুস্তক প্রাপ্ত হওয়া যায়। ভারতবর্ধের পশ্চিমোত্তর প্রদেশে দেশ-ভাষায় ইহাদের কোন গ্রন্থ পাওয়া যায় না। ঐ প্রদেশে ব্যাসক্ত বেদাস্তস্ত্রের নীলকণ্ঠ-রচিত ভাষাই এই সম্প্র-দায়ের একমাত্র প্রামাণিক গ্রন্থ বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে।

যাহারা কপর্দকাদি দারা সজ্জীভূত বুষ-বিশেষকে সঙ্গে লইয়া ভিক্ষা করিয়া বেড়ায়, তাহারাও অশু এক প্রকার জঙ্গম। এদেশের লোকে ঐ বুষকে বৈদ্যনাথের গরু বলিয়া থাকে। তাহাদের মধ্যে জনেকে বৈদ্যনাথ অঞ্চলে অবস্থিতি করে।

ভোপা।

ইহারা ভৈরবের উপাসক; তাঁহার প্রতিমূর্ত্তি রাখে ও অহরহ অর্চনা করিয়া থাকে। ইহারা কেশ ও শাশ্রু রাখে, ললাটে সিন্দূর ধারণ করে এবং কোমরে বড় বড় যুঙ্গুর বাঁধিয়া ও কেহ কেহ পায়ে লোহার জিজির দিয়া নৃত্য ও ভৈরবের গুণ-কীর্ত্তন পূর্বক ভিক্ষা করিয়া বেড়ায়।

ইহারা পশ্চিমোত্তর প্রদেশেই অবস্থিতি করে, কখন কখন কলিকাতার মধ্যেও দৃষ্ট হইয়া থাকে। ইহাদের মধ্যে গৃহস্থ ও উদাসীন উভয়ই আছে।

দশনামী-ভাট।

ইহারা দশনামীর অন্তর্গত নয়, কিন্তু তাহাদেরই নিকট ভিক্ষা করিয়া অর্থোপার্চ্জন করে। দশনামী ভিন্ন অন্তের দান প্রহণ করে না। এইরূপ প্রবাদ আছে যে, পূর্বের ইহারা সকলের নিকটেই ধন পরিপ্রহ করিত, পরে নেতাল ভাট নামে একটি ভাট হইতে তাহা রহিত হইয়া যায়।

এদেশীয় ঘটকের। যেমন কায়ন্ত ও প্রাক্ষণের বংশ-পরম্পরাদির বিবরণ রাখে, ইহারা সেই রূপ দশনামী সন্ধ্যাসীদের শিষ্য-পরস্পরাদির বৃত্তান্ত রাখিয়া থাকে ও প্রয়োজন হইলে প্রকাশ করিয়া দেয়। ইহাই ইহাদের প্রধান বৃত্তি। ইহারা মদ্য-পায়ী; এক এক সময়ে অভিরিক্ত পান করিয়া থাকে। ইহারা গৃহন্ত; পশ্চিমোত্তর প্রদেশে বাস করে এবং মধ্যে মধ্যে অশ্বাদি সঙ্গে লইয়া তীর্থ-শ্রমণ করিতে থাকে। কার্ত্তিক ও পৌষ মাসের শেষে গঙ্গাসাগর-যাত্রার সময়ে কলিকাভায় ও ভোটবাগা প্রোয়ই দৃষ্ট হইয়া থাকে।

ইহারা শিব-ভক্ত বটে, কিন্তু সরস্বতীকে সমধিক মান্য করিয় থাকে। অগ্রে তাঁহার অর্চনা করিয়া পশ্চাৎ শিব-পূজা করে।

চন্দ্ৰ-ভাট।

দশনামী ভাঁটের বিষয় লিখিতে গিয়া আর এক প্রকার ভাঁটের কথা শ্মরণ হইল। তাহাদের নাম চন্দ্র-ভাঁট। তাহারা ভিক্কক-বিশেষ বই আর কিছুই নয়; তবে যখন কাণিপা প্রভৃতি ভিক্ক্কের বৃত্তাস্ত শ্বতন্ত্র লেখা হইয়াছে, তখন এই ভাঁটদের প্রসঙ্গ করাও অসঙ্গত না হইতে পারে।

ইহারাও শিব-ভক্ত; উপস্থিত মতে শিব ও কালীর পূজা দিয়া থাকে। ইহারা গৃহস্থ; কাশী জেলা, পাটনা জেলা প্রভৃতি পশ্চি-মোত্তর অঞ্চলের নানা স্থানে বাস করিয়া থাকে। শীতকালে পরিবার সঙ্গে করিয়া ও গো, মেষ, ছাগল, বানর, কুকুর, গর্দ্দভ এবং কেহ কেহ অশ্ব সমন্তিব্যাহারে লইয়া দেশ দেশাস্তর ভিক্ষায় গমন করে। এই রূপে যাহা কিছু উপার্ভ্জন করিতে পারে, তদ্দারা সংসার নির্ব্বাহ করে। অনেকে গৃহে প্রত্যাগমন করিয়া কৃষি-কার্য্যাদিও করিয়া থাকে।

ইহারা প্রবাসে গিয়া যেদিন যে স্থানে অবস্থিতি করে, তথায় টোল অর্থাৎ কুটার প্রস্তুত করিবার মত সামগ্রী সকল সঙ্গে সঙ্গে রাখে। গরুগুলিতে দ্রব্য-জাত লইয়া যায়, এবং কুকুরে রাত্রি-কালে চৌকি দেয়। ইহারা যথন ভিক্ষায় যায়, বানর ও ছাগলকে লোকের নিকটে নৃত্যাদি করাইয়া ভিক্ষা গ্রহণ করে। ইহারা অভিশয় নিকৃষ্ট লোক; সচরাচর মদ্য মাংস ব্যবহার করিয়া থাকে।

শক্তি।

শক্তির অর্থাৎ শিব-ভার্য্যার উপাসকদের নাম শাক্ত। তন্ত্র-শাস্ত্র এই সম্প্রদায়ের বিধি-নিষেধ-বিস্তারে পরিপূর্ণ। তন্ত্রোক্ত উপাসনা বৈদিক উপাসনার মত নয়। তান্ত্রিক উপাসকেরীর দেবতার প্রতিমূর্ত্তি নির্ম্মাণ করিয়া মন্ত্র দ্বারা তাঁহার প্রাণ-প্রতিষ্ঠা পূর্বক তাঁহাকে সজীব সাক্ষাৎ দেবতা-জ্ঞানে আহ্বনে করেন,ও পাছ, অর্থ্য, স্নানীয়, গন্ধ, নৈবেদ্য, পরিধেয় বন্ত্রাদি প্রদান করেন,ও অধিকারি-বিশেষে মদ্য, মাংসাদি নিবেদন দ্বারা তাঁহার অর্চনা করিয়া থাকেন।

শক্তি অর্থাৎ কালী তারা প্রভৃতি শিব-শক্তিই শাক্ত-সম্প্রদায়ের উপাস্ত। কিন্তু সকলের ইন্ট-দেবতা এক নয়; গুরু-শিষ্য-প্রণালী ক্রেমে বিশেষ বিশেষ দেবতা বিশেষ বিশেষ ব্যক্তির ইন্ট-দেবতা বলিয়া উপদিন্ট হন'। কেহ কালী, কেহ বা তারা, কেহ বা জগন্ধাত্রী, কেহ বা অন্ত দেবতার থাকেন।

তান্ত্রিক উপাসনায় গুরু-শিষ্য-প্রণালী একটি পরম প্রয়োজনীয় পবিত্র বিষয়। অতএব কিরূপ লোকে গুরু ও শিষ্য হইবার অধিকারী, তাহা সকলের অবগত হওয়া মন্দ নয়।

> यस् खात्तु महामन्त्रः श्रूयतेऽभ्यस्वतेऽपि वा । स गुरुः परमोन्नेयस्तदान्ता सिद्धिदायिनी ॥ लिक्षना छ्यः।

বাঁহার মুথে মহামন্ত্র শুনিতে পাওয়া যায় ও শুনিয়া অভ্যাস করা হয়, তিনি পরম শুরু জানিবে। তিনি যাহা আজ্ঞা করেন তাহাই সিছি-দায়ক।

> सर्वभास्त्रपरीदत्तः सर्वभास्त्रार्थं वित् सदा। सुवचाः सुन्दरः साङ्गः कुलीनः सभदम् नः॥

जितेन्द्रियः सत्यवादी ब्राह्मणः शान्तमानसः । पित्रमात्रिक्ति युक्तः सर्व्यकर्मपरायणः । भात्रमी देशस्थायी च गुक्रिवं विधीयते ॥ विश्वताद्वर विशेष विशेष

ষিনি সর্ক-শাস্ত্র-পরায়ণ, নিপুণ, সর্ক-শাস্ত্রজ্ঞ, মিইভাষী, ত্মলর, সর্কাবয়ব-সম্পার, কুলাচার-বিশিষ্ট, হৃদ্ৠ, জিতেক্সিন্ন, সভ্যাদী, যথা-লক্ষণাক্রান্ত আক্ষণ, শাস্ত, পিতৃ-মাতৃ-হিতকারী, সর্ক-কর্ম-পরায়ণ, আশ্রমী এবং খনেশ-স্থায়ী, তাঁহা-কেই শুক্র করিবে।

मतीहि मनुजं लुखं दुष्टं शिष्योहि संखर्जित्। सर्व्वेषां भवने सत्यं ज्ञानाय गुरुरेव हि॥ ज्ञानाक्योक्तमवाप्नोति तक्यान्जानं परात् परम्। मतोयोज्ञानदानं हि न क्षमेत्तं त्यजित् गुरुम्॥ मधुलुख्योयया सङ्गः पुष्पात् पुष्पान्तरं व्रजित्। ज्ञानलुख्यस्तया शिष्योगुरोर्गुर्व्वन्तरं व्रजित्॥ कामालाव्यस्तया शिष्योगुरोर्गुर्व्वन्तरं व्रजित्॥

লোভাদি-দোৰ-যুক্ত গুরুকে ভ্যাগ করিবে। ভূমগুলে জ্ঞানলাভার্থেই সকলের গুরুর প্রয়োজন হয়, জ্ঞান ধারা মুক্তি লাভ করা যায়, এই হেতু জ্ঞান সর্বাণেক্ষা শ্রেষ্ঠ। অভএব বে গুরু জ্ঞান-দানে অপক্ত, ওাঁহাকে পরিভ্যাগ করিবে। শ্রমর যেরূপ মধু-লোভে পূপো পূপো শ্রমণ করে, শিব্যে সেইরূপ জ্ঞান-সুরু হইরা ভিন্ন ভিন্ন গুরুকে অবলঘন করিবে।

কিরূপ লোকে শিষা হইবার অধিকারী ভাহাও লিখিত আছে।

शिष्यः क्षसीनः शुकात्मा प्रक्रवार्षः परायणः ।
प्रधीतवदः क्षश्रकोदूरमुक्तमनोभवः ॥
क्रितेषो प्राणिनां नित्यमास्तिकस्त्राक्तनास्तिकः ।
स्वथकानिरतोभक्ता पिष्टमाद्वकितोद्यतः ॥

वाक्सन:कायवस्रभिर्गुरुष्य्ये रतः । एतादृश्यगुणोपेतः शिष्योभवति नापरः॥ गात्रगारिनक विष्ये गरेन।

ষে ব্যক্তি সদ্বংশ-জাত,শুদ্ধ-চিন্ত, পুরুষার্থ-পরারণ, বেদ-পারগ, নিপুণ, জিত-কাম, সর্ব্ব প্রাণীর নিত্য হিতৈষী, আন্তিক, নান্তিক-সম্পর্ক-বিবর্জ্জিত, অধর্মেরত, ভক্তি পূর্বক পিতামাতার হিতামুরক্ত, কায়,মন, বাক্য ও ধন দ্বারা শুক্ষ-শুমাতে নিযুক্ত, সেই ব্যক্তি শিষ্য হইবার অধিকারী; অন্ত কেই নর।

चतुर्भिरायौः संयुक्तः श्रष्ठावान् सुस्थिराशयः । भलुव्यः स्थिरगात्रस्य प्रेष्ठाकारी जितेन्द्रियः ॥ भास्तिकोद्दर्भिक्तस्य गुरी मन्त्रे च दैवते । एवम्बिधोभवेत् श्रिष्यस्थितरोदुःखक्तद्गुरोः ॥ कूनभूगावडात्रकक्षत्रव-विका

বে ব।ক্তি শ্রদ্মাদি-যুক্ত, শ্রদ্ধাবান্, বিরাশয়, লোভ-রহিত, হির-বভাব, দূর-দর্শী, লিভেন্সিয়, আডিক, গুরু, মন্ত্র ও দেবভাতে দৃঢ়-ভক্তি-বিশিষ্ট, দেই ব্যক্তি শিব্য হুইবার অধিকারী; অক্সরণ শিব্য গুরুর ক্লেশ-দারক।

উক্তরপ লক্ষণাক্রান্ত দেখিয়া গুরু-শিষ্য-গ্রহণ করা যত হইয়া থাকে, তাহা কাহারও অবিদিত নাই। প্রত্যুত, শাস্ত্রামুসারে যেরূপ লোকে গুরু ও শিষ্য হইবার নিতান্ত অন্ধিকারী তাহাই অধিক। তাহা না হইলেই বা কি হয় ? যথোক্ত লক্ষণ অমুসন্ধান করিলে গুরু ও শিষ্যের পদ এক বারে লোপ পাইয়া যায়।

গুরুর। শিষ্যের দীক্ষা-কালে তাহার ইক্ট-দেবতার বিজ্ঞাপক স্বরূপ বীজ-মন্ত্র উপদেশ দেন। ঐ অসাধারণ মন্ত্রগুলি অভীব গুহু, এই নিমিন্ত তন্ত্রকারেরা তাহা গোপন রাখিবার উদ্দেশে কতকগুলি নৃতন শব্দ ও সম্ম কতকগুলি শব্দের নৃতন কর্থ স্থান্তি করিয়াছেন। সেই সেই শব্দের সেইরূপ অর্থ তন্ত্র ভিন্ন অশ্য কোন শাল্রে প্রাপ্ত হওয়া যায় না। এ স্থলে তাহার হুই একটি উদাহরণ প্রদর্শন করা যাইতেছে।

কালীবীজ।

वर्गाद्यं वक्किसंयुक्तं रतिविन्द्रसमन्वितम्।

বৰ্গান্ত শব্দে 'ক্', বহ্নি শব্দে 'রু', রতি শব্দে 'ঈ', এবং তাহাতে বিন্দু সংযুক্ত । এই সমুদ্দের উদ্ধার ধরো 'কোঁ' এই মন্ত্রটি নিষ্পার হয়।

जूरतभारतीयाज्ञ ।

नकुलीशोऽग्निमारुढ़ोवामनेवार्षचन्द्रवान् ।

নকুণীশ শব্দে 'হ', অগ্নি শব্দে 'র', বামনেত্র শব্দে 'ঈ', এবং অর্দ্ধ চক্র শব্দে '৺', এই সমুব্যের উদ্ধার ধারা হ্লাঁ এই মন্ত্রটি গ্রাপ্ত হওয়া যায়।

এই রূপে সমস্ত তান্ত্রিক দেবতার স্বতি তুর্বেবিধ গুল্ মন্ত্র সমুদায় উক্ত হইয়াছে। এ খলে উদাহরণ স্বরূপ কতকগুলি লিখিত হইতেছে। যেমন লক্ষীবীজ 'শ্রী'। তারাবীজ 'হ্রী' দ্রী' হুঁ ফট্'। তুর্গাবীজ 'ওঁ হ্রী' দুঁ 'তুর্গায়ৈ নমঃ'। বাগীখরীবীজ 'বদ বদ বাথাদিনী স্বাহা'। পারিজাভসরস্বতীবীজ 'ওঁ হ্রী হৈন্য' ওঁ হ্রী সরস্বত্যৈ নমঃ। মহালক্ষীবীজ 'ওঁ প্রী' শ্রী ক্রী হেন্য' জগৎপ্রসূত্যৈ নমঃ'। শ্যাশানকালিকাণবীজ 'ওঁ হ্রী' শ্রী ক্রী কালিকে প্রশ্রী শ্রী ক্রী'। শ্যামাবীজ 'ক্রী' জ্রী' জালিকে প্রশ্রী শ্রী ক্রী'। শ্যামাবীজ 'ক্রী' জ্রী' জালিকে প্রশ্রী শ্রী ক্রী'। শ্যামাবীজ 'ক্রী' জ্রী' ক্রী' কালিকে ক্রী ক্রী' ক্রী' ক্রী হুঁ হুঁ হ্রী হ্রী স্বাহা'। ভদ্রকালীবীজ 'হেনি কালি মহাকালি কিলি কিলি কট্ স্বাহা'। মহাকালীবীজ 'ওঁ ক্রে" ক্রেল ক্রোল গেলাকৈ ক্রী' 'হসর্বাই'। নিত্যাভৈরবী বীজ 'হসকলরডে' 'হসকলরডিং' 'হসকলরডিং' 'হসকলরডি'। ক্রুভিরবীবীজ 'ইসকলরডি' 'হসকলরডিং' 'হসকলরডিল লিনিবীজি 'উচ্ছফ্ট-

চাণ্ডালিনী স্থমুখী দেবী মহাপিশাচিনী হীঁ ঠাঁ: ঠাঁ: ঠাঁ: ঠাঁ। চিটী দেবভাব বীজ 'ওঁ চিটি চিটি চাণ্ডালি মহাচাণ্ডালি অমূকং মে বশমানয় স্বাহা'।

विश्विष विश्विष्ठ विष्ठ विश्विष्ठ विश्विष्ठ विश्व विश्व विश्विष्ठ विश्व विश्व विश्व व

তন্ত্রের মধ্যে সমৃদয় দেবতার বীজ বিস্তারিত-রূপে লিখিত আছে, কিন্তু এদেশীয় শাক্ত-সম্প্রদায়ীদের অধিকাংশেই জগদ্ধাত্রী মত্ত্রে উপ-দিইট হন। আর তারা, অন্নপূর্ণা, ত্রিপুরা, এবং ভূবনেশ্বরী-মন্ত্রেও কতক লোকে দীক্ষিত হয়। এক এক দেবতার বিবিধ প্রকার বীজ, তন্মধ্যে অধিক লোকে একাক্ষর মন্ত্রেই উপদিষ্ট হইয়া থাকে।

শব্দ কর্থ

থপুন্প রন্ধবা ত্রীলোকের রন্ধ।

থয়স্থ পূন্দ বিধ্বা ত্রীলোকের রন্ধ।

ব্যাহন্দ পূন্দ বিধ্বা ত্রীলোকের রন্ধ।

বন্ধন্দ বন্ধন বন্ধন।

বন্ধন বন্ধন বন্ধন।

বন্ধন বন্ধন বন্ধন।

বন্ধন বন্ধন বন্ধন।

বন্ধন বন্ধন বন্ধন বন্ধন।

বন্ধন বন্ধ

কোন কোন গুপ্ত বিষয় বিজ্ঞাপনার্থ তল্পে কভকগুলি সাহ্বেভিক শব্দ ব্যবহাত হইয়াছে। পশ্চাৎ কয়েকটি লিখিত হইতেছে, বয়য়ৢ কুয়য় ভায়য়য় একটি।

পশ্বাচারী ও বীরাচারী।

শক্তি-উপাসকেরা পশুভাব ও বীরভাব ক্রমে চুইটি প্রধান সম্পুদায়ে বিভক্ত , পশাচারী ও বীরাচারী। পশুভাব ও পশাচারের সহিত
বীরভাব ও বীরাচারের বিশেষ এই ষে, বীরভাবে ও বীরাচারে মন্তমাংসের ব্যবহার আছে, পশুভাবে ও পশাচারে তাহা নিষিদ্ধ।

কুলার্ণবে ঐ তুই প্রধান আচারকে বিভাগ করিয়া সাত প্রকার আচার নিষ্পন্ন করা হইয়াছে।

> सर्व्वभगसोत्तमा वेदा वेदेभगो वैष्यवं महत्। वैष्यवादुत्तमं श्रेवं श्रेवाइचिष्यमुत्तमम्॥ दचिषादुत्तमं वामं वामात् तिष्ठान्तमुत्तमम्। सिष्ठान्तादुत्तमं कीलं कीलात् परतरं न हि॥ कूनार्व १७०४ ।

সর্বাপেকা বেদাচার * উত্তম, বেদাচার অপেকা বৈক্ষবাচার উত্তম, বৈক্ষবা-চার অপেকা শৈবাচার উত্তম, শৈবাচার অপেকা দক্ষিণাচার উত্তম, দক্ষিণাচার

वेदाचार प्रवस्थामि ग्रण सम्बाह सुन्दरि ।
बाह्ये मुहत्तें उत्थाय गृवं नता खनामितः ॥
बानन्दनाथश्रन्दानः प्रविदय साधकः ।
सहसारान्तुजे ध्याला उपचारैस् प्रचितः ।
प्रजय वान्यवन्तीनं चिन्तयेत् परमाङ्खाम् ॥ द्यादि ।
निष्ठां एज ।

সর্কালস্থার ! বেদাচার প্রকাশ করি, শ্রবণ কর। সাধক আছ-মৃত্র্তে গালোখান পূর্বক, গুলুর নামান্তে আনন্দনাণ এই শব্দ উচ্চারণ করিয়া তাঁহাকে

দেচাচার শব্দে এখানে বৈদিক কর্মের অমুষ্ঠান নয়; তত্ত্বে আচার-বিশেষ বেলাচার বলিয়া উক্ত ইয়াছে।

ব্দপেকা বামাচার উত্তম, বামাচার অপেকা দিলান্তাচার উত্তম, সিলান্তাচার অপেকা কৌলাচার উত্তম, কৌলাচারের পর আর নাই।

এই সকল আচার কিরূপ, তন্তে তাহা সবিশেষ লিখিত আছে; ক্রেমশঃ বিবরণ করা যাইতেছে।

বৈষ্ণবাচার।

वेदाचारक्रमेणैव सदा नियमतत्पर:।
मैथुनं तत्कथालापं कदाचिन्ने व कारयेत्॥
हिंसां निन्दाञ्च कीटिल्थं वर्ष्क्ययेनांसभीजनम्।
रात्री मालाञ्च यन्त्रञ्च स्पृथेने व कदाचन॥

নিত্যাতন্ত্র; প্রথম পটল।

বেদাচারের ব্যবস্থানুসারে সুর্বাদ। নিয়মিত কার্য্য করিতে তৎপর থাকিবে। কদাচ মৈথুন ও তৎসংক্রান্ত কথার জন্ধনাও করিবে না। হিংসা, নিন্দা, কুটিলভা, ঘাংস-ভোজন, রাত্রিতে মালা ও যন্ত্রস্পর্শ এই সমুদার পরিত্যাগ করিবে।

শৈবাচার।

वेदाचारक्रमेणैव भैवे भाक्ते व्यवस्थितम् । तद्विभेषं महादेवि केवलं पश्चातनम् ॥

নিভ্যাতন্ত্র; প্রথম পটল।

বেদাচারের নিয়মানুসারে শৈব ও শক্ত্যাচারের ব্যবস্থা করা হইয়াছে । মহা-দেবি ৷ শাক্তের বিশেষ এই যে, ভাহাতে পশু-হত্যার বিধান আছে i

দক্ষিণাচার।

वेदाचारक्रमेणैव पूजयेत् परमेखरीम् । स्रोक्तस्य विजयां रात्री जपेनान्त्रमनन्यधीः॥

নিত্যাতন্ত্ৰ; প্ৰথম পটন।

প্রণাম করিবে, সহস্রারপল্মতে ধ্যান করিরা পঞ্চ উপচার ঘারা পূজা করিবে এবং বাগ্ডব বীজ অর্থাৎ ঐ মন্ত্র জপ করিরা পরম কলা শক্তিকে চিকা করিবে। ইভ্যাদি। বেদাচারের নির্মান্সারে ভগবতীর পূলা করিবে এবং রাত্রিযোগে বিজয়া গ্রহণ করিয়া ভদ্গভ-চিত্তে মন্ত্র জপ করিবে।

বামাচার।

पञ्चतत्त्वं खपुष्पञ्च पूज्येत् कुलयोषितम् । वामाचारोभवेत्तत्व वामा भूत्वा यजेत् पराम् ॥

মাচারভেদ; ভন্ত।

কুনস্ত্রীর পূজা করিবে; তাহাতে মদ্য-মাংসাদি পঞ্চতত্ব * ও থপুপা † ব্যব-হার করিতে হইবে ইবা হইলে বামাচার হইবে। বামা-অরুপা হইরা প্রমা শক্তির পূজা করিবে।

সিদ্ধান্তাচার।

श्रदाश्रदं भवेत् श्रदं शोधनादेव पार्व्वति । एतदेव महेशानि सिद्वान्ताचारलच्चणम् ॥

নিভ্যাভন্ত"; প্রথম পটন।

পাৰ্ব্বতি ! শুদ্ধ কি অশুদ্ধ সকল জ্বব্যই শোধন দারা শুদ্ধ হইয়া থাকে। মহেশানি ! সিদ্ধান্তাচারের এই লক্ষণ।

> देवपूजारतोनित्यं तथा विश्वपरोदिवा। नक्तं द्रव्यादिकं सब्वं यथालाभेन चोत्तमम्॥ विधिवत् क्रियते भक्त्या स सर्वेश्व फलं लभेत्॥

> > সমরাচারভন্ত; বিভীর পটন।

যে ব্যক্তি অহরহ দেব-পূজার অনুরক্ত থাকিয়া এবং দিবা-ভাগে বিষ্ণু-পরারণ হইরা রাজি-কালে সাধ্যামুসারেও ভক্তি-সহকারে বথাবিধি মদ্যাদি দান ও সেবন করে, সেই সিদ্ধান্তাচারী সমস্ত কল প্রাপ্ত হইরা থাকে।

अमा, बारम, মৎসা মূলা, নৈথুন এই পাঁচকে পঞ্চতত্ত্ব বলে। কিছু পরেই এ

বিষয় লিখিত হইবে।

⁺ ३६२ शृष्टी (एवं।

কোলাচার।

কোলাচারের কোন নিয়ম নাই। স্থানাস্থান, কালাকাল, ও কুর্মাকর্মের কিছুমাত্র বিচার নাই।

दिकालनियमोनास्ति तिथ्यादिनियमोन च।
नियमोनास्ति देविशि महामन्यस्य साधने॥
कवित् शिष्टः कवित् भ्रष्टः कवित् भूतपिशाचवत्।
नानावेश्वधराः कौलाः विचरन्ति महोतले।
कईमे चन्दनेऽभिन्नं पुत्रे शत्रौ तथा प्रिये।
सम्प्राने भवने देवि तथैव काच्चने दृषे।
न भेदो यस्य देविशि स कौलः परिकौर्त्तिः॥

নিত্যাতর ; তৃতীর পটল।

মহামন্ত্র-সাধনে দিক্ও কালের নিরম নাই; তিথি ও নক্ষত্রাদিরও নিরম নাই। কোন স্থানে শিষ্ট, কুত্রাশি ভ্রষ্ট, কোথাও বা ভ্ত-পিশাচ-ভূলা এই প্রকার নানা বেশধারী কৌল সমুদায় পৃথিবীতে বিচরণ করেন। প্রিরে! কর্দম ও চলনে এবং পুত্র ও শক্ততে বাহার ভেদ-জ্ঞান নাই, আর দেবী! শ্মশান ও গৃহে এবং কাঞ্চন ও ভূবে বাহার প্রভেদবোধ নাই, সেই ব্যক্তি কৌল বলিরা বর্ণিত হইরাছে।

পূর্বেই উল্লেখ করা গিয়াছে, বীরাচারীদের সহিত পশাচারীদের বিশেষ এই যে, বীরাচারে মদ্য-মাংসের ব্যবহার আছে, পশাচারে ভাষা নিষিদ্ধ। কিন্তু উভয় আচারেই পশু-বলির বিধান আছে *। ফলভ:

साचिकीविवराख्याती मांसरकादिविक त:।

সময়াচারভন্ত।

तुक्रमारम्। पि-वर्ष्कि । विन माखिक विन विनेत्रा खेळ स्टेबाट ।

^{*} বলি ছুই প্রকার, রাজসিক ও সাধিক। মাংস-রক্তাদি-বিশিষ্ট বলিকে রাজসিক আর মৃদ্গ, পারস, ঘুত, মধু ও শর্করা-মুক্ত রক্ত-মাংসাদি-বর্জ্জিত বলিকে সাধিক বলি বলে।

পশু বলিদান, তল্পোক্ত শক্তি উপাসনার একটি প্রধান অঙ্গ। তদমুসারে গো. ব্যাম্র, মনুষ্য প্রভৃতি কোন জীবই পশু-বলির অযোগ্য নয়।

पिचणः कच्छपा ग्राहा मत्स्या नवविधा स्रगाः ।
महिषोगोधिका गावण्छागोवभ्रय ग्र्करः ॥
खद्भय कणासार्य गोधिका सरभो हरिः ।
गार्दृलय नर्यं व स्वगात्रक्षिरन्तथा ।
चण्डिकाभैरवादीनां वलयः परिकोक्तिताः ।
वलिभिः साध्यते सुक्तिर्व्वलिभिः साध्यते दिवम् ॥

কালিকা পুরাণ্।

পকী, কছেপ, কুজীর, মংস্ত, নয় প্রকার মৃগ, মহিষ, গোধিকা, গো, ছাগ, নকুণ, শুকর, গগুরে, ক্ষণার, সরভ, সিংহ, ব্যাঘ্র, মহুষ্য, স্বীয় শরীরের রক্ত এই সমুদার বস্ত, চণ্ডিকা-ভৈরবাদির বলি। বলি দার্গা মুক্তি-সাধন হয়, এবং বলি দারা স্বর্গ-সাধন হয়।

কালিকাদি পুরাণে ও সম্মান্য অনেক গ্রন্থে দেবাদির উদ্দেশে প্রাণি-বধের সবিশেষ ব্যবস্থা আছে বটে, কিন্তু কোন কোন শাস্ত্রে ইহা নরক-সাধন বলিয়া উক্ত হইয়াছে।

> मदर्थे शिव कुर्व्वन्ति तामसा जीवघातनम् । पाकस्यकोटि निरये तेषां वासो न संगय:॥

> > পত্ম পুরাণ।

পার্বতী কহিলেন, শিব ! যে সমস্ত তামস-গুণাবলম্বী ব্যক্তি আমার নিমিত্তে জীব-হত্ত্যা করে, কোটিকর পর্য্যন্ত তাহাদের নরক্বাস হয় তাহার সংশব নাই।

> उपदेष्टा वधे इन्ता कक्ती धर्का च विक्रयी। उत्सर्गकक्ती जीवानां सर्वेषां नरकं भवेत्॥

> > পদ্ম পুরাণ।

পশু-বলির উপদেষ্টা, হস্তা, কর্ত্তা ও ধারণ-কর্ত্তা, এবং পশু-বিক্রেতা ও উৎ-সর্গ কর্তা এই সকলেরই নরক-বাস হয়।

मिक्गांठाती।

যদিও তন্ত্রে উল্লিখিত সাত প্রকার আচারের লক্ষণ ও ব্যবস্থা নির্দ্ধপিত আছে, কিন্তু শাক্তাদিগের সচরাচর তুইটি মাত্র সম্প্রদায় দেখিতে ও
শুনিতে পাওয়া যায় দক্ষিণাচারী ও বামাচারী। গাঁহারা প্রকাশ্য ভাবে
বেদাচারের নিয়মক্রমে ভগবতীর অর্চনা করেন ও বামাচারীদের অ্ফুঠেয় মছ্য-ব্যবহার ও শক্তি-সাধনাদি না করেন, তাঁহাদের নাম দক্ষিণাচারী *। তাঁহারা হ্বরা গ্রহণ করেন না বটে, কিন্তু ইতি পূর্বের পশাচারের বিষয় যেরূপ লিখিত হইয়াছে, তদমুসারে ইচ্ছা ক্রেমে অল্প বা
বহু সংখ্যক বলিদানা করিয়া থাকেন। কাশীনাথ-প্রণীত দক্ষিণাচারভন্তরাক্রে তাঁহাদের কর্ত্ব্যাকর্ত্ব্যের স্বিশেষ বিবরণ আছে।

दिचणाचारतन्त्रोक्षां कर्मः तच्छुदवैदिकम्।

দক্ষিণাচারতম্বরাজ।

দক্ষিণাচারতৃল্পে যে ক্রিয়া-পদ্ধতি বর্ণিত হইয়াছে, তাহা বিশুদ্ধ ও বেদ-সম্মত।

বামাচারী।

মন্তাদি দান ও সেবন বামাচারীদের অবশ্যকর্ত্তব্যঞ্চ, তাহা না্ করিলে কোন প্রকারে সিদ্ধি-লাভ হয় না।

मर्चा मांसञ्च मत्स्यञ्च सुद्रा मेथुनमेव च। मकारपञ्चकञ्चेव मङ्गापातकनायनम्॥

প্রামারহন্ত।

মদ্য, মাংস, মংস্য, মুদ্রা 🖇 মৈথুন এই পঞ্চ মকারে মহাপাতক বিনাশ করে।

^{*} ১৬১ পৃষ্ঠা দেখ।

[†] ইতি পূর্বের রাজসিক ও সান্তিক এই ছই প্রকার বলির বিষয় লিখিত হই-য়াছে। তন্মধ্যে রক্ত-মাংসাদি বর্জিত সান্তিক বলি দেওয়াই দক্ষিণাচারতজ্ঞের সতে আন্মণের পক্ষে বিধেয়।

[‡] ३७२ मुझे ८एथ।

[§] লোকে মন্যের সহিত বে উপকরণ-সামগ্রী ভক্ষণ করিয়া থাকে, তাহার নাম মুদ্রা।

দিবসে এরূপ ব্যবহার করিলে উপহাসের আস্পদ হইতে হয়, এ নিমিন্ত রাত্রি-যোগে তাহার অমুষ্ঠান করিবার আদেশ আছে এবং তাহা গোপন রাখিবার উদ্দেশে কোলদিগকে কপট ব্যবহার করিবার ব্যবস্থা দেওয়া হইয়াছে।

रात्री कुलिक्यां कुर्यात् दिवा कुर्याच दैदिकीम्। दिवारात्री यजेत् देवीं योगी योगप्रभेदतः॥

নিকত্তর তন্ত্র, প্রথম পটল।

রাত্রি-যোগে কুলক্রিয়া এবং দিবাভাগে বৈদিক ক্রিয়া করিবে। এইরূপ ভিন্ন ভিন্ন যোগ করিয়া যোগী ব্যক্তি দিবারাত্র দেবীর অর্চনা করিবে।

> भन्त:शाक्ता विहःशेवा: सभायां वैश्ववा मता:। नानारूपधरा: कीला विचरन्ति महीतले ॥

অন্তরে শাক্ত, বাহিরে শৈষ, সম্ভা-মধ্যে বৈশুব এই রূপ নানাবেশধারী কৌল সমুদায় ভূমগুলে বিচরণ করিয়া থাকেন।

পূজা তুই প্রকার; বাহ্য পূজা এবং অন্তর্যাগ। গন্ধ, পুষ্প, ভক্ষ্য, পানীয় প্রদানাদি দ্বারা যে পূজা হয়, তাহাই বাহ্য পূজা, এবং চিৎরূপ পুষ্প, প্রাণরূপ ধূপ, তেজোরূপ দীপ, বায়ুরূপ চামর প্রভৃতি কল্লিভ উপচারাদি দ্বারা যে আন্তরিক সাধন, তাহার নাম অন্তর্যাগ। ষট্চক্রে-ভেদ এই অন্তর্যাগের প্রধান অক্ষ।

^{*} কাশীনাথতর্কপঞ্চানন-প্রণীত শ্যামানস্ভোষণ গ্রন্থে ছই প্রকার গৃহত্ব অবধৃতের বিষয় লিখিত আছে; অব্যক্ত ও বাক্ত। তন্মধ্যে অব্যক্তাবধৃতের লক্ষণ
উল্লিখিত শ্যামারহন্যের মতই লিখিত আছে, আর ব্যক্ত গৃহস্থাবধৃতের লক্ষণ এইরূপ বর্ণিত হইন্নাছে; যথা।

व्यक्तीऽव्यक्तीविधाव्यीभृवि चरति सुदा रक्तवस्वावताङः।

सिन्द्रीयञ्जलाट: शिवर्ष महसा र त्रामाखानुसिप:॥

গৃহস্থাবধৃত ছই প্রকার; ব্যক্ত আর অব্যক্ত। তন্মধো ব্যক্ত অবধৃত হর্ষযুক্ত, রক্ত বন্ধে আবৃত, ললাটে সিন্দ্র-যুক্ত, ভেজে শিব-শব্ধপ, রক্তবর্ণ-মালাবিশিষ্ট ও রক্তচ্লনাদি-সংযুক্ত।

তন্ত্রে ষট্টটক্রের বিষয় ষেরূপ বর্ণিত আছে, পশ্চাৎ লিখিত হই-তেছে। মেরুদণ্ডের তুই দিকে ইড়া ও পিঙ্গলা নামে তুইটি নাড়ী আছে। ঐ ইডার দক্ষিণে এবং পিঙ্গলার বামভাগে স্বস্তম্মা নাডী মস্তক পর্যান্ত ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছে। এই স্বস্থম্বা নাড়ীর মধ্যে বজ্রাখ্যা নাড়ী ও তাহার অভ্যন্তরে চিত্রিণী নামে একটি নাডী অবস্থিত আছে। শরীরের মধ্যে স্থান-বিশেষে সুস্কুম্বা নাড়ীতে গ্রাথিত সাভটি পদ্ম কল্পনা করা হই-য়াছে: আধার, স্বাধিষ্ঠান, মণিপুর, অনাহত, বিশুদ্ধ, আজ্ঞা ও সহস্র-দল। আধার-পদ্ম পায়-দেশের কিছ উর্দ্ধে স্থক্তমা নাড়ীতে সংলগ্ন। ভাহার চারিটি দল: সেই চারি দলে বং শং ষং সং এই চারিটি বর্ণ আছে। এই পলের মধ্যে ধরাচক্র নামে একটি চতুকোণ চক্র আছে, তাহার আট দিকে আটটি শূল। মধ্যস্থলে পৃথিবীবীঞ্চ লং এবং কর্ণিকা-মধ্যে একটি ত্রিকোণ যন্ত্র চিহ্নিত রহিয়াছে। এই পল্লের মধ্যে লিজ-রূপী মহাদেব অবস্থিতি করেন, এবং তাঁহার অমৃত-নির্গমন-স্থানে মুখ লগ্ন করিয়া সর্পক্ষপা কুগুলিনীশক্তি বাস করিয়া থাকেন: স্বাধিষ্ঠান পদ্ম লিঙ্গ-মূলে অবস্থিত। তাহার ছয়টি দল : সেই ছয়টি দলে বং ভং মং যং त्रः लः এই ছয়টি বর্ণ আছে। ঐ পদ্মের মধ্যম্বলে গোলাকুতি বরুণ-মগুল ও সেই মগুলের মধ্যে অদ্ধচন্দ্র: তাহাতে বং এই বর্ণ অঙ্কিত আছে। ঐ পল্লের মধ্যে বারুণী শক্তি স্থিতি করেন। মণিপুর পল্ল নাভিমূলে অধিষ্ঠিত। তাহার দশটি দল : সেই দশ দলে ডং ঢং ণং ডং थः पः धः नः शर कः এই प्रभंति वर्ग विश्विष्ठ आहि। औ शामात मधा-ত্বলে ত্রিকোণ অগ্নি-মণ্ডল। সেই ত্রিকোণের তিন পার্শ্বে স্বস্তিকাকার ভিনটি ভূপুর এবং মধ্যস্থলে রং এই বর্ণটি চিহ্নিত রহিয়াছে। এই পল্লের মধ্যে লাকিনী শক্তি অবস্থিতি করেন। অনাহত নামক পল্ল कारत व्यविष्ठ। जाहात चामभि मल: (मरे चामभ मतन कं: थ: ग: च: ৫: চ: চ: জ: ঝ: এথ: ট: ঠ: এই ছাদশটি বর্ণ অন্ধিত আছে। সেই

পদ্মের মধ্যে ছয় কোণ বিশিষ্ট বায়ু মগুল এবং তদ্মধ্যে যং বীক্ষ বিভ্যমান রহিয়াছে। সেই পদ্মে শিব ও কাকিনী শক্তি বাস করেন। বিশুদ্ধ নামক পদ্ম কণ্ঠ-দেশে অবস্থিত। উহার ষোড়শ দল; সেই বোড়শ দলে অং আং ইং ঈং উং উং ঋং ৠং ৯ং ৯ং এং ঐং ওং ঔং অং অঃ এই ষোড়শ বর্ণ লিখিত আছে। সেই পদ্মের মধ্যম্বলে গোলাকার চন্দ্র-মঞ্চল, এবং তাহার অভ্যন্তরে গোলাকৃতি নভোমগুল ও হং বীক্ষ বর্ত্ত-মান আছে। সেই পদ্মে শাকিনী শক্তি অধিবাস করেন। জন-মধ্যে আজ্ঞা নামক বিদল পদ্ম, তাহার ছই দলে হং ক্ষং এই ছই বর্ণ, তাহার মধ্যম্বলে ত্রিকোণাকৃতি শক্তি ও সেই শক্তির মধ্যে শিব অবস্থিতি করেন। এই পদ্মে হাকিনী শক্তি বাস করিয়া থাকেন। ইহার কিছু উদ্ধে প্রণবাকৃতি পরমাত্মা আছেন। তাহার উপরিজাগে চন্দ্রবিন্দু, তত্ত্ব-পরি শন্ধিনী নাড়ী, এবং সর্ব্বোপরি সহত্র দল পদ্ম। তাহার পঞ্চাশৎ দলে আকার পর্য্যন্ত সবিন্দু পঞ্চাশৎ বর্ণ আছে। এই পদ্মের মধ্যে গোলাকৃতি চন্দ্র-মণ্ডল, তত্মধ্যে ত্রিকোণ যন্ত্র, এবং সর্ব্ব-মধ্যে শিব-স্থানে পরম শিব অবস্থিতি করেন।

এইরূপ লিখিত আছে যে, সাধকে নিজ গুরুর উপদেশামুসারে শরীরশ্ব বায়ুর যোগে অগ্নির গতি দ্বারা কুগুলিনী শক্তিকে উদ্বেজিত করিবে। পরে 'হুঁ' এই বীজ উচ্চারণ পূর্ববক তাঁহাকে চেতন করিয়া চিত্রিণী নাড়ীর মধ্যগত পথ দিয়া মূলাধার অবধি আজ্ঞা পর্যান্ত হয় পদ্মকে এবং মূলাধার, অনাহত, আজ্ঞা এই তিন পদ্মে অবন্থিত তিন শিবকে ভেদ করিবে। অনন্তর কুগুলিনীকে সহত্র-দল কমলে শ্বাপন করিয়া তত্র-শ্বিত পরম শিবের সহিত সংযুক্ত করিবে। তাহার পর উভয়ের সৃহযোগ দ্বারা যে পরমায়ত গলিত হইবে, তাহা পান করিয়া ঐ পূর্বোক্ত কুল-পথ দ্বারা কুগুলিনীকে মূলাধার পদ্মে আনায়ন করিবে। এইরূপ অস্তর্যাগ-সাধনে প্রবৃত্ত যে সমস্ত বীরাচারী ব্যক্তি মদ্য-

মাংসাদি ধারা ভগবতীর অর্চনা করে, কুলতন্ত্রের মতে তাহারাই তাঁহার প্রিয় সাধক।

तयान्तर्यागनिष्ठा ये ते प्रिया देवि नापरे। समर्पयन्ति ये भक्त्या कराभ्यां पिषितासवम्॥

কুলার্থব।

সেইরূপ, যে সকল অন্তর্যাগ-নিষ্ঠ ব্যক্তি ভক্তি পূর্বক স্বহন্তে মদ্য-মাংস অর্পণ করেন, তাঁহারাই প্রিয়; দেবি ! ভড়িল কেহ প্রিয় নয় • ।

> सुरा यिताः थिवोमांसं तङ्गक्तोभैरवः खयम् । तयोरैक्यात् समुत्पन्न भानन्दोमोच एव च

कूनार्गव ।

সুরা শক্তি-স্বরূপ, মাংস শিব-স্বরূপ এবং ঐ শিব-শক্তির ভক্ত লোক স্বরুং ভৈষ্ব-স্বরূপ। এই ভিনের একত্র সংযোগ হইলে, আনন্দস্বরূপ মোক্ষের উৎপত্তি হয় ।

কৌল শাস্ত্রকারেরা নিজে মদ্যাদি গ্রহণ করিয়া তৃপ্ত হন নাই। অভ্য অভ্য
 সকল প্রকার উপাসককেই তাহা ব্যবহার করিবার ব্যবস্থা দিয়াছেন।

शैवे च वैणवे शाक्ती सीरे च गतदर्शने। बौडो पाग्रपते सांख्ये व्रतं कलासुखे तथा॥ सदचवामसिडान्तवैदिकादिषु पार्व्वति। विनालिपिश्रताभ्याच पूजनं विफलं भवेत्॥

কুলার্ব।

শৈৰ, বৈঞ্চব, শাক্ত, সৌর, বৌদ্ধ, পাশুপত, সাংখ্য, কলামুখ ব্রত, দক্ষিণা-চার, দার্শনিক, বামাচার, সিদ্ধান্তাচার এবং বেদাচারাদি সমুদর মতে মদ্য-মাংস ব্যতিরেকে পুরা করিলে সে পুরা নিক্ষণ হয়।

† মহুব্যের মনের ভাব সর্ব্বএই সমান। এই বিধি অনুসারে শান্তেরা বেরূপ মাংসকে শিব এবং মদ্যকে শক্তি মনে করিয়া ভোজন পান করেন সেইরূপ রোমান কেথোলিক নামক খ্রীষ্টার সম্প্রদায়ীয়া পিষ্টককে খ্রীষ্টের মাংস এবং মদ্যকে তাঁহার রক্ত বোধ করিয়া গ্রহণ করিয়া থাকেন। বীরাচারীরা মধ্যে মধ্যে চক্র করিয়া দেব-দেবীর সাধনা করেন, এ-প্রদেশে ইহা প্রসিদ্ধই আছে। এন্থানে স্ত্রী-চক্রের বৃত্তান্ত সঙ্কলিত হইতেছে, পাঠ করিলে সবিশেষ জানিতে পারা যাইবে। এইরূপ ব্যবস্থা আছে যে, সাধকেরা চক্রাকারে বা শ্রেণী ক্রমে আপন আপন শক্তির সহিত ললাটে চন্দন প্রলেপ করিয়া যুগ যুগ ক্রমে ভৈরব-ভৈরবী-ভাবে উপবেশন করিবে, এবং মধ্যস্থিত কোন স্ত্রীকে সাক্ষাৎ কালী বোধ করিয়া মত্যমাংসাদি দ্বারা তাঁহার অর্চ্চনা করিতে থাকিবে। কিরূপ স্ত্রী-লোককে ঐরূপ পূজা করিতে হয়, শাস্ত্রে তাহার বিবরণ আছে।

नटी कापालिकी विश्वा रजकी नापिताङ्गना।
ब्राह्मणी श्रूद्रकन्या च तथा गोपालकन्यका॥
मालाकारस्य कन्या च नवकन्याः प्रकीर्त्तिताः।
विश्रेषवैदग्धयुता सर्व्वापव कुलाङ्गना॥
रूपयीवनसम्पद्मा शीलसीभाग्यशालिनी।
पूजनीया प्रयक्षे न ततः सिष्टिर्भवेद्धवम्॥

গুপ্তসাধন তন্ত্র, প্রথম পটল।

মটন্ত্রী, কাপালী, বেশা, রন্ধকী, নাপিতের ভার্য্যা, ব্রহ্মণী, শৃক্তকন্তা, গোপ-কন্তা, মালাকার-কন্তা এই নয় প্রকার স্ত্রীলোক কুলকন্তা। বিশেষতঃ পর-পুরুষ-গামিনী বিদ্যা হইলে, সকল স্ত্রীই কুলস্ত্রী হয়। রূপবতী, যুবতী স্থালা ও ভাগ্যবতী স্ত্রীলোকের বন্ধ পূর্বক পূজা করিবে, তাহা হইলে নিশ্চিত সিদ্ধি-লাভ হইবে *।

^{*}রেবতীতত্ত্বে চণ্ডালী, যবনী, বৌদ্ধা, রন্ধকী প্রভৃতি চৌষ্টি প্রকার কুল-স্ত্রীর বিবরণ আছে। নিরুত্তরতম্রকার বলেন, ঐ সকল চণ্ডালী রন্ধকী প্রভৃতি শব্দ বর্ণ বা বর্ণসন্ধর -বোধক নয়; কার্য্য বা গুণের বিজ্ঞাপক। বিশেষ বিশেষ

ঐ চক্র-গত পর পুরুষেরাই ঐ সমস্ত কুলন্ত্রীর প্রকৃত পতি; কুল-ধর্ম্মে বিবাহিত পতি পতি নয়।

> पूजाकालं विना नान्यं पुरुषं मनसा स्प्रशित्। पूजाकाले च देविशि विश्लेव परितोषयेत्॥ উछत्र उन्न।

পূজা-কাল ভিন্ন অঞ্চ সময়ে পর পুরুষকে মনেতেও স্পর্শ করিবে না। দেবেশি! পূজা-কালে বেখ্যার ন্যায় সকলের পরিতোষ করিবে।

> षागमोत्तपतिः शक्ष्रागमोत्तपतिर्गुतः । स पतिः कुलजायास न पतिस विवाहितः ॥ विवाहितपतित्यागे दूषणं न कुलार्चं ने । विवाहितं पतिं नैव त्यजेद्देशेत्तकर्माणि ॥

আগমোক্ত পতি শিব-স্বরূপ; তিনিই গুরু। সেই পতি কুলস্ত্রীদিগের প্রকৃত পতি; বিবাহিত পতি পতি নয় : কুল-পূজায় বিবাহিত পতি ত্যাগ করিলে দোষ

হয় না। কেবল বেদোক্ত কর্ম্মে বিবাহিত পতিকে পরিত্যাগ করিবে না।

কার্য্যের অন্তর্ভান করিলে, সকল-বর্ণোদ্ভব ক্সাই ঐ সমস্ত বিশেষ বিশেষ নাম প্রাপ্ত হইয়া থাকে; বেমন

> पूकाद्रव्यं समालोका रजीऽवस्थां प्रकाशयेत्। सर्व्यवर्षोद्ववा रम्या रजकी सा प्रकीर्त्तता॥ भात्मानं गीपयेद या च सर्व्वदा पश्चक्रदे। सर्व्यवर्षोद्ववा रम्या गीपिनी सा प्रकीर्त्तता॥

পূঞা-দ্রব্য দেথিয়া যে কোন বর্ণোদ্ভবা কন্তা রজোহবস্থা প্রকাশ করে, ভাহাকে রক্ষকী বলে। যে কোন বর্ণোদ্ভবা রমণী পখাচারীর নিকটে আপনাকে গোপন করে, ভাহাকে গোপিনী বলা যায়।

সাক্ষাৎ কালী-স্বরূপা উক্ত কুলনারীর পূজা করিয়া মছা-শোধনাদি পূর্বক পান করিতে হয়।

> सिन्टूरतिलकं भाले पाणी च मदिरासवम् । काला पिवेद्गुकं ध्यायंस्तथा देवीश्व चिन्मयीम् ॥

> > প্রাণভোষিণী-ধৃত বচন :

ললাটে সিন্দুর-চিহ্ন এবং হত্তে মদিরাসৰ ধারণ করিয়া গুরু ও দেৰভার ধ্যান পূর্বাক পান করিবে।

হস্তে স্থরা-পাত্র ধারণ করিয়া তলগত ভাষে এইরূপ বন্দনা করিতে হয়।

> श्रीमद्गै रवशेखरप्रविलसचन्द्रास्त प्नावितं चित्राधीखरयागिनोसुरगणैः सिर्छैः समाराधितम् । घानन्दार्णवकं महात्मकमिदं साचात् तिखण्डासतं वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुजगतं पातं विश्विष्ठपदम् ॥ भागावश्य ।

মহাদেবের শির-স্থিত, চল্লের অমৃত দারা প্লাবিত, এবং ক্ষেত্রপাল, বোগিনী-গণ, দেবগণ ও নিদ্ধগণ কর্তৃক আরাধিত, এবং মহাত্ম-স্বন্ধপ,আনন্দ-সাগর, সাক্ষাৎ ত্রিখণ্ডামৃত, শুদ্ধি-প্রদায়ক ও হস্ত-কমল-স্থিত এই প্রথম পাত্রের বন্দনা করি।

এইরূপ বিশেষ বিশেষ মন্ত্র দ্বারা পাঁচবার পাত্রের বন্দনা করিয়া পাঁচ পাত্র গ্রহণ করিবে, পরে যে পর্যান্ত ইন্দ্রিয় সকল চঞ্চল না হয়, সে পর্যান্ত পান করিতে থাকিবে।

> यावत चलते दृष्टिय्यावत चलते मनः । तावत् पानं प्रकर्त्तव्यं पशुपानमतः परम् । প্রাণতোষিণী-ধৃত বচন।

বে পর্যাস্ত দৃষ্টি চঞ্চণ ও মন বিচলিত না হয়, সে পর্যান্ত পান করিবে। ভাছার পর পান করিলে পশু-পান করা হয় জানিবে। ইহার পর, চক্রীদের কল্যাণ ও ভদীয় বিপক্ষদের বিনাশ উদ্দেশে শাস্তি-স্তোত্র পাঠ করিবে, এবং ভদনস্তর আনন্দ-স্তোত্র পাঠ করিয়া অশু অশু কুল-কার্য্যের অমুষ্ঠান করিবে।

> पीत्वा मद्यं पठेत् स्तोत्नं साधकः कुलमैरवः। कुलस्त्रीसङ्गनिरतः कुलकार्य्यं समाचरेत्॥ कुनार्यः।

কুলভৈরব-স্বরূপ সাধকে মদ্য পান করিয়া ন্তব পাঠ করিবে, এবং কুল-স্ত্রী-সংসর্গে প্রবৃত্ত হইয়া কুল-কার্য্যের অমুষ্ঠান করিতে থাকিবে।

তাহার পরে আনন্দোল্লাসের আরম্ভ হয়। এ ব্যাপারের সবিশেষ বর্ণনা করিতে হইলে অভ্যন্ত অশ্লীল হইয়া পড়ে এ নিমিত্ত তন্ত্র-শাক্র হইতে তাহার কিছু মূল বৃত্তান্তমাত্র উদ্ধৃত হইতেছে।

तद्कि हेषु विशेषु कार्याकार्यं न विद्यते।

इच्छैव शास्त्रसम्मितित्याज्ञा परमेखित ॥

तत्र यद्यत् कृतं कर्षं श्रमं वा यदि वाश्रमम्।

तत् सर्वं देवताप्रीत्ये जायते स्रस्ट्रि ॥

जल्पोजपफलं तन्द्रा समाधिरिमिधीयते।

विक्रिया पूजनं देवि क्ष्ट्रेनं भैरवी विलः ॥

सुक्तिःस्यात् शक्तिसंयोगःस्तोत्रं तत्कालभाषणम्।

ग्यासोऽवयवसंस्पर्यः कण्डूतिर्देवनिक्रया ॥

वीच्चणं ध्यानमीशानि श्यमं वन्दनं भवत्।

तत्त्वन्यासे वृता नाना या चेष्टा सा च तत्क्रिया ॥

रोदनं भाषसंपातः समुद्यानं विजृत्थनम्।

गमनं विक्रिया देवि योगद्रत्यभिधीयते ॥

चक्रोऽस्मिन् योगिनो वीरयोगिन्यो मदमन्यराः।

समाचरित्र देविश यथोज्ञासं मनोगतम् ॥

ग्रनै: एक्ट्रन्ति पार्षस्थानाविस्रात्यात्मवीत्तितम्। निधाय वदने पात्रं निर्व्याणा निवसन्ति च ॥ मत्ता खपुरुषं मत्त्वा कान्तान्यमवलुम्बते। तथैव पुरुषसापि प्रीढ़ोज्लोक्काससंयुत:॥ पुरुषः पुरुषं मोच्चादालिङ्गत्यङ्गनाङ्गनाम । पृच्छन्ति खपतिं सुग्धा कस्वंका लिमिष्टागता। उद्यानं किमिदं इन्त ग्टहं किंवागतं किम। मुखे संपूर्य मदिरां पाययन्ति स्त्रिय: पुमान्॥ उपदंशं मुखे चिम्ना निचिपन्ति प्रियानने। ग्टब्बन्यन्यस्य पात्राणि व्यञ्जनानि च ग्राभवि॥ धृला शिरसि तृत्यन्ति मद्यभाग्धानि योगिनः। श्रज्ञानात् करतालान्तमस्यष्टाचरगीतकम्। प्रस्वलत्पद्विन्यासं नृत्यन्ति कुलग्रत्तयः॥ योगिनोमदमत्ताञ्च पतन्ति प्रमदोरसि । मदाकुलाय योगिन्यः पतन्ति पुरुषोपरि । मनोरयसुखं पूर्णं कुर्व्वन्ति च परस्परम ॥ कुनार्वत, शक्तम थेख।

শাস্ত্রে যত দূর ব্যবস্থা আছে, মানুষে কি তত দূর নির্লক্ত হইয়া ব্যবহার করিতে পারে ? এক বার কিছু গলাধঃকরণ হইলে না পারি-বারই বা বিষয় কি ?

মনুষ্যের মন যত বিকৃত হউক না কেন, তথাপি লোকের সাক্ষাতে এরূপ কর্ম্ম করিতে লজ্জা বোধ হয়, অতএব তন্ত্রকর্ত্তারা অতি সংগো-পনে ইহার অনুষ্ঠান করিতে সাদেশ দিয়াছেন। न निन्देन हसेहापि चक्रमध्ये मदाकुलान्। एतचक्रगतां वार्त्तां वहिनैव प्रकाशयेत्॥ तेभ्योभोजनं कुर्व्वीत नाहितच्च समाचरेत्। भक्त्या संरच्चयेदेतान् गोपयेच प्रयक्षतः॥

প্রাণতোমিণী।

চক্র-মধ্যে মদিরা-মুগ্ধ ব্যক্তিদিগকে দেখিয়া হাস্য ও নিন্দা করিবে না, এবং এই চক্রের বার্ত্তা বাহিরে প্রকাশ করিবে না। ভাহাদের নিকটে ভোজন করিবে, অহিত আচরণে বিরক্ত থাকিবে, ভক্তি পূর্ব্বক ভোহাদিগকে রক্ষা করিবে এবং যত্ন পূর্ব্বক গোপন করিয়া রাখিবে।

তন্ত্রের মধ্যে লতাসাধনাদি অধিকতর লঙ্জাকর ও ঘুণাকর যে সমস্ত ব্যাপারের বর্ণনা আছে, পাঠকগণের সমক্ষে তাহা উপস্থিত করা কোন রূপেই শোভা পায় না। যাঁহাদের জানিতে ইচ্ছা হয় কুলার্ণব, গুপুসাধন তন্ত্র, নিরুত্তর তন্ত্র, শ্যামারহস্ত, প্রাণতোষিণী প্রভৃতি দেখিলেই জানিতে পারিবেন। লতাসাধনে একটি ত্রীলোককে ভগবতী জ্ঞান করিয়া মন্ত-পানাদি সহকারে তাহার সাধন করিতে হয়। উহাতে তাহার শরীরের গুন্থাগুন্থ নানাস্থানে মন্ত্র-জপ এবং আপনার ও তাহার অঙ্গেনির প্রাকাষ্ঠা বন্দনাদি পুরঃসর ত্রী-পুরুষ-ঘটিত ব্যাপারামুষ্ঠানের পরাকাষ্ঠা প্রদর্শিত হইয়া থাকে। তন্ত্র-বিহিত স্করাপান ও পরস্ত্রী-গমন প্রভৃতির ন্যায় মারণ, উচ্চাটন প্রভৃতি নর-হত্যা ও পর-পীড়াও শাস্ত্রীয় ক্রিয়ার মধ্যে পরিগণিত হইয়াছে।

शान्तिवश्यस्तभानानि विदेषोच्चाटने तथा। मारणं परमेशानि षट् कमों दं प्रकोत्तितम्॥

যোগিনীতম, পূর্ম খণ্ড।

পরমেশানি! শান্তি, বশীকরণ, শুস্তন, বিবেষণ, উচ্চাটন, মারণ এই ছ্র প্রকার কর্ম পরিকীর্ত্তিত হইয়াছে।

प्रायिक्तं स्रगीः पातं सम्रासं ब्रतधारणम्। तीर्थयात्राभिगमनं कीलः पञ्च विवर्जयेतु॥

প্রাণডোষিণী-ধৃত বচন।

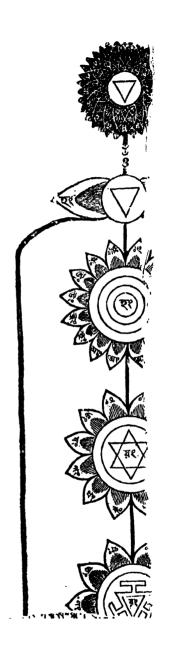
কৌলদের প্রায়শ্চিন্ত, ভৃগুপান্ত, সন্ন্যাস, ব্রত-ধারণ, তীর্থ-যাত্রা এই পাঁচটি বিষয়ের অফুষ্ঠান করিবার প্রয়োজন নাই; তাহা একবারে পরিভ্যাগ করাই ভাহাদের পক্ষে বিধেয়।

নানাপ্রকার সাধনের মধ্যে শবসাধন বীরাচারীদের একটি প্রধান সাধন। অইমী বা চতুর্দ্দশী তিথিতে অথবা কৃষ্ণ-পক্ষীয় মঙ্গলবারে শৃশু গৃহে, নদী-তীরে, পর্বতে, নির্জ্জন স্থানে, বিল্ল-বৃক্ষ-মূলে বা শাশান-ভূমিতে অথবা তাহার সমীপ-বত্তী বন-স্থলে সাধনা করিতে হয়। সাধকে বিতীয় প্রহর রাত্রিতে মদ্যাদি উপচার লইয়া সাধনার স্থলে উপস্থিত হয় এবং তথায় গুরু, গণেশ, যোগিনী প্রস্তৃতির পূজা ক্রিয়া বলিদানাদি সাধন পূর্ববিক শব আনয়ন করে। কিরূপে শব প্রশস্ত, পশ্চাৎ লিখিত হইতেছে।

> यष्टिवित्तं श्र्लवित्तं खज्जवित्तं पयोम्हतम् । वज्जवित्तं सर्पदष्टं चाण्डालञ्चाभिभूतकम् ॥ तक्णं सुन्दरं शूरं रणे नष्टं समुज्ज्वलम् । पलायनविश्र्न्यञ्च सम्मुखे रणवर्त्तिनम् ॥ जज्जनात्र-४७ ভাবচুঙ্গামণি-বচন ।

বে চণ্ডাল ষষ্টি, শূল, থড়া বা বজের আঘাতে কিয়া সর্প-দংশনে প্রাণ-ভ্যাগ করিয়াছে, অথবা অভিভূত, জল-মগ্ন বা সম্প্র-মুদ্ধে পলায়ন-পরাল্পুথ হইরা মৃত্যু-মুধে পভিত হইরাছে, সে যদি স্কলর কান্তি-বিশিষ্ট শৌর্যান ও তক্লণ-বয়ক্ষ হয় তাহা হইলে শ্বসাধনার্থ ভাহার শব আনর্যন ক্রিবে।

সাধকে শব আনয়ন পূর্ববক তাহার পূজা করিবে এবং পরে সেই শবের পৃষ্ঠ-দেশে চন্দন লেপন পূর্ববক হরিণ-চর্ম্ম ও কম্বল স্থাপন করিয়া



মুখে পতিত হইবাছে, সে বদি স্থাপন হর তাহা হইলে শবসাধনার্থ তাহার শব আনম্বন করিবে সাধকে শব আনম্বন পূর্ববক তাহার পূজা করিবে এ শবের পৃষ্ঠ-দেশে চন্দন লেপন পূর্ববক হরিণ-চর্ম্ম ও কম্বল হ। রাখিবে। অনস্তর ডাকিনী যোগিনী প্রভৃতির পূজা করিয়া ও কিছু দূরে এক জন উত্তরসাধক রাখিয়া পূজার সামগ্রী সম্বলিত শবারোহণ করিবে, এবং দেবতার অর্চনাদি করিয়া জপ করিতে থাকিবে।

শবসাধনের সময়ে এরূপ ভয়ঙ্কর ভয়ঙ্কর ক্রিয়ামুষ্ঠান করিবার ব্যবস্থা আছে যে, তাহা করা দূরে থাকুক, পাঠ করিলেও ভয় পাইতে হয়।

करकाचीं समादाय मुण्डमालाविभूषित:।
तेनैव तिलकं दला तत्तद्वस्रविभूषित:।
अस्यानि चासक्वजम्ना सर्व्वसिद्वीखरीभवेत्॥

শ্রামারহন্ত।

কর-কাঞী গ্রহণ করিয়া মুগুমালায় বিভূষিত হইবে, এবং তদীর রক্তের তিলক ধারণ ও শরীরে তাহার ভন্ম লেপন পূর্বাক খাশানভূমিতে পুনঃ পুনঃ অপ করিয়া সর্বা সিদ্ধি প্রাপ্ত হইবে?।

मृहाष्टमीनवन्योसु संयोगे पुरतः स्थितः।

कागमहिषमेषाणां चतुर्दिच्च यवान् चिपेत्॥

कावन्यास् गुण्डपुष्तां य दीपादिभिरसङ्गतान्।

मध्ये कवन्यमास्तीर्यः तत्र गन्धर्वरूपधक्॥

तान्नूसपूरितसुखोमस्त्रनाश्चितसोचनः।

काला तावन्यनुं जिष्ठा सर्व्वसिद्योग्बरीभवेत्॥

श्रामाववन्य

মহা অষ্টমী এবং নবমীর দল্ধি-কালে গ্রামের বাহিরে ছাগ, মহিষও মেবের লব, এবং দীপ-সংযুক্ত কবল্ধ ও মুগু সমূদ্য চারি দিকে ক্ষেপণ করিবে, মধ্যমূলে একটি কবল্ধ রাখিয়া তাহার উপর আবোহণ করিবে, এবং গছর্ক-ক্ষণ ধারণ পূর্বক মুখেতে ভালুল পূর্ব ও চক্ষতে অঞ্জন-বিশেষ লিপ্ত করিয়া মন্ত্র অপ পূর্বক সর্বাদিদ্ধি প্রাপ্ত হইবে ।

শুনিতে পাওয়া য়য়, অনেকে কালিকার সাক্ষাৎকার-লাভ-প্রভ্যাশায় শব্•

শক্তি-উপাসনা নিতান্ত অপ্রাচীন নয়। সাত আট শত বৎসরে:
পূর্বের প্রন্থে কোন কোন শক্তি-তীর্থের প্রসঙ্গও পাওয়া যায়। খৃষ্টা
ক্যের একাদশ শতাব্দীতে বিরচিত বৃহৎকথার * মধ্যে মৃজাপুরের সমী
পশ্ব বিশ্ব্যবাসিনীর নাম পুনঃ পুনঃ উল্লিখিত আছে। প্রথমকার মৃসল
মান্ বাদসাহেরা নাগরকোটশ্ব জালামুখীর প্রতি নিগ্রহ প্রকাশ করিছে
বিমুখ হন নাই। ফিরোজ নামে একটি বাদসাহ ১৩৬০ তের শত যা
গৃষ্টাব্দে যখন নাগরকোট অধিকার করেন, তখন তথায় জালামুখী:
বিলক্ষণ প্রান্তর্ভাব ছিল। ঐ ঐ সময়ের অনেক পূর্বেবও যে ভারতবাঃ
শক্তি-উপাসনার প্রচার ছিল ইহাতে সন্দেহ নাই গে।

যদিও দক্ষিণাচারতন্ত্ররাক্তে গোড়, কেরল ও কাশ্মার দেশীয় লোব শুদ্ধাচারী শক্তি-উপাসক বলিয়া বর্ণিত আছে, কিন্তু বাঙ্গালা দেশেই এ ধর্ম্ম সর্ব্বাপেক্ষা প্রবল। এখানে যেমন তুর্গা, কালী জগন্ধাত্রী প্রভৃতি নানাবিধ শক্তি-মূর্ত্তির প্রতিমা নির্মাণ করিয়া অর্চনা করা হয় এবং বিশেষতঃ আখিন মাসে যেরূপ উৎসাহ ও সমারোহ পূর্ব্বক তুর্গোৎসবের

সাধনে প্রবৃত্ত হওয়াতে, নানা বিভাষিকা-দর্শনে ভীত হইয়া একবারে ক্ষিপ্ত হইয়া গিয়াছে।

^{*} বৃহৎ কথা-প্রণেতা সোমদেব প্রস্থের উপসংহার-কালে নিথিয়াছেন, কাশীয়াধিপতি হর্বদেবের পিতামহীর শ্রবণ-প্রথার্থ এই পুস্তক বিরচিত হইল। তাহাতে ঐ হর্বদেব কলসের পুত্র, অনস্থের পৌত্র ও সংপ্রামরাজ্বের প্রপৌত্র বিন্ধা নিথিত আছে। রাজতরন্ধিণী ও আইন আকবরির সহিত ঐক্য করিয়া হর্বদেবের এইরূপ বংশাবলী সপ্রমাণ হইয়াছে। ঐ রাজা ১০৫৯ দশ শভ উনবাট গ্রীষ্টাব্দে রাজসিংহাসনে অধিরোহণ করিয়া বাদশ বংসর রাজত করেন। অত্রেব বৃহৎকথা ঐ সময়ে অথবা তাহার কিছু অগ্রপশ্চাৎ লিখিত হইয়াছিল ভাহার সন্দেহ নাই।——Quarterly Oriental Magazine, No. I.,p.64.

⁺ ७ ७ २ श्रृं एव।

ব্যাপার সম্পন্ন হইয়া থাকে, সেরূপ আর কুত্রাপি হয় না। ফলভঃ বঙ্গভূমি বামাচারী ওঃ দক্ষিণাচারী উভয় প্রকার শাক্ত-সম্প্রদায়েরই প্রধান স্থান।

চলিয়াপন্থী।

রাজস্থানের অন্তঃপাতী জয়পুর, যোধপুর প্রভৃতি নানা স্থানে এই সম্প্রদায় প্রচলিত আছে। ইহারা শক্তি উপাসক এবং অনেকাংশে বামা-চারী শাক্তদের ন্যায় ব্যবহার করিয়া থাকে। ইহাদিগের গুরুদের নাম চক্রেশর। প্রত্যেক গুরুর একজন কোতোয়াল ও একজন সহকারী কোতোয়াল এবং কভকগুলি শিষ্য থাকে। ইহারা মধ্যে মধ্যে রাত্রি-(यार्थ (कोलिए ११ तार्थ हा करता हा का नाम नाम निमेख कान স্থান নিৰ্দ্দিষ্ট নাই; যখন যে স্থানে স্থবিধা বোধ হয়, তখন সেই স্থানই মনোনীত করিয়া লয়। চক্র আরস্তের কিছু পূর্বেব ঐ স্থানের এক পার্শে গুরুর আসন ও তাহার দক্ষিণে কোডোয়াল ও সহকারী কোডো-য়ালের তুই খানি আসন প্রস্তুত থাকে, এবং ভাহার সম্মুক্তে স্থা-পরিপূর্ণ একটা বড় পাত্র আর একটি শৃষ্য কুস্ত স্থাণিত করা হয়। গুরুর আসনের বাম দিক্ হইতে সহকারী কোভোয়ালের আসনের দক্ষিণ দিক্ পর্য্যস্ত ্ঐ স্থরা-পাত্র ও শূন্য কুস্ত বেষ্টন পূর্ববক চক্রাকৃতি করিয়া ছই ছই জনের বসিবার উপযুক্ত স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র আসন পাতিয়া রাখা হয়। চক্রের সময় উপস্থিত হইলে চক্রেশ্বর অর্থাৎ গুরু, কোভোয়াল ও সহকারী কোতোয়াল তথায় অসিয়া আপন আপন আসনে উপবিষ্ট হন ও শিষ্যে-রাও স্বীয় স্বীয় ভার্যাকে সঙ্গে লইয়া সেই স্থানে আগমন করে। স্ত্রীলোকেরা সকলেই আপন কাঁচলিগুলি এক স্থানে একত্র রাখিয়া স্বভন্ত এক দিকে উপবেশন করে, এবং পুরুষেরাও সেইরূপ অস্থ্য এক স্থানে

একসঙ্গে উপবিষ্ট হইয়া থাকে। পরে ইহাদের মধ্যে কোন ব্যক্তি ঐ কাঁচলিশুলি লইয়া উল্লিখিত শৃশুকুজের মধ্যে রাখিয়া দেয়, পশ্চাৎ কোভোয়াল আপন আসন হইতে উঠিয়া পূর্ব্বোক্ত স্থরা-পাত্র হইতে এক পাত্র স্থরা উত্তোলন করে; করিবামাত্র, চক্রেশ্বর শিষ্যদের পুরুষদল হইতে ইচ্ছামতে যে সে এক জনকে আপনার নিকটে আহ্বান করেন,এবং সেই আহৃত ব্যক্তি নিকটে আসিলে, তাহাকে বাম-পার্থ-স্থিত আসনে বসিতে আদেশ করেন। পরে সহকারী কোতোয়াল উথিত হইয়া উল্লিখিত কুন্ত হইতে একটি কাঁচলি উত্তোলন করে। করিলে শিষ্যারা সকলে ঐ কাঁচলির প্রতি এক দৃষ্টে দৃষ্টি-পাত্ত করে, এবং উহা যে ব্যক্তির কাঁচলি, সে চিনিতে পারিলেই, অবিলম্বে সেই আহৃত পুরুষের বাম ভাগে উপস্থিত হইয়া তাহার সহিত একাসনে উপবেশন করিয়া থাকে। পরে সহকারী কোতোয়াল নিজ হস্ত-স্থিত কাঁচলি এবং কোতোয়াল নিজ হস্ত-স্থিত কাঁচলি এবং কোতোয়াল নিজ হস্ত-স্থিত কাঁচলি এবং কোতোয়াল নিজ হস্ত স্থিত স্থরাপাত্র ঐ স্ত্রীলোকটিকে অর্পণ করে। এইরূপে ক্রমে ক্রমে সমুদায় শিষ্য শিষ্যা, স্ত্রী পুরুষ্যে ত্রই ত্রই জনে এক আসনে চক্রাকৃতি করিয়া বিস্যা যায়।

এইরূপ অনুষ্ঠান ধারা যদৃচ্ছাক্রমে যে পুরুষ যে জ্রীলোককে নিজ আসনে প্রাপ্ত হয়, সাধনার সঁময়ে সেই জ্রীলোক সেই পুরুষের ভার্যা এবং সেই পুরুষ সেই জ্রীলোকের স্বামী-স্বরূপ বলিয়া পরিগণিত হয়। ঐ সময়ে তাহারা নিজ সম্প্রদায়ের নিয়মানুসারে উভয়ে একত্র স্থ্রা-পান ও অন্য অন্য ব্যবহার করিতে কুণ্ঠিত হয় না।

ইহারা কাঁচলি শব্দের বিকৃতি করিয়াই হউক অথবা "কাঁ" এই অংশটি বাদ দিয়াই হউক আপনাদের নাম চলিয়াপন্থী রাখিয়াছে ।

আগরা-নগর-স্থিত একটি বাঙ্গালী ব্রহ্মচারীর নিকট এই সম্প্রদায়ের বেরূপ বৃদ্ধান্ত গুনিয়াছি, সেইরূপ লিখিত হইল।

করারী।

ইহারা ভগবভীর কালী, চামুগু। প্রভৃতি ভয়ঙ্করী মূর্ত্তির উপাসক।
ইহাদিগকে পূর্ববিকালীন কাপালিক ও অঘোরঘণ্টার • প্রতিরূপ বলিলে
বলা যায়। তবে ঐ চুই পূর্ববিতন সম্প্রদায়ীরা নরবলি দিয়া দেবীর
অর্চনা করিত, এখন রাজ-শাসনাদির ভয়ে সেরূপ অনুষ্ঠান করিবার
সম্ভাবনা নাই। অতএব প্রকৃত প্রস্তাবে এ সম্প্রদায় ইদানীং বিদ্যমান

* অবোরঘণীর বিষয় ৯২ পৃষ্ঠা দেখ। শহরবিজ্ঞার ও প্রবোধচক্রোদর
নাটকে কাপালিকের রূপ বর্ণিত আছে।

चितिभव्यपूर्णकलीवर: नरकपालमालावतगल: भालदेशरिवतकञ्चलरेख: सकलकेशर-चितजटापारि: व्याप्रचर्मरचितकटिस्तकोपीन: कपालशीभितवामकर: सङ्गाद्वय्टाध्त-दिचयकर: शभी भैरव घडीकालीश इति स्हर्मुड्जपन्।

मञ्जूतिकात्र ।

চিতা-ভদ্মে আছোদিত-কলেবর, গল-দেশ নর-কপাল-মালার আর্ভ, কপালে কজ্জল-রেধা, সমুদার কেশ জটা-ভূত, বাজ-চর্ম্মের কৌপীন ও জটি-স্ত্র, বাম হস্ত করোটি-স্পোভিত, দক্ষিণ হস্তে শ্লামমান ঘণ্টা এই প্রকার বেশ-ধারী এবং মৃত্র্মূত্র "শস্তু, ভৈরব, অহো কালীশ" নাম জপকারী কাপালিক।

मिलाकाक्षवस्थानियारितमहामासाहतीर्ज्ञक्षतां वक्षी प्रश्नकपालकात्मितसुरापानिम नः पारणा । सदाः क्षणकठीरकच्छविगलत्कीलालधारीलनै रहानिः पक्षीपचारविश्विम देवी सहाभैरवः ॥

প্রবোধচন্দ্রোদর, ভৃতীরাম।

আমরা মন্তিক ও বসা-ধাতুতে অভিবিক্ত মহামাংস হারা অগ্নিছে হোম করি, ব্রাহ্মণের কপাল-স্থিত মদ্য-পান হার। পারণা করি, এবং স্তুশ্ছির মুসুহাের কঠোর কঠ-দেশ হইতে নিঃস্ত ক্ষির-ধারা-প্রভাবে উগ্রভ্ত নর-বলি হারা মহাভৈরবের অর্চনা করি। আছে কি না সন্দেহ-স্থল। ভারতবর্ষের নানা স্থানে কডকগুলি লোকে
আপন শরীরে নিভান্ত নিষ্ঠুর ব্যবহার করিয়া ভিক্ষা করে, কেহ কেহ
ভাহাদিগকেই এই সম্প্রদায়ী বলিয়া বিবেচনা করেন। ভাহারা লোহশলাকাদি দ্বারা শরীরের মাংস বেধ করে, জিহ্বা ও গগুদেশ দিয়া তীক্ষ
অন্ত প্রবেশ করায়। লোহময় কণ্টক-শয্যায় শয়ন করিয়া থাকে ও
অঙ্গ-বিশেষে ছুরিকা বসাইয়া দেয়। বাঙ্গালা দেশে চড়ক-পূজার
সময়েও অনেক ইতর লোককে এইরূপ আচরণ করিতে দেখা যায়।

ভৈরবী ও ভৈরব।

ভৈরবীরা শক্তি-মন্ত্রে দীক্ষিত হয় এবং কুলাচার অবলম্বন করিয়া পূর্ব্ব-লিখিত মন্ত-মাংসাদি পঞ্চতত্ব ব্যবহার করিয়া থাকে।

ইহারা গেরুয়া বস্ত্র পরিধান, বিভূতি ও রুদ্রাক্ষ ধারণ ও ললাটে সিন্দুর লেপন করে এবং হস্তে ত্রিশূল গ্রহণপূর্ববক ইতস্ততঃ ভ্রমণ করিয়া বেড়ায়। ভৈরবীচক্র প্রভৃতি ভস্ত্রোক্ত কুলচক্রেও প্রবেশ করে ও তথায় বীরাচারী পুরুষদের সহিত একত্র উপবেশন করিয়া সর্বতোভাবে কুলাচারের অমুষ্ঠান করিয়া থাকে।

বাঙ্গালার মধ্যে কলিকাতায়, কালীঘাটে ও অস্ম অস্ম অনেক স্থানেও ইহাদিগকে দেখিতে পাওয়া যায়। কালীতেও কভকগুলি অবস্থিতি করে। শুনিতে পাই, ইহাদের মধ্যে অনেকে অত্যস্ত কামাসক্ত ও ইন্দ্রিয়-স্থে অসুরক্ত হইয়া স্বেচ্ছাচারীর মত ব্যবহার করে; কোন কোন ভৈরবী একএকটি ভৈরব সঙ্গে রাখে; তাহার সহিত মিলিত হইয়া ভীর্থ-ভ্রমণ করে ও কুলাচারের নিয়মক্রমে কার্য্য করিয়া থাকে।

শীতলা-পণ্ডিত।

শীতলা বসস্ত, বিস্ফোটক, গলগণ্ড প্রভৃতি রোগের দেবতা। ইনি গর্দভারত ও বিবস্ত্র থাকেন, এবং বামকক্ষে কলস, দক্ষিণ হস্তে মার্চ্জনী ও মস্তকোপরি শূর্প ধারণ করেন।

> नमामि श्रीतलां देवीं रासभस्यां दिगस्वरीम् । मार्ज्ज नोकलसोपेतां श्रूपीलङ्कतमस्तकाम् ॥ भक्षकक्षमः ५७ वस्त्रश्रीवैत्र वहन ।

শীতলা দেবী বিবস্ত্র ও গৰ্দভারাত, তিনি মার্জ্জনী কলস ও মন্তকে শূর্প ধারণ রবিয়া থাকেন: আমি তাঁকে নমস্বার করি।

ইনি শিব-শক্তি বলিয়া প্রসিদ্ধ; ইঁহার কবচের মধ্যেও মুগুমালিনী কালীর স্বরূপ বলিয়া বর্ণিত হইয়াছেন।

शीतला पूर्विदिग्भागे श्राग्नेयां रोगनाश्नि। दिश्वि दिश्विणाकाली मुण्डमालाविधारिणी। नैऋत्यां पातु मां नित्यं श्रूपीलङ्करतमस्तका। पश्चिमे पातु मां नित्यं समार्ज्ज नीधरा तथा। वायव्यां पातु मां देवी सदा कलसधारिणी। दिगम्बरी सदा पातु उत्तरस्यां सनातनी। पेशान्यां दिशि मां पातु सततं घोरदर्शनी॥

পূর্ববিধে শীতলা, অগ্নি-কোণে রোগ-নাশিনী, দক্ষিণে মুগুমালাধারিনী বিদ্যাকালী, নৈশ্বতি-কোণে শূর্পালক্কত-মন্তকা, পশ্চিমে সম্মার্জনী-ধরা, বায়্-কোণে কলস-ধারিণী দেবী, উত্তরে সনাতনী দিগম্বরী এবং ঈশান-কোণে ঘোরদর্শনী আমায় রক্ষা করুন।

শীতলার মন্ত্র ওঁঁ ঐঁক্লী হ্রী। কিন্তু অনেকে কেবল হ্রী বীজ উচ্চারণ পূর্বকে তাঁহার অর্চনা করিয়া থাকে।

হাড়ি, ডোম, চণ্ডাল প্রভৃতি যে সমস্ত নীচ জাতীয় লোকে শীওলা

সঙ্গে লইয়া ভিক্ষা করিয়া বেড়ায়, তাহাদিগকে পণ্ডিত বলে। তাহারা কহে, শীতলা দেবী সপ্রে আবিভূতি হইয়া এইরূপ প্রত্যাদেশ করেন, 'আমি তোমারে অনুগ্রহ করিলান, ভূমি আমাকে গৃহে স্থাপনা করিয়া পূজাদি কর।' যাহার প্রতি এই রূপ অনুগ্রহ হয়, দেই ব্যক্তি পণ্ডিত নাম * প্রাপ্ত হইয়া তামা গ্রহণ করে, অর্থাৎ তামার অনুরীয় অথবা বলয় প্রস্তুত করিয়া হস্তে ধারণ করিতে থাকে।

তাহারা নীচ জাতি, তথাচ নিজেই শীতলার অর্চনা করে। স্বয়ং শীতলার গুণ কীর্ত্তন করিয়া দারে দারে ভিক্ষা করে ও অন্য লোকেও ভাহাদের বাটীতে আসিয়া পূজা দেয়। ইহাতে ভাহাদের সংসার-নির্বা-হের আর অপ্রত্ব থাকে না।

বাহারা গৃহে ধর্ম দেবতা স্থাপন করিয়া পূঞা করে, তাহাদিগকেও পণ্ডিত
বলে। তাহারাও শীতলা-পণ্ডিতদিপের মত হতে তাম্র-বলর গ্রহণ করে এবং
নীচ জাতি হইলেও নিজেই ধর্ম দেবতার অর্চনা করিয়া থাকে।

বালালা দেশের রাঢ় অঞ্চলে এই দেবতার অত্যন্ত প্রাহর্ভাব। এক এক স্থানে প্রতিবংসর তাঁহার ভারি ভারি উৎসব হর ও তত্পলক্ষে তথার বহু লোকের সমাগম হইরা থাকে। ধর্ম দেবতা অত্যন্ত মদ্য-মাংস-প্রির।

দৌর।

পঞ্চপ্রকার উপাসকের মধ্যে শৈব, শাক্ত, বৈষ্ণব এই তিন প্রকার উপাসকের বিষয় লিখিত হইল; অবশিষ্ট তুই প্রকারের নাম সৌর ও গাণপত্য *। এই উভয়ের সংখ্যা অতি অল্প। ব্যবহার-বিষয়েও অক্সাগ্য হিন্দুদিগের সহিত ইহাদের বিশেষ বিভিন্নতা দৃষ্ট হয় না।

সূর্য্য আর্য্য-কুলের একটি প্রধান আদিম দেবতা। ইদানী ঐ সূর্য্য আর্যাদের ইফ্ট দেবতা, তাঁহাদের নাম সোর। তাঁহারা গল-দেশে ফাটিক-মালা ধারণ করেন ও ললাটে একরূপ রক্ত-চন্দনের জিলক করিয়া থাকেন। তাঁহারা রবিবারে ও সংক্রান্তির দিবসে লবণ-বর্জ্জিত একাহার করেন। কোনদির সূর্য্য দর্শন না করিয়া জলগ্রহণ করেন না। এই কঠিন নিয়মটি প্রচলিত থাকাতে, তাঁহাদিগকে বর্ধাকালে এক এক দিবস সমধিক কফ্ট পাইতে হয়। পৃথিবীর যে খণ্ডে সূর্য্য অত্যন্ত প্রতাপ-বিশিষ্ট এবং প্রায় প্রত্যহই লোকের দৃষ্টি-গোচর হয়, সেইখণ্ডে যে, সৌরদিগের বাস, ইহা তাঁহাদিগের সোভাগ্যের বিষয় বলিতে হইবে। ফলতঃ তাহা না হইলেও এরূপ ধর্মের স্প্রি হইত না।

সূর্য্য বলিলে সচরাচর দৃশ্যমান সূর্য্য-মণ্ডলই বোধ হয়, কিন্তু শান্তে তদীয় হস্ত-পদাদি বিশিষ্ট একটি রূপ বর্ণিত আছে।

रक्ताम्बुजासनमग्रेषगुणैकसिन्धुं भातुं समस्तजगतामधिपं भजामि ।

^{*} ग्रैवानि गाषपत्यानि ग्राक्तानि वैच्यवानि च ।
साधनानि च सीराणि चान्यानि यानि कानिचित् ।
मुतानि तानि देवेग लदक्तान्निः स्तानि च ॥
पद्मभात्र । कृतीह भहिष्क्र ।

पद्महयाभयवरं दधतं कराके मीणिकामीलिमक्णाङ्गरचिं विनेत्रम्॥

भक्तक्रम। र्श्यभक्ष॥

রক্ত-পদ্মোপরি উপবিষ্ট, অশেষ-গুণ-সাগর, সমস্ত ক্ষণতের ক্ষরীশ্বর, চারি হত্তে বর, অভয় ও কমল-ঘর-ধারী মন্তকে মণিক্য-বিশিষ্ট, অরুণ-বর্ণ এবং ত্রিনেত্র দিবাকরের বন্দনা করি।

পূর্বকালে সূর্য্যের প্রতিমূর্ত্তি নির্মাণ করিয়া পূজা করা হইত।
খুষ্টাব্দের সপ্তম শতাব্দীর মধ্য ভাগে চীনদেশীয় তীর্থ-যাত্রী হিউ এন্থ্সঙ্গ মূলভানে একটি সূর্য্যমন্দির ও সূর্য্য-প্রতিমূর্ত্তি দর্শন করেন *।
যে সময়ে আরবেরা ভারতবর্ষে প্রথম আগমন করে, সে সময়েও উহা
বিশ্রমান ছিল; মুসল্মানেরা হিন্দু-ধর্ম্মের প্রতি বিশ্বেষ প্রকাশ করিয়া
ঐ বিগ্রহের গ্রীবা-দেশে গোমাংস সংযুক্ত করিয়া দেয়। প

উৎকলে এক সময়ে সূর্য্যোপাসনার সমধিক প্রচার ছিল; প্রান্ত্রাণে সে বিষয়ের বিস্তর প্রসঙ্গ আছে। কনার্ক নামক স্থানে যে ভগ্নাবন্ধ পুরাতন সূর্য্য-মন্দিরটি অভাপি দেখিতে পাওয়া যায়, ভাহা

^{*} ঐ সময়ে ও উহার অগ্র পশ্চাৎ যে সুর্য্যোপাসক-সম্প্রদায় বিদ্যমান ছিল, ভাহার অন্য অন্য অনেক নিদর্শনও প্রাপ্ত হওয়া বার। খৃষ্টান্দের অষ্টম শতাশীতে বিদ্যমান আনন্দগিরি শঙ্কর-বিশ্বরের অরোদশ প্রকরণে সুর্য্যোপাসকের
বিবরণ লিখিরাছেন এবং ঐ অন্দের সপ্তম শতান্দীর প্রথমার্দ্ধে বিরচিত হব-চরিতে
লিখিত আছে, শ্রীহর্বের পিতা প্রভাকরবর্দ্ধন সূর্য্য-মন্ত্রে দীক্ষিত ছিলেন। শ্রীহর্ষ
খৃষ্টান্দের সপ্তম শতান্দীর প্রথম ভাগে প্রাছর্ভূত হন *। স্কুতরাং তাঁহার পিতা
উহার বর্চ্ন শতান্দীতে জীবিত ছিলেন।

[†] Journal Asiatique, Tom 8th, Octr. 1846, pp. 298-299.

⁻ क अहे ब्रालित डेशक्यमिकारणत २४२ शृंही एवं।

328১ বার শভ একচ**ল্লিশ খৃফীব্দে রাজা লক্ষোর নর্সিংহ্ দেও কর্তৃক** প্রতিষ্ঠিত হয়। *

যবন্ধীপে হিন্দু-শান্ত্রেক্তে শিবাদি দেবগণের ভূরি ভূরি প্রতিমূর্ত্তি মন্তাপি বিভ্যমান আছে। ঐ স্থানের এসিস্টেণ্ট্ রেসিডেণ্ট্ সাহেবের উত্তানে তাহার অনেকগুলি একবার সংগৃহীত হয়, তাহার মধ্যে সূর্য্য দেবের সপ্তাশ্যোজিত কয়েক খানি রথও বিনিবেশিত ছিল। শ

ইদানী রোগ-নিবারণ, নবগ্রহ-যাগ, নিত্য সন্ধ্যা-বন্দনাদি কয়েকটি হলে সূর্য্য-পূজা বা সূর্য্যার্ঘ-দান প্রচলিত আছে। বাঙ্গালা দেশে স্বভন্ত সূর্য্যোপাসক নাই বলিলেই হয়।

সূর্য্যের বীজ হং সঃ, ও তাঁহার গায়ত্রী---

भोम् भादित्याय विद्यान्ने मार्त्तग्रहाय धीमहि तदः सूर्यः प्रचोदयात्।

আদিত্যের জ্ঞান লাভ করি; মার্কগুকে চিস্তা করি; সুর্য্য আমাদিগকে ভাহা প্রেরণ করুন।

মুঙ্গের, গয়া, পাটনা জেলা প্রভৃতি পশ্চিমোত্তর প্রদেশের নানা স্থানে কার্ত্তিক মাসে ছট্বরত্ নামে একটি ব্রত অনুষ্ঠিত হইয়া থাকে; তাহা সূর্য্য-ব্রত বই আর কিছুই নয়। যে দিবসে ঐ ব্রত সম্পন্ন হয়, তাহার ছয় দিন পূর্ববাবধি ব্রত-ধারী ব্যক্তিমাত্রেই হবিষ্যান্ন ভোজন করে। পরে নির্দিষ্ট দিবসে সূর্য্যাস্তের প্রায় চারি দণ্ড পূর্বের নানাবিধ পূজার দ্রব্য সঙ্গে লইয়া নদী-তীরে উপস্থিত হয় ও তথায় যথাবিধানে মল্লোচ্চারণ সহকারে ঐ সকল সামগ্রী নিবেদনাদি স্বারা সূর্য্য-পূজা সম্পাদনপূর্ববিক নিজ নিজ গৃহে প্রত্যাগমন করিয়া থাকে। কলিকাতায়ও

[•] Asiatic Researches, Vol. XV, p. 327.

[†] Journal of the Indian Archipelego, Vol III, No IX.*

अथन भूखक निकाठ नाहे बिना भूकांत्र माथा निविष्ठ भातिनाम ना ।

ঐ সময়ে চাঁদপাল ও মল্লিকের ঘাটে হিন্দুন্থানীদিগকে মহাসমারোহ পূর্বক এই ত্রভের অনুষ্ঠান করিভে দেখা যায়।

গাণপত্য।

গণপতির অর্থাৎ গণেশের উপাসকদিগের নাম গাণপত্য। শৈবশাক্তাদির ন্যায় ইহাদিগকে একটি পৃথক্ সম্প্রদায় বলা যায় কি না
সন্দেহ। হিন্দুমাত্রেই গণেশকে সিদ্ধি-দাতা জ্ঞান করিয়া বিদ্ধ-নিরাকরণ
প্রার্থনায় তাঁহার উপাসনা করে। শিব-তুর্গাদি অন্য অন্য দেবতার পূজা
করিতে হইলে, অথ্রে গণেশের অর্চ্চনা করিতে হয়। কিন্তু কতকগুলি
লোকে অন্য দেবতা অপেক্ষায় তাঁহার বিশিষ্ট রূপ উপাসনা করিয়া
থাকে। এইরূপ উপাসকদিগকে গাণপত্য বলিলেও বলা যাইতে পারে।
ইহার। বৈশ্ববদিগের ন্যায় অন্য দেবতার উপাসনা এক কালে
পরিত্যাগ করেন না।

গণেশ অনেক প্রকার, লোকে তমধ্যে বিশেষ বিশেষ গণেশের নাম ধরিয়া পূজা করে। পশ্চিমোত্তর প্রদেশে বক্রতুগু ও চুণ্টিরাজ এই তুই গণেশ অতি প্রসিদ্ধ, এবং তাঁহাদেরই উপাসনা অধিক প্রচলিত।

গণেশের বীজ গোঁ, ও তাঁহার গায়ত্রী—

एकदंष्ट्राय विद्यन्ते वक्रतुर्ण्डाय धीमहि तनी विद्य: प्रचीदयात्। প্রাণডোম্বিন, ১২৬৬ সাল, ৩৫৫ পৃষ্ঠা।

একদম্বের জ্ঞান লাভ করি; বক্রভূগুকে চিন্তা করি; বিশ্বরাজ তাহা আমাদিগকে প্রেরণ করুন।

পরিশিষ্ট।

নিরঞ্জনী সাধু।

এইরূপ প্রবাদ আছে যে, এই সম্প্রদায়-প্রবর্ত্তক নিরানন্দ স্থামী নিরশ্বনভলনা অর্থাৎ নিরাকার স্বরূপ ভগবানের উপাসনা করিরাছিলেন এই নিমিত্ত
ইহাদের নাম নিরপ্তনী হইরাছে। কিন্ত ইহারা রামানন্দী বৈরাগীদের মন্ত
সাকার-উপাসক উদাসীন বৈঞ্চব-বিশেষ। তাহাদের ভায় কৌপীন ধারণ,
কটা ব্যবহার, রক্তবর্ণ শ্রী-যুক্ত ভিলকসেবা ও অভাভ অনেকরূপ বৈঞ্চব-ধর্মোচিত
ক্রিয়ার অর্থহান করিয়া থাকেন। মাড়ওয়ার প্রদেশে ইহাদের অনেকানেক
আহান অর্থাৎ দেবালয় আছে। রামানন্দী বৈঞ্চবদের আহানের ভায় তাহাতেও
রাম-দীতার প্রতিমৃত্তি, শালগ্রাম-শিলা, গোমতীচক্র ও প্রভৃতি প্রতিষ্ঠিত আছে
এবং অহরহ ভোগ-রাগ ও বৈঞ্চব-দেবা হইয়া থাকে। বিশেষ এই যে, ইহারা
রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় প্রভৃতি ভদ্র-জাতীয় গৃহস্থদের অয় ভোজন করে, কিছ রামানন্দীদের মতে, সেটি একটি দৃষ্ণীয় ব্যবহার। এই নিমিত্ত অন্তাভ সাধারণ
ধর্মনিষ্ঠ বৈরাণীরা ইহাদের হত্তে ভোজন করে না ও ইহাদের সহিত্ত পংক্তি-

মানভাব 🕆।

हेरात्रा कृरकाशामक । कृष्णकृष्ट स्वादि नारम এक व्यक्ति यह मन्नान्न

^{*} বারকার অন্তর্গত গোমতীকুণ্ডের নামানুসারে ইহার নামকরণ হইরাছে। গওকী নদীতে বেমন শালগ্রাম-শিলা পাওরা যার, সেইরূপ বারকার সমুক্র-তটে গোমতীচক্রপ্রাপ্ত হওরা বার। ঐ চক্র হিন্দুখানী বৈরাগীদের আহানে সচরাচর দৃষ্ট হইরা থাকে। ইহারা বলে, গোমতীচক্রের পূজা না হইলে শালগ্রাম-শিলার পূজা সম্পূর্ণ হর না। বাঙ্গালা দেশে গোমতীচক্রের বিবর বুবি তাদৃশ প্রচারিত নাই।

⁺ Indian Antiquary, January 1882, pp. 22-24.

প্রবর্ত্তিত করেন। এই সম্প্রদারের মধ্যে পশ্চাল্লিখিত উপাধানিটি প্রচলিত আছে। কৃষ্ণভট বেতালের উপাসক ছিলেন। বেতাল তাঁহার প্রতি প্রসর হইরা জিঞাসা করিলেন, তুমি বর প্রার্থনা কর: আমি তোমার মনোরধ পূর্ণ করিব। রুফজ্জট বলিলেন, আমার নাম রুফ, তদকুদারে আমি রুফ-রূপ প্রাপ্ত হই এই আমার প্রার্থনা। বেতাল এই কথা প্রবণ পূর্বকে তাঁহাকে একটি মুকুট প্রদান করিয়া বলিলেন, যতকণ তুমি এই মুকুট ধারণ করিবে, **७७क्र कृतकेत्र शाव मृश्रमान इटे**रिंग। किंद्ध विम दर्गन छुत्रिक्शिक्त-शाधनार्थ ইহা ব্যবহার কর. ভাহা হইলে ভোমার অধংপতন ও বিনাল-প্রাপ্তি হইবে। ক্লক্ষট বেডালের নিবেধ-বাক্য পালন না করিয়া বিপরীতাচরণ আরম্ভ করিল। **श्रीकृष भूनवात कृमश्राम करकीर्ग रहेबाह्म এहे कथा श्रामिक हरेन अवर** রিপু-পরতম ক্রফছট গৃহে গৃহে পরিভ্রমণ পূর্বক ব্বতী জ্রীলোকদিগকে কুপথ-পামী করিরা আপনার অসৎপ্রবৃত্তি চরিতার্থ করিতে লাগিল। এই ব্যাপারটি ক্রমশ: দেবগিরির রাজমন্ত্রীর কর্ণ-গোচর হট্ট। তিনি সমস্ত **ওপ্ত** কথা ন্ধানিতে পারিলেন এবং ক্লফস্ভটের নিকট লোক প্রেরণ পূর্ব্বক প্রলোভন বাক্য ৰাৱা ভাৰাকে সুদ্ধ করাইরা কৌশল ক্রমে নিজ গৃহে আনরন করিলেন এবং আপনার অমুচরবিশেষ ধারা তাহার মুকুট উল্মোচন করিয়া লইলেন। লইবা-মাত্র ক্লফন্তটের ক্ল-রপ তিরোহিত হইরা নিজ রপ প্রকাশ পাইল। মন্ত্রী তৎক্ষণাৎ ভাছাকে ও তদীর শিবাগণকে কারাক্তম করিলেন, এবং অপমান-চিহ্ন স্বরূপ ৰত্তক মুখন ও ক্লফবর্ণ বস্ত্র পরিধান করাইরা পরিশেষে নির্বাসিত করিরা দিলেন। মান্ভাবেরা একথা অধীকার বার এবং বলে, আমরা বলরামের সম্প্রদায়ী লোক। বলরাম রুঞ্চবর্ণ বস্ত্র পরিধান করিতেন এই নিমিত্ত আমরা উহা ব্যবহার করি; উহা কলব্বের চিহ্ন নয় ইহাদের মধ্যে গৃহত্ব উদাসীন इहे ध्वकांत्र लाकरे बाह्य ; श्रहाह्य मखक मूखन करत्र ना।

বে সমরে রামচন্ত্র দেবগিরির রাজা ছিলেন, সেই সমরে অর্থাৎ ন্যুনাধিক ১১২৫ শকালে এই সম্প্রদার প্রবর্ত্তিত হয় এইরূপ প্রবাদ প্রচলিত আছে। বিরাম প্রদেশে ইহাদের পাঁচটি প্রধান মঠ বিভ্যমান রহিয়াছে। নরমঠ, নারায়ণ্নঠ, রেবিমঠ, প্রবরমঠ এবং প্রকাশমঠ। এই পাঁচের অন্তঃপাতী জন্ত জন্ত জনেক মঠ ছুই হইরা বাবে। অপরাপর জনেক সম্প্রদারের ভার ইহাদেরও

ষঠ-স্বামীকে মহন্ত বলে। মহন্তের কতকগুলি শিষ্য থাকে; তাঁহার মৃত্যু হইলে, তাহাদের মধ্যে কোন ব্যক্তি সর্ধ-সন্নতি-ক্রমে তাঁহার পদে অভিবিক্ত হয়। ইহারা আপনাদের সম্প্রদায়-প্রবর্ত্তককে বিষ্ণৃবতার বলিয়া বিশাস করে ও ভক্তি শ্রন্ধা সহকারে তাঁহার অর্চনা করিয়া থাকে। গুরু দন্তাত্তেরেরও পৃত্যা করে এবং তাঁহার রুত বলিয়া প্রচলিত রুষ্ণচরিতামৃত নামক একখানি পৃত্তকে অভিমাত্র শ্রন্ধা করিয়া থাকে। ভূমিতে বা রুক্ক-তলে গ্রামা দেবতা বলিয়া বিখ্যাত বে সমন্ত সিন্দ্র-লিপ্ত প্রস্তর ও কাঠ-খণ্ড প্রভিত্তিত থাকে সে সমৃদায়কে বার পর নাই স্থা করে। মার্গনীর্ধ অর্থাৎ অগ্রহারণ ইহাদের প্রা মাস এবং রুষ্ণজন্মান্তমী ও গোকলান্তমীতে ইহাদিগের উৎসব হর। ভগবদ্দীতা, লিমনিধি, লালামৃতদিক্ব এই তিন খানি সংস্কৃত প্রক এবং বাললীলা, গোপীবিলাস, ক্ষ্মিণীস্বয়ন্থর প্রভৃতি প্রক্ত ইহাদের সাম্প্রদায়িক গ্রন্থ। ইহারা বলে, চক্কু, কর্ণ, নাসিকা ক্ষম করিয়া সাধনা করিলে একরূপ জ্যোতিঃ পদার্থ দৃষ্ট হয়। অনেকে তাহার মহিমা বর্ণন করিয়া গ্রোকাবলি রচনা করিয়াছেন।

ইহারা আপুনাদের ধর্ম-কর্ম গোপন রাথে; সসম্প্রদায়ী ভিন্ন অন্ত কাহার নিকট ব্যক্ত করে না। ইহাদের সাম্প্রদায়িক গ্রন্থ সমুদায় একরূপ অপরিচিত অকরে শিখিত; তাহাও অন্ত কাহাকেও শিক্ষা দের না। সকলে একরে ভোজন করে। একবারেই সমুদায় অন্ত ব্যক্তন পরিবেশিত হর এবং ভোজনারন্তে সকলে উচ্চৈঃশরে ক্লঞ্চনাম উচ্চারণ করিয়া আহার করিতে প্রবৃত্ত হইরা থাকে।

ইহারা অতিমাত্র মহিংগা-পরারণ। এমন কি, জীবহিংগা-ভরে বল্পপৃত না করিয়া জলগ্রহণ করে না। সে বল্পে বদি কীট পতক পড়ে, সে সমুদারের প্রাণরক্ষা-উদ্দেশে তাহাদিগকে স্রোভোজনে ভাসাইয়া দের। হিন্দুসমাজে দশহরা-পর্বাহে ছাগ, মেব, মহিবাদি বলিদান হর; সেই সমুদার দর্শন ও তাহাদের চীৎকার-ধ্বনি প্রবণ আশবার ইহারা ছই তিন দিবস গৃহত্যাগ পূর্ব্বক্ষদেল গিয়া বাস করে।

ইহারা এক হতে একরপ ঝুলি ও অপর হতে এক পাছি বাঁট লইরা ডিকা করিডে বার। ইহাদের হতে না দিলে, কোন জব্য গ্রহণ করে না। এবন কি, কোন বৃক্ষ হইতে কল লইতে কহিলেও, নিজ হতে পাড়িরা লয় না। কাৰারও মৃত্যু হইলে, ইহারা শব দাহ করে না; শাদান-ভূমি হইতে কিছু অস্তুরে মৃত্তিকার মধ্যে সমাহিত করে। করিবার সমরে মৃত্ত-দেহের চতুর্দিকে লবণ রাশীক্ষত করিয়া দেয়।

কিশোরী ভজনী।

কৃষ্ণ বৃদ্দাবনে বেরূপ মধুর লীলা প্রকাশ করেন, তাহার: অমুকরণ করিরা মুক্তিলাভ করা এই সম্প্রদারের একমাত্র উদ্দেশ্য। বিক্রমপুর নিবাসী শ্রীপুত কালাচাদ বিভালকার ইহার প্রবর্তক। তাহার মতে জ্ঞান, ঝোগ ও ভক্তির একত্র সংযোগ ঘারা ঈশ্বরের সাক্ষাৎকার লাভ হয়। এইকথা বলিরা তিনি প্রশালিথিত পারমার্থিক মতটি প্রকাশ করেন। ব্রহ্মাণ্ড হই প্রকার; বৃহৎ ও ক্ষুদ্র। চন্দ্র, স্ব্যাদি গ্রহণণ বৃহৎ ব্রহ্মাণ্ড। আর পঞ্চত্ত-নির্দ্মিত মানব-শরীর ক্ষুদ্র ব্রহ্মাণ্ড। এই শরীরেই পৃথিব্যাদি পঞ্চত্ত এবং সন্ধ, রক্ষা; তমঃ এই তিন গুণ বর্ত্তমান রহিয়াছে। অত এব পরমার্থ-সাধন ও তীর্থ-ব্রমণ-উদ্দেশে অক্তত্র গমনের প্রয়োজন নাই। শরীর মধ্যেই পোলোক, বৈকুণ্ঠ, বৃন্দাবন প্রভৃতি বর্ত্তমান রহিয়াছে। তদমুসারে, পুরুবেরা আপনাকে গোলোক ও বৈকুণ্ঠ-বাদী শ্রহ্মণ ও ল্লীলোকেরা আপনাকে শ্রীরাধিকা বলিয়া বিশাস করে। কিন্তু গ্রাণান্তিময়ী রাধা" এই প্রমাণান্ত্রদারে, পুরুবেরা প্রকৃতির ভজনা করে। কৃষ্ণপ্রকৃতির নাম কিশোরী এই নিমিত্ত ইহাদের উপাসনাকে কিশোরী-ভলন বলে।

"দিন গেল মন, বদে কেন অকারণ, কর কিশোরী-ভজন। অনারাসে মুক্তি হবে, পাবে হরি দরশন॥"

অন্তান্ত সম্প্রদায়ের ন্তার ইহাদেরও গুরুকরণ আছে। তিনিই সর্ব-প্রধান।
সম্প্রদায়-ভুক্ত হইতে ইচ্ছা হইলে, তাঁহারই নিকট দীক্ষিত হইতে হয়। দীক্ষিত
হইলেই, যুগলরূপ হইতে হয়। অর্থাৎ পুরুষ শিষ্যের একটি প্রকৃতি এবং
স্ত্রীলোক শিষ্যার একটি পুরুষ গ্রহণ করা আবশ্রক। গুরুই তাহা সংঘটন
করাইরা দেন। তং রুফোইহং রাধা ও অহং রুফবং রাধা এই চুইটি ইহাদের
সার মন্ত্র। ইহারা এই মন্ত্রে দীক্ষিত ও প্রণয়-স্বত্রে বন্ধ হইরা যুগলরূপে
অব্যতিতি করে।

ইহাদের উপাসনার সভার নাম মেলা। দিন-বিশেষে নিশাযোগে অতি সংগোপনে ইহার অমুঞ্চান হইরা থাকে। এটি একটি চক্রন্থরূপ। এই মেলার একটি স্ত্রীলোক কিশোরী হর। সেটি প্রায়ই গুরু-প্রণায়নী শুনিতে পাই। সকলে ভাহাকে পূজা চন্দনাদি দ্বারা সজ্জীভূত করিয়া দের এবং একটি পাত্র নানাবিধ থাজ্রদ্রা-পূর্ণ করিয়া ভাহার সমূথে আনিয়ারাযে। সেইগুলি ভাহার ভোগের সামগ্রী। কিশোরী ভাহার কিঞ্চিৎ ভক্ষণ করে; পরে অপর সকলে সেই সমস্ত প্রসাদ-সামগ্রী ভোলন করিয়া থাকে। সেহুলে জ্বাতি-বিচার থাকে না। এমন কি, পরস্পার পরস্পারের মুখোচ্ছিষ্ট গ্রহণ করিয়া ভক্ষণ করে। ইহারা আহিংসা-ধর্ম অবলম্বন করিয়া চলে; মৎস্থ মাংস ব্যবহার করে না। কিন্তু মেলার মধ্যে অপ্র্যাপ্ত গাঁজা চলিয়া থাকে। এইরূপ ভোগের পূর্ব্বে গান হইয়া থাকে। পশ্চাৎ উদাহরণ স্বরূপ ভাহার ক্রেকটি উদ্ধ ত হইতেছে।

> 1— সুর্পৌর বলে ডাক্তুরে রসনা। যারে ডাক্লে অঙ্গ শীতল হবে, দুরে যাবে যম-যাতনা।

গৌর নামটী রসনায় বল, এসেছিলাম ভবের হাটে বুথা দিন গেল, ভোজের বাজি, হয় না রাজি, কাজের কাজি কেউ হবে না।

তোরে রবি-সুতে বাঁধ্বে রে যথন, কোথার রবে মর দরজা, কোথার রবে ধন, তোরে বন্ধুলনা বিদায় দিবে রে, সাথের সাথি কেট হবে না।

২ ।— আর আমার কেহ নাই গৌরহরি। পার কর ভবসিলু, দীনবলু, দিরে বালাচরণ-ক্ররী।

সহার নাই সম্পত্তি বিনে, কি দিব পারের দক্ষিণে, ভাবি তাই মনে মনে উপায় কি করি।

তোমার দীনদরামর নাম শুনেছি, ও চরণ আশ্রর করেছি, কুলে দীড়িরে আছি, ওহে গৌর নেও আমাকে নারে করি।

৩।— সুধু মুখের কথার গৌর চাদ কি মিলে। দত্তে দত্তে ভিলে ভিলে না ভাবিলে।

গৌর-প্রেমের প্রেমিক যারা, প্রেমানন্দে ভাসে ভারা, ভারা জানে গৌর-চাঁদের দীলে। ভারা গৌর-কথা বিনে কথা কয় না এ প্রাণ গেলে।

রে মন গুরু-মুখপদা বাকা, হাদয়ে করিবে ঐকা, দাভভাবে থেক চরণতলে।

ইহাদের মেলার দিন-বিশেষে শ্রীক্ষকের ভিন্ন ভিন্ন লীলার অমুকরণ হইরা থাকে। এক ব্যক্তি ইহাদের এই বিষয় প্রচার করিয়া দিবার উদ্দেশে একথানি নাটক * লিখেন, ভাহাতে রাস-কেলির প্রদক্ষ আছে। শুরু শিষ্যগণকে ঐ লীলার অমুঠান করিবার আদেশ দিলে, সভাস্থ একটি স্ত্রীলোক জিজ্ঞাসা করিল,

"প্রভূ! রাস-কেলি হবে বটে; কিন্তু আপনার ন্যায় অষ্ট ক্লফ পাব কোথায় ! প্রভূ। প্রিয়ে! তজ্জন্ত আবার ভাবনা? আমি যেমন একটি ক্লফ, এই বে আমার ভক্তবৃন্দ বসে আছেন, ইহারা আংশিক ক্লফস্বরূপ। তোমরা সকলে একত্র হরে, ভক্তিভাবে মালা চন্দন দিয়ে, প্রত্যেকে প্রত্যেকের বামে দাঁড়োও, তবেইতো রাস-কেলি সমাধা হয়।"

কিশোরী-ভন্ধন বাঙ্গালা দেশের পূর্ব্বণণ্ডের অনেক স্থানেই প্রচলিত আছে। ইহার মধ্যে ভন্মলোক অভি অর। কামার, কুমার, তেলি, সাহা, কৈ বর্ত্ত প্রভৃতি ইতর লোকই অধিক। বাঁহার নিকট এই বিষয় অবগত হইরাছি, তাঁহাদের নিজ গ্রামেই ঐরপ কিশোরী চক্র বিভ্যান আছে। তিনি বলেন, ইহাদেয চক্রের মধ্যে স্ত্রী প্রস্থের একত্র সমাগম নিবন্ধন নানাবিধ কুৎসিত ঘ্যবহার চলিয়া থাকে। সেইটি আকার ইঙ্গিতে ব্যক্ত করিয়া দিবার উদ্দেশে উল্লিখিত নাটিকা থানি বিরচিত হয়।

কুলিগায়েন।

রাতভিধারির ভায় আর এক প্রকার ভিক্সক আছে, তাইাদের নাম কুণি-গারেন। নবদীপ-নিবাসী শ্রীনিবাস আচার্য্য তাহাদের প্রবর্ত্তক। তাহারাও কাহার ঘারত্ব হয় না। তিন, চারি বা পাঁচ, ছয় জন একত্র মিলিত হইয়া পথে পথে গান করিতে করিতে গমন করে; গৃহত্বেরা তাহাদিগকে আহ্বান করিয়া ভিক্সা দেয়।

ইহাদের ভিক্ষার সময় নিরূপিত নাই। কি দিবাভাগে কি রাত্রিযোগে, বে সমরে স্থবিধা হয় সেই সময়েই ঐকপ ভিক্ষা করিতে যায়। কলিকাতার সমীপস্থ বালিগ্রামে চৈত্র মানে মহাসমারোহ পূর্বকি রামনবমীর উৎস্ব হয়।

শশিভূবণ কর-প্রণীত "মজার কিশোরী-ভজন"।

প্রতি বর্ষেই দেখিতে পাই তিন চারি জন কুলিগারেন পথে পথে গান করেও যাত্রীরা ভারাদিগকে আহ্বান করিয়া ভিক্ষা দান করিয়া থাকে।

हेहिलाश वा तिरमा विकास ।

বৈষ্ণবেরা ভ্রিন্ন ভিন্ন বৃত্তি অবশ্বন করিয়া ভিন্ন ভিন্ন নামে প্রশিদ্ধ হইরাছে

মন্ত একরূপ ভিক্লুকের নাম টহলিয়া বা নেমো বৈষ্ণব। তাহারা বৈশাধ,
কার্ত্তিক ও মাঘ মাদে প্রাতঃকালে হারে হারে হরিনাম সংকীর্ত্তন করিয়া বেড়ায়
তাহারা প্রতি বিন কিছু না লইয়া সংক্রান্তির দিবদে একেবারে সমগ্র মাদের
ভিক্লা সংগ্রহ করে।

দশামাৰ্গী।—(মায়িকা পন্থী।)

এই সম্প্রদায়ীরা যোগিগুরু গোরক্ষনাথকে নিজ সম্প্রদারের প্রবর্ত্তক বলিরা প্রচার করে। ইহারা যোগুমায়ায়িশিনী হিন্দু লাজেখরীর উপাসক। উপাসনাস্থানের নাম সমাজ। স্থানে স্থানে ইহালের সমাজ-গৃহ আছে। চৈত্র মাসের রামনবমীতে ও আখিন মাসের শুরুপকীর নবমী তিথিতে তথায় ভজনা হইয়া থাকে। প্রত্যেক সমাজ-গৃহে এক একটি বেদী আছে; ইহারা সেই বেদীর উপর হিন্দু লাজমায়ী নামে শিব-শক্তির অর্চনা করে। পূজায় ছাগ বলিদান করে ও মন্তু নিবেদন করিয়া দেয়। দিয়া, সকলেই মন্তু মাংস প্রসাদ পায়।

ইহার। গৃহস্থ; স্ত্রী পুজাদি লইরা দংসার-ধর্ম পালন করে। উলিথিত সমালগৃহে এক একটি মহস্ত পাকে; গুনিরাছি, সেই মহস্ত ইচ্ছাফুদারে, কোন শিব্যের
ভার্যার সহিত সহবাস করে এব' তদ্বারা যে বীক্স নির্গত হর, ভাহা জ্যোৎস্বরূপ
জ্ঞান করিরা বেদীর উপর স্থাপন পূর্বক মদ্য মাংসাদি উপকরণ হারা ভাহার
অর্চনা করিরা থাকে। ইহারা হিঙ্গুলাজেখরীর নিদর্শন স্বরূপ গল-দেশে ঠুম্রা
ধারণ করে ও আলেথিয়া সম্ল্যাসীদের মত * আলেথ শক্ষ উচ্চারণ পূর্বক ভিক্লা
করে। অন্ত অন্ত হিন্দু সম্প্রদারীরা শরীরের চক্ষ্, কর্ণ, নাসিকাদি নয়টি হার
বীকার করে; ইহারা তদভিরিক্ত অপর একটি দশম হার অঙ্গীকার করিরা
থাকে। এই নিমিত্ত ইহাদের নাম দশামার্গী অর্থাৎ দশম মার্গী। ইহারা বলে,

^{*} देनवानि मच्छानात्र । ४४ पृष्ठी ।

খাস প্রখাস ঘারা যে সোহহং শক্ষ উৎপত্ন হয়, ঐ দশম ঘার ঘারাই ভাহা নির্গত হইরা থাকে।

জোগ্নি * ও শাস্বী।

এই উভয়ই ভবানীর উপাসক। নবরাত্রে ও তাহার পর দিবসে বোলাই-প্রদেশীর বাদ্বল-জাতীর বিবাহিত স্ত্রীলোকেরা ঐ দেবভার নামে হারে হারে ভিক্লা করিয়া বেড়ায়। তাহাদের দক্ষিণ বাহতে একটি শৃত্য-গর্ভ অলাব্-পাত্র লখিত থাকে। তাহারা প্রতি দিনই ততুল ভিক্ষা পার এবং নবরাত্রের কোন দিবসে প্রত্যেক গৃহের গৃহিণী বা অক্ত কোন বয়োজ্যেষ্ঠা স্ত্রীলোক ঐ অলাব্ পাত্রের পূজা দেয়। তাহারা একখানি ক্ষুদ্র কাষ্ঠাসনের উপর ঐ শৃত্ত পাত্র সংস্থাপন পূর্বাক তাহার চতুর্দিকে তত্ত্বল, হরিদ্রা ও রক্তবর্ণ চূর্ণ দ্রবারিশেষ হারা রেখা করে। তাহার উপর চুম্কি লাগাইয়া দেয় এবং তাহা তত্ত্বে পূর্ণ করিয়া দীপ হারা আরতি করে। জোমিরা নিজ হত্তে হবিদ্রা লেপন করে এবং ক্রদেশে রক্তবর্ণ চূর্ণ বস্তু-বিশেষ ও চাক্চকাময় অক্ত থাত্-দ্রব্য-বিশেষ লাগাইয়া দেয়। উল্লিখিত গৃহিণীয়া জোমি এবং ঐ ফলের সন্মুব্ধে আরত্তি করিয়া থাতেক। শান্ধীয়া দল্লা ভিক্লা করে। এই নিমিন্তই তাহাদের নাম শান্ধী। তাহারা গৃহত্তের নিকট তত্ত্ব ও তৈল ভিক্লা গ্রহণ করে এবং শক্ষধ্বনি পূর্বাক তাহাদিগকে আশীর্কাদ করিয়া বায়। †

নরেশপন্থী #।

বৰ্দ্ধমান জেলার অন্তর্গত জাম্দো গ্রামের অধিবাদী নরেশচক্র ভট্টাচার্য্য এই পন্থী প্রবর্ত্তিত করেন; এই নিমিত্ত তাঁহার মতাবলম্বীরা নরেশপন্থী বলিয়া প্রসিদ্ধ

এটি যোগিনী শব্দের অপত্রংশ বোধ হয়।

⁺ Indian Antiquary, March, 1881, p. 73.

[়] বর্জনান জেলার মন্তর্গত রায়না প্রাম নিবাসী শ্রীবৃক্ত রাজেক্সনাথ দন্ত বাবু অনুপ্রত করিয়া
নরেপপন্থী ও কেউড্লাস নামক ছুইটি উপাসক-সম্প্রদারের বৃত্তান্ত আমার নিকট প্রেরণ করেন।
আমি তদ্বারা যথে ই উপকৃত ও আহ্লাদিত হইয়া বত্ব সহকারে এক্তল নরেশপন্থীর বৃত্তান্ত প্রকাশ
করিতেছি। রাজেক্স বাবু লিখেন কেউড্লাসেরা নিতান্ত নির্প্তণ উপাসক। ইহা হইলে তাহাদের
বিষরণ এই প্রক্রের তৃতীর ভাগে সন্ধিবেশ করাই সন্ধত হয়। কিন্তু সে ভাগ প্রকাশের এখন

হইরাছে। খনা গিরাছে, ন্যুনাধিক ৭০ সত্তর বংসর হইল, তিনি লক্ষ গ্রহণ করেন। তাঁহার পিতার নাম হলধর ভট্টাচার্যা। তিনি সংস্কৃত শাস্ত্রে পাঞ্জিতা ও সঙ্গীত-বিদ্যার নিপুণতা প্রযুক্ত বর্দ্ধমানের রাজার সভাসদ হন। তদীর পুত্র নরে শচল পিতার নিকট সংস্কৃত ও বাঙ্গালা শিক্ষা করেন এবং অল বয়সে ধর্ম বিষয়ে অমুরক্ত হন। কতক গুলি খানা-বিষয়ক দঙ্গীত তাঁহার বিরচিত বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে, কিন্তু পরে শ্রীমন্তাগবত অধ্যয়ন করিয়া বৈঞ্চব ধর্মে তাঁহার অফুরাগদঞ্চার হয়। তিনি কিছুকাল প্রবল উৎসাহ সহকারে ধর্ম বিষ্ণের আন্দোলন করেন এবং অনেকানেক প্রসিদ্ধ বৈষ্ণব ও তান্ত্রিক পণ্ডিতের সহিত তর্ক বিতর্ক করিতে প্রবুত্ত থাকেন। অবশেষে এইরূপ স্থির করেন বে জগৎ ব্রহ্মময়: প্রত্যেক জীবেরই আত্মাতে কিয়ৎ পরিমাণে ব্রহ্মের শক্তি বিদ্যমান আছে; মান্তবে ব্ৰহ্মের শক্তিতে শক্তিমান হইলে অচিরাৎ পরব্রহ্ম লাভ করিতে পারে; মহুষ্য ত্রন্ধের প্রতিরূপ পর্মণ; এই নিমিত্ত ত্রন্ধ-বলে বলিষ্ঠ ব্যক্তিকে গুরু স্বীকার করিয়া তাঁহার উপদেশামুযায়ী কার্য্য করিলে জীব মুক্তি-পদ প্রাপ্ত হর। যে সময়ে তিনি এই সমস্ত মত অবধারণ করেন, সেই সময়েই মহাভারতের নিম-লিখিভ শ্লোকটি পাঠ করিয়া জাভি-ভেদ প্রথার আস্থা-শূন্য रन।

> न विशेषीऽसि वर्षानां सन्ते ब्राह्मसिदं जगत्। ब्रह्मणा पूर्वस्वष्टं हि कसंभिवंषीतां गतम्॥

> > (साक्सर्यः ১৮৮ अशायः। ১० शाकः।

এই ব্ৰহ্মমন্ন সমগ্ৰ জগতে বৰ্ণের বিশেষ নাই। ব্ৰহ্ম কর্তৃক পূর্বাস্থ মহুবাগণ নিজ নিজ কর্মানুসারে নানা বর্ণে বিভক্ত হইয়া যায়।

পরে তিনি নিজেই আপনাকে মানব-গুরু বিশ্বরা প্রচার করেন এবং জাস্দো গ্রামে আপনার পিতৃত্য অতুলক্তঞ্চ ভট্টাচার্য্যের বৈঠকধানাবাটীতে দেবতা-বিশে-বের প্রতিমূর্ত্তি স্থাপিত করিয়া রাথেন। প্রতিদিন প্রাতে ও সায়াকে তথায়

কত বিলম্ব আছে কিছু বলা যার না। এই জন্য পরিশিটের শেবের ধিকে ঐ কেউড়দাস ও ভাস্প জন্য ফুই একটি সম্প্রদারের কথা বিনিবেশিত হইল।

সংকীর্ত্তন হইত। সেই সংকীর্ত্তনের অন্তর্গত জাতি-ভেদ-বিরোধী একটি গীত পশ্চাৎ উদ্বৃত হইতেছে।

"জেতের গৌরব কোথায় রবে, যখন এসব ফেলে যেতে হবে। বামন, কায়েত, কামার, কলু ভিন্ন ভিন্ন ভাবছ সবে। এ সব ঘুচ্বে সে দিন, ভোমায় যে দিন, রাজাধিরাজ তলব দিবে।

গোড়েছে এক কারিকরে, স্ত্রী আর পুরুষ ভঙ্গীভাবে; তাদের চাল চলনে সবাই চিনে, ঢাকিলে না ঢাকা রবে।"

ঐ সময় অবধি তাঁহার মত-প্রণালী প্রচারিত হইতে লাগিল। কবি নরেশ-চক্র আপনার শিষ্যদিগকে নরেশপন্থী বলিয়া আহ্বান করিতেন, এই নিমিন্ত তাঁহার সম্প্রদায়ীরা ঐ নামেই বিখ্যাত হইয়াছে।

नरत्रभभश्चीरमत् निरुध्रविधि ।

প্রথম। জাম্দো-নিবাসী কবি নরেশচক্ত ভট্টাচার্য্য মহাশয়কে দেবাসুগৃহীত ও মন্ত্র্য-গুরু বলিয়া বিখাস না করিলে, নরেশপন্থীদিগের ও তণীয় অধঃস্কন পুরুষ-পরস্পরার মুক্তি হইবে না।

বিতীর। বিবাহের সভার নরেশচক্ত প্রভুর নামে বরমাল্য অর্পণ করিতে হয় এবং বিবাহ, প্রাদ্ধ ও অন্নপ্রাশন উপলক্ষে, নরেশচক্রকে প্রধান নৈবেন্ত নিবেদন করিয়া দিতে হয়।

তৃতীর। সপ্তাহে ছইবার, অন্ততঃ একবারও সারাহে প্রকাশভাবে তাঁহার গুণ-কীর্ত্তন করিতে হয়।

চতুর্থ। নরেশপন্থীরা মন্ত-পান ও ছাগ-মাংস ভোজন করিতে পারিবে, কিন্তু বর্ণ-বিচার স্বীকার করিবে না; কেবল মোনল্মান, মুচী, হাড়ী, মুদ্দকরাস এবং মেথরেরা পংক্তি-ভোজনে উপবিষ্ট হইতে পারিবে না।

পঞ্চম। শাক্ত ও শৈব-সম্প্রদায়ীরা পরম্পার বিরোধ পরিত্যাগ করিয়া অভিন্ন ভাৰ অবশ্বদন না করিলে, নরেশপন্থী হইতে পারিবে না।

ষষ্ঠ। সামাজিক উপাসনার সময়ে জীলোকে অবপ্তঠন অর্থাৎ খোষ্টা ব্যব-হার ক্রিতে পারিবে না।

উপাদনার নিয়ম।

ইহারা অনেকে একত্র মিলিত হইয়া উপাসনা করে। ইহাদের উপাসনা গৃহের নাম সমাজ। অমাবস্থার দিবদে উপাসনা করা বিধের নয়। গর্ভবতী রীলোকের ঐরপ উপাসনা-স্থলে উপস্থিত থাকা বিহিত্ত নয়। উপাসনার সময় বিধবা স্ত্রীলোকের ও ললাটে সিন্দুর দিবার নিষেধ নাই। উপাসনার সময় সকলে নিয়-স্থলে একত্র উপবিষ্ট হয়; কেবল নরেশচন্দ্র প্রভুর উদ্দেশে লোহিত-বসনাবৃত্ত স্বত্ত্র একথানি উচ্চ আসন শৃশু থাকে। তাহারই পার্ম-স্থিত মৃত্তিকা-নির্ম্মিত উন্নত আসনে গাঁই অর্থাৎ আচার্য্য মহাশয় উপবেশন করেন। সকলে একত্র মিলিত হইয়া নরেশ প্রভুর গুণ গান করিলে পর, উক্ত গাঁই মহাশয় ধর্ম্মোপদেশ প্রদান করেন। উপাসনা-কার্য্য সমাপ্ত হইলে সকলে একত্রে ভোজন করে এবং সেই সময়ে স্ত্রীলোকের নিকট হইতে মাসিক অস্ততঃ ৴১০ দেড় আনা ও প্রক্ষের নিকট মাসেক অন্ততঃ ৵০ ছই আনা হিসাবে চাঁলা গ্রহণ করা হইয়া থাকে। পূর্বেই লিথিত হইয়াছে, ইহাদের মধ্যে জাতি-ভেদ নাই; ইহারা বলে,

"একে সব, সবে এক। চেয়ে নরেশ প্রভু দেখ॥"

ব্রাহ্মণের যজ্ঞোপবীত পরিত্যাগ করিবার প্রয়োজন নাই, কিন্তু সন্ধ্যা আছিকের সমরে নরেশ প্রভ্রের নাম গ্রহণ না করিলে, পূর্ব্ব উপবীত পরিত্যাগ করিয়া
ন্তন উপবীত ধারণ করিতে হয়। উপাসনার সময়ে সকলে একবার বাম বাছ
ও একবার দক্ষিণ বাছ উত্তোলন করে এবং মধ্যে মধ্যে শিরোদেশও সঞ্চালন
করিয়া থাকে। কেহ কেহ নরেশ প্রভ্রের উদ্দেশে টাকা, পয়সা, তওুল, ফল,
মূল প্রভৃতি প্রদান করে। ইহাদের আথ্ডার হই মাসান্তে এক একবার ভোজ
হয়। জাম্দো গ্রামে অভ্যাপি বৈশাধ মাসে নরেশচক্রের স্মরণার্থ কাপান হইয়া
থাকে। নরেশপন্থীরা বাল্য-বিবাহের বিরোধী কিন্তু বিধবারিবাহের নিভান্ত
বিরোধী নয়। ইহারা হিল্পু মভাবলন্ধী অন্ত কোনরূপ উপাসক-সম্প্রদারের বিদ্বেমী
নয়; বরং সকলকেই প্রদ্ধা করিয়া থাকে। কিন্তু মোসল্মানদিগকে অভ্যন্ত স্থণা
করে।

নরেশচন্ত্র এই অভিনব মত প্রবর্তন করাতে আয়া জনের উৎপীভূনবশতঃ

গৃহ হইতে বহির্গত ও পলায়িত হইয়া কুমারপুর প্রামে অবন্ধিতি করেন এই স্থানে তাঁহার মৃত্যু হয়। মৃত্যুর পর, বর্জমানের দক্ষিণ থণ্ডের বহু সংখ্যক লোক তাঁহার মত অবলম্বন করে ও স্থানে স্থানে উপাসনা-সমাজ প্রতিষ্ঠিত হইয়া কিছু কালের মধ্যে তাঁহার মতামুখায়ী ধর্মসম্প্রদায় পরিব্যাপ্ত হইয়া গড়ে। বর্জমান জেলার অস্তর্গত হরিচরণবাটী, শুড়ে ও রশুইথগু, হুগলি জেলার অস্তর্গত কল্যাণ-পুর ও কালীপুর এবং কলিকাতার অস্তর্গত বাগবাঞ্চার-সন্নিহিত লালবাগানে ইহাদের এক একটি সমাজ আছে। দ্বাবিংশতি বংসর হইল, উক্ত হরিচরণবাটীর সমাজ নবীনদাস বৈরাগী নামক একটি নরেশপন্থী কর্তৃক সংস্থাপিত হয়। প্রতি মঙ্গলবারে তথায় উপাসনা হইয়া থাকে। গেই স্থানে সপ্তাহে প্রত লোকের সমাগম হয় যে, ইহাকে অপর একটি তারকেশ্বর বলিলেও বলা ঝায়। ইহার আচার্য্য নবীনদাস বৈরাগী এবং বাদ্যুক্র অধ্রলাল বৈরাগী। প্রায় ৫। ৬ জ্বোশ হইতে তথায় নিয়ত লোক আ্যুদিয়া ঐ নবীনদাস আচার্য্যের পূজা দেয়।

করেক বংশর পুর্বের্ম সেই সমাজে ভয়ানক ছণিত ব্যাপার সমূহ সম্পাদিত হইত। তাহা নিবারণ করিবার উদ্দেশে বর্জমানের তদানীস্তন মাজিট্রেট্ মেট্কাফ্ সাহেব:বিস্তর যত্ন করেন, কিন্ত ক্লতকার্য্য হইতে পারেন নাই। বাহা হউক, এক্ষণে অনেক পরিমাণে সে সকল ব্যাপার রহিত হইয়া গিয়াছে। এই সমাজের নরেশপন্থীরা নিরামিষ-ভোজী।

বছকালাব্ধি শৈব-বৈষ্ণবের পরস্পার বিবাদ বিস্থাদ প্রাণিদ্ধই আছে।
নরেশচন্ত্র কৌশল ও উপদেশ প্রদান ধারা ঐ প্রদেশীর অনেকগুলি শাক্ত, শৈব
ও বৈষ্ণবের বিরোধ ভঞ্জন করিয়া দেন। তিনি এই উপদেশ দেন যে, বিনি
খ্যামা, তিনিই রাধা; ভেদ জ্ঞান করা অনর্থের মূল। তাহারা তাঁহার দল ভ্ক
ইল ও তদব্ধি আপনাদিগকে নরেশপন্থী বলিয়া পরিচয় দিতে আরম্ভ করিল।
এমন কি, বৈষ্ণবেও শৈব শাক্তের সহিত একত্র উপবেশন পূর্বক অমান বদনে
ও অকুতোভরে মংস্য মাংস ভক্ষণ করিতে প্রবৃত্ত ইল্ল।

নরেশপন্থীরা উপাসনার সময় যেরূপ গান করিয়া থাকে, পশ্চাৎ উদাহরণ স্থরূপ তাহার হই তিনটি লিখিত হইতেছে। গান গুলির ভাব অনেকাংশে নেড়া, বাউল ও কর্তাভনাদের গানের অনুরূপ।

উপাদনা--- সঙ্গীত।

প্রভূ দীনে দেহ পদ-ছায়া। আছে ভোমার ভরসার জায়া॥
ভবের ভাবে মেতে আছি, বলুবো কি ভবের মায়া।
নহিলে প্রভূ ভেরিয়ে যেতাম, লাগীয়ে লগা লাখের কাঁরা॥

সায়াহ্বের গীত।

ভবের দেখে হোলাম্ ভেকা, আর যায় না কো এ কুল রাখা। মরি, ছঃখের কথা বল্বো কি, হারিয়ে গেলে পাই না খি, দেখে শুনে হোলাম্ বোকা।

ভগ্ন ঘরে প্রাচীর পড়ে, শিরে জল রোখা চোখা, তা দেখে বুড়ো কাঁদে, চেঁচিয়ে উঠে কচি খোঁকা।

কুশো বলে, চোর পালালে, প্রাণটি করে ধোকা ধোকা; নাই কো নরেশ বিনে এ বিপিনে, বিষেতে আর মধু মাখা।

তৃতীয় গীত।

চেয়ে দেখ্ সড়ক্ পানে। ফুটেছে সোণার কমল, চাঁদ চেয়ে সে নিরমল, মলাতে তার কর্নের কি, আপ্নি আলোক ঐ বিমানে॥

নরের গুরু নরেশ এসে, ভূ-সার জামদোর বোসে, হাসিয়ে, সব আপন দাসে, মজিয়ে গেছেন কাঁগাল জনে।*

^{*} রারনা-নিবাসী শ্রীযুক্ত রাজেজ্ঞানাথ দত নিজে আগ্রহ প্রকাশ পূর্বক নরেশ পদ্ধী ও কেউড় দাস নামক ছুইটি সম্প্রদারের বৃত্তান্ত আমার নিকট প্রেরণ করিরা ভারতবর্ষীর উপাসক;সম্প্রদারের ছিতীর ভাগের মধ্যে সন্নিবেশ করিতে অমুরোধ করেন। আমি তাদৃশ বিবর সকল সংগ্রহ করিতেছিলাম, স্বতরাং উহা পাইরা কুতার্থ হইলাম। তিনি একটি অক্রমন্তান; করেক থানি বালালা গ্রন্থও রচনা করেন; আমাকে তাহা উপহারও দেন। সহসা তাহার কথার সন্দেহই বা কেন উপস্থিত হইবে? নরেশচন্দ্র * একটি দেবতা-ভক্ত লোক ছিলেন, বর্ষমান জেলার অন্তর্গত জাম্দো গ্রামে বাস করিতেন, অনেক্ওলি স্থামাবিবরক গীতও রচনা করেন, রাজেজ্ঞনাথের লিখিত এই কথাওলি পূর্ব্বে আমি অবগত হিলাম। তাহার পত্রে উনিধিত শোভাবালারের রাজ-বাটীর কুট্ব

^{*} ইনি নুরচন্ত্র বলিয়াও বিখ্যাত।

পাঙ্গুল।

বোষাই প্রদেশেও একরূপ প্রাতঃ-ভিফুক আছে, ভাহাদের নাম পাসুল। ভাহারা প্রভূষে দ্বারে দ্বারে গমন করিয়া ভবানী, মহাদেব, গণপতি প্রভূতি নানা গ্রাম্য দেবতার নাম উচ্চারণ পূর্বক ভিক্ষা করে এবং একটা পরসা পাইলেই গৃহস্থালগকে বিশেষতঃ তদীয় মৃত পূর্বপুরুষকে, আশীর্বাদ করিয়া প্রস্থান করে। ভাহারা কথন কথন পথের নিকটস্থ বৃক্ষোপরি আরোহণ পূর্বক দেবভাবিশেষের নাম সংকীর্ত্তন করিয়া পথিকদিগের নিকট উচ্চৈঃস্বরে ভিক্ষা করে।

কেউড়দাস।

উত্তরয়াচীয় কায়য়-কুলোয়েব কেউড়াল নামে এক ব্যক্তি এই সম্প্রাণায়
প্রবিত্তি করেন এই নিমিত্ত ইহার নাম কেউড়ালা। কিন্তু এটি তাঁহার প্রকৃত্ত
নাম। তাঁহার এই ক্রন্তিম নাম গ্রহণ বিষয়ের একটি প্রবাদ আছে; পশ্চাৎ
লিখিত হইতেছে। কার্তিকলাস নামে কোন ভদ্রসখান বীরভূম জেলার বিচারালয়ে হত্যাপরাধে নীত হন। বিচারপতি তাঁহার নির্বাসন-দভ্রের আদেশ দেন।
কার্তিকলাস কোন রূপ কৌশলক্রমে পলায়ন পুস্রক আপনাকে কেউড়ালা
বিলয়া পরিচয় দেন। প্রথমে বর্জমান জেলার দক্ষিণ খণ্ডের অন্তর্গত উচানল
গ্রামে ও পরে স্থযোগ ক্রমে নানা স্থানে অবস্থিতি করিয়া সনাম-প্রসিদ্ধ সম্প্রদায়
মত প্রচার করেন। শুনা গিয়াছে, নানাধিক বিংশতি বংসর হইল, এই
স্প্রেদায় স্কুম্পতি প্রচলিত ইইয়াছে; ইতি মধ্যেই বর্জমান জেলার দক্ষিণ খণ্ড
ও মেদিনীপুর জেলার অন্তর্গত নানা স্থানের অধিগাসী অনেক লোক এই মত
অবলম্বন করিয়াছে। ইহারা আপনাদিগকে একমাত্র অভিতীয় পরমেশ্বরের
উপাসক বলিয়া পরিচয় দেয় এবং সম্প্রদায়গুরু কেউড়দানের প্রতি অভিমাত্র

শীনাথ সিংহ, বর্জনানের রাজ-বাটার কর্মচারী বিপ্রদাস চটোপাধাায় প্রভৃতি করেকটি নাম বাস্তবিক লোকের নামও বটে। অতএব এস্থলে কোন মিথাা-প্রবঞ্চনার আশক্ষা মনে হয় নাই। সম্প্রতি কিছু দিন হইল, কোন কারণে সংশয় উপণ্ডি হওয়াতে সবিশেষ অনুস্কান কবিয়া দেখি, উচার লিখিত বৃত্তান্ত গুলির অধিকাংশ অমূলক। তিনি যে যে স্থলে নয়েশপস্থ দিগের সমাজ আছে বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন, তাহা বস্তুতঃ কর্ত্তাভ্জাদিগের বৈঠক-স্থান। কেউড্দাসের কোন নিদর্শনই প্রাপ্ত হওয়া বায় নাই। অতএব তাহার প্রেরিত ঐ সুইটি সম্প্রদারের বৃত্তান্ত প্রমাণ-দিছ বোধ হইতেছে না; প্রত্যুত্ত, অপ্রামাণিক বলিয়াই প্রতীর্মান হইতেছে।

ভক্তি শ্রদ্ধা প্রকাশ করিয়া থাকে। তদ্তিয় অণর কোন দেবতাকে গ্রাহ্থ করে না এবং স্বসম্প্রদায় মধ্যে বর্ণবিচারও স্বীকার করে না। ইহারা কেউড়দাসকে পুরাণ-প্রসিদ্ধ চক্তবংশোদ্ভব বলিয়া সমস্প্রদায়ের খ্যাতি ও গৌরব প্রকাশ করে।

ফকির-সম্প্রদার।

কিছু দিন হইল, গোয়াড়ি রুফ্ষনগর অঞ্জে ফকির নামে একটি উপাসক
সম্প্রদায় প্রবর্তিত হইয়াছে। ইহার মধ্যে হিন্দু মোদল্মান্ উভয় জাতীয় লোকই
আছে। অধিকাংশই মোদল মান্; হিন্দুর ভাগ অভি অল্ল। হিন্দু ফকিরেরা
সকলেই গৃহী; মোদল্মান্দিগেরও মধ্যে উদাদীনের ভাগ অভি অল্ল।

ইহারা ঘোষপাড়ার মতের অনুরূপ মতাবলগী। বাঁহার নিকট এই সম্প্রদায়ের সন্থান প্রাপ্ত হই, তিনি * বলেন, বোধ হয় ইহারা † ছল্পবেশী কর্তাভঙা; সজাতীয় লোকের মনোরঞ্জনাত্র্থ ফকিরের বেশ ধারণ করিয়াছে। ইহারা পীর প্রুগ্র্মর কিছু মানে না। 'নয়নে দেখিন যারে, কিরুপে সাধিব তারে' এই কথা কথায় ক্রীণায় বলে। ইহাদের আরও একটি সাম্প্রদায়িক সত্র্কতার কথা আছে। 'আপন ধরম কথা না কহিবে যথাত্থা আপনারে ইইবে সাবধান।' ইহাদের ভিনটি গীতের প্রথমাংশের কয়েকটি চরণ পশ্চাৎ শিখিত হইল।

১। সাগে সভা ধর্ম যাজন কর আমার মন। ওরে সভা মাকুষ দেখ্বি যদি, সভা বল মন্ নিরবধি, ভাজা কর অসভাবাদী, তবে মিল্বে প্রেম-রতন। দিনে দিনে দিন ফুরাল এলো কাল। কোন্দিন ভোরে হবে যেতে, বল্ দেখি কে যাবে সাথে, তখন ঘট্বে রে বিষম জঞ্জাল। তখন জান্তে পার্বি ভোর কর্ম্ম-ফল। ও ভোর কোন্দিন দেহ যাবে পড়ে, ভীর্থ-যাত্রা সকল হেড়ে, ঠিক্ দিয়ে থাক্ বসে পিঁড়েয়, মিথ্যা ভোর ভীর্থ ভ্রমণ।

২। কর গুরু-তত্ত্ব সার, ওরে মন আমার, গুরু বিনে পারে যেতে

^{*} আমার পরমান্ত্রীয় শ্রীযুত ব্রজনাথ মুখোপাধায় খাবু।

⁺ অর্থাৎ এই সম্প্রদায়ী মোদল মান্-জাতীয় লোক।

পার্বে না। ভাবিয়ে অস্তরে, খাট গুরু-ছারে, লয়ে যাবে পারে, কেলে যাবে না। যদি এসেছ এ পারে, যেতে হবে পারে, ভাব মন তারে, যদি যাবে পারে। স্থমতি হইয়া, গুরুকে লইয়া, আনন্দিত হয়ে থাক রসনা। গুরু-বাক্য ঐক্য কর, সাধু শাস্ত্র ধর, ভবে যাবে পার, ভাব কি অসার, গুরু-মুখপন্ম-বাক্য, হৃদয়েতে কর ঐক্য, সূক্ষ্ম ভাবে শাস্ত হয়ে থাক না।

৩। মামুষ এই সত্য মামুষ মামুষ বই আর কিছু নাইরে মানুষ।
মনের মন মনম্ব প্রাপ্তি বস্ত পাওয়া যায় এই মামুষের চাঁই। অনেক
চিস্তনের সে ধন, তারে কর সমূহ যতন, তবে সে মিলিবে রতন, ওহে
সাধু ভাই।

কুম্বপাতিয়া।,

কিছু দিন হইল, সমাদপতে কুজুপাতিয়া নামে একটি অভিনৰ সম্প্রদায়ের বিবরণ প্রকাশিত হয়। তাহারা নিরাকারবাদী; দেবদেবীর উপাসনার অভ্যস্ত বিদ্বৌ। গত বৎসর তাহাদের মধ্যে কতকগুলি লোক জগরাথ, বলরাম ও স্প্রস্তাবে দগ্ধ করিবার উদ্দেশে পুরী মধ্যে প্রবেশ করে। বালালা সম্বাদপতে মধ্য-বিভাগের কমিশনরের লিপিপ্রমাণে তাহাদের মতামতের বিষয় বেরূপ লিখিত হয়, পশ্চাৎ অবিকল উদ্ধৃত হইতেছে।

"ইহারা হিন্দু, কিন্তু দেবদেবী মানে না, এক নিরাকার আলেও পুরুষকে
মানে। তাহারা বলে, তাঁহার কথা কেহ লিখিরা শেষ করিতে পারে না।
আলেও খামী নামে এক ব্যক্তি আপনাকে ঈখরের অবতার বলিরা পরিচর
দিরা ১৮৬৪ আঠারশ চৌষটি সালে এই ধর্ম সংস্থাপিত করেন। উড়িয়া ও
মধ্য-ভারতবর্ষে এই ধর্ম খুব প্রচারিত হইরাছে। প্রার ত্রিশটি পরীর লোক
এই ধর্মাবলন্ধী হইরাছে। ইহারা কুভু নামে এক প্রকার গাছের ভোর প্রস্তুত করিরা কোমরে পরিধান করে বলিরা কুভুপাতিরা নাম পাইরাছে। গৃহী ও
কিন্সীন ছই প্রেণীর বলকেই ইহাদের মধ্যে আছে। ইহাদের উদাসীনেরা
সকল বর্ণের লোকের অর আহার করে। কেবল প্রজা-পীড়ন করেন বলিরা
রাজার জর, প্রাছের দান লয় বলিরা ব্রহ্ণের অর, বস্তু পরিছার করে বলিরা রঞ্জকের অর ও অপবিত্র কার্য্য করে বলিয়া হাছির অর প্রহণ করে না। সভ্যহথন, বিশাস, গুরুর সম্পূর্ণ অধীনতা এই দলের লোকেদের বিশেষ লক্ষণ।
ভাহারা প্রতিদিন হর্য্যের দিকে মুথ ও নাকের নিকট হাত জ্যোড় করিয়া উপাননা করে। তাহারা কথন কথন তিন চারি জনে একত্র এক রকম সকরণ
সমস্বরে উপাসনা করে এবং চৌষ্টি বার ভূমিষ্ঠ হইয়া প্রণাম করে। তাহাদের
ব্যবহার অত্যস্ত অপরিক্ষার। পীড়া হইলে তাহারা ঔষধ থায় না। কেবল
মালেখ প্রক্ষের রুপার উপর নির্ভর করে। তাহাদের মধ্যে স্ত্রী পূর্ক্ষের সম্বদ্ধ
তত বিশুদ্ধ বলিয়া বোধ হয় না। তাহারা দৈববাণী প্রাপ্ত হয় এরূপ বিশাস
করে। জগরাথকে ধ্বংস করিতে পারিলে দেবদেবীর পূজা নির্দ্মণ হইয়া যাইবে
ও সকলে তাহাদের ধর্ম্ম গ্রহণ করিবে এই জক্ত তাহারা জগরাথের উপর
মাক্রমণ করিতে গিরাছিল। সম্প্রতি একব্যক্তি জগরাথের মন্দিরে মারা যাওয়ায়, তাহারা সকলে অত্যস্ত কুল্ব হইয়াছে।"——ক্লেন্ড সমাচার, ১২৮৮ সাল, ২১
ভার্তিক।

খোজা।

গিল্প, মস্কট, জেন্জিবর, ভাওনগর প্রভৃতি পশ্চিম প্রদেশে নানা স্থামে থোজা নামে একটি সম্প্রদার আছে। যদিও তাহারা আপনাদিগকে মোসল্যান্ বিলয়। পরিচর দের, কিন্তু ভাহাদের আচার,ব্যবহার ও ধর্মাম্টান হিন্দু ও মোসল্যান্ উভর ধর্ম-মিশ্রিত। মুম্যু ব্যক্তির নিকট কোরাণের কির্দংশ ও দশাবভাবের উপাধ্যান উভরই পঠিত হয়, মৃত্যু ঘটিলে পর, হিন্দু ও মোসল্মান্ উভর নাক্রাহ্রায়্বায়ী অস্ত্যেষ্টি ক্রিয়াদি সম্পাদিত হইয়া থাকে। কাজিয়া ভাহাদের উঘাহক্রিয়া নির্মাহ করিয়া দেয় বটে, কিন্তু জনেক বিষয়ে ব্রাহ্মণ পণ্ডিভের ব্যবহা গ্রহণ করা হইয়া থাকে। খোজারা হিন্দু ও মোসল্মান্ উভর তীর্ধই পর্যাইন করেয়া লুমিঠ হইলে পর, হিন্দু মভাম্পারে নানা দিন নানাপ্রকার জাতকরের, সন্তান ভূমিঠ হইলে পর, হিন্দু মভাম্পারে নানা দিন নানাপ্রকার জাতকরার অম্প্রচান করিয়া থাকে এবং হিন্দু-শাস্ত্রোক্ত স্থপ্রাচীন ব্যবহার-প্রশালীবিশেষ অবলম্বন করিয়া হালে। *

^{*} Englishman, 18th August, 1847.

षिश्शिन।

(প্রথম ভাগ। উপক্রমণিকা। ৭৮ পৃষ্ঠা—বেদ-শাস্ত্র বহু দেবতার উপাসনা-প্রতিপাদক কি না ? ')

বেদ-বিভা-পারদর্শী হৃবিখ্যাত শ্রীমান ম, মূলর বলেন, বৈদিক ঋষিগণ ঘথন যে দেবতার স্তৃতি করেন, তথন তাঁহাকে পরাংপর পরমেশ্বর বলিয়া কীর্ত্তন করিয়া যান; উপাদক যখন এক দেবতার উপাদনা করেন, তথন অন্ত কোন দেবতা তাঁহার স্মৃতি-পথে উপস্থিত থাকেন না: ঋথেদের বচনামুদারে, ইন্দ্র. মিত্র, বরুণ, অগ্নি প্রভৃতি দেবগণ ভিন্ন ভিন্ন দেবতা নন. এক দেবতারই সংজ্ঞামাত্র; অর্থাৎ বেদাবলম্বী হিল্পুরা অভাভ জাতির ভাম বছ দেব-বাদী ছিলেন না ৷ এই পুস্তকের প্রথম ভাগে উল্লিখিত পূর্চায় এই মতের প্রসঙ্গ করা হইয়াছে। সম্প্রতি ১৮৮১ খুষ্টান্দের অকটোবর মানে ভুবনবিখ্যাত পণ্ডিত-শিরোমণি শ্রীমান ছইটনিও তাঁহার এই মতের প্রতিবাদ করিয়াছেন *। বেদমাত্রাবলম্বী প্রাচীন হিন্দুরা যে এক কালে ভিন্ন ভিন্ন দেবভার উপাসনা করিতেন, ঋথেদসংহিতায় তাংগর যথেষ্ট প্রমাণ বিভয়ান রহিয়াছে। ইন্দ্র ও অধি, ইক্স ও বৰুণ, মিত্ৰ ও বৰুণ, ছৌ ও পুণিবী, উষা ও রাত্রি প্রভৃতি ছই ছই ু দেবতার একতা স্থাতি এ সংহিতার অনেক স্থানেই স্বিবিষ্ট আছে। কেবল ছুই ছই দেবতা নয়, নানা স্থানে আদিতাগণ, মকংগণ প্রভৃতি বহু দেবতার একত্র সংযোগ দেখিতে পাওয় বায়। ফলতঃ উলিখিত পূর্ব্ব-কালীন হিন্দুরা বহু দেবতার উপাসক ছিলেন ইহাতে সন্দেহ নাই।

(দ্বিতীয় ভাগ, উপক্রমণিকা ; ১১১ পৃষ্ঠা ।—নবরত্ন।)

धन्वन्तरिचपणकामरसिंहमङ्गवेतालभदृघटकपैरकालिदासाः ।
व्याती वराइमिहिरी नृपतेः सभायां रत्नानि वै वरक्चिनव विक्रमस्य॥

(क्यां जिस्मा जिस्सा क्यां विक्रमस्य ॥

^{*} Indian Antiquary, May, 1882. pp. 146-148, extracted from a paper read before the American Oriental Society, at New Haven, Oct, 26th 1881.

ধ্রপুরি, ক্ষণণক, অমরসিংহ, শব্ধু, বেতালভট্ট, ঘটকর্পর, কালিদাস বিখ্যাত রাহমিছির, বংরুচি এই নয় জন বিক্রম নামক নরপ্তির সভাসদ ছিলেন।

(দ্বি, ভাগ ; উপ ; ১২০ পৃষ্ঠা ।)

রঘুবংশ ও •কুমারসম্ভব এক কালিদাসেরই বির্চিত এই বিষয় সংক্রাস্ত ধ্বাদটি কত প্রাচীন ?

মলিনাথ, রঘুবংশ, কুমারসম্ভব প্রভৃতির টীকা করেন। এথনও তাঁহার কত তন চারি শত বংসর পূর্বের হস্ত-লিখিত পুরাতন গ্রন্থ প্রথা হওয়া যায়। তিনি । ঘুবংশের টীকার প্রথমে কালিদাস-ক্বত তিন থানি কাব্যের কথা উল্লেখ দরিয়াছেন।

व्याचर्षे कालिदासीयं काव्यवयम्।

এই তিন থানি রঘুবংশ, কুমারসম্ভব ও মেঘদুত বই আর কিছুই নয়।
মতএব ন্যুনাধিক চারি শভ বংসর পূর্বের এই তিন থানি কাব্য এক কালিদাসের
তে বলিয়া পুণ্ডিওগণের সংস্কার ছিল ইংগতে আর সংশয় রহিল না।

দিনকর, চরিত্রবর্দ্ধন, বিস্তরকর, রুফ্ডেট প্রভৃতি অনেকানেক প্রাচীন পণ্ডিত । বুবংশের টীকা করিয়া যান ৷ ইহাঁদের মধ্যে দিনকর নিজ টীকারচনার সময় এইরূপ লিথিয়া গিয়াছেন যে.

वर्षेऽस्थिन्वेक्तमार्के प्रशियुगमनुभिष्ठिक्रितं सूर्तिसुक्तां टीकार्मतां स्वीधां व्यक्तनुत हम्सलाक्षचिजन्मा दिनेश्रः॥

বিক্রমাদিত্য-প্রতিষ্ঠিত সম্বতের ১৪৪১ চৌদ্দ শত একচল্লিশ অব্দে কমলা-পুত্র দিনকর এই স্থতিঃমুক্তা শুরূপ স্থবোধ টীকা রচনা করেন।

তিনি ১৪৪১ চৌদ শত একচল্লিশ সম্বতে অর্থাৎ ১০৮৫ তের শত
গঁচাশি খুগান্দে ঐ টীকা রচনা করেন। চরিত্রবর্দ্ধন ভাঁছার পূর্বভ্তন
লোক। শঙ্কর পাণ্ড্রক পণ্ডিত দেখিয়াছেন, দিনকর অনেক স্থলে
রিত্রবর্দ্ধনের গ্রন্থের অমুকরণ করিয়াছেন। অতএব চরিত্রবর্দ্ধন
্টান্দের ত্রয়োদশ শতাব্দীর অথবা তাহার কিছু পূর্বকালীন লোক হওয়া
স্তেব। ঐ উভয়েই রঘুবংশের সপ্তম সর্গের টীকা-রচনার সময়ে বলেন, ইহার
মব্যবহিত পূর্বের একাদশটি শ্লোক কুমারসম্ভবের মধ্যেও অবিকল দেখিতে

পাওয়া যায়। কিন্তু যথন এই উভয় কাব্যই এক কবির বিরচিত, তথন ভাহাতে কিছু দোৰ-ম্পর্ণ হইতে পারে না।

यधामीते स्रोकाः क्रमारसंभवेऽपि सन्ति तथाय्यवैककार्तृत्वस्रोतनायीक्रात्वाच दीषः । हिनक्तः।

ययप्येते झीकाः कुमारीत्पत्ताविप विद्यम्ते तथाय्ये ककर्त्तृ कलान्न दीषः । हित्रजवर्कन ।

জতএব ন্যুনাধিক ৬০০ ছয় শত বংশর পূর্বের রঘুবংশ ও কুমারসম্ভব এক কালিদাসের কৃত বলিয়া লোকের সংস্কার ছিল ইহা স্পষ্টই প্রতীয়মান হইতেছে।—Transactions of the International Congress of Orientalists for 1874, pp. 227—230.

পণ্ডিতপ্রবর ইহার পর রখুবংশ, কুমারসম্ভব, অভিজ্ঞানশকুস্তল প্রভৃতির ভাবার্থ ও পদ-বিক্তানাদির সৌনাদৃত্ত প্রদর্শন করিয়া ঐ ভিনেই এক গ্রন্থকারের কর্ত্ত্ব-প্রতিপাদনের চেটা পাইয়াছেন।

(বিতীয় ভাগ। উপক্রমণিকা। ১৬• ও ১৬১ পৃষ্ঠা— ভারতবর্ষীয় চিকিৎসা।)

কেবল আরবে নর,বছ পূর্ব্বে গ্রীস্ দেশেও ভারতবর্ষীর ঔষধাদি প্রচলিত হয়।

হিপক্রেটিজ্ নামক স্থপ্রসিদ্ধ গ্রীক্ চিকিৎসক খু. পূ, পঞ্চম ও চতুর্থ শতাকীতে প্রাছতুর্ত হন। তিনি খু, পূ, ৩৬১ অবদ ৯৯ নিরনবর্ষই বংসর বয়:ক্রেমের সময়ে প্রাণভ্যাগ করেন। তাঁহার গ্রন্থে ক্রফতিল, শোভাঞ্জন (অর্থাৎ শজিনা), এলাটী, দারুচিনি, জটামাংসী, লোবান, বিরেজা হিঙ্কু, চিরতা এই সমস্ত দ্রব্য রোগ-বিশেষে ঔষধ অরপ ব্যবহার করিবার ব্যবস্থা আছে। এ সমুদারই ভারতবর্ষীর ঔষধ-দ্রব্য। এ সমস্ত বন্ধ ভারতবর্ষীর প্রথ-দ্রব্য। এ সমস্ত বন্ধ ভারতবর্ষ হইতে গ্রীস্ দেশে নীত ও বিক্রীত হইত:
ইহাতে সুস্পষ্ট প্রমাণ করিয়া দিভেছে, তাদৃশ পূর্ব্ব কালেও ভারতবর্ষীর চিকিৎসা ইয়ুরোপ থণ্ডের উল্লিখিত অংশে প্রচলিত হইরাছিল। উক্ত গ্রীক্ চিকিৎসকের সাম্প্রদায়িক বৈশ্বক গ্রন্থ সমুদার পর্য্যালোচনা বারা এইটি অবধারিত হইয়াছে বে অন্ত-চিকিৎসা বিষয়ে গ্রীকদিগের অপেক্রা নিপুণ্তর চিকিৎসক-দিগের চিকিৎসা শাস্ত হইতে সে সমুদারের কিয়দংশ সঙ্কলিত হয়। ভারতবর্ষীর প্রাচীন চিকিৎসকেরা মৃত-দেহ ছেদন করিয়া ভাহার অর্জ, প্রভাঙ্গ, শিরাদির

ী নিবক্ষেত্রের নাম একামকানন। এক্ষণে উহা ত্বনেশার বলিয়া প্রসিদ্ধ নাছে। উৎকলাধিপতি ললিত ইক্র কেশরী ৬৫৭ ছয় শত সাতার খৃষ্টাব্দে ঐ য়ানের বৃহৎ শিবমন্দিরটি প্রতিষ্ঠা করেন। স্থপ্রসিদ্ধ জগরাথের মন্দির ১১৯৮ মগারশ আটানকাই খুষ্টাব্দে নির্ম্মিত হয়। উৎকলের অভঃপাতী কনার্ক নামক স্থানে একটি স্থ্যমন্দির বিদ্যমান আছে; লঙ্গোর নর্সিংছ দেও ১২৪১ বার শত একচল্লিশ খৃষ্টাব্দে তাহা নির্মাণ করান। অতএব যথন ব্রাহ্মপুরাণে ঐ সকল দেবালয়ের প্রসঙ্গ ও বৃত্তান্ত রহিয়াছে,তথন এই পুরাণ খৃষ্টীয় অব্দের ত্রোদশ বা চৃত্ত্দিশ শতান্ধার পূর্বে প্রস্তুত হয় নাই ইহা সহজেই জানিতে পারা যাইতেছে।

পদ্পরাণ।—পদ্পরাণের উত্তরধতে দক্ষিণাপথের অন্তর্গত শ্রীরঙ্গ ও বেস্কলি নামক ছই স্থানের বিষ্ণু-মন্দির ও তৃঙ্গভন্তা নদী-তীরস্থ হরিপুর নগরের প্রদক্ষ আছে। এই পুরাণে বেঙ্কটান্তির ভিলক-মৃত্তিকা অভিমাত্ত প্রশন্ত বিদ্যানির্দেশিত হইরাছে।

श्रादाय परया भक्ता विद्वटाद्री हुदे सदम् । धारयेदूर्द्वपुण्ड्राणि हरिसालोकासिद्वये ॥ উद्वत्रथः ।

এই পৃস্তকের প্রথম ভাগের অন্তর্গত রামান্তল-সম্প্রদায়ের বিবরণ-মধ্যে দেখিতে পাইবে, ঐ বেকটান্তির মন্দির প্রথমে শিবালয় ছিল, রামান্তল খুষ্টান্সের দাদশ শতালীতে তাহাতে বিষ্ণু-বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা করেন †। নানাপ্রমাণান্থসারে, হরিপুরের অন্ত একটি নাম বিজয়নগর বলিয়া বিবেচিত হইয়াছে। চিত্রহুর্গের পিত্তলপত্রে এই প্রকার ধোদিত আছে ও এরূপ প্রবাদও প্রচলিত রহিয়াছে বি, দক্ষিণাপথের অন্তর্গত রাজ্য-বিশেষের অধীশর হরিহর ও বুক্রায় খুষ্টান্সের চতুর্দিশ শতালীতে এই নগর পত্তন করেন। হরিহরেরই নামান্থসারে হরিপুর নামাট উৎপন্ন হইয়া থাকিবে ‡। অতএব এই প্রাণের অনেক অংশ ঐ

^{*} মাল্রাজের প্রায় ত্রিশ ক্রোশ পশ্চিমে।তবের বেইটেরিরি এবং শ্রীরক্ষ ত্রিচীনপলির অন্তর্গত তীর্থ-ছান-বিশেষ।

[†] এই পুত্তকের প্রথম ভাগের অন্তর্গত বৈঞ্ব-সম্প্রদার-বিবরণের ৮ পৃঠা।

[‡] Asiatic Researches, Vol. IX. PP. 413-423. H. H. Wilson's Sanskrit and English Dictionary, 1819, Preface, P. XVII.

সময়ের পরে বিরচিত হয় তাহার সন্দেহ নাই। ইহার উত্তর্থত্তের মধ্যে রামানুদ প্রভৃতি চারিটি প্রধান বৈষ্ণব-সম্প্রদায়ের নামও উলিধিত আছে।

> सम्प्रदायिविद्योना ये मन्त्रास्ते निष्मला मताः । श्रतः कलीः भविष्यन्ति चत्वारः सम्प्रदायिनः ॥ श्रीमाध्वी रुद्र सनका वैष्णवाः चितिपावनाः ॥ भक्तकक्षप्रस्तर मध्यनात्र भक्त छक्ष् छ भन्नभूतानीत्र वहन ।

এই চারিট সম্প্রদার রামাত্বক বলভাচারী, নিমাৎ ও মধ্বাচারী । এই পুস্তকের প্রথম ভাগে দেখিতে পাইবে, সম্প্রদার প্রবর্ত্তক রামাত্বক পৃথকের বাদশ শতাকীতে, মধ্বাচারী উহার ত্রেরাদশ শতাকীতে এবং বল্লভাচারী উহার বোড়শ শতাকীতে প্রাহ্রভূতি হন । তদক্ষ্মারে পদ্মপুরাণের উত্তরপ্রও পৃষ্টাব্দের যোড়শ শতাকীর পরে বিরচিত বিলয়া স্বীকার করিতে হয়ঐ। পত্তে শৈব বৈষ্ণবের বিবাদ-স্টক বিস্তর কথা আছে। দক্ষিণাপথে প্রচলিত নানা স্বত্তান্তে দেখিতে পাওয়া যায়, খুপ্তাব্দের একাদশ ও ঘাদশ শতাকীতে অথবা ভাহার কিছু অগ্র পশ্চাৎ এই বিষময় বিসম্বাদ সংঘটিত হয় ৡ । এই সমস্ত স্কৃতি অস্থ্যারেও, এই পুরাণের অথবা ইহার এই থত্তের পুর্বোক্তর রচনা কালই নির্দ্ধারত হইতেছে। শ্রীমান্হ, হ, উইল্মন্ লিথিয়া গিয়াছেন, এই পুরাণের কোন স্থল খুষ্টাব্দের ঘাদশ শতাকীর অপেকা প্রাচীন নর।

ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্তপুরাণ।—পূৰ্ব্বে ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্ত নামে একখানি পুরাণ প্রচলিত ছিল; মংশুপুরাণে তাহার নিম্নলিখিত লক্ষণ লিখিত আছে।

> रयन्तरस्य कल्पस्य वत्तान्तमधिकत्य यत्। सावर्णिना नारदाय कल्पमाज्ञान्त्रसंयुतम्।

^{*} শক্ষজনোদ্ত পলপুরাণীর বচন-বিশেবে রামানুজের নাম পাষ্ট বিদামান রহিরাছে। এই পুস্তকের প্রথম ভাগের ১৩ পৃঠা দেখ।

⁺ এই পুরুকের প্রথম ভাগ, বৈফ্ব-সম্প্রদার, ৪ পৃঠা।

[‡] এই পুস্তকের প্রথম;ভাগ, বৈফব-সম্প্রদার, ৬, ১১৬ ও ১২৭ পৃষ্ঠা ।

[§] Mackenzie Collection, Introduction, pp. LXII and LXIII. H. H. Wilson's Essays, vol. I., 1864. pp. 80 and 81.

यत्र ब्रह्मवराहस्य चितं वर्णाते मुहु:। तदष्टादमसाहस्रं ब्रह्मवैवत्तमुखते॥

যে পুরাণ দাবর্ণি নারদ-সমীপে কীর্ত্তন করেন এবং **ধাহাতে এক্রিফের** মাহাত্ম্য, রথস্তর কল্লের বৃত্তান্ত ও বারম্বার ব্রহ্মবরাহের উপাথ্যান বর্ণিত হইরাছে, সেই ফুষ্টাদশ সহস্র শ্লোক বিশিষ্ট পুরাণকে ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণ বলে।

কিন্তু এক্ষণে যে ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণ বিজ্ঞমান আছে, তাহাতে না রথস্তর কর্মই আছে, না ব্রহ্মবরাহের বৃত্তাস্তই দৃষ্ট হয়, না তাহা সাবণি ঋষি কর্তৃকই ক্থিত হইয়াছে। এথানি এক্থানি স্বতন্ত্র গ্রন্থ: রাধা-ক্লফের বুন্দাবন-नीना ও उनीय युगनकरभत्र উপাদনা-বৃত্তাক্তেই পরিপূর্ণ। এই অঙ্গটি অত্যস্ত আধুনিক ও স্কুতরাং এই পুরাণের বয়:ক্রমও সেইরূপ। ভাগবতে রাধার নাম গন্ধ কিছুই নাই। এই ক্লফলীলা-প্রধান বৈষ্ণব-পুরাণ বচনার সময়ে তাঁহার উপাধ্যান প্রচারিত থাকিলে, ইহাতে তাহা সম্লিবেশিত না হওয়া কোন মতেই সম্ভব ও সমত নয়। অতএব রাধা-সংক্রাম্ভ কথা শ্বলি এই পুরাণ অপেক্ষা আধুনিক। কিছু পরেই দৃষ্ট হইবে, ভাগবতের বয়:ক্রম এখন নানাধিক ছয় শত বংগর। স্থতরাং ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণ তদপেক্ষা অপ্রাচীন। বল্লভাচারী বৈষ্ণব-সম্প্রদায় হইতেই রাধারুফের এইরূপ উপাসন। প্রচারিত হয়। বল্লভাচার্য্য শকান্তের পঞ্চদশ শতান্দীর মধ্যভাগে সবিশেষ ষত্ত-সহকারে ঐ মত প্রচার করেন। * অত্তর ব্রহ্মবৈবর্ত্ত পরাণ তদপেক্ষা অপ্রাচীন। এই পুরাণের কৃষ্ণজন্মথণ্ডের ১২৭ অধ্যায়ে ভবিষ্যৎ-কথন-চ্ছলে মেচছ রাজার অধিকার +, লোকের মেচছাচার-অবলম্বন ‡, দেবতা ও বর্ণ-বিচারে অনাস্থা ও হিন্দুধর্ম বিরুদ্ধ অন্য অন্য কতকগুলি বিষয় বর্ণিত হইয়াছে। এগুলি মোদল্যান্দের ভারতবর্ষাধিকার-প্রবর্ত্তন ও তাহার উত্তরকালীন হিন্দু-

[,] এই পুস্তকের প্রথম ভাগের অন্তর্গত বরস্তাচারি-সম্প্রদার-বিবরণের ১২৭ পৃঠা।

[†] जातिहीना'जनाः सर्व्वे स्नेच्छी भूपी भविष्यति । कृषक्षत्रवेश्व । ১२१ । २० ।

[‡] ग्रालगामं च तुलसीं सुग्रंगङ्गीदकं तथा। ्न स्प्रंग्नानवी भूचीं स्नेच्हाचाररत: सदा॥ कृक्ष्मग्रदण । ১२१। २६॥

সমাজের বর্ণনা বই আর কিছু বোধ হর না। ঐ সময়ে ভারতবর্ধীয় অনেক লোকে মোসলমান্ ধর্মে প্রবর্তিত হয় ও প্রদেশ-বিশেষে বর্ণবিচার-বিক্লদ্ধ আচার ব্যবহারও প্রচলিত হইয়া যায়। ঐ সময়ে প্রবর্তিত অনেকানেক উপাসক-সম্প্রদায়েও বর্ণভেদ-ব্যবস্থা পরিত্যাগ করে। পশ্চিমোত্তর প্রদেশের দিল্লি প্রভৃতি নানাস্থানে অদ্যাপি "পানপানির বিচার নাই" একথা সর্ব্বে প্রসিদ্ধ আছে। ঐ অঞ্চলের হিন্দুরা নিজ বাটতে ভাজিয়া অর্থাৎ গোয়ারা করে, পূর্বকৃত মানসিক অমুসারে মহরমের সময় ফকির হয় ও মোসলমান্ ধর্মোচিত অন্য অন্যরূপ অমুষ্ঠানও করিয়া থাকে। ব্রহ্মবৈবর্তপুরাণের উল্লিখিত অধ্যায়ে হিন্দুদের মিধ্যা, প্রবঞ্চনা, পিতা, মাতা ও গুরুর প্রতি অসদ্ব্যবহার ইত্যাদি কতকগুলি ছ্নীতির বিবরণ সল্লিবেশিত আছে। তাদৃশ অধর্মাচরণ ভারতবর্ধে মোসলমান্ রাজাদের অধিকার-সময়ে সমধিক প্রচলিত হয় ৬। কবীর খুঠান্সের পঞ্চনশ শতালীতে প্রাহর্ভুত হন। তিনি নিজ সময়ে বিদ্যমান কত লোকের অবিকল ঐরপ্ ব্যবহার কীর্ত্তন করিয়া পিয়াছেন।

बन्नदेववर्छ ।

কবীব-কত ভক্তম।

श्रखवत्ताड्येत्तातं प्रतः शिष्यस्तया गुरुम्। कद सतावे माता पिता गुरु त्रिया वलायके।

পুত্র পিতাকে এবং শিব্য গুরুকে ভূড্যের ন্যার তাড়না করিবে। কেহবা দার পরিগ্রহ করিয়া পিতা মাতা¦ও গুরুকে পীড়ন করে।

ক্ষণ্ড নানা প্রকার কুচরিত্র-বর্ণনার অভিমাত্র সাদৃশ্য দৃষ্ট হইয়া থাকে। এই সমস্ত পর্য্যালোচনা করিয়া দেখিলে ত্রহ্মবৈবর্ত্ত প্রাণোক্ত স্লেচ্ছ রাজা মোদলমান্ রাজা বলিয়াই প্রতীয়মান হয়। ইহা হইলে, ভারতবর্ষে মোদলমান্-অধিকার

এই প্রকের দশনামি-সম্প্রদায়-বিবরণে অধিকতর প্রকালীন ভারতবর্ষীর লোকের চরিত্র বিবর দেখ।

[†] এই পৃত্তকের এখন ভাগের ক্বীরপদ্ধি-বিবরণের ৫৫ ও প্রি,শিস্টের ২০৭ ও ২০৮ পৃঠা দেখা

্ত ও বন্ধুশা হইবার পর, বর্ত্তমান ব্রহ্মবৈর্ত্তপুরাণ বিরচিত ও সঙ্গলিত ্রাছে বলিতে হইবে।

ক্ষমপ্রাণ ।—পূর্বেই: উল্লিখিত হইয়াছে, নানাবিধ ভিন্ন ভিন্ন গ্রন্থ স্থাণের থগু-বিশেষ বলিয়া প্রচলিত আছে; ষেমন কাশিখণ্ড, উৎকলথণ্ড, রবাধণ্ড, ব্রেমানুর্বিশ্ব ইত্যাদি। উৎকলথণ্ড পুরুষোত্তম-ক্ষেত্র ও ভ্বনেশ্বর সবের মন্দিরাদির বর্ণন আছে। ঐ হুই মন্দির খুটান্ধের ঘাদশ ও সপ্তমাতালীতে প্রস্তুত হয় ইহা ইতিপূর্বেই প্রদর্শিত হইয়াছে *। অতএব ঐ থণ্ড খুটান্দের ঘাদশ শতাকী অপেকাও আধুনিক বলিয়া স্বীকার করিতে হয়।

কুর্মপুরাণ।—কুর্মপুরাণে ভৈরব, বাম, যামল প্রভৃতি ভন্ত-শাল্পের উল্লেখ আছে।

> एवं सम्बोधितो रुद्रो माधवेन सुरारिणा। चकार मोइशास्त्राणि केशवोऽिप शिवेरित:॥ कापालं नाकुलैं वामं भैरवं पूर्व्वपिश्वमम्। पृञ्चरात्रं पाश्चपतं तथान्यानि सहस्रशः॥

> > কূর্মপুরাণ। ১৪ অধ্যায়।

শিব বিষ্ণু কর্তৃক এইরূপ সম্বোধিত ও বিষ্ণু শিব কর্তৃক নিয়োজিত হইরা কাপাল, নাকুল, বাম, পূর্ব্ব পশ্চিম ভৈরব, পঞ্চরাত্র, পাশুপত এবং অন্য সহস্র সহস্র মোহশাস্ত্র রচনা করেন।

এই পুরাণের বচনাস্তরেও যামল, করাল, ভৈরব প্রভৃতি তল্পের নাম আছে।
তল্প্র-শাস্ত্র সমধিক প্রাচীন নয়। ঐ শাস্ত্রের মধ্যেই উহা যে কলিষ্ণের শাস্ত্র বলিয়া লিখিত আছে † এ কথাটিও বিজ্ঞ ব্যক্তিরা উহার আধুনিকত্বের পরি-চায়ক বিবেচনা করিতে পারেন। অমরসিংহ বর্গবর্গের মধ্যে যে স্থলে ভিন্ন

মহ।নিৰ্কাণভন্ত।

तन्तीक्त'ध्यानमन्त्रच प्रशस्तं भारते कार्ती। পুরশ্চরণরসোলাসভঙ্ক। ৩ পটন।

^{*} २०२ शृष्टी ।

[†] निर्वीधीः श्रीतजातीया विषदीनीरगा इव । सलादी सफला श्रासन् कली ते स्तका इव ॥

ভিন্ন সংস্কৃত শাস্ত্রের নামোল্লেথ করিয়াছেন, তথার তারের নাম সন্নিবেশিত নাই *। ঐ শাস্ত্র সে সময়ে প্রচলিত থাকিলে, তাহা না থাকা কোন রূপেই সম্ভব ও সলত হইত না। তিনি খুইান্দের ষষ্ঠ শতাকীতে বিদ্যমান ছিলেন। অতএব উল্লিখিত যামল ভৈরবাদি তন্ত্র-শাস্ত্র তদপেক্ষা অনেক অপ্রাচীন। হতরাং কুর্মপুরাণও সেইরূপ নব্য গ্রন্থ বলিতে হয়। খুইান্দের অষ্টম বা নবম শতাকীর পর বিরচিত বা সঙ্কলিত বিষ্ণুপুরাণের † তৃতীয় অংশের ষষ্ঠাধ্যায়ে ভিন্ন ভিন্ন সংস্কৃত শাস্ত্রের নাম নির্দেশিত আছে, কিন্তু তাহার মধ্যে তল্পের নাম বিভ্যমান নাই। এই সমস্ত যুক্তি অমুসারে, তল্পের বয়ংক্রম সহত্র বৎসর অপেক্ষা বড় অধিক হওয়া সম্ভব নয়। অনেক তন্ত্র যে বালালা দেশেই প্রবিত্তিত হয়, উহার মধ্যেই সে বিষয়ের বহুতের নিদর্শন লক্ষিত হইয়া থাকে। কামধেক ও বর্ণোদ্ধার তল্পে বর্ণ সমুদায়ের যেরূপ বর্ণন আছে, তাহা বালালা অক্ষরের বিষরেই অধিক সঙ্গত হয়। কেবল বর্ণনা কেন ? তন্ত্র-বিশেষে বর্ণোচ্চারণের যেরূপ বাবস্থা আছে, তাহা বালালা-দেশীয়। বিশেষতঃ বালালা-দেশীয় অর্থাৎ বালালার পূর্ব্ব-থণ্ডবাসী পণ্ডিতেরা যেরূপ উচ্চারণ করেন, উহাতে সেইরূপই ব্যবস্থিত হইয়াছে।

चुत्र्येध्वनितामिति यादिस्थे परमेखरि । पुत्र्येध्वनितामिति वादिस्थे तु विश्रेषत: ॥

বরদাতন্ত্র। দশম পটল।

হকার যদি যকারের পূর্বে অবস্থিত হয়, তাহা হইলে তাহার উচ্চারণ ঝকারের সদৃশ হইবে, (যেমন উহ্ন, বাহ্ন ইত্যাদি)। আর বকারের পূর্বাস্থিত হইলে, ভকারের স্থায় উচ্চারিত হইবে; (যেমন আহ্বান)।

অনরকোষের অন্তর্গত নানার্থের মধ্যে তন্ত্র শব্দ বিদ্যমান আছে বটে, কিন্ত ভাছার অর্থ তন্ত্র-শান্ত নর; প্রধান, সিদ্ধান্ত, পরিচ্ছদ ও স্ত্রবাপ অর্থাৎ তাত।

[&]quot;तन्तं प्रधाने चिडान्ते स्ववापे परिच्छदे।"

বদি গ্রন্থকারের সমরে তন্ত্রশাল্প প্রচলিত থাকিত, তাহা হইলে তিনি তাহা অবশুই অবশু লিখিতেন তাহার সন্দেহ নাই। অতত্রব অমর সিংহের সমর পর্যন্ত ঐ শাল্প প্রবর্তিত হয় নাই ইহা নিঃসংশরে নিরপিত হইল।

[†] किहू भरते विक्भूतान त्रामा मनत-निज्ञभन विवत्र अखान स्मिन्।

यकारस हतीयत्वं पदादी सर्व्वदा व्रजेत्। क्यूरादाविप तथा श्रन्यत्र कण्डमातगः॥

ব**রদাতন্ত্র**, দশম পটল ও প্রপঞ্চনার, ভৃতীয় পটল।

পদের প্রথমে যকার থাকিলে, জ্বকারের ন্যায় উচ্চারিত হয়; (যেমন যদি, ইত্যাদি)। •কেয়্রাদি শব্দস্তি যকারেরও ঐরপ উচ্চারণ হয়। অন্থ মুস্তবে ইছা কণ্ঠদেশ হইতে উচ্চারিত হইয়া থাকে।

যে প্রিন্সেপ সাহেব অতি প্রাচীন অপ্রচলিত অক্ষরে খোদিত অশোকরাহ্বার ।রুশাসন-পত্তের অর্থোন্ডেদ করিয়া হুগারিখ্যাত হইরা যান, তিনি নানা সময়ের খাদিত লিপির বর্ণাবলী পর্য্যালোচনা করিয়া নির্দ্ধারণ করেন, খুটান্দের দশম তান্দীতে বাঙ্গালা অক্ষর প্রচলিত হয় *। অতএব কামধের, বর্ণোদ্ধার, রন্ধা, প্রপঞ্চসার ও দেই সম্দারের সমকালবর্ত্তী ও তাহার উত্তরকালে বির্ভিত রক্ত বহুতর তন্ত্রশাস্ত্র ঐ সমরের পর প্রস্তুত হয় তাহার সন্দেহ নাই।

বঙ্গনেশীর পণ্ডিতেরা কেঁযুরকে কেজুর এবং আহ্বানকে আভ্ভান বলিয়া ইচারণ করেন। অতএব এইরপ উচ্চারণ-বিধায়ক বরদাতক্র, প্রপঞ্চপার ও ভাদৃশ অস্ত অন্ত তদ্র বাজালার পূর্ব-থতে বিরচিত হইয়াছে ইহাতে আর সন্দেহ য়হিল না। ঐ অঞ্চলে তাল্লিক ক্রিয়ারও অধিক প্রাহ্রভাব দেখিতে ও শুনিতে পাওয়া যায়। ফলতঃ অনেক অনেক তদ্র যে ঐ প্রদেশে বিরচিত হয় ইহা সর্বতোভাবে সম্ভব ও সঙ্গত। বাজালা ভাষার সহিত সংস্কৃত-বিভক্তি সংযোগ করিলে বেরূপ হয়, তল্লের কোন কোন স্থলের ভাষা প্রায় সেইরূপ। পাঁচ শত বংসর পূর্বের বাজালা দেশে সংস্কৃত গ্রন্থ রচিত হইয়াছিল ইহার কোন নিদর্শনই লক্ষিত হয় না। অতএব বাজালা দেশে প্রস্তুত ঐ সমত্ত তম্ব-গ্রন্থ ঐ সময়ের অপেক্ষা প্রাচীনতর হওয়া কোন মতেই সম্ভব নয়। কিন্ত উহার পূর্বের ভারতবর্ষে যে ঐ শাস্ত একেবারে প্রচারিত ছিল না এরূপও বলিতে পারা যায় না। নবদীপ-নিষাসী রঘুনন্দন ভট্টাচার্য্য কিঞ্চিদ্ন চারিশত বংসর পূর্বের বিভ্যমান ছিলেন। তিনি তিথিতব্যের অন্তর্গত হুর্গোৎসব-প্রকরণে ও মল্মানত্ত্রের অন্তর্গত ক্রাজা-প্রকরণে ও মল্মানত্ত্রের অন্তর্গত ক্রাজা-প্রকরণ ও মল্মানত্ত্রের অন্তর্গত ক্রাছাইতন্ত্র, করাল, ভৈরব, যামল ও

[•] Useful tables by James Prinsep or Journal of the Asiatic Society of Bengal, vol VII., part I., pp VIII and XIV.

বীরতম্ব এবং জ্ঞানমালা, তত্ত্বার, সারসংগ্রহ প্রয়োগসার, মন্ত্রম্কাবলী প্রভৃতি বিবিধ ভন্ত-সংগ্রহের নামোলেথ বা বচন উদ্ভ করিয়াছেন *। অভএব ন্যুন করে পাঁচ ছর শত বংসর পূর্বে অনেকগুলি তন্ত্রপ্রপ্রচলিত ছিল তাহার সন্দেহ নাই। গাজিপুরের কীর্ত্তিস্তে ন্যুনাধিক আট শত বংসর পূর্বের অথবা তাহারও পরে থোদিত লিপি-বিশেষে তন্ত্রের নাম বিনিবেশিত আছে †। ঐ শক্টি তন্ত্র-শান্ত্র-বাচক হইলে, সে প্রদেশে ঐ শান্ত্র ঐ সময়ে প্রচারিত ছিল বলিতে হয়। কিছু কোন কোন তন্ত্র আবার অতীব আধুনিক; এমন কি, এক শতাকী অপেক্ষা অধিক প্রাচীন নয়। একথানি তন্ত্রে ভবিষ্যৎ-কথা কীর্ত্তন-ছলে লগুন নগর ও লগুন-বাসী ইংরেজদের নাম পর্যান্ত্র বিনিবেশিত হইয়াছে ‡। পাঠ করিলে অক্লেশেই ব্ঝিতে পারা যায়, ঐ তন্ত্র ইংরেজদের ভারতবর্ষাধিকার-প্রবর্তনের উত্তরকালে বিরচিত হয়।

पूर्वामाये नवगतं षड्गीति प्रकीर्त्तिताः ।

फिरिङ्गिभाषया मन्त्रास्तेषां संसाधनात् कलौ ॥

प्रिधिपा मण्डलानाञ्च संग्रामेष्वपराजिताः ।

इ'रेजा नवषठ पञ्च लण्डजाञ्चापि भाविनः ॥

শক্ষ কল্প দের হিন্দু শব্দে গৃত মের তন্ত্রের এলোবিংশ প্রকাশের বচন।
পূর্ব্বালারে ফিরিঙ্গি-ভাষার বিরচিত নর শত ছিয়াশীটি মন্ত্র উক্ত হইয়াছে।
লগুন-নগর-জাত পাঁচশত উনদোত্তর জন ইংরেজ দেই সমস্ত মন্ত্র সাধন পূর্ব্বক
যুদ্ধজন্মী হইগা বহু রাজ্যের অধীশর হইবে।

যাহা হউক, যথন অমরকোষ ও বিষ্ণুপুরাণে সংস্কৃত শাস্ত্রের নামাবলির মধ্যে জন্ত্র-শাস্ত্রের নাম সন্নিবিষ্ট নাই, তথন উহার বন্ধ:ক্রম সহস্র বৎসর অপেক্ষা

^{*} ১৮৩৪ গৃষ্টাব্দে শীরামপুর মূজাযত্তে মূজিত অষ্টাবিংশতি তক্ষের প্রথম ভাগের ৪৪, ৪৫ ও ৪৫৩ – ৪৫৫ পৃষ্ঠা।

[†] ঐ निशित्र मंद्रा प्रमाध्य उञ्चलिमा निर्मा विनिध छ इहिनाइन। "तान्त्रधीदिर्भिकीत्तिः।"—The Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. VI, p. 5.

[‡] লণ্ডন নগরের ফরাসী নাম (Londres) লক্র্'বা ল'দ্র। তক্সকার তদমুসারেই পশ্চালিখিত বচনে ঐ নামের বৰ্ণবিস্থাস করিয়াছেন দেখা যাইতেছে। উচ্চারণ জানিতেন নাবোধ হয়।

হিন্দুদিগের গরামাহান্ত্রো গরা-বাত্রীদিগের প্রতি বৌদ্ধনের বোধিবৃক্ষকে ◆
প্রশাম করিবার ব্যবস্থা লিখিত হইরাছে। একণে যে স্থানকে বৃদ্ধগরা বলে,
ভাহারই মধ্যে বোধিবৃক্ষ বিদ্যমান আছে। স্থতরাং গরামাহান্ত্যে বে গরার
বিষয় বর্ণিত আছে, ঐ বোধিবৃক্ষ সেই গরারই মধ্য-স্থিত। অতএব পূর্বের এক
গরাই ছিল; একণকার গরা ও বৃদ্ধগরা তাহারই অস্তর্গত।

উলিখিত ব্যবস্থার মধ্যে ধর্মকে প্রণাম করিবারও বিধান আছে। বৌদ্ধদের মতে ধর্ম কিরূপ পদার্থ, পূর্ব্বে তাহার বিবরণ করা গিয়াছে। ধর্ম তাহাদের বিমৃত্তির একটি মৃত্তি। বিশেষতঃ যথন ঐ বিধানটি বৌদ্ধদেরর বোধিরক্ষের প্রশাম-ব্যবস্থার মধ্যে বিনিবিষ্ঠ হইরাছে, তথন উহা বৌদ্ধ-মতামুষারী বিলরা প্রতীয়মান হইতেছে। উহার একটি খ্লোকের পরেই ঐ বৃক্ষের গুণ-প্রতিপাদনস্থলে উহা বৌদ্ধ-সমাজে প্রচলিত একটি প্রধান বিশেষণে বিশেষত হইরাছে।
বোধিসন্থ শক্ষটি বৌদ্ধদিগ্রে একটি অতি প্রধান উপাধি ‡। বৃদ্ধ স্বরংই ভূরি
ভূরি স্থলে বোধিসন্থ বলিরা বর্ণিত হইরাছেন। ঐ বচনে উলিখিত বোধিবৃক্ষকেও বের্থিসন্থ বলিরা তাব করা হইরাছে।

चलदहलाय हचाय चत्रत्याय नमीनमः । बीधिसच्याय यज्ञाय चत्रत्याय नमीनमः ॥ शश्चोमांश्याः। १।७२।

চঞ্চল-দল অখথ বৃক্তে বার বার নম্বার করি। বজ্ঞ-অরপ ও বোধিসত্ত-ব্রুপ অখনকৈ পুনঃ পুনঃ নম্ভার করি।

ধর্ম, বোধিবৃক্ষ, বোধিসত্ব এই ভিনটি বৌদ্ধমত-বিজ্ঞাপক বিবরের একত্ত সংঘটন হওরাতে, গরামাহাত্মোর এই স্থলে বৌদ্ধ ধর্ম ও বৌদ্ধমতের নিদর্শন লক্ষিত হইতেছে।

^{*} উপক্রমণিকার ৩০৮ পৃষ্ঠার বে "অবথ বৃক্ষের পূণাত্ব বীকার" নিণিত হইরাছে, ভাষার ভাৎপর্যার্থ বৌজনিলের এই বোধি নামক অবথ বৃক্ষের দেবত বীকার জানিতে হইবে। ভূটাজের প্রথম বা বিভীন গভালীতে বৃত্তাবার বে বোধিবৃক্ষ বিদ্যমান হিল, ভাষার কিরদংশ ইভিনেন্ বিউ জিরনের দক্ষিণ দিকের নিয়ভনত্ব গৃহে দেখিতে পাইবে। ১৮৮০ খুটালে বে পুরাতন বোধিবৃক্ষ পৃথিয়া বার, ভাহারও শাধার কাঠ তথার য়কিত হইব।ছে।

⁺ উপক্রমণিকা। ७১১ পুটা।

[🛊] डेनज्ञमनिका। २१८ गृंडी।

এই সমস্ত পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে, গরাটি এক সময়ে বৌদ্ধানিগরই তীর্থ-বিশেষ ছিল; পরে হিলুরা তাহা অধিকার পূর্ব্ধক আপনাদের তীর্থ-বিশেষ করিয়া লন এইটিই প্রতীয়মান হইয়া উঠে। তদ্তিয়, হিলু-গয়ার দেবালয় সমুদায়ের নিতান্ত আধুনিকত্ব, পুরাতন দেবালয়াদির উপকরণে সেই সমুদায় নির্দ্ধাণ, হিলু দেবালয়ে বৌদ্ধ-প্রতিমা ও বৌদ্ধ-থোদিতলিপির অন্তিত্ব ইত্যাদি পরস্পর-বিক্রম বিষয় সমুদায়ের অন্ত কোনরূপ সিদ্ধান্ত সন্তব ও সঙ্গত হয় না। বৌদ্ধাণির দেবালয়-বিশেষে বৃদ্ধান অর্থাৎ বৃদ্ধের পদ-চিক্ত প্রতিষ্ঠিত থাকে ইহা পূর্ব্বে হচিত হইয়াছে *। তাহাদিগের শাখা অরূপ কৈন-সম্প্রদায়ের অনেক দেবালয়ে পদ-চিক্ত ও তাহার পূজা দেখিতে পাওয়া য়য়। তাগোলপুরের পশ্চিমাংশে নাথনগরের অ্পুসিন্ধ জৈন-মন্দিরের মধ্যত্বলে বাত্ম পূজা নামক দাশে তীর্থকরের পদ-চিক্ত বিদ্যমান আছে। ললিত্রিস্তরের বৃদ্ধ-পদের চিক্ত ও লক্ষণাদি বর্ণিত আছে।

दीर्घाङ्गुलि:। भायतपाणिपादः। मदुतक्षणहस्त्रपादः। नाङ्गुलिकच्छत्पादः। दीर्घाङ्गुलिधरः। पादक्षयोर्भृहारानसन्त्रीर्थभिद्यस्य सुमारस्य चक्र नाते विवेऽर्चिपाति प्रभाखरे सिते सहसारनिमिके सनाभिके। सुप्रतिष्ठितसमपादो महारानसन्त्रीर्थसिद्यः सुमारः।

ললিতবিস্তর। ৭ অধ্যায়। মুদ্রিত পুস্তকের ১২১ পূর্চা।

সর্বার্থসিদ্ধ রাজকুমার শাক্যের হত্তের অঙ্গুলি দীর্ঘ; হস্ত ও পদ বিস্তৃত, কোমল ও তরুণ; জাঙ্গুলিকের মত লঘু হস্ত-পদ; পদযুগলের অঙ্গুলিও দীর্ঘ; পদতলে শুক্লবর্ণ হইটি চক্র আছে, তাহা বহু বর্ণে চিত্রিত, উজ্জ্বল ও প্রভাযুক্ত; তাহাতে সহস্র অর এবং একটি নেমি ও নাভি বিশ্বমান আছে।

অতি পূর্ব্বে অর্থাৎ বৌদ্ধধর্মের প্রান্ধ প্রথমাবস্থাতেই বৃদ্ধদেবের পদান্ধ-ভব্দনা প্রবর্ত্তিত হয়। বৌদ্ধর্ম্মাবলম্বী সকল দেশীয় লোকের মধ্যেই সমধিক ভব্দি সহকারে বৃদ্ধ-পদ পূবা প্রচলিত আছে। ব্রহ্ম-দেশ হইতে দৈর্ঘ্যে সাত কুট্ ছয় বৃদ্ধল এবং প্রস্থে তিন কুট্ ছয় বৃদ্ধল পরিমিত একথানি বৃদ্ধ-পদ-চিক্ত-বিশিষ্ট প্রস্তব্য আনমন পূর্ব্বক কলিকাতাস্থ ইণ্ডিয়েন্ মিউ ক্রিয়মের অর্থাৎ ভারতবর্ষীয় কৌতুকাগারের দক্ষিণ দিকের নিম্ন-ভদস্থ গৃহে সংস্থাপিত হয়। ঐ পদ চিক্সটি

^{*} উপক্ৰমণিকা। ৩১১ পৃঠা।

ক্রইটি অঞ্চার-মূর্জি ধারা পরিবেটিত। সেই দেশীর বৌদ্ধেরা তাহার পূজা করিত। পা থানি প্রায়ই সমস্ত প্রস্তর ব্যাপিরা আছে। কেবল নিতান্ত প্রান্তে সর্প ক্রইটি শায়ত রহিয়াছে। উহার কিছু পশ্চিমাংশে দৈর্ঘ্যে ১০ পোনর অসুলি পরিমিত আর ত্রইটি বুদ্ধ-পদ-চিক্ত বুদ্ধগরা হইতে আনীত হইয়া রক্ষিত হইয়াছে। তাহার পশ্চিম দিকের প্রকোঠে বৌদ্ধদিগের পূজনীয় অপর এক পদ-মূগল প্রস্তরের উপর অঞ্চিত দেখিতে পাইবে। তাহা মথুরা হইতে আনীত *; একটি পদান্ত সম্পূর্ণ এবং অপর একটির বংকিঞ্চিৎ তয়াবশেষ মাত্র আছে। বৌদ্ধদিগের অনেক দেবালয়ের সর্বাপেক্ষা প্রধান স্থানে বুদ্ধ পদান্ত প্রতিষ্ঠিত থাকে। বৃদ্ধগরার মহাবোধে অর্থাৎ প্রধান মন্দিরে স্থাবিখ্যাক্ত বৃদ্ধ-পদ-চিক্ত প্রতিষ্ঠিত আছে। বৃদ্ধগরার বৃদ্ধ-পদ নামেই একটি মন্দির ছিল, তাহার মধ্যে একথানি প্রস্তর তুইটি পদ-চিক্তে চিক্তিত। সে ছুইটিও বৃদ্ধ-পদ বিলয়া প্রসিদ্ধ।

হিন্দুদিগের দেবালরে, বিশেষতঃ তাহার প্রধান স্থানে, দেব-প্রতিমূর্ত্তি শাল-প্রাম গোমতীচক্র প্রভৃতিই প্রতিষ্ঠিত থাকে। বদিও কোন কোন স্থানে পদ-চিহ্ছ:আছে †, কিন্তু তন্মধ্যে গরার বিষ্ণু-পদ ব্যতিরেকে অপর কোন পদাস্ক তাদৃশ প্রচারিত ও বিখ্যাত নয় এবং বৃদ্ধ ও কৈন গুরুদের পদ-চিহ্নের স্থার প্রধান প্রধান মন্দিরেও সংস্থাপিত দৃষ্ট হয় না। গয়াতে বিষ্ণুপদ-পূকা বেদ্ধপ প্রবাদ হইয়া উঠিয়াছে, সেরপ আর কোথাও হয় নাই। বৃদ্ধ-গরার অভাপি

উপক্রমণিকা। ২৬২ পৃষ্ঠায় অধুনাতন বৈক্ষব-ধর্ম প্রধান মধুরাপ্রীতে বে বৌদ্ধধর্মপ্রচলনের বিষয় লিখিত হইয়াছে এটিও তাহায় একটি সামায়্ত প্রমাণ নয়।

[†] দশনামী সন্ন্যাসীদিগের কোন কোন মঠে মহাজন-বিশেষের পদ-চিল্ন দৃষ্ট হইরা থাকে।
কলিকাতার সমিকটে গলার পশ্চিম কুলে ভোটবাগানে হই থানি প্রন্তরে ছই পদ-মুগল অভিত
আছে; তাহার একটি পদ-মুগলের চারি দিকে শঝ্, চক্র, গদা, পদ্মের চিল্ল রহিরাছে। সন্ন্যাসীদিগের গলাসাগর-যাত্রার সময়ে তাহার পূজা হইরা থাকে দেখিতে পাই। ঐ হানের উত্তরাংশে
লালা বাবুর সায়েরের ঠাকুরবাড়ীতেও হমুমানের প্রতিমূর্ত্তির সম্মুধ-স্থিত ছুই থানি প্রন্তরের ছইটি
পদ-মুগল থোদিত আছে। তাহাকে মাধ্যজির পদ-মুগল বলে। একটি পদে শঝ্যের চিল্ল ও
অপর একটি পদে চক্রের চিল্ল। কিন্তু ঐ সকল পদাক ঐ ঐ হানের প্রধান উপাত্ত বন্ধ নর।
দশনামী সন্ন্যাসীদের স্বাধাড়ার গুল দভাত্তেরের পদ-চিল্ল থাকে গুনিয়াছি। কিন্তু তাহাও তাদুশ
প্রচারিত, বিখ্যাত এবং হিন্দুবঙলীর সর্ব্বসাধারণ লোকের প্রধান উপাত্ত বন্ধ বলিয়া পরিবাদিক

পূর্ব্বোক্ত স্থপ্রসিদ্ধ বৃদ্ধ-পদ-চিক্ত বিদ্যমান আছে। অতএব বধন এরপ সরিকটে পদ-চিক্ত-পূজা প্রচলিত ছিল, তথন গয়ার বিক্তু-পদ বৌদ্ধানির বৃদ্ধ-পদ-পূজা দুঠে প্রকৃতি হওরাই সম্ভব। যথন বৃদ্ধ, বৃদ্ধের অন্থি বৌদ্ধানের অক্ত অক্ত দেব-প্রতিমূল্তি, বোধিবৃক্ষ প্রভৃতি বৌদ্ধান্ম সংক্রোম্ভ বিবিধ যম্ম হিন্দুগণের উপাম্ভ পদার্থাদির মধ্যে পরিগৃহীত হয়, তথন অক্লেশেই এইরপ মনে করিতে পারা বায়, বিক্তু-পদ পূর্ব্বে বৃদ্ধ-পদ ছিল, পরে হিন্দুরা তাহা বিক্তু-পদ বিলয়। প্রচার পূর্ব্বক ভারার প্রতি লোকের বদ্ধমূল ভাজি শ্রদা অব্যাহত রাবিয়াছেন।

हिम्मुता बक्क बक्क बरनक शांति এरेजिन वावशांत कतिशाहिन। भारति **জেলার অন্তর্গত রাজগৃহ * পূর্বে বৌদ্দ**ণির একটি প্রধান স্থান ছিল ; পরে হিন্দু ও মুগল্মানের। তাহা অধিকার করেন এবং তত্তত্ত তুপাদির ইউকাদি লইরা আপনাপন দেবালর প্রভৃতি প্রস্তুত করিরা যান। এ স্থানের মধ্যে বৈভার ও বিপুল নামে তুইটি পর্বত আছে। বৈভার পর্বতের পূর্বে পালে ও বিপুল পর্বতের পশ্চিম পাদে অনন্ত ঋষি, সপ্ত ঋষি, কল্পপ ঋষি, ব্রহ্মকুণ্ড, মার্কগুকুণ্ড, শীতাকুও, সুগ্যকুও, গণেশকুও প্রভৃতি অনেক গুলি উঞ্চপ্রঅবণ বিচমান আছে। সেই সমুদায় উষ্ণ প্রস্রবর্ণের সমীপে হিন্দুদিগের যে সমস্ত দেবালয় রহিয়াছে, ভাছা বৌদ্দিগের অপুণাদির পুরাতন ইউক লইয়া নির্মাণ করা হয়। তাহার একটি তৃপের ভগাবশেষ অভাপি দেখিতে পাওয়া যায়। সেই তুপ খনন পূর্বক ইह-কালি গ্রহণ করাতে, এখন ভাহা শৃত্যগর্ড হইরা রহিয়াছে। হিউএন্ ধ্সকের ত্রমণ বুভাস্তাত্মারে জানা বাইভেছে, ঐহানে ৪০ চলিশ হও উচ্চ একটি ভূপ ছিল; অশোক রাজা তাহা নির্দ্ধাণ করেন । রাজগিরের কিছু পুর্ব্ধ গিরিএক নামৰ পৰ্বতে "বরাসক্ষা বৈঠক।" সেটও বৌদ্দিগের একটি ভূপ বলিয়া বিবেচিত হইরাছে !। বর্জমান প্রীক্ষেত্র বে পূর্ব্বে বৌদ্ধক্ষেত্র ছিল, ইহা পূর্বে अपर्निक क्हेग्रांटक् न । अनुनारशत तथवाका (थाछान्य वोक्रिनिरनत तथवाकात

রাজপুত্রর বর্ত্তমান নাম রাজগির।

⁺ A. Cunningham's Archæological Survey of India, Vol. I., p. 24 and 27.

† A Cunningham's Archæological Survey of India, Vol. I, pp. 16-19.

ৰু উপক্ৰমণিকা। ৩১১ ও ৩১২ প্ৰা

পতুকরণ * এবং লগরাধ, বলরাম, স্বভদ্রা, এই ভিনটি বৌহদের বৃদ্ধ, সংল e ধর্ম এই মতের বিষয় পূর্বে লিখিত হইয়াছে †। ভূপালের প্রায় নর জ্লোশ পূর্ব্বোত্তর বেতোরা নদীর তীরত্ব সাঞ্চি গ্রামে বৌদ্ধ-সম্প্রদারের অনেক গুলি তুপাদি আছে। সেই স্থানের দক্ষিণ-বারে বৌদ্ধ-সম্প্রদারী ভিনটি ধর্ম-বন্ধ অর্থাৎ ধর্মের নিমুর্শনাত্মক আফুতি-বিশেষ একত্র থোদিত রহিরাছে। বৌদ্ধদিরের প্রচলিত মুদ্রা-বিলেবে বেরূপ ধর্ম-যন্ত্র খোদিত থাকে, উহা ভাহারই অমুরূপ। अक वच्चत व्यविक्त अक श्रीकांत्र श्रीकित्र अक श्रीत श्रीका दक्ति ने मुख्य हरेटन ने **(जारना** क निश्रहम के जिनकि त्वोक्तिशत्त वृक्त, धर्म, मञ्च कहे विमुख्ति वहे विका-পক হওয়াই অভিমাত্র সম্ভাবিত বলিয়া বিবেচনা করেন ±। ভিনি সাঞি. **অবোধ্যা, উজ্জা**রনী প্রভৃতি নানান্থান হইতে, এমন কি, শক রাজাদিগের মুদ্রা ছইতেও ঐ ধর্ম-যন্ত্র অনেকগুলি সংগ্রহ করিরা প্রকাশ করিরাছেন । ঐ বারের শিরোদেশে ভাহার এক একটি আবার বৃদ্ধদেবের চক্র-চিক্লের উভর পার্যে অব-विक ¶। धे धर्य-यद्भ वाशु, अधि, मृखिका, सन ও আकाশ-वीस पद्भभ व, तु, ল, ব, ন এই পাঁচটি পালি অক্ষরের সমষ্ট-স্বরূপ বলিয়া বিবেচিত হইয়াছে ॥। উল্লিখিত তিনটি ধর্ম-বল্লের সহিত জগনাধাদি তিন মূর্ত্তির অভেদ বা সৌগালুভ দেখিতে পাওয়া বায়। জেনেরেল কনিংহেম্ভিল্সা-ত্প-বিষয়ক বজিশ সংখ্যক চিত্ৰপটে ঐ উভয়কেই পার্খাপার্থি করিয়া মুদ্রিত করিয়াছেন। এই পুত্তকের শেষ ভাগে :প্রকাশিত চিত্রপটে তাহার প্রতিরূপ প্রকটিত হইল : দেখিলেই, প্রীক্ষেত্রের বৈঞ্চব-ত্রিসৃত্তি উলিখিত তিনটি বৌদ্ধ-ধর্ম-বর্মের অভ্যক্ষরণ ৰলিয়া সহজেই প্ৰতীয়মান হইতে থাকে। ঐ তিনটি বন্ধ সমগ্ৰ বৌদ-জিমুর্ভিয় পরিচায়ক হউক বা না হউক, যথন জগরাথপুরীর তিন মূর্ত্তি কোনরূপ পরিজ্ঞাভ দেবাক্ততি, পথাকৃতি বা প্রকৃত মহয়াকৃতি নয়, এবং যথন ঐ তিন ধর্শ্ব-ৰঞ্জের

^{*} Journal of the Royal Asiatic Society; Vol. VII., pp. 1—8 and Vol. VII., p. 420 note 3. পাঠ করিও।

⁺ উপক্রমণিকা। ৩১১ পৃষ্ঠা।

[‡] Bhilsa Topes, 1854, by A. Cunningham, p. 358. Plate XXXII. Fig.22.

[§] Ibid, pp. 353-358. Plate XXXII.

T Ibid. Fig. 10.

[|] Ibid, pp. 355 and 356 and Antiquities of Orissa, Vol. II., p. 126.

সহিত তাহার অত্যন্ত সাদ্তা দৃষ্ট হইয়া থাকে, তথন উল্লিখিত অনুমানটি সর্বভোভাবেই সন্তব ও সঙ্গত বলিয়া স্বীকার করিতে হয়।

বৌদ্ধ-সমাজে চক্র শব্দ বেরূপ প্রচলিত এবং তাহাদিগের মূল মন্তপ্রতিপাদক ধর্ম-চক্র বেরূপ মহিমাবিত, তাহা পুর্বে লিখিত হইরাছে * ৷ চক্র-চিহ্নটি একটি वृष-वश्य-विरागव । (वोष्यमास्त्र वृष्य-भागत ठळ ठिक मविरागव वर्षिक चाहि। ৰৌদ্ধেরা বছ পূর্ব্বাবধি তাহার একটি মূর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া তাহার উপাসনা করিতে প্রবৃত্ত থাকে। তাহাদের অনেকানেক মুদ্রাও ঐ চিছে চিহ্নিত দেখা যায়। লেনেরেন্ কনিংহেম্ সাঞ্চিন্ত,প ও নানা মুদ্রা হইতে উহার অনেকগুলি প্রতিক্রপ চক্র থোদিত আছে। শঅ-চক্রাদি যেমন বিষ্ণুর পদ-চিহ্নমাত্র, স্থদর্শন সেরপ সামাক্ত বস্তু নয়। পুরুবোত্তম মাহাত্ম্যে সুদর্শনের অপার মহিমা পরিকীর্ত্তিত হয়। এমন কি,ভাহা স্বভন্তা ও বলরামের সহিত সমান পদস্থ বলিয়া বর্ণিত হইরাছে!। রাজের লাল বাবু সেই বিষ্ণু চক্রকে বৌদ্ধদিগের ঐ বৃদ্ধচক্র বলিয়া অসুমান করেন । এ অমুমানটি প্রমাণসিদ্ধ হইলে উপস্থিত প্রস্তাবের বিশেষরূপ পোষক হর তাহার সন্দেহ নাই। পুর্বোক্ত লালাবাবুর সায়েরে যে জগরাথের প্রতিমূর্ত্তি আছে, তাহার বাম পার্যে একটি কার্চখণ্ডে অভিত ফুদর্শন-চক্র নামে এক রূপ চক্রের প্রতিরূপ প্রদর্শিত হইয়া থাকে। জগনাথ ভিন্ন অন্ত কোন দেবভার নিকট স্থদর্শনের প্রভিরূপ দেখিতে পাই নাই। যদি বৌদ্ধর্ম-মূলক জগরাথ-মূর্ত্তি ভিন্ন অস্ত্র কোন দেবতার সমীপে স্থদর্শন চিহ্ন দেখিতে না পাওয়া যায়, তবে উল্লিখিত

^{*} উপক্ৰমণিকা। ২৭৮ পৃঠা।

⁺ Bhilsa Topes by A Cunningham, p. 353 and Plate XXXI.

Antiquities of Orissa, Vol. II. p. 126.

অভিপ্রারই সমধিক সন্তাবিত বলিতে হয়। আরক্ষাবাদ প্রদেশের অন্তর্গত ইলো-রার নিকটম্ব একটি বৌদ্ধ-দেবালয় অভাপি অগন্নাথের মন্দির বলিন্না বিখ্যাত। ইহাতে, হিন্দু-দেবতার 'জগন্নাথ' এই নামটিও বৌদ্ধের নিকট হইতে গৃহীত এইরপ অক্লেশেই মনে হইতে পারে *।

জগরাথক্ষেত্রের কিছু উন্তরে অবস্থিত ভ্বনেশ্বর তীর্থে এক সময়ে বৌদ্ধর্ম অতিশয় প্রবল ছিল। তথাকার কেশরী নামক যে নৃপতিবংশীয়েরা ৪৭৪ খুষ্টান্দ হুইতে ১১৩২ খুষ্টান্দ পর্যন্ত তথার রাজত করেন, তাঁহার। শিবোপাসক ও শৈবসম্প্রদানের সহারভূত ছিলেন। দেড়শত বৎসর পর্যান্ত শৈব বৌদ্ধে বিবাদ বিস্থান চলে; অবশেষে শৈবেরা জয়ী হইয়া বৌদ্ধদিগকে পরাভব করেন। শৈব রাজারা ভ্বনেশরে সহস্র দেব-মন্দির প্রস্তুত করিয়া শৈব-ধর্মের সমধিক প্রাত্তর্ভাব সাধন করেন। তাঁহারা বৌদ্ধদেবাদির প্রতিমৃত্তির অফুকরণ করিয়া বিস্তর দেব-প্রতিমাদি নির্মাণ করেন এবং বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ী ধ্যানাক্ষ ভিকু-মৃত্তিকে আদর্শ স্করপ জ্ঞান করিয়া অনেক স্থানে অনেক প্রতিমৃত্তি প্রস্তুত করিয়া যান। সেই সকল মন্ধ্রিরাদির অধিকাংশ ভগ্ন ও নষ্ট হইয়া গিয়াছে। †

তথাকার ভাষরেশ্বর, কোটিতীর্থেশরের মন্দির প্রভৃতি কোন কোন স্থান বৌদ্ধলক্ষণে লক্ষণাক্রান্ত বলিয়া বিবেচিত হইয়াছে। কোটি-তীর্থেশরের মন্দির পূর্ব্বকার, কোন প্রাচীনতর গৃহের প্রস্তরাদি লইয়া প্রস্তুত করা হয়। তাহাতে বে
সকল বিষয় থোদিত আছে তাহার কতকগুলি বৌদ্ধদিগের থোদিত প্রতিমৃত্তি
প্রভৃতির অমুরূপ। বৌদ্ধদেব চৈতাদি হইতেই সে সমুদায় সংগৃহীত হওয়াই সন্তাবিত বলিয়া অমুমিত হইয়াছে। ভাস্করেশরের মন্দিরও প্রাতন গৃহ বিশেবের
প্রস্তরাদিতে প্রস্তুত। তাহা দেখিতে বিতল। ঐ মন্দিরের চারিদিকে যে চন্ধর
আছে, তাহাই প্রথম তল। তাহার উপরের তলটি প্রস্তুত মন্দির। সেই
মন্দিরে নয় মৃট্ তিন বৃক্তন্ দীর্ঘ একটি লিঙ্গ আছে। অশোকের শিলান্তস্তের
সহিত ইহার আকার প্রকারের সৌসাদৃশ্র দেখিয়া এইরূপ অমুমিত হইয়াছে বে,
এটি বৌদ্ধ রাজা অশোকের শিলান্তস্ত ছিল; সময় ক্রমে ভগ্ন হইয়া যায়; হিন্দুর।

^{*} Bhilsa Topes, p. 360

[†] Asiatic Researches, Vol. XV., pp. 264-267 and Hunter's Statistical Account of Bengal Vol, XIX., pp. 80-83.

ভাহা অধিকার পূর্বাক ঐ স্তন্তের নিয়-ভাগের উপর একটি মন্দির প্রস্তুত করে এবং সেই স্তন্তের অবশিষ্ঠ ভাগকে শিব-লিম্ম বিষয়া প্রচার করে *। বধন অক্সান্ত স্থানে হিন্দুদের এইরূপ ব্যবহার দেখিতে দেখিতে পাওয়া গিয়াছে, তথন ভূবনেখরেও সেইরূপ সংঘটিত হওয়া অসম্ভব নয়।

অতএব হিন্দুরা যথন বৌদ্ধনের অস্থান্ত স্থান অধিকার করিয়া আপনাদের দেব-স্থান করিয়াছেন, তথন তাহাদের গয়াও দেইরূপ করিবেন ইহাতে অগন্তা-বনা কি? প্রভাত: যথন সে বিষয়ের যথেষ্ঠ প্রমাণ প্রাপ্ত হওরা গিরাছে, তথন গয়া যে বহু পূর্বাবিধি বৌদ্ধদিগের একটি প্রধান ধর্ম ক্ষেত্র ছিল; পরে হিন্দুরা উহা অধিকার পূর্বাক আপনাদের একটি প্রধান তীর্থহান করিয়া লন ভাহাতে আর সন্দেহ করিবার বিষয় নাই।

কাহিরন্ খুটাকের পঞ্চম শতাকীর প্রারম্ভে দেখেন, লোকে ঐ স্থান পরিভাগে করিয়া গিরাছে । হিউ এন্থ্দক্ সপ্তম শতাকীর প্রথমার্দ্ধে উহাতে
বিশুর হিলুর বসতি দৃষ্টি করেন এবং তয়ধ্যে একরূপ সহস্র ঘর প্রান্ধণের উল্লেখ
করিয়া বান !। অভএব সে সমরে, হিলুরা গয়ার প্রাত্নভূতি হইতেছিলেন বলিতে
হয়। তাহারা ঐরপ প্রবল হইলে পর যে অংশ বৌহনিগের অধিকৃত য়হিল
ভাহাই বৃহ্বগয়া নামে অভিহিত করিলেন এই অনুমানটিই য় সর্বতোভাবে
সম্ভব। শ্রীমান্ কনিংহেন্ বলেন, বৃহ্বগয়াকে সচরাচর বোধগয়া বলে; উহা
বৌহছিগের বোধির্কের নাম অনুসারে উৎপর হইয়াছে ৪। ফলতঃ এই সমস্ত
বিবেচনা করিয়া দেখিলে, বৃহ্বগয়াটি আধুনিক নামই বোধ হয়।

(रेम, म, ১० ७ ১৪ श्रृष्ठी ()

বৰদ্বীপে বে পূৰ্ব্বে হিন্দু-ধৰ্ম প্ৰচলিত ছিল, এখন এখানেই তাহার যথেষ্ট প্ৰমাণ প্ৰাপ্ত হওয়া যায়। তথা হইতে সংগৃহীত শিব, পাৰ্বভী, গণেশ প্ৰভৃতির

^{*} Dr. Rajendra lala Mitra's Antiquities of Orissa, Vol. II., pp. 87-89

⁺ The Pilgrimage of Fa Hian, Calcutta, 1848 p. 280.

[‡] Histoire de la Vie de Hiouen-thsang et de ses Voyages dans L'inde Traduite du Chinois par Stanislas Julien, p 455.

[¶] Buddha Gays by Rajendra Lala Mitra, p. g.

[§] Archæolgical Survey of India. Vol. I., p. 4.

পাষাণ্মর প্রতিমূর্ত্তি কলিকাতাস্থ ভারতবর্ষীর কৌতৃকাগারের * দক্ষিণ দিকের নিম-তলস্থ একটি প্রকোঠে দেখিতে পুণাইবে।

> (শৈ, স, ৩৮ পৃষ্ঠা, ১২ পংক্তি অন্তর্পণীয় ধন-লোভ ও অভিচার মন্ত্রাদি-জপ।)

এদেশীয় লোকের পূর্বাপেকা এখন অধিকতর অর্থের প্রয়োজন হইরাছে তাহা কাহারও অবিদিত নাই। কিন্তু অনেকে চির-সীবন কেবল অর্থোপার্জ্জন পুর্ব্বক তাতা দঞ্চর, ব্যয় বা অপব্যয় করিয়া আয়ু:শেষ করেন। তাঁহারা এই রূপ ব্যবহার করাই জীবনের একমাত্র সার কার্য্য জানেন : মহুষ্য-পদের উপ-যুক্ত কোন হিতকর কার্য্য অমুষ্ঠান করা দূরে থাকুক, এক বার চিস্তাও করেন না। আত্ম ও জনসমাজ সম্বনীয় লঘু গুরু কত প্রকার কর্ত্তব্য কর্ম আছে, সে বিষয় একবার মনেও করেন না। নিজ নিজ লেখনীকে রঙ্গভূমির অফুলর-রূপ নুতাকরী বিক্লালী নর্ত্তীর সজ্জায় সজ্জিত এবং পিতামহীও মাতামহীর নিকট শিক্ষিতরূপ উপঞান-অমুবাদাদি অর্থকরী বিভার অমুপযুক্ত দানীত্ব-পদে নিযুক্ত করিবার প্রথা এদেশীর বিভাভিমানী অনেক গ্রন্থকারেরই বিভা-কলোং-পত্তির পরিসীমা হইয়া রহিল। নানা কারণ বশতঃ ভূলোকের কল্যাণকর ও নর-কুলের উন্নতি-দাধক তাকতর বিষয়ে আমাদের আর মতি গতি হইল না। এদেশীয় কোন স্থাশিকত ব্যক্তি বিজ্ঞান-বিশেষের অমুশীলন-ব্রতে ব্রতী হইয়া ভৎসংক্রাস্ত অভিনব ভত্ত নিরূপণ চেষ্টায় কালাভিপাভ পূর্ব্বক জীবন সার্থক করি-তেছেন এই চিরাভিদ্যিত বিষয়টি দর্শন ও প্রবণ করা আমাদের ভাগো ঘটিল a1 1

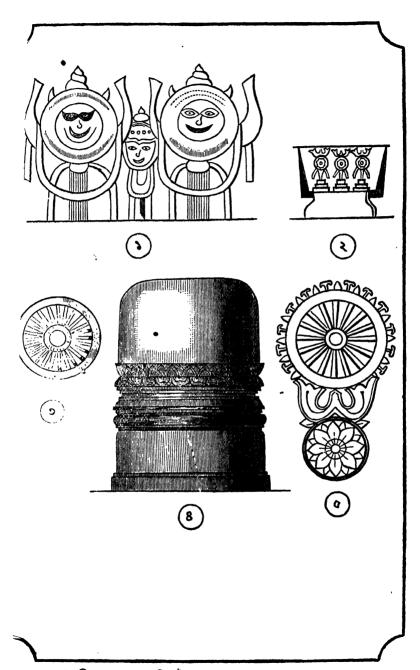
সম্প্রতি আত্মশাসন-ব্যবস্থার স্চন। হইবার পর, কোন কোন প্রামে প্রামন্থ লোকের তৎসম্বনীয় আত্ম-হিত-ক্রনার্শ্বীক্রনাদি শুনিতে পাওয়া যার। এটি একটি ভাল কথা ভাহার সন্দেহ নাই। কিন্তু সেই সাধারণ হিতক্রেও শক্তা-

^{*} কৌতুক শব্দের অর্থ কৌতৃহল অর্থাৎ অপূর্ব্ধ বস্তু দর্শন।দির অভিলাব। বে পৃহে সেই কৌতুক-বিবয় সম্পায় অর্থাৎ অপূর্ব্ধ হুর্ম'ভ সামগ্রী সকল বিদ্যমান থাকে, ভাষার নাম কৌতুকালায়।

সাধন ও বিষেব-বচন রূপ অভিচার-মন্ত্রজপের অসদ্ভাব নাই। রাজপুরুষেরা *
এ দেশীর কল্যাণ-বৃক্তের কোন কোন শুক্ষ প্রায়-শাখা পল্লবে কল সেচন বা দে
বিষরের আশাদান করিয়া আমাদিগকে কুভক্তভা-রুদে আর্দ্র করিভেছেন; কিন্তু
উহার মূল-ক্ষরনিবারণের উপায় কি? তাঁহারা সবিশেষ যদ্ধ করিভেপারেন বলিভে
দিগের স্বাস্থ্য-ক্ষর ও ধর্ম-ক্ষর-প্রবাহের কভ দূর প্রভিরোধ করিভে পারেন বলিভে
পারি না। অপরাপর বিষয়ও স্থাসিক হওয়া রাজা প্রজা উভরের অবিচলিভ
সন্তাব ও অপ্রভিহত শুক্ত চেষ্টার উপর নির্ভর করে।

* এ পণটি আপাতত: বহুবচনাত্ত না হইরা একবচনাত্ত হওরাই শ্রেমঃ। প্রজা-বংসল ভাজিভাজন লার্ড, রিপন্ এক বই ছুই ব্যক্তি নন। কিন্তু আমরা তাহার উপযুক্ত প্রজা নই। এদেশীর অধুনাতন ধনিগণ। তোমরা কিছু মমুবাড়-ভাবাপর হইলে, এ সমরে অনেক বিধরে বিশেষ ক্লপ উপকার দর্শিত তাহার সন্দেহ নাই। দেশের লোক কি ভাবিতেছেন ? নির্দিষ্ট পাঁচ বংসর অত্যত হইকেই কি তাহাকে বিদার দিয়া অঞ্জ্ঞালে প্লান্তি হইতে হইবে ? এই অবধি সে বিবরের কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্য-অবধারণে প্রযুক্ত হওরা উচিত। রাম-রাজ্যের কাল দীর্ঘ হওরাই প্রার্থনীর। তদর্প প্রাণপণে চেষ্টা করাই কর্ত্তব্য।

দিতীয় ভাগ সমাপ্ত।



> অগরাণাদি। ২ তিনটি ধর্ম-বস্ত্র। ৪ এক প্রকার স্তুপ। ¢ সক্ষ-বস্ত্র।

০ বৃদ্ধ-বন্ধ।